

# श्री सुपार्वनाथ चरित्र

भाग २ जो.



अनुवादकर्ता,  
आचार्य-

श्रीशंजितसागरजी महाराज.

શ્રી જૈન આત્માનાથ ચરિત્ર

તત્ત્વજ્ઞાનામણિ—ગચ્છાવિપાતિ—શ્રીમાન સુલમાયરજી મહારાજ  
(મરીઝિં પ્રભમાલા) નિબાર ર. જી.

શ્રીમહાલ્મણગણ વિરચિત-

# શ્રીસુપાર્બનાથચરિત્ર.

( ભાગ ષીને ).



અનુષ્ઠાનિક,  
ગાંધીનગર

પ્રસિદ્ધવક્તા જૈનાચાર્ય શ્રીમદ્ અલૃતસાગરસૂરિ.



છપાવી પ્રસિદ્ધકારી,

શ્રી જૈન આત્માનાથ સભા—ભાવનગર

( ની વતી ગાંધી વખ્તબદાસ વિખ્યાતનાસ સેઢેટરી. )



લોક સાહિત્યાનુ

પ્રદ ૧૦૦-

પ. મ. ૧૬૮૦

માર્ચ ૧૯૨૪

શ્રી જૈન આત્માનાથ અંધમાલા નિબાર ૪૬.

ભાવનગર—ધી “આનંદ” પ્રી-ટીજ પ્રેરણમાં  
શાહુ ગુલાખયંદ લદ્દુભાઇએ છાયું.

## ॥ प्रेमांजलि ॥

---

प्रशस्त चारित्रधारक सम्यक् शुद्धियायोगी गच्छाधिपति  
 सङ्कल संवेगि शिरोभण्डि बाण अल्पतत पालक तरणु तारणु  
 शान्त्यादि गुणु निधान पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय दादा गुरु साहेब  
 श्रीभद्र सुभसागरल महाराज ? आपना पवित्र चरणु-  
 कमण्डां हीक्षावत लधु इतार्थ थयो अने चिंताभण्डि समान  
 आपना उरतकमलना प्रभावथी अपूर्व तात्त्विक लाल भेण्यो,  
 तेमज्ज आपे उचित समये भुने हितोपदेश आपी मुनिधर्ममां  
 निपुणु क्योरी; वणी आपनो अप्रमेय हाहिंक स्नेह ज्ञेध हुं महारा  
 आत्माने इतहृत्य मानी आपनुं ध्यान क्षणुमात्र चूक्तो नहीं.  
 हे गुरुवर्य ! आपना अग्रतिम प्रेमना आधीन थधु गुडलक्षिमां  
 निभम रही अहर्निश आगमिक तत्त्व निरीक्षणमां प्रवृत्त थयो.  
 आपे जे चारित्ररत्न शुद्धप्रेमथी योग्यता नाण्डी अर्पणु क्युं  
 तेमज्ज ते अनुक्तमे गुडशिक्षाद्य निक्षेपत्वाथी उत्तेज्जत थयुं ते सर्व  
 आपनोज्ज महिमा छे, अेम आपना असाधारणु उपकारनो  
 अद्वलो अर्पवा अशक्त छतां हुं आने आ सुपार्श्वनाथना  
 द्वितीय विभागद्य प्रेमांजलि समर्पणु करी भुवरा आत्माने  
 अनुष्ठी मानु ध्वं. “ उँ शांतिः ”                  अनुवादक.

---

## આભાર.

---

વિનાપુર તાણે કોલવાડા વાસ્તવ્ય વૈયાકરણાચાર્ય ૨૧. ૧.  
 શાસ્ત્રીજ શ્રીયુત ભાઈશંકરભાઈ વૈકુંઠામ ત્રિવેદીએ સાધાંત આ  
 અંથ શોધવામાં પુરતી સહાય આપી છે. છેવટનાં મુશ્ક તપાસવામાં  
 બાંડ લક્ષ્ય રાખી કામ કર્યું છે તે માટે તેમનો આસ આભાર  
 માનવામાં આવે છે. અં શાંતિ: ૩

## ધન્યવાદ.

---

મહેસાણા નિવાસી પારેખ નાગરચંદ રવચંદ્રભાઈનાં વિધવા  
 પત્ની મંચાભાઈએ આ શ્રી સુપાર્થનાથ અરિનના દ્વિતીય ભાગમાં  
 કેટલીક આર્થિક મહદુદ કરી છે, તેમજ અન્ય સંદગૃહસ્થો તરફથી  
 કેટલીક સહાય મળી છે, અને તેઓએ પોતાના સહદ્રવ્યનો આવા  
 શાનકર્યની અંદર ઉચિત વ્યય કરવા ઉદારતા બતાવી છે, માટે  
 તેઓને ધન્યવાદ ધરે છે. તેમજ આવા ઉચિત કાર્યનું અનુકરણ કરીને  
 પોતાની સરદલક્ષ્યમનો વ્યય કરવો એવું સુનાજનોનું કર્તૃવ્ય છે.

## प्रस्तावना।

---

जेना निर्भय संयमे जगतमां ज्ञोति प्रसारी अहा !  
 अर्तिकानन देशरी प्रभरने विदान जानी भए !  
 जेनी लेखीनाये लभ्या आणुमुला अथो सुराने भर्या !  
 जानी ! अंतर सद्गुड निवसन्यो श्री भुद्धिसागर सदा !

पाठ्याकृते.



ससौंदर्य विभूषित, साहित्य सागरना तरब तरजो  
 उचागिनार, पहलालित्यना परम प्रेमलर्या पराग परि-  
 भवथी विश्वने विमुञ्ज बनावी हेनार, क्षव्य जनेने  
 रसलर कथाभृतना पान साथेज सहराननी गुटिकानु  
 सेवन करावनार, श्री अलयहेवसुरिना प्रशिष्य श्रीलक्ष्म-  
 णु गणेशु विरचित श्री सुपार्श्वनाथ चरित्रना सरण  
 अने सुन्दर अनुवादना प्रथम विलागनी प्रस्तावना छ मासपर ज्यारे में  
 लभी त्यारे क्षेपनाये न हती कै भीने भाग पाणु प्रस्तावना माटे भारी  
 पासे आवशे. व्यवसायी अने साहित्य सेवाना छंदवाणो हुंज आ पुस्तक  
 ग्राकाशनना विवांखनो डारणुलूत अन्यो ? भावनगर गुर्जर साहित्य परिषद  
 पठी तुर्तज जैन साहित्य परिषद भरवाना डार्यमां इफेलो अने तत्पत्रात्  
 तेनो रिपोर्ट तैयार करवामां गुंधायेल भने आचार्य श्री अग्रतसागरजु स्मृ-  
 त्याए घण्टा टोडेयो छतां उतावणो हुं नज आ डाम उडेली शक्यो—अने तेथी  
 आज्ञे भोडे भोडाये वांचकना करकमणमां आवुं छुं. आनी सुन्दर कृतिना  
 रसमंहिर पर-भारे माझं कथनटांकणुं भृहुताथीज इरववुं पडे-तेमां  
 अवनवा रंजो पूरवा भारी पीछी आस्तेथीज यक्षाववी पडे ए सात  
 छेज-के रमेने हुं भूग वस्तुने विहृप न करी ऐसुं.

६

प्रारंभमां चरितना प्रथम पृष्ठना भथाणे सुरिष्य पोताना सद्गुरे  
हेवना चरणसरोजमां वंदन करतां कथे छे के:—

॥ शास्त्रविशारद जैनाचार्य योगनिष्ठाध्यात्मज्ञानदिवाकर सद्गुरु गच्छा-  
धिराज श्रीमद् बुद्धिसागरमूरि चरणसरोजेभ्यो नमः ॥

विनय अने विवेकवडे विभूषित आपणा चरित लेखकी लेखिनी  
हवे चरित लेखनना भेदानमां पूर वेगथी याले छे. आ लेखक आचार्यश्रीनी  
लेखनशक्ति पांडित्य अने कवित्वशक्तिनुं पीछान तो हुं प्रथम भागमां ज  
करावी गयो छुं. एटले हवे कथाना रसकुंउमान्ज इष्टकी भासी रहे छे.

धर्म ज्ञानसु, पोताना भनुष्यलवने सङ्ग उरवानी भहेयावाणा  
आहजनोने नित्य सेववायेऽप्य-भुक्तिमार्ग दाता-लगवते लाभेल समझीत  
मूल व्याख्यत, तेना अतिचार अने ऐना सेवनथी थतां अनिष्ट तथा व्रत  
प्रतिपालनथी थतां उत्कृष्ट कृष्ण निर्देश आ ग्रंथमां उत्तमरीत्या वर्ण्णव्यो छे.  
ने ते उभदा दृष्टिवडे विशाणताथी कहेवामां आव्यो छे. वणी ते कथा  
वर्णनमां चातुर्थ-उत्तम शुद्धि विलास, जनस्वप्नाव दर्शन, अद्भुत गूढ  
गंभीर तत्त्वज्ञान प्रश्नणा, तत्समयना लोकाचार धार्मिक-व्यावहारिक-सामा-  
ज्जक, राजकीय परिस्थिति, प्रथम वैराज्य भावना, अने संसारनी असा-  
रता आहि विकट प्रश्नोना उक्तव सरण अने सङ्गणताथी कर्या छे. विदान  
अने सामान्य ज्ञान पामेल भनुष्यने वा धर्मज्ञानसु वनिता वर्गाते पण  
सुलबताथी सङ्ग रुहभज्य तेवो आ धर्मकथा ग्रंथ छे.

लेखक महाशय पोतानी सुरस रसलर वर्णन रैली आ द्वितीय विभा-  
गमां पण ऐक सरणी रीतेज चकाव्ये जाय छे. वणी तेम उरवा जतां तेमां  
डोर्ड जतनो होप न आवतां उलटां नविन रसनापूर तेमां छवाता जाय छे,  
वांचक तेमां तविन जनतो जाय छे.

श्री सुपार्थनाथ प्रभुने वंदन करीने हवे महा भाग्यवान-तत्त्वज्ञानना  
ज्ञानसु भक्त दानवीर्य राज प्रभुने त्रीज अष्टुवततुं स्वदृप जप्ताववा  
विनंती करे छे. आम, आकर अने नगराहिक स्थानोमां सचित, अचित अने  
भिन्न ऐम त्रण प्रकारनी चोरी चटावनार ऐवुं अहतरथूल द्रव्य होय तेनो

सर्वथा त्याग करवो—आ संखुलादत्तान विशेषण वृत्त उपर प्रक्षु हेव यशानुः दृष्टांत आपे छे:—

हृप्पूर नगर अन्नर आम्रवक्षथी विभूषित हतुः. अत्यारना क्षुद्र लगि-  
याएँ. साथे पूर्वकालीन सहस्राब्दवन सरभावतां ते समयमां वृक्षोनुः  
डेटलुः परिशीलन थतुः हरे ? ने भेदवृष्टि वृक्षोनी विपूलता पर अवलंघे छे  
ओम कुहेवाय छे तेथी भेदनो अभाव तत्समयमां ओणो. संलवे छे ते सत्य  
छे. मुनिसमान नयसार राज ” आ शब्दोज भूतकाणना नृपतियेत्नी धर्म-  
वृत्ति, न्यायपरायण्युता अने विशुद्धता सच्चवे छे. नयसार=न्यायना समरत  
सारनो ज्ञाता ! डेवुः अर्थलावपूर्ण सुन्दर नामालिधान ? शीलगुणमां  
शिरोमणि समान सुरसुन्दरी राणी पाण आहर्शपात्र छे. धनाद्य श्रेष्ठिनी  
पत्नी पाण ‘ अहु द्याणु ’ वर्णवी छे. देवयश श्रेष्ठिपुत्र ! अनराज भगवा-  
नना वयनोमां द्रढ अक्षाणु, विवेक नेत्रोथी विभूषित ! गुण रत्नोनो भष्मा-  
निधि एवो ! तेनी खो प्रेमरसनुः कुलभवन, लैन भतनी उत्तम भावनावाणी  
श्रेष्ठ श्राविका ! देवयश आवड पाण आर ग्राहारनो आवड धर्म पाणतो, हरेक  
पर्व द्विवसे पौष्प प्रतिमानो अब्यास करनार ने विशुद्धाचारथी लोकमां  
प्रसिद्ध, शुद्ध व्यापारथी विपूल द्रव्य मेणवनार ! आ कथाना आ आहर्श पात्रो  
तत्समयनी धर्मलावना पूर्ण उत्तम चारित्र, परम प्रेम परम्परनां आरा-  
धन करनार—कृतवारी अने न्यायोपार्जत-द्रव्य उपार्जन करी सुखपूर्वक  
ज्ञवन ज्ञवनार ज्ञाय छे. आजना छण प्रपञ्चथी येन केन प्रकारेणु ज्ञवन  
गाणनार आपणुः कृत्वाक अंखु लगिनीयोने भाटे उत्तम ओधायक आ  
पत्रो अरेखर छे.

अेकदा देवयश अनमाद्वै दर्शनार्थी जतां राजमुद्रिका भार्गमां ज्ञातां  
सर्पना भयथी भार्गने त्यागे तेम ते भार्ग बदली अन्य भार्गे गये.  
दोषविवर्जित-निःरपार्थ-पापलीळ सत्पुरुषो सर्वथा अदत्तवस्तुथी  
वेगणा नासी योतानां वृत्त ने शील साच्चवे छे. देवयशनुः आ वर्तन  
निःसंशय प्रेक्षणीय एवं आहरणीयज गण्याय. तेनो कुटिलभित्र  
धनहेव पितराईलाई थतो हेठ—देवयशना तेज दृष्टी तेने आइतमां  
लाववा ते मुद्रिका लक्ष भोणा देवयशने त्यां जमी—रही ते मुद्रिका देशयशनी  
पेटीमां संताडी राजने जहेर करे छे. राज तो ते मुद्रिका शोधतो अल्प-

दानतो पउह वकडावे छे ते पांच दिवसमां सुद्रिका आवी जवा प्रज्ञाने सूचयेवे छे नहीं तो पछी योरने देहांत दंडनो भय अतावे छे. अहि देवयशने पूछतां ना कहेतां-तपास थाय छे. धनहेव देवयशनी पेटीमांथी सुद्रिका काही अतावे छे. पण् साथै साथै नवक्षार मंत्रनुङ्गा अने परिग्रहनुं अमाणुपत्र पण् नीक्के छे. राजा देवयशने वधस्तंभ पर भोक्ले छे. धनहेव राज थाय छे, राजनो आहेश तो सत्यज छे. “भुद राजनो पुत्र हशे तो तेने पण् देहांत दंडनी शिक्षा करवामां आवशे !” आ पउहमां राजनी न्यायवृत्ति जाण्याय छे. वणा पांच दिवसमां जडेली वस्तु पाढी आपी जनारने अभ्यान देवानी राजनीवृत्तिने नीति पण् उत्तम गण्याय. देवयशने राज ज्यारे सुद्रिका भाटे पुछे छे त्यारे ते तो स्पष्टज जाणुवे छे के, “आ लोक अने परलोकमां त्रीज वृत भंगथी उत्पन थयेलां नरकाहिदुःखनां कारण्याभृत पापेा भोगववां पडे तेनी शी गति थाय ?” “माणुनो त्याग थाय तोपणु आ योरीतुं काम तो हुं न ज कइं ?” देवयशना आ शब्दो अरेअर एक उत्तम पुरुषने शोले तेवाज छे. धर्मपरती अद्भुत ग्रतीति-अने सत्य ग्रतीजापालनमां उत्कट आत्मभण-ज्ञान निहरता ? अद्भुत जाण्याय छे. देवयशनी पेटीमांथी सुद्रिका नीक्के छे त्यारे राज ऐले छे; “अभृतमांथी विष उत्पन थयुं ” हा ! सत्पुरुषोने आ शब्दो ज अति भयंकर शिक्षा समान छे. देवयश भाव एटलुंज कहे छे “आ सर्व हैवनुं कर्तव्य छे.” वाह वैर्य ने पूर्वकर्ममां अयणशक्का !

खी ए पुरुषनी अधोंगना-सुभ दुःखनी भागीहार छे. देवयश पर आवेल कृष्ण जाणी तेनी खी झिक्किमधु मृच्छित थाय छे ते परिजनना शितोपचारथी सहज शांति भणता एटलाज शब्दो ऐले छे:—“रे ! पापिष्ठ हैव ! आवा धार्मिक पुरुषना देह पर तुं अहार करतो केम अटक्तो नथी ?” पोताना पतिना चारित्र पर डेटलो विश्वास ने अहा ? हवे “झिक्किमधु” “हवे ऐद करवाथी शुं ?” एम जाणी “ने करवानुं ते कइं ” एवा निश्चय पूर्वक शुद्ध थाई घोषधशाळामां जई हृदयमां शासन हैवीतुं समरणु करी, नासिकाना अयलाग पर-दृष्टि राखी, कायेत्सर्ग करे छे. एटले पंच परमेश्विनां ध्यानना प्रज्ञावे शासन हेवी प्रकट थाय छे ते धीरज आपे

છ. ઇકમણીની પતિલાંદિત ધર્મશ્રદ્ધા પતિના કષ્ટ પ્રસંગે ન ગલબરાતાં ધીરજ પૂર્વક ધર્મશરીરન દ્વારા પતિનો ઉદ્ઘાર કરવાની શક્તિ અને તે રીતે શાસન દેવીની રહાય મેળવવામાં સ્વીકૃતધર્મની પરાક્રાણ બતાવે છે.

હવે શાસન દેવી હેવયશ જેવા ધર્મિષ્પ પુરુષ પરના અસત્ય આરોપથી કોણિત બની તથા ઇકમણી જેવી પવિત્ર પતિષ્ઠતાને રહાય કરવા અર્થે રાજયમાં અમલકારિક ઉપદ્રવ ઉપનાવે છે ને રાજભવનમાં અન, જળ, તાંખૂલ આદિ અપહૂરી રાજનાં નેત્ર ખાલે છે. રાજ સ્થગિધર પાસે તાંખૂલ માંગે છે. એ સૂચવે છે કે, પૂર્વી પણ તાંખૂલ ચર્ચાણું નિધિ હોવો જોઈએ અને તે રાજ માન્ય ઉપહારનું ચિન્હ છે. ભીડી હુક્કો આદિને બહલે તાંખૂલભક્ષણું વધુ નિર્દોષ અને ઉપભોગ્ય પૂર્વી રાજનો પણ ગણુત્તા હોય એમ લાગે છે. મંત્રિને ત્યાં પણ આવો જ ઉપદ્રવ જણ્ણાતાં મંત્રી રાજને દેવયશની નિર્દોષતા હોય એમ લાગતું જણ્ણાવે છે. એટલામાં ચામરધારિણીના શરીરમાં શાસનહેવી પ્રવેશી મંત્રીને દુપકો આપે છે. “ધર્મિષ્પપર જુલમ ચુનારનાર પોતાના સ્વામી ( રાજ ) ને અટકાવતો નથી. તો તું મંત્રી શાનો ? × × × મંત્રીએ અસત્ય માર્ગે ચાલનાર રાજની ઉપેક્ષા કરવી ન જોઈએ. ધ૦ ” આ દુપકોમાં મંત્રીધર્મ અને રાજધર્મનાં શાસન તરી છુટે છે. મંત્રીશરે રાજને દુષ્કૃત્ય કરતાં વારવોજ જોઈએ. નહિં તો તે મંત્રીજ શાનો ? આ માન્યતા અત્યારના મંત્રીઓમાં હોત તો દેશી રાજનોની આવી દશા હોત નહીં. આ પછી દેવી ધનહેવનું તમામ કષ્ટ ખુલ્લુ કરે છે. ત્યાં આકાશમાંથી વિમાનાર્દ હેવયશ આવે છે. ચામરધારિણી, રાજ, મંત્રી સૌં તેને માન આપે છે. રાજનો તેને અહુમાન પૂર્વક પોતાના સિંહાસને બેસાડી અન્ય આમને સ્થાન લીધું. ગુણિ, નિર્દોષ, ધર્મિષ્પ, પુરુષોનું રાજનો પણ રાજમહ-અલિમાન ત્યાંની અહુમાન કરતા-પોતાના સિંહાસને પદરાવતા ને ધન્ય ચૂતા. શાસનહેવી દેવયશને પ્રાર્થના પૂર્વક કહે છે:-તું જૈન મતનો રાગી છે. તેમજ દ્વારા ધર્મભર્તાની અગ્રણી છે. વળી તેં ઉત્કૃષ્ટ રીતે ગૃહીધર્મનો સ્વીકાર કર્યો છે અને સર્વચા નિર્દોષ છે ! હું જૈન શાસનની રક્ષક દેવી ઝું. તહારી સ્વીએ કાયોત્સર્ગ કરી મને આલાવી છે. હું તને વિડાના કરનારને શિક્ષા કરીશ. હેવમદદ પામનાર હેવયશ પોતાના ઉદ્ઘારલાવને પ્રકટ કરતો દ્વારાને તેમ કરતાં વારે છે અને એ વિડાના પોતાના અશુલકર્મને લીધે થઈ

૧૦

જણુવે છે અને દુઃમનના પ્રાણુનો બચાવ એજ પોતાનું સ્વામિવાત્સલ્ય માને છે. મોટા મનના સત્પુર્ણોની સર્વદા સર્વત્ર આવીજ દૃતિ હોય છે.

રાજ પઢી પોતાની પટરાણુને દેવયશની પત્ની ઝક્કિમણું પાસે મોકલી તેને પાલભીમાં તેડાવે છે ને પોતે તેને પગે પડે છે. તેને આશિષ આપતાં ઝક્કિમણું કહે છે—“હે ! નરાધીશ ! આપ સૌ કલ્યાણુના પાત્ર થાઓ !” રાજ ઝક્કિમણુને પઢી લદ્રાસને પધરાવી હાથ જોડી—“ધર્મભગીની” શહેરે સંભોધી પોતાના ચુનાહની ક્ષમા યાચે છે ને સર્વ રાજ્યસંપત્તિ તેને ચરણે ધરે છે. ત્યાં દેવયશનો પુત્ર આવે છે ને ગોતાના માતાપિતાને નમી સર્વનો સત્કાર કરે છે. રાજનો વિવેક ને દેવયશના પુત્રનો વિનય ને માતપિતાની જ્ઞાતિ આદરણીયજ ગણ્યાય.

આ પઢી દેવયશ સૌને લઈ ઉદ્ઘાનમાં આવેલા સૂરીન્દ્રને વંહન કરવા જાય છે. ને હળુકર્મી મહાલાગ દેવયશ સ્વી સહિત દીક્ષા લેવા રાજ પાસે આજા માંગે છે. દશ દિવસ પઢી રાજ અને સંબંધી વર્ગની સમ્મતિ પૂર્વક ડાહમાડથી—સર્વ નગરમાં અમારી દ્વોપણા કરાવી—સન્માર્ગ દ્વય વ્યય કરાવી, અતુર્વિધ સંધની લક્ષ્ણપૂર્વક દીન અનાથ દરિદ્રીઓને યથોચિત દાન દઈ પત્ની સહર્વત્રમાન દીક્ષા અંગીકાર કરી. રાજનો ખલુધન આપો તેના પુત્રને ન્રેષ્ટી (નગરશોદ) પહે સ્થાપન કર્યો. રાજનો પણું હી ધર્મ સ્વીકાર્યો ને કૈનેનશાસન બહુજ દીપવા લાગ્યું. દેવયશ સુનિ અને ઝક્કિમણું સાધ્યો સમ્યક્ પ્રકારે ચારિત્ર પાળા—કેવળજ્ઞાન પામી તદ્દલવે સુક્ષ્મિ પાન્યાં સ્થૂલા-દ્વારા દાન વિરમણ પ્રત પ્રતિપાલનથી આમ આ પવિત્ર દેવયશ સુનિ સુક્ષ્મિ પાન્યા.

આ મમાણે પ્રથમ કથા પ્રભુએ શ્રી દાનવીર્ય રાજને સંભળાવી. હવે ભીજુ કથામાં પ્રભુ દાનવીર્ય રાજને નાહટ ઓછીની કથા કહે છે. ત્રીજી અણુ-પ્રતના પ્રથમ અતિયારનું સ્વરૂપ સમજાવતા પ્રભુ વિસ્તારે છે. દાનવીર્ય રાજ અને અણ સૌ જ્ઞાસુઓ આ પ્રભુ વચ્ચનામૃતનું પાન ચાતકની જેમ કરે છે:-

વિશાળ લક્ષ્મીના કલ્યાણનિર્માણ સમાન ભાદ્યિલપુર નગરે સ્થિરરેવ શ્રેષ્ઠ અને કમલશ્રી તેની લાર્યા વસે છે. તેના લોલી અને ઉન્માર્ગામી નાહટ નામે પુત્રને ડોઢ તેનો મિત્ર વ્યાપારનો લોલ ખતાવી નગર બહાર અનેક

૧૧

મુનિગણ્યથી પરવરેલા એક સૂરિ પાસે લઈ જાય છે અને વિનંતી કરતાં ધર્મને  
ચોથ્ય જણી સૂરિ તે અષ્ટીપુત્ર નાહટને પોતાની પાસેના કીમતી રત્નો બન-  
તાવે છે. સમ્યક્તવર્ણી મહા રત્ન તને પસંદ પડે તો ગુણ્ય કર. આ સમ્ય-  
ક્તવ રત્ન લૈને શાસનદીપી ક્ષીર સાગરમાથી પ્રકટ થયેલું છે. સર્વ ગુણ્યથી  
સંપૂર્ણ અને ચિન્તામણી રત્ન સમાન મનોવાચિષ્ઠ અર્થ આપવામાં એષ્ટ  
છે. વળી શુદ્ધ છે કાંતિ જેની એવો આ અને પ્રાણીવધ વિરતિનામે હાર છે.  
જેમાં મન વચન કાયા એમ વણું નાણ ગુણ્ય કરતાં નવ થાય એવી નવ સેરો  
રહેલી છે ” વિગેરે યુક્તિપૂર્વક વચનોવડે મુનિ ધર્મ અને ગૃહિ ધર્મ વિસ્તા-  
રથી સંભળાવતાં તે બનેએ ગૃહિધર્મ રવીકાર્યો ને પાલન કરવા લાગ્યા.

પણ લોલી એવો નાહટ પોતાના ત્રીજાવૃત્તને કલાકિત કરતાર દુષ્ટૃત્યને  
આહરે છે ને મિત્રનો વાર્યો છતાં ચોરેલો માલ ધન લેતાં પકડાઈ રાજ્યદંડ  
સહી કુલની કાર્તિક ધન વિગેરે સર્વસ્વ ગુમાની પર્યાલોચના કર્યા શિવાય મરી  
નરકષણ કરે છે આમ ત્રીજ વતના પ્રથમ અતિચારનું સ્વરૂપ પ્રભુ પ્રકાશે છે.

હવે ત્રીજ વતના દ્વિતીયાતિચારનું સ્વરૂપ સંભળાવવાની દાનવીર્ય રા-  
નાની નમ્ર વિનંતી ઉપરથી પ્રભુ દ્વિતીય સ્તેન પ્રયોગાતિચારપર મહનની  
કથા વિસ્તારથી સંભળાવે છે.

કુસુમસુર નગર અનેક ગુણ્ય પુરુષોવડે સેવાયેલું જણાવે છે. તેમાં વહન  
કર્યો છે પૃથ્વીનો ભાર જેણું, દ્યાધી વ્યાત હૃદયવાળા—ઉત્તમ વંશમાં ઉત્પન્ન  
થયેલા પર્વત સમાન સ્થિર ખુદ્ધિવાળા વૈરોચન રાજ રહે છે. આ રાજના  
પુત્રનો મિત્ર મહન છે. રાજકુમાર પ્રભા પીડી તેમનું ધન અદિ હરી લે છે  
આથી રાજ પુત્રને સખ્ત ટપકા હેતાં કહે છે:— “હે દુરાચારી ! મારું રાજ્ય  
છોડી ગમે ત્યાં ચાલ્યો ન ! તું મારો પુત્રજ નથી. મારા પૂર્વજીએ મહા  
યત્નથી પાણેલી પ્રભાને કિયાવડે લુંટી મારી કીર્તિને તેં દુષ્પિત  
કરી, પણ અને પુત્રમાં સમાન રાજનીતિ રાખવા પંડિતો સત્યજ  
કહે છે. હું તારા ખુલ્લા દ્વારાને છુપાવી યોગ્ય દંડ નકર્યા તો નીતિ  
માર્ગથી વિપરીત ચાલતાર ગણ્યાઉં પોતાના રાજ્યમાં સર્વ જ-  
નેત્રું સમભાવ પૂર્વે નીતિથી પાલન કર્યું તેજ લક્ષ્ણહોમ—સરો-  
વર કૂવા અને હેવમનિદરાદિક બનાવવા સમાન ગણ્યાય.”

१२

આહા ! પૂર્વના નૃપતિઓ ! ડેવા ઉચ્ચારય, નીતિ અને ધર્મના તેમજ શાસનના પાલનકર્તા-પ્રાખર સત્ય માર્ગાનુગામિ ? પુત્રને પણ પ્રણથી વધુ પ્રિય ન ગણુનાર ! પણ અને પુત્રમાં સમાન નીતિ ધરુનાર અને પ્રણ પાલન-માંજ લક્ષ્ણોમતું પુણ્ય માનનાર ! આવો ! ભૂતકાળના પુણ્ય લોક નૃપતિઓ ! આવો અત્યારે અમારા ભારત વર્ષમાં અને શિખવો અમારા વર્તમાન નૃપતિઓને નૃપધર્મ-પ્રણધર્મ !

રાજપુત ચાલ્યો જય છે ને રસ્તે એક સુનિનાં દર્શન તથા કોઈ ઉત્તમ યોગ પામી ધર્મભાવનાવાળો થાય છે. બાદ તેને બહુ પ્રકારે રાન્ય લાલ વિગેરે થાય છે અને રાન્ય સાથે પોતાનું લીધેલું વત યથાસ્વરૂપે પાળી મોક્ષ સુખ વરે છે. ન્યારે મહન તે વતના અમતિપાલનથી રૌદ્રધ્યાનવંડ મરી નીળ નરક જય છે.

આ પછી લગ્વાનું સુપાર્વ પ્રલુબુ શ્રી દાનવીર રાજને વીજાન્તરના તૃતીય વિરુદ્ધ રાજ્યાતિકમાતિચાર ઉપર ઉદ્ઘટન એણિની કથા કહી અતાવે છે.

તત્પ્રાત તૃતીય અણુદ્રતમાં ચ્યાથા અતિચારપર વર્ણણવણિકની કથા વિસ્તારથી સંભળાવે છે. તેમાં નીજું વત ધારણું કરી ને કુટ ( ખોટાં ) વળન અથવા માનાદિકથી વ્યવહાર કરે છે તે ઉભય લોકમાં હૃદ્યી થાય છે તે પર આ કથાનો અધિકાર છે. આ કથામાં હરિવિકભ રાજ લોકાની દ્વારા લીધે ( લોકા ધર્મ પાળે એ આશયથી ) ચૌટામાં ભરતચક્રતિર્તનું નાટક કરાવે છે ક્યાં આજના તરગાળા અને ભાંડ લવૈયાઓના ક્ષુદ્ર અલિનયોથી રીતતા વર્તમાન નૃપતિઓ ને ક્યાં પૂર્વના ગંભીર આશયવાળા ધર્મભાવના-ભર્યાં ઉત્તમ નાટકો ધર્મદાસ્ત્રે જોવાની લાલાસવાળા મહારાજાઓ ?

ભરત નરેશનો અરિસા લખનનો અંગોગ-અંગળીએથી એક સુદ્રિકા નીડળી જતાં ઉપજતો વૈરાગ્ય-તેથી ભાવના શેણિએ ચલતાં ઉપજતું કેવલ્ય ગ્રાન ને પાંચસો રાજાઓ સાથે સુનિવેશ લર્દી ચાલી નીકળલું-આ સૌ તથા વૈરાગ્યોપદેશક વચ્ચેનો સંભળા શેણિપુત્ર વર્ણણ વૈરાગ્ય ઇપી રંગ-શાળામાં ઉત્તરી પડી પોતાના જેવા સત્વહીન માટે કર્દી ધર્મપ્રાપ્તિનો માર્ગ પુછે છે ને તેને સમ્યકૃત્વાદિ બાર પ્રકારનો ધર્મ સંભળા-

१३

વयामां आवे छे, पिता सहित वडणु वत अंगीकार करे छे. पण कुट तोलाहीथी धनप्राप्तिमां पडी जय छे ने त्रीज अखुवृतना. योथा अतियारना होप करे छे ते पिता वारे छे छतां मानतो नथी. तेना पिता तेने धनश्रेष्ठिनुं दृष्टांत दृष्ट तेमां धनश्रेष्ठिनुं सत्वयुक्त चारित्र अतावे छे. अने कुटवाहीओने थतां हुःअ दर्शावे छे छतां वडणु न उघ्यो.

ऐक वर्षते डोच राजभुद्ध वडणुने त्यांथी भाल भरीहे छे ने ते वजनमां ओछो थतां तेनां काटलां—भाप विगेरे राज हरणारमां भंगावी तपासतां अमात्य तेना पितानी अर्धी संपत्ति हुरी लाई भाला कुप्ते तेने ज्ञवतो छेडे छे. पण दृष्ट्यांधने प्रथम अंधावाथी जर्जरित थर्ड तेनी वेहनाथी अंत अभये आर्ताध्यान करी भरी लुंड योनिमां अवतरी अनंत अवभ्रमणु करे छे.

हवे त्रीज अखुवृते अंचम तत्प्रतिइपदव्यक्तप्रातिवार उपर सागरचंद्र श्रेष्ठिनी कथा भगवान कहे छे. सागरचंद्र भालमां भेण सेण कुरवाथी वध अंधनाहि हुःमो वेही व्यतंतर थाय छे तथा गुणुचंद्र वृत्त प्रति पालनमां दृढ रही भोक्ष प्राप्त करे छे. आम त्रीज अखुवृत पर भगवाने प्रथक प्रथक कथाओ दानवीर्य राजने संलग्नावी.

हवे पृष्ठ ५० थी योथा अखुवृतनुं रवइप्रभु समन्वे छे ने ते पर भाषासत्ववान—‘स्वदारा संतोषी वीरकुमारनी कथा कहे छे. तेमां ऐक मुनीदिनी आसपास ससलां भृगलां पाडा घोडा हाथी सिंह वाघ आहिने परवपर वैरवाणां छतां निर्बायपणे चिनलावे ऐडेलां नेई वीरकुमार चक्ति थाय छे, साधुओमां रहेली हायाकावलरी सात्विक वृत्ति अने तेनो प्रभाव अहीं साक्षात् जणाय छे. त्यां कुमार उपहेश सांबणी प्रथक प्रथक वृत्त द्ये छे. ने तेनो परिवार पण उत्तम विचारवाणो थाय तेमां शी नवार्ह?

ऐकहा राज पोताना कुमारेनी परीक्षा माटे “पंचाल हेशनो अधिकारी वर्षी हश लाख सोनीया उत्पन्न करावी आप्ये छे, ज्यारे भीने पंदर लाख सोनीया उत्पन्न करावी आपवा कुहे छे तो प्रथमना अधिकारीने जणावतां हश लाखथी वधु उत्पन्न पोते करावी शक्ते नहीं ऐम जणावे छे तो हवे शुं करवुं?” ऐवो अश पुछे छे. सौ राजकुमारो पंदर लाख

१४

प्राम उरावी आपनारने त्यां निभवा जणुवे छे, ज्यारे वीरकुमार ने पूछतां  
ते प्रथमना अधिकारीनेझ राखवाने न्याय नीतिथीझ दृश्य उमन उरवा मत  
आपी ० केटलांड उत्तम राजनीतिनां ऐधवयन कुहे छे ने छेवटे ओक  
श्लोक कुहे छे:—

दुर्घमादाय धेनूनां, मांसाय स्तनकर्तनम् ।  
अत्युपादानमर्थस्य, प्रजाभ्यः पृथिवीभुजाम् ॥

**अथ॒—**“ राज्ञओऽमे प्रज्ञ पासेथी भर्यादा उपरांत उर लेवो ते  
गायेनुं हुध लध लीधा पठी तेनां भांस भाटे रतन ( आंचण ) कापवा  
बरोबर छे.” अहा हा ! केवी उत्तम सिद्धांतानी भाणु नेवी शिक्षावली ?  
राज्ञओने भाटे आ श्लोक सर्वोत्तम गण्ही शक्तय तेवो आदर्श छे. वर्तमान  
इने आ श्लेषेक्तुं प्रतिपालन करनार राज्ञीगो भारत वर्षमां  
क्यारे पाक्षे ?

राज्ञ वीरकुमारने भद्रा भुद्धिशाणी ने सत्त्ववान जणु तेने वधु कीर्ति—  
सत्त्व अने प्रखाव प्राप्ति अर्थे विदेश मेडली हे छे ते विमल भंगापुग  
साथे ते वीरकुमार हेशाटने याह्यो ज्य छे. धीर वीर पुझें पृथिवीपटे  
पर्यटन ढरी धन यश अने सौभाग्य प्राम करी लावे छे. कुमार डाशलपुरमां  
आवतां त्यांनी राज्ञकुमारी के पुढ्य देविणी छे तेने पोताना भुद्धिभगवडे  
पोतानी अतुगामिनी करी परषे छे. राज्ञ राज्ञकुमारना रसोउ भांसाद्धि  
रहित रसवती भाणी तेनुं कारणु पूछतां वीर कुमार पोतानो भांसाद्धि त्याग  
नियम जणुवी विवाह निभिते भांसाद्धि त्याग करावे छे अने उपहे-  
शाहिथी राज्ञने पणु भांसाद्धि बंध करावे छे.

ओकदा हृती माईते राज्ञ भंगी, नगरशेइ अने प्रतिलारनी स्त्रीयो कुमा-  
रने भोग विलास भाटे कुहेणु भेडले छे तेने ( राज्ञ समक्ष ) कुमार उपहे-  
शाहिथी प्रतिभेद आपे छे अने अनेक दृष्टिं ते चारेने भूनभार्गे होरी  
तेमने परपुड्यनो त्याग अने सम्बद्धत्व प्रतनो स्वीकार करावी ज्यवा हे छे.  
आ परथी आपणे धण्णो उत्तम ऐध लध शक्तिये ओभ छे. जरा जरामां  
विच्यलित अनी उडती चंचण वृत्तियो पर अंकुश राखवो—अति सुन्दर  
स्वरूपने भोग्यज मानी लेध तेमां अंध अनी जतां द्विलने रोक्यु—

१५

राज लोकनो त्याग करवो ए अति मुश्केल छतां सत्ववंत लाङ्यशाणीओ  
डेवी रीते प्रलोकनोने होकरे भारे छे ते आ कथामां नेवा जेवुं छे.

छेवटे राज प्रतिष्ठाध पाभी कुमारने राज सोंपी राणी साथे दीक्षा  
ले छे. कुमार पण्य विनयशील एवा विमलने राज्य सोंपी पिता पासे जध  
तेमने सहुपहेरा दृष्टि—लध पिता प्रवन्या लेतां त्यांतुं राज पाभी  
चिरकाण ओगवी आवङ्क धर्म निरतिचारपणे पाणी दीक्षारभएनि वरी नाना  
प्रकारना देशइपी सरोवरमां लव्य प्राणीइप कमलोने प्रतिष्ठाध करी सूर्यनी  
ऐडे भोक्ष पामे छे. आम युवान सर्व सामयी सहित सताइप लक्ष्मीने  
समयानुकूल सामयी भणे छते चोयुं वृत निरतिचारपणे प्रतिपालन  
करवामां आदर्श एवा वीरकुमारनी कथा प्रभुओ उडी.

प्रभु तत्पश्चात् इत्यर परिशृङ्खीतागमनातिचार पर वज्र विषुक्ती  
कथा विस्तारथी कहे छे. तेमां दृश्य आपीने थोडा समय माटे राखेली वेश्या  
स्त्री पण्य पर. स्त्री गण्याय माटे तेनो संग करनार पण्य महा पाप करी उल्लय  
लोकने अगांडे छे तेनुं वर्णुन वज्र विषुक्ते द्रष्टांते कहे छे.

द्वितीय अपरिगृहीता गमनातिचार पर हुर्क्कल विषुक्ती कथामां कुलदा  
अने अनाथ विधवाओ. परखीज गण्याय ते पर विस्तार पूर्वक हुल ल विषुक्त  
आ वृत अंडनथी डेवां महाकटो पाग्यो ते जण्यावतां प्रभु डेवो उपदेश  
आपे छे:—“ सर्व लोको धनने माटे संब्रांत थध उद्योग करे छे पण्य धननुं  
कारणु मुभ्य धर्म छे ने तेनो माटे तो सर्व लोको सदाकाण निझ्योगी रहे छे.  
ने धर्म विना भनोवाच्यित एमने एम सिद्ध थतां होत तो समस्त गण्य  
लोकमां डाणु हुभी रहे ? ”

लहिवपुरना अरिकेसरी राजनी मातृडीना शुख्यसुन्दरी नामे राज-  
कुमारी वस्त्राभूषणयी विभूषित घनी पिताने वंदन करवा जतां त्यां तमे  
डोना प्रतापे आ सुभ वैक्षव लोगवो छो ? ” एवा राजप्रीनना जवायमां  
सौ राजना प्रसाहे एम कहेतां राजकुमारी ते प्रश्नना जवायमां चोतानां  
शुभाशुभ उर्मना पसायने आगण करतां केंद्रे भराई राज तेने कोई ह-  
रिद्री लाकडांनी लारी वेचनार साथे परणावी वस्त्राभूषण लार्क्किई लर्खु वस्त्र  
सहित दरिद्री साथे रवाना करी हे छे ने पूर्वोपार्जत सुझृत्यनो अनुभव करवा

૧૬

કરમાવે છે. ગુણસુનદરી પણ પતિ સાથે ચાલી જય છે ને પોતાના ચતુરાઈ આહિ શુણોવડે સદ્ગુણમથી વિપુલ ધન વૈભવ પામી પિતાને મળી તેને ધર્મ સમજાવી વધુ ધર્માવણુ માટે સદ્ગુરુ પાસે લઈ જય છે. ને લાં રાજ ઉત્તમ ઓધ સાંભળી પોતાના ( કઢીયારા ) જમાઈ પુણ્યપાળને રાજ્ય સૌંપી દીક્ષા લઈ અતે મોક્ષ પામે છે.. આ દૃષ્ટાંત સાંભળી પંથી વણ્ણિક પિતા પુને ભાર પ્રકારને આવક ધર્મ અંગીકાર કર્યો. પિતા તો ઉઘમ પૂર્વક વત પાળે છે પણ દુર્લભ કુલટા વિગેરે સાથે કિયા કરે છે ને વાર્ષા જતાં ચતુર્થવત ખાંડીત કરી બીજાં અણુવતો પણ અડે છે. પ્રાતે એક ક્ષત્રિયની બાલ વિધવા દીકરી સાથે ચેણ્ટા કરવા જતાં તેના પોકારથી તેના પરિ જનોના પ્રહારાદ્ધિ તે મૃત્યુ પામી અથભ નરક ગયો. આમ અપરિણિતા રીતો સર્વથા ત્યાગ કરવા પૂર્વકનો વિસ્તારથી અધિકાર પ્રલુબે પ્રકારથો.

તત્પત્રાત્ તૃતીય અનંગ કીડાતિચાર પર ધનદત શેષિની કથા તથા ચતુર્થ પરવિવાહાતિચાર પર દુર્ગાશેષિની કથા, પંચમ તીવ્રાલિકાપાતિચાર પર સુયશશેષિની કથા ધણ્ણાજ વિસ્તાર પૂર્વક અને અતિ રસપ્રદ-દૃષ્ટાંતો સહિત, મધુર વાણીવડે કરી ભવિજનને હિતકારી જણી દાનવીર્ય રાજને સંભળાવ્યાં છે- આ કુથાઓમાં વિવિધ પ્રસંગના રંગનાં આલેખન લેખક અહુજ ખુશીથી કર્યાં છે. પૃષ્ઠ ૧૦૧ થી સ્થૂલ પરિગ્રહ પરિમાણ વત પર ઉપહેશ આપવા પ્રલુબે દાનવીર્ય રાજ વિનંતી કરતાં કહે છે કે ‘ હે ધર્મરક્ષક ! જગદ્ગુર ! પંચમ અણુવતનું સ્વરૂપ સમજાવો !

ક્ષેત્ર, હિરણ્ય, સુવર્ણ, ધન, ધાન્ય, મનુષ્ય, પણ અને અન્ય ધાતુ વિ-  
ગેરે વસ્તુઓનું પરિમાણ કરવું તે સ્થૂલ પરિગ્રહ પરિમાણ વત કહે-  
વાય છે.

આ વત પર પ્રલુબે સુપાર્શ્વસ્વામિ સુનદર એવં સદ્ગોધનાયક સેન-  
શેષિની સંવિસ્તર કથા કહે છે.

સુવર્ણમય ધ્વનિપતાકાયોથી સુશોલિત તથા અનેક નૈન ભદ્રિએ  
જેમાં શોલી રહેલાં છે એવી કુંચી નામે નગરીમાં નરપાલ નામે રાજ રાજ્ય  
કરે છે. ભૂતકાળમાં સુવર્ણ ધ્વનિપતાકાયો ધનાદ્યોની હવેલીએ પર  
કરક્યાં કરતી હોય એમ નૈનમંદિરોની વિપુલતા જણ્ણાય છે. આ વર્ણન

૧૭

ભૂતકાળના ગત વૈલવો અને ક્લેનર્ધર્મ પ્રચારની સ્થિતિ પ્રતિપાદન કરે છે. બહુ ધનાદ્ય એવા સેનશ્રેષ્ટિની કમલની માલા સમાન સર્વ ગુણું સંપન્ત એવી કુવલયમાલા નામે પલ્ની છે. આ નામ ડેવું સુન્દર છે? તેમને ત્રણું પુન્નો હરિ, હર, અહ્મા. તેઓ સુવર્ણ સમાન કાતિવાળા, સર્વ કલાયોના પારગામી અને નીતિશાખના નિધાન રૂપ હતા. તંદુરસ્ત અને ખાનદાન ઓલાદાનાં સંતાનની કાંતિ સુવર્ણ સમાન હોય, સર્વ કલાયોના પારગામી? ( બી. એ. એલ. એલ. બી કે એમ એ થાય તેજ વિદ્વાન અગર કલાધરો ગણ્યાતા આ જમાનામાં કલાધરો ૧૪ કે ૭૨ કલાયોના પારગામી હશે? ) અને નીતિશાખના નિધાન હોય એમાં શી નવાઈ?

આ કથામાં સેન શ્રેષ્ટિની વત પ્રતિપાલનની તિવ અલિલાપા પૂર્વકની અવૃત્તિ નિઃસ્વાર્થ અને સતોપણતિ, તથા વ્યંતર સહાય છતાં રાજપ્રતિ વદ્ધારી અનુકરણીય છે. આમાં સેન શ્રેષ્ટ રાજની મદ્દથી રાજનું તથા વ્યંતરની મદ્દથી પોતે મેળવેલું અનર્ગણ દ્વય સાતે ક્ષેત્રોમાં વાપરી દીક્ષા લઈ કર્મ ખપાવી અતે તે સિદ્ધિપદ વરે છે. સતોપ રૂપી રસાયનનું પાન એ આદર્શ આ કથામાં છે,

તત્પત્રાત પ્રલુ દાનનીર્ય રાજને તેમની અતિ વિનિત વિનતીથી પ્રથમ ક્ષેત્ર વસ્તુ પરિમાણુતિકમાતિચાર પર નવધન શેડની સુન્દર કથા વિસ્તારથી કહે છે.

દ્વિતીય રૌપ્ય સુવર્ણ પરિમાણુતિકમાતિચાર પર ભરતશ્રેષ્ટિની કથા અહુજ સુન્દર રીતે સંભળગાની છે. જે પુરુષ નરેંદ્રાદિકની સહાય મેળવીને પરિગૃહીત નિયમથી વધારે દ્વય મેળવીને પક્ષી તે દ્વય પોતાના ભિત્રો વિગેરને વહેંચી આપે છે તે દ્વય વિરતિનું વત અંદું કરે છે. આ ઉપર ભરત શ્રેષ્ટિની કથા અતિશય મનન શીલ છે—આદરણીય છે.

ધાન્યએટ નગરના માનવરાજ નામના નૃપતિના રાજ્યમાં શાંખશ્રેષ્ટિને ક્ષેમિકા નામ પલ્ની તથા ભરત અને રતન નામે એ પુન્નો હતા. સૌ કુટુંબ સંખેલું અને પરસ્પર સ્નેહભાવથી વર્તનાર હતું.

ઉદ્ઘાનમાં વિજયસૂરિ ગણ્ય ચાર રાન સહિત ક્ષમાના સાગર સમાન પધારેલા. ત્યાં કિંડા અર્થે ગયેલા બેઠ બંધુઓએ તેમને જોયા—અક્તિપૂર્વક

वांदा ने सूरिण्ये तेमने यथायोग्य उपहेश दीधो ने तेथी प्रतिभेदीत अन्नेए सम्प्रकृतव मूण गृहीधर्म स्वीकारें तथा पंचम वृत विशेष वधु संकीर्णताथी लीधुः गुरुणे वारवा छतांये जाणु तेनी परीक्षा माटे होय तेम लक्ष्मी देवी तेना ना पाउवा छतां केाटि द्रव्य आपी जाय छे ने पोतानां सगांने वहेंची आपवा जाणुवे छे अने ते ग्रभाणु ते करे छे. आ जेई रखस पोताना आधने शिखामण्ह दृष्ट दृष्टां हे छे के एक धनशेषिभित्या द्रष्टि छतां लक्ष्मी देवी जवानी रज्ञ माजे छे त्यारे तुर्त चाली जवा जाणुवे छे. तेथी प्रसन्न थर्ह लक्ष्मी वर भांगवा कहेतां धनशेषि “भाव दुरुंभ केाधपिण्ह समये हंत क्लेशथी झुकुं न पडे तेवो बहेअस्त करवा” जाणुवे छे. दुरुंभसंप होय त्यांज लक्ष्मी वसे ए सूत्र व्याख्यात अस्तार समजनार अष्टिनी अतुराध समण जाच त्यांज वसी. छे. जे के भित्या द्रष्टि छतां धने लक्ष्मीनो लोलन कर्यो ने तुं गानी, आवड ने परिषद्यना नियमवाणा थर्ह आ शुं करे छे? आधी उलटो लरत तेनो तिस्कार करी तेने निष्ठ्रसे छे ने रखस तेने कांध न कहेतां जुहो रहे छे. अने विधिपूर्वक धर्म तथा वृत्ताराधन करे छे. लरत वृत भांग करतां राज-हंड पामे छे ने दंडाध दरिद्रावस्था पामे छे, न्यारे रखस धन-वैलव संपन्न थाय छे.

ऐकदा केाध चाडीयाना कहेवा परथी धनवान रखस पासेथी नाणुं कठाववा राज युक्ति करी तेने त्यां भंत्रीने भेडले छे-भंत्री पेटीयो आली जुवे छे ने आश्र्य यकीत बने छे. राज पासे रखसने लध जतां पोते इतीआ दश हुनर हमण्हांज पेटीमां मुकेला छतां क्यां गया ते समण शकतो नथी एम जाणुवे छे अने गुम रहेली देवी आकाशवाणी करी राजने रखसनी निर्दीभ-तानी आत्री आपी ते नैनधर्मी छे ने तेने पीड्यामां आवशे या तो तेना द्रव्य के केाध वस्तुपर अहनज्जर करवामां आवशे तो राजने सपरिवार युरे-युरा करीश एम कठी ते चाडी करनारुं सुअ वांकु करी छेअयो-ते पछी सर्व द्रव्य पाखुं रखसनुं जाणुवा लाग्युं. पछी रखस पणु अनाथाहिने दान आपवा लाग्यो अने धर्माराधन करी समाधि भरणुवडे अक्लोकमां उपन्यो अने त्रीने भवे भोक्ते जशे तथा लरत पंचम प्रतने क्लंकीत करी नागलो-कमां उत्पन्न थर्ह धणु करणने अते भोक्त सुअ पामशे.

पृष्ठ १२५ थी श्री सुपार्श्वनाथ प्रभु दानवीर्य राजने धन धान्य-

પરિમાણાતિકમાતિચાર પર દેશળ આવણી કથા સંભળાવે છે તથા ચતુર્થ દ્વિપદ ચતુર્થ પરિમાણાતિ કમાતિચાર પર દુર્લભ જોપની કથા વિસ્તારથી વર્ણવે છે. પંચમ કુષ્ય પરિમાણાતિકમાતિચાર ( એટલે પોતાના મૂળ નિયમથી અધિક થદ ગયેલી પાગાદિક વસ્તુઓ બાંગીને ફરીથી તેટલી સંખ્યા પૂર્ણ કરવી તે ) ઉપર માનહેવની કથા કહી બતાવે છે. અહીં પાંચે અતિચારનું સ્વરૂપ પૂર્ણ થાય છે. આ કથાઓમાં આડ કથાઓ પણ રસમાં વૃદ્ધિ કરી ઉપદેશને વધુ રસાળ ને દ્રદ કરે છે.

છુટા હિંગપરિમાણવત ( જે આવક હંચી નીચી અને તિર્યક્ત તિશા સંબંધી ગમનાગમનથી યોજન સંખ્યાતું પ્રમાણ કરે છે તે ચૌદ રનજી પ્રમાણ લોકમાં રહેકા જીવાને અભયદાન આપવામાં હેતુલુત થાય છે ) ઉપર મનોરથ વણિકની કથા કહે છે.

આમાં સુધન બ્રેષ્ટિની મહિમા પતનીથી ઉત્પત્ત થયેલા મેધરથ અને મનોરથ નામે એ પુત્રો એકદા આપ્રવનતમાં કુઠાર્થી જતા હતા ત્યાં મહા પ્રભાવિક મુનીદ્રિતે જોતાંજ તેમને નમી તેઓએ આવા ભર યૌવનમાં ડાંડાક્ષા લીધી એમ પુછ્ઠાં વૈરાગ્ય ઉપરાંત એક રાજકન્યા પણ મારા વૈરાગ્યનો હેતુલુત છે એ જણાવતાં તેનું ચરિત્ર પણ તેઓ પૂછે છે. ને મુનિ પોતાતું જીવન વૃત્તાંત ઉપકાર દશ્ચિયે કહે છે.

ધરણી તિક્ષક નગરના રાજ મહેશ્વરની તિલોતમા નામની અતિ સુન્દર ને જાની પુરીને રાજ પ્રશ્ન કરે છે—પુરી ! તહારો ભર્તા ડાણુ થશે ? તેના જવાબમાં તે રાજકન્યા પોતાનો ભર્તા સુભટ, નૈમિત્તિક અથવા વિજાનવેતા થશે એમ જણાવે છે. આ પરથી તત્સમયની લલનાઓની શરૂવીરતાપરની પ્રીતિ, નૈમિત્તિક જીવન તથા વિજાન પરની અક્તિ આસક્તિ પ્રકૃત જણાય છે. આજની શુદ્ધ કેળવણી અને તે સમયના જીવનમાં આસમાન જમીનનો ફરદ આ પરથી અવસોધાય છેજ.

હવે રાજ તેવા ડાઈ ગુણે વિભૂપિત વીર, નૈમિત્તિક ડે વિજાન શાસ્ત્રીને જમાતું તરીકે શોધી લાવવા અનુયરો પાડવે છે. ને જુહે જુહે સ્થળે તપાસ કરવા મંગી પ્રતિહાર આદિ નીકળી પડે છે મંગીને એક શરૂવીર નર મળે છે જે પોતાતું અદ્ભુત વીરત્વ મંગીને બતાવવા મંગીના હન્દર

૨૦

સુલટોને ક્ષણુમાં હજનર આણો વડે એકલોજ પરાજિત કરે છે. આ ચતુરાઈ અને વીરતા જોઈ તેને પોતાની સાથે જમાછ તરીકે પસંદ કરી લઈ જય છે. ને જોશીના કથનાનુસાર સાતમે દિવસે લગ્ન નક્કી કરે છે.

પ્રતિદારે એક વૈશ્ય વિજાન શાખીને મહા પરિશ્રમે શોધી કલાડી તેના બનાવેલા અદ્ભુત કારીગરીઓણા રથમાં બેસી તે સ્ત્રોધારને પોતાના સ્થળે જવા સ્યાવતાં તે સ્ત્રોધાર તે યંત્રોવાળા રથને આકાશમાર્ગે લમાની કીલિ-કાપ્રોગવડે ધરણીતિલક રાજ પાસે લઈ ગયો. ત્યાં તેની ને કુમારીની સુલાક્ષણ થઈ ને કુમારીએ તેને પસંદ કર્યો ને તે સ્ત્રોધાર ત્યાંજ રહ્યો.

સ્થગિધરે ભ્રમણુ કરતાં એક ત્રિકાળદર્શી સુદર્શન નામે ઉત્તમ નૈમિત્તિકને શોધી કાઢ્યો અને પોતેજ ત્યાં આવી તેણે સાતમે દિવસે લખ નિધાર્યુ. હવે સુલાટ-રથકાર ને નૈમિત્તિક એ ત્રણે કુમારીના ઉમેદવાર થયા.

એટલામાં ડોધિક તે તિલોતમા કુમારીને હરી ગયો. રાજને નિમિત્તિઓને પુછતાં તેણે બતાવેલ સ્થળે રથકારના રથની મદદવડે તે સુલાટવિધ્યાટ્યાભીમાં ગયો તો ત્યાં એક પુરુષ તે કન્યાને મધુર વચ્ચને વિનવતો જોયો. તેને આવાહન કરી હરાવી કન્યાને રાજ પાસે લાવવામાં આવે છે અને તે ત્રણે જણુ કન્યાને પરણુવા પરસ્પર લાઠે છે. અતે સૌચે પોતપોતાના પ્રભાવથી કન્યાને લાવવામાં કરેલી મદદ જણાવી પણ આખરે સુલાટને તે કન્યા વરી ને બીજા એ વિલભા થઈ પાણ દ્વારા.

આમાં પૂર્વીકાલીન કણાઓનો આદર્શ આપણું સમક્ષ રજુ થાય છે. એકજ માણસ હજનર આણુ સામટાં છોડી દુઃમનતે પરાજિત કરી શકે એ ભળ-કળનું અદ્ભુત દર્શન અહીં થાય છે. સ્ત્રોધાર યંત્રોદ્વારા :થ બનાવી આકાશમાં ઉડાવી નિમેષમાત્રમાં ધર્યાલે ટેકાણે પહોંચ્યે. એકલા કારીગરીનો આદર્શ તથા નૈમિત્તિક સાનથી ડોણ કર્યાં હશે તેની ખબર મેળવી તે ક્રમે લગાડી શકાય એ જાનની વિશિષ્ટતા !

હવે રથકાર કુમારીને પામી ન શકવાથી પોતાનાં સ્વજન, સંપત્તિ, ધન, પરિજન કે વિજાનને અદ્દળ માનતો જીવિત પરિસાગ કરવા ઉચ્ચા પર્વતના શિખર પર જતાં ત્યાં ધ્યાનસ્થ મુનિને જેતાં તેમની પાસે જાઈ વંદન કરી ઐસતાં મુનિએ પુછતાં સર્વ વૃત્તાંત તેમને સંલગ્નાવી દે છે.

२१

मुनि एवा अकार्यथी तेने वारी मुनि धर्मनो उपदेश आपी दीक्षा आपे  
छे, तेज मुनि हुं पोते.

आ अवणु करी वैराग्य पूर्वक पोते भेदरथ तथा तेनो बंधु सन्धकतवादि  
वृत ले छे, तेमां विशेषे हिग्रन्त अलणु करे छे. अन्यदा ऐसि भाईयो  
द्रव्यार्थे विहेश जतां करियाणुं वेचवा दूर देशावर ज्वाना निर्णयपर  
आववा यर्यां करतां भेदरथ नत लंग करीने पणु ज्वा कठिसङ्क थतां  
भनोरथ सर्वभाल तेने आपी इच्छा निवृत थाय छे ने भेदरथ आगण वधे  
छे. रस्ते वाराण्सीमां दाणु चोरी करे छे ने अपभान पामे छे. ने अन्नर  
सोंवें थाय जतां तुकशानमां आपी इच्छा धर्मथी पणु पतित थाय छे.

अहीं भनोरथ उन्नत्यनीमां रहे छे. त्यां राज्यपुत्रने सर्पदंश थतां  
गाढ़ीयोना धणु प्रयत्ने विष नथी उतरतुं, त्यारे नगरमां हाहाकार अनी  
जतां पटह वजडावे छे ने अधुं राज्य लाई सर्प उतारनारने आमंत्रे छे.  
भनोरथ पोते ज्यां रहे छे ते भलेन्द्रसिंहनी आज्ञा लाई ज्वा तसर  
थाय छे. ने त्यां जर्दी नैषेधिकीना उपचार पूर्वक पंच परमेष्ठि स्तोत्रना  
समरणु पूर्वक नमस्कार भंत्रथी राज्यकुमारने सज्जवन करे छे. त्यां परमे-  
ष्ठिना अवणुयी राज्यकुमारने पूर्वाभवतुं ज्ञान थाय छे. ने भिथ्यात्व दूर  
थाय छे. ने व्यंतरे ते कुमारमां सर्पपणे उशी प्रवेश करेलो ते व्यंतर  
पूर्वाभवमां देशविरति व्रतथी अष्ट थयेलो. हतो तेभ ज्ञाय छे. ते व्यंतर  
देशविरति वृतथी केम अलित थयो ते पोताना पूर्वाभवनी लंभाणु कुथा  
कहे छे तेमां धर्मी आउ कुथायो आवे छे.

राज्य भनोरथना आ भद्रा कार्यथी प्रसन्न थाय तेने पोतातुं राज्य  
आपवा ज्ञानावे छे पणु निःस्पृह भनोरथ तेन लेतां राज्यने धर्ममां  
स्थिर करे छे ने राज्य तेने नगरशोडना पहे नियुक्त करे छे. ने ते ज्ञैन धर्म  
प्रतिपालन करतो थडो त्यां सुखपूर्वक वसे छे.

दैलनशारी भनोरथनी हुकीकत भेदरथना ज्ञानवामां आवतां दरिद्री  
थयेलो ते भाईना दारे आवे छे ने भनोरथ पणु तेने पोताने त्यां  
पोतानी केम राखे छे ने पोताना भाता पिताने पणु भोकावी सौने धर्म-

२२

ધ્યાનમાં દ્રદ કરે છે. આમ હિગ્ર પરિમાણુ વ્રતના પાલનનો પ્રભાવ નોંધ સૌં એ વતમાં દ્રદ બને છે. આ કથામાં તો લેખક કમાલ કરી જણાય છે.

પછી પ્રલુદ દાનવીર્ય રાજને લોગ પરિલોગ વિરમણુ વ્રત પર વિશ્વ-સેન કુમારની કથા લંબાણુથી કહે છે. અને દ્વિતીય ગુણવત્તમાં લાગતા અતિચાર પર મદ્ય માંસ દૂત અને રાત્રિભોજનપર દાત ઓણિની કથા કરી સંભળાવે છે. આ કથામાં તો મદ્ય માંસ દૂતને રાત્રિભોજન પર અનેક કથાઓ રસભર વર્ણનો સહિત કર્તાએ બાહુ સુદૂર રીત્યા વર્ણવી જણાય છે.

**અનર્થ દંડ વિરમણુ વૃત—**( અનર્થને માટે ને શસ્ત્ર અર્જિન મુશળ વિગેરે ધાતક વરતુંએ અન્યને આપવી-આપાવવી તે અનર્થ દંડ ) પર વિમળ શાવક ત્રીજું ગુણવત્ત પાળાને સ્વર્ગ તેમજ મોક્ષસુખ ડેવીરીતે પામે છે તે દર્શાવે છે.

પ્રથમ કંદોર્સર્પણુ વચ્ચનાતિચાર પર ત્રીજું ગુણવત્ત ધારણુ કરી કામોદીપક વચ્ચન ( એલે તે ) ભિત્રસેનતી તથા દ્વિતીય ક્રૈદુચ્ચાતિચાર ( નેત્રાદિક અગોના નાના પ્રકારના વિકાર સહિત ને ચેષ્ટા કરવી તે ) પર સિંહવણુકની કથા પ્રલુએ સંભળાવી છે.

આ પછી પ્રલુએ દાનવીર્ય રાજને અનુક્રમે નીચે પ્રમાણે કથાઓ સંભળાવી છે:—

**તૃતીય મૌખચાતિચાર—**તે ત્રીજા ગુણવત્તને ધારણુ કરી ને શાવક વાચાળપણાથી ડોઢને ભિથા અપવાદ આપે તે ઉપર પદ્મવાણુકની કથા.

**ચતુર્થ અધિકરણાતિચાર—**ધંટિ ખાંડણુંએ સાંખેલુ વિગેરે દૂર્ઘિત સાધનો જથ્થાઅંધ લેગાં કરી રાખવાં તે પર દુર્લભ વણિકની કથા.

**પંચમ લોગાતિરેકાતિચાર—**તે ત્રીજા ગુણવત્તને ધારણુ કરીને અતિશય લોગ સાધનોનું સેવન કરવું તે પર મુણાદેવ વણિકની કથા.

**સામાયિક વૃત—**સાવધ યોગનો પ્રતિપક્ષી-ના સેવન પર નાગ-દાત કુમારની કથા.

**મનેદુષ્પ્રણિધાનાતિચાર—**સામાયિક લઘ મનમાં દુધ્યાંત કરવું તે-પર માન વણિકની કથા.

२३

**द्वितीय वचन हुष्प्रणिधानातिचार—सामायिक अहंकरी अयोग्य वचन ऐलवुं ते-पर विस्त ऐष्टिनी कथा.**

**तृतीय कायहुष्प्रणिधानातिचार—सामायिकमां रही उपयोग शून्य थए अप्रभार्ति स्थानमां आसनाहि करवुं ते-पर श्यामल वण्णिकनी कथा.**

**चतुर्थ अनवस्थानातिचार—सामायिक अहंकरी तेनो मर्यादा युक्त समय पूर्णु न करवो वा सामायिकमां स्वेच्छा प्रभाषे प्रवृत्ति करवी ते-पर वरण्णु ऐष्टिनी कथा.**

**पंचम स्मृति विहीनतातिचार—यितनी शून्यताने लीघे अहंकरे लुं सामायिक शून्यत्विते पाणवुं ते-पर सोम वण्णिकनी कथा.**

**हेशावकाशिक वृत्त—विस्तार सहित ऐवां पण्णु दरेक वतोना अहंकरे लुं नियमनो ग्राये ने संक्षेप करवामां आवे ते-पर शंखकुमारनी कथा.**

**प्रथम अनायनातिचार—अहंकरे लुं अवधिनी अहारथी, आम तथा गृहादिकमां रहेक्का वरतुओने ने भीजनी पासे मंगावे ते-पर विष्णु वण्णिकनी कथा.**

**द्वितीय प्रेषण्णातिचार—हिंगवकाशनो नियम लध-गोते न जतां भीजने मोक्षवां ते-पर सहु ऐष्टिनी कथा.**

**तृतीय शब्दातिचार—हेशावकाशिक वृत्त लध शासाहि ( शुभारादिक ) ना निभिते शब्द करवा ते-पर भतिसागर मन्त्रिनी कथा.**

**चतुर्थ स्वइप्र प्रदर्शनातिचार—हेशावकाशिक वत अहंकरी करी डाई कर्थने लीघे दूर रहेक्का पुइपने पोताना स्वइपनुं भान कराववुं ते-पर इष्णुनी कथा.**

**पंचम पुहगल क्षेपातिचार—हेशावकाशिक वत अहंकरी करी कांकरा विगेरे वस्तुओना प्रक्षेपवडे पोताने जहेर करवो ते-पर सोमऐष्टिनी कथा.**

**पौष्पधवत—लभ्य प्राणिओओ आहार-देहसत्कार-ध्यलयर्थ—यने वंपार एम चार प्रकारतुं पौष्पधवत हेशथी दिंवा सर्वं प्रकारे पाणवुं ते-पर मलयेडेतु राजनी कथा.**

**पौष्टिकना पांच अतियार—पौष्टिकमां रही अभिलेखित, हुएति-  
लेखित, अप्रभार्ज्ञत, अने हुएति प्रभार्ज्ञत शब्दातुं सेवन करवुं तेमज सभ्यद्व  
अकारे पौष्टिक लध तेनुं अतिपालन न करवुं ते—पर वैश्वभण्णु पुत्रोनी कथा.**

**अतिथि संविभाग वृत—गृहस्थीये श्रद्धावडे, विशुद्ध, न्यायोपार्ज्ञत द्रव्यवडे लावेलुं अने निर्दीप ऐवुं भोजनादिक पोताने त्यां आवेला  
सुपात्र मुनियोने अर्पणु करवुं ते; तेमज मकुल्लमन वडे करी रोमांचित  
थर्ह सत्पात्र साधुओने शुद्ध दान आपवुं ते—पर शांतिभतीनी कथा.**

**अथम सचित्त निष्ठेपण्णातियार—अतिथि संविभागनो नियम<sup>३</sup>  
लध हुए चितवडे ओहानादिक पदार्थ सचित्त वस्तुओमां मुकवा ते—उपर  
लक्षभी आविकानी कथा.**

**द्वितीय सचित्त पिधानातियार—अतिथि संविभागनो नियम लध  
दान आपवा लायक वस्तुने सचित्त वस्तुथी ढांकी हेवी ते—उपर विजया  
शोहाणुनी कथा.**

**तृतीय कालातिकमण्णातियार—दाननो नियम करवा छतां छद्यमां  
शहता राख्वी ते—उपर हेवयद्र आवडनी कथा.**

**चतुर्थ परव्यपहेशातियार—अतिथिदाननो नियम लध पोताने  
त्यां सत्पात्र आवे छतां पोताना द्रव्यने कपटथी परावुं कहेवुं ते—उपर  
स्थविरानी कथा.**

**पांचम मात्सयातियार—आ पणु दान आपे छे तो शुं ऐनाथी  
पणु हुं अशक्ता हुं ? ऐवा मात्सर्यलावथी ने दान आपवुं ते—उपर  
न दृवणुक्तनी कथा.**

**आम प्रतो—अतियारादिक्कनुं दृष्टांत समेत प्रभुये विवेचन करी संल-  
गाववाथी विकस्वर थयेल रैमवाणा दानवीर्य राजा प्रभुने अंगली नेडी  
हवे कहे छे—“ हे भतित पावन ! हे लैलोक्य बंधु ! यति अने आवक  
धर्मतुं सविस्तर स्वदृप आपे संलग्नाव्युं तेमज हरेक व्रतना अतियार पणु  
सदृष्टांत क्षत्ता. हवे तो अंत सभ्यमां समाधिंपूर्वक मरणु थाय तेनो विधि  
ज्ञातावी अमने कृतार्थ करो. आना प्रत्युतरमां हयाना सागर—अकारणु  
बंधु जगदुक्षारक—प्रभु ऐत्या—हे भूपाण ने आवडे भारत अंगीकार**

૨૫

કરી વિધિ સહિત પાણ્યાં હોય, તેણે અંત સમયમાં ઉપયોગપૂર્વક સમાધિ મરણ માટે સંલેખના કરવી. આ ઉપર મલયચંદ્રનું દષ્ટાંત પ્રભુ કહે છે.

આ કથાવાળું પ્રકરણ અતિ ઉપયોગી છે. મતુધ્ય માત્રને મૃત્યુ આવવાનું જ છે. તો અંત સમયે જે ધર્મના આરાધનપૂર્વક સમાધિ મરણ પામત્રનું તે દુર્લભ છે. સંલેખના ઉલ્કષ બાર વર્ષની તથા જધન્યથી છ માસની છે. અને જે ધર્મધ્યાન-પ્રતિપાલન-સમ્યક્તવમૂલ બારત્રતનાં આરાધન આદિના અભ્યાસ હોય તો છેવટે અભ્યાસથી પણ સમાધિ મરણ થાયજા. આ કથામાં મહાસેન રાજ અને મલયચંદ નામે તેનો મિત્ર સ્વારી સહિત સુંદર અખોપર એસી કુરવા નીકળે છે. તે રાજના સિદ્ધાર્થ નગરના વર્ણનમાં તે નગરના વૈલલ આદિના વર્ણનમાં લેખકે પાંડિતની પરાક્રાંત કરી છે. જ્તાં તત્ત્વસમયનાં નગર દર્શાન કરાવી તે નગરનાં વખાણ કરવામાં અપૂર્વ ચાતુર્ય અતાચ્યું છે:—

સિદ્ધાર્થનગર ! તેમાં બંધ તો કાચ્યોમાં અને સરોવરોની પાળમાંજ રહેલો છે ! અન્યમાં નહિં ! ચિંતા તો ધર્મ કાર્યમાંજ ! રાગ તો મુનિઓ અને સહ્યનો ઉપરજ ! બ્યસન દાન આપવાનું જ ! વિલાસ ! વિલાસવતી ખીએના ડેશ કુલાપમાંજ ! વાહ વણું શેલી ! અપ્રતિમ ઉલ્પનાના ભોગી રસતરગોમાં વિહરતા, ધર્મરત્નના જવેરી આ અંથના આ લેખકને તો નમીજ પડાય છે.

રાજ તથા તેનો મિત્ર બન્ને ઘોર જંગલમાં આવી પહોંચે છે. ઘોડાએ વિરમતાંજ મૃત્યુ પામે છે. તૃપાતુર રાજ મલયચંદને પાણીની શોધમાં મોકલે છે. ત્યાં મહામુનિને જોતાંજ પાણી અતાવવા વિનવતાંજ મહાસેન રાજનું નામ હે છે. મુનિ તો મૌન રહે છે પણ ત્યાં એકેલી એક મૃગલી આ મહાસેન નામ સાંલળી ઉભી થઈ-મલયચંદને સાન કરી હોરી જઈ પાણી અપાવે છે ને રાજ પાસે મલયચંદ સાથે જાય છે. રાજ તથા મૃગલી સાથે મલયચંદ ગુરુહેવ પાસે આવી ધર્મશ્રવણ કરી રાજ મૃગલીને અધિકાર જાણુવા મુનિને પુષ્ટાંત તે તેની પૂર્વભવની ખી બંધુમતી છે એમ કઢી તેતું પુર્ણ વૃત્તાંત જણાવે છે. પૂર્વભવમાં બંધુમતિનો રાજએ અસ્તકાર કરવાથી તેણી ઉપવનમાં જઈ ઉચ્ચી ધર્મભાવનાએ. લાવે છે અને આમ વિચારમાં

૨૬

નિમગ્ન પ્રેમથી વંચિત પતિવિરહી—તે છાતી કુટી ધર્માંથી ભરણું પામી મૃગદી થાય છે. અને રાજનું નામ સંભળતાં તેને જલિસમરણું જાન ઉત્પન્ન થાય છે. આ પરથી રાજને પોતાના પાપનું પ્રાયશ્ચિત કરવા તથા ધર્મશ્રવણ માટે આતુર દેખી ગુરુદેવ તેને ધર્મનું સ્વરૂપ વિસ્તારથી સંભળાવે છે. સમ્યકૃતવના બેદ વિસ્તારથી કહી ગૃહીધર્મથી માંડી ઠેડ સંલેખના પર્યાત ગૃહિધર્મ સંભળાવે છે. સંલેખનાનું ઉદ્દૃષ્ટ સ્વરૂપ સમજાવે છે. તથા જગન્નથ સંલેખના પણ જણાવે છે. આ સાંભળી રાજ, મલયચંદ તથા મૃગદી સમ્યકૃત સહિત દેશ-વિરતિ ધર્મનો સ્વીકાર કરે છે. મૃગદી કાળ કરી સૌધર્મ દેવલોકમાં જરો.

રાજ તથા મલયચંદ પાણ સ્વસ્થાને આવે છે ને મલયચંદ બ્યાધિ-અસ્ત થતાં અનશન વૃત્ત ધારણું કરવા આરા આપવા રાજને વિનવે છે. પણ રાજ વૈદોની સારવાર કરવા જણાવે છે. એવામાં સુલાઘે તેજ સમગ્રે ચારણું મુનિ આકારેથી ઉતરી ત્યાં આવે છે. ને તેમને મલયચંદ પાસે લઈ જવામાં આવે છે. ત્યાં મલયચંદને મુનિ ધર્મોપદેશ દઈ અનશન વત આપે છે ને ને વિશુદ્ધપણે નિરતિયાર પાળી સમાધિપૂર્વક કાળ કરી તે અભલોકમાં જાય છે.

રાજ શોક પરિપૂરિત થતાં મુનિ તેને સંસારની અનિત્યતા સમજાવી શોક હુર કરાવી ધર્મમાર્ગ વાળી લબ્યજનનોને પ્રતિયોગ આપી અન્યત્ર વિહાર કરી જાય છે.

અહિં રાજને એક દુઃખોન આવે છે ને તેનું ઇણ સ્વેનપાડકોને પુછ્તાં તેઓ આ ગૂઢ સ્વભન્નનો અર્થ ન કરી શકવાથી અક્રમત આવી ચઢેલા સમયસાગરસ્ફરિને પુછ્તાં તેના ઇણને તેઓ જણાવે છે. કે તે રાજ કાળધર્મ પામી નિર્ભોગ રથાનમાં જરો. આથી રાજ સમય એગભી ગુરુ પાસે દીક્ષા લઈ ડેવળજાન પામી અદ્ય સમયમાંજ અચળ અને સર્વદા નિર્ભય એવા મોક્ષપદે પામે છે. ધર્માનો ત્યાગ કરી ને માણી અનશન વત અહણું કરે છે તે જીવ તેજ લવમાં યાતો છેવટે પ્રાણે ત્રીજે લવે સ્ત્રી થાય છે. આ કથા ધણાજ અર્થભાવને ધારણું કરવાવાળી છે—આદરણીય છે.

અંથકાર હુવે શ્રી સુપાર્શ્વપ્રભુના નિર્વાણવર્ણનને વર્ણવતાં વર્ણવતાં નાણે પરિઅમિત થયા હોય તેમ લાગે છે.

પ્રભુ દાનવીર્ય રાજને કહે છે કે હે રાજન ! સમ્યકૃત સહિત આર

२७

प्रकारनो श्रावकधर्म संलेखना पर्यंत तथा अतिचारतुं स्वदृप सम्यइ प्रकारे दृष्टांत सहित विस्तारथी तने क्षेत्र. हवे तुं निरतिचार गृहिधर्म प्रतिपालनमां सावधान था. पछी राजनी विनंतीथी तने विधि सहित धर्मदान करी प्रभु श्री नाहिवर्धन नगरथी विहार करी शत्रुंजय गिरिनां दर्शन करी आमनगरपुर विचरता धर्मदान हेता विश्वे उद्धरतां विचरवा लाय्या.

भगवाननी सेवामां पंचाणुं गणधरो, नणु लाख मुनि, चार लाख त्रीश हजार साध्यी, ऐ लाख सत्तावन हजार श्रावको ने चार लाख त्राणुं हजारं श्राविकाओ, ऐ हजार ने त्रीश चौहपूर्वधर मुनि, अगियार हजार डेवणी मुनि, पंहर हजार त्रणुसो वैक्षिय लभिधवाणा, आठ हजार चारसो वाढीमुनि, नव हजार अवधिगानी, नव हजार एकसो पचास मनःपर्यव रानी हता. अन्यत्र विहरतां विशेषकार उतां प्रभु ज्ञानवडे भोक्ष सभय नाळुक जाणी मासनुं अनशन वत ले छे. अने प्रभु चोराशी लाख वर्षतुं एक अंग थाय तेमां चार अंग न्यून एवुं एकपूर्वलक्ष चारित्र पर्याय पाणी पत्थंड आसने विराज्या.

सुरासुरे दो प्रभुने भोक्षाभिमुख थयेदा जाणी आव्या ने प्रभुनी स्तुति करवा लाय्या. तेटलामां तो जगद्गुर सर्व पापदरिनो रोध करनार शैवेशी ध्यानमां स्थिर थया. अने सर्वथा कर्मथी मुकायदा प्रभु इगणु वही सात-मना रोज पांचसो मुनि साधे हेह त्याग करी भोक्षे गया.

देवताओ भ्रु विरहे अशु साधे प्रभुने संलारता विधिपूर्वक शुद्ध स्थानमां गोशीर्ष यंहन तथा अगुर यंहननी चिताओ रयी एकमां प्रभुनां तथा भीज्ञमां पांचयशो मुनिओना क्लेवरो स्थायां. ते विधि सहित चितामां भस्मीभूत कर्या. भेदभुमारोओ भगवाननी चिता ठारी दीधी.

अंथकार प्रशस्तिमां विस्तारथी अंथलेखनतुं कारणु सभय स्थणाहि जाणुवे छे. छेवटे कुमारपाण नृपतिना सभयमां तेमना राज्यमां गुडमंडली नगरीमां शम्भासुतना उपाश्रयमां वास करता श्रीमान् लक्ष्मणुगण्युओ वि. सं. १११६ मां महा शुद १० भी अने गुडवारे आ चरित्र रच्यानुं जाणुवावामां आव्युं छे.

एकांहर अति रसाण-रस मंजरीओवडे सुवासित तडवरनी ज्ञेम

૨૮

અનેક ધમ લાવનાલરી કથાઓના સમૃહથી વિલૂષ્ટિ આ ગ્રંથ અતિ નિશાળ અર્થભાવ—ગાંભીર્ય—રસ—કાવ્ય—કથા—દષ્ટાંત—આદિ શાખા પલ્લવ યુક્ત એવો અતિ મનોહર રચનાયે યુક્ત રચાયો છે તે તેનો અનુવાદ પણ શ્રી અજીતસાગર સુરીકૃત અતિ કુશળતાથી રસને ક્ષત ન થવા હેતાં તેમાં એવા વૃદ્ધ કરવા પૂર્વક—પોતાના જ્ઞાન સામર્થ્યને પ્રકૃટ કરતો છો તેમની કૃતિ—પરાગ પરિમળને પ્રમારતો એમ અદ્ભુત રીતે તૈયાર કર્યો જણ્યાય છે. અને ખરેખરઃ—

નેના સદગુરરાજ, શ્રી શ્રી ધી નિધિ વિશ્વમાં !  
 અવિજન તારણુ ઝાંડ, બાનુપરે વિલસી રહ્યા !  
 વક્તા ને કવિરાજ અજિતસૂરિ ગુરુ ભક્ત શા ?  
 પામો આત્મ સ્વરાજ્ય સ્વાનુભવે જગ દોહ્યલાં ॥

આ ગ્રંથમાં સર્વ પ્રકારના રસ—વૃત્તિશી રતોના હાર—અતિયાર નિવારણુશીપ વળકવચ અને કથાઇશી રસાયન ભર્યું છે; છતાંયે તેમાં અધ્યાત્મજ્ઞાનનું અમૃત બિંદુ યોગ્ય પ્રમાણુમાં મિશ્ર થયું છે તેથી મહિરને શિષ્યર ધ્વજ એવો અમુલ્ય લાલ વિશ્વને આ પુસ્તકથી મળે તેમ છે તેમાં કંઈ ન્યૂનતા નથી. આ માટે શ્રીમદ આચાર્ય શ્રીમદ અજિત-સાગરસૂરિજીને અલિનન્દન આચ્યા શવાય ચાલતું નથી. અધ્યાત્મજ્ઞાન ગગનમણ્ણિ—સાગરગણાધિપતિ, ધર્મધુરધર, ડવિ ચૂડામણ્ણિ, યોગિરાજ આચાર્ય મહારાજ શ્રીમદ યુદ્ધસાગરજી સુરીકૃતજીને આવા શિષ્યરતન તૈયાર કરવા બદ્ધ નભ્યા સિવાય રહી શકતું નથી. અને એ ગરવા ગુરુદેવનો;—

અધ્યાત્મજ્ઞાન ગગને, રવિશા પ્રકારો,  
 પદિત ને પ્રભર વિશ્વ વિષે વિરાજે;  
 અચ્યે શતાધિક મહામૂલના વિકાસે,  
 તત્ત્વામૃતે અવિજનો જસ નિય રાચે.  
 પદ્ધર્થને નિપુણ ને અતિ ગૂઢ શાને !  
 આખી સુધ્યાન તપ ત્યાગ વિરાગતાને !

( એવા ) શ્રી બુદ્ધિસાગરસ્વરૂપ મહાયોગિ રાજે !

જ્યાં તુચ્છ છે મળ જરૂરાં મહારાજ્ય રહેને !

વિશ્વમાં એકજ ! એમના હાથનો વાસક્ષેપ કે શિરખર પડ્યો હોય—  
એમના શિષ્ય થવાતું મહાન ગૌરવ જેમને સંપ્રાત થયું હોય, એમનાજ હાથે ને ગણ્ય અને આચાર્યપદ પ્રાપ્ત કરી શક્યા હોય, એમનીજ આજ્ઞામાં સહોદિત કેંદ્રો વિહૃતતા હોય એવા, પ્રાપ્ત વક્તા, વ્યાપ્ત્યાન વાચ્યરપતિ સમા, સુન્દર કવિ, અને સુલલિત લેખક આચાર્ય પ્રવર શ્રીઅભિજિતસાગર સ્ફુરિરને આવો અણુમોદ અંથ તૈયાર કરી વિશ્વના કલ્યાણ અર્થે વિશ્વ સંમુખ રજુ કરવા માટે ધન્યવાદ આપવા સિવાય રહી શકતા નથી.

શ્રી લૈન આત્માનંદ સલા આવા અથેના પ્રકટીકરણું માટે ને જે સુન્દર યત્નો સેવી રહી છે તે માટે તેના કાર્યકર્તા શ્રીયુત વલ્લભદાસ વિલુપ્તનદાસ ગાંધીને ધન્યવાદ ઘેરે છે.

એકંદર આ મહા અંથ ઉપરથી ભારતવર્ષ ની જાત્યવલ્યમાન નહોણલાલી, નૈનધર્મની વિજ્યપતાકાતું વિશ્વમાં જ્યવંત વર્તવું, રાજાઓ પણ નૈન ધર્મને માનવાવાળા, નીતિવાન, ગુણ્ય, રસિક, કવિ-પદિતોના પૂજનરી, રાણીઓ પણ મહાપતિવિતા, ચતુર, રસિક, પોતાના ધર્મને, સમજનારી રાજ-કુમારો પણ દક્ષ-શર, વિનયી, ધર્મિષ, સાહસિક ને નૈનધર્મમાં રક્તચિત હતા એમ અવસ્થાધાર છે. નિષ્કારણ બંધુ એવા જ્ઞાનક્ષિયા અને મોક્ષમાર્ગના આરાધક, મુનિઓ વિશ્વના ઉદ્ધારથે સ્થળે સ્થળે ભ્રમણું કરી પૃથ્વીને પાવન કરી રહેલા. એણિ ( શેડ ) નૈન વ્યાપારીઓનું ગણ્યતા અને તેમનું વજન-માન=દીર્ઠ-મોદો રાજકુમારોમાં અતિશય હતો. તત્સમયના એછિ પુત્રો પણ ગંભીર, સાહસિક-પરહેશમાં અટન કરવામાં રસીયા, વિનયી-વિવેકી-ઉદ્ધાર અને રસિક હતા. મહા ધૂરંધર, ગીતાર્થ, ચૌદ્પૂર્વધારી, ડેવળ-સાની, એવા મુનિરાજેના વિચરણુથી નૈનધર્મનો વિજ્યધ્વજ વિશ્વમાં નિરતર ઇરકેરતો હતો, તત્સમયમાં દિવ્ય વૈખ્યો છતાં સાદાઈ-વિવેક-ગંભીરતા, મર્યાદા, નીતિ, પ્રીતિ, ધર્મભાવના, પદિતોપરપ્રેમ, કુલાઓ પ્રતિ આતિ આતિ આહર, શૌર્ય, સંપ, અને વૃક્ષરાજુની વિપુલતા પ્રતિ એટલો બધો આદરભાવ પરિદૃષ્યમાન થાય છે કે જેવો આજે કયાંય નથી જણ્યાતો. આવાં આવાં

३०

अनेक गतालीन, वैलवो—रीति—स्थिति—धर्म—आहिनां दर्शन करते आ  
अद्भुत अंथ छे. ए विश्वमां विजयवंत वर्तो अने भविजनना हितना  
अर्थे हो. एम धन्धाय छे.

धृत्यक्षं विस्तरेणु ? आ श्री सुपार्थनाथ चरित्र अंथ विश्वना तथा  
विश्ववासीओना आतिमिक अने व्यावहारिक कल्याणुने अर्थे हो. ने विश्वमां  
लानु—यंद तपे त्यांसुधी विजयवंत वर्तो ए शुलाशा सहित विरभतां  
पूर्णाङ्गुष्ठित मंगण करं छुः.

जेना गुणोज गणना जनधी न थाये ।

ना शेषनाग जीमथी गणतां गणाये ॥

जोडी द्वि हस्त शुभ आशिष नित्य याचुं ।

श्री बुद्धिसागर सूरि शरणुज साचुं ॥

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

२०-७-२४

पादरा.

( गुजरात )

} सहगुरु पादपद्म भ्रमरे—  
भणिलाल भोगुनलाल—पादरोकर.



## સૂચના.

---

પ્રથમ આ અંથ પ્રસિદ્ધ કરવાને શ્રીયુત વિહૃલશય જીવા-  
ભાઈ બી. એ. તૈયાર હતા; પરંતુ તે દરમ્યાન તેઓને જાપાન  
જવાનું થતાં આ અંથના અનુવાદક શ્રીમાન લૈનાયાર્ડ અણુત-  
સાગરજી સૂર્ય મહારાજને, જગતપ્રસિદ્ધ અને પ્રાચીન સાહિ-  
ત્યને પ્રકાશમાં લાવનાર, તથા ખેણો પ્રચાર કરનાર શ્રી જૈન  
આત્માનંદ સભા લાવનગર તરફથી તેના સેકેટરી ગાંધી  
વહૃપદ્ધાસ નિભુવનદાસે આ અંથ આ સભાને અર્પણ કરવા  
અને સર્વાસ્ત્ર ચૂડામણિ ગચ્છાધિપતિ શ્રીમાન સુખસાગરજી  
મહારાજના નામથી સીરીઝ તરીકે પ્રગટ કરવા વિનંતિ કરવાથી,  
ઉક્ત મહાત્માએ આ અંથ આ સભાને પોતાના નામથી નહીં  
પરંતુ ઉપરોક્ત દાદા યુદ્ધરાજની ભક્તિ નિમિત્તે તેઓશ્રીના નામ  
સમરણાર્થે તે મહાપુરુષનું નામ લૈન સમાજના સમરણમાં રાખવા  
આ કાર્ય ઉક્ત સભાને તેના સેકેટરી મારક્ષત સુપ્રત કરવામાં  
આવેલ છે. અંગ શાંતિ: ૩

## ખાસ આભાર.

—०००—

પ્રાતઃસમરણીય, સચ્ચારિત્ર ચૂડામણિ, શુદ્ધિયા-  
યોગી, ગંગાવિપતિ, ખાગઘનયારી શ્રીમાન સુખસા-  
ગરણ મહારાજના શિષ્ય શાસ્ત્રવિશારદ જૈનાચાર્ય  
ચોગનિષ્ઠાધ્યાત્મકાન દિવકર શ્રીમદ્ભુદ્ધિસાગરણ સૂરી-  
ધીરણ મહારાજના શિષ્ય જૈનાચાર્ય પ્રસિદ્ધવક્તા શ્રીમદ્  
અલુતસાગરણ કે, જેએ જ્ઞાનોદ્ધારણ કાર્ય કરવા સાથે  
પ્રસિદ્ધ વક્તા હોઈ વર્ત્તમાન જમાનાને અનુસરી જન  
સમૂહને ઉપહેશ દેવાનું મહેત કાર્ય હૃથમાં લઈ, ગુજરાત  
અને કાર્તીયાવાડ વિગેરે દેશોમાં અનેક સ્થાનેવિહારો  
કરી, દરેક સ્થળે ધાર્મિક અને સામાજિક લાયણોડારા  
ઉપહેશ આપી ઉપકાર કરી રહ્યા છે. જૈન સમાજ ધાર્મિક  
જ્ઞાન કેમ વચ્ચારે પ્રાપ્ત કરે તેને માટે અનેક ઉપયોગી ગંધ  
પદ્ધોના અંથો લખીને પણ સમાજની ઉત્તતિ માટે અનેક  
પ્રયત્નો કરી રહ્યા છે. આ સલા ઉપર પણ તેઓશીનો  
પ્રેમ હોવાથી આ શ્રી સુપાર્થનાથ પ્રલુના ચરિત્રનું  
ભાષાંતર ઘણોજ અમ લધ પોતે કરી આપી સાથે જ્ઞાનો-  
દ્વારના આ કાર્ય માટે ઉપહેશદ્વારા આર્થિક સહાય  
અપાવી આ અંથનો આ બીજો ભાગ ઉક્ત મહાત્માને  
પોતાના દાહણુર શ્રી સુખસાગરણ મહારાજની ગુરુ-  
ભક્તિ નિભિતો અને નામ સમરણાર્થી સલાના ધારા સુજ્ઞભ  
સીરીજ તરીકે પ્રકટ કરવાની આ સલાને આજા કરી છે.  
નેથી આવો અત્યુત્તમ અંથ પ્રકટ કરવા આ સલા  
ભાગ્યશાલી થઈ છે. નેથી આ સલા ઉક્ત મહાત્માનો  
અતઃકરણ પૂર્વક આલાર માને છે. અં શાંતિ: ૩

# विषयानुक्रमणिका।

---

| विषय.                                  | पृष्ठ. | विषय.                          | पृष्ठ. |
|--|--------|--------------------------------|--------|
| ॥ तृतीय स्थूलादत्तादान<br>विरमण व्रत ॥ |        | कुमारनी धर्मज्ञासा.            | २३     |
| देवयश श्रेष्ठीनी कथा.                  | १      | जमाली पद्मीपति.                | २४     |
| धनहेवनी ४४०.                           | २      | पर्यालीयना.                    | २५     |
| धनहेवनुं कृपट.                         | ३      | भाक्ष पद्मी.                   | २६     |
| मुद्रिकानो। तपास.                      | ४      | तृतीय विश्व राज्यातिक्र-       |        |
| धनहेवनुं धावतः.                        | ५      | मातिचार उद्यन श्रेष्ठीनी कथा.  | २८     |
| देवयशने शिक्षा.                        | ७      | त्रिलो अतिचार.                 | २८     |
| देवयशनी स्त्रीने भूच्छा.               | ८      | ओक आणातुं दर्शन.               | २८     |
| शासनहेवीनो यमत्कार.                    | ८      | आणातुं चरित्र.                 | २८     |
| देवीनुं वचन.                           | १०     | आणानो अभिप्राय.                | ३२     |
| धनहेवने शिक्षा.                        | ११     | उद्यननुं कृपट.                 | ३३     |
| देवयशनी भेक्ष गति.                     | १२     | चतुर्थ कूटतुला मानातिचार       | ३५     |
| प्रथम स्तेनाहट क्रयाति-                |        | वृद्धु दृष्टांत.               | ३५     |
| चार नाहट श्रेष्ठीनी कथा.               | १३     | क्वेवणसान.                     | ३५     |
| नाहट श्रेष्ठी दृष्टांत.                | १४     | धनश्रेष्ठीतुं दृष्टांत.        | ३७     |
| सूरिदर्शन.                             | १४     | ओक आलीसनी स्त्री.              | ३८     |
| भिन्ननो। उपदेश.                        | १५     | वृद्धुने शिक्षा.               | ४०     |
| नाहटनी स्थिति.                         | १८     | पंचम तत्प्रतिरूप क्रव्यक्षेपा- |        |
| द्वितीयस्तेन प्रयोगातिचार              |        | तिचार                          | ४१     |
| महननी कथा.                             | १९     | सागरव्यंद्र.                   | ४१     |
| महन दृष्टांत.                          | २०     | युषुव्यंद्र.                   | ४३     |
| लोडानो। पोकार.                         | २०     | पिता पुन्ननो सभागम.            | ४५     |
| सिंहपुत्रनो शाप.                       | २२     | सागरव्यंद्रनो क्षद्रयण.        | ४८     |
|  |        | चतुर्थ परदारगमन विर-           |        |
|  |        | मणव्रत                         | ५०     |
|  |        | वीरकुमारनुं दृष्टांत.          | ५०     |

| विषय.                    | पृष्ठ. | विषय.                            | पृष्ठ. |
|--------------------------|--------|----------------------------------|--------|
| अद्भुत मुनिदर्शन.        | ५१     | पुनः कापालिको। समागम.            | ६०     |
| कुमारीनी परीक्षा.        | ५३     | पंचमतीव्रामिलाषातिचार            | ६१     |
| वीर कुमारो अवास.         | ५५     | सुयश दृष्टांत.                   | ६२     |
| द्वितिय आगमन.            | ५८     | जुगारनी स्थिति.                  | ६२     |
| कुमारसु ईर्ष्य.          | ५८     | विद्यासिद्धि.                    | ६३     |
| राजदीक्षा.               | ६२     | विद्यानो प्रभाव.                 | ६४     |
| वीर कुमारो भेक्ष.        | ६४     | भेरनो यमत्कार.                   | ६५     |
| प्रथम इत्वर परिगृहीता ग- | ६५     | भेरध्वज राज.                     | ६७     |
| मनातिचार.                | ६५     | <b>६ स्थूल परिग्रह परिमाण-</b>   |        |
| वज्र दृष्टांत.           | ६५     | <b>ब्रत १०१</b>                  |        |
| देवतु आगमन.              | ६६     | जगद्गुरु.                        | १०१    |
| वज्रनो दुरायार.          | ६८     | सेनश्रेष्ठीनी उथा.               | १०१    |
| द्वितीय अपरिगृहीता गमना  | ७०     | शानी मुनि.                       | १०२    |
| तिचार.                   | ७०     | डुड़न उलेश.                      | १०३    |
| दुर्लभ दृष्टांत.         | ७१     | सेननो उपदेश.                     | १०४    |
| शुणुसु दीनी उथा.         | ७१     | व्यंतर.                          | १०५    |
| सुवर्णसिद्धि.            | ७३     | सेनशिक्षा.                       | १०७    |
| दीक्षामहोत्सव.           | ७४     | <b>प्रथम क्षेत्रवन्तु परिमा-</b> |        |
| दुर्लभनो दुरायार.        | ७६     | <b>णातिक्रमातिचार १०८</b>        |        |
| तृतीय अनंग क्रीडातिचार   | ७७     | नवधन शेषनी उथा.                  | १०८    |
| धनश्रेष्ठीनी उथा.        | ७८     | शेषाणुनी याराध.                  | ११०    |
| वैराण्य कारण.            | ७८     | मांवी वगरेती विडंभना.            | ११२    |
| लुवनानन्दानी भुक्षि.     | ८१     | संपत शेषाणुओ आपेली               | ११५    |
| राजनी प्रवृत्ति.         | ८३     | शिखामण.                          | ११५    |
| पुत्रजन्म.               | ८४     | श्री अंशमुनि                     | ११६    |
| धनवर्णुको दुरायार.       | ८६     | नवधनो उभार.                      | ११७    |
| चतुर्थ परविवाहातिचार     | ८७     | <b>द्वितीय सुवर्ण परि-</b>       |        |
| दुर्ग दृष्टांत.          | ८८     | <b>मातिक्रमातिचार ११८</b>        |        |
| विद्यासाधन.              | ८८     |                                  |        |

| विषय.                      | पृष्ठ. | विषय.                      | पृष्ठ. |
|----------------------------|--------|----------------------------|--------|
| भरत श्रेष्ठीनी कथा.        | ११८    | प्रथम गुणव्रतदिक्षपरि-     |        |
| विजयसूरि                   | ११९    | माणव्रत                    | १४६    |
| लक्ष्मीहेन्तु आगमन.        | १२०    | मनोरथ वण्णीडनी कथा.        | १४६    |
| रम्भसनो उपहेश.             | १२१    | वैशाख झारण.                | १४७    |
| धनश्रेष्ठी.                | १२२    | मंत्यादिक्षनु प्रथाण.      | १४८    |
| धर्मनो यमतकार.             | १२३    | २थकार चरित्र.              | १५१    |
| तृतीय धनघान्य परिमा-       |        | मेधरथ.                     | १५२    |
| णातिक्रमातिचार             | १२४    | मेधरथ अने मनोरथ.           | १५३    |
| हेशल आवडनी कथा.            | १२५    | मनोरथनो सदाचार.            | १५४    |
| कार्यव्यवस्था.             | १२६    | विद्यानो यमतकार.           | १५५    |
| अंडु विवाह.                | १२७    | व्यांतरनो पूर्वलव.         | १५६    |
| वैश्रभण्ण शेहनी युद्ध.     | १२८    | राजनियोग.                  | १५७    |
| डाशलनो प्रभाव.             | १२९    | शिवलक्ष्मीष्टी.            | १५८    |
| मंत्रीओनु क्षेत्र.         | १३०    | आलपंडिता.                  | १५९    |
| आज्ञानो यमतकार.            | १३२    | त्रिदंडी.                  | १६०    |
| हेशलनो अत्याचार.           | १३४    | वासवदत्ता अने मंत्रीपुत्र. | १६१    |
| चतुर्थ द्विपद चतुष्पद परि- |        | पुत्रज्ञनम.                | १६२    |
| माणातिक्रमातिचार           | १३५    | मंत्रीपुत्रनो समागम.       | १६३    |
| हुर्लभ जोपनी कथा.          | १३५    | राजनो भोक्ता.              | १६४    |
| देवनो पूर्वलव.             | १३७    | महेन्द्रसिंह.              | १६५    |
| धर्मोपहेश.                 | १३८    | व्यांतर देवी.              | १६६    |
| धर्मनो प्रभाव.             | १३८    | गुणव्यंद.                  | १६७    |
| गधर्वनो पथाताप.            | १४०    | सुंदर वण्णिक.              | १६८    |
| पंचम कुण्य परिमाणाति-      |        | यशश्विंद.                  | १६९    |
| क्रमातिचार                 | १४०    | शिवभूतनो उपहेश.            | १७०    |
| मानहेव श्रेष्ठीनी कथा.     | १४१    | मनोरथ श्रेष्ठी.            | १७१    |
| विद्यानो यमतकार.           | १४३    | मेधरथ.                     | १७२    |
| अमृतकलश श्रेष्ठी.          | १४५    |                            |        |

| विषय.                     | पृष्ठ. | विषय.                     | पृष्ठ. |
|---------------------------|--------|---------------------------|--------|
| द्वितीय गुणव्रत भोगपरिभोग |        | सलामां संगीत.             | २२०    |
| विरमण व्रत.               | १८३    | शक्षसनो पूर्वज्ञ.         | २२०    |
| विश्वसेन कुमारनी कथा.     | १८४    | सुलसनो शिथिल आचार.        | २२१    |
| पुरंदर राजा.              | १८४    | सुलसनुं भरणु.             | २२३    |
| विश्वसेन कुमार.           | १८४    | वसुभिनो विलाप.            | २२४    |
| विद्याधरनो पञ्चात्ताप.    | १८८    | दत्तनो नियम.              | २२४    |
| देवोनुं संगीत.            | १८९    | तृतीय गुणव्रत अनर्थ दंड   |        |
| कुमारनो उपदेश.            | १९२    | विरमण व्रत.               | २२६    |
| वसंत कीडा.                | १९३    | विमल आवक्तनी कथा.         | २२७    |
| प्रधन इप्धारी विद्याधर.   | १९५    | मुनिदर्शन.                | २२७    |
| कनकश्रीनो समागम.          | १९६    | धर्म सेवन-पथिक समागम.     | २२८    |
| कनकश्रीनुं चरित्र.        | १९७    | दीव्य स्वदृप.             | २३१    |
| क्रीथी विद्याधरीनुं आगमन. | १९८    | नगरमां प्रवेश.            | २३२    |
| धर्मभिलमा.                | १९९    | कुमारो सर्पदंश.           | २३३    |
| विश्वसेननो गृहस्थानम.     | २००    | भणिनो प्रभाव.             | २३४    |
| कनकश्री.                  | २०२    | विमल अने राजनी मुलाशत.    | २३५    |
| सुरसुंहरी.                | २०३    | राज्य दान.                | २३६    |
| विश्वसेन राजा.            | २०४    | प्रथम कंदर्पत्सर्पण वचना- |        |
| उदानपालनुं आगमन.          | २०५    | तिचार.                    | २३८    |
| मध भांस घूत रात्रिभोजन.   | २०७    | भित्रसेननी कथा.           | २३८    |
| हतब्रह्मीनी कथा.          | २०८    | भित्रसेननो चमत्कार.       | २३९    |
| मुनिदर्शना.               | २०८    | हुराचारनी शिक्षा.         | २३९    |
| जोगाईनुं डपट.             | २११    | द्वितीय कौकुच्यातिचार.    | २४१    |
| अक्षमात संकट.             | २११    | सिखवणिणी कथा.             | २४१    |
| मुदर्शन ऐडी.              | २१२    | मुनिदास ऐडी.              | २४२    |
| रात्रिभोजन.               | २१६    | शेहनो दृष्टि निश्चय.      | २४३    |
| सिंहराज.                  | २१७    | धर्मलापना.                | २४३    |
| आसिताक्ष यक्ष.            | २१८    | सूरिनो उपदेश.             | २४५    |

| विषय.                        | पृष्ठ. | विषय.                          | पृष्ठ. |
|------------------------------|--------|--------------------------------|--------|
| कुपर्दी यक्ष.                | २४५    | पश्चात्तापभूर्व क वैराग्य.     | २७१    |
| पूजनो ग्रलाव.                | २४६    | भृहेनो उपदेश.                  | २७४    |
| ऐक विट मुड्य.                | २४८    | भूणहेवनी उदारता.               | २७५    |
| सिंहनुं भरण.                 | २४९    | शत्रुञ्जीनी धाड.               | २७५    |
| <b>तृतीय मौख्यातिचार.</b>    | २५०    | <b>प्रथम शिक्षावत सामायि-</b>  |        |
| पद्म वर्णिकनी कथा.           | २५०    | <b>कव्रत.</b>                  | २७७    |
| विजयपाण.                     | २५०    | नागरहत कुभारनी कथा.            | २७७    |
| मंत्रीनो उपदेश.              | २५१    | युवतिनो समागम.                 | २७८    |
| लक्ष्मीनुं भरण.              | २५१    | शकुन विचार.                    | २८०    |
| नृपविलाप.                    | २५२    | मुनिहर्षन.                     | २८२    |
| मंत्रीनी युक्ति.             | २५२    | गृहिर्भर्त्तो स्वीकार.         | २८५    |
| राजनो हुड्य.                 | २५४    | सामायिक्तुं लक्षण.             | २८६    |
| पद्मवर्णिक.                  | २५५    | भलवदेतुनी कन्याए.              | २८६    |
| हृत्रिम हेनानो समागम.        | २५६    | नगरवासी यक्ष.                  | २८७    |
| <b>चतुर्थ अधिकरणातिचार.</b>  | २५८    | कुपर्दी यक्ष.                  | २८८    |
| हुर्ल्ल वर्णिकनी कथा.        | २५८    | राज्य लिखेक.                   | २८९    |
| मुनिनो उपदेश.                | २५९    | राजनो उपदेश.                   | २९०    |
| सागरहत श्रेष्ठी              | २६०    | <b>प्रथम मनोदुष्प्रणिधाना-</b> |        |
| कार्पिक्तुं कपट.             | २६१    | <b>तिचार.</b>                  | २९१    |
| सागरहतनो पश्चात्ताप.         | २६२    | भान वर्णिकनी कथा.              | २९२    |
| द्रव्यनी इरीयाद.             | २६३    | शिक्षापर्याप्ति हेशना.         | २९२    |
| वैराग्य भावना.               | २६४    | निष्पुण्यक्तो पश्चात्ताप.      | २९४    |
| हुर्ल्लनो ग्रमाद.            | २६५    | न्याय स्वरूप.                  | २९५    |
| नामाङ्कित अङ्ग.              | २६६    | उच्च्य स्थिति.                 | २९६    |
| हुर्ल्लने शिक्षा.            | २६७    | दुर्ध्यात.                     | २९७    |
| <b>पंचम भोगांगातिरेकाति-</b> |        | <b>द्वितीय बबनदुष्प्रणिधा-</b> |        |
| <b>चार.</b>                  | २६८    | <b>नातिचार.</b>                | २९८    |
| भूणहेव वर्णिकनी कथा.         | २६८    | विसद श्रेष्ठीनी कथा.           | २९८    |
| वैराग्य कारण.                | २७०    | मुनिहर्षन.                     | २९९    |

| विषय.  | पृष्ठ. | विषय.                        | पृष्ठ. |
|--|--------|------------------------------|--------|
| सामायिकमां शिथिलता.                                  | ३००    | विडभराज्ञ.                   | ३२७    |
| शांत श्रेधिनी निष्टुरता.                             | ३०१    | आडाशचारी सुखट.               | ३२८    |
| सदाचारी निष्ठा.                                      | ३०२    | अने सुखटोनो विवाद.           | ३२८    |
| <b>तृतीय कायदुष्प्रणिधाना-</b><br><b>तिचार.</b>      | ३०४    | रथुसंग्राम.                  | ३३०    |
| स्थामल विषुक्ती इथा.                                 | ३०४    | शंभु अने सुखट.               | ३३०    |
| वसंतऋतु.   | ३०४    | हेवनो उपहेश.                 | ३३१    |
| चारणु मुनिनो आगमन.                                   | ३०५    | हेशावकाशिक नत.               | ३३२    |
| चारणु मुनिनो उपहेश.                                  | ३०६    | हेवनी प्रसन्नता.             | ३३३    |
| स्थामलनो प्रभाव.                                     | ३०८    | अङ्गस्मात श्लवेदना.          | ३३४    |
| <b>चतुर्थ अनवस्थानातिचार.</b>                        | ३०८    | शंभराज्ञनो प्रभाव.           | ३३५    |
| वर्णु श्रेधीनी इथा.                                  | ३१०    | <b>प्रथम आनायनातिचार.</b>    | ३३७    |
| चारणु मुनिनो उपहेश.                                  | ३१०    | विध्यविषुक्ती इथा.           | ३३७    |
| चारभट क्षत्रिय.                                      | ३११    | विध्यनो भाषेत्सव.            | ३३८    |
| मौडनुं पराक्रम.                                      | ३१२    | विध्यनी भांडगी.              | ३३९    |
| चारभटनी व्यग्रता.                                    | ३१२    | विध्यनी शिथिलता.             | ३४०    |
| चारभटने वक्षीस.                                      | ३१३    | विध्यने शिक्षा.              | ३४१    |
| <b>पंचम स्मृतिविहीनता-</b><br><b>तिचार.</b>          | ३१४    | <b>द्वितीय प्रेषणातिचार.</b> | ३४२    |
| साम विषुक्ती इथा.                                    | ३१४    | सहूश्रेधीनी इथा.             | ३४३    |
| ऐक नवीन इथा.   | ३१५    | सहूनी हृदशा.                 | ३४३    |
| आण्डे करेलो उपकार.                                   | ३१६    | मुनिदर्शन.                   | ३४४    |
| हृतधन सेनी.  | ३१७    | मुनिनो प्रभ.                 | ३४५    |
| गाढीनो प्रत्युपकार.                                  | ३१८    | मुनिनुं चरित.                | ३४६    |
| हयाणु धात्वणु.                                       | ३१९    | धननो प्रभाव.                 | ३४७    |
| मुनियरित्र.  | ३२१    | हिंगवतनो संक्षेप.            | ३४७    |
| सेमवेषीनो प्रभाव.                                    | ३२३    | लेखवाहक.                     | ३४८    |
| <b>द्वितीय शिक्षाव्रतदेशा-</b><br><b>वकाशिकव्रत.</b> | ३२६    | सहूनो पश्चाताप.              | ३४८    |
| शंभुभारनी इथा.                                       | ३२६    | <b>तृतीय शब्दातिचार.</b>     | ३४९    |
|  |        | भतिसागर भंवीनी इथा.          | ३४९    |
|  |        | सुयशांगे आपेलो उत्तर.        | ३५१    |
|  |        | आवक धर्म.                    | ३५४    |

३६

| विषय.                              | पृष्ठ. | विषय.                              | पृष्ठ. |
|------------------------------------|--------|------------------------------------|--------|
| मंत्रीनी कहर्ना.                   | ३५४    | अद्वित उथा.                        | ३८०    |
| चतुर्थ स्वरूप प्रदर्शनाति-<br>चार. | ३५६    | अमर गुड़नी तपास.                   | ३८१    |
| कृष्णनी उथा.                       | ३५६    | बाल प्रितानु लभ.                   | ३८३    |
| मारुत् चरित्र.                     | ३५७    | प्रश्नो उत्तर.                     | ३८४    |
| खीनी शेष.                          | ३५८    | देवदृत उपसर्ग.                     | ३८६    |
| आर्थवाहनो उपहेश.                   | ३५९    | राजनो माद्द.                       | ३८८    |
| डेवली लगवान.                       | ३६०    | पौषधना पांच अतिचार.                | ३८९    |
| कृष्णनी शिथिलता.                   | ३६०    | वैश्मणु पुत्रोनी उथा.              | ३९०    |
| अतियारनी वेदना.                    | ३६१    | वैश्मणुनी मांहगी.                  | ३९०    |
| पंचम पुद्गलक्षेपातिचार.            | ३६२    | भरणुकाल.                           | ३९१    |
| सोभ्रेष्ठीनी उथा.                  | ३६३    | डेवली लगवान.                       | ३९१    |
| सौख्यनो उपाय.                      | ३६४    | धर्मोपहेश.                         | ३९२    |
| गुडमहाराज.                         | ३६४    | प्रथम, द्वितीय अतियार.             | ३९४    |
| धनश्री उपर द्रेष.                  | ३६५    | त्रिज्ञ, चोथी, पांचमो अति-<br>यार. | ३९५    |
| ओक परिवारु.                        | ३६६    | चतुर्थ शिक्षाव्रत अतिथि.           |        |
| विभलनो असत्य विचार.                | ३६७    | संविभाग व्रत.                      | ३९७    |
| खी प्रत्ये विभलनो उहगार.           | ३६८    | शांतिमतीनी उथा.                    | ३९७    |
| मायापनो शोड.                       | ३६९    | अख्यदेवसूरि.                       | ३९८    |
| साधीनो समागम.                      | ३७०    | दानश्रद्धा.                        | ३९९    |
| श्री प्रभानी वेदना.                | ३७०    | वर्षांडण.                          | ३९९    |
| विभलनो पञ्चाताप.                   | ३७१    | प्रथम सचित्तनिक्षेपणाति-<br>चार.   |        |
| धनश्रीनो उपहेश.                    | ३७३    | लक्ष्मी श्राविकानी उथा.            | ४०१    |
| वतनी विराधना.                      | ३७५    | जानी महात्मानो उपहेश.              | ४०२    |
| तृतीय शिक्षाव्रत-पौषध-<br>व्रत.    | ३७७    | लक्ष्मीनो उपटलाव.                  | ४०४    |
| मलयडुराजनी उथा.                    | ३७७    | द्वितीय सचित्तपिधाना-<br>तिचार.    | ४०६    |
| सुनित् आगमन.                       | ३७८    | विजया शोडाष्टी उथा.                | ४०६    |
| धर्म हेशना.                        | ३७८    | विजयाने प्रतिष्ठेष.                | ४०६    |
| मलयडु.                             | ३७९    |                                    |        |

४०

| विषय.                         | पृष्ठ. | विषय.                            | पृष्ठ. |
|-------------------------------|--------|----------------------------------|--------|
| विजयानी हानभक्ति.             | ४०८    | सम्यक्तव स्वृत्प.                | ४३०    |
| तृतीय कालातिक्रमणाति-<br>चार. | ४०९    | उत्कृष्ट-जवन्य संलेखना.          | ४३१    |
| देवयं श्रावकनी कथा.           | ४१०    | मलययंद्रनी भावना.                | ४३२    |
| सूरितुं आगमन.                 | ४१०    | अनशन प्रत.                       | ४३३    |
| शष्य प्रत्ये गुडवयन.          | ४१२    | राजनो शोक.                       | ४३४    |
| कृपणतातुं इण.                 | ४१३    | स्वमनो उत्तर.                    | ४३५    |
| चतुर्थ परब्यपदेशातिचार        | ४१४    | सम्यसागरसूरि.                    | ४३६    |
| स्थविरानी कथा.                | ४१४    | महासेन राजनो भोक्ष.              | ४३७    |
| मलययंद्रसूरि.                 | ४१५    | निर्वाण वर्णन.                   | ४३८    |
| कृपटवृत्ति.                   | ४१६    | तीर्थयात्रा.                     | ४३९    |
| पंचममात्सर्यातिचार.           | ४१७    | सुर तथा सूरेंद्रोतुं आगमन.       | ४३६    |
| नंद विष्णुनी कथा.             | ४१७    | निर्वाणुपह.                      | ४४०    |
| अयोत्सर्गमां रहेता मुनि.      | ४१८    | विरहलाव.                         | ४४०    |
| धर्मदेशना.                    | ४१९    | नंदीश्वरनी यात्रा.               | ४४२    |
| वैराग्यनुं अरण्य.             | ४१९    | ग्रंथकारनी प्रशस्ति.             | ४४३    |
| पतंगतुं भरण्य.                | ४२०    | श्री गिरनार मंडन श्रान्तेभिनाथ   |        |
| मुनिवेष धारण्य.               | ४२१    | स्तवन.                           | १      |
| राणीओनी ग्रार्थना.            | ४२१    | श्री अजरामर पार्थ्यनाथज्ञनुं     |        |
| ओङ यक्ष.                      | ४२३    | स्तवन.                           | २      |
| शुभ्ययंद्रसूरि.               | ४२३    | महुवा मंडन श्रीमहावीर ज्ञन       |        |
| नंदविष्णुक.                   | ४२४    | स्तवन.                           | ३      |
| संलेखना.                      | ४२५    | गोधा मंडन श्री नवण्डा            |        |
| मलययंद्रनी कथा.               | ४२६    | पार्थ्यज्ञन स्तवन.               | ४      |
| महासेनराजा.                   | ४२७    | श्री अभिजरा पार्थ्यनाथतुं स्तवन. | ५      |
| मुनिदर्शन.                    | ४२७    | श्री महावीर ज्ञन स्तवन.          | ६      |
| मृगली अने राजनो संबंध.        | ४२८    |                                  |        |

—४००—

# શ્રીસુપાર્વનાથચરિત્ર.

ભાગ ૨ જો.



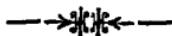


શ્રી મહાવિર જીના પૂજા કલાકારી - ૩. ૧૦૧૮, વડોદરા.

॥ शास्त्रविशारदजैनाचार्योगनिष्ठाध्यात्मज्ञानदिवाकरसद्गुरु-  
गच्छाधिराजश्रीमद्बुद्धिसागरसूरिचरणसरोजेभ्योनमः ॥

## श्रीसुपार्थनाथचरित्र.

### द्वितीयविभाग.



( अनुपादक-प्रसिद्धवक्ता पन्नासलु श्रीअमृतसागरलु गणु )  
देवयशश्रेष्ठीनी कथा.

### स्थूलाहतहानविरभणुत्रत.

दानवीर्यराजा ऐत्यो, हे जगद्गुरु ! हવे त्रीज्ज आणुत्रतनुं  
स्वरूप अमने समजवो. श्रीसुपार्थप्रभु ऐत्यो, हे राजन ! आम,  
आडर अने नगरादिक स्थानोमां सचित्त, अचित्त अने भिश  
अेम त्रणु प्रकारनी योारी यठावनार अेवुं ले अहत स्थुल द्रूप  
होय तेनो सर्वथा त्याग करवो. तेमज्ज ले पुरुष परद्रूपने ढेकुं,  
पाखाणु के तृणु समान माने छे तेनो भडोटो यशउपी पट्ट  
देवयश श्रावकनी भाइक आ जगत्मां वागे छे.

आ भरतक्षेत्रमां वज्रभणीने धारणु ठरनार, सुमनसु  
( हेव-पडिंग ) थी सेवायेलुं अने हुलर  
देवयशानुं हृष्टांत. आभृक्ष ( नेत्रो ) वडे स्फुट ईर्ष्णा  
शरीर समान हृष्पुर नामे नगर छे:

( २ )

શ્રી સુપાર્વનાથ ચરિત.

તેમાં ગજ અથવા ગત ( હુસ્તી-ગયેલો ) છે પરિશ્રહ જેનો છતાં  
 પણું સકલત્ર ( સ્વી સહિત ) સકલ પ્રાણીઓનું રક્ષણું કરનાર  
 મુનિ સમાન નયસાર નામે રાજ છે. વળી તે કુષેર સમાન ઉદાર  
 છે, છતાં પણું ગત ( જ ) દાન-ના અલાવવડે ( હુસ્તીના દાનવડે )  
 વિખ્યાત છે. શીલગુણમાં શિરોમણું સમાન, તત્કાલ વિકસ્વર  
 થયેલા કમલદલ સમાન છે નેત્ર જેનાં અને ગતિના વિલાસ વડે  
 જેણે રાજહંસીનો પરાજય કર્યો છે એવી સુરસુંદરી નામે તેની  
 સ્વી છે. વળી તે નગરમાં ધનાઢ્ય નામે એકી રહે છે અને બહુ  
 દ્વારા એવી મલયમતી નામે તેની સ્વી છે. તેઓને દેવયશ  
 નામે પુત્ર થયો. રૂપમાં કામ સમાન, જીન રાજ ભગવાનના  
 વચનમાં દઠ શ્રદ્ધાળું, વિવેકરૂપી નેત્રોથી વિભૂષિત અને ગુણ  
 રૂપી રતોનો મહાનિધિ એવો તે દેવયશ રાજને બંધુ સમાન  
 પ્રિય હતો. તેની સ્વીતું નામ રૂક્મિણી હતું. તે પણું પ્રેસરસનું  
 કુલલઘન અને જૈનમતની ઉત્તમ ભાવનાવાળી એક આવિકા  
 હતી. વળી બાર પ્રકારનો આવક ધર્મપાળતો અને દરેક પર્વના  
 દિવસોમાં પીષધ પ્રતિમાનો અક્ષયાસ કરતો તે દેવયશ આવક  
 વિશુદ્ધ આચારથી લોકમાં બહુ પ્રસિદ્ધ થયો. અને નિરંતર શુદ્ધ  
 વ્યાપારથી તેણે ધર્મ દ્રષ્ટ મેળવ્યું.

સ્વભાવનો ફૂર એવો ધનદેવ નામે તેનો પિત્રાર્થ ભાઈ  
 હતો. તે હુમેશાં તેના ઉપર બહુ દેખ કરતો  
 ધનદેવની છણ્યો. હતો. જેમ જેમ તેની પ્રશંસા સાંભળો  
 તેમ તેમ કુર્કર્મના વશથી તે તેની બહુ  
 નિંદા કરતો, તેમજ કોઈપણ માણુસ તેના શુદ્ધ વેપારની વાત  
 તેની આગળ કરતો તેને એમજ કહેતો કે એ અધમ ઝૂટવ્યવ-  
 હારીતું નામ રહુારી આગળ જોલવું નહીં. પાંચ હિવસ પણી  
 એની મજા દેખશો કે શું થાય છે. હાલમાં તો રાજની મહેરભા-

દેવયશાશ્રેષ્ઠોની કથા.

( ૩ )

નીથી ધમધમાટ ફરે છે, ટીક ફરવા ધો. એના જેવા ધણા ખદમાસો આ નગરમાં અમેલોયા. અને બહુ ઉસ્તાદો ધુળલેગાએ થઈ ગયા. એ પ્રમાણે દેવયશની પાછળ તે નિંદા કરતો હતો. અને તેની પાસે જાય ત્યારે તેનાં છિદ્રો શોધવાની દૃષ્ટિ અનેક પ્રિય વચન બોલી તેને ખુશ કરતો હતો. છતાં પણ તે દેવયશ તો સ્નેહથી પોતાના બંધુ તરીકે તેને જેતો હતો. અને બહુ પ્રીતિથી સંભાષણ પૂર્વક તેનું સન્માન કરે છે તો પણ તે ધનદેવ પોતાનો કૂરિલ પ્રકૃતિ છોડતો નથી.

એક દિવસ દેવયશ વિષ્ણુક દેવવંદન માટે ઉધાનમાં જૈનમંહિની રહ્યો, જે ભિત્ર ! મહારે પણ દર્શન માટે આપની સાથે આવવું છે. માટે થોડીવાર તમે ઉલ્લાસાં હું શુદ્ધ વસ્તુ પહેલી આવું છું. દેવયશ પણ ત્યાં ઉલ્લાસ રહ્યો. તેવામાં રાજપાટીમાંથી પાછા આવતા રાજાએ તેને ઉલ્લેખો જેયો. તેથી પૂછ્યું કે તું એકલો અહીં કેમ ઉલ્લો છે ? પ્રણામ કરી તે બોલ્યો, હે નરેંદ્ર ! હું દેરાસરમાં દર્શન માટે જાઉ છું. એમ દેવયશનું વચન સાંલળી રાજ પોતાને રસ્તે ચાલતો થયો. ધનદેવ હળ્ણુ સુધી ન આવ્યો. એટલે જે આવશે તો તે મહુને જૈનમંહિનમાં મળશે. એમ વિચાર કરી દેવયશ ચાલતો થયો. આગળ ચાલતાં ધુળમાં દ્વારાએલી અને કંઈક ભાગ ખહાર ચળાકતો જેને દેખાતો હતો. એવી રાજની સુદ્રિકાં તેના જેવામાં આવી. સર્વના અથથી જેમ કોઈ એકદમ રસ્તો છોડી ચાલ્યો. જાય તેમ દેવયશ તે માર્ગ છોડી પાછો વળને આગળ ચાલ્યો. ગયો. પાછળ આવતા ધનદેવે તેને પાછો વળતો જોઈ વિચાર કર્યો કે શામાટે આ પાછો વહ્યો ? શું આ માર્ગમાં સર્વ હશે ? કે જેથી પાછો વળી આ અન્ય રસ્તે ચાલ્યો ગયો. એમ સુંશય કરતો

( ४ )

श्री सुपार्खनाथ चरित्र.

धनदेव त्यां जृष्ठि विशेष तपास करवा लाग्ये। त्यां स्वच्छ वाद-  
गथी आच्छाहित, तेजस्वी सूर्यना अिंभ समान कांतिमय अने  
धुणथी दृष्टाचेली, राजनी मुद्रिका तेना ज्ञेवामां आवी ते तरतज  
आडुं अवणुं जेठ कोई न हेए तेवी रीते मुद्रिका लाई प्राप्ताना  
प्रस्त्रना छेडे बांधी हीधी। पछी ते हेवयशनी पाछण चाल्ये। अने  
ज्ञैनमहिरमां गये। त्यां हेवयशनी साथे भगवाननी पूज्ण करी,  
चैत्य वंदनाहिक विधि समाप्त करी त्यांथी निवृत्त थाई, हेवयशनी  
साथे तेने घेर गये। लोजन पण तेनी साथे कुर्यां अने रात्रिच्ये  
शयन पण त्यांज कुर्यां। ज्यारे धरनां सर्व माणुसो उंधी गयां  
त्यारे धनदेव विचार कर्यो के, आनो। उच्छेष्ट करवानो। आ समय  
ठीक आव्यो। छे। ऐम जाणी कोई पण न जाणी शके तेवी रीते  
चामडाना सांधा तोडी तेनी प्रीती अंदर ते मुद्रिका भूडी हीधी।

हुवे राजाचे प्राप्ताना भडानमां आवी सर्व अलंकारे।

उतार्या एटले मुद्रिका तेना ज्ञेवामां आवी  
मुद्रिकानो तपास। नहीं। तेथी तेणु जाणुयुं के जडूर मार्गमां  
मुद्रिका पडी गाई। ऐम जाणी ते वात तेणु  
प्राप्ताना सेवकने करी। तेणु पण मार्गमां आवता जता  
माणुसोने पूळी अहु उपाय साथे राजमार्गमां अहु शोध  
कराव्यो, तेमज धुणधोया लोकेनी पासे सर्व रेती ज्ञेवरावी,  
परंतु मुद्रिकानो पत्तो लाग्ये। नहीं। एटले ते वात तेणु नरेंद्रने  
जाणुवी। तेथी राजाचे पण सर्व नगरमां पटड घोषणा करावी के  
जेने राजमुद्रिका जडी हेय तेणु पाच दिवसनी अंदर आप्या  
जवी। अने ते मुद्रिका आपनारने हुं अलयदान आपुं छुं। छतां  
त्यारभाऊ ने ते चार पकडवामां आवशे तो ते झुह राजनो। पुत्र  
हुशे तो पण तेने हेहांत शिक्षा करवामां आवशे। आ प्रभाणु घोषणा  
सांलणी हेवयशे धनदेवने योलावी क्षुं के हे भित्र। ते वर्खते तडे-

દેવયશાશ્વતોની કથા.

( ૫ )

રાજમુદ્રિકા જેઠ હતી? ધનહેવ બોલ્યો, તે વખતે એટલે કયારે? આવું સંખ્ય કિનાનું તું શું બાલે છે? એમ ઉલદું બાલી તેણે પોતાનો અલિપ્રાય જણાયો. ત્યારે દેવયશ બોલ્યો, જ્યારે તું મહારી પાછળ ઉદ્ઘાનમાં હર્ષન માટે આવતો હતો. ત્યારે મહેંપણ તે સુદ્રિકા જેઠ હતી. માટે જે તહેં લીધી હોય તો વેળાસર રાજને આપી હે. નહીં તો પછી બહુ સુશ્કેલી થઈ પડશે. તેમજ આ તહારા વંશને ચોરનો અસદ્ય અપવાદ લાગશે. ધનહેવ બોલ્યો, હે ભિત્ર! હું જાણું છું કે તહારા સંગથી સારું ફ્રલનથીજ મળવાનું. ડીક, ઉપરથી ચોરીનું કલંક પણ તું મને આપે છે. તહારા જેવા સજજન તો કોઈ ન જેયા. તારા સહુવાસથી હવે સર્યું, એમ કહી પોતાના મનમાં આનંદ માનતો ધનહેવ પોતાને બેર ગયો.

રાજના પ્રતીહારને એકાંતમાં બોલાવી ધનહેવે કહ્યું કે ખાસ કાર્યને લીધે રાજને મહારે એકાંતમાં કંઈક ધનહેવનું કાવતરૂં કહેવાનું છે, માટે રાજનો મેળાપ તું મહુને કરાવ. ત્યારાદ પ્રતીહાર તેને રાજ પાસે લઈ ગયો. ધનહેવ નમસ્કાર કરી બોલ્યો, હે નરહેવ! આપની સુદ્રિકા દેવયશો લીધેલી છે અને તે વાત નક્કી છે; વળી તેણે ધર્મના કંપટથી લોકોને લુંટી લીધા છે, છતાં પણ હંજુ તેઓ સમજતા નથી. વળી હે રાજન! જે હિવસે આપની વીઠી પડી ગઈ હતી તે હિવસે દેવયશ જૈનમંહિરમાં જતો હતો, ત્યારે હું પણ તેની પાછળ ગયો હતો અને મહારા દેખતાં તેણે ગુમ રીતે નીચે નમી જમીન ઉપરથી તે લઈ લીધી. તે જેઠ મહુને સંશય આવવાથી તેણે તે વીઠી સંતાડી હીધી. અને તે સુદ્રિકા તેણે પોતાના શયનગૃહમાં પેટીની અંદર મૂકેલી છે. આપનું કાર્ય જાણીને જ આ વાત કરી છે. નહીંતો પોતાનું પેટ કોણું ચીરે? કારણુંકે તે મહારે ભાઈ થાય છે. ત્યાબાદ રાજને જાણ્યું કે આ વાત સત્ય છે. કારણુંકે

( ૬ )

શ્રી સુપાર્થનાથ ચરિત્ર.

હું આવતો હતો તે સમયે દેવયશને મહેં પણ તે ડેકાણે ઉલેલો જેચો હતો. એમ વિચાર કરી ધનદેવને કહું કે તું રાજભક્ત છે, તેથી હારી સેવાનો યોગ્ય સત્કાર કરીશ. પરંતુ હાલમાં દ્વારા પાળના કદ્યા પ્રમાણે ક્ષણ્ણમાત્ર તું બેસી રહે. એમ કહી તેને દ્વારાપાલને સ્વાધીન કરી, કોટવાળને મેાકલી કાર્યાંતરના ઉદ્દેશથી દેવયશને આલાવરાંયો. દેવયશ પણ તત્કાળ ત્યાં આવ્યો એટલે એકાંતમાં તેને લઈ જઈ રાણએ પૂછ્યું કે હે બાક ! જૈનમંદિરના માર્ગમાં પડી ગયેલી મહારી સુદ્રિકા તે વખતે તને જડી છે, એમ અમારા સાંભળવામાં આંચું છે. માટે જે એ વાત સત્ય હોય તો હાલ તે આપી હે. હજુ પણ હું તહેને અભયહાન આપું છું અને કંઈપણ તહેને હરકત કરીશ નહીં, તું પણ જણે છે કે સત્યમાં સુખ છે. વળી અમહારી આ રાન્ય સ્થિતિ પણ તે સુદ્રિકાના પ્રભાવથીજ ચાલી આવે છે. આ પ્રમાણે વિષમ વચન સાંભળી દેવયશ આવ્યો, હે નરેંદ્ર ! આપની સુદ્રિકા મહેં લીધી નથી. સેવકો ઉપર આપ સ્વાલાવિકજ દ્યાળું છે. તેમજ આપની પ્રતિજ્ઞા સત્ય છે. નંથી મહુને અભયહાન મળે તેમાં કંઈ સંશય નથી. પરંતુ આ લોક અને પરલોકમાં ત્રીજી પ્રતના લંગથી ઉત્પજ્ઞ થયેલાં નરકાદિક હુઃખના કારણુભૂત પાપો લોગવવાં પડે તેની શી ગતિ થાય ? માટે હે સ્વામિન ! પ્રાણુનો ત્યાગ થાય તો પણ આ ચોરીનું કામ હું નજ કરું. રાણ આવ્યો, તહારું કહેવું સત્ય છે, પરંતુ હારા શયન સ્થાનમાં પલંગ પાસે પેરીમાં તે વીંઠી તહેં જોપવી છે, એમ ધનદેવનું કહેવું છે. માટે તમે અહીં રહો અને તે પેરીને અમારા પુરુષો અહીં લાવે તેવી ગોઠવણું કરો. વળી તેનો તપાસ કરતાં જો સુદ્રિકા નહીં નીકળે તો હું તે પિશાચ રૂપ અધમને ભૂતનું અલિહાન કરીશ. ત્યારણાદ દેવયશો તે જ પ્રમાણે પેરી ત્યાં મંગાવી.

દેવયશશ્રેષ્ઠીની કથા.

( ૭ )

ત્યારખાદ તે પેટી ખુલ્લી કરી જેખું તો તેમાંથી પરિથહનું  
 પ્રમાણું અને નવકાર મંત્રનું ફ્રલ જેમાં  
**દેવયશને શિક્ષા** લખેલું હતું એવું એક ટિપ્પણું કાગળીચું  
 રાજના જેવામાં આંધું. તે વાંચવાથી રાજ  
 સમજુ ગયો કે જેના નિયમો આવા ઉત્કૃષ્ટ છે, તે માણસ આવું  
 કાર્ય ન જ કરે. તેથી દ્વારપાલને હુકમ કર્યો કે ધનદેવને તે જલહી  
 અહોં લાવો, કાશણુકે તેણે આવી ખરાખ વાત શા માટે કરો ?  
 દ્વારપાલો તરતજ તેને દાખલ કર્યો. રાજ બોલ્યો, રે અધમ !  
 હહારું કહેવું અસત્ય છે. એમ રાજના કહેવાથી ધનદેવ તે પેટી  
 અંખેરી કે તરતજ તેમાંથી વીઠી નીચે પડી. તે જેઈ પાસે ઉસેલા  
 લોકો બોલ્યા, આ મહાદું આશ્રય છે કે અમૃતમાંથી વિપ  
 ઉત્પત્ત થયું. ત્યારખાદ ભૂપતિએ કોધાયમાન થઈ દેવયશને બહુ  
 તિરસ્કાર પૂર્વક કહ્યું, રે ધૃત ! ક્રૂટ ધાર્મિક ! આ શું ? દેવયશ  
 બોલ્યો, હે રાજન ! આ સર્વ હૈવનું કર્તાંબ્ય છે. રાજ બોલ્યો, તે  
 વાત સત્ય છે. હૈવેજ તહેને આવી બુદ્ધિ આપી હશે. એમ કષ્ટી  
 રાજને બહુ વિડંખના પૂર્વક વધુરથાને તેને લઈ જવાની આજા  
 આપી. આરક્ષકે તેને વૃદ્ધ ખર ઉપર બેસાડી, ગેરથી શરીર રંગી  
 સુંદર લાલ કણેરના પુષ્પોની માલા તહેના કંઠમાં ફેરાવી અને  
 આગળ ડિંડિમ નગારાના વોષ સાથે બહુ ઢાઠથી નગરની અંદર  
 કોઈ નવીન પ્રકારનો વરધોડા કાલ્યો. તેમાં એક પુરૂષ પોતાના  
 હુસ્ત વડે ઉંચા વાંસડા ઉપર લટકવેલી મુદ્રા રતનને જમાવે છે.  
 તે જણે અન્યાયનો પોકાર કરવા માટે નગર લક્ષ્મીનો ઉંચો કરેલો  
 હાથ હોયને શું ? તેમ દેખાય છે. આ પ્રમાણે દેવયશનો તિરસ્કાર  
 જેઈ તેના સ્વજન અને પરિજ્ઞનો ઝદુન કરવા લાગ્યા, તેમજ વળી  
 પશુ અને પક્ષિઓ પણ બહુ હઃખી થઈ આકંદ કરવા લાગ્યા.  
 તેમજ લોકોની વાણી શ્રવણ ગોચર થવા લાગી કે અહો ! રાજને

( ૮ )

શ્રી સુપાર્બીનાથ ચરિત્ર.

આ બહુ અયુક્ત કર્યે. આવા ધાર્મિક પુરુષને પણ દેહાંતદં કર્યો. આ અપરાધ એનો સંભવતો નથી. પરંતુ પાપી ધનદેવતાનું આ કર્તાંય છે. માટે આ ધર્મી પુરુષનું અશુલ કરવાથી દેશ, નગર, રાજ્ય કે રાજના દેહનું જરૂર અનિષ્ટ થવાનું છે. વળી ધનદેવ આવી વિડિયનાનું પાત્ર બનેલા દેવયશને જોઈ ઓછો, જે પુરુષ પારકાનું અનિષ્ટ ચિંતવે છે તે તેના પોતાના ઉપરજ આવી પડે છે.

રાજની આજાથી રાજપુરાંશોએ તેના ધરનો કણનો પોતાને સ્વાધીન કર્યો. આ પ્રણાણે રાજ્ય તરફથી

**દેવયશની ખીને ભૂલ્લી** અચિંત્ય બલાત્કાર જોઈ તેમજ પોતાના પતિની હુરવસ્થને સાંભળી તેની ખી એક-

દમ ભૂલ્લિત થઈ ગઈ, પણ પરિજનના શીતાદિક ઉપચારથી સચેતન થઈ બહુ હુઃખથી વિલાપ કરવા લાગી. રે પાપિષ્ઠ દૈવ ! આવા ધાર્મિક પુરુષના દેહ ઉપરતું પ્રહાર કરતો કેમ અટકતો નથી, કેમકે જેઓના હૃદયમાં કલાંકની શાંકા પણ નથી, તેઓને મહોટું કલાંક આપે છે. અથવા હુંવે જેહ કરવાથી શું ? અહીં જે કરવાનું છે તે કરું. એમ નિશ્ચય કરી શુદ્ધ થઈ પૈષધશાલામાં ગઈ. અને હૃદયમાં શાસન દેવીનું સ્મરણ કરી, નાસિકાના અભિભાગ ઉપર દ્યાં રાખી, કાચેતસર્ગ કર્યો, એટલે પંચપરમેષ્ઠીના ધ્યાનના પ્રભાવથી તત્કાળ શાસન દેવી પ્રસન્ન થઈ ઓલી, હે વત્સે ! જેહ કરીશ નહીં. સર્વ સારું થશે.

એમ કહી દેવીએ એકદમ પોતાનો ચયમતકાર બતાવ્યો કે

**શાસનદેવીનો** રાજભવનમાં અન્ન, જલ, તાંખુલાદિક વસ્તુ-

**ચયમતકાર** એનો અપહૂાર કર્યો. તેમજ મંત્રીવિગેરના ત્યાંથી પણ તેવીજ રીતે જલાદિકનો અભાવ કર્યો.

देवयशश्रेष्ठीनी कथा.

( ६ )

त्यारभाद राज्ञे पीवा माटे जल माझ्युं, त्यारे जलधरीयाचे गागर, घडा विगेरे सर्वे जलपात्र नेयां, परंतु अिंहमात्र पण्य जल हे असु नहीं, तेथी स्वत्तीत अनी तेणु राज्ञे जणाऱ्युं के; सर्व जलपात्रा लरेलां हुतां, तेमज पात्रोमां छिक्र पण्य हे खातुं नथी. तेम छतां नामालुम शुं थयुं के; कोई ठेकाणे पाण्यानो छांटो, पण्य हे खातो नथी. त्यारभाद स्थगिधरने कल्पुं के एक पाननुं थीडुं तैयार करी लाव. तेपण्य पानहानीमां हाथ नांगी जुळे छे तो, अंदर एक पण्य पान मणे नहीं. ए प्रमाणे जे जे वस्तुओ मंगावी ते सर्व नथी एम जवाब मणवाथी, राज्ञे मंत्रीने योलावी आ हुकिक्त जणावी, एटले मंत्री योव्यो, हे राज्ञ! म्हारे घेर पण्य आवोज अनाव थर्छ रह्यो छे, तेमज आपना सर्व सेवकोने त्यां पण्य आवीज स्थिति थर्छ पडी छे. ते सांलगी राज्ञ योव्यो, एकदम आम थवातुं शुं कारणु? तेनो तमे विचार करो. त्यारभाद मंत्री योव्यो, हे राज्ञ! देवयशविष्णु निर्दीक्ष हे खाय छे, छतां धनहेवे आनी उपर आरोप कर्या छे. वणी ते धनहेव बाहु हुष्टातमा छे, माटे तेनुं ज होषनो आ कंधक कुट्टत्य छे. वणी आ देवयश प्राणांते पण्य आ काम नज करे. एम तेएोना वातचित यालती हुती, तेटलामां चाम-रधारिणीना शरोरमां प्रवेश करी शासनहेवी योली, रे भूठ! आ प्रमाणे धर्मिष्ठ उपर जुलम शुलरनार पोताना स्वामीने पण्य अटकावतो नथी, तो तुं मंत्री शानो क्लेवाय छे? वणी तुं एम कही शके के आ कार्यमां हुं कंधपण्य जाणुतो नथी अने राज्ञे पोतानी मणेज आ साहस करेलुं छे. माटे एमां म्हारे शामाटे वच्ये पडवुं जेईचे! एम जे तुं मानतो होय तो तेपण्य त्हाशी म्होटी भूल छे. केमके नीति शाखमां कल्पुं छे के-दुर्वृत्तेष्वप्यपत्येषु, यथा माता हितैषिणी। दुर्वृत्तेऽपि तथा राज्ञि, नोपेक्षां सचिवोऽर्हति ॥ अर्थ—“जे म हुराचारी एवा पुत्रादिक उपर पण्य पोतानी भाता

( ૧૦ )

શ્રી સુપાર્વનાથ ચરિત્ર.

હિતખુદ્ધિ રાખે છે, તેમ મંત્રીએ પણ અસત્ય માર્ગે ચાલનાર રાજની ઉપેક્ષા કરવી નનોંધુંએ. “વળી ધનદેવે આ સુદ્રિકા કપટવૃત્તિવડે તે પેટીમાં નાંખી હતી તેમજ દેવયશની સાથે ઈધયની લીધે તે પાપીએ આ સમય કૃત્ય કર્યું છે. આ પ્રમાણે તે ચામરધારિણી સીતું વચ્ચન સાંભળી, આના શરીરમાં કોઈક દેવી આવેલી છે, એમ જ્ઞાની રાજ, મંત્રી વિગેરે દોકો નમસ્કાર કરી અનેક ઉપયારેવડે ક્ષમા માગતા હતા, તેવામાં અવળું થઈ ગયું છે મુખ જેનું એવા તે ધનદેવ, લગુડાદિક (લાકડી વિગેરે) ના પ્રહારવડે કૂઠાએલાની માઝક, અતિ કર્દણ શાખદોથી પોકાર કરતો ત્યાં આવ્યો અને ઓલયો કે; મહેંપાપીએ દેખખુદ્ધિથી સ્ક્રિટ સમાન શુદ્ધ એવા દેવયશ ઉપર આ અકૃત્ય કર્યું છે. એમ ત્યાં કોલાહલ થઈ રહ્યો છે, તેવામાં આકાશગામી વિમાનમાં એડેલો, હૃષીશુને વહન કરતો અને સંજનનો જેની સ્તુતિ કરે છે એવા દેવયશ પણ ત્યાં દેખાયો, તેથી તેની વિડંખના કરનારા આરક્ષક પુરુષો દીન થઈ ગયા અને ઉચ્ચા હાથ કરી ત્રાસજનક ઘૂમેલ પાડવા લાગ્યા.

**તેટલામાં વિમાન રાજમહેલ ઉપર આવી પહોંચ્યું:** દેવયશને વિમાનમાંથી નીચે ઉત્તરતો જોઈ ચામરદેવીનું વચ્ચન. ધારિણી અટ ઉલ્લી થઈ. તેજ પ્રમાણે રાજ, મંત્રી વિગેરે અન્ય જનોએ પણ અસ્યુથાન આપ્યું. ત્યારણાં તે સ્વીએ દેવયશને પોતાના હસ્તતનું અવલાંબન આપી વિમાનમાંથી નીચે ઉતાર્યો. પછી રાજએ પણ તેને બહુ માનપૂર્વક સિંહાસન ઉપર એસાંયો અને પોતે બીજા આસન ઉપર એઠો. ત્યારણાં શાસનદેવીએ દેવયશને પ્રાર્થના કરી કલ્યું કે તું જૈનમતનો રાજી છે, તેમજ દ્વારાધર્મમાં અથણી છે. વળી તેંબું ઉત્કૃષ્ટ રીતે ગૃહિધર્મનો સ્વીકાર કર્યો છે. અને સર્વથાતું નિર્દેખ છે, છતાં જે દોકોએ હુારી આ પ્રમાણે વિડંખના

देवयशस्त्रेष्ठीनी कथा.

( ११ )

કરી છે તેઓને હું શિક્ષા કરું છું. કારણું કે હું જૈનશાસનની સેવા કરનારી દેવી છું. વળી તહારી ખીએ કાચોત્સર્ગ કરી રહુને બોલાવી છે, એટલે હું તેઓને શિક્ષા કર્યો વિના રહીશ નહીં. આ પ્રમાણે દેવીનો અભિપ્રાય જાણી દેવયશ બોલ્યો, હે દેવિ ? રહારા હુંકર્મને લીધે રહુને આ વિડંબના થઈ છે. વળી આ હું ખડકાથી તે કર્મેનો નાશ કરવામાં હું સમર્થ થયો, તેમજ રહારા પ્રાણોની રક્ષા થઈ અને હુંકિર્ચિર્દ્ય કલંક પણ હૂર થયું. તે સર્વ તહારા પ્રલાવથીજ થયું છે. એટલે હેદેવિ ! હવે રહારી સેવા કરવામાં તહેં કંઈ પણ બાકી રાખ્યું નથી, છતાં પણ હવે આ સર્વ લોકને ઉપદ્રવથી વિસુક્ત કર ? એટલે તે પણ રહારંજ વાતસલ્ય થયું તેમ હું માનીશ. ત્યારબાદ દેવી તેપ્રમાણે સર્વને સ્વસ્થ કરી દેવયશની આજા લઈ પોતાના સ્થાનમાં ગઈ.

**રાજએ હુંકર કર્યો કે વિડંબનાપૂર્વક ધનહેવને દેહાંત શિક્ષા ફરે.** તે સાંલળી દેવયશને હ્યા આવી ધનહેવને શિક્ષા. તેથી તેણે રાજને કહી તેને સુક્ત કરાવ્યો. ત્યારબાદ રાજએ પોતાની પદૃરાણીને દેવયશને ત્યાં મોડલી અને તેની ખી ડુકિમણીને પાદખીમાં બેસાડી પોતાને ત્યાં બોલાવરાવી. જ્યારે તે પોતાની નજીક આવી ત્યારે રાજ ઉલો થઈ તેના પગમાં પણ્યો એટલે ડુકિમણી બોલી, હે નરાધીશ ! સર્વ કલ્યાણના પાત્ર આપ થાયો. એમ આશીર્વદ આપ્યા બાદ રાજએ તેને લદ્રાસન ઉપર બેસાડી. પછી કૃતર પુરુષોમાં શિરોમણિ સમાન રાજ હાથ નેડી સર્વ સલા સમક્ષ બોલ્યો, હે ધર્મલગિનિ ? હું આપનો શુન્હેગાર છું તેમ છતાં આ પાપથી રહુને તહેં સુક્ત કર્યો માટે હું તહારો રહોટો ઉપકાર માતું છું. રાજ્ય અથવા આ દેહથી પણ તેનો બદલો વાળવાને હું સમર્થ નથી. હવેથી આ સર્વ રાજ્ય સંપત્તિ તહારી છે માટે

( १२ )

श्री सुपार्थनाथ चरित्र.

तहने जेम योग्य लागे तेम तहारे पोतेज तेनी व्यवस्था करवाना  
छे. ते प्रसंगे हेवयशनो मुत्र जेने धान्यभेट नामना उपनगरमां  
स्वज्ञनोचे मूळये हुतो ते त्यां राजद्वारमां आळये। अने द्वार-  
पालनी सूचनाथी राजन्ये तेने पोतानी पासे योलांये। तरतज  
ते अंदर प्रवेश करी राजने नभ्ये। पछी पोतानां मातापिताने  
नभी सर्वनो यथायोग्य सत्कार कर्ये। त्यारभाद राजन्ये तेने  
आलिंगन करी पोताना घोणामां ऐसाह्ये। पछी हेवयश योव्ये,  
राजन्ये आ समय राज्याद्विक संपत्ति इकिमण्णुने स्वाधीन करी  
छे. वणी ते खी रुहारे स्वाधीन छे. अने हुं नेन सिद्धांतना  
शाता एवा सहशुद्धना स्वाधीन छुं। भाटे हाल लोअन करी  
याद्वा आपणे तेओने वंदन उत्सव जड्ये, कारणु के तेओ। आने  
नंदनउद्यानमां आवेला छे, ते वात नझी छे; केमके विमानमां ऐसी  
ज्यारे हुं अहो आवतो हुतो त्यारे तेमनां हर्षन करीने प्रणाम  
पणु रुहें कर्या हुता। भाटे परम उपकारी एवा ते मुनीद्रनी  
आज्ञा इकिमण्णु सहित अमारे मान्य करवी जेहुये। वणी हे  
राजन! आपे पाणु यथाशक्ति धर्मसेवा अंगीकार करवी योग्य छे।

**लोअन उर्याणाद राज रुहाटा विस्तारशी हेवयश, इकिमण्णु**

अने तेना मुत्र सहित सूर्द्रहनी पासे गये।

**हेवयशानी माक्षण्गति.** तेमज विनयपूर्वक वंदनविधि करी तेओ। त्यां  
बेठा एटले सूरिये धर्मलाल आणी यति-  
धर्म अने गृहिधर्मनो उपहेश आये।

ते सांखणी नृपाद्विक सर्वे यथार्थ आध पाभ्या। इकिमण्णु सहित  
हेवयशी हीक्षा लेवा भाटे राजनी आज्ञा भागी। राजन्ये ज्वा-  
भमां ज्ञाणांयुं के तम्हार्द उड्हेवुं सत्य छे। परंतु दश द्विस  
पछी ते कार्य सिद्ध थेशे। श्रेष्ठीये पणु ते प्रभाणे क्षुल कर्युं।  
त्यारभाद झीरीथी विधिपूर्वक गुड महाराजने वंदन करी

नाहटश्रेष्ठीनी कथा.

( १३ )

राजा सर्वने साथे लक्ष पोताना स्थानमां गयो। त्यां  
राजाए तेओानी पासे तेमना सर्व संबंधीओने बोलावी  
तेओानी संभवि लीधी। अने सर्व नगरमां अमारी घोषणा  
करावी। तेमज पोताना अनन्नामांथी तेनी धृच्छा प्रमाणे जैन-  
महिरोमां दृव्य अपावरांयुः अने चतुर्विध संघनी अहु भक्ति  
करावी तेमज हीन, अनाथ अने दारिद्र्दिओने यथेचित्त हान  
देवरांयुः। पछी तेना पुत्रने अहु धन आपी श्रेष्ठीपहे स्थापन  
कर्यो। त्यारभाव राजाए विधिपूर्वक तेओाने हीक्षा अपावी अने  
पोते पण गृहिधर्मनो स्वीकार कर्यो। तेथी जैनशासन अहु  
हीपवा लाग्युः। देवयश मुनि अने इकिमण्डी सांख्वी अन्ने सम्यक्  
प्रकारे चारित्रपाणी डेवण ज्ञान पाभी तेज लवमां सिद्धिपद  
पाभ्यां।

॥ इति तृतीयाणुवते देवयशः कथानकं समाप्तम् ॥

—→\*⑤\*←—

नाहटश्रेष्ठीनी कथा.

—•—

प्रथमस्तेनाहृतक्यातियार.

हानवीर्य राजाए प्रक्ष कर्यो के, हे भगवन् ! आपना  
मुखारविद्मांथी नीकणता त्रीज्ञ अणुवतनी कथार्थ अमृतनु  
पान करी अमे तृप्त थया धीओ, परंतु तेना अतीचारोनी व्याख्या  
द्रष्टांत सहित संखणावी अमने कृतार्थ करो। श्री सुपार्थप्रभु बोल्या,  
ने वस्त्रिक्ष चेतारो अपहुर करेलुँ धन शुभे रीते अहुणु करे छे  
ते नाहटनी माझक उल्य लेअमां वध बंधनने पात्र थाय छे।

विदुम-परवाणाओ वडे मनोहर, विशाल लक्ष्मीनुँ कमल-

( १४ )

श्री मुपार्श्वनाथ अरित्र.

**नाहटदृष्टांत.** मंहिर एवुं समुद्र समान लद्विपुर नामे  
नगर छे. तेमां स्थिरहेव नामे ऐडी रहेतो।  
हुतो। कमलश्री नामे तेनी आर्या हुती, ते  
शील शुणुमां अथर्वी हुती। नाहट नामे तेएने एङ्ग पुत्र  
हुतो। ते स्वलालथी दोसी अने वेपारमां निर्भय हुतो। एक  
दिवस केाङ्क तेना भित्र तेने दोलावी कहुं के खडु करीयाण्डु  
भरी धध्या वेपारी दोडो। नगरनी खडार आव्या छे। ते सांखणी  
नाहट यणु वेपारना दोलथी भित्रनी साथे त्यां गयो। तो केाङ्कपणु  
वेपारी त्यां भणे नहीं, पछी तेणु पूछसुं के; हे भित्र ! ते  
वेपारीओ कुयां छे ? ते जलही अताव ?

**सूरिदर्शन.** आ सांखणी अनेक मुनिओथी परिवृत्त उद्घानमां ऐडेला  
सूरिने तेणु अताव्या। ते जोई नाहट  
आव्यो, आतो निर्वाच ( त्याणी ) छे।  
भित्र आव्यो, हे लद ! योते मुनि धर्ममां  
रहेला छे। परंतु एमनी पासे खडु अमूल्य वस्तुओ छे। अने  
ते पणु खडु मोंधा लावे आपे छे। छतां पणु जेते वस्तुओ आप-  
णुने ग्राह थाय तो, तेना प्रतापथी दोल सहित हारिद्रिपी  
वैताल नाशी जय छे। आ प्रभाणु नाहटने समज्ञवीने तेनो  
भित्र प्रणाम करी आव्यो, हे सूरीक्षर ! आ वणिक पुत्र  
व्यापार माटे आपनी पासे आव्यो छे। माटे आपना हुद्य  
दृपी गांडीमां धारणु करेली, खडु कमती रत्न, मैक्किंड विग्रेरे  
केंद्रपणु किंभती वस्तुओ अतावो। शुद्धमहाराज आव्यो, तहाँ  
कहेवुं सत्य छे। परंतु अने अरीहवानो। विचार होय तो  
अतावीओ, नहींतो। निर्वाचक आव्यवाथी शुं वणे ? उमडे भात्र  
अतावीने पाण्डुं मूळवाथी ऐह उत्पन्न थाय। नाहट आव्यो,  
अंथिओ छाडीने रत्न अतावो। जोया विना भात्र मुझे आव-

नाहटअंगेष्ठीनी कथा.

( १५ )

वाथी किंमत केवी रीते थाय ? त्यारभाद कानने अमृत समान सुखदायक गंभीर वाणी वडे मुनीद्र बोल्या, जे सम्यकृत्व इपी महारत्न रहने पसंद पडे तो अहंषु कर. आ सम्यकृत्व रत्न ज्ञेन शासन इपी क्षीर सागरभांथी प्रगट थंगेलुँ छे. तेमध सर्व शुण्डाथी संपूर्ण अने चिंतामणी समान भनेवांछित अर्थ आपवामां श्रेष्ठ छे. अने वणी शुद्ध छे कांति जेनी एवो आ यीजे प्राणिवध विरति नामे हार छे, जेनी अंदर भन, वयन अने काया अम त्रणुने त्रणु करणे शुण्डातां नव थाय एवी नव सेरा रहेली छे. विगेरे युक्तिपूर्वक वयने वडे मुनिधर्म तथा गृहिधर्म पशु विस्तारपूर्वक संबोधाव्यो. कर्मना क्षेयोपशमथी ते अन्ने जणाए गृहिधर्मना स्वीकार कर्यो. त्यारभाद मुनिने नमस्कार करी अन्ने पोतपोताना घेर गया. अने विधि प्रभाषे ते धर्मनुं पालन करवा लाग्या.

एक दिवस नाहट पोतानी हुकानमां काम करतो हुतो तेवामां त्यां चौर लोको अहु सुवर्णीचिक धन भित्रनो उपहेश. लाई आव्या. तेणु पशु कैद न जाणे तेवी रीते युक्तिपूर्वक ते धन लाई तेना अद्वामां कंधक आपी तेओने विदाय कर्या. आ प्रभाषे झूट व्यवहार करतां नाहटने तेना भित्र जेयो. अने भित्र समल गयो के आ अवणे रस्ते चढी गयो छे अम जाणी तेणु एकांतमां उपहेश आप्यो के हे नाहट ! तुं आ काम करवुँ छोडी हे, आथी त्हारूँ त्रीजु व्रत कलंकित थाय छे. ते सांलगी नाहट बोल्यो के, हे भित्र ! अद्वादानन्तुं ज में प्रत्याख्यान कर्युँ छे. यीज कार्यनो में निषेध कर्यो नथो. भित्र बोल्यो, गुडमे त्रीजवतमां चारीनुं धन लेवुँ तेने अतिचार ( होष ) कडेलो छे. भाटे चारीनुं धन सर्वथा न लेवुँ एवो नियम कर. अम कही

( ૧૬ )

શ્રી સુપાર્થનાથ ચરિત્ર.

તે પોતાને ઘેર ગયો. ત્યારથાદ નાહટ પોતાના મનમાં વિચાર કરવા લાગ્યો કે શુરૂઆતો સુનિધર્મનો પણ ઉપદેશ આપ્યો હતો, તેથી તે પણ પાળવો જોઈએ ? હોથ, તે તો તેમને કહેવાનો અને આપણો સાંભળવાનો ધર્મ છે. એમ માની પોતાના હુંકૃતથી અટક્યો નહીં. વળી એક દિવસ કોશ્ક ચોર રતનાવલી હાર લઈ તેની પાસે આવ્યો. એટલે તેણે પ્રથમની માઝુક સ્વદ્ય કિંમત આપી તે હાર લઈ લીધો. તે સમયે વિમલ રાજનો કારખારી તેની હુકાને લેવડ-દેવડનો સંબંધ હોવાથી નાહટની પાસે આવી ઓલ્યો, હે શોઠ ! આજે હુમારે રેશમી કાપડ લેવાનું છે માટે બતાવો તે ટીક હોથ તો લઈએ. તરતજ પોતે ઉલ્લો થઈ ગાંશડી લઈ બહાર આવ્યો. એટલે કેડમાં ઓસેલો હાર વજનના લીધે નીચે પડી ગયો. જે તરતજ સે કારખારીએ લઈ લીધો અને તપાસ કરીને ઓલ્યો, હે શ્રેષ્ઠ ! આ શું ? નાહટ ગસરાઈ ગયો. અને કંઈ પણ જવાબ આપી શક્યો નહીં. ત્યારે તેનો હાથ પકડી કારખારી ઓલ્યો, આ હારની સાથે ભીજા કુંડલાદિક અદંકારો ગમેલા છે, તે તહારી પાસે છે ? તે સાંભળી નાહટ ઓલ્યો, દેશાંતરથી વેપારીએ આવ્યા હતા તેઓની પાસેથી લક્ષ સોનેયા આપી આ રતનાવલી હાર મહેં લીધો છે. કારખારી ઓલ્યો, હે નાહટ ! હું જ્યૂદું ઓલવાથી તહારું કંઈ વળે તેમ નથી. કારણું મનોહર પ્રાણપ્રિયાના સમાન રાજને આ હાર બહુ પ્રિય છે. વળી આ હારમાં બહુ શુણો રહેલા છે. માટે તું પોતેજ રાજને વિનય પૂર્વક આપી હો. નહીંતો રાજને માલુમ પડશો તો ધન અને દેહથી પણ તહારો છુટકારો થશો નહીં, એમ તેઓ ઓલતા હતા તેટલામાં એકદમ ત્યાં આરક્ષક આવ્યો. અને મારો, મારો, એમ ઓલી તીવ્ર ખર્જના પ્રહાર કરીને તેને અવળા હાથે બાંધ્યો, તેથી નાહટ બહુ દીન થઈ રહેન

નાહટક્યા.

( ૧૭ )

કરવા લાગ્યો. તે જેણ કારબારીએ આરક્ષકને પૂછ્યું, એકદમ તેને બાંધવાનું શું કારણ ? આરક્ષક ખોલ્યો, સાહેબ ! એક ચોર અમારા અપાઠામાં આવ્યો હતો. નાસ્તાં ભાગતાં તેણે કહ્યું કે ધણુાખરા રાજના અલંકારો નાહટને ત્યાં છે. માટે એને રાજ પાસે લઈ જવો ઉચિત છે. એમ કહી આરક્ષક રતનાવલી હાર સહિત નાહટને નરેંદ્રની પાસે લઈ ગયો. ત્યારથાદ ઘીણ ચોરને પૂછવાથી તેઓએ પણ કહ્યું કે હે રાજન ! દરેક ચોરનો માલ પોતે વણિક હોવા છતાં પણ તેણે હરીલઈને પોતાને ઘેર રાજ્યો છે. તે સાંસળી રાજની કોપાયમાન દૃષ્ટિ મંત્રી તરફ પડી. મંત્રીએ પણ નાહટને એકાંતમાં બહુ સમજાવ્યો કે રાજના તેમજ અન્ય લોકેના દાગીના તહારી પાસે જે હોય તે વેળાસર આપી દે. નહીં તો આકાના તુલની માઝક તું કયાંછ ઉડી જઈશ, અને ભૂંડા હાલે મરી જઈશ. નાહટ ખોલ્યો, એક હાર વિના મ્હેં જે દાગીના લીધેલા છે તે સર્વ પાછા આપું છું. માત્ર હાર મહારી પાસે નથી, કારણ કે મહારી પાસેથી કપટ કરી તે હાર કોઈક માણુસ લઈ ગયો છે. મંત્રી ખોલ્યો, રે ધૂર્ત ! પ્રથ્યે લોકનું તત્ત્વ આ હારમાં રહેલું છે, તેથી જે તે તું નહીં આપે તો તહારો આ દેહ રહેવાનો નથી એમ જરૂર સમજવું. એમ ધમકી આપી મોરબંધથી સજજડ બાંધીને ચાખુકના પ્રહાર કરવા માંડ્યા તો પણ તેણે હાર આપવાની વાત માની નહીં. જેથી મંત્રીએ તેના પિતાને ખોલાવી કહ્યું કે તમહારા પુત્રને આ વાત પૂછી નુચ્ચો, નહીંતર આમાંથી તમહારે બહુ તુકશાન વેઠવું પડશે. એમ સાંસળી તેના પિતાએ નાહટને એકાંતમાં લઈ જઈ બહુ સમજાવ્યો. અને કહ્યું કે અરે કુલહૃષક ! હું પ્રથમથી ના પાડતો હતો છતાં તહે ચોરિનો સાથે વેપાર

( ૧૮ )

શ્રી સુપાર્શ્વનાથ અરિત્ર.

કર્યો તેનું આ કૃપા, આંદું. અતિ લોલકૃપી અહવડે અહણું કરાયેલો તું કંઇપણું સમજયો નહીં અને આ રાજવિર્દ્ધ કાર્ય કર્યું. કાગડાની પેટે પીડ સામે હૃષિ કરી પણ પછવાડે લગ્નોટાનો પ્રહાર ન જોયો. કૂટ વ્યવહારથી ઉપાર્જન કરેલું ધન અનર્થનું કારણ થાય છે. તેમજ તે આલોક અને પરદોકમાં અનેક હુંઘો આપે છે. વળી વિશ્વસ્ત જનોને હુંઘી કરવાથી, લોણા લોકોને છેતરવાથી અને પર પીડાજનક કોઈ પણ કાર્ય કરવાથી નિર્દ્દ્ય ચિત્તવડે જે પારકું ધન અહણું કરવામાં આવે છે, તે ધન પૂર્વો-પાર્જિત સંપત્તિનો ક્ષય કરે છે. તેમજ ધોર ભયજનક થાય છે. માટે હે પુત્ર ! આ કાર્યથી જરૂર તહારું સૂચ્યુ થવાનું છે. વળીનો તહારે લુલવાની દિશા હોય તો તે હાર જ્યાં તહેં મૂક્યો. હોય અથવા કોઈને આપ્યો હોય તો કહી હે, જેથી તહારું રક્ષણ કરું. નાહટ આવ્યો, હે પિતાજ ! હારની વાત તો કરવીજ નહીં; કારણું તે હાર મહેં કોઈ રહારા મિત્રને આપ્યો છે. માટે ફ્રોય તથા કુદુંબ સહિત રહારા મિત્રને કોઈ પણ જાતની હુક્કત ન થવી જેધીએ. કૂટનીતિથી વર્તનાર હું પાપી છું તેથી રહારે અને રાજને જેમ થતું હોય તેમ જાણ થાય. આ પ્રમાણે પોતાના પુત્રનો નિશ્ચય જાળ્યો શેડ મનમાં બહુ ખુશી થયા, અને વિચાર કરવા લાગ્યા કે આ એનું સંજજનપણું ગણ્યાય, કારણ કે પોતાની આવી સ્થિતિ છતાં પણ તે પોતાના મિત્રનું રક્ષણ કરવા ધર્યે છે.

ત્યારખાદ સ્થિરરહેવશેષી રાજ પાસે જર્દ પ્રાર્થનાપૂર્વક કહેવા લાગ્યો કે હે નરાધિરાજ ! હું આપનો નાહટનીસ્થિતિ. વણિક છું માટે રહારી ઉપર કૃપા કરેા અને તે દૂકત હાર વિના બાકીની સર્વ વસ્તુઓ પુરેપુરી પાછી આપશે, તેમજ રહારા જાંડારમાં પાંચ કરેાડ સૌનૈથા છે, તેમાંથી હારની કિંમત અથવા તેથી અધિક

महननी कथा.

( १६ )

पणु जेटलुं धन जेठाए तेटलुं अहंषु करो। वणी ऐना हंड निमित्ते पणु जे जेठाए ते सुजेथी लाईने तेने मुक्ता करो। ऐम शेठनुं वचन सांखणी राजा खोद्यो, अमृतमांथी विष प्रगट थाय तेम आ भेण्टुं आश्चर्य गण्याय, कारणु के स्थिरहेवनो पुत्र थई आवुं विषम कष्ट पडयु छितां पणु धनना भेण्हथी प्रसिद्ध वात उडावी हे छे। परंतु आ शेठ तो सरक खुद्धिनो छालाथी खोताना निधानमां रहेला धनने पणु प्रगट करे छे। त्यारभाद राजाए नाहटने त्यां खोलावी शेठने सोंपी हीधो। अने कहुं के तम्हारी शरमथी अने मुक्ता कर्यो छे; परंतु तम्हारे त्यां जे माल छेअ रो आपी हो। ऐम सांखणी ‘भेणी भडेरभानी’ ऐम कुही राजने नमस्कार करी पुत्र सहित शेठ खोताना घेर गयो। अने राजनी आज्ञा अमाणु सर्व कार्य कर्युं। त्यारभाद नाहट विषुक पर्यालोचना कर्या सिवाय त्यांथी भरीने नरकस्थानमां गयो। भाटे हे काय प्राणीओ ! आ त्रीज्ञ प्रतना अतिचारनुं स्वरूप जाणु अवश्य नेने दूरथी वर्ज्जने।

इति तृतीयाणुत्रते प्रथमातिचारहृष्टान्ते नाहटकथा समाप्ता ॥

### महननी कथा.

#### द्वितीय स्तेन प्रयोगातिचार.

दानविर्य राजा खोद्यो, कृपाना सागर ऐवा हे लगवन् ! त्रीज्ञ प्रतमां द्वितीय अतिचारनुं स्वरूप जाणुवानी अमारी अहु उठकंडा छे तो कृपा करी आप संखणावो। श्री सुपार्श्वप्रभु खोद्यो, जे त्रीज्ञ प्रत अहंषु करीने चोर लोडेने चोरी करवामां

( २० )

श्री सुपार्खनाथ चरित्र.

सहाय आये છે, તે પુરુષ મહનની પેટે ઉભય લેકમાં બહુ હુંઘી થાય છે.

આ ભરતકોત્ત્રમાં સપ્રાકા ( પર્બતી ) રં કિલ્વા સહિત ( સપોનું મુખ્ય સ્થાન ), બહુ સગૃષ્યુ મહનદૃષ્ટાંત. ( શકુન ) અનેક ગુણું પુરષો ( પક્ષિઓ ) વડે સેવાયલું, તેમજ બહુ શ્રાવક ( શાપદ ) શીકારી પશુઓવડે વ્યાસ ભેણાટા અરણ્યની માર્ક કુસુમપુર નામે સુપ્રસિદ્ધ નગર છે. તેની અંદર વહન કર્યો છે પૃથ્વીનો ભાર જેણું, હયવડે વ્યાસ છે, હૃદય જેનું ( જળથી ભરેલો છે દરેક કાગ જેનો ) અને ઉત્તમ વંશમાં ઉત્પત્ત થયેલો ( ઉગ્યા છે ભેણાટા વાંસડાઓ જેની અંદર ) એવા પર્વત સમાન સ્થિર બુદ્ધિવાળો વૈરોચન નામે રાજ છે. વળી સારંગ ધનુષ=શ્રેષ્ઠઅંગ) સુદર્શન ( ચક્ર=મનોહર દર્શન ) વડે આનંદજનક, ઉત્તમ વિલાસવડે પ્રગટ કરી છે શોલા જેણ્ણીએ અને લક્ષ્મી ( દેવી=શરીરની કાતિ ) વડે વિભૂષિત એવી કૃષ્ણની મૂર્તિ સમાન લલિતા નામે તેની સ્વી છે. દેવતાઓની મધ્યે અમુર સમાન અનેક હુંઘોને ઉત્પત્ત કરનારો હુર્લાલરાજ નામે તેઓને એક પુત્ર છે અને મહન નામે તેનો એક મિત્ર છે. હવે તે હુર્લાલરાજ ડોઈનું ધન તો ડોઈની સ્વીનું અલાતકારે હુરણ કરે છે. વળી નય ( નગ ) નીતિ=વૃક્ષોના સમૂહને નિરંકુશ-ઉનમતા, હુસ્તીની માર્ક તે નિર્મૂલ કરે છે.

તેથી નગરના લોકોએ રાજની આગળ પોકાર કર્યો કે હે નરધીશ ! આપની છાયામાં અમે રહ્યા લોકોનો પોકાર. છીએ છતાં અનાથની માર્ક આ નગરીને આપના કુમારે લુંટી લીધી છે. રાજીએ કોધાતુર થઈ કુમારને બહુ ધિક્કાર આપ્યો. રે હુરાચારી ! રહાડ-

મહનની કથા.

( ૨૧ )

રાજ્ય છોડી કેાઈપણ સ્થાને તહેને ઝાંબે ત્યાં તું ચાહ્યો જા. તહારું સુખ મુને હેખાડીશ નહીં. તું મહારા પુત્રજ નથી કેમકે મહારા પૂર્વજીએ મહા યત્નથી પાળેલી પ્રજાને કીડાવડે લુંટવાથી મહારી કીર્તિને પણ તેં ફૂષિત કરી. પણ અને પુત્રમાં રાજ્યનીતિ સમાન રાખવી એમ જે પંડિતો કહે છે તે સત્ય છે. વળી જો હું તહારા ખુલ્લા હોષને છુંપાવી ચોગ્ય દંડ ન કરું તો હું નીતિ-માર્ગથી વિપરીત ચાલનાર ગણ્યાઉં, કેમકે પોતાના રાજ્યમ સર્વજનોનું સમલાલ પૂર્વક નીતિથી ચાલન કરું તેજ લક્ષ્ણેામ, સરોવર, કુવા અને હેવમાંદિરાહિક બનાવવા સમાન ગણ્યાય. શાસ્ત્રમાં પણ કહ્યું છે—

દુष્ટસ્ય દણદः સ્વજનસ્ય પૂજા, ન્યાયેન કોશસ્ય ચ સંપ્રવૃત્તિઃ ।  
અપક્ષપાતો રિપુરાપ્ત્રરક્ષા, પञ્ચૈવ યજાઃ કથિતા નૃપાણામ् ॥  
કિં દેવકાર્યેણ નરાધિપાનાં, કૃત્વા હિ મન્યું વિષમસ્થિતાનામ् ।  
તહેવકાર્ય ચ સ એવ યજો—યદશ્રુપાતા ન ભવન્તિ રાષ્ટ્રે ॥

અર્થ—“હુણો દંડ, સર્વજનની પૂજા, ન્યાયથી કોશા ( ખ-જાના ) ની વૃદ્ધિ, સર્વથા પક્ષપાતનો ત્યાગ અને શત્રુઓથી દેશની રક્ષા કરવી એ પાંચે કાર્યો રાજ્યએને માટે ખાસ યજાભૂત કલ્યાંછે. વિષમ સમયમાં આવી પડેલા રાજ્યએ જો ક્રોધ વશ ન થાય તો પછી હેવ સંબંધી કાય કરવાથી શું ? કારણુકે રાજ્યમાં કોઈ-પણ ઠેડાણે અશ્રુપાત ન થાય તેજ કાર્ય અને તેજ યજા જાળુવો.” વળી જેઓના માટે હું નિરંતર ટાઢ, તડકે, કુદ્ધા અને તૃપા સહન કરું છું, તેઓના ઘૃહસાર તથા સ્વીએને બલાતકારે તું છરણ કરે છે માટે મહારૈ તહારું કામ નથી, તેથી તું જલદી મહારું રાજ્ય છોડી અન્ય સ્થળે ચાલ્યો જા, તહારું સુખ જોવાને પણ હુંવે ધર્મ રદ્ધો નથી. કેમકે ચારટાએની વસ્તી કરતાં શૂન્યસ્થાન ઘણ્યા દરજને શ્રેષ્ઠ ગણ્યાય.

( २२ )

श्री सुखार्थनाथ चरित्र.

એ प્રમાણે પોતાના પિતાના વચન દૃપ દ્વારાનથી પ્રદીપ  
 થયું છે શરીર જેનું એવો તે કુમાર મહન-  
**સિદ્ધપુત્રનો શાખ.** સહિત નગર છોડી ચાલ્યો ગયો. આગળ  
 જતાં એક નગર આવ્યું. ત્યાં નગરના ઘ-  
 હાર તળાવની પાળ ઉપર એકલા અને એક સિદ્ધપુત્ર જેમના  
 ચરણુની સેવા કરતો હતો. એવા સુનીદને નમસ્કાર કરી રાજકુમાર  
 ભિત્ર સહિત ત્યાં એકો. તેવામાં સુંદર પૈરાંગનાએનું એક સુખ્ય  
 મંડલ આવ્યું. સુનીદને જેઠ તેઓમાંથી એક સ્વીએલી, સખી!  
 અલી સખી! જો જો આ એક આશ્ર્યો છે. આ બિક્ષુકનું સ્વરૂપ  
 નેત્રને આનંદજનક કેવું સુંદર હોયે છે? તે સાંભળી પોતાના રૂપથી  
 ગર્વિષ્ટ થએલી અન્ય સ્વી થૂતકાર કરી એલી, સખી! એના ગાલ તો  
 સુકાઈ ગયા છે તેથી સુંદરતાનું કયાં ડેકાણું છે? માટે એને પતિ  
 ન કરીશ. આ વાત સિદ્ધપુત્રના સાંભળવામાં આવી તેથી તેણે  
 જાણ્યું કે આ પણ શુરેનું મહોદું અપમાન થયું ગણ્યાય. એમ  
 સમય સિદ્ધપુરુષ તે સ્વી ઉપર એકદમ ડોપાયમાન થઈ ગયો.  
 અને પોતાની વિદ્યાના બળથી મસ્કરી કરનાર તે સ્વીને સુનિઉપર  
 રાગવાલી કરી. ત્યારખાદ તે સ્વી અન્ય સ્વીએની સમક્ષ સુનિ  
 પ્રત્યે એલી, સુંદર અંગવાળા એવા હે ભાગ્યવાન! તહારા વિના  
 અહુંથી ચાલવાને મહારા પગ ઉપડતા નથી! તેની સખીએલી,  
 એલી, પ્રિય સખી! પ્રથમ એને જેઠ ત૱દ્દે થૂતકાર કર્યો તેનું  
 આ કુળ આવ્યું! જેણીનું સુખ દીનતામાં આવી પડ્યું છે એવી  
 તે સ્વી એલી, મહારી સખીએલી થધ તમે જ્યારે ક્ષત ઉપર ક્ષત  
 નાખ્યો તો પછી મહારે શરણ ડેનું રહ્યું? વળી તમે મહને આ  
 છેવટની જલાંજલિ આપો છો. એમ નક્કી સમજનો. ત્યારખાદ ત-  
 રતજ બહુ હુઃખથી પીડાએલી તે સ્વી પૃથ્વી પર પડી ગઈ અને  
 અહું વિતાપ કરવા લાગી. તે સાંભળી સિદ્ધપુત્ર પોતાની વિદ્યા

મહની કથા.

( ૨૩ )

સમેટી લઈ યોદ્યો કે આ મુનીંદ તો સ્વીએને ચાંડાલિની સમાન અસ્પૃશ્ય માને છે. માટે અહી તને ખહુ કલેશ થશે, એમ સમજ વિષયવાસનાનો ત્યાગ કરી તુશાંત થા. વળી આ મુનિ ઉપર તહારો રાગ હોય અને તહારા આત્માને એમના આધીન માનતી હોય તો એમનું સ્થિર અને પરમ સુખદાયક એવું વચ્ચે થણું કર. તે સાંભળી મુાનને નમસ્કાર કરી સ્વી યોદી, જગદ્પ્રભુ ! મહારા યોગ્ય જે કરવાનું હોય તે ફરમાવો. મુનિમહારાજ યોદ્યા, સંસાર એ હુઃખનો બાંધાર છે અને મુક્તિ એ પરમ સુખનું સ્થાન છે. વળી તે મુક્તિનું કારણ જૈનધર્મ છે. અને તે ધર્મનું કારણ અહિસા છે. તે અહિસા કામાદિકષાયોના અલાવથી સિદ્ધ થાય છે. વળી કષાયોનો ત્યાગ આરંભથી વિસુકત થએલા મહાત્માએ કરી શકે છે તેમજ આરંભનો ત્યાગ વિષયોથી વિરક્ત થએલા પુરુષો કરી શકે છે. એમ કેટલુંક ધર્મસ્વરૂપ બતાવી સમ્યકૃત સહિત મહાત્મતા અને અણુત્તત્ત્વ સ્વરૂપ કર્યું.

એક બાળુએ એઠેલા કુમારે પણ તે ધર્મતત્ત્વ સાંભળી તેમાં-

થી પરમાર્થ થહુણુ કર્યો અને મુનિને વંદન

**કુમારની** કરી કહેવા લાગ્યો કે હે હીનથંધુ ! નિષ્કા-

**ધર્મણજ્ઞાસા.** રણ વત્સલ ! કૃપાસિધુ એવા હે મુનીંદ !

વિષય તૃપ્યાનો ત્યાગ કરી આપની સેવામાં

રહેલું તેજ ઉચિત છે. પરંતુ તે યોગ હાલમાં બને તેવો મહારો

ભાગ્યોદય નથો, આગળ ઉપર તે પણ સિદ્ધ થયો. પણ હે પ્રલો !

હાલમાં કૃપા કરી મહને ગૃહિધર્મનો ઉપદેશ આપો. તેમજ તેના

મિત્ર મહને અને અનંગસેના વારાંગનાએ પણ શ્રાવક ધર્મની

પ્રાર્थના કરી. મુનિએ પણ તેઓના વચ્ચેની ધણી પ્રશંસા કરી

શ્રાવક ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો, જે સાંભળી બીજી બાળુએ ઉલ્લી

કેટલીક વેશ્યાએઓએ પણ મધ્ય માંસનો ત્યાગ કર્યો. ત્યારબાદ

( २४ )

श्री सुपार्थनाथ अरित्र.

मुनिने वंदन करी सर्वे पेतपेताना स्थानमां चाल्या, ते सभये अनंगसेनाए ज्ञायुं के आ कुमारसाधर्मिक छे तेथी भहन सहित कुमारने पेताने घेर लाई गाई अने बहु सन्मान पूर्वक तेनी सेवा करी, त्यारभाद कुमारे अनंगसेनाने पेतानुं यथार्थ वृतांत संलग्नायुं, पधी भित्रसहित ते त्यांथी नीकल्यो। अने तेनी साथे अनंगसेना वेश्या पछु गाई।

आगाह चालतां पुर नामे एक नगर आवयुं, आ नगर पेताना पिताना देशनी संधिमां हुतुं.

**जमाली पद्धतीपति.** अने ते देश विश्वसेन राजनो हुतो, श्री अने भित्र सहित कुमारे नगरनी अंदर प्रवेश कर्यो अने लैनमहिरमां चैत्यवंदन

कर्तो हुतो तेवामां तेज नगरनो अधिकारी लगवानना दर्शन माटे त्यां आवयो। बहु उक्तिकावथी रोमांचित थयां छे गात्र जेनां अने एकाथ दृष्टिथी लुनप्रतिमानुं ध्यान करता एवा कुमारने तेणु जेयो। त्यारे ते पेताना मनमां विचार करवा लायेयो के आ आकृति जेतां आ पुरुष सामान्य नयो। तेथी तेना भित्रने एक तरक्क बोलावी तेणु पूछयुं के आ कैणुछे? मने पछु कुमारनु वृतांत यथास्थित क्षयुं, जेथी अधिकारी हाथ जेडी प्रार्थना पूर्वक कुमारने पेताने घेर लाई गयो। अने सन्मानपूर्वक बहु सेवा करी आनंद आपवा लायेयो। तेवामां जमालिपद्धतीपतिए उडती वात सांलजी के विश्वसेन राज भरणु पायेयो। तेथी पेतानुं सैन्य लाई ने जमालि देशनो हुक्क पेताने ताए उक्तवा त्यां आवयो। अने तेणु नगरनी चारे तरक्क घेरो धायेयो। हुवे नगरनी अंदर जण नहोतुं अने बहारनुं जण शत्रुओऽे रोकी लीधुं, तेथी दोको बहु तरक्कवा मांडया अने अधिकारीनी पासे ज्ञायुं कुहेवा लायेया के हुवे जण विना क्षणु भात्र पछु अमारे

મહાની કથા.

( ૨૫ )

ચાલે તેમ નથી, માટે કૃપા કરી આ નગર જમાલિને આપી હો. આ પ્રમાણે લોકોને પોકાર સાંભળી અધિકારી એકદમ ગલરાઈ ગયો અને હવે શું કરવું ? ક્યાં જવું ? એમ મૂઠ બની વિચારતા અધિકારીને જોઈ કુમારે તેને એકાંતમાં ખોલાવી કહ્યું કે આ બાબતની તમ્હારે કાંઈ ચિંતા કરવી નહીં. તેમજ આ લોકોને તમે એમ કહેણે કે જેમ ચોણ લાગશે તે પ્રમાણે અનો ઉપાય અમે સવારે કરીશું, માટે સુખેથી વેર જાઓ અને ચિંતા કરશો નહીં. ત્યારાં આદ અધિકારીએ પણ તે પ્રમાણે કહી લોકોને વિદ્યાય કર્યો. પછી તેણે કુમારને પૂછ્યું, હવે આનો ઉપાય શો કરવો ? કુમારે જણાયું કે જે કરવાનું છે તે તમને સવારમાંજ કહીશ, હાલ કહેવાય તેમ નથી. એમ તેને સમજાવીને શાંત કર્યો. રાત્રીના સમયે કુમાર પોતાની વિદ્યાના બળથી પ્રસારેતા કિરણુના આધારે કિલ્લાનું ઉદ્ઘાંધન કરી પહીપતિના આવાસમાં ગયો. તેનું શયન સ્થાન ચંત્રથી ગોડવેલા કાઢના માળા ઉપર હતું, તેથી તે માળા ઉપર પણ વિદ્યાળથી જ ચઢ્યો. ત્યાં સુતેલા તે જમાલિને જોઈ તેને બાહુવડે પકડીને કહ્યું કે, હું યક્ષ છું અને આ નગરનો રક્ષક છું. માટે જે સવારે અહીં ઉંચો રહીશ તો જરૂર તહારું મૃત્યુ થશે. એમ કહી તેના નામવાળી સુદ્રિકા તેના હૃસ્તમાંથી લઈ તેજ પ્રમાણે કિરણ પ્રચોગવડે પોતાના સ્થાનમાં ગયો. પહીપતિ પણ આવો હેણાવ જોઈ એકદમ લયલીત થઈ ગયો અને તેજ વખતે પોતાના પરિજ્ઞનને યક્ષની સમય વાત કહીને ત્યાંથી તેણે પ્રયાણ કર્યું.

ત્યારણાદ આરક્ષકને અખર પડી કે પહીપતિ જમાલી નાશી ગયો, એટલે તેજ સમયે તેણે પોતાનો

**પર્યાલોચના.** જેવક માલી અધિકારીને જણાયું કે આ-પણો વૈરી સૈન્ય સહિત રાતમાં નાશી ગયો

( २६ )

શ્રી સુપાર્શ્વનાથ ચરિત્ર.

છે. ત્યારખાદ અધિકારીએ પણ તે વાત કુમારને જણાવી તેની ખુલુ પ્રશાંસા કરી, કુમાર બોલ્યો, હે રાજપુરુષ! તમ્હારા પુષ્ટોદ્યને લીધે આ કાર્ય સિદ્ધ થયું છે. ત્યારખાદ કુમારની આંગળીએ ખુલુ ચળકતી સુદ્રિકા અધિકારીના જોવામાં આવી, જેથી પોતાને ખુલુ આશ્ર્ય લાગ્યું અને તેથી તે સુદ્રિકા પોતાના હૃથમાં લઈ જોવા લાગ્યો. તેની ઉપર જમાલીનું નામ જોઈ ખુલુ ખુશી થયો અને તે બોલ્યો, હે પુરુષ રત્ન ! આ સાહસ કાર્યમાં તહારોજ ઉધમ જણ્ણાય છે. કુમાર બોલ્યો, આપનું કહેવું સત્ય છે પરંતુ આ કાર્ય કરવાથી મહારા ત્રીજા વતનો ભાંગ ગયો. અધિકારી બોલ્યો, આપનું કહેવું પણ સત્ય છે પરંતુ હું આપનો સાધર્મિક છું તો આપે મહારી ઉપર ખુલુ હયા કરી, તેથી આપનો મહારા ઉપર મહેઠા ઉપકાર થયો; કારણું કે ચતુર્વિધ સંધ પરમ પૂજય એવા સૂરિ મહારાજ અને જૈનમંદિરે ઉપર ઉપકાર કરવો એમ કેવલી ભગવાને કહ્યું છે. તેમ છતાં પણ હાલ અહીં શુરુ મહારાજ પથારેલા છે માટે તેમની પાસે જઈ આપ આલોચન કરો. અને તેથી ત્રીજા વતની શુદ્ધિ થશે. કુમાર પણ તેજ પ્રમાણે શુરુ સમક્ષ આલોચના કરી નિર્દેષ થયો.

અનુક્રમે વિશ્વસેન રાજ પણ રોગ શાંત થવાથી સ્વર્ણથ થયો

તેવા સમાચાર અધિકારી ઉપર આવી ગયા.

**મોક્ષપદવી.** વળી હાલમાં કુમારના પરાક્રમવડે નગરને કોઈ પ્રકારનો લય નથી એમ જાણી કુમારને સાથે લઈ અધિકારી વિશ્વસેન રાજને મળવા માટે ગયો. પરસ્પર કેટલીક વાતચિત્ત થયા બાદ અધિકારીએ કુમારનું વૃત્તાંત જણાવ્યું, તે સાંલળી રાજને વિચાર કર્યો કે મહારે પુત્ર નથી તો આનેજ પુત્ર કરવો ટીક છે. વળી એનામાં એક મહેઠા શુણું છે કે સ્થુલ અને અનપરાધી પ્રાણીએના વધથી એ વિરક્ત

મહની કથા.

( ૨૭ )

થએદો છે માટે એના વિશ્વાસે રહીશ તોપણું એનાથી કોઈ પ્રકારનો લય નહીં થાય એમ જાણી રાજાએ કુમારને ચુવરાજ-પદ્ધતી આગી અને રાજ્ય કારખારનો અધિકાર સોંચ્યો, અને પોતે નિવૃત્ત થઈ તેના સંગથી સમ્બંધૂત પામી જૈનશાસનની ઉજ્ઞતિ કરવા લાગ્યો ત્યારબાદ પ્રથમ પદ્ધતિ કરેલા રાજાના દેશમાં મહનને હંડાધિપતું સ્થાન આપ્યું એટલે મહન શ્રેષ્ઠી ઉનમત્ત દશામાં આવી ગયો. તે પ્રસંગે તે દેશના ચારલોકો, પર રાજ્યના નાળુકના દ્વોંદ્વી લેતા હતા. લોકોનું ધન અને કેટલાક મનુષ્યોને પણ હરણું કરી ત્યાં લાવતા હતા. મહન તેઓને બહુ ઉત્સાહ આપતો હતો. ચારલોકો પણ દરેક પહાર્થી-માંથી છઢું ભાગ તેને આપતા હતા. આ પ્રમાણે લોકમાં લુણ્ધ થઈ તેણે ત્રીજા વ્રતનું દ્વારા પણ ગણ્યું નહીં. બાદ સીમાડાના રાજાએએ તે વાત જાણી તેમ વિચાર કર્યો કે આ હંડનાયક દેશ લુંટાવતો છતો શાંત નહીં થાય, માટે કોઈક ધાતક સુલટ પાસે મહનને મારી નંખાવ્યો. પછી તે મહન ત્રીજા વ્રતનો ભંગ કરી એકડા કરેલા પહાર્થીમાં મૂઢિંત થઈ ધાતક ઉપર બહુ કોધાયમાન થયો. છતો રૈદ્ર ધ્યાનવડે મરણું પામી ત્રીજી નરક ભૂમિમાં ગયો. ત્યાંથી નીકળ્યા બાદ સંસારમાં બહુકાળ પરિભ્રમણ કરશે. માટે હે ભન્ય પુરુષો ! જે મોક્ષ સુખની કૃચ્છા હોય તો ચારને સહાય રૂપ ત્રીજા વ્રતના ધીજા અતિચારનો ત્યાગ કરે. વળી કુમાર પણ ચિરકાળ રાજ્યધર્મ પાળી છેવટે ઉત્કૃષ્ટ નિરતિચાર ચારિત્ર આરાધીને મોક્ષ સુખ પામ્યો, તેમજ અનંગસેના પણ તેજ પદ્ધતીને પામી.

**ઇતિ શ્રી તૃતીયાગુબ્રતે દ્વિતીયાતીચારવિપાકે મહનકથા સમાપ્તા ॥**

( २८ )

श्री सुपार्श्वनाथ चतित्र.

## ऊदयन श्रेष्ठीनी कथा.

### तृतीय विद्धराज्यातिकमातिचार.

हानविर्य राज्ञे प्रक्ष उर्ध्वो, हे अगवन् ! ग्रीष्म अतीचारनु  
स्वदृप संलग्नावो अने तेनुं सेवन उरवाथी  
ग्रीष्मे अतीचार. कई गति थाय छे ? ते पणु आप कुपा करी  
कहे. श्री सुपार्श्व प्रभु ऐव्या, हे राज्ञ !  
जे पुरुष पोताना राज्यथी विद्धराज्यमां वेपार करे छे, ते  
उद्यननी माझड ग्रीष्म प्रतनो ग्रीष्मे अतीचार उरवाथी धन  
अने शरीरनो नाश करे छे. जे भक्त-भनेक मुनिओना चरणार-  
विंद्यो खडु पवित्र तेमज अनेक विद्वानोथी विलूषित जे नगर  
मात्र सात मुनि ( दृष्टि ) ऐव्या सेवायलु अने एक जेमां खुध  
रहेलो छे ऐवा आकाशने हुसे छे तेवुं शिवलक्ष्म नामे नगर आ  
भरतक्षेत्रमां तिलक समान शोबे छे. तेनी अंदर उत्तम सुवर्ण-  
पडे चुक्ता सुरन ( जन ) ( सारां रत्न-सज्जनो ) थी सेवातो,  
सकंदन ( श्रेष्ठ नंदनवन=उत्तम पुत्रो ) वडे सुरेलित भेदगिरि  
समान स्थिर प्रकृतिवाप्नो. रत्नाकर नामे श्रेष्ठी छे. तेमज स्थिर  
छे यौवन जेनुं, सुवर्ण समान कांति छे जेनी, भिरोनिष रहित  
छे दृष्टि जेनी अने खडु विखुधज्जन ( देव=विद्वानो ) मां मान पामे-  
ली हेवांगना समान सुंदरी नामे तेनी स्त्री छे. सगुण ( शकुन )  
शुणुवान्-पक्षिओये करी छे, सेवा जेनी ऐवा गङ्गड समान उत्त-  
मनीतिवाप्नो. अने सर्व उलाओमां खडुहक्ष तेमज विनयवान्  
राज्यपाल नामे तेओने एक पुत्र छे. तेमज उनकेवज शेठनो  
पुत्र उद्यन नामे तेनो भित्र छे. बज्जे भित्रो नही, सरोवर अने  
उद्यानाहिकमां कुडाओ. करे छे.

ઉદ્ઘનની કથા.

( ૨૬ )

એક હિવસ નહીમાં ખજે રમતા હતા. તેવામાં ત્યાં ઉત્તમ રૂપવતી એક ભાગા તેઓના જોવામાં આવી. ચોકુભાલાનું દર્શન. હીંય અલંકારોને ધારણું કરતી જાણે જલ-હેવી હોયને શું ? તેમ નેત્રને આનંદ આપતી તે બાલા કાઢનું અવલંખન લઈ જલમાં તરતી હતી, ક્ષણુમાં દુષી જય અને ક્ષણુમાં બહાર નીકળે, તેથી પોતાના આત્માને મૃતપ્રાય માનતી તે બાલાએ પણ ફરથી તે ખજે મિત્રોને જોયા અને તે યોદી, મરણ કયથી ભીડુ, શરણુછીન અને હીન અવસ્થા અનુભવતિ મુને આ સમયે તમે પ્રાણું લિક્ષા આપો. અનાથની રક્ષા કરવામાં ઉપેક્ષા ન કરો. આ પ્રમાણે બાલાનું વચન સાંલળી તેઓ ક્ષણુર્ધ્વમાં નહીના પ્રવાહ-માંથી તેને બહાર કાઢી પૂછવા લાગ્યા, તું કોણું છે અને આ સ્થિતિમાં શાથી આવી પડી ? બાલા પોતાનું વૃત્તાંત કહેવા લાગ્યી.

સિદ્ધેશ્વર નામે નગર છે, તેમાં શુણુસેન નામે બહુ ધનાદ્ય શોઠ રહે છે. જ્યશ્ચી નામે તેની ભાર્યા છે. બાલાનું ચરિત્ર. તેઓને સાત પુત્ર અને છેષટમાં બહુ માનતાઓથી હું એક પુત્રી થઈ. તેમજ તેઓનો રહારી ઉપર બહુ પ્રેમ હોવાથી દુર્લભહેવી એવું મહાડું નામ પાડ્યું. અનુકૂમે યૈવન અવસ્થામાં આવી. જોથી મુને પરણવા અનેક વખ્યાદુર્ગ પુત્રો માગણી કરવા લાગ્યા. હું તેઓને હા પાડતી નહોંતી, તેથી મહારા માતા પિતાએ મુને બહુ સમજાવી તો પણ મહાડું મંત્રય મહેં તેજ પ્રમાણે સત્ય રાખ્યું છે. વળી હે શ્રેષ્ઠ-પુત્ર ! ઉત્તમ શ્રાવક કુળમાં મહારો જન્મ છે. નિરંતર સાધુ સંગમાં મહારી પ્રીતિ છે, તેમજ કર્મની લંઘુતાને લીધે મનથી પણ હું સંસારવાસ ઈચ્છતી નથી. માત્ર સંયમનીજ વાંછા કરું છું. પરંતુ સ્નેહપાશને લીધે મહારા માતાપિતા મુને રજ આ-

( ३० )

श्री सुपार्थनाथ चरित्र.

પતા નથી તેથી હાલ હું આવક ધર્મ પાળું છું. મહારા માતા-પિતાની દ્રષ્ટિગોચર રહીને સુખેથી ગૃહવાસમાં રહું છું. હવે એક દિવસ હું દર્શન માટે જૈનમંદિરમાં જતી હતી, ત્યારે માર્ગમાં એ રાજયુગોચે મહુને જોઈ એટલે તેમાંથી એક બોલ્યો, હે મુ-ગાક્ષિ ! પ્રસન્ન થઈ મહારા સહામી દ્રષ્ટિ કર કે જેથી તહારી દ્રષ્ટિઓ અમૃતથી હું શાંત થાઉં. પછી બીજે બોલ્યો, હે તન્વ-ગી ! જે હ્યા ધર્મ પાળનારી તું સત્ય શ્રાવિકા હોય તો મહુને છોડીને મનથી પણ ભીજાની પ્રાર્થના કરીશ નહોં, અન્યથા જરૂર મહારા પ્રાણું પરલોકમાં પથારશે. આ પ્રમાણે બજેનાં અસક્ષય વચન સાંભળી જલ્દી હું જૈનમંદિરમાં ગઈ. વિધિ સહિત પૂજન વંદન કરી ત્યાંથી બહાર નીકળી ગૃહ તરફ આવતી હતી તેટલામાં તે બજે જણું આગળ માર્ગ રોકી ઉલા હતા. તેમને જોઈ હું આડે રહ્યે નાડી અને શીળવતની રક્ષા માટે દ્વર ચાલી ગઈ, તો પણ તેઓ મહારી પાછળને પાછળ આવતા હતા. એવામાં એક શંકરનું મંદિર આંધ્રાં એટલે એકદમ તેની અંદર હું પેસી ગઈ અને દ્વાર બંધ કર્યો. તેટલામાં તેઓ બહાર આવીને પરસ્પર ચુંઝું કરવા લાગ્યા. એક કંડે મહારી સ્વી છે અને બીજે કંડે મહારી સ્વી છે ! એમ વિવાહમાં એક ભીજાના ખર્ઝુથી બજે જણું પ્રાણ સુકૃત થયા. એ પ્રમાણે તેઓનું મરણ જોઈ દ્વાર ઉઘાડીને મહેંત્યાં આવી જોયું તો તેજ સ્થિતિમાં બજેને જોયા. ત્યારખાં મહુને વિચાર થયો કે અરે ! મહુને ધિક્કાર છે. આ બજેના મરણનું કારણું હું પોતેજ થઈ. અથવા આતો મોહનો વિલાસ છે. એમાં મહારો શો દોષ ? વળી સ્વીચ્છાનો દેહ અશુદ્ધ રસથી ભરેલો છે. અસ્થિ, વિષા તેમજ ચામડી તથા નસોથી વ્યાસ છે. તો આ દેહમાં કીડા વિના બીજે કોણું આસક્ત થાય ? ચુવતિ-એનો નિતંબ ભાગ ઠામદેવને વિલાસ કરવાની રાજ્યાની છે

ઉદ્ઘનની કથા.

( ૩૧ )

એમ વિષયી લોકો જાણે છે, પરંતુ અશુચિ એવા મળમૂર્તની પોટલી છે તેમ જાણુતા નથી. અહો ! મોહ માહાત્મ્ય કેવું છે ? ત્રિવલી રૂપતરગોથી યુક્ત સ્ત્રીઓની નાલિને મૂઠ પુરુષો અમૃત કુંડ માને છે. પણ અસંખ્ય હું : પોતું સ્થાન માનતા નથી. માટે જેવી રીતે આ બજે મહુને લેઈ મેહિત થયા અને મરણ પણ પામ્યા, તેવી રીતે ધીજાની સ્થિતિ ન થાય તેટલા માટે હું ચોક્કસ વિચાર કરી આત્મધાત માટે નહીંમાં પડી, પણ પણી મહુને વિચાર થયો કે અરે ! આ મહોદું પાપ આચર્યું, હેમકે જીનેંદ્રભગવાને પોતાના અને પરના વધનો નિષેધ કર્યો છે. એમ જાણ્યી આત્મહકૃત્યાના પાપથી લીર્દ થયેલી એવી હું તમહારા જેવામાં આવી. નિષ્કારણ દ્યાળું એવા તમોએ મહુને જીવિતદાન આપ્યું. ત્યારખાદ તેઓ બોલ્યા, ધર્મના સંબંધથી તું અમારી જ્ઞેન છે. માટે હું ભાગ્યવતી ! ચાલ, અમારે ઘેર, પણી તહારા પિતાને ત્યાં તહેને અમે લઈ જઈશું. ત્યારખાદ તે બાલા તેઓની સાથે રત્નાકર શોઠને ત્યાં ગણ. પુત્રના સુખથી બાલાની સર્વ હુક્કી-કત જાણ્યી શેડે પણ સારી રીતે તેની સેવા કરી. બાલાએ શોઠને કહું કે મહારા વિયોગથી મહારા માતાપિતાને બહુ ચિંતા થતી હુશે. તેથી તેમને અખર મોકલાવો. રત્નાકરે પણ તે પ્રમાણે સમાચાર મોકલાવ્યા. આ લોકોને ધર્મમાં હોરવા લેઈએ એમ જાણ્યી બાલાએ પણ ત્યાં રહીને સર્વ લોકોને શ્રાવક ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. તેઓએ પણ પોતાની શક્તિ પ્રમાણે સદગુરુના ચરણ-કમલમાં ગૃહી ધર્મનો સ્વીકાર કર્યો. થોડા હિવસમાં તે બાલાનાં માતપિતા પણ ત્યાં આવ્યાં. રત્નાકર શેડે તેઓની બહુ અક્રિત કરી અને બાળાનું સર્વ વૃત્તાંત કહ્યું. તમહારા વિયોગ હતો છતાં પણ તમહારી પુત્રીએ અમારો જન્મ જૈનધર્મના ઉપદેશથી સફ્રલ કર્યો, કારણું—

( ३२ )

श्री सुपार्खनाथ चरित्र.

यद्यपि विपदि विनश्यति, परमुपकुरुते तथाऽपि खलु सुजनः ।  
स्वयमगुरुर्दहनपि, समीपलोकन्तु सुरभयति ॥

अर्थ—“नेम अगुड धूप पेते बणतो छतो पणु सभीपमां रहेला ग्राण्ठीने सुगंध आपेहे, तेम सज्जन पुढेह नेके विपक्षामां विनाश पामे तो पणु परोपकारथी विमुख थतो नथी.” एवे वाक्य तेणीचे सत्य कर्युः.

**त्यारभाद** तेनां मातापिताचे विचार कर्यो के आ पुन्रीने  
**आत्मानो** आपणे संसारमां नेहीचे ऐवी आशा  
**अभिग्राय,** आपणी निरर्थक छे. कारणु के ने अन्य  
लोकेने विषय उपर्थी विरक्त करी धर्मभां नेडे छे ते पेते आ संसारमां विषयलोग-  
मां केवी रीते आसक्त थाय ? त्यारभाद पुन्री मातापिताना  
चरणमां प्रणाम करी ऐली, हे तात ! हे मात ! भहारी उपर  
द्या करी अहंक भुने हीक्षा अपावो. कारणु के हुं भहु विचित्र  
हशामां आवी पडी हुं. प्रथम तो विषय वासनाथी दीन अनेला  
राजपुत्रेनां भरणुनु हुं कारणु थई. त्यारभाद तमेचे पालन  
पोषणु करेला अने संसार जन्य हुःऐनेनिर्भल करवामां सर्वर्थ  
ऐवा आ हेहुने भें अज्ञान युद्धिथी नहीमां नाज्येहा. जे  
आ अन्ने जणे भुने न काढी हेत तो हुं अज्ञान भरणु साधीने  
भवाटवीमां लाज्येहा. हुःऐनुं पात्र थात. पछी तेना पिता  
ऐव्या, विवेकना कुदमंहिर समान ऐवी हे पुन्री ! अमने  
पणु आ सुशुद्धतुं वयन इच्यिकारक थयुं छे. तेथी त्हारी  
हच्छा पूर्णु करवा भाटे अमे पणु प्रवृत्ति कराशुं. परंतु  
असाधारण शीलगुणु, उत्तम विवेक युक्त वयन अने विनयादिक  
त्हारा शुभेणी रंजुत थावेलो. स्वज्जनवर्ग सहसा त्हारां अदर्शन

ઉદ્ઘનની કથા.

( 33 )

થવાથી દુઃખસાગરમાં દુષ્પી ગયો છે. તો તેઓને રહાડું દર્શન નાવ સમાન થઈ પડશે તેથી હાલ તું જલહી ત્યાં ચાલ. ત્યાં ગયા બાદ રહારા મનોરથ સકુળ કરીશું. એમ પોતાની પુત્રીને કહી શુણુસેન શ્રેષ્ઠીએ સિદ્ધેશ્વર નામે પોતાના નગરમાં જવા માટે રલાકર શૈઠની આજા માગી. ત્યારે તે આવ્યો, કદ્વપવૃક્ષ સમાન વાંછિતદાયક એવા જૈનધર્મમાં આ હુર્દાભદેવીએ અમને સ્થાપન કરી અમારું પશુપણું દૂર કરીને મનુષ્યપણુમાં દાખલ કર્યા છે. કહ્યું છે કે:—

આહારનિદ્રાભયમૈશુનાનિ, તુલ્યાનિ સાર્વ પશુમિર્નરાણામ् ॥

જ્ઞાન વિશેષ: પશુમાનુષાણા, જ્ઞાનેન હીના: પશવો મનુષ્યા: ॥

અર્થ—“પશુ અને મનુષ્યોને આહાર, નિદ્રા, ભય અને મૈથુન સમાન હોય છે, ઉભયમાં જ્ઞાનમાત્ર વિશેષ હોય છે. માટે જ્ઞાન વિનાના મનુષ્યો પશુતુલ્ય જાણુવા.” આ પ્રમાણે રલાકર શ્રેષ્ઠીએ વિનય સહિત વચન પૂર્વક વખાલરણોથી સંભાન કરી તેઓને વિદ્યાય ઝર્યા. અનુક્રમે તેઓ પણ પોતાના નગરમાં ગયા. ત્યારબાદ હુર્દાભદેવી માતપિતાની આજા લઈ સુગુરુના ચરણુકમળમાં દીક્ષા અહુષુ કરી એકાદશ અંગોનું અધ્યયન કરી ચિરકાળ વિહાર કરી કેવળ જ્ઞાન પામી બહુ લોકોનો સંસારસાગરમાંથા ઉદ્ધાર કરી પોતે મોક્ષ સુખ પામી.

હવે રલાકરશૈઠ પણું કુદુંખ સહિત અંગિકાર કરેલા ગૃહીધર્મમાં ઉદ્યુક્તા થયો. તેને પુત્ર રાજપાત્ર ઉદ્ઘનનું કૃપા. પણ તેજ પ્રમાણે હુમેશાં ધર્મરાધનમાં તત્પર રહેતો હતો. તેના સંસર્ગથી ઉદ્ઘન પણ ધર્મકાર્યમાં ઉદ્યુક્ત થયો. પ્રાયે તેઓ બન્ને ભિત્રો સાથેજ વેપાર પણ કરતા હતા. તેવામાં પોતનું રાજના સમસ્ત દેશમાં

( ३४ )

श्री सुपार्श्वनाथ चरित्र.

अति लघुं कर हुळाण पड्यो अने शिवलद नगरमां तेमज  
 समय योताना देशमां सुकाण ज हुतो. तेथी ते देशना राज्यामे  
 सर्वने भयर आपी के जे केहु वेपारी योतनपुर देशमां एक  
 भणु पणु धान्य मोकलशे तो तेनो हुं म्हेटो। हंड करीश. तेमज  
 तेनुं सर्वस्व हरणु करी लहश. आ प्रभाणुनो ठेंडेरा योते जाणु  
 छे छतां पणु उद्यन गुम रीते वेपारीमो साथे ते देशमां धान्य  
 मोकलाववा लाग्यो. ते बात राज्यालना जाणुवामां आवी के  
 तरतज तेणु उद्यनने कहुं के विढ्ड राज्यमां व्यवहार करवो  
 तहने योग्य गण्याच नहीं. तेमज जे तहने राज्यानी आज्ञा  
 सांखरती होय तो ते कूवेपार अंध कर. कारणुके त्रिज्ञ प्रतमां  
 अतिचार लागवाथो आ कार्य धर्म विढ्ड पणु थेशे. वणी  
 राज्यनो केअथ थवाथी तहारा धननो पणु नाश थेशे. माननी हानि  
 अने जुवुं पणु हुर्ला थर्ड पड्यो. वणी अधम लोडेने आनंद  
 थेशे. अने स्वजन वर्गने अहु चीडा थेशे. ए प्रभाणु राज्याले अहु  
 वार्यो तोपणु ते अधर्मथी विराम पाम्यो नहीं. अनुकमे  
 ते बात राज्याना जाणुवामां आवी. जेथी तेनुं सर्वस्व हरी लह  
 राज्यामे तेने वध्यस्थाने लहु ज्वानी आज्ञा करी. योताना  
 भिन्न जाणी तेनी उपर राज्यालने हया आवी. जेथी महा कष्टे  
 तेने छोडाव्यो. परंतु ते आलोचन कर्या विना अरणु पामी लव-  
 सागरमां अहु समय परिभ्रमणु करशे. वणी रलाइ श्रावकतुं  
 कुटुंब पणु श्रावक धर्मनुं सारी रीते आराधन करी उत्तम हेव-  
 लेक तथा मनुष्य लव पामी स्वदृप समयमां भोक्ष सुख पामशे.

इति तृतीयाणुव्रते विलद्धराज्यातिक्रमाऽतिचारे  
 उद्यनकथानकं समाप्तम् ॥

—→॥\*॥←—

વરણુની કથા.

( ૩૫ )

## વરણવગિકની કથા.

---

### કૂટતુલામાનાતિચાર.

દાનવિર્ય રાજાએ વિનય પૂર્વક પ્રશ્ન કર્યો કે હે લગવાન् !  
 હે કૃપાસાગર ! તૃતીય અણુક્રતમાં ચોથા અતિચારનું સ્વર્ણપ  
 દ્રષ્ટાંત સહિત સંભળાવીને અમને કૃતાર્થ કરે. શ્રી સુપાર્વીપ્રભુ  
 રાજાનો પ્રશ્ન સંભળી બહુ ઉત્સાહ આપીને જોત્યા, હે નરાધીશ !  
 ત્રૈજીનું ક્રત ધારણુ કરી જે કૂટ ( પોટાં ) વજન અથવા માના-  
 દિકથી વ્યવહાર કરે છે, તે પુરુષ વરણુની પેઠે ઉલય લોકમાં  
 અવશ્ય દુઃખી થાય છે.

આ ભરતક્ષેત્રમાં સુવર્ણ ( ઉત્તમ કાંતિ- સોનું અથવા છા-  
 દ્વારણાદિક ઉત્તમ જલતિ ) વડે વિલૂષ્ણિત,  
**વરણુદ્રષ્ટાંત.** તેમજ પ્રવર ગદા ( ગજ ) શ્રેષ્ઠ ગદા નામે  
 આયુધ ( ઉત્તમ હુસ્તિઓ ) નો આધાર  
 ભૂત વિષણુના શરીર સમાન મહિણુએટ નામે સુપ્રસિદ્ધ નગર છે.  
 તેમાં નિરંતર દાન ( મદ ) ની વૃષ્ટિ કરવામાં અતિદ્દક્ષ ગણેંદ્ર  
 સમાન હુરિવિકભ નામે રાજ રાજ્ય કરે છે. ચંદ્રલેખા નામે  
 તેની સી છે. વળી તે નગરમાં દેવસેન નામે નગરશેઠ છે. તેમની  
 સીનું નામ વિજય છે. અને વરણુ નામે તેચોને એક પુત્ર છે તે  
 દરેક કલામાં બહુ કુશલ છતાં નિરંતર પોતાના મિત્ર સાથે સમશાન  
 ભૂમિમાં તેમજ જંગલમાં ભ્રમણુ કરે છે. માત્ર અનર્થ કાર્યમાંજ  
 તે આનંદ માને છે.

**એક દિવસ હુસ્તિવિકભ રાજાએ દોકોની દ્વારાને લીધે ચૌટામાં**  
**ભરતચ્છવર્તીનું નાટક કરાયું.** દોકો બહુ  
**કુલગતાન.** ઉમંગથી એકઠા થયા. વરણુ પણુ તે જેલ  
 જેવા લાગ્યો. તે પ્રસંગે નાટકિઓએ ભર-

( ३६ )

श्री सुपाश्वनाथ चरित्र.

तनरेखरनो। आरीसा लवननो। प्रवेश आणेहुअ भजवी अतांयो। जेभडे—सुंहर अलंकारेथी विभूषित घोतानुं शरीर जेझ भरत राज भडु झुशी थया। पडी घोतानी अंगणीमध्ये सुद्धिकां नीकणी पडी तेथी शोभा रहित अंगणी जेझ अनुकमे सर्व अलंकार त्यां दीधा, एटले शोभा रहित घोतानुं शरीर जेयुं। ते उपरथी आ संसारमां सर्व वस्तुओनी शोभा कृतिम छे ऐम मानी भरतच्यडी वैराग्य पाय्या। क्षण मात्रमां डेवलशान उत्पन्न थयुं। देवाच्ये मुनिवेष अर्पणु कर्यो। सुरेंद्रोच्ये नभस्कार कर्यो। त्यारबाट लवनमांथी नीकणतां तेमनी पाढण पांचसो। राजाच्यो पणु नीकणी यात्या। ते जेवाथी तेमज वणी वैराग्यनां वचन सांखणवाथी वडणु वैराग्य इपी रंगशाणमां उतरी पड्यो। अने घोते विवेकी अनी सूत्रधारने पूछवा लाऱ्यो के आ भरत स्वाभीना मार्गने आ भेटा प्रभाविक राजाच्यो। अनुसर्यो। परंतु अभारा सरभा सत्त्वहीन प्राणीओनी कौर्झपणु सुगति थाय तेवें स्तो छे ? हा छे। ऐम कडीने तेणु सभ्यकृत्वादि भार प्रकाशने श्रावक धर्म कळो, घोताना पिता सहित वडणु सावधानपणु। ते अंगीकार कर्यो। पितानी वृद्ध अवस्था हेवाथी वडणु हुकाननुं काम घोतानी झुद्धिथी यत्वावतो हुतो तेमना कुटुंबना निर्वाह जेटलुं धन पणु कमायो हुतो। परंतु लोकेभां मान पामेला अन्य धनाढ्य लोकेने जेझ तेणु जाण्युं के लोकभां कीर्ति तो धनथीज थाय छे। ऐम विचार करतां तेने धननो लोाल भडु वधी गयो। अने तेमांज आसक्त थवाथी ते शुद्ध लाव उपरथी पडी गयो। ज्यारे घोताने लेवुं हेय त्यारे भेटा वजनथी तेणे छे अने आपलुं हेय त्यारे नाना वजनथी तेणे छे ! तेमज धान्य, धी, तेल विशेषिनां भाष पणु तेवीज रीतनां राखी कूट व्यवहार करवा लाऱ्यो। आ वात तेना पिताना जाणुवामां आवी तेणु भडु

વરણુની કથા.

( ૩૭ )

સમજલવીને કલ્યાં કે હે પુત્ર ! આ કુટ બ્યવહાર કરવો આપણુને છિયિત ન ગણાય. વળી પ્રતમાં અતિચાર લાગે છે. એમ બહુ કલ્યાં તોપણ વરણુ પૈસાના લોલથી કૂઠેવ છોડી નહીં.

ત્યારખાદ તેના પિતાએ તેના ઉપર એક દૃષ્ટાંત કલ્યાં, જેમકે-  
શાંતિ ગામમાં ધન નામે વણિકું હતો. તે ધનઅંશીનું દૃષ્ટાંત સ્વભાવથી જ સત્યવાહી હતો. તેમજ થોડા લાભથી મહોટા વેપાર કરતો હતો. જેથી એટલી બધી તેની પ્રસિદ્ધ થઈ કે અન્ય હુકાનેનો ત્યાગ કરી સર્વ લોકો તેનીજ હુકાને આવતા હતા. તેમજ લોકોની એટલી બધી ગીરહી થતી કે જમવાનો સમય પણ તેને પુરો મળતો નહોતો. વળી તે લોકોને એમજ કહેતો કે શું રહારી એકજ હુકાન છે ? અહીંથી ચાંચા જાઓ ! રહારી એકલાની પાછળ લાગ્યા છે. રહારે તમારો વધારે લાલ નથી જોડતો. સુંદર લોકન પણ મર્યાદા ઉપરાંત કરવાથી ઉદ્દેગ કારક થાય છે. એમ તે વરણુ એલાતો હતો, પરંતુ લોકોએ તેની હુકાન છોડી નહીં. બીજી બધી હુકાને છોડીને તેની હુકાન દિવસે દિવસે ઘણા લોકો આવવા લાગ્યા. તે વાત સાંભળી પાસેના વેપારીએ લોકોને કહેવા લાગ્યા કે અરે ! તમે કેવા સુર્ખાંચો છો ! તમહારું અપમાન કરે છે તોપણ તે જૂઢા ધૂર્તાની હુકાન કેમ છોડતા નથી ! એ પણ પોતાના લાલ માટે વેપાર કરે છે. મફત તો નથી કરતો ? વળી અમે પણ કરી-આણું આણ્યા સિવાય તો પૈસા નથી લેતા ! તે સાંભળી કેટલાક બાહુકો બોલ્યા, તમે સર્વે વેપારીએ ચોરિનો ધંધો આદર્યો છે. તમને સર્વેને અમે બરાબર એણાભીએ છીએ. વળી તમે એણા વિના તોલ કરો છો. પૂછવાથી પુરો જવાબ પણ આપતા નથી. એવી રીતના વેપધારી વણિકું અનીને તમે સર્વે લોકોને લુંટી લીધા સત્યથી વેપાર કરતો આ વણીક તમારી દૂષિંચે લદે દ્વિતુંડ (એમુ-

( ३८ )

શ્રી સુપાર્બ્ધનાથ અરિત્રા

અવાળો) હોય, પરંતુ અમને તે સારો લાગે છે, કારણું કે દોગને શાંત કરનાર ઔષધ કહવું હોય તો પણ પ્રિય લાગે છે. તે પ્રમાણે લોકોનું વચન સાંભળી અન્ય વેપારીએ ધનશ્રેષ્ઠી ઉપર વિશેષ દ્રેષ્ટ કરવા લાગ્યા, અને હરેક કાર્યમાં તેનાં દિદ્ર શોધતા હતા પરંતુ કિંચિત્માત્ર પણ તેની ભૂલ હેખવામાં આવતી ન હતી.

વેપારી ડોમના ડેઈએક વણિકે તરતનો મરેલો એક બાળક ત્યાં પડેલો જોયો. પછી સર્વે વેપારીએની એક આલીરની સ્ત્રી સંમતિ લઈ તેણે એક આલીરીને ઓલાવી તેને લાંચ આપી પોતાને સ્વાધીન કરી અને કહ્યું કે અમારું આટલું કાર્ય તહારે કરવાતું છે. તેણીએ પણ તે પ્રમાણે કખુલ કર્યું, ત્યારખાદ તે ભરવાડની સ્ત્રીને એક વસ્ત્રમાં વીઠીને મરેલો તે બાળક આપ્યો. અને કહ્યું કે આ બાળકને કેડમાં બેસારી તે ધનશ્રેષ્ઠીની ફકાને તુંબા, પછી તે પ્રમાણે સજીને તેની ફકાન આગળ ગઈ અને સુતરને બદલે તેલ માંયું. તે સમયે અન્ય આહુકોની સાથે તે આપ દે કરતો હતો તેથી તેણે કંઈ જવાણ પણ આપ્યો. નહીં, એટલે તે ડોપ કરી ઓલી, રે લિલ્લી ! તું અમને ઉત્તર પણ આપતો નથી ? આ પ્રમાણે આલીરીનું વચન સાંભળી બહુ કોધાતુર થઈ ધનશ્રેષ્ઠીએ તે આલીરીને કંઈક ઠપકાવી. જેથી તરતજ મરેલા બાલકને પૃથ્વીપર ઝેંકી દ્વારા ‘હું લુંટાઈ લુંટાઈ’ એમ પોકાર કરવા લાગી. તે સાંભળી આરક્ષક લોકો દોડતા ત્યાં આવ્યા અને જેણું તો આલીરીનું તોઝાન તેઓના જોવામાં આવ્યું. તેમજ તેણીએ કહ્યું કે આ વાણીએ રહારા છોકરાને મારી નાંંયો. આરક્ષકોએ તે વાત સત્ય માની ધનશ્રેષ્ઠી અને મરેલા બાળક સહિત આલીરીને પકડી લઈ આમાધિપની આગળ હાજર કરી સર્વ વૃત્તાંત નિવેદન કર્યું. એટલે આમાધિપ

વરણી કથા.

( ૩૬ )

તે સંબંધી તપાસ કરતો હતો. તે વાત ગામના લોકોના જાણ-વામાં આવી, તેથી ભિત્ર, પુત્ર તેમજ પોતાના પિતા સમાન ગણ્યતા તે ધનશ્રેષ્ઠીની આપત્તિને નહીં સહુન કરતા એવા ગામના આગેવાન સર્વે એકંઠા થઈ અધિકારીના ઘેર ગયા, અને કહેવા લાગ્યા કે આ વાત અસત્ય છે, માત્ર દ્રેષ્ટિ લોકોએ આ તરફટ રચેલું છે. કારણું કે ધનશ્રેષ્ઠી સમાન આ નગરમાં કોઇ પણ સત્યવાહી વેપારી નથી, તેમજ પોતે ન્યાયમાર્ગ ચાલનાર છે, વળી જૈનધર્મમાં બહુ શ્રદ્ધાળું છે. એમ સર્વે લોકો જાણું છે. એ પ્રમાણે લોકોની પ્રાર્થનાથી અધિકારી પણ સમજયે કે આ મહાજન લોકોનું ઉહેલું સત્ય છે. એમ જાણું આલીરીને ખુબ ધમકી આપીને કહ્યું, રે રાંડ ! મરેદો બાળક કેડમાં લઈ જેણે તને મોકલી હોય તેનું નામ એલ, નહીં તો ત્હારા કાન અને નાક કાપી લઈશ. તે સંભળી આલીરી બહુ ગલરાઈ અને એલી કે દેશાંતરમાંથી અનાથ વાછડી સમાન હું અહીં આવી છું. વણિક લોકોના કહેવાથી મહેં આ હૃદ્દૂત્ય કર્યું છે. અધિકારી એલયો, તેઓ કોણ હતા તે બતાવ ! આલીરીએ ત્યાં જેવા માટે આવેલા તે વણિક જનોને બતાવ્યા. એટલે તેઓને કથને કરીને અધિકારીએ પણ ધનશ્રેષ્ઠી સત્યવાહી, નિર્વાલી અને સર્વ લોકોને સંમત છે એમ સિદ્ધ કરી બતાવ્યું. અને બાકીના વેપારીએ માયાવી છે એટલે તેઓ લોકોને ઝસાવનાર છે. તેથી તેઓએ દેપને લીધે આ કાર્ય કર્યું છે, માટે બહુ વિરુદ્ધવાહી આ વણિક લોકો ઉપર આ તરફટ પડો. ત્યારબાદ આલીરીને આપેલું દ્રવ્ય પાછું મંગાવીને તે કપરી લોકોને નિરૂત્તર કરી આધપતિએ તેઓનું સર્વ ધન લુંટી લીધું. અને તેઓને કારા-જૃહમાં દાખલ કર્યા, તેમજ ધનશ્રેષ્ઠીને બહુ સન્માન કરી વિહાય કર્યો એટલે ગામના સર્વે લોકો મળવા માટે ધનશ્રેષ્ઠીના ઘેર

( ૪૦ )

શ્રી સુપાર્બ્ધનાથ ચરિત્ર.

ગયા અને હર્ષપૂર્વક બોલ્યા કે સર્વત્ર સત્યનો જય થાય છે એવાત સત્ય છે. આ પ્રમાણે ધનશ્રેષ્ઠને મહિમા સર્વ લોકોમાં ફેલાઈ ગયો. ત્યારખાડ ધનશ્રેષ્ઠના કલેવાથી ગામના લોકોએ સીપારસ કરી તે કૂટવાદીઓને કારાગૃહમાંથી સુકૃત કરાવ્યા. માટે હે વત્સ ! કૂટ વ્યવહાર લોડી હે અને મહારં વચ્ચન માન્ય કર. તેથી તને સુખ મળશે. એમ તેના પિતાએ બહુ સમજાવ્યો તો પણ વર્ણે પોતાનો કદાચાર છોડ્યો નહીં. છેનટે તેના પિતાએ સ્વજન સમક્ષ ભાગ આપીને તને પૃથક કર્યો.

**ત્યાર ખાડ કોઈક દિવસે એક રાજપુરુષ વર્ણની હુકાનેથી ગોળ, ખાંડ, લુર વિગેરે કેટલીક વસ્તુઓ વર્ણને શિક્ષા.** ખરીદીને પોતાના મિત્રને ત્યાં ગયો તો તે મિત્ર પણ ભીજની હુકાનેથી તેજ વસ્તુઓ લઈ તેજ વખતે પોતાને ત્યાં એડો હતો. બજે જણે એક ભીજની વાત કરી. કિ મતમાં બજેની વસ્તુઓ સરખી હતી, પરંતુ તોલમાં ન્યૂનાધિક લાગી. તેથી તે રાજપુરુષે પોતાની વસ્તુઓ ભીજુ હુકાને જઈ તોલાવી જોઈ તો ત્રોણ ભાગની એધી પડી. તે વાત તેણે અમાત્યની પાસે જઈ નિવેદન કરી. જેથી તેણે પોતાની પાસે વર્ણને બોલાવી તેની હુકાનના સર્વ વજન-કાટલાં તોલાવી જોયાં તો તે માય ન્યૂનાધિક થયાં. તેથી વર્ણને બહુ બંધનો વડે હૃઠ બંધાવીને કણને કર્યો. તે વાત દેવસેન શોઠના જાણવામાં આવી એટલે તે અમાત્યની પાસે ગયા અને વિનતિ કરવા લાગ્યા, તોટલામાં તેણે ઠપકો આપ્યો કે હેશેઠ ! તમ્હારે પુત્ર આ પ્રમાણે કૂટ વેપાર કરે છે ? શેઠ બોલ્યા મહાશય ! ને થવાનું હતું તેથયું. હવે આપની શી મરળું છે ! મંત્રી બોલ્યો, આ અપરાધ માટે હસ્ત છેદન, નેત્ર એંગી લેવાં અને સર્વ સંપત્તિનો અપહાર કરવો જોઈએ, તે વાત તમે પણ જણો છે. તો પણ તમ્હારી શરમથી અધી ગૃહસંપત્તિ

सागरचंद्र कथा.

( ४१ )

साथे अनेन लुकतो भूङु कु छुं. देवसेन श्रेष्ठीअे ते वात कणुल करी. जेथी मंत्रीअे ते प्रभाणे सर्व व्यवस्था करी वडेणुने बंधनमांथी मुहुत कर्त्ती. त्यारभाव दृढ़भंधने. वडे जेनां अंग नभी गयां छे अवो वडेणु खहु हुःभी थर्ड पोताने घेर गयो. अने तीव्र वेहनाथी त्रीजे हीवसे भरणु पाएयो. अंत समयमां आर्तिध्यान करवाथी भरणु पाभीने ते भूङुडनी येनिमां उत्पन्न थयो. बाह अनंतलव भ्रमणु करी छेवटे अनंतस्थान ( भाक्ष ) ने पणु आम करशी. देवसेन शेठ पोते सम्यक् प्रकारे श्रावक धर्म पाणी अंतसमयमां अनशन पूर्वक भरणु पाभी सौधर्म देवलोकमां उत्तम देव थया.

इति तृतियाणुवते चतुर्थातिचारविपाके वरुणकथा समाप्ता.



## सागरचंद्रश्रेष्ठीनी कथा.

—•—

### पंचम तत्प्रतिश्वेष्टप्रदृष्ट्यक्षेपातिचार.

दानविर्य राजा ओळ्यो, हे दीनभंधे ! हुवे त्रीज अणुव्रतमां पांचमा अतिचारनुं स्वदृप संभावो,

**सागरचंद्र.** श्री सुपार्क्ष भ्रलु ओळ्या, हे राजन् ! जे पुढेस सारी वस्तुनी अंदर तेवीज जातनी भराव वस्तु भिश करी वेचे छे. ते माणुस सागरचंद्रनी भाइड आ लोकमां तेमज परलोकमां खहु हुःभी थाय छे.

वृषभ-श्रेष्ठ पुढेपो ( देवो ) ए आश्रय करेलुं, सनंहि पंडितो ( नंहि नामे भलीवर्द्ध ) सहित. उत्तम भूति समृद्धि ( भस्म ) वडे धवलगृह एटले हुवेलीअ. अथवा धवलगृह-उज्ज्वल छे शंकर जेने विषे अवा तैलास पर्वतना शिखर समान नंदिपुर नामे नगर छे.

( ४२ )

श्री सुपार्खनाथ चरित्र

सञ्जन इपी कुसुहवनने प्रकुष्ठि करवामां चंद्र समान समरगन्देंद्र नामे राजा तेमां राज्य करे छे. विनय शुण्ड संपत्ति कुमुहिनी नामे तेना स्त्री छे. वजी ते नगरमां स्थिर छे प्रकृति लेनीओवो। सुभति नामे श्रेष्ठी छे, सुलसा नामे तेनी स्त्री छे. तेमज तेओने सागरचंद्र अने शुण्ड नामे ऐ पुत्र छे. हरेक कलाओमां तेओ। कुशल अने गाढ स्नेह पाशथी डोई पण्डु सभये विद्येग सहन करता नथी. तेमज तेओ। व्यवहार तथा विहारादि हरेक कार्योमां स्वेच्छा प्रभाणे साथेज विचरता हुता. एक हिवस डोईक कार्य प्रसंगने लीधे बन्ने साथे आमांतर जवा नीकल्या. ऐ गाउ गया एटवे एक मुनि तेओना जेवामां आव्या. त्यारे सागरचंद्र भोव्यो हे बांधु ! आजे आपणे जवानुं बांध राखो, आलो, घेर जड्यो. कारणुके आ मुनिनुं दर्शन अपशुक्ल गण्याय छे, तेथी आपणुने लाल भणशे नहीं. तेमज शुक्ल शाखमां कळुं छे के—

मलमलिनवसनदेहो—मुण्डतशिरस्तुण्डकोऽशुचिवदनः ।  
मुक्तविभूषो मार्गे, दृष्टः कार्य न साधयति ॥

**अर्थ—**“जेणे भलिन वस्त्र पहेरेलां होय, माथुं मुं डावेलुं होय, मुख शुद्धिहीन होय तेमज शारीरिक शोभानो। जेणे त्याग कर्ये होय एवो। बिक्षुक मार्गमां दृष्टिगोचर थाय तो कार्य सिद्ध थाय नहीं。” शुण्ड भोव्यो, हे बांधव ! आवुं अयोग्य वचन भेदवुं तहने घटतुं नथी. जे आवा महात्मानुं दर्शन पण्डु अपशुक्ल गण्यातुं होय तो पछी भीज्ञुं डोई आ हुनीयामां शुक्ल ज नथी. वजी के मुनिओनुं दर्शन मात्र पापना नाश करे छे, वंडन करवाथी जेओ। प्राणी जनेनो उद्धार करे छे. तेमनुं दर्शन अपशुक्ल केम गण्याय ? सागरचंद्र भोव्यो, श्रावकेनी साथे त्हारे

सागरचंद्र कथा.

( ४३ )

संसर्ग हे. तेथी आ मुनि .उपर ठारे पक्षपात हे. जेथी ते पापतुं क्ल तुं अनुभवे हे. गुणुचंद्र ज्ञात्यो हे बँधु ! आ मुनि संबंधी तने द्वेष डोवाथी अहीं रहीश अथवा ज्ञात्य तोपण तने लाभ थवाने नसी. जो के पूज्य एवा मुनिवरो स्वाभाविक ज मंगण स्वदृप छाय हे, परंतु निंदा करनारने अतिशय अमंगण इलहायक थाय हे. तेमज तने उलय लोकमां हुर्गति, हुणोध अने अनंत हुःअ प्राप्त थाय हे. माटे हे बांधव ! आ तम्हारे विचार बहु अराब हे. वणी कृत्याणुना कुलभवन समान आ मुनींद्रना दर्शनसी हुं ज्यां ज्ञात्य त्यां रहारे बहु सत्कार थये. तेमज बहु शुल कार्य करी हुं कृतार्थ थधश. माटे हे बांधव ! स्कुरण्यायमान तेजनी मूर्त्तमय आ मुनिनी हुञ्जु पणु क्षमा मागो. अने शांत थाच्यो. ज्ञेष्ठ बँधु पूर्णु हठमां आवेदो डोवाथी ज्ञात्यो के, अनी क्षमा मागवाथी जे शांति थाय ते शांतिनो रहारे अप नसी. ठारा ज्ञाती पणु रहारूं हुदय अणे हे परंतु हुं शुं कळ ? हुं बहु डाढ्यो थध गये हे, जेथी रहने वृषभ समान पणु तुं गणुतो नसी. एम कडी सागरचंद्र पाढो वज्यो.

सागरचंद्रना गथा बाद गुणुचंद्र मुनिने नमस्कार करी  
पोताना कार्य माटे आगण चाह्यो, दिवस  
गुणुचंद्र. तो आनंदमां व्यतीत थयो. रात्रीनो समय  
थयो एटले प्रथाणु अंध करी एक नगरनी  
बहार विष्णुना मंदिरमां मुकाम करी पोते सुध गये. अर्ध रा-  
त्रिना समये तेना सांखणवामां आ०युं के हे स्वामिन् ! गुणुचंद्र !  
उला थाच्यो, जलही सज्ज करेला रथमां आप ऐसो के जेनी  
अंदर ऐसीने अम्हारी स्वामिनी आपना माटे आप  
आवेली हे. आ ग्रमाणु कोइक स्त्रीनो शण्ड सांखणी गुणुचंद्रे

( ૪૪ )

શ્રી સુપાર્વતાય ચરિત્ર.

વિચાર કર્યો કે આ સુનિ દર્શનતુંજ દ્વાળ છે. અન્યथા આવે અનુકૂળ શબ્દ કચાંથી સાંલળવામાં આવે ? પછી ગુણુચંદ્ર નિમંત્રણ કરવા આવેલી સ્વીનો હાથ પકડી રથ આગળ ગયો. રથમાં બેઠેલી કુમારીએ પોતાના હસ્તતું અવલંખન આપી ગુણુચંદ્રને રથમાં લઈ લીધો. ત્યારણાદ સુંદર ફ્લોથી ભરેલું પાત્ર તેના હાથમાં આપ્યું. પછી ઠંડુ પાણી પાઈ સોપારી આપી. ત્યાર બાદ કપુરના મિશ્રણ વાળા ચંદ્રન રસનો ગુણુચંદ્રના શરીરે લેપ કર્યો. પછી બહુ વેગથી રથ ચલાયો. આડ ચોજન ગયા એટલે સૂર્યોદિયનો પ્રકાશ પડ્યો. જેની સાથે સંકેત કર્યો હતો તે પુરુષ કરતાં ઘણો સુંદર અને નવીન યોવન વથમાં આવેલા ગુણુચંદ્રને કુમારીએ જેયો અને હૃદયમાં બહુ ખુશી થઈ તે બોલી, હે પ્રિય વલ્લલ ! અહીંજ મુને વરો. દૈવના આપવાથી તમેજ મહારા ભર્તા છો. અન્યથા અન્ય સાથે મહેં સંકેત કર્યો હતો તેમ છતાં તમહારા યોગ ક્યાંથી થાય ? માટે હે સુલગ રતન ! દૈવ યોગ જે થવાનું હતું તે થયું. હવે તો તમેજ મહારાં શરણ છો. તમહારે કંઈ ચિંતા કરવી નહીં. કોટિ મૂલ્યનાં આ મહારાં આલરણ છે તે આપનાંજ છે. આપ ઈચ્છા પ્રમાણે આનંદ લોગવો. એમ કહી તોણીએ પોતાનું વૃત્તાંત કહ્યું કે વસંત સેનાં નામે હું નાદિપુરના રાજની પુત્રી છું. વળી મહારા પિતાનો વિચાર એવો છે કે પોતાના સીમાડાના વૃદ્ધ નરેંદ્રની સાથે મહારા. વિવાહ કરવો, તે વાત મહારા સાંલળવામાં આવી. તેથી હું બહુ હુંઘી થઈ અને ગુણુચંદ્ર નામના એક ક્ષત્રિય સાથે તે દૈવમંદિરમાં ભગવાનો મહેસું સંકેત કર્યો હતો, હું રથમાં બેસી ત્યાં આવી અને મહારી દાસીને બોલાવવા મેડલી, તેથી તમે તેની સાથે આવી મહારા રથમાં બેડા. વળી હું એમ માતું છું કે મહારા પિતાના ભયથી સંકેત કરેલો તે પુરુષ અહીં નહીં આંદોલા હોય તે સાંલળી ગુણુચંદ્ર બોલ્યો કે જે આ

वात सत्य छोय तो हुं पणु नंदिपुरनेऽज रहीश छुं अने जलनो  
वाणीये। छुं भाटे आ फुर्द्धि बनाव हैवे सुंधटित कर्यौ जे हुं  
तहारा कडेवा प्रमाणे कङ् तो कुटुंभ सहित भहारा भाता पिताने  
भहु आपति आवी पडे। राजकुमारी भेदी, तभारे डैर्छ प्रका-  
रनो लय राखवो नहीं। कारणु के हुं भहारा भाता पिताने भहु  
ग्रिय छुं। भहारूं वयन तेएा अन्यथा करतां नथी। भहारा सुखथी  
तेएाए सुख मानेलुं छे। आ प्रमाणे कुमारीने निश्चय जाणू  
गुण्ययंद्र शकुन अणथी तत्काल कुमारीने परषुयो। त्यारणाह ते  
कुमारीनी पाछण नीकणेलो। सर्वं साधन सहित द्वारपाल त्यां  
आव्यो। अने परणुवाना चिन्हवाणी कुमारीने तेमज तेना  
भर्ताने जेझ तेषु नमस्कार कर्यौ। पछी गुण्ययंद्र सहित कुमारीने  
राजनी पासे ते लक्ष गयो। पेताना पति सहित कुमारीए  
पिताना चरणुभां नमस्कार कर्यौ। भूपतिए तेमने रहेवा भाटे  
भेडो एक ग्रासाद आप्यो। तेमज तेमना ताखाभां देश, हाथी,  
घोडा, रक्षना लांडार विगेरे सर्वं संपत्तिए आपी।

**णीजे दिवसे गुण्ययंद्र पेतानी स्त्री सहित पेताना पिताने**  
**धेर जवा नीकण्यो। शेरीनी अंदर अवेश**  
**पितापुत्रनो करतां आगण चालता पुढेने शेठे पूछयुं,**  
**समागम। भाई ! आ डेणु आवे छे ? त्यारे पुढेप**  
**णाल्यो। हे शेठल ! आ तो। राजना जमाइनी**  
**स्वारी तभारे त्यां आवे छे, ते सांखणी तरतज शेठ तो। चिंताभां**  
**पड्या के एमने अहीं आववानुं शुं कारणु हुशो ? अथवा हैवे**  
**चिंता करवाथी कुंध वणे तेम नथी। प्रथम एमना आगमननो**  
**सत्कार करवो जेझ ए, एम जाणी शेठ तो उतावणथी सहाभा**  
**आव्या। तेटवाभां पिताने जेझ गुण्ययंद्र हाथिणी उपरथी नीवे**  
**उतरी स्त्री सहित पिताना चरणुभां नभ्यो। शेठ झुशी थर्भ**

( ४६ )

श्री सुपार्व्वनाथ चरित्र.

ओह्या, हे पुत्र ! आ अहंकृत समुद्धि क्यांथी मणी ? गुण्यचंद्रे पणु  
 मुनिदर्शनथी आरंभी सर्व वृत्तांत निवेदन कर्युः. त्यारभाद  
 तेणु पूछयुः हे पिताज ! महारा महोरा लाई उम हेयाता  
 नथी ? पिताए कल्युं लाई ! त्हारी साथे अहींथी ते गयो छे  
 तेटली वात हुं जाणुं छुं. त्यार भाद गुण्यचंद्रे पोताना अनुचर  
 मेाडली सागरचंद्रनी शेष करावी, अनुकमे इरतां इरतां तेओने  
 सागरचंद्रनो पतो लायेऽ. त्यांथी तेने लई अनुचरो गुण्यचंद्रनी  
 पासे आव्या अने तेणु पोताना लाईने विनय पूर्वक पूछयुः  
 के मुनि पासेथी गया भाद आपने कंध लाल भज्यो ? सागर-  
 चंद्र ओह्यो, अपशुक्ल थवाथी पाछो वणी हुं नगर तरङ्ग  
 आवतो हुतो तेटलामां त्यां चोर लेडो आवी पहेंच्या अने  
 मारो मारो अम ओलता तेओए दंडाहिकना प्रहारथी लुष्टु  
 करी महने पृथ्वी उपर पाठी दीघ्यो. तेमज वस्त्राहिं अहं उक्ती  
 मुखमां वस्त्रनो दुयो मारी वृक्षना मूणमां महने सज्जन कांधीने  
 तेओ चालता थया, त्यारभाद त्यां एक मुसाफर आव्यो. महारी  
 हीन अवस्था जेई तेने हया आवी. जेथी महने बांधनथी मुक्ता  
 कर्यो, पछी तेणु पोतानी पासेथी थेडुं क आवानुं महने आप्युः.  
 वणी पाणी पायुः. तेथी हुं शुद्धिमां आव्यो, पछी महें विचार  
 कर्यो के गुण्यचंद्रनुं कडेलुं सत्य थयुः. मुनि महाराज शकुन रूप  
 छोवा छतां तेमने अमंगलिक मानवाथी महारा मननो विचार  
 महने कळील्यूत थयेऽ. माटे हजु पणु मुनिनी पासे जई तेमनी  
 क्षमा माणुः. वणी पुण्यना उदयथी केई पणु रीते तेमनुं दर्शन  
 थाय तो साझं, अम जाणी हुं त्यां गयो, हैवयोगे मुनिनां दर्शन  
 थयां. नमस्कारपूर्वक महारा होप्रगट करी महें क्षमा माणी,  
 त्यारे. मुनि ओह्या, “ धर्म अने अधर्मनुं इल आलोकमां प्रगट  
 वेदता सरल प्राणीयो जाणी शके छे,” अन्य कुटिल लुवो केई

સાગરચંદ્ર કથા.

( ૪૭ )

પણ પ્રકારે જાણતા નથી. વળી આ સાંસારમાં જીવેને એક ધર્મ જ શરણું છે; અન્ય વસ્તુઓ હું ખનું જ કારણું છે. અજાનથી અંધ બનેલો, કષાયમાં પ્રીતિવાળો તેમજ વિષયમાં આસક્ત થયેલો. માણી પ્રસિદ્ધ અને રસૂટ ખતાવેલા ધર્મને સ્વિકારતો નથી. વળી વિશુદ્ધ માર્ગને પ્રાપ્ત થયેલો. વિવેકી જીવ ધર્મ સેવનથી સર્વ વસ્તુ મેળવી શકે છે.” આ પ્રમાણે સુનિને વિસ્તારપૂર્વક સુનિ અને ગૃહી ધર્મનો ઉપહેશ આપ્યો. સુનિધર્મ પાળવાને અસક્તા હોવાથી મહેં ગૃહીધર્મનો સ્વિકાર કર્યો. તેમજ પૂર્વના અપરાધ રૂપ મળે ધોવામાં પ્રાર્થિત રૂપ જલપ્રવાહ વડે સુનિના ચરણું કભળમાં આત્મશુદ્ધિ કરતો હતો, તેટલામાં તહારા સેવકે મહુને જેયો. ગુણુચંદ્ર બોલ્યો, “જ્યેષ્ઠાંધુ ! સુનીદ્રના દર્શનથી પ્રાપ્ત થયેલી આ રાજ્યલક્ષ્મી આપની છે, આપની ઈચ્છા પ્રમાણે લોગવો.” તે સાંસારિક સાગરચંદ્ર બોલ્યો, “સુનિના ચરણું કભળના પ્રસાદથી જૈનધર્મ રહુને પ્રાપ્ત થયો છે. તો હવે પાપસ્થાનરૂપી આ રાજ્યનું રહારે શું પ્રયોજન છે ? માટે હે બંધુ ! હું તો અહો રહી ધર્મસાધન કરીશ.” આ પ્રમાણે સાગરચંદ્રનો નિશ્ચય બાણી ગુણુચંદ્ર પોતાના પિતાને રાજ્યસ્થાનમાં લઈ ગયો. ત્યારાં તેણે નરેંદ્રની આગળ સુનિ દર્શનની વાત કહી અને આજા માણી કે “તે સુનીદ્રને વાંદવા માટે હું જઉં છું.” રાજ બોલ્યો, “અમે પણ આવીએ છીએ.” ત્યારાં રાજ, સ્વી સહિત ગુણુચંદ્ર, સાગરચંદ્ર અને સુમતિ નામે તેના પિતા વિગેરે સર્વે સુનિ પાસે જઈ અલિવંદન કરી ધર્મ સાંસારવા એઠા. દેશનાની અતે રાજાએ સમ્યકૃત્વતા થહણું કર્યું. ગુણુચંદ્રે બાર આણુત્વત લીધાં, બીજાએ સમ્યકૃત્વમાત્ર તેમજ કેટલાક જનોએ યથાશક્તિ બિજી નિયમો લીધાં.

ત્યારાં સુનીદ્રને નમસ્કાર કરી નરેંદ્રાદિક સર્વે પોતાના

( ४८ )

श्री सुपार्श्वनाथ चरित्र.

**सागरचंद्रनो  
कुट्टाश्रह.**

स्थानमां गया. पूर्णिमाने चंद्र ज्ञेम आकाशने ही पावे छे तेम शुणुचंद्र धर्ममां तत्पर थई नैनशासननी उन्नति करवा लाग्ये. सागरचंद्र पोतानी हुडाने वेपार

करतो हुतो. परंतु कुट्टुभना पोषणु जेटलुं पणु धन. महासुशी- अते कुभातो हुतो, तेथी शुणुचंद्र अनेक युजितपूर्वक पोताने त्यांथी केटलुंकं दृव्य तेने त्यां मोकलावतो, परंतु भिष्याभिमानना आवेशथी ते स्वीकारतो नहीं पछी शुणुचंद्रे तेने धण्णा समजाव्ये. तो पणु तेणु पोतानी हुठ छोडी नहीं. तेमज शुणुचंद्रनी समृद्धि नेह इप्पीने लीघे ते खणवा लाग्ये. वणी धननी धृच्छाथी खडु पीडावा लाग्ये. तेथी सागरचंद्र चोण रंगमां सो रंगी, केसरमां कुसुम्या, कस्तूरीमां करण्यातुं भिशणु करी तेमज कर्पूरादिकमां तेवा पदार्थातुं भिशणु करी झेच्छ लोडानी वस्तिमां वेपार करवा लाग्ये. एक हिवस कोळिक नेकरनी साथे तकरार थई तेमां सागरचंद्रे तेनुं अपमान कर्युं. तेथी तेणु झेच्छराजने इरीयाढ करी अने सागरचंद्रनी दृव्य भिशणुदिक कपट वार्ता झुढ्ही करी. राज्याचे तेनुं सर्व धन हुरी लाई कारागृहमां पुर्यो. तेमज खडु क्षुधा तृष्णाहिकनी वेहनाथी भरणु पाभी ते व्यंतर थयो. त्यारभाड मनुष्यजलवमां अनुलवेलुं अतिचारतुं कूण संभारतो छतो. पश्चात्ताप करवा लाग्ये. के अधर्मनुं कूण झें प्रत्यक्ष अनुकूल्युं. जे झें अतिचारतुं सेवन न कर्युं होत तो झुने आ व्यंतरपणुं प्राप्त न थात. एम समझ तेणु नैनम-हिरमां तथा संघ कर्त्त्यामां यथाशक्ति उद्यम करी मनुष्य लक्ष प्राप्त कर्यो. अने तेज लक्षमां करेला पुष्यना उद्यथी प्रथम अवस्थामां दीक्षा लाई विधि प्रमाणु पाणीने सर्व कर्मनो क्षय करी सागरचंद्रनो लुव मोक्षे गयो. तेमज शुणुचंद्र पणु खडु

सागरचंद्रनी कथा.

( ४६ )

सभय गृहीधर्म पाणी કી સહિત પોતે હીક્ષા અહંકુ કરી કર્મનો ક્ષય કરી મોક્ષસ્થાને ગયો. વળી જેએ પરદ્વયનો અપહાર નથી કરતા તેએ નરકાદિક હું અથી દૂર રહે છે. તેમજ તેઓને જૈસાખાગ્યવડે વિભૂષિત એવી સ્વર્ગ લક્ષ્મી અવસ્થ વરેલી જાણવી. વળી અદ્વાતાહાનથી વિરક્ત થયેલા પુરુષો સર્વ લોકોનું વિશ્વાસ સ્થાન થઈ આ લોકમાં જ વિશાળ કીર્તિ અને સુખસંપત્તિને મેળવે છે. તેમજ પરલોકમાં તેઓના ધનની હાનિ થતી નથી. અને સર્વ ધર્મિયત કાર્ય સિદ્ધ થાય છે. માત્ર ચિંતબન કરવાથી સુખ સંપત્તિનો લાલ થાય છે. માટે હે લંઘ લોકો ! અતિયાર વિસુક્ત હર્ષર એવું ત્રીજું પ્રત જેએ ધારણું કરે છે તેઓની સત્કીર્તિદૂષી વેલડી અદ્વાતદૂષી મંડપ ઉપર ફેલાય છે.

इति तृतीयाणुवते पञ्चमातिचारविपाके सागरचन्द्रकथासमाप्त ।

इति श्री मछलक्ष्मणगणिविरचित प्राकृत पद्यबन्ध श्री सुपार्थजिनचरि-  
त्रस्य श्री सकलसूरिपुरन्दराय माणपरमगुरुतपगच्छाधिराजशा-  
खविशारदजैनाचार्ययोगनिष्ठाध्यात्मज्ञानदिवाकर श्री मद्-  
बुद्धिसागरसूरिशिष्यप्रसिद्धवक्तेतिलब्धख्यातिव्या-  
ख्यानको विदपन्यास श्री मदजित सागर गणिकृत-  
गुर्जरभाषानुवादे प्रभुदेशनाप्रबन्धे सद्वष्टा-  
न्तातीचारव्याख्योपेतं तृतीयमणुव्रतं  
समाप्तम् ॥



( ५० )

श्रीसुपार्क्षनाथचरित्र.

## परदारगमनविरमणव्रत.

### वीरकुमारनी कथा.

दानविर्य राजा ऐवयो हे भगवन् ! आप कृपासिंहु छे।  
 माटे कृपा करी दीनजनोना उद्धार माटे योथा अणुत्रतनुं स्व-  
 रूप अमने दृष्टांत संहित समजवो. श्रीसुपार्क्षप्रलु ऐवया,  
 हे राजन् ? त्हारी ज्ञानसा पूर्णु करवा माटे अमने घडु आनंद  
 थाय छे. त्हारा प्रक्षेनो उत्तर सावधान थर्ठ श्रवणु कर. योथा  
 प्रतमां परस्तीनो सर्वथा त्याग करवानो छे. माटे जे पुढ़प पर-  
 स्तीनो सर्वथा त्याग करे छे ते लब्ध्यात्मा पर द्वारानी कैऽपि समये सेवा  
 करतो नथी. तेमज चेतानी स्वी विषे संतोष मानतो ते पुढ़प  
 समय जगत्नो रक्षक थाय छे. वणी आ लोकमां पणु वीरकुमा-  
 रनी भाइक परस्तीथी विरक्त थयेलानी कीर्ति, यश अने पुढ़पार्थी  
 विस्तार पामे छे.

पुढ़पोत्तम कृत शयन ( कृष्ण वासुदेवे जेनी अंदर शयन  
 करेलुं छे=पुढ़पोत्तम कृत सदन ) उत्तम  
**वीरकुमार दृष्टांत.** पुढ़पोत्तम निर्भाषु कार्यां छे गृहो जेनी अंदर,  
 उत्तम रत्नोथी विभूषित, तेमज सुपोत्त  
 (श्रेष्ठ वहाणु=सारा बालडोतुं कुलमंहिर) अने लक्ष्मीनुं निवास-  
 स्थान एवा समुद्रना जण समान श्री.नेत्रय नामे सुप्रसिद्ध नगर  
 छे. तेमां स्थिरमद्दन नामे राजा हुतो. ते सर्व डलाओतुं स्थान  
 हुतो. वणी जेने त्यां अनेक हस्तीओ शोभता हुता, तेमज  
 दरेक शुल कार्य तेने सेवतां हुतां, एटलुं ज नहीं परंतु अमुक  
 समये अमुक कार्य करवुं तेवो. दरेक कार्यनो कम तेणे गोठ०यो  
 हुतो. वणी डमलश्री नामे तेनी भार्या हुती. ते सुंदर विवासवडे

વીરકુમારની કથા.

( ૫૧ )

રતિ અને રંલાહિક અસરાએનો પરાજય કર્તી હતી. આ હુનીયામાં વિલાસનું કુલભુવન માત્ર તેજ ગણ્યાતી હતી. વળી ઝુવનદ્રપી સરોવરમાં કુમલિની સમાન લક્ષ્મીનું કીડા સ્થાન હતી. વિષય સુખમાં આસક્તા થયેલાં તેઓને એક પુત્ર થયો, જેનું નામ વીરકુમાર હતું. વળી તે દ્વારા જ્ઞાનમાં શિદ્યોમણી સમાન તેમજ સર્વ કલાએનો પારગામી હતો છતાં પણ બહુ વિનય-વાન હતો. વળી તે ચંદ્ર સમાન શીતલ હતો પરંતુ તેમાં કોઈ પણ પ્રકારનું લાંઘન નહોતું.

**એક દિવસ વીરકુમાર સ્વારી સાથે શિકાર માટે જંગલમાં ગયો. ત્યાં એકેપણ મૃગાદિક પણુંઓ તેના અદ્ભુતમુનિ જેવામાં આવ્યાં નહીં. તેથી વિસ્તર પામી દર્શાન.**

એવણી અમણું કરતો હતો તેટલામાં ત્યાં એકાંતમાં એકડા થાક એઠેલા સસલાએં, મૃગતા, પાડા, વોડા, હાથી, સિંહ, વાધ અને ચિત્રાએં વિગેરે અનેક પ્રાણીએને પરસપર વૈનિ છતાં પણ ભિત્ર સમાન નિર્બિય સ્થિતિવાળા જોયા. તેમજ તેઓની મધ્યમાં એઠેલા અને નિરંતર આત્મહૃદાનમાં રક્ત એવા મુનિદ્રાનાં દર્શાન થયાં. વળી તે મુનીદ્ર શ્રવણેદ્રિયને અમૃતવૃષ્ટિ સમાન અને મેધ સમાન ગંભીર એવી વાણીવડે ધર્મદેશના આપતા હતા. એવામાં કુમારના સૈનિકોએ તે પણુંઓ ઉપર બાણ, લાલા વિગેરે આયુધાના પ્રહાર કર્યા. પરંતુ તેઓને તે પીડાકારક થયા નહીં. ત્યારબાદ પણુંઓમાં વૈરની શાંતિ તેમજ શાસ્ત્રનું વિક્રિપણું જોઇ કુમાર આશ્ર્ય પામ્યો. અને તેણે જાણ્યું કે આ મુનીદ્રનો જ પ્રભાવ છે. પછી કુમાર પણ્યામ કરી મુનિની આગળ એઠેં!, આ પ્રમાણે કુમારનો આચાર

( ૫૨ )

શ્રીસુપાર્થનાથચરિત્ર.

જેઈ તેનો પરિજ્ઞન પણ વિનયપૂર્વક નમસ્કાર કરી નાચે એડો. ત્યારબાહ મુનિએ ધર્મલાભ આપી ધર્મદેશનાનો પ્રારંભ કર્યો. હે ભવ્ય પ્રાણીઓ ! ધાસ ચારાથી જીવન ચ્યાત્રતા એવા અનાથ પ્રાણીઓનો સંહાર કરવામાં શું પરાક્રમ ગણ્યાય ? તેમજ વૃદ્ધ અને પાંગળાએનો વધ કરવાથી ડોણે જ્ય મેળ-વ્યો ? એકનો પ્રાણ હણુવામાં આવે છે અને તેને મારનારો ઝુશ્ચિ થાય છે, એ વાત સત્ય છે, કારણુ કે દરિદ્ર ભાણુસ ગોરસ માટે ગાયને મારે છે. વળી મોહુથી અંધ અનેલા અને કોણી ઢીંચણુ વિગેરે ભર્મ સ્થાનોમાં પ્રણનુના ફઃખથી પીડાતા પાપી જનો આ ભાવમાં જ શીત, ઉષ્ણ, કુધા, તૃપાદિક અનેક કલેશો સહુન કરે છે. સર્વ પાપી પુરુષોને પ્રાણી વધતું પાપ નરકનું મુખ્ય કારણ થાય છે. તેમજ માંસ ભક્ષણ પણ ચંડાલની આલવિકા છે. દરેક જીવને પોતાનું જીવિત સદ્ગુરુ પ્રિય હોય છે અને ભરણ અનિષ્ટ હોય છે એ વાત સિદ્ધ થાય છે. શાશ્વતમાં પણ કહું છે કે—

અમેધ્યમધ્યે કીટસ્ય, સુરેદ્રસ્ય સુરાલયે ।

સમાના જીવિતાકાંક્ષા, સર્વ મૃત્યુભર્ય દ્વયોः ॥

અર્થ—“ વિષામાં રહેલા કીડાને તેમજ સ્વર્ગમાં વાસ કરતા સુરેદ્રને જીવવાની આશા સરખી હોય છે અને ભરણુ લય પણ બજેને સરળોજ હોય છે.” વળી હર્વચન, ગાળ, પ્રહાર, પરાજ્ય, ઠગાઈ, અને ભૃત્ય જેમ પોતાને અપ્રિય લાગે છે તેમ ભીજાએને પણ અપ્રિય લાગે તે વાત સત્ય છે. જે વસ્તુ જેને ધિષ હોય તે વસ્તુ તેને આપવી, જેથી તે પરભવમાં આપનારને પ્રાસ થાય છે. જેવું હાન આ ભવમાં આપવામાં આવે છે તેવું પરભવમાં મળે છે, એક તરફ જીવિત અને એક તરફ ચક્કવત્તી રાજ્ય, એ બજેમાંથી એકનો વિનાશ થવાનો પ્રસંગ આવે તો તે પ્રસંગે સર્વ જીવને પોતાનું

बीरकुमारनीकथा.

( ५३ )

જીવિત બહુ ગ્રિય લાગે છે પરંતુ રાજ્યની કૃમિઓ કોઈ કરતું નથી. ધન, બાંધવ, તે સ્વજનોમાં તેમજ જી પુત્રાદિકનો અપેક્ષાએ પણ હરેકને પોતાનું જીવિત અત્યંત ગ્રિય હોય છે તે વાત આજગતમાં અનુભવ સિદ્ધ છે. જે મતુષ્યો પણ પ્રાણીઓનું માંસ ખાય અને ઇધિર્પાન કરે તો કીડા, તથા કુતરાઓમાં અને તેઓમાં શો તક્કવત ? તેમજ હીન, અનાથ, શરણુલીન એવા નિરપરાધી જીવતા પ્રાણીઓને મારી તેઓનું માંસ ભક્ષણ કે ઇધિર્પાન કરે તો નરક શિવાય તેઓને બીજું કયું ઇલ મળવાનું ? કારણું કે પવિત્ર લોજન વિધમાન હોય છતાં તેનો અનાદર કરી હુરાચારો લોકો માંસ ભક્ષણ કરે છે. જેઓ નિર્દ્દ્ય અને નિવિદ્યેકી બની વિષા સમાન માંસનું ભક્ષણ કરે છે તેઓનો જન્મ જ આ લોકમાં ન થવો તે શ્રેષ્ઠ છે. તેમજ તેવા હૃદ્યોનું ઉદ્દર પોષણું પણ હુર્દાલ થાય છે. માટે પર પ્રાણી પર હ્યા રાખવી. આ પ્રમાણે દેશના સાંલળી કુમારે ઉત્કૃષ્ટ એવું સમ્યક્તવ વ્રત ધારણું કર્યું. તેમજ સંકલ્પથી સ્થૂલ અનપરાધિ પ્રાણીઓનો વધ ન કરવો તેવા નિયમ લીધો. તેમજ તેના પરિવારે પરસ્તી સેવન તથા માંસ ભક્ષણનો નિયમ લીધો. તથા અન્ય જનોએ પણ યથા ઇચ્છિ નિયમ લીધા. ત્યાર બાદ મુનિને નમસ્કાર કરી તેઓ પોતાના સ્થાનમાં ગયા.

એક દિવસ રાજાએ યુદ્ધની પરીક્ષા માટે કુમારોને પૂછ્યું કે પાંચાલ દેશમાં પ્રથમ જે મુદ્રાં અધિકારી કુમારોની પરીક્ષા. મૂડેલો છે તે બહુ કાર્યદક્ષ અને સરલ સ્વભાવી છે. વળી ત્યાં એક વર્ષમાં દશ લાખ સેનેયા ઉમજ થાય છે એમ તેનું કહેવું થાય છે. હવે બીજા અધિકારીઓનું કહેવું એમ થાય છે કે જે આ સ્થાનમાં રહ્યે મૂડે તો હું દર વર્ષે પંદર લાખ ઉમજ કરી આપું. આ વાત પ્રથમના

( ५४ )

श्रीसुपार्थनाथचरित्र.

अधिकारीने अमे जग्नावी तोपणु तेणु एम जग्नाव्युं के जे  
उमज्ज थाय छे तेज प्रभाषे थशे, महाराथी वधारे। थर्द शके तेम  
नथी. छतां आपने जेम चोऽय लागे तेम करो। माटे हुवे आपणे  
शुं करवुं ? आ प्रभाषे पितानो प्रश्न सांबणी वीरकुमार शिवाय  
अन्य कुमारे योट्या। जे अहु धन उमज्ज करे ते अधिकारीने ते  
देश सांपवे। उचित छे। त्यारभाद राजाए वीरकुमार तरक्क दृष्टि  
करी कहुं के तुं केम कंध योलतो नथी ? त्यारे ते योल्यो, हे तात !  
महारे। भत एवो छे के आपे प्रथम खाण्डाश अने सत्यवाही जे  
अधिकारी भूडेलो। छे तेज आपनो हितकारी छे। कारणु के ते  
अधिकारी प्रजने पीडवा धन्वत्तो नथी. अने प्रज सुखी  
रहेवाथी राज्यमां संपत्तिए। अधिक प्राप्त थाय छे. वणी तेम  
थवाथी उत्तरोत्तर उद्योगनी वृद्धि थाय छे। तेमज राजनीति  
प्रभाषे कर लेवाभां आवे तो। अहु धन संपत्तियो प्राप्त थाय छे।  
वणी न्यायःप्रभाषे यातवाथी द्र०य अने धर्म नी पणु आणाही  
थाय छे। शास्त्रमां पणु कहुं छे के—

अर्थात् त्रिवर्गनिष्पत्ति—न्यायोपार्जितवर्द्धनात् ।

अधर्माङ्गिर्थशोकानां, विपरीतात्समुद्ध्रवः ॥

अर्थ—“न्याय वडे उपार्जन करेला धनथी धर्म, अर्थ अने  
ठामनी सिद्धि थाय छे। तेमज अन्यायथी मेणवेली संपत्तिवडे  
अधर्म, अनर्थ अने शोकनो प्राहुर्भाव थाय,” माटे हे पिताल !  
प्रथमनो नं नियोगी छे तेज चोऽय छे। कारणु के ते नीतिथी  
धन मेणवे छे, वणी अन्य नियोगी अनीतिथी पंदर लाख मेणवशे  
भरो। परंतु तमहारे। नियोगी थर्द जे अन्यायनी प्रवृत्ति करशे  
तेथी तमे पणु अधर्मी गण्णाशो। अने चारे तरक्कथी आपनी उपरे  
हुळीत्तिना प्रहार प्राप्त थशे। वणी प्रथम वर्षमां ते कूट नियोगी

વીરકુમારનીકથા.

( ૫૫ )

પંદર લાખ મેળવશે પરંતુ બીજે વર્ષે તેનો ચોયો ભાગ કે ત્રીજે ભાગ અને ત્રીજે વર્ષે તો લોકો કર આપવાને પણ અશક્ત થશે. તેથી એક લાખ પણ મેળવવા સુશકેલ થશે. આ મહારં વચ્ચન અંતે સત્ય થશે. કારણ કે—

દુધમાદાય ધેનુનાં, માંસાય સ્તનકર્તનમ् ।

અત્યુપાદાનમર્થસ્ય, પ્રજાભ્ય પૃથિવીસુજામ् ॥

**અર્થ—** “રાજાએચે ગ્રંથ પાસેથી મર્યાદા ઉપરાંત કર લેવો તે ગાયોનું હુધ લઈ લીધા પછી તેઓના માંસ માટે સ્તન (આંચળ) કાપવા બદોખર છે.” આ પ્રમાણે વીરકુમારનો અભિપ્રાય સાંભળી રાજાએ વિચાર કર્યો કે ઉંમરમાં સર્વ કુમારો કરતાં આ નહાને છે. પરંતુ બુદ્ધિમાં તો મહોટો છે. માટે રાજ્યભાર ધારણ કરવાને આ લાયક છે. જે કે એના દેખિ લોકોથી સાવધાન રહી હું એની રાજ્યપદની ચોય્યતા પ્રગટ કરીશ નહીં, પરંતુ તેના સ્વાભાવિક શુણોને તેમજ લોકોના અનુરાગને આચિહ્ન કરવાને હું શક્તિમાન નથી એમ જૂણી તે ખોલ્યો, હે વત્સ ! આ સર્વ કુમારોની બુદ્ધિ મહિન છે. માત્ર તુંજ શુદ્ધ બુદ્ધિમાન છે. કારણું કે સર્વની માન્યતાથી ત્હારી માન્યતા બહુ ઉત્તમ પ્રકારની છે, વળી અન્યાયથી મેળવેલી સંપત્તિનો વિવાસ તહેને રૂચતો નથી. એમ ત્હારા યોલવા ઉપરથી તેઓની બુદ્ધિનો તિરસ્કાર ખુલ્લી રીતે થયો છે તેથી તું આ રાજ્ય વૈભવ તેમજ આ દેશ છોડી ચાલ્યો જા. જેથી ત્હારી બુદ્ધિનો પ્રભાવ તો પ્રગટ છે છતાં પણ બહુ પ્રસિદ્ધ ન થાય.

નરેંદ્રની આજા લઈ નમસ્કાર કરી વિમદ્દ નામે મતિસાગર  
મંત્રીના પુત્ર સાચે વીરકુમાર ત્યાંથી નીક-  
વીરકુમારનો પ્રવાસ. જ્યો. રાજાએ કુમારની રક્ષા માટે પોતાના  
સુલટો મોકલ્યા. તેઓ સામાન્ય સુસાક્ર

( ૫૬ )

શ્રીસુપાર્વતિનાથચરિત્ર.

સમાન વેષ ધારણું કરી કોઈ ન જાણે તેવી રીતે કુમારના આતુચર તરીકે નિરંતર સેવામાં હાજર રહે છે. અનુકૂમે તે કુમાર કોશલ-પુરમાં ગયો. નગરની નજીકમાં એક સરેવર હતું. તેના કંડા ઉપર સ્વચ્છ હવામાં વિશ્વાંતિ માટે કુમાર એડો હતો તેવામાં સુંદર ધ્વનિવડે મનોહર વાળું તેનો નાદ તેના સાંભળવામાં આવ્યો. વિમલે ત્યાં આવતાં કોઈક નગરવાસીને પૂછ્યું, ભાઈ ? અહો કોઈ મહેસુસ છે ? કે જેથી આ વાળું તો વાળી રહ્યાં છે. પુરુષ ઓદ્યો, આ નગરને અધિપતિ રણ્ણધવળ નામે રાજ છે, તેને કુરુમતિ નામે પુત્રી છે. તે રાજને પોતાના પ્રાણુથી પણ અધિક પ્રિય છે. પરંતુ તે કુરુમતિ પુરુષ દેખિયું છે. અર્થાત् કોઈ પણ વર તેની ધ્યાનમાં આવતો નથો. તેથી તેના પિતાએ કુલ-હેવીની આરાધના કરી, જેથી કુલહેવી પ્રગટ થઈ ઓલી કે પછું હસ્તી ઉપર કુમારીને બેસારીને તે હાથી છુટો મૂકો. અને તે હાથી પોતાની શુંધવડે જેને વરમાળા પહેરાવે તેજ કુમારીનો વર જાણ્યો, તેમજ કુમારી પણ તે પુરુષ ઉપર ખુલ્લુ પ્રેમવાળી થશે. આ પ્રમાણે હેવીનું વચન સાંભળી રાજને તે પ્રમાણે હાથી શાખુગારી છુટો મૂક્યો છે, અને તેની આગળ વાળું તો વાગે છે. હસ્તી પોતે માલી વાડામાં જઈ સુંદર ઉપર પુષ્પમાળા ધારણું કરીને નરેંદ્ર, માંડલિક, સામંત અને સેનાપતિ મંત્રી સહિત નગરની અંદર ક્રસ્વા નીકળ્યો છે. એમ કણી તે પુરુષ મૈન રહ્યો તેટલા-માંજ તે પછું હસ્તી ત્યાં આવ્યો અને વિમલ મંત્રીના જોવામાં આવ્યો. જેમ ગંડસ્થલોમાંથી નિર્મણ મદ જળ અરતું હતું, તેમજ તેના સુગંધથી એકઠા થચેલા ભ્રમરાઓના ગુંજાસ્વવડે દ્વિશાઓને વાચલિત કરતા તે પછું હસ્તીને જેઈ મંત્રીએ કુમારને જાયત્ર કર્યો. તેટલામાં તો હસ્તી કુમારની પાસે આવી ગયો. અને શુંધમાં ધારણું કરેલી પુષ્પમાળા કુમારના કંદમાં પહેરાવી.

વીરકુમારતીકથા.

( ૫૭ )

પણ શુંદવતી વીરકુમારને પોતાના સ્કંધ ઉપર બેસાર્યો. રાજ પણ રૂપમાં કામદેવ સમાન તેને જોઈ બહુ ખુશી થયો. પૂર્ણિમાના ચંદ્રથી તરંગિત એવા ક્ષીરસાગર સમાન અને વિશેષ લાવણ્યરૂપી તરંગોથી સંચુક્ત એવા વીરકુમારને કુમારીએ પણ પ્રેમપૂર્વક જોયો. ત્યારખાદ પુંખવાની તૈયારી કરી. તે સમયે રાજએ વરને દશ હાથી, હળવ વોડા, તેમજ લાખ સોનેયા આપ્યા. અને વિધિ પૂર્વક છાયા લગ્ન જોઈ કુમારની સાથે કુમારીનું પાણિઓહણું કરાયું. તે જોઈ સર્વ લોકો બહુ સંતુષ્ટ થયા. હસ્તમોચન સમયે રાજએ દશ હળવ ગામ આપ્યા, વળી રહેવા માટે પોતાનો સુખ્ય મહેલ આપ્યો, કુમાર તેમાં છચ્છા પ્રમાણે વિલાસ કરતો હતો, કુમારે પોતાના ચરપુરુષ દ્વારા પોતાના પિતાને સમાચાર મોકલાવ્યા. શુભ વૃત્તાંત સાંભળી પિતા બહુ ખુશી થયા. વિવાહના દિવસોમાં કુમારના રસેઠે માંસાદિરહિત શુદ્ધ રસોધ જોઈ તે રાજએ કુમારને પૂછ્યું. તમ્હારે રસેઠે માંસાદિક માંસાદિક કેમ વાપરતા નથી? કુમારે કહ્યું હે રાજન? માંસાદિક સાવધ પહાર્થનો સર્વથા મહારે ત્યાગ છે, વિગેરે કેટલીક બાણત સમજલવીને ઇરીથી કુમારે કહ્યું કે હે રાજન? આ વિવાહ પ્રસંગે રસોધમાં માંસ ન વપરાય તેવો બંદોધસ્ત કરાવો. રાજએ તેજ પ્રમાણે માંસ બંધ કરાયું. વિવાહનો પ્રસંગ જમાસ થયો, ત્યારખાદ કુમારે રાજને જણાયું કે માંસ ભક્ષણ નહીં કરવાનું કારણ એ છે કે પંચાંદ્રિય પ્રાણિનો વધ કર્યો શિવાય માંસ મળે નહીં અને પ્રાણિવધ એ નરકનું સુખ્ય કારણ છે. એમ ધર્મશાસ્કોમાં કહ્યું છે. વિગેરે બહુ દ્વારાંતપૂર્વક ઉપદેશવડે માંસભક્ષણથી થતા દોષો કહી બતાવ્યા. તેમજ પ્રસંગને લીધે મુનિધર્મ અને ગૃહિધર્મનું તરબ પણ કહ્યું. તેમજ પોતે શહેર કરેલા અનુત્ત્રતોનો અભિન્ન તથા માંસાદિકનો ત્યાગ

( ५८ )

श्रीसुपार्थनाथयरितं.

પણ કહ્યો. તે સાંભળી કુમાર ઉપર રાજની બહુ પ્રીતિ ઉત્પન્ન થઈ, તેમજ તેના ઉપર વિધાસ પણ સજજડ થયો. તેથી રાજએ પણ માંસના ત્યાગ સાથે દેવ તથા ચુરતત્વનો સ્વીકાર કર્યો.

એક દિવસ દ્વારપાલવડે પ્રવેશ કરાયેલી કોઈક હૃતિ સંધ્યા હૃતિનું આગમન. સમયે કુમારની પાસે આવી અને વિનંતિ કરવા લાગી. હે કુમારેંદ્ર? આ નગરમાં બહુ ઇપવતી, રાજ, મંત્રી, નગરશોઠ અને પ્રતીહાર એ ચારેની સ્ત્રીઓ આપને જોઈ કામનજવરથી બહુ હુંઘી થઈ છે. તેથી તે ચારે સ્ત્રીઓએ વિચાર કરી મણે આપની પાસે મોકલી છે. માટે તેઓ દરેક પરસ્પર આ વૃત્તાંત ન જાણી શકે તેવી રીતે અનુકૂમે આપના સમાગમનો લાભ તેઓને મળી શકે એટલી કૃપા કરો. ત્યારખાં પોતાને જે કરવાનું હતું તેનો નિશ્ચય કરી કુમારે જવાબ આપ્યો કે આવતી કાલે રાત્રીના પ્રથમ પ્રહુરમાં પ્રતીહારની સ્ત્રી, બીજા પ્રહુરમાં શોઢાણી, ત્રીજા પ્રહુરમાં મંત્રીની સ્ત્રી અને ચોથા પ્રહુરે રાણીને મોકલવી. આ પ્રમાણે કુમારનું બચન સાંભળી હૃતિએ જાણ્યું કે હવે આ કાર્ય સિદ્ધ થયું એમ સમજુને બહુ ખુશી થઈ અને તે વૃત્તાંત દરેકને ઘેર જરૂર નિવેહન કરી પોતે કૃતાર્થ થઈ.

બીજે દિવસે કુમારે રાજને કહ્યું કે આપને હું કંઈક નવીન અનાવ હેખાડવા ઈચ્છું છું. તે જોઈ આપ કુમારનું કર્તાવ્ય. કોઈ સમયે નહીં જોગેલું એવું આશ્ર્ય પામશો. તે સાંભળી રાજ યોદ્યો: હે સત્ય-ઇષ? હું તને વવહારથી પુત્ર સમાન જાણું છું પણ નિશ્ચયથી તો રહેને પિતા સમાન માનું છું. કારણું સદ્ગર્મના દાનથી રહ્યા રહ્યા જન્મ તહેં સઝલ કર્યો છે. માટે હે વત્સ? હવે વિકલ્પ કરવાનું કંઈપણ કારણ નથી, આપની ઈચ્છા પ્રમાણે હું વર્ત્વા

वीरकुमारनीकथा.

( ५६ )

तैयार छुं. त्यारभाद कुमारे कहुं हे राजन् ? आने संध्याकाले शुभराते रहारा भक्तानमां पधारवा कृपा करशो. राजने पण ते प्रभाणे कर्मल कर्म अने संध्यासमय थये. एटले कुमारनी पासे गये. कुमारे पेतानी पाशमां कौदि न हेपे तेवीरीते एक ढो-लीया उपर राजने ऐसाइया. हुवे कौदिक फळानुं करी प्रतीहारनी खी पेताना वेरथी नीकणी रत्रिना प्रथम प्रहरमां कुमारनी पासे आवीने योग्य स्थाने एठी. एटले कुमारे उपरेशनो प्रारंभ कर्या. लोगाहिक विषये आलोकमां हुःभजनक छे, तेमज धर-लोकमां पण नरकाहि हुःभनुं करण्य थाय छे. आ उपरथी ए वात सत्य थध के कागडानुं मांस अने तेपण वणी उचिष्ट समान आ थयुं. वणी हुर्गतिहायक विषयेनुं सेवन करवुं खडूं पण जे एथी तुमि थती होय तो अन्यथा वृथा कडेश शामटे सेववो ? उचिष्ट लोजन पणु करवुं, जे खावाथी भीहुं लागतुं होय तो वणी विषयलोगवाथी आ लुवने तुमि थती नथी अने परलो-कमां नरकगति प्राप्त थाय छे, तो आ ऐ ठंड उवीरीते सहन करवा ? लुवोच्चे हेव लव पामी बहु समय स्वर्गाहि लोकमां विषय सुख लोगन्युं, परंतु हजु सुधी पण तुमि न थाई तो स्व-ध्य कालना लुवितवाणा मनुष्यलवमां लोगवेला तुच्छ विषय सु-अथा उवीरीते तुमि थाय ? हे सुंहरि ? जे के आ विषयो लो-गवतां प्रारंभमां आनंद आपे छे, परंतु परिणामे विरस अने किंपाइक्कल समान अनर्थजनक छे. माटे विषयेना त्याग करी ईद्धिय तथा मननो निवृहु करी भोक्षमार्गनुं स्वरूप जाणीने तेमां सदाकाण उद्युक्ता था. वणी ते भोक्षमार्गनुं सुख्य करण्य सम्य-कूदर्शन, सम्यग्ज्ञान अने चारिन धर्म छे. पठी ते सर्वेनुं लेद. सहित स्वरूप तेनी आणण प्रगट कर्म. जेथी ते खी प्रतिष्ठाध पामी. त्यारभाद कुमारे तेने पडानी अंदर एकांतमां ऐसारी.

( ६० )

श्रीमुपार्खनाथचरित्र.

ओं ग्रहरे शेठाणी आवी तेने पणु तेज प्रभाणु कुमारे उपहेश  
 आध्यो। ते सांकणी शेठाणी पणु योध पामी। तेने पणु ते  
 प्रभाणु एकांतमां ऐसारी। ग्रीने पहेंदरे मंत्रीनी स्त्री आवी, तेने  
 पणु ते प्रभाणु धर्मभार्गीमां स्थिर करी पोतानी पाछण पडाहामां  
 ऐसारी हीधी। पछी छेल्वा पहेंदरे राणीनुं आगमन थयुं। कु-  
 मारे शथामांथी उलो थध अब्युत्थान आपी प्रणाम कर्यो। राणी  
 योली लुवितनाथ? आ शुं करो छो? आ शुं अब्युत्थाननो  
 अवसर छे? अथवा नमस्कारादिक्नो प्रसंग छे? आपना शरी-  
 रना समागमउपी अभृत रसथी झाहारूं अंग शांत करो, हे स्वा-  
 भीन्? आपना विरहाजिनथी प्रदीप थयेली भुने क्षणुमात्र वि-  
 द्वंथी स्पर्श डरेशो तो भुने लुवती जेइ शकेशो नही। कारण्युके  
 जड़र झाहारूं हृदय फ़ाटीने दुकडा थध जशे। एम ते योलती  
 हुती। परंतु ते सभये कुमारे तेनी तरक्क दृष्टि पणु न करी। कारण्यु  
 के ते अहु कामातुर थयेली छे तेथी हालमां तेने उपहेश लागवा-  
 नो। नथी एम ज्ञाणी तेनो। तिरस्कार कर्यो। नेथी त योली हे भहां-  
 शय? सत्यप्रतिज्ञाना पालन करनार सत्पुरुषो शुं आपना जेवा  
 हुशे? सत्पुरुषनुं लक्षणु तो शास्त्रमां कहुं छे के—

सकृदपि यत्प्रतिपन्नं, तत्कथमपि न त्यजन्ति सत्पुरुषाः ।

नेन्दुस्त्यजति कलङ्कं, नोज्जति वडवानलं सिन्धुः ॥

**अर्थ—**“ नेम चंद्रमा कलंकनो त्याग करतो! नथी, तेमज्ज  
 समुद्र वडवानल अग्निनो त्याग करतो। नथी तेवी रीते सत्पुरुषो  
 एकवार पणु जेनो स्वीकार करे छे तेनो। डोईपणु समये  
 त्याग करता नथी।” तो हे स्वाभीन्? शुं भहारा मंद  
 आञ्चने लीघेज आपे स्वीकारेलुं वयन असत्य कर्यु। नहीं तो  
 भुने योलावीने परांगभुण केम थया? कुमार योव्यो। त्हारी

वीरकुमारनीक्या.

( ६१ )

हृतीना कडेवाथी भडे तहने अहों जोलावी छे. परंतु तेनुं कारणु ए छे के ज्ञैनधर्मनो। उपदेश करी हुरंत हःखदायक आ हुरा-यारथी तहां चित निवृत्त करवुं अने शुद्ध धर्ममां तने स्थिर करवी एवो म्हारे अभिप्राय छे। राणी जोली प्रथम आप शारी-रिक सुख आपो अने पछी आपनो विचार पछु सत्य करे। कुमार जोलायो लग्न समयथी प्रारंभी आजसुधी कामदेव समान सुंहर आकृतिवागा पेताना पतिनी साथे विषय लेगववाथी तने तृप्ति न थध तो हुवे चौर्य तरीके म्हारा समागमथी तृप्ति क्यांथी थशो ? माटे आ असह आवह छोडी दृष्टि निराखाध धर्म मा-र्गनुं सेवन कर. आ प्रमाणे उपदेशद्वारा कुमारे अहु समजावी तोपछु तेणीचे पेतानो अभिप्राय छोडयो नहीं अने इरीथी जोली हे कुमार ? हुं तहारा कल्पा प्रमाणे चालीश। परंतु म्हारी हृति आगण जे वयन तहें कडेलुं छे ते प्रथम सत्य कर. अन्यथा तहारा वयननो म्हने विश्वास केम आवे ? त्यारभाद कुमारे पेतानो सत्य विचार जखाव्यो। हे सुबहो ! आ तहारी वांछा आ जन्ममां पूर्ण थवानी नथी, कारणुके परखीनो संग सर्वथा म्हारे त्याज्य छे. ए प्रमाणे कुमारतुं असाधारण सत्त्व तेमज सन्मा-र्गनां प्रतिज्ञाधक वयन अने पेताना हुष्ट अर्थवसायनो विचार करती ते राणी वैराग्य पाभी कुमारना पगमां पडी अने जोली के हे धर्म खांधव ? सत्त्वना निधि समान तुं म्हारे नानो अंधु छे अने हुं तहारी भाता समान पापिठ झेन थाउं छुं. छतां निर्लङ्घ थध भर्याहानो त्याग करी भडे तहारो उपर जे पाप चिंतण्युं, ते पापथी हुं तेवी रीते मुक्त थधश ? वगी हे कुमार ! आ वृतांत तुं जाणुतो नथी के हुं तहारी जोलमान भेडाई जेन थाउं छुं. ते वृतांत हुं कहुं छुं. जेमके म्हारे जन्म भूलनक्ष-तमां थयो हुतो, तेथी पितानो प्रेम म्हारे विषे खीलकुल नहीं

( ૬૨ )

શ્રીસુપાદ્યનાથ ચરિત્ર.

હોવાથી અહુને ત્યાંથી વિહાય કરી. હૈવયોગે હું બાળગાલ દેશમાં ગઈ. તે દેશના અધિપતિ પ્રવરસેન રાજ મારા મામા થાય, તેથી તેમના ત્યાં અહુને રાખી અને ધાવ માતાઓએ પાળી પોતીને મહોટી કરી. અનુકુમે હું ઉમ્મર લાયક થઈ એટલે પ્રવરસેન રાજએ તહારા સાસરાની સાથે અહુને પરણુવી. આ વાતને કેટલાંક વર્ષ થયાં ત્યારખાદ પરનારીને સહોદર સમાન માનતો એવો તું પોતાના કુલરૂપી આકાશમાં ચંદ્ર સુમાન ઉત્પત્ત થયો. માટે આપણું ભાઈ ફેન થયાં અને આ પ્રમાણે કલાંકથી મળિન થયેલા મહારા પ્રાણુને કોઈપણ રીતે ત્યજવા માટે હું જાઉં છું. અહારં આચુષ પણ તહુને અર્પણું કરું છું. જેથી તું અધિક જીવ. તે સાંભળી કુમાર એલયો. આત્મધાત કરવો એ બાલ મરણ ગણ્ય અને તેમ કરવાથી પરંપરાએ હુઃખની બહુ વૃદ્ધિ થાય છે. માટે પોતાના સ્થાનમાં જઈ બાકીની રાત્રી નિર્ગમન કરો. આ પાપથી છુટવાનો ઉપાય હું બતાવીશ. જેથી તમહારં સર્વ પાપ દૂર થઈ જશે. આ સંખંધી બીજો કોઈ પણ ખરાખ વિચાર કરો તો તમહુને મહારા સોગન છે. ત્યારખાદ રાણીએ પણ કહું કે તહારં વચન હું માન્ય કરું છું અને તુંજ મહારો ખરો આધાર છે. માટે હવે હું ધૈર્ય રાખી આત્મધાત કરીશ નહીં. એમ કહી રાણી કુમારની આજા લઈ પોતાના સ્થાનમાં ગઈ.

તેમજ બાકીની ત્રણ સીઓએ પણ પરપુરણ સાથેના સંલો-

ગનો નિયમ લઈ સમ્યક્ત્વ પ્રતનો સ્વીકાર

**રાજદીક્ષા.** કરી કુમારને નમસ્કાર કર્યો, ત્યારખાદ ફરીથા

પણ વિશેષ શિક્ષા અહણું કરી તેઓ પોતાના સ્થાનમાં વિહાય થઈ. ત્યારખાદ બહુ આશ્ર્ય પામેલો રાજ એલયો. હે કુમારેંદ્ર ! મહારી ઉપર તેમે મહોટો અનુશ્રહ

वीरकुमारनीकथा.

( ६३ )

કર્યે, વિષયરાગ વિડંખનાતું આ અપૂર્વ નાટક બતાઓયું. હવે હું રહારા સ્થાનમાં જવા માટે રાજ માણું છું. કુમાર પણ તેમની વિદ્યાયગીરી માટે તેમની પાછળ ચાલ્યો. ટેટલાક માર્ગ જઈ રાજને નમસ્કાર કરી કુમાર પાછે વહ્યો. રાજ પોતાના મહેલમાં ગયો. પ્રભાતકાળ થયો. પોતાનો નિત્ય નિયમ કરી કુમારને પોતાની પાસે બોલાયો. કુમાર પણ ત્યાં આવી ઉચ્ચિત સ્થાને એઠો. રાજ પોતે કંઈક બોલવાનો વિચાર કરતો હતો, તેટલામાં ધશાન ડેણુમાં અતિ અફ્લુટ તેજનો વિસ્તાર જોવામાં આવ્યો. રાજએ તત્કાળ દ્વારપાળને પૂછયું કે આ શું હેખાય છે ? દ્વારપાલે ક્ષણું માત્રમાં તેનો તપાસ કરો જગ્યાઓયું કે અર્હીયા કેંધ્ર કેવળ જ્ઞાની સુનીદ્રિ પદ્ધાર્યા છે, તેમને વંદન કરવા માટે વિમાનવાસી હેવતાઓ જાય છે, તેઓની આ કાંતિ હેખાય છે. તે સાંભળી સર્વકાર્યોનો ત્યાગ કરી રાજ કુમારની સાથે સમસ્ત ઝડ્ધ સહિત સુનીદ્રિને વાંદવા માટે ત્યાં ગયો. વિધિ પૂર્વક વંદન કરી પરિજન સહિત રાજ સુનીદ્રિની આગળ એઠો. પછી રોમાચિત થયું છે ગાત્ર જેનું અને પૃથ્વી ઉપર સ્થિર કર્યું છે. જનુ મંડલ નેણુ એવો. કુમાર લાલસ્થદમાં અંજડી લોડી સુનીદ્રિ પ્રત્યે બોલ્યો હે જગહશુર ! આપ ધર્મદ્વારા શુરૂ છો, વળી આપ વિતરાગ પદ્ધવીને પ્રાપ્ત થયા છો; છતાં પણ રહારો ઉપર મહોટી કૃપા કરી. કારણું પોતાના ચરણ કમલનું આપે હર્થન કરાયું. ત્યારથાં રાજ બોલ્યો હે કુમાર ! હું એમ માનું છું કે રહાર હૃદયને અનુકૂલ એવી દીક્ષા આપીને રહાર ઉપર અનુયહ કરવા માટે પ્રભુનું આગમન થયું છે. તે સાંભળી સુનીદ્રિ બોલ્યા. હે રાજન ? રહાર કહેવું સત્ય છે અને આ સમય રહાર ઉદ્ઘયનો છે. ત્યારથાં પોતાના સ્થાનમાં જવા માટે ઉલ્લાસ થયેદી સલાસદોને એસારી રાજએ પોતાના પરિજન સાથે કુમારનો હુસ્તા

( ૬૪ )

શ્રીસુપાર્થનાથચરિત્ર.

પડડી સભાની અહાર જી સુકૃટાદિક સર્વ અલંકાર કુમારને આપી પોતાની પ્રજનને કલ્યાં કે હવેથી આ કુમાર તમારો રાજ છે. એની આજામાં હમેશાં વર્તાવું, એમ ઉપરેશ આપ્યા બાદ પરિજ્ઞન સહિત કુમારને પ્રણામ કરી કેવલી ભગવાનના ચરણુકમલમાં દીક્ષા અહણું કરી. તેમજ રાણીએ પણ નવીન રાજગાઢીએ એટેલા કુમારને પુછી પોતાના હુસ્ત્રિની શુદ્ધિ માટે દીક્ષા અહણું કરી, તેમજ કેટલીક અન્ય રાણીએ એ પણ દીક્ષા લીધી. ત્યારબાદ કેવલી ભગવાન અને અન્ય દીક્ષાધારી મુનિઓને નમસ્કાર કરી રાજ પોતાના સ્થાનમાં વિદ્યાય થયો. પછી રાજ પોતે હમેશાં મુનિઓની સેવામાં હાજર રહેતો હતો. એમ કરતાં કેટલાક દિવસ પોતાના પરિવાર સહિત મુનીદ્ર ત્યાં રહીને પછી અન્ય દેશમાં વિહાર કર્યો.

**વીરકુમાર રાજ નીતિપૂર્વક રાજ્ય ચલાવતો અને પ્રજનું સંરક્ષણું કરતો હતો. તેમજ જૈનશાસનની ઉત્તતિ કરવામાં તત્પર હતો. વિનયગુણું સંપ્રાત્કાશ.**

વીરકુમારનો લેખ આવવાથી થાડોક પરિવાર સાથે લઈ વિમળને રાજ્ય કારણાર સોંપી પોતે શ્રીનિતયનગરમાં ગયો. ત્યાં પોતાના પિતાનો સમાગમ કરી ધર્મતત્ત્વનો ઉપરેશ પ્રાપ્ત કર્યો. રિપુમર્દ્દન રાજાએ પણ સુત્રથી ધર્મતત્ત્વ જાહીને તેને રાજ્ય કારણાર સોંપીને વિધિપૂર્વક દીક્ષા લીધી, ત્યારબાદ વીરકુમાર રાજ પણ ચિરકાલ આવક ધર્મ પાણી રણધ્વલ રાજ્યિના ચરણુમાં દીક્ષા લઈ નાના પ્રકારના દેશરિપી સરોવરમાં ભવ્ય પ્રાણિરૂપ કર્મદોને બહુ સમય પર્યેત પ્રતિષ્ઠાધ કરી સૂર્યની એટે મોકાશ ( અસ્ત ) પામ્યા. માટે હે ભવ્ય પ્રાણિઓ ! આ

વજવણિકનીકથા.

( ૬૫ )

પ્રમાણે કામજન્ય ગર્વને દૂર કરવાથી લોકમાં પ્રગટ કર્યો છે ચયમતકાર જેણે એવા વીર કુમારે ઉત્કૃષ્ટ સુદૃતશ્રેણી ઉપાઈન કરી, તેમજ આ લોકમાં પણ અગમ્યગમનાદિકનું કારણ અને સર્વ જનોમાં નિંદનીયપણું પ્રાપ્ત થતું નથી. તેમાં આ દૃષ્ટાંત છે. જેમ યુવાન છતાં પણ આ કુમારે નિરતિચાર ચોથું વ્રત પાળ્યું તેમ અન્ય લોકોએ પણ પ્રયત્ન પૂર્વક આ વ્રત પાળ્યું.

**ઇતિ ચતુર્થવ્રતે વીરકુમારદૃષ્ટાન્તઃ સમાપ્તઃ**

### વજવણિકની કથા.

#### પ્રથમ દૃત્વરપરિગૃહીતાગમનાતિચાર.

દાનવિર્ય રાજાએ પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભગવન्! ચોથા વ્રત ઉપર વીરકુમારનું દૃષ્ટાંત આપે અમને કહ્યું; પરંતુ તેના અતીચારનું હે સ્વરૂપ અમારી ઉપર કૃપા કરી કહેણ. શ્રી સુપાર્શ્વપ્રભુ ઐદ્યા, રાજન! તું બહુ શ્રદ્ધાળું છે, તહારી ધાર્મિક બુદ્ધિ જોઇ બહુઆનંદ માનવા જેવું છે. આ અદ્વાર્યચર્ચાવ્રતમાં પ્રથમ અતિચારનું સ્વરૂપ તું સાવધાન થર્ડ સાંભળ. દ્રોય આપીનેં થાડા સમય માટે રાખેલી વેશ્યા સ્વી પણ પરસ્કી ગણ્યાય, માટે તેનો સંગ કરનાર પુરુષ વજવણિકની પેઠે બહુ હુંઘી થાય છે.

આ ભરતક્ષેત્રમાં પૃથ્વી રૂપી સ્વીને તિલક સમાન તિલકપુર નામે સુપ્રસિદ્ધ નગર છે. તેમાં ઉદ્ઘત વૈરી-વજવણાંત. આનો ગર્વ ઉત્તારવામાં બહુ પરાક્રમી સોમ-ધ્વજ નામે રાજ હુતો. સુયશા નામે તેની

( ६६ )

श्रीसुपार्थनाथचरित्र.

स्त्री हुती, वणी ते नगरमां यशोधवल नामे श्रेष्ठी हुतो अने जय-हेवी नामे तेनी स्त्री हुती, तेमज तेएने वज्जनामे एक पुत्र हुतो, ते विलास करवामां खडु कुशल अने ईद्रियेना विषयोमां खडु पुरो हुतो, तेथी ते हुंभेशां पोताना भित्रमंडण साथे हेव मंदिर तथा उद्यानादिक स्थानोमां धृच्छा प्रभाणे इरतो हुतो।

एक हिवस प्रखात काणमां लावीलावने लीधे वज्ज पोताना पिता साथे नर्मदा नदीना कीनारे गयो, हेवनुं आगमन, त्यां आगण सनानादिक शुद्धि करी पोतानी

नित्य किया समाप्त करी खन्ने जणु तट उपर ऐठा हुता, तेठलामां उत्तर हिशा तरक्षी निर्धम अग्निनी जवाला समान कांतिमान् एक हेव त्यां आयो, एकदम हिव्य स्वरूप नेई पिता अने पुत्र अन्ने क्षोलायमान थई गया, ते नेई हेव ज्ञात्यो, भद्र ! लय पामवातुं कंध कारणु नथी, हुं तम्हारा हित माटे आयो छुं, तमे पूर्वलवमां भुने खडु ईश्च हुता, तेथी अहीं तमने नेई हुं प्रगट थयो छुं, हवे पूर्वलवतुं वृत्तांत सांकणो—प्रथम हुं आ नगरमां हुर्गपाणी स्त्री हुती अने हेवडी भुदाढ़ नाम हुतुं, ते समये भुदाढ़ धर पणु तम्हारा धरनी पासे हुतुं, भुदारै स्वामी सोभधवज नामना राजनी नोडरी करतो हुतो, तेवामां केाधिक प्रसंगे राज परिवार सहित नर्मदाना कीनारे मुकाम करी रहो हुतो, भुदारै स्वामी पणु भुने साथे लाई गयो हुतो, अमारे मुकाम कांडा उपर वडनी नीचे हुतो, ओळ लोळे पणु तेवीज रीते पोतपोतानी अनुदूणता प्रभाणे उत्तर्या हुता, तापनी खडु गरभीने लीधे जगडीडा माटे हुं नर्मदाना प्रवाहमां उतरी, तेवामां केाधिक जलयरे भुदारा पण बांधी लीधा, जेथी दृहन करती हुं खूम पाडवा लाणी, खूण द्याज्जनक चीस पाडी तेथी लोळे जाणी गया तेपणु पोतपोताना

વજવિભુક્તીકથા.

( ૬૭ )

સ્થાનમાંથી કોઈએ પણ રહારી સંભાળ લીધી નહીં ! થોડીકષાર પછી કોઈને દ્યા આવી અને તે બોલ્યો. કે, ઘેર્ય રાખીને શાંત રહે, હું તહારી સહાય માટે આવું છું. એમ કહી એકદમ તેણે નદીમાં પ્રવેશ કર્યો. અને યમળહ્રા સમાન ચણકતી છરીવડે તે જળ-અરને છેહી નાખ્યો. પરંતુ બહુ જેસુથી જળની અંદર છરીનો ધા કર્યો તેથી તે ધા પોતાના પેટ ઉપર લાગવાથી તે પુરુષનાં આંતરડાં બહાર નીકળી પડ્યાં. જેથી રહારા અન્ને હાથનું અવલંબન લઈ તે બહાર નીકળ્યો. કે તરતજ મરી ગયો. તેના અંધુઓને માલુમ પડવાથી તેઓ ત્યાં આવ્યા અને તેજ ડેકાણે જલ્હી કાઢની ચિતા રચી તેને સુવાડી દીધ્યો, હું પણ નદીમાં સનાન કરી ચિતાની સમીપમાં આવી અને ચિતામાં પડવાની તૈયારી કરતી હતી તેટલામાં રહારા સ્વામીએ રહ્યેને હાથવડે પકડી લીધી, એટલે મહેં તેને કલ્યું કે આ પુરુષની સાથે રહારે ચિતામાં પ્રવેશ કર્યા વિના ચાલે તેમ નથી, કારણું આ રહારે પરૈપકારી અંધુ છે. જે વખતે મહેં બહુ પોકાર કર્યા હતા તે સમયે તમે સુકામમાંથી બહાર કેમ નહોતા નીકળ્યા ? બીજા લોકો પણ જેઠ રદ્દા હતા, કોઈએ રહારી સહાય કરી નહીં. માત્ર આ વીરપુરુષે રહારી દીન પોકાર સાંભળી જળમાં પ્રવેશ કરી રહારા પ્રાણુ માટે પોતાના પ્રાણુને તૃણુની માઝક ત્યાગ કર્યો. માટે આ પુરુષની પાછળ હું પ્રાણુ ત્યાગ કરીશ. તેથી રહારે હાથ તમે હોડી હો. એમ સાંભળી રહારી પતિ બોલ્યો, હે વરતનુ ! મહેં તહારી પોકાર સાંભળ્યો. નહોતો. અન્યથા હું તહારી ઉપેક્ષા કરું અરો ? પછી મહેં તેને કલ્યું કે, રહારા માટે એના પ્રાણુ ગયેતા છે માટે એની ચિતામાં હું અવસ્થ્ય પ્રવેશ કરીશ. એમ સમજુ વેલાસર રહ્યેને છોડી હો. વળી મહેં તમારો કોઈપણ અપરાધ કર્યો હોય તો તેની હું ક્ષમા માણું છું. કદાચિત્ રહ્યેને

( ૬૮ )

શ્રાસુપાર્થનાથચરિત્ર.

નહી છોડો તોપણુ હું ગમે તે રીતે પ્રાણુ ત્યાગ કરીશ. આ પ્રમાણે રહારો દઠ આથક જોઈ તેણે રહુને છોડી હીધી. જેથી ચિત્તામાં પ્રવેશ કરી રહેં દેહ લાગ કર્યો. હે શ્રેષ્ઠ ! વિશેષ અધ્યવસાયને લીધે તે પુરુષ મરીને આ હહારો પુત્ર થયો છે. અને હું વ્યાંતર જાતિમાં દેવપણે ઉત્પજ્ઞ થઈ છું. આ પ્રતિઅંધને લીધે રહેં તરહુને આ રહારું વૃત્તાંત સાંભળાવ્યું. હવે જે રહારી પ્રાર્થના સ્વીકારો તો હાલ રહારે પ્રત્યુપકારની ઘુદ્ધિથી વજને કંઈક કહેવાનું છે. વજી બોલ્યો, ખુશીથી કહો, રહારા લાયક હશે તો હું તે કરવા તૈયાર છું. દેવ બોલ્યો, નહીના સામા કીનારે લવલીવેલીના મંદ્યમાં એક સુનિ મહારાજ વિરાજે છે. માટે તમે અન્ને જણ્ણા ત્યાં જાઓ. અને લક્ષ્ણપૂર્વક તેમને વંદન કરો. જેથી તેઓ પણ સુનિર્દિની પાસે ગયા. સુનિએ પણ ધર્મલાભપૂર્વક અણુવતાદિકનો ઉપદેશ આપ્યો. ત્યારબાદ અન્ને જણ્ણુ શુરુ સમક્ષ શ્રાવકપૂર્વક શ્રાવક ધર્મનો સ્વીકાર કર્યો. પછી સંતુષ્ટ થઈ દેવ બોલ્યો, તમે રહારા શુરૂઆઈ થયા. કારણુકે હું પણ આ સુનીશ્વર પાસેથીજ સમ્યક્તવ પામ્યો છું. માટે વાંચિત અર્થ-દાયક એવું આ ચિંતામણિરતન તમને સાધમિક વાતસંબંધમાં અર્પણુ કરું છું. એમ કહી ચિંતામણિ આપી તે દેવ અદૃશ્ય થઈ ગયો.

ત્યારણાદ પિતા પુત્ર અન્ને શ્રાવકધર્મ પાળવા લાગ્યા. હુમેશાં સુનિ પાસેજતા અને ધર્મ સાંભળતા હતા. વજનો દુરાચાર. પરંતુ વજને વેશ્યાગમનનું વ્યસન પડયું હતું તે છોડતો ન હતો. કેટલીક વેશ્યાએને ભાડુ આપી રાખતો હતો. તેમજ અન્ય કેટલીક સીઓ સાથે છિંચ્છા પ્રમાણે વિલાસ કરતો હતો. એ પ્રમાણે કેટલીક કામકીડામાં આતુર બની રાત્રીએ વ્યતીત કરતો હતો. ચિંતામણિના

વજવણીકનીકથા.

( ૬૬ )

પ્રભાવથી ખહુ દ્રવ્ય તેને મળતું હતું. અને તે સર્વ દ્રવ્ય જીન-મંહિર, જીનપ્રતિમાચો, સંધ અને વેશ્યાચોમાં વાપરતો હતો. ખીજની રાખેલી વેશ્યાચોને પોતે જાણુતો છતો પણ તેઓનો ત્યાગ કરતો નહીં. તેથી લોકોની સાથે પ્રતિદિવસે તેને ખહુ વૈર બંધાયું. વળી તે વાત તેના પિતાના જાણ-વામાં આવી ત્યારે તેણે વજને ખહુ વાર્યો અને કહ્યું કે, અરે ! ખીજની રાખેલી વેશ્યાચો તરફ ગમન કરવાથી તું ખહુ હુંખી થઈશ. તેમજ ચોથાવતનો અતીચાર ન કર, વળી શુરૂ વચ્ચનનું સમરણ કર, ઉલયલોકમાં વિરદ્ધ આ કાર્ય તું કરે છે માટે સજજન પુરુષોએ નિંદ્વા લાયક આ હૃષ્કૃત્યનો તું સર્વથા ત્યાગ કર. જો કે દરેક વેશ્યાગમન કરવાથી અનેક અનર્થી ઉત્પત્ત થાય છે, તેમાં પણ જેઓ અન્યની રાખેલી હોય તેઓ તો કાલકૂટ વિષ સમાન છે. વજ બોધ્યો, હે તાત ! એ વાત સત્ય છે, પરંતુ વેશ્યાઓનો સંગ છોડવા માટે હું અશક્ત છું. તમે ગમે તેમ કહેશો પણ તે વ્યસન મફારાથી છુટે તેમ નથી. પિતાએ કહ્યું, હે પુત્ર ! જો તહારો આ નિશ્ચય દઢ હોય તો હું અત્યારે જ દીક્ષા અહણ કરું છું. કારણું ચિરકાલ ઈચ્છા મુજબ લોગ લોગંયા, લક્ષમીના અનેક વિલાસ અનુલંઘયા, સજજનો સાથે આનંદ મેળંયો, મિત્ર તથા બંધુઓનો પ્રેમ જળંયો, તેમજ દીનજનોને સુખી કર્યા, વળી હે વત્સ ! હુલમાં વૃદ્ધ અવસ્થા પ્રાપ્ત થઈ છે. મરણ સમય પણ નણક આંયો છે. માટે આત્મહિત કરવાનો આ સમય છે. એમ કહી પોતાનું દ્રવ્ય શુલ બાવનાપૂર્વક ધર્મસ્થાનોમાં વાપરી શ્રેષ્ઠીએ વિધિપૂર્વક શુરૂ પાસે જઈ દીક્ષા અહણ કરી. ત્યારણાં મર્યાદારહિત પ્રવૃત્તિ કરવાથી વજનો સંગ લોકોએ છોડી દીધો. એક દિવસ તે વજ વસંતસેના વેશ્યાના ઘરમાં પેઠો. તે વેશ્યા રાજકુમારની રાખેલી

( ७० )

श्रीसुपार्क्षनाथयरित्रः

हृती, छतां तेनी ईच्छा मुज्जभ तेने भहु द्रव्य आपी रात्रिना पहेला प्रहुरमां तेना पक्वांग उपर ते ऐडो। हृतो तेटलामां कुमार पणु त्यां आयो। अने तरतज रैषथी तेने पकडवा जय छे तेवामां ते नाडो, परंतु कुमारे चेतेज तेने बाहुथी पकडी थांबला साथे आंध्यो। सवार थयुं एटले वेश्याए कुमारने प्रार्थना करी भहु भहेनते वज्जने छोडायें। जेथी ज्ञवतो चेतानें घेर गयें। परंतु सुडैमत शरीर ढोवाथी अंधननी असह्य पीडाने लीघे लोही भराई गयुं तेथी ते भरीने आर्तीध्यान उरवाथी लुंडनी येनिमां उत्पन्न थयें। अने केटलाक घोर लव भ्रमणु करी इरीथी सम्यक्त्व पामी मोक्ष सुख पामशे, तेनो पिता तो तेज लवमां शुद्ध यारित्र पाणी मोक्षगामी थयें। माटे हे लव्य पुरुषो ! वेश्या व्यसनइप योथा व्रतनां अतियारनो सर्वथा त्याग करौ। जेथी थोडा समयमां जुनें६ कथित उत्कृष्ट सिद्धि स्थान प्राप्त थाय.

इति चतुर्थव्रतप्रथमातिचारविपाके वज्रकथानकं समाप्तम् ॥

—→\*@\*←—

### दुर्लभवणिकनी कथा.

—•—

द्वितीय अपरिगृहीतागमनातिचार.

दानविर्य राजा योद्यो, कृपाणु एवा हे जगद्धुर ! हवे योथा व्रतमां द्वितीय अतियारनुं स्वदृप संबलगावे. ते संबलगी श्रीसुपार्क्ष प्रभु योद्या, हे राजन ! कुलटा अने अनाथ विधवाए परस्ती नज गण्याय, एम समजु जे तेओने लोगवे छे ते पुरुष पणु हुर्लानी पेठे भहु दुःख लोगवे छे.

समस्त नगरोनो गर्व उतारवामां चूडामणि समान

હુર્ભાવખુંડનીકથા.

( ૭૧ )

**હુર્ભ.** વિજયપેટ નામે નગર છે. તેમાં સરવ પ્રકૃતિવાળો ગોલદ્ર નામે વખુંડ રહેતો હતો. મલયમતી નામે તેની સ્ત્રી હતી. તેઓને હુર્ભ નામે એક પુત્ર હતો. વળી તે હુર્ભ દરેક વખુંડ કલાઓનો નિધાન તેમજ સર્વ અનર્થનો કુલભવન હતો. એક દિવસ પિતા અને પુત્ર બજે જણું વેપાર માટે તૈયાર થયા. પોતાની ચોગ્યતા પ્રમાણે કરીયાણું લારી ઉજ્જવિની તરફ તેઓ ચાલ્યા. અર્ધ માર્ગ જતાં ધ્યાનમાં એડેલા એક મુનિ તેઓના જોવામાં આવ્યા. જેથી તેમને વંદન કરી તેઓ નીચે એઠા. ધ્યાન પૂર્ણ થવાથી મુનિ આવ્યા હેશેડિયાએ ! તમે કયાં જાઓ છો ? અહીં કુયાંથી આવ્યા ? વળી અહીં આવવાનું શું પ્રયોગન છે ? તેઓએ પણું પ્રક્ષનો ઉચ્ચીત જવાણ આખ્યો એટલે મુનિએ કલ્યું, સર્વ લોકો ધનને માટે સંભાંત થઈ ઉદ્ઘોગ કરે છે. પરંતુ ધનનું ડારણ મુખ્ય ધર્મ છે. પણ તેના માટે તો સર્વ લોકો સહાકાળ નિર્દ્ધોગી રહે છે. જે ધર્મ વિના મનોવાંછિત એમને એમજ સિદ્ધ થતાં હોય તો સમસ્ત ત્રણ લોકમાં કોણું હુંઘી રહે ? વળી પોતાના પિતાએ ત્યણું હીધેલી શુષ્ણુસુંદરીની માદ્રક પુષ્યશાલી લુલોના સર્વ મનોરથ અવસ્થ સિદ્ધ થાય છે.

**અહૃતપુર** નામે નગર છે, તેમાં અરિકેસરી નામે રાજ છે, કનકમાલા નામે તેની સ્ત્રી છે. સર્વ કલા-  
**ગુણુસુંદરી.** એનું કુલભવન શુષ્ણુસુંદરી નામે એક કન્યા તેઓને ઉત્પન્ન થઈ. અનુફે તેને યૌવન અવસ્થા પ્રાપ્ત થઈ, તેટલામાં હૈવ્યોગે તેની ભાતા મરણ પામી. તેમજ મોસાળ પક્ષમાં પણ કાળે કરી કોઈ રહ્યું નહીં. તેવામાં એક દિવસ શુષ્ણુસુંદરી વંદન માટે પોતાના પિતા પાસે ગઈ, અનેક પ્રકારના સુંદર અલંકારથી વિભૂષિત શુષ્ણુસુંદરીને તેમજ

( ७२ )

श्रीसुपार्क्षनाथचरित्र.

अमूल्य आभूषण तथा उत्तम वस्त्रोथी विभूषित सज्जनोने  
जेठ राज बहु खुशी थयो, अने डोमण वाहानीवडे पोताना परि-  
ज्ञनने पुछवा लायो डे तमे डोना प्रतापथी विशाळ लक्ष्मीना  
वैक्षव लोगवे छो ? तेच्यो ऐत्या, राजधिराज ! आ सर्व  
आपनेज प्रसाद छे. अन्य डोर्धने पछु नथी. त्यारणाद शुणुसुं-  
दरी मस्तक धुण्यावी उचे स्वरे राजनी अपेक्षा छोडी ढृष्टने  
ऐती, हे तात ! आ सर्व लक्ष्मी विलास भवितव्यताने लीघे  
आवी भणे छे. ते उपर तोहीचे एक गाथा कही.

सा जयउ नए लच्छी, जीइ पसाएण इसरजणस्स ।  
सच्चमलियंपि वयणं, सयाणपुरिसावि मन्त्रंति ॥

अर्थ—“अहो ! आ हुनियामां भात्र लक्ष्मीहेवीने जय थायो,  
डे जेना प्रसादथी समज्ञु भाण्यसो पछु धनाळ्य पुरुषतुं असत्य  
वचन पूण्य सत्य तरीके माने छे.” आ प्रभाण्य तेनो अलिप्राय  
जाण्यां स्वलावथी बहु छोधीराज ऐत्यो, पुनि ! तुं डोना प्रसा-  
दथी आनंद लोगवे छे ? शुणुसुंदरी ऐती, पूर्वे करेलां कर्मीना  
इण विपाकथी सुण हुः अ ग्रास थाय छे. अपराध अने शुण्यामां  
अन्य तो निमित्त भात्र गण्याय छे. राजन्ये तरत ज हुक्म कर्यो डे,  
डोर्धपछु निर्भाऊ जनेमां शिरोभण्य समान हरिद्र सुरुषने अहीं  
पकडी लावो. कारणु डे अहीं तेतुं काम छे. आ प्रभाण्य राजनो  
हुक्म सांभणी तरत ज राजपुरुषो छुट्या अने भाथे डाइनी  
भारी भूडी फूता एक हरिद्रने लावीने राजनी आणण हाजर  
कर्यो. तेने जेठ राज बहु खुशी थयो ! ते हरिद्रीनी साथे  
शुणुसुंदरीने परण्यावी. पछी सर्व वस्त्राहिं उतारी लध  
वहिकानां लार्ण वस्त्र पहेरानीने कहुं डे, हे शुणुसुंदरी ! तुं हवे  
अहींथी विद्याय था अने पूर्वोपार्त सुकृतनो अनुकृत कर.

हुल्ब अवशिष्टकनीक्या।

( ७३ )

तेमज सर्व लोडेने आज्ञा करी के, जे गुणसुंदरीनी साथ वातचित  
कर्शे तेने इंसीचे लटकाववामां आवशे. नेथी ते गुणसुंदरी  
पोताना निर्धन पति साथे मैन धारणु करी चाली गध. पोताना  
पतिना धरमां प्रवेश करी तेना भस्तकना केश छुटा करे छे तेट-  
लामां एकदम डेशमांथी तेवो उत्तम सुगंध फ़ेलाध गयो. के जाणे  
गोशीर्षचंदनवनना सुगंधने छणवा भाटे फ़ेलायो. होय ने शु ?  
तेम जाणी शुगुणसुंदरीचे पोताना पार्तने पूछयुं के, आजे तमारे  
काषने भारे क्यां भूकयो. छे ? तेणे जवाब आप्यो. के, हे सुंदरी !  
आजनो भारे तो कंहोईनी हुकाने भूकयो. छे. पधी शुगुणसुंदरीचे  
तेनी साथ जर्दने ते भारे पोताना घेर अणुव्यो. त्यारभाद  
तेमांथी चंदनना कुकडा वाखीयानी हुकाने वेचीने डेटलांक  
वस्त्र धान्य विगेरे उपयोगी साधन अरीद कर्या. पधी जे वृक्ष  
उपरथी चंदननां लाकडां लाव्यो. हतो त्यां आगण जर्द तेणुचे  
ते वृक्षना हुकडा करावीने भूर्भ मञ्जुरो पासे अर्धं रात्रीचे सर्व  
काष पोताना धरमां भराव्यां. त्यारभाद ते वेचवाथी अनुको मे  
पुष्कर धन तेमांथी तेने प्राप्त थयुं.

द्रव्यना प्रभावथी पोताने उचित परिवार अने वाहनाहिक  
सर्व सामग्री तैयार करी अन्ने खी पुढे  
**सुवर्णसिंहि** सर्व सामग्री तैयार करी अन्ने खी पुढे  
वेपार भाटे देशांतर गया, शुगुणसुंदरीचे  
राजाचे आपेलां वडिका वस्त्र ( जुना धति-  
हास लभेलां वस्त्र ) पडेरेलां हुतां. तेच्योमां लभेली अक्षर पंडित  
तेना जेवामां आवी, अनुको मे तपास करतां एक ठेकाणे सुवर्ण  
सिंहिनो प्रयोग लभेलो तेना जेवामां आव्यो. पधी लभ्या  
प्रभाणे सर्व सामग्री एकठी करी प्रयोग कर्या, तेथी ताप, छेद  
अने कष एम त्रष्ण प्रकारे शुद्ध सुवर्ण सिंह थयुं. त्यारभाद ते  
प्रयोगवडे पुष्कर सोनुं तेच्योचे संपादन कर्या. याद तेच्यो

( ७४ )

श्री सुपार्खनाथ चरित्र.

બહુ વાહન પરિવાર સહિત ગૈડ દેશમાં ગયાં. ત્યાંથી ઉત્તમ ભર જાતિના એક હુલાર હાથી અરીઠ કરી ભહૃતપુરમાં આવ્યાં. રાજાએ અતાવેલા સ્થાનમાં ધીજું જાણે ભહૃતપુર હોય ને શું ? તેવી રચના કરી શુષુંદરી ત્યાં રહી. તેને પતિ પણ દ્રવ્યના પ્રભાવથી ફરેક કલાચ્ચેમાં કુશળ થયો હતો, તેથી તે પણ દોકમાં પ્રસિદ્ધ થયો. વળા તે વિવિધ વિલાસોનું કુલભવન હોવાથી તેનું પુષ્યપાળ એવું નામ ઠરાયું છે. કંધું છે કે—

શ્રીપરિचયાજ્ઞા અપિ, ભવન્ત્યમિજ્ઞા વિદગ્ધચરિતાનામ् ।

ઉપદિશતિ કામિનીનાં, યૌવનમદ એવ લલિતાનિ ॥

અર્થ—“લક્ષ્મીના પરિચયથી જડ પુરુષો પણ વિજ પુરુષોના ચરિત્રના જાણુકાર થાય છે, તેમજ યૈવન અવસ્થાનો મહ પણ ચુબતિઓના વિલાસોનો ઉપદેશ આપે છે.” એક દિવસ પુષ્યપાળે પણ બહુ ઠાડથી લેટ પૂર્વક રાજની મુલાકાત લીધી. રાજાએ પણ તેની પાસે હુલાર હાથી જાણુને કંધું કે, મહાજનના કંદ્બ પ્રમાણે કિમત લઈ તમહારા હાથી અમને આપો. પુષ્યપાળ બોલ્યો, રાજધિનાજ ! જન્માંતરે પણ આ કાર્ય રહ્યારથી કરી શકાય તેમ નથી, પરંતુ રહ્યારા મુકામમાં પધારી આપ લોજન કરો અને હુલાર હાથી પણ લઈ વ્યો, તે આપનાજ છે, કિમતની કંઈ પણ જરૂર નથી. આ પ્રમાણે પુષ્યપાળનું બોલવું સાંભળી રાજનું હૃદ્ય પીગળી ગયું. પુષ્યપાળ પોતાના મકાનમાં ગયો. હવે તે મકાન કાઢનો બંધાવેલો છે અને તે યંત્રથી ગોઠવેલો છે. તેમાં સો થાંબલા અને ચાર દ્વાર ગોઠવેલાં છે. લોજનનો અવસર થયો, જેથી રાજ ચોતે જમવા એડો. શુષુંદરી એકદી પીરસે છે. પ્રથમ અનેક પ્રકારનાં ઝ્વલ પીરસીને અંદર ચાલી ગઈ, પછી અન્ય વેશે ધારણું કરી ધીજ દ્વારથી પક્વાન પીરસી ગઈ,

દુર્લભવણિકનીકથા.

( ૭૫ )

તેવીજ રીતે નવીન નવીન વેશ ખેડો શાક, દાળ, ભાત, ધી વિગેરે દરેક વસ્તુએ પીરસી ગઈ, તે ઉપરથી રાજએ પુષ્યપાળને પૂછ્યું, અહોં તમણારે સ્વીએ અને ચોજક પરિવાર કેટલો છે ? પુષ્યપાળ બોલ્યો, આપે જેટલી જોઈ તેટલી. ત્યારખાદ રાજ જમીને પાન સોપારી લઈ ગંગાના તઠ સમાન સુકોમલ પલંગ ઉપર ઉપરના માળમાં સુઈ ગયો.

રાજએ આપેલા વહિકાખંડોથી પૂર્વની માઝક વેષ કરી રાજની પાસે જઈ નમસ્કાર કરી શુણુસુંદરી દીક્ષામહોત્સવ. બોલી, સાવધાન થઈ આપ અવલોકન કરો, મુને ઓળખો છો ? વિચાર કરતાં રાજ સમજુ ગયો અને અશુદ્ધારા વહન કરી પોતાના ઐળામાં તેને બેસારી બોલ્યો, હે વત્સ ! તું મહારી હુણ્ણિતાની દીકરો શુણુસુંદરી છે. બોજન સમયે મહેં મુને જોઈ હતી, પણ એળાખી નહીં, નવ નવા શાણુગાર જોઈ મુને અનેક સ્વીએનો ભ્રમ થયો. હે પુત્રી ! હવે ઉચિત શાણુગાર સણું મહારી પાસે આવ. એ પ્રમાણે પિતાનું વગન પ્રમાણું કરી ઉત્કૃષ્ટ વેષ ખેડો ત્યાં આવી અને પુષ્યપાળને પણ તેણીએ ત્યાં બોલાવ્યો. પોતાના વૈલબની વાર્તા રાજએ પૂછી, પછી શુણુસુંદરીએ યથાર્થ પોતાનું વૃત્તાંત કહી સંભળ્યું, ત્યારખાદ રાજ બોલ્યો, હે પુત્રી ! ત્હારા દૃષ્ટાંતથી મુને નિશ્ચય થયો કે વૈલબ એ કેવલ ધર્મનું જ કુળ છે. માટે હવે રહુને તે ધર્મનું સ્વરૂપ સમજાવ. વળી તે શુણુસુંદરી પરંપરાથી શ્રાવકના કુળમાં જન્મેલી ડોવાથી પોતાની માતાએ આવ્યાવસ્થામાંથી જ કૈન ધર્મમાં પ્રવીણુ કરેલી હતી છતાં પણ તેણીએ કહ્યું કે, અહીંમાં અમારા મકાનની નજીકમાં એક સુનીદ રહે છે, તે વિશેષ ધર્મ જાણે છે તેમજ તેએ. હુમેશાં ઉપરેશ આપે છે માટે ચાલે તેમની પાસે જઈએ. એમ કહી પુષ્યપાળ,

( ૭૬ )

શ્રીસુપાદ્યનાથચરિત્ર.

શુષુસુંદરી અને રાજ સર્વે મુનિ પાસે ગયાં. વંદન કરી તેઓ નીચે એઠાં, મુનિએ ધર્મલાભ આપી ધર્મહૈશનાને પ્રારંભ કર્યો. પ્રાર્થનાપૂર્વક રાજાએ સુનાંદ્રને જળુંઠું કે, રાજ્યની સ્થિર વ્યવસ્થા કરી હાલ હું આપના ચરણુમાં રહેવા ઈચ્છું હું. સુનાંદ્ર બોલ્યા, હે નરેંદ્ર ! ધર્મકાર્યમાં નિરુદ્ધમી ન થવું. જેમ અને તેમ શીધતા કરવી. ત્યારખાદ વંદન કરી રાજ પોતાના સ્થાનમાં ગયો, પ્રધાને સાથે વિચાર કરી પુત્ર નહીં હોવાથી પોતાના જમાઈ પુષ્ટયપાળને રાજ્યમાં સ્થાપન કરી વિધપૂર્વક દીક્ષા લીધી. ત્યારખાદ પુષ્ટયપાળ રાજ બહુ સમય સુધી નીતિથી રાજ્ય ચલાવી જૈન ધર્મની પ્રભાવના કરવા લાગ્યો. શુષુસુંદરીને સુલોચન નામે એક પુત્ર થયો. અનુકૂમે તેને રાજ્ય ગાડીએ બેસાર્યો. પણી સ્ત્રી સહિત તેણે દીક્ષા લીધી. નિરવદ્ધ ચારિત્ર પાળી અનુકૂમે અજે મોક્ષસ્થાને ગયા. માટે હે ભાગ્ય પ્રાણિઓ ! અન્ય ઉદ્ઘમ છાડી દઈને પણ ધર્મને વિષે જ ઉદ્ઘમ કરો. જેથી ઉલય લોકમાં તમારા બજેનાં વાંચિત કાય સિદ્ધ થાય.

**ત્યાર ખાદ પિતા પુત્ર બજે બોલ્યા, હે સુનાંદ્ર ! મુનિ ધર્મ પાળવામાં અમે અશક્ત છીએ. માટે ગૃહસ્થાશ્રમમાં રહીને અમે જે ધર્મ પાળી શકીએ તેવો ઉપહેશ આપો. મુનિએ સમ્યક્તવાદિ ગૃહીધર્મ વિસ્તાર પૂર્વક કહ્યો.**

જેથી બાર પ્રકારનો તે શ્રાવક ધર્મ બજે જણે વિધિપૂર્વક સ્વીકાર્યો. ત્યાર ખાદ તેઓ વંદન કરી ત્યાંથી ઉજાજયિની તરફ ચાલ્યા. ત્યાં જઈ વેપાર કરી તેઓ પોતાના સ્થાનમાં આવ્યા. શેડ પોતે અંગીકાર કરેલા ધર્મમાં બહુ ઉદ્ઘાક્ત થથા. બહુ હુર્લબ એવા ધર્મને પામીને પણ હુર્લબ પોતાની કદ્યપના પ્રમાણે ચોથા પ્રતમાં અતિચાર સેવવા લાગ્યો. જેમકે-પરસ્તીને નિયમ કર્યો છે પરંતુ

धनदत्तश्रेष्ठीकथा.

( ७७ )

अनाथ कुलटाएनो नियम कर्ये नथी एम मानी विधवा कुल-  
टाए। साथे कीडा करवा लाव्यो, एक दिवस कुलटा साथे व्यक्ति-  
यार करतो हर्वस आरक्षकना जेवामां आव्यो। जेथी तेणु लाक-  
डीना प्रहारथी शुरु करी अंधनने स्वाधीन कर्ये। तेना पिताए  
हंड भरी तेने अंधनभांधी छोडाव्यो। ए प्रमाणे अहुवार छोडाव्यो।  
तोपछु तेणु अनाथ कुलटाएनो संग छोड्यो नहीं। जेथी तेना  
पिता पछु अहु कंटाणी गया अनेते व्यसन छोडावी शक्या नहीं।  
एक दिवस एक क्षत्रियनी बाल विधवा हीकरी साथे कामांध थँड  
चेष्टा करवा लाव्यो। जेथी तेणुचे खूब पाडीने पोताना अंधुजन  
एकडा कर्या। तेओआए हर्वसाने लाकडीओना प्रहारथी शुभ कुण्डो।  
तेथी तेना प्राणेण आ अहु हुष्ट छे एम जाणी तेनो त्याग कर्ये।  
त्यांथी ते भरीने प्रथम नरक भूमिमां गयो। त्यां तेने अहु पश्चा-  
ताप थयो, जेथी ते मुक्त थै मनुष्य जन्म पामी जैन हीक्षा  
अंगीकार करी मोक्षस्थानमां गयो। गोलद्र शेठ पछु क्लंक रहित  
व्रत पाणी काळ करी सौधर्म हेवलोकमां गयो। त्यांथी त्रीजे ज्वे  
मोक्ष सुभ पामशे। भाटे हे जन्म प्राणीओ। परखीनो संग  
निरंतर छोडी टेवा जेहुचे एम समलु परम हःअनुं कारणु-  
भूत अपरिगृहित खीनो सर्वथा त्याग करवा उद्युक्त थाए।

इति चतुर्थव्रतद्वितीयातीचारे दुर्लभकथा समाप्ता ॥

—→॥\*॥←—

### धनदत्तश्रेष्ठीकथा.

तृतीय अनंग कीडातियार.

हानविर्य राजा ऐव्यो, कृपासागर ऐवा हे भगवन्! हुये  
अमने त्रीज अतियारनु स्वरूप हृष्टांत साथे समजवे। जेथी

( ૭૮ )

શ્રીસુપાર્વતિનાથચરિત્ર.

અમે અર્તાચારના દોષથી સુકૃત થઈ ચોણુ વત પાળી શકીએ.  
શ્રી સુપાર્વતીપ્રલુ બોલ્યા, હે નરેંદ્ર ! જે મનુષ્ય રાગાંધ થઈ કામ-  
કુડા માટે ખીઓનાં સ્તતન સુખાદ્દિક અંગો સેવે છે તે પુરુષ ધન-  
શ્રેષ્ઠીની પેઠે અનેક હુઃખ લોગવે છે.

આ ભરતક્ષેત્રમાં ગજેંદ્ર ( ઐરાવત ) થી વિલૂષિત અને અનેક  
વિષુધી ( દેવો ) થી વ્યાસ સૌધર્મ સભા  
ધનશ્રેષ્ઠી. સમાન પ્રસિદ્ધ પામેલું વિકમપુર નામે નગર  
છે. તેમાં વિકમપુરાળ રાજ્ય કરતો હતો. વળી

તે નગરમાં સિદ્ધિતિલક નામે શેડ છે. અને લક્ષ્મીનું કુલભવન  
એવી લક્ષ્મી નામે તેની સ્ત્રી હતી. તેઓને ધન અને ધનહેવ નામે એ  
વિષ્યાત પુત્રો હતા. સર્વ કલાઓમાં કુશળ અને સુંદર દૃપવાળી  
કુલીન આલિકાએ સાથે તેઓનાં લગ્ન થયાં હતાં, વળી ધન-  
કુમાર સ્વાભાવિક કામી હતો અને ધનહેવ ધર્મમાં બહુ રાગી  
હતો. એક દિવસ તે બન્નેને હાલિકા પર્વના સમયે કોઈક  
સામાન્ય માણુસ પોતાના નગરના સમીપ રહેલા ક્ષેત્રમાં લઈ  
ગયો. ત્યાંથી પૂર્વદિશામાં એક આમૃતવન હતું તેમાં ચાર જાનના  
ધારક, ત્રણ શુભિઓના પાતક અને ભૂર્તિમાન કામ સમાન  
આકૃતિને ધારણું કરતા એવા એક સુનીદં જ્ઞાયા. જેથી તેઓએ  
કોટુંબિકને પૂછ્યું, લાઈ ! અહીં આ સુનિ નાસિકા ઉપર દિશિ  
રાખી કાઢની માઝેક ચેષ્ટા રહિત થઈ કેમ એડા છે ? જવાબમાં  
તેણે જણાયું કે, એક માસથી આ પ્રમાણે તે સ્થિર આસને  
એઠેલા છે. લોજન પાનાહિકનો સર્વથા ત્યાગ કરી તેઓ આ  
પ્રમાણેજ એસી રહે છે. પછી તેઓ તેની સાથે જરૂર સુનિને નમ-  
રકાર કરી બોલ્યા, હે સુનીદ ! પ્રથમ અવસ્થામાં આપને વત  
અહુણું કરવાનું શું કારણું બન્યું ? સુનિ બોલ્યા, હે જણાત્માએ !  
અહારી સ્થિતિ તમે સાવધાન થઈ સાંભળો.

ધનહતશૈલીકિયા.

( ૭૬ )

વૈરાગ્ય થવામાં મુખ્ય કારણ સંસારજ છે તેથી ડેઢિ અન્ય  
નથી, પરંતુ રહારે વત અહણુ કરવામાં  
**વૈરાગ્યકારણુ.** વિશેષ કરી રહારી સ્વી કારણુભૂત થયેલી  
છે. ધનહેવ બોલ્યો, હે મહાશય ! સ્વી કેવી  
રીતે કારણુ થઈ ? તે આપ કૃપા કરી કહો. મુનીદ બોલ્યા, આ  
ભરતક્ષેત્રમાં શુભાવાસ નામે નગર છે. તેમાં રિપુમર્દ્દન નામે  
રાજ છે, તેમજ વિશાળભૂદ્ધિ નામે તેનો મંત્રી અને રતિસુંદરી  
નામે તેની સ્વી હતી. વળી તે નગરથી પૂર્વદિશામાં બણીયા છે,  
તેમાં દૃષ્ટબ્દેવ ભગવાનનું મંદિર છે. જેની અંદર હમેશાં દેવ,  
વિદ્યાધર અને કિંનરે નૃત્યાદિક રેવામાં હાજર રહેતા હતા.  
તેના દ્વાર આગળ એક આમૃત્યુક્ત હતું, તે સર્વ દ્રત્તુઓમાં દ્વાર  
આપતો હતો. તેની ઉપર એક પોપટનું લોડલું હમેશાં સુખેથી  
નિવાસ કરતું હતું. એવામાં તેઓને પુત્ર થયો, પરસ્પર અન્ને  
તેને પાળતાં હતાં. ત્યારખાદ ડેઢિક દિવસે તે પોપટ અન્ય  
પોપટની સ્વી ઉપર આસક્ત થયો, તે વાત તેની સ્વીના જાણ-  
વામાં આવી જેથી કોધાયમાન થઈ બોલી હવે તહારા સંગથી  
સર્યું. તહારી ઠાલી સ્વીના માળામાં ચાદ્યો જ. રહારી પાસે  
કીડા નિમિત્તે તહારે આવવું નહીં, કારણું હે હૈવ ! સેંકડોવાર  
દૃષ્ટ થઈને પણ અન્ય સ્વીમાં આસક્ત થયેલા પુરુષ ઉપર પ્રેમ,  
પાપ કાયંમાં ભુદ્ધિ અને ધર્મમાં અનુધમ ડેઢિ સમયે તું મુને  
આપીશ નહીં. ત્યારે પોપટ બોલ્યો, હે પ્રિયે ! આટલો અપરાધ  
ક્ષમા કર. સ્વી બોલી, રહારા સહાયું હવે સુખ કરીશ નહીં, પ્રથ-  
મથી ઉછિષ્ટ હોય અને પણી તેને કાગડે વટાળેલું હોય, વળી  
તેમાં વિષ મેળવેલું હોય, તેમજ પરાધીન હોય તેવા અન્ને  
કેણું ભુદ્ધિમાન પુરુષ ખાવાની છદ્ધા કરે ? ત્યારખાદ અતિશય  
વાચાણ તે પોપટ બોલ્યો, જે રહારો ત્યાગ કરીશ તોઃ હું રહારો

( ८० )

श्रीसुपार्थनाथयरित्र.

पुत्र लध चाल्यो" जर्धश. त्यारे तेनी स्त्री ओली, पुत्र तो झडारे  
 छे हुं तने नहीं आपुं. ए प्रमाणे तेच्चोनो परस्पर पुत्र माटे  
 अहु विवाह थयो. छेवट पोपट खाल्यो, चालो! आपणे राजा पासे  
 जर्धच्चे, राजा जे न्याय आपे ते झडारे कथुल छे ए प्रमाणे तेनी  
 स्त्रीचे पण्य कथुल कर्युं, क्लेशी बन्ने जणु राज मंदिरमां गयां.  
 विनयपूर्वक अन्नेचे पोतानुं वृत्तांत निवेदन कर्युं. राजाचे नीति  
 वाक्यनो विचार करी कहुं, हुं तम्हारा विवाहनो जे चुकाहो  
 आपुं ते तमे एकाच चिन्ताची सांखणो. पितानो पुत्र अने  
 मातानी दीकरी गण्याय छे. अथवा पुत्री पण्य जे केवण पिताना  
 भीजाची थयेती हाय तो ते पण्य तातनीज गण्याय. जेभके  
 ऐदुत लोके क्षेत्रमां धान्य वावे छे ते सर्व धान्य तेच्चोनुं गण्याय  
 छे. मात्र झुने तो कर ( वेरो ) भणे छे. आ न्याय प्रसिद्ध छे.  
 त्यारभां पोपटनी स्त्री ओली, ज्ञावे एम हेय तो एम करे,  
 परंतु "आजथी आरंभीने आवी नीति छे" ए प्रमाणे तमारा  
 चोपडानी अंदर वडिकाखंडमां लेख दाखल करो, राजाचे पण्य  
 ते प्रमाणे लेख दाखल कराव्यो. पोपटनी सांख्य तेनी स्त्री पोताना  
 स्थानमां गर्ड. अने पोपटने पुत्र हुक आपी दीघो. तेवामां त्यां  
 आग्रवृक्षनी नीचे शुतजानी मुनिने लेया. तेमने वंदन करी  
 पोपटनी स्त्रीचे पोतानुं आयुष्य पूछियुं. मुनीद्र भोव्या, आजथी  
 त्रीने दिवसे तहार्द मरण थशे. वणी त्हें मनुष्यक्षवनुं आयुष  
 बांधेलुं छे तेथी तुं मंत्रीने त्यां पुत्रीडपे उत्पन्न थर्धश, अने  
 अहीयाना राजनी स्त्री थर्धश. ए प्रमाणे मुनिवयन सांखणी  
 ते पोपटनी स्त्री लुनमंदिरमां दर्शन करवा जर्ध, जगवानने  
 वंदन करी मनमां विचार करवा लागी के कठाचित् अभाषु करतां  
 हैवयोगे झुने ज्ञातिस्मरण थाय एटला माटे मंदिरना उत्तर  
 लागनी भीत उपर एक पुरुष पासे मुनिना कद्या प्रमाणे अक्षरे

ધનદાનશ્રેષ્ઠિની કથા.

( ૮૯ )

લખાવ્યા, ત્યારથાદ તે પોપટની સ્વીએ કરીથી મુનિ પાસે જઈ વિધિપૂર્વક અનશનવત થહુણુ કરી સમાધિયોગવડે પર્યાતમાં પ્રાણુ ત્યાગ કર્યો. અને વિશાળખુદ્ધિ ભંતીની ભાર્યા રતિસુંદરીની કુક્ષિથી ઉત્તમ સુવર્ણ સમાન કાંતિવાળી પુત્રી રૂપે ઉત્પન્ન થઈ. ભુવનાનંદા તેણું નામ પાડયું. અતુક્કે ઉચ્ચિત કલાઓનો અદ્યાસ કર્યો. થાડા સમયમાં બહુ નિપુણતા મેળવી. એક દિવસે તે ભુવનાનંદા ઉદ્ઘાનમાં જીનમંદિરની અંદર પ્રબુનાં હર્ષન કરવા ગઈ. ત્યાં પૂર્વેક્તા અક્ષર પંક્તિ વાંચી તેને જાતિસમરણ થયું. વૃત્તાંત સહિત પોતાનો પોપટ લખ સમરણગોચર થયો. તેણીએ બાદયું કે આ જીનેશ્વર ભગવાનના ગ્રલાવથી હું ભંતીને ત્યાં જન્મી છું. તેથી તે જીનેદની મૂળ અક્ષિતામાં હુમેશાં તત્પર થઈ,

ભંતીને ઘેર એક મુખ્ય અશ્વ હતો. જે નાથી રાજની ઘોડી. એને ઘણા અશ્વ થયા. તે દરેક ઘોડાઓને ભુવનાનંદાની રાજ પોતાને ઘેર મંગાવી લેતો હતો. તે બુદ્ધિ. વાત ભુવનાનંદાના જાણવામાં આવી. એટલે તેણીએ રાજને જણાયું કે, આ સર્વ ઘોડાઓ મહારા પિતાના અશ્વથી ઉત્પન્ન થયા છે માટે આ અશ્વ મહારા પિતાના છે. એમાં તમહારો કોઈપણ પ્રકારનો હુક્ક નથી. કારણુંકે પ્રથમ પોપટ અને તેની સીનો પુત્ર સંખ્યાંધી વિવાદ થયો, ત્યારે વહિકાણ ડમાં તમોએ લખાયું છે કે બીજ પિતાનું હોય છે. તે સાંભળી રાજ એકહમ વિસ્તિત થઈ ગયો. અને વહિકા વંચાવી જેણું તો તેજ પ્રમાણે લેણ નીકળ્યો. રાજએ બાણશુદ્ધ કે આ બાળ પંડિતા છે. જેથી ભંતીની પાસે ભાગણી કરી તેની સાથે પાતે ખરદ્યો. ત્યારથાદ તેની બુદ્ધિની

કુ

(૮૨)

શ્રીમુપાર્થનાથચરિત્ર.

પરિક્ષા માટે રાજાએ કહ્યું કે, હે સુંદરી ! તું અતિ પંડિતા છે. માટે જ્યાંસુધી હારે સર્વોત્તમ ગુણવાનું પુત્ર ઉત્પજ્ઞ થાય ત્યાંસુધી મહારે ઘેર આવવું નહીં. તેણીએ પણ કહ્યું કે, હે પ્રિયતમ ! જ્યારે પુત્ર થશે ત્યારેજ તમહારે ત્યાં હું આવીશ, પરંતુ આઠલી મહારી પ્રતિજ્ઞા સાંભળો. “ જે હું સત્ય પંડિતા હૃદ્યશ તો તમહારા હુથથી મહારા પગ ધોવરાવીશ, અને મહારા જોડા પણ તમહારી પાસે ઉપડાવીશ એટલું યાદ રાખજો. ” એમ એકાંતમાં કહી તે બાળા પોતાને ઘેર ગઢ. ભુવનાનંદાએ એકાંતમાં એસી પોતાના પિતાની આગળ સર્વ વૃત્તાંત નિવેદન કર્યું. મંત્રી બોલ્યો, હે પુત્રી ! અતિ હૃદ્ય આ કાર્ય કેવી રીતે સિદ્ધ થશે ? પુત્રી બોલી, હે તાત ! જુઓ, બુદ્ધિ આગળ કંઈપણ હૃદ્ય નથી. મંત્રી બોલ્યો, કાર્યગતિ બહુ વિધમ હોય છે. દાન, બુદ્ધિ કે પરાકરમથી પણ તે સિદ્ધ થતી નથી; માત્ર એક દૈવની સહાયથીજ તે સિદ્ધ થાય છે. એમ પિતાનું વચન સાંભળી બાળા બોલી હે પિતાજ ? આપનું કહેવું સત્ય છે એમાં કોઈ પ્રકારનો સંદેહ નથી. જીવેને દદક કાર્યમાં બુદ્ધિ પણ કર્મ વશથીજ પ્રાપ્ત થાય છે. વળી હે તાત ! લાંબા વિચારની કંઈ જરૂર નથી, માત્ર કરવાનું એટલુંજ છે કે-રાજાના મહેલાની પશ્ચિમ બાળુએ હિમાલયના શિખર સમાન એક શ્રી દૃષ્ટિ દેવતું મંહિર બંધાવેા. તેમાં નષ્ટે કાળે સંગીત સાથે મહેત્તસવ થાય તેવી ગોઠવણું કરેા. તેમજ વારાંગનાએના મહેલામાં મહારે રહેવાં માટે એક હવેલી બંધાવેા. વળી કેટલીક સ્ત્રીએને ઉત્તમ શાશ્વત સાથે સરસ સંગીતકલામાં કુશલ કરવી જોઈએ, કેટલીકને નાટ્યકલા, કેટલીકને ભારતરાજના ઉત્તમ હાવલાવમાં દુસ્લ, તેમજ કેટલીકને વેણુ, વીણા, મૃદુંગાહિક વાદ્ય વગાડવામાં પ્રવોષુ કરવી જોઈએ અને તે સર્વ વેશ્યાએ હોવી જોઈએ. એમ તે બાળાના કહ્યા

ધનદત્તઅધિકારી કથા.

( ૮૩ )

પ્રમાણે મંત્રીએ બોડા સમયમાં સર્વ તૈયાર કરાયું. ત્યારખાદ સંગીત સાથે હમેશાં જુનમંહિરમાં મહોત્સવ થાય છે અને તે બાગા પણ ત્યાં નૃત્ય કરવા જય છે.

એક દિવસ રાજ રાત્રીના સમયે સુતો હતો તેવામાં રૂપકાહેવના મંહિરમાં જુનેંદ્ર ભગવાનનો મહોત્સવ ચાલુ રાજની પ્રવૃત્તિ. થયો, તે તેના સાંભળવામાં આવ્યો જેથી તે રાજ એકાકી પાછળા દ્વારથી બહાર નીકળી જુનભવનમાં આવ્યો અને અસરાઓ સમાન વેશ્યાઓનું નાથ્ય જેવા લાગ્યો. તેવામાં ભુવનાનંદા પોતેજ નવનવા પાડોથી નૃત્ય કરવા લાગી. ઉત્તમ વેષ ધારણ ડરી આવેલો રાજ પણ તેની ઉપર બહુજ આસકત થયો. સંગીતની સમાસ્તિ થઈ એટલે ભુવનાનંદા મેનામાં એસી પોતાના સ્થાનમાં ચાલી ગઈ. રાજ પણ તેની સાથે તેના ઘર ગયો અને તે રાત્રીએ તેની સાથેજ ત્યાં સુધ રહ્યો. એ પ્રમાણે રસ પડવાથી રાજ હમેશાં પ્રેક્ષણુક જેવા આવે છે અને રાત્રીએ ભુવનાનંદાની સાથેજ ત્યાં રહે છે. રાજ જે કંઈ વાત કરે છે તે સર્વ ભુવનાનંદા પોતાના પિતાને જણ્ણાવે છે. મંત્રી પણ સર્વ વૃત્તાંત વહુકામાં લખી લે છે. એક દિવસ ભુવનાનંદા પોતાના મકાનના પગથારીઆમાં જોડા મૂકી ઘરની અંદર ચાલી ગઈ અને રાજને કંબું કે, હાલમાં અહીં હાસી નથી માટે તમેજ જોડા લાવોને? રાજ પણ પોતાના મસ્તકે ચાદાવી જોડા ઘરની અંદર લાવ્યો! અને અર્ધ રાત્રીએ ત્યાંનું સુઈ ગયો. પછી ભુવનાનંદા એલી અને અહારા પગ બણે છે, માટે હાસીને જોડા. કણુમાત્ર સિંચન કરે તો મહેને નિદ્રા આવે. તેણીએ ના પાડી તોપણ રાજ પોતેજ સિંચન કરવા લાગ્યો. પછી તે સુઝેથી સુધ ગઈ. ત્યારખાદ તેણીએ સ્વર્જનમાં પોતાના સુખમાં પ્રવેશ કર્યો ચંદ્ર જેયો, પછી જાગ્રત થઈ ભુવનાનંદાએ પોતાની સેવામાં

( ८४ )

श्रीसुपार्थनाथचत्रिं.

तत्पर थमेल राजने जोई एकदम उल्ली थष्ठने तेने सेवामांथी मुक्ता कर्यो। अने तेनी आगण स्वैननी वात करी। राज ऐव्यो, हे भृगाक्षी ! जड़र त्हारे उत्तम गुणवान पुत्र थरो। तेटलामां राजनीनो अवसान थयो। अने शंख वायो। जेथी राज उठीने पोताने घेर गयो। लुवनानंदा पण्य पोतानो स्वाध्याय करती ऐठी हुती तेटलामां सूर्योह्य थयो, तेथी घरनां द्वार अंध करी पिताने घेर गर्य। अने रात्रीनु वृत्तांत पितानी आगण निवेदन कर्युँ, त्यार बाढ पोते एकांतमां ऐसी पिताने त्यां रहीने ते हिवसेथी उत्पन्न थमेला गर्भानु सुभेथी ते पालन करती हुती। राज तेज प्रभाषे ओजे हिवसे तेना घेर गयो। त्यारे त्यां लुवनानंदा तेना जेवामां आवी नहीं, तेथी तेनी पाडोसाणीने तेषु पूछयुँ के, आ लीलावती क्यां गर्य छे ? ते ओली, हे नाथ ! हुं ते वात जाणुती नथी। पधी राज खडु शोकातुर थष्ठ गयो। अने तेना विरहथी खडु हुःणी थष्ठ ते रात्री व्यतीत करी। ओजे हिवसे तेषु मंत्रीने पूछयुँ के, तरहारे त्यां मुण्य गायन करनारी लीलावती नामे खी हुती ते क्यां गर्य छे ? मंत्री ओव्यो, पृथ्वीनाथ ! गर्धकाले सवारे घरमांथी झें तेने बलात्कारे आठी भूझी हुती, तेथी ते हालमां रीसाईने कोइक ठांडिरने त्यां गमेली छे। हेरासरमां पण्य आवती नथी। तेमज सेवालक्ष्मि पण्य करती नथी, अने विशेष कडेवाथी ते रडवा लागे छे, माटे तेना स्थाने ओलु कोइपण्य गायन करनारी खी लावबो पडेशो। ते सांलणी राज स्थिर थष्ठ गयो।

हवे गर्भ ना हिवसे पूर्ण थवाथी लुवनानंदाने शुल लक्षणु  
युक्ता पुत्र जन्म्यो। ते शुम रीते मंत्रीना  
पुत्रजन्म, धरम हिवसे हिवसे वृद्धि भाववा लाग्यो।  
अने अनुकमे सर्व कुलाचेनो पारणामी  
थयो। एक हिवसे मंत्री पुत्र सहित लुवनानंदाने राज पासे

धनश्रेष्ठिनी कथा.

( ८५ )

लઈ गयो। राजाए मंत्रीने पूछयुँ, आ स्त्री कोण्युँ छे ? मंत्री ऐह्यो, हे राजन् ! आ तम्हारी स्त्री छे अने भारी पुत्री थाय, वणी आ अनो पुत्र छे. आ प्रभाणु मंत्रीनु वचन सांक्षणी राज विस्तित थहुँ गयो। अने कुंधक ऐलवानो विचार करतो हुतो तेटलामां मंत्रीमे तेना हाथमां वहिका ( चौपडो ) आपी, तेमां तेनी साथे एंगंतमां जे कुंध वातचित थहुँ हुती तेमज जे कुंध कुर्युँ हतुँ ते सर्व सविस्तर लघेलुँ वांची जेयुँ। पछी राजाए हुर्ख अने विधाद साथे कुमारने हाथमां लઈ आलिंगन करी पोताना घोणामां ऐसार्यो। अने लुवनानंदाने कह्युँ के, पोतानी प्रतिज्ञा पूर्खुँ करवाथी तेमज पुत्रना लाभथी तडें भने जुती दीधि अने आ कार्यथी हुँ बहु संतुष्ट थयो। माटे आ राज्य तहाड़े छे अने तहाडो पुत्र आ देशनो अधिपति छे. वणी हे भृगाक्षी ! हवे हुँ झडाड़ आत्महित करवामां तत्पर थाउँ छुँ। अरे ! आ झडाड़ ज्ञवित हुँ खान समान समज्ञु छुँ, झडारा लोगविदासने अने राज्यवैभवने धिक्कार छे. मंत्री ऐह्यो, हे स्वामिन् ! ऐह करवानुँ कुंधपण्य कारण्यु नथी, आपनो प्रताप अने यश सर्वत्र व्यापी रह्यो छे, पछी राजाए मंत्रीनो हाथ पडेकी कह्युँ के, भडें जे हीक्षा लेवानो विचार कर्यो छे ते सुधांखी कुंधाए पण्य भने विधन करवुँ नहीं। एम कही पोताना पुत्रने राज्यासन उपर ऐसार्यो। तेनुँ नाम पण्य तेज समये अनिसिंह ए प्रभाणु स्थापन कुर्युँ। त्यारण्याद भडें हीक्षा अहाण्यु करी छे अने तेज हुँ पोते छुँ। आ प्रभाणु झडारा वैराज्यतुँ मुख्य कारण्यु तमने कह्युँ। अथवा संसारमां भव्य प्राणियोने सर्व वस्तु वैराज्यतुँ ज कारण्यु छे। माटे तम्हारे पण्य नैनधर्ममां उद्युक्त थवुँ थेाज्य छे। जे मुनिधर्म पाणवाने तम्हारी शक्ति न होय तो सम्यक्त्वादि गृहस्थ धर्मनो स्वीकार करो। तेमो पण्य मुनिना कह्या प्रभाणु गृहीधर्म अंगीकार करी पोताने घेर गया।

( ८६ )

श्रीमुपार्थनाथयरितं

હવे અન્ને જણુ સુપેથી ધર્મમાં રાગી થઈ જુનેંદ્ર ભગવાનની પૂજા સેવામાં તત્પર રહેતા હતા, ધનધનબાળિણુકનો દેવતું ચિત્ત ધર્મમાં હૃદ હતું પણ ધનદુરાચાર શ્રેષ્ઠી બહુજ વિષયોમાં લુણધ થયો. નિરંતર પ્રમાણ અને મદ્ધથી વિહૃવલ અની યુવતિઓની

અંદર ભરમણુ કરવા લાગ્યો. કોઈની સાથે હાસ્ય કરે છે અને કપટથી કેટલીકનો સ્વર્ણ પણુ કરે છે. વળી કેટલીક સ્વીએને બળાત્કારે પડકીને આલિંગન કરે છે. એ પ્રમાણે મર્યાદા રહિત વિલાસ કરતા ધનશ્રેષ્ઠને ધનહેવે જેયો, જેથી એકાંતમાં બોલાવી કહ્યું, હે લદ ! આ પ્રમાણે ઈચ્છા સુજખ પ્રવૃત્તિ કરવી તે તહેને ચોગ્ય ગણ્યુતી નથી. કોઈ સાધારણુ માણુસ પણુ વત થરણુ કર્યા બાદ આવા પાપતું આચરણ નથી કરતો. વળી તું તો સારા કુળમાં ઉત્પજ થયો છે. તેમજ વિશેષ પ્રકારે જૈનધર્મનો વેતા ગણ્ય છે. ધર્મશાસ્ત્રમાં શ્રાવકેને ઈચ્છા સુજખ પરલી સાથે કામવિલાસનો નિપેધ કરેલો છે છતાં જો તેવી કામ કોડા કરે તો ચોથા નતનો ભંગ થાય છે. માટે ઉભય દોક વિરુદ્ધ એવા આ પાપાચરણુનો સર્વથા તું ત્યાગ કર. ધનશ્રેષ્ઠ બોલ્યો, હે બંધુ ! મહારી આગળ તહેરે કંઈપણ બોલવું નહીં, કારણ કે હું યુવતિજનોમાં બહુ લુણધ થયો. છું, તેથી વિષયલોગને હું ત્યાગ કરી શકીશ નહીં. બાદ જાત્યંધ પુરુષોથી પણ કામાંધ પુરુષો અધિક ગણ્યાય છે, એમ સમજુ ધનહેવે તે ધનશ્રેષ્ઠને છોડી દીધો. તેથી સ્વચ્છં હચારી થઈ જયો. અને સર્વત્ર પરિભ્રમણુ કરવા લાગ્યો. જ્યાં સ્વીએનો સમુદ્ધાય હોય ત્યાં તેને ગયા વાના ચાલે જ નહીં. એ પ્રમાણે કામકીડા કરવામાં દિવસો નિર્ગમન કરતો હતો, એમ કરતાં એક દિવસ કુમારપાળ ક્ષત્રીયની પુત્રી બહુ ડ્ર્પવતી હતી તેની ઉપર તે બહુ આસક્તા થયો, અને તેની સાથે કામ ચેદ્ધા

हुर्गश्रेष्ठिनी कथा.

( ८७ )

करतो होतो। तेवामां तेने कुमारपाले जेयो। तेथी तेणु लाडीना प्रहारैथी खुब मारीने थारनी माझक बांधी कारागृहमां पुरी दीधी। त्यां ते चिंतवा लायेहो के, मूने धिक्कार छे, व्रतनो लांग करवाई पापडपी वृक्षनुं आ इल प्रास थयुं। हवे जे एकवार पछु आ हुःभमांथी छुटो थाउं तो इरीथी हुं परखी सेवननेा त्याग कड़। त्यारभाद तेना पिताअे खुधन आपी धनश्रेष्ठिने छोडावयो, अने चेताने घेर लाई गयो। त्यां ते भीजे हिवसे भरीने नागकुमारपछु उत्पन्न थयो। त्यांथी नीडणी संसारमां केटलोइ सभय परिभ्रमणु करी ते सभ्यकृत्वना प्रकावथी अवश्य मोक्षगामी थशो। वणी धनदेव त्रीजे लवे मोक्षसुख पामशो। हे भय प्राणीओ ! उपरोक्त रीते नाना प्रकारनी कीडाथी युक्त परखीओ साये भैयुन सेवतो। माण्डुस धनहत्तश्रेष्ठिनी पेठे आ भवमां पछु हुःभी थाय छे, माटे विवेकी पुढेओ अवश्य कामकीडानेा त्याग करवो। जे पुढ़ काम कीडानेा त्याग करी अत्युत्तम धूष्मर्याद व्रत धारणु करे छे ते भनुष्य थेडा सभयमां कर्मनो क्षय करी मोक्ष सुख भेगवे छे।

**इति श्री चतुर्थवते तृतीयातिचारे धनदत्तकथानकं समाप्तम् ॥**

•॥५॥६॥७॥८॥९॥•

दुर्गश्रेष्ठीनी कथा.

—•—

**चतुर्थं परविवाहातिचार.**

दानविर्यं राजा ओव्यो। हे जगहप्रलु ! हवे दृष्टांतसहित चाया अतिचारनुं स्वरूप कडो। श्री सुपार्श्वप्रलु ओव्या, हे पृथ्वीपति ! जे कन्यादानना इल माटे पुष्य समलु अन्यनो विवाह करे छे, ते पुरुष हुःभ सागरमां दुष्टे छे अने हुर्गनी पेठे भहु अनर्थ पामे छे।

(૪૮)

શ્રીસુપાર્બતનાથયરિત્રિ.

અવંતી દેશમાં ઉજજવિની નામે જગતું વિખ્યાત નગરી છે.  
 તેમાં ફૂલભૂષણ નામે શ્રેષ્ઠી હતો અને ભૂ  
**હુર્ગદૃષ્ટાંત.** પણું નામે તેની સી હતી. વળી તેઓને  
 હુર્ગ નામે એક પુત્ર હતો, તે ચુવાનું હતો  
 છતાં પણું બાળકની માઝે ચૈષાવડે ઉનમત થઈ નગરની અંદર  
 ભટકતો હતો. વળી હૌલ્લાંયને લીધે કોઈ પણું સ્વી મનથી પણું  
 તેને ઈચ્છતી નહોતી. જે તે સ્નેહથી કોઈ સ્વીને યોલાવે તો  
 તે તેના તિરસ્કાર કરતી હતી, એમ હુર્ગમને લીધે બહુ હુર્ગાંયી  
 થઈ તેણે કોઈક કાપાલિકને પૂછ્યું કે, તમ્હારી પાસે વિશેષ  
 સૌભાગ્ય કરનારી કોઈ વિદ્યા છે ? કાપાલિક બોલ્યો, હા, ત્રિપુરા  
 નામે વિદ્યા છે. જેની વિધિપૂર્વક સાધના કરી હોય તો તે  
 સમરણ માત્રથી પણું તત્કાળ સૌભાગ્ય પ્રગટ કરે છે. હુર્ગ બોલ્યો,  
 જે એમ હોય તો તે વિદ્યા આપવા મહુને રહેસભાની કરો ! આ  
 પ્રમાણે હુર્ગનું વચ્ચે સાંભળી કાપાલિએ વિધિસહિત તેને  
 વિદ્યા આપ્યો.

**ત્યારભાદ શુગળની ગોળીએ સહિત એક લાખ કણુવીરનાં**  
**પુષ્પ લઈ ત્રિપુરાદેવીને સાધવા માટે હુર્ગ**  
**વિદ્યાસાધન.** ઉદ્યાનમાં ગયો, તેવામાં ત્યાં રાજમંહિર  
 આગળ સંસામાં એઠેલા ડેવળી લગવાનનાં  
 તેને દર્શન થયાં. દેવ, કિંનર અને પુરુષોની આગળ મેલ્લભર્માર્ગનો  
 ઉપહેશ આપતા લગવાનને લેઈ તેણે વિચાર કર્યો કે જરૂર  
 સૌભાગ્ય શુણુના નિધિ અને ત્રિપુરા વિગેરે વિદ્યાએથી સિદ્ધ  
 એવા કોઈ પણું આ સિદ્ધ મહાત્મા છે. કાપાલિકથી પણું એમની  
 પાસે બહુ ચયમતકારી વિદ્યા હશે. માટે એમની પ્રાર્થના કરું તો  
 એઈ પણું જતની વિદ્યા મહુને આપશે. એ હેતુથી તેણે વંદન કર્યું,  
 મુનિએ પણું ધર્મલાલ આપી શાંત કર્યો, જેથી તે નીચે એઠો.

हुर्गश्रिति कथा.

( ८६ )

त्यारभाद मुनिए पण तेने उद्देशीने धर्मदेशानानो प्रारंभ कर्ती। अत्यंत कामातुर थैर्ज जे पुरुष विद्यामंत्र के चूर्ण चेष्टवडे स्थीर्याने भेडित करी विषयसुख लोगवे छे ते पुरुष काणे करीने पण परस्तीर्याने छेडतो नथी। तेमज गम्य के अगम्य स्थीनो पण कोई वर्षत त्याग करतो नथी, तेथी ते पापी पुरुष आदोकमां पणु असद्य हुःअ लोगवे छे, तेमज तेने हौर्भाग्यनी दिवसे दिवसे वृद्धि थाय छे। वणी सर्व लोकाने अनिष्ट थाय छे। अने हौर्भाग्यना तीव्र हुःअथी पीडतो छतो भयंकर संसार अटवीमां वारंवार अभयु करे छे। तेने न्यायथी प्राप्त थेवेला लोगो। पणु भयहायक अने कुर्म अंधनना हेतु थाय छे। तो पश्ची उन्मार्गपणे सेवेला अने हुर्गश्रुथी व्याप्त अवालोगोना तो वातज शी करवी ? वणी अन्य कोईपणु शुणु न होय, परंतु जे केवल शीलगुणु होय तो अस छे, के जेथी प्राणीर्यानां होइ कार्य सिद्ध थाय छे। तेमज जेओ शीलगुणु रहित होय छे तेवा अधम पुरुषोनी कीर्ति अवक्षय नष्ट थाय छे, अने पराजय तथा क्लांकादिक अनेक हुःओ तेना उपर अचिंत्य आवी पडे छे। वणी हु भय प्राणीर्यो ! आदोकमां सर्वज्ञ भगवाने पांच महापाप कह्यां छे, जेओना सेवनथी पाप शुद्धिवाणा अधम पुरुषो घोर हुःअना लोगी थाय छे। जेमडे प्राणीहिंसा, मृषावाह, चारी, मैथुन अने म्होटा आरंभवाणो परिश्रङ्ख ए पांच महापाप छे—विगोरे धर्मदेशना सांकणी सर्व सख्यज्ञनो वैराग्यभय थैर्ज गया। त्यारभाद हुर्ग घोड्यो, हेभगवन् ! पांच महा पापोनो म्हारे त्याग करवो छे। माटे म्हुने नियम आपो। ज्ञानिशुद्धये सम्यक्त्वपूर्वक ते नियम आपो। त्यारभाद मुनिने नमस्कार करी हुर्ग घोताने घेर गयो। श्रावक धर्मनुं सारी रीते पालन करवा लाग्यो। जेथी धर्मना प्रलाववडे प्रतिदिवसे तेनी

( ૬૦ )

શ્રીસુખાર્થનાયારિત.

સંપત્તિએ વધવા લાગી. પછી કોઈક ધનવાન् પુરુષે પોતાની હીકરી તેને આપી. તેની સાથે વિષયસુખ લોગવવાથી તેને એ પુત્ર થયા.

એક દિવસ હુર્ગ ચૈટામાં જતો હતો, તેવામાં ત્યાં કાપા-  
લિકે તેને જોયો. જેણે ત્રિપુરા વિદ્યા આપી  
પુનઃ કાપાલિકનો હતી તેજ આ કાપાલિક હતો. વળી તેના

**સમાગમ.** હાથમાં અપ્પપર ધારણું કરેલું હતું. કાપા-  
લિક બોલ્યો, મહારા પ્રભાવથી તહેને આ

સર્વ સમૃદ્ધિ પ્રાપ્ત થઈ છે. માટે મહારાજાનું એક વચન સાંકણ. જેથી  
હે હુર્ગ ! ભાવાંતરમાં પણ તહેને દૌલતાર્થી પ્રાપ્ત ન થાય. પાછા-  
ખાદિકને બહુ કન્યા પરણાવી સંતુષ્ટ કર. તે સાંકળી હુર્ગ બોલ્યો,  
હે મહાશય ! આપના કદ્યા પ્રમાણે ત્રિપુરા વિદ્યાનું મહેં સાધન  
કર્યું નથી અને તેનાથી આ સમૃદ્ધિ મહેને પ્રાપ્ત થઈ નથી.  
મહેને જે લક્ષમી મળી છે તે તો જૈન ધર્મના પ્રભાવથી જ મળી  
છે. અને તે ધર્મ પણ સુનિ મહારાજની હુપાથી પ્રાપ્ત થયો છે.  
તેમાં તમે પણ કારણભૂત થયા છો, કારણુકે તમહારા કહેવાથી  
હું ઉદ્ઘાનમાં જતો હતો તેવામાં મહેને સુનીદના દર્શન થયાં.  
વળી તમે મહેને જે કન્યાએ પરણાવવાનું કહો છો. તે મહારાથી  
અની શકે તેમ નથી, કારણુકે તેમ કરવાથી મહેને પ્રક્ષાર્ય  
પ્રતનો. જરૂર અતીચાર લાગે છે. તેમજ કોઠ વ્યવહારથી મહારા  
પુત્રોને પણ તે વાત લાગુ પડે. કાપાલિક બોલ્યો, જે એમ હોય  
તો પણ મહારાજ વચન તો રાખવું જ પડશે. વળી આ કાર્યમાં  
જે પાપ થાય તે મહારે માથે છે, એમાં તહારે કંઇપણ દોષ  
નહીં થાય. એ પ્રમાણે હુમેશાં તે કાપાલિક હુર્ગને કદ્યા કરતો  
હતો. ત્યારથાદ તેના બહુ આગ્રહને લીધે હુર્ગે કણુલ કર્યું કે,  
હું દશ કન્યાએ પરણાવીશ. એમ કહી બહુ શોધ કરી દશ

सुयशश्रेष्ठिनी कथा.

(६१)

कुन्याच्यो ते पोताने घेर लाव्यो। अने तेवीज शीते कुञनना हिवसे योऽय अने गुणवान् कुमारो ऐलाव्या। तेच्यो पछु पोतपोताना जनैयाच्या साथे एक भीजनी धृष्टिकडे उतावणथी अंडपना द्वार आगण आव्या। त्यां पछु प्रथम प्रवेश करवा माटे तेच्योच्ये परस्पर वाग्युद्धनो ग्रारंब कर्यो। पछी अङ्गना प्रहारेवडे मारामारी चाली, जेथी तेच्यो वच्ये महायुद्ध थयुं। ते वात हुर्गना सांकणवामां आवी के तरतज ते तेच्योने थांत करवा माटे उतावणथी त्यां गयो। वच्ये पडी तेच्योने निवारतो हुतो तेवामां डॉर्ड सुलटना नाखेला आणुवडे ते पोतेज विधार्ड गयो, एटले लुव लक्ष्य त्यांथी ते नाढो अने धरभां आवी प्रहारनी वेहनाथी अुमो पाडवा लाव्यो। त्यारभाद तेणु विचार कर्यो के चेथा व्रतना चेथा अतिचार इप वृक्षतुं आ पुण्य हेखायुं छे, पछु इण तो जन्मांतरभां मास थशे। माटे सर्वथा हुं हुर्भांगी हण्यायो छुं, कारणु के चेथा व्रतनो म्हें अतिचार लीधो। एम चिंतवन करतो ते हुर्ग भरणु पाभी भवनवासी हेवभां उत्पन्न थयो। त्यांथी चवी ग्रीज लवे जडू भोक्ष सुख पाभशे।

इति चतुर्थव्रततुर्यातिचारविपाके दुर्गकथानकं समाप्तम् ॥



## सुयशश्रेष्ठीनीकथा.



### पंचम तीव्रालिलापातिचार.

हानविर्द राजा ऐव्यो, हे भगवान्! आप तो अहु कुपाणु छे। माटे अक्षयर्य व्रतना पांचमा अतिचारतुं स्व॒प्य दृष्टांत सहित मने कहो। श्री सुपार्थप्रभु ऐव्या, हे राजन्! जे

( ६२ )

श्री सुपार्थनाथ चरित्र.

शक्तिहिक विषयोमां लुभ्य थઈने कामना तीक्ष्ण आण्वावडे  
विधायो छतो। अतिशय कामातुर थाय ते पुरुष सुयशनी पेठे  
निरंतर हुःभी थाय छे।

भहु लोगी एटले विलासी पुरुषो अथवा सर्पेवडे  
संयुक्त चंदनवननी माझेक गजपुर नामे  
**सुयशहृष्टांत.** नगर छे। तेमां याचक लोकेने कल्पवृक्ष  
समान अने नीति शास्त्रमां भहु कुशल  
विशाखनंदी नामे राज हुतो। तेमज प्रियवन्नन नामे श्रेष्ठी थयो।  
सुलसा नामे तेनी स्त्री हुती। तेओँने शास्त्रथी विमुख अने जुगार  
ऐलवामां भहु व्यसनी एवो। सुयश नामे एक पुत्र थयो।  
आतपणुमांथी ज ते धीमे धीमे पोताना घरमांथी हुक्कां घरेलुं  
चारीने जुगारमां भूक्कवा लाग्यो। अनुकमे एम आगળ  
वधवाथी ते भहु द्रव्य गुमावी ऐठो। लेथी शेठ पोतानी स्त्रीने  
कडेवा लाग्या, हे प्रिये ! आ पुत्रनो काण हुवे आवी रक्षो छे। ते  
सांखणी शेठाल्लीचे शेठने रेखपूर्वक भहु ठेपकाव्या। हे प्रियतम !  
झारा ल्लवतां डेअ हिवस आ प्रमाणे नही थाय, लडे सर्व द्रव्य  
जय परंतु जगतमां पुत्र विना लक्षभी शा काममां आने ? वजा  
पुत्र होय तो लक्षभी तो धाणीचे भेगवी शकाय।

**त्यारणाढ एक हिवस सुयश जुगार रमतां पोतानु भस्तक**  
हारी गयो। लेथी धूतकारी तेने पकडीने  
**जुगारनी स्थिति.** तेना पितानी पासे लक्ष गया। पिताचे  
पण पुत्रनो वरघोडा उवो। थाय छे ते  
भताववा भाटे तेनी भा पासे भोक्कयो। तेण्णीचे पण पोतानुं  
घरेलुं आणी जुगारीच्या पसेथी तेने मुक्ता कर्यो ! इरीथी  
पण ते रमवा लाग्यो। डेअर्हक वर्खत भाष्युं तो डेअर्हक वर्खत हाथ-  
भग विगोरे हारी जय छे। एक हिवस जुगारीच्या तेने भांधीने

સુયશશ્રેષ્ઠિની કથા.

( ૬૩ )

તેના પિતા પાસે લાવ્યા. પિતા વેર નહીં હોવાથી તેઓ તેનું મસ્તક છેદવાનો પ્રારંભ કરતા હતા તેટલામાં તે સુયશ હોયેચો, લાઇએ ! રહુને મારશો નહીં. બગીચાનો અંદર રહુણા પિતાએ ધન દાખ્યું છે. ચાલો ! હું તમને બતાવું એમ કહી તેઓને ત્યાં લઈ ગયો. અને કપટ વડે એક સ્થાન બતાવું એટલે તેઓ જોંહવામાં પહુંચા. તેથી સુયશ ફર નાશી ગયો. અને તેજ ઉધાનમાં જીનેંદ્ર લગવાન શ્રી અળુતનાથ પ્રભુનું મંદિર હતું તેમાં તે લગવાનનું શરણ લઈ સંતાઈ ગયો. જુગારી લોકો પણ તેની પાછળ ઢોડતા આવ્યા. દ્વારમાં પેસટાં કોઈક શ્રાવકે તેમને રેકયા. એટલામાં સુહંઘ્ર નામે વિદ્યાધર ત્યાં આવ્યો. અને દ્વારમાં ઉધાડી તરવારે ઉલેલા તે લોકો તેના જોવામાં આવ્યા. એટલે તેણે શ્રાવકને પૂછ્યું કે આ લોકો શામાટે નગન તરવારે લઈ ઉલા છે ? તે શ્રાવક હોયેચો, આ જીનેંદ્ર લગવાનને શરણ આવેલો છે. માટે તેમને આ માણુસ હું નહીં આપું. એમ હકીકત સાંલળી તે વિદ્યાધર સુયશને પોતાના વિમાનમાં બેસાડી નંદીશ્વર દીપમાં ગયો.

નંદીશ્વર દીપમાં ઉતરી ખાવન જિનાલય નોઈ સુયશના ઝૂદ્યમાં એવો કોઈ અપૂર્વ આનંદ પ્રગટ વિદ્યાસિદ્ધિ. થયો કે જ્યથી ક્ષાળુમાત્રમાં સ્રૂત્યના દર્શનથી અંધકારની માઝેક પૂર્વાશીત પાપ કર્મ ક્ષીણું થઈ ગયાં. ત્યારખાદ સુયશો ચારણુમનિને વંદન કરી વિદ્યાધર સહિત તેણે પોતે સુનીંદ્રની પાસે ભાર પ્રકારનો શ્રાવક ધર્મ સાંલળ્યો. અને તેજ પ્રમાણે આનંદપૂર્વક તે ધર્મનો તેણે સ્વીકાર કર્યો. બળી જીવન પર્યાંત તેણે જુગારનો નિયમ લીધ્યો. તેથી વિદ્યાધર બહુ ઝુશી થયો અને સુયશને મોટી નામની વિદ્યા આપી. ત્યારખાદ સુયશો વિદ્યિ સહિત તેનો સ્વીકાર કર્યો. પણ

( ૬૪ )

શ્રી સૂપાર્બનાથ ચરિત્ર.

વિદ્યા સિદ્ધ થયા બાદ વિદ્યાધરની સાથે તે વૈતાદ્વય પર્વતમાં ગયો. કેટલાક દિવસ ત્યાં રહી વિદ્યાધર પાસેથી પીળ કેટલીક વિદ્યાઓ શીખીને પોતે સિદ્ધ કરી. ત્યારબાદ ત્યાંથી તે સુયશ ગજપુર નગરમાં ગયો. ત્યાં તે નગરના રાજની ખી સૈાભાગ્ય-શીના પ્રસવ સમયે અદૃશ્ય રૂપ કરી સુયશે તેની પાસે આવી તેના મરેલા પુત્રનો અપહાર કર્યો અને પોતે મોરતું સ્વરૂપ ધારણ કરી ત્યાં આગળ રહ્યો. જેથી સૂતિ કામ કરનારી ખી એલી કે, રાણીને મોર જન્મયો છે. એ પ્રમાણે દાસીઓએ રાજને સંભળાંયું. રાજાએ પણ નિમિત્તવેત્તાઓને એલાવીને પૂછ્યું કે, રાણીને મોર જન્મયો છે તેનું શું કારણ ? નૈમિત્તિક લોડો એલાયા, હે નરેશ્વર ! મોરનો જન્મ બહુ અશુભ ગણ્યાય છે. માટે જે મોર સહિત રાણીનો ત્યાગ નહીં કરો તો તેમાંથી મોટું વિજ્ઞ થશે. રાજાએ તેજ વખતે સેનાપતિને હુકમ કર્યો કે, મોર સહિત રાણીને શૂન્ય જંગલમાં મૂકી આવો. સેનાપતિ તરતજ હુકમ પ્રમાણે કરણું શરૂદોષી રૂદ્ધન કરતી રાણીને મોટા અરણુંમાં મૂકી આવ્યો.

હવે મોર પોતાનું સ્વરૂપ પ્રગટ કરી પુરુષ થયો અને સુરે-

દની માઝેક સુંદર દીપવા લાગ્યો. ત્યારબાદ વિદ્યાનો પ્રભાવ, રાણીને પ્રણામ કરી સુયશ મધુર વચ્ચનો વડે શાંત કરી એલાયા, હે માતા ! હવે રૂદ્ધન

કરવાની કંઈ જરૂર નથી. પોતાના પુત્રનો મહિમા જોઈદે એમ કહી તેણે સિદ્ધ વિદ્યાનું સમરણ કર્યું. એટલે ક્ષણુમાત્રમાં વિદ્યા-દેવીએ તેના વચ્ચનથી ધનવધાન્ય હિરણ્ય, સુવર્ણમય ખાવન જીનાલય, મનોહર હવેલીએથી સુશોભિત બહુ સમૃદ્ધિવાળું અને સપ્રાકાર ( સર્પાંગાર ) કિદ્ધા સહિત ( સર્પેતું સ્થાનભૂતવનબૃહ ) સમાન એક ભાવ્ય રાજનગર બનાયું. ત્યારબાદ બહુદ્વય વૈકલ્પ

મુખ્યશાશ્વતિની કથા.

( ૬૫ )

આપીને લોકોને તેમાં વસાવ્યા. મોરનગર એવું તે નગરનું નામ પાડ્યું. પછી મોર ઉપર રચેલા મણિમય વિમાનમાં એસી બહુ વિદ્યાધર સહિત કાર્તિકેયની માદ્ક તે આ જગતની અંદર વિવિધ રચનાઓ જોતો અને હૃમેશાં ઈચ્છા પ્રમાણે ફરતો હતો, જે જે નગર કે ગામમાં ઉત્તમ વસ્તુ તેના જોવામાં આવે છે તે તે વસ્તુઓ દ્વારા આપીને અથવા પ્રાર્થના કરીને મોરનગરમાં તે લાવતો હતો. હું તે નગરના સીમાડામાં શંખપુર નામે ગામ છે, તેના અધિપતિ શંખવર્ધન નામે રાજી છે. કમલશ્રી નામે તેની પુત્રી છે. તેના સ્વયંબરમાં સર્વ રાજકુમારો તેને વરવા માટે દેશાંતરથી આવ્યા છે. અત્રીશ કુમાર સાથે વિશાળાનંદી રાજી પણ ત્યાં આવ્યો. તે વૃત્તાંત ફૂલના સુખથી જાણીને સુયશ પણ મોરનું સ્વરૂપ પ્રગટ કરી વિવાહના હિવસે શંખપુરમાં ગયો, અને બહુ રાજકુમારો વડે મનોહર હી પતા સ્વયંબર મંડપમાં જઈને એડો. તે વખતે તેની ડાકુમાં મણિમાલા શોલતી હતી.

કમલશ્રી કુમારી પ્રકુલ્પ પુણ્યોની માલા પોતાના હુસ્ત કમલમાં ધારણું કરી સ્વયંબર મંડપમાં આવી. મોરનો ચમત્કાર. પ્રતિહારીએ વંશ વિગેરનું વર્ષાન કરી રાજકુમારોની ઓળખાણું આપી. અને કહ્યું કે, હે ભૂગાક્ષી ! આ અસુક રાજનો અસુક પુત્ર છે, સાવધાન થધ અવકોદન કર. એવી રીતે દરેકનું વર્ષાન કરતાં છેવટ ગંગાપુર નરેદ્દનું વર્ષાન કરી બતાયું. પરંતુ જેમ પ્રકુલ્પ પાંચાદીઓથી શોલતાં આકડાનાં પુણ્યો ઉપર ભ્રમરીની હૃદિ ઢરતી નથી. તેમ તેની હૃદિ કોઈપણ રાજકુમાર ઉપર પ્રસન્ન થઈ નહીં. પછી તેણીએ મોરના કંઠમાં વરમાલા પહેરાવી. તે જોઈ રોખથી કંપે છે એઠ જેમના એવા રાજકુમારો જોવા, રે ! આ મોરને અજુથી જલદી મારી નાખો, શું જોઈ રદ્દા છો. એમ સાંભળી

( ६६ )

श्री सुपार्श्वनाथ चरित्र.

केार्डक कोधी कुमार पेताने अजू ऐंची भोरने भारवा जय  
 छे तेटलामां तेनुं पेतानुं ज मस्तक पृथ्वी उपर पछुं. ते जेह  
 सर्व राजकुमारो भायलीत थई गया. अने एक साथे मणी भोरनी  
 पासे जैर्ध क्षमा भागी कडवा लाग्या के, भेणी भडेखानी करी  
 आपनुं सत्य स्वदृप्रगट करो. तेणुं पछु तेच्योनुं वयन भान्य  
 करी विद्याना प्रभावथी तत्काण भोर उपर रवेला विभानमां आळू  
 थई पेतानुं स्वदृप्रगट अताव्युं. अहसुत् प्रकारतुं तेनुं दृप जेह  
 सर्व राजाच्यो परस्तपर गोष्ठी करवा लाग्या के, ऐनी दृप संपत्ति  
 अहु भनोहुर छे, आ केार्ड प्रभाविक महात्मा छे—विगेरे अहु  
 प्रशास्त्रां करवा लाग्या. त्यारबाट राजाच्यो पेतानी पुत्रीने विवाह  
 भडेत्सव शङ्क उर्यो. अहु विभूति साथे कमलश्रीनुं लभ थई गयुं.  
 पछी विशाख नंदी नृपति प्रभुभ राजकुमारोने सुयश पेते निर्भाय  
 करेला नगरमां लधी गयो. कमलश्री तथा अन्य राजकुमारो सहित  
 ते पेतानी भाताने नमस्कार करी नीये ऐठो. त्यारबाट विशाख-  
 नंदी राज तेनी भाताने जेह विचार करवा लाग्यो, के भोरने  
 जन्म थवाथी जेने जंगलमां काढी मूँझी हुती ते शुं आ सैक्षा-  
 अश्री—भुजी राखी हुशो ? एम चिंतवतो हुतो. तेटलामां  
 तखीच्ये पेतेज आसन आप्युं. राज पछु आसन उपर ऐसी  
 स्निग्ध वयनेथी क्षमा भागी. अने कहुं के, हे ग्रिये ! आ भुजारा  
 अपराधने क्षमा करो. भेण अहु निर्देय कार्य कर्युं छे. तमारो  
 त्याग करवामां भराब नैमित्तिक लोको हेतु थया छे, विगेरे केटलीक  
 तेणुं प्रार्थना करी. पछी राखी घाली, हे स्वामिन ! एमां  
 तभुजे कंधे दोष नथी, परंतु आपछा अज्ञेना कर्मनेज दोष  
 छे. कहुं छे के—

जं जेण पावियच्चं, सुहमसुहं वावि जीवलोगमि ।  
 तं पाविज्जह नियमा, पडियारो नथिथ एयस्स ॥

સુખશાન્તિક કથા.

( ૬૭ )

અર્થ—“આ હુનિયામાં ને સુખ વા હુઃ ખ લોગવવાતું હોય છે તે નિક્ષેપ લોગવવું પડે છે. તેને કોઈ પણ અન્યથા કરવા સમર્થ નથી.” એમ બોલી પોતાના પુત્રને કહ્યું, હે પુત્ર ! આ તહારા પિતા છે, તેમને નમસ્કાર કર. તેણે પણ તે પ્રમાણે પોતાનો આચાર કર્યો. રાજએ આલિંગન કરી ખાલુ પ્રેમથી તેને પોતાના ઘોળામાં ઘેસારી અનુકૂમે સર્વ વૃત્તાંત પૂછ્યું. દેવીના પ્રસવકાળથી પ્રારંભી કમલશ્રીના લગ્ન પર્યાંત સર્વ વાર્તા તેણે પણ નિવેદન કરી. ત્યારથાદ રાજ બોલ્યો, હે કુમાર ! અહીં અને ત્યાં બજે રાજ્યનો અધિકારી હવે તું છે. મહારી સાથે ચાલ, રાજ્યગાહીએ તહારે અભિષેક કરવાનો છે. સૌભાગ્યશ્રી સહિત તેઓ બજે જણ ગજપુરમાં ગયા. ત્યારથાદ પોતાની રાજગાહી ઉપર સુયશને સ્થાપન કર્યો. તે પછી પોતાનાં માતા પિતાને ત્યાં જઈ તેઓને પણ નમસ્કાર કરી સુખી કર્યો. પોતાના પિતાને નગરશેઠની પહવી આપી. ત્યારથાદ વિશ્વાખનાંદી રાજએ વૈરાગ્યભાવથી સંસાર છોડી ચારિત્ર શહુણું કર્યું.

નવીન ગાહીએ બેઠેલા રાજનાં મોરદ્વજ અને સુયશ એવાં બે નામ લોકમાં સુપ્રસિદ્ધ થયાં, અને હોરદ્વજ રાજ. મેંદેશાં તે કમલશ્રી પ્રમુખ રાણીઓ સાથે વિલાસ કરવા લાગ્યો. વિષયલોગમાં તેનો અત્યાંત અલિલાષ જથ્થત થયો. મૈથુનરસમાં આસ્કર્ત થઈ નિર્તતર થુબતિએ. સાથે વિલાસ કરવામાં કાલક્ષેપ કરવા લાગ્યો. પોતાના પતિનો આવો હુરાચાર જોઈ કમલશ્રી બોલી, હે સ્વામિન ! હરેક રાજએની અંદર તમે સુખ્ય ગણ્યાઓ છો, તેમજ ધર્મનાં તરફે સારી રીતે જાણો છો. અને શાસ્ત્રમાં પણ તમહારી બુદ્ધિ બહુ નિષ્ણાત છે. છતાં તમહારા સરખાઓને હઠપાર વિષયપ્રસંગ સેવવો તે ચોગ્ય ગણ્યાય નહીં. કારણું કે—

( ६८ )

श्रीमुपार्क्षनाथचरित्र.

कामः क्रोधस्तथा हर्षो,—मायालोभोमदस्तथा ।

षड्गंगमुत्सूजेदेनं,—तस्मिस्त्वके सुखी भवेत् ॥

अर्थः—“ काम, डोध, हर्ष, माया, लोक अने मह ए छ नो त्याग करवो, जेथी राजा आ लोकमां सुखी थाय छे. ” वणी जेओ विषयवासना फूर करवा भाटे विषय लोगवे छे, ते तो उलटुं अनिमां धी होमवा भरोबर करे छे. तृष्णारूपी व्याधि बहु असाध्य छे. कारणुके तेनी शांति औपाधथी पर्णु थती नथी. भाटे आत्मानुं हित धृच्छ-नार पुरुषोचे तेनी उत्पत्तिनोज निरोध करवो उचित छे. वणी जेम स्वभावमां पीघेला जणथी तृष्णा शांत थती नथी, तेम विषय तृष्णा पर्णु लोग सेवनथी। नवृत्त थती नथी. भाटे कृपा करी प्रभ-दाओ संभांधी विषयवाच्छानो त्याग करो. कारणुके हे नरनाथ? आ प्रभाणु करवाथी परदारविरमणुवत तम्हाइं भवीन थाय छे. ए प्रभाणु खीनां वयन सांक्षणी भोरवज भोव्यो, हे सुलोचने! रहाइं कहेवुं सत्य छे. परंतु हजु हुं लारेकर्मी छुं, तेथी हालमां भारी प्रवृत्ति भद्रलाय तेम नथी. त्यारभाद कमलश्री पोते त्यांथी मुक्त थर्चु सुगुर पासे गाई अने भोक्षसुखनी वांच्छाथी तेहु दीक्षा अहंगु करी. पछी भोरवजराज धर्म पर्णु स्वच्छंदयारी थृष्णु गयो. अने जेम कैच मांसमां हुण्ड लेय तेम विषयमां हुण्ड थृष्णु निरंतर नव नव युवतिओना संगमां लीन थयो. तेमज खीसेवाना बहु प्रसंगने लीघे तेने धातुक्षयनो रोग उत्पन्न थयो, जेथी खांसी, झृशता अने शरीरे ‘विष्णुपर्णु’ प्राप्त थयुं. आ प्रभाणु तेनी स्थिति जेई सर्व खीओ हुद्यथा विरक्त थृष्णु गाई, परंतु आध्यथी तेनी आगण प्रीति भतावं छे. छतां ते पूर्णु-चंद्र समान छे सुख जेमनुं अने भुंदर नेत्रवाणी ते खीओने जेम जेम जुओ छे तेम तेम तेनुं हुद्य विषयमां अधिक प्रवृत्त

સુયશાનૃપ કથા.

( ૬૬ )

થાય છે. કેટલીક પ્રમદાચોની ઉપર પગ નાખે છે, અન્યની ઉપર આહુલતા સ્થાપન કરે છે. કેટલીક તો તેના કેશની સેવા કરે છે. વળી કેટલીક સ્વીચ્છા તેની જંબાદિકની સેવામાં હાજર રહે છે. એવી રીતે કામથુથી અસિત થએલો તે સર્વ સ્વીચ્છાને ઉદ્ઘોગ કરાવે છે. હવે સંસારથી વિરક્ત થઈ તેની રાણીઓ પણ વિચાર કરવા લાગી કે, આ એક આશ્ર્ય છે ! જેકે રાજ મરવા સુંતો છે, તો પણ તેના મનમાંથી વિષયવાસના ફૂર થતી નથી. મોહરાજાનું મહાત્મ્ય અલૌકિક છે. એમ સમજું સ્વીચ્છાએ કહ્યું, હે સ્વામિન ! હવે તમ્હારી આખર વખત છે માટે ધર્મ સેવનમાં પ્રીતિ કરો. પોતે આચરણ કરેલો ધર્મ સાથે આવે છે. અને જન્માંતરમાં હઃખર-ક્ષક પણ ધર્મજ થાય છે. આ સર્વ સ્વીચ્છા, ચતુરંગસેના, સર્વ સંપત્તિએ વિગેરે કોઈપણ અન્યભવમાં સાથે આવી સહાય કરે તેમ નથી. વળી હે નાથ ! ધર્મ શિવાય કોઈ સત્ય સહાય કરનાર નથી. માટે અમૃતા ઉપરથી પણ મોહ છાડી હઈ પોતાનું આત્મ હિત ચિંતયો, તે સાંસળી રાજ પ્રકૃપિત થઈ જોવ્યો :—તમ્હારી સર્વ વાત મૃતા જાણવામાં આવી છે. હાતમાં તમે રહાડું મરણ ઈચ્છા છો, એમ બહુ કોષ કરવાથી બહુ વેદનાએ વધી પડી, તેમજ વિષયવાસનાથી સ્વીચ્છામાં લુણધ થઈ મરણ પામી આર્થિયાનને લીધે તિર્યંગ્ભૂતિમાં ઉત્પત્ત થયો. ત્યાંથી નીકળી અન્યભવમાં કરીથી બોધિજાન પ્રાસ કરી સંસારમાં બહુ હઃખ સહન કરીને સુયશારાજનો જીવ કર્મનો ક્ષય કરી અંતે મોક્ષસુખ પણ પામણો. હે લભ્ય પ્રાણીઓ ? જેવા રીતે આ સુયશારાજએ પ્રથમ ધર્મસામની પ્રાસ કરી હતી; છતાં તે કામતુર થવાથી સર્વ હારી ગયો. અને બહુ હઃખી થયો. તેમ સુખાથી પુરુષોએ કામકીડામાં લુણધ થતું નહીં. વળી જે મહાત્માએ નિશ્ચયપણે કલાંકરહિત શીલત્રત ધારણ કરે છે તેઓ આ જગતુમાં વંદનીય થઈ સર્વ ક-

( १०० )

श्रीमुखार्थनाथचरित्र.

મને ક્ષીણુ કરી સિદ્ધિપદ પામે છે. તેમજ મનોહર આકૃતિ પા-  
મીને પણ જે પુરુષ કામનો નિરોધ કરતો નથી તે પુરુષને ધાસના  
પુતળાની ભાંડક પરાક્રમ રહિત જાણુંયો.

ઇતિ ચતુર્થવતપञ્ચમાતિચારવિપાકે સુયશનૃપકથાનકં સમાપ્તમ् ॥ તત્સ-  
માસૌ શ્રીમલ્લક્ષ્મણગણવિરચિતપ્રાકૃતપદ્બવન્ધશ્રીસુપાર્થજિનચરિત્રસ્ય  
શ્રીસકલસૂરિપુરન્દરાયમાણપરમગુરુતપગચ્છાધિરાજશાસ્ત્રવિશા-  
રદૈનાચાર્યયોગનિષ્ઠાધ્યાત્મજ્ઞાનદિવાકરશ્રીમદ્બુદ્ધિસા-  
ગરસૂરિશિષ્યપ્રસિદ્ધવક્તેતિલભધર્યાતિવ્યાખ્યાનકો-  
વિદપન્યાસશ્રીમદજિતસાગરગણિકૃતગુર્જરમાધા-  
નુવાદે પ્રભુદેશનાપ્રવન્ધે સદાષ્ટાન્તાતીચાર-  
વ્યાખ્યોપેતં ચતુર્થણુબ્રતં સમાપ્તમ् ॥



सेनश्रेष्ठी कथा.

( १०१ )

## सेनश्रेष्ठीनी कथा.

---

### स्थूलपरिव्रहपरिमाणव्रत.

दानवीर्यराज भुजु प्रसन्न थई प्रभुना चरणमां भस्तक नभावी  
ओत्यो, हे धर्मरक्षक ? जगद्गुरु !  
जगद्गुरु ! यार आणुवतनी व्याख्या सांबળी अहो  
भुजु आनंद थयो. हवे पांचमा वतनो उपहेश  
आपी अमने कुतार्थ करो. आ प्रभाणु राजनो प्रश्न सांबળी श्री  
सुपार्थ प्रभु ओत्या हे राजन् ? हवे हुं पांचमा आणुवतनुं स्व-  
इपु कुहुं छुं ते हुं सावधान थध श्रवणु कर. 'क्षेत्र, हिरण्य, सुवर्ण,  
धन, धान्य, मनुष्य, पशु अने अन्य धातु विगोरे वस्तुओनुं ने  
पुढो परिमाणु करे हे एटले के आटवी वस्तुज अहारे वापरवी  
अधिकनो त्याग हे, एवो ने मनुष्यो नियम करे हे तेचो सेनश्रे-  
ष्ठीनी माझक पर लोकमां अपरिमित सुख लोगवे हे.

सुवर्णभय ईश्वरपताकाओाथी सुशोलित अनेक जैनमंडिरे  
जेमां रહेलां छे एवी कांची नामे नगरी  
सेनश्रेष्ठी. छे. तेमां नरपाल नामे राजा राज्य करे छे.  
शिवनामिका नामे तेनी खी छे. वणी ते  
नगरीमां भुजु धनाढ्य सेन नामे एक शेठ छे, परंतु ते भिथ्या-  
द्विष्ट छे. कुवलयमाला नामे तेनी खी छे. ते कमलनी मालानी  
माझक सर्वगुण संपत्त छे. तेओाने हरि, हर अने अहा ए ना-  
मना ग्रन्थ पुर्णे छे. वणी तेओा भुजु विनयी, सुवर्ण समान कां-  
तिवाळा. सर्व कलाओाना पारगामी अने नीतिशासना निधान  
तरीके गण्याय छे.

( १०२ )

श्रीसुपार्थनाथयरित्र.

એક દિવસ સેનશ્રેષ્ઠિને ત્યાં ચતુર્ણાની મુનિ મહારાજ બિક્ષા  
માટે પધાર્યા. શોઠ પોતે તેમને આવતા  
**જ્ઞાનિસુનિ.** જેઈ ઉલા થયા અને સંથુને થાળ લઈ  
તેમની પાસે ઙ્ડારાવવા માટે ગયા. મુનિ બોલ્યા, દેવાનુપ્રિય !  
એની અંદર સૂક્ષ્મ જીવ પડી ગયા છે, માટે અમને તે કદ્વે  
નહીં. શોઠ બોલ્યા આપનું કહેવું સત્ય હશે; પરંતુ તે કેવી રીતે  
જ્ઞાનિસુનિ ? મુનિ બોલ્યા એની ઉપર અગતાનુંસુંભડું મુકેં એટલે  
તે જીવા દેખાશે. તે પ્રમાણે કરવાથી શોઠ પણ તેના વર્ણના જીવો  
જેઈ આશ્ર્ય પામ્યા. પછી તે સંથુને પડતો મૂકી દાઢી આપવા  
માટે આવ્યા. તેમાં પણ તેજ પ્રમાણે જીવ હોવાથી પૂર્વની માદ્કા  
પરીક્ષા કરી તે ન લીધું. ત્યારપણી મોદકનો ભરેલો થાળ લઈ  
બહુ જક્કિપૂર્વક શોઠ મુનિની પાસે આવ્યા. તે જેઈ મુનિ બોલ્યા  
આ મોદકમાં વિષ મેળવેલું છે. શોઠ પૂછ્યું એની શ્રી આત્મી ?  
મુનિ બોલ્યા બુઝ્યો, તેઓની ઉપર ને ને માખીઓ એસે  
છે તે સર્વ મરી જય છે તે તમે તપાસ કરો. શોઠ વિસ્મિત થઇ  
બોલ્યા એમાં વિષ નાખનાર કોણું હશે ? એટલું કૃપા કરી મહુને  
જ્ઞાનાવો. મુનિ બોલ્યા તહારે ત્યાં કાલે ને રસોઈ કરનારી કી મરી  
ગઈ તેણીએ આ કૃત્ય કર્યું છે. શોઠ બોલ્યો એમ તેને કરવાનું  
શું કારણ ? મુનિ બોલ્યા કોઈક અપરાધને લીધે તેણે અને તહારા  
કુટુંબે તેનો બહુ તિરસ્કાર કર્યો, તેથી તમહારા માટે તેણીએ આ  
વિષ મિશ્રિત લાડુ કર્યા તેમજ પોતાના માટે વિષ વિનાના એ  
મોદક બનાવ્યા હતા, પરંતુ તેને બહુ ભૂખ લાગવાથી ભૂલમાં  
તેણે વિષ મિશ્રિત લાડુ આધા, તેથી તેજ વખતે તે મરણ વશ થઈ.  
વળી આ થાળમાં એજ લાડુ શુદ્ધ છે. બાકીના સર્વો વિષ સંચુક્ત  
છે. માટે અમારે તેઓનો અપ નથી. વળી હે શ્રેષ્ઠીન ? કુટુંબ  
સહિત તમોએ પણ જે આ લાડુ આધા હોત તો તમહારું પણ

सेनश्रेष्ठी कथा.

( १०३ )

मरणु केणु निवारणु करत ? माटे कुटुंब सहित तु आ आप-  
तिथी छुटी गयो. जेथी हवे धर्मसाधन कर. शेठ योद्या  
कृपा करी धर्मोपदेश आपो, सुनिए यति अने श्रावक एम अने  
प्रकारनो धर्म कहो. त्यारभाद मुनिधर्ममां अशक्त होवाथी  
तेणु श्रावक धर्मनो स्वीकार कर्यो. जे के लिक्षा माटे आवेदा  
मुनिए धर्मकुथा नज करवी जोड्यो. परंतु शुद्ध अनन्तनी लिक्षा शुद्ध  
सेन श्रेष्ठीने धर्मोपदेश आपो. पठी शुद्ध अनन्तनी लिक्षा शुद्ध  
महाराजने आपी तेमने बंदन करी विदाय कर्यो. मुनीन्द्र पण पै-  
ताना स्थानमां गया. सेन पण विधिपूर्वक जैनधर्मनी आरा-  
धना करवा लाग्यो. शेठने घेर धर्मना प्रसावाथी हिवसे हिवसे  
पुत्र पौत्राहिक संपत्तिए अहु वधवा लाग्यी. अनुकमे शेठनुं कुटुंब  
जैनधर्ममां विशेष रागी थयुं. शेठ चोने परिवहनुं प्रमाणु करी  
जैनधर्मनी विशेष आराधना करवा लाग्या.

धरनी अंदर पुत्रोनी स्त्रीओ परस्पर कलेश करवा लाग्यी,  
तेथी पुत्रोचे पोताना पिताने कल्पुं के कं-  
कुटुंबनो कलेश. कास कल्पामां लुवन गाणवुं ते उचित  
गण्याय नहीं माटे भाग आपी अमने जुहा  
रायो. सेनश्रेष्ठीचे ते वात कणुल करी हरेकने विलाग आपी पृ-  
थक्कर्यो. त्यारभाद नानो भाई मङ्गाटा भाईने कडेवा लाग्यो. के  
भाई ? तमे मङ्गाटा थाईने आवुं कपट करा छो ? जे दृव्य तमे  
छानुं रागी हण्यावी ऐहा छो. ते पणु भाग प्रमाणे वेलासर  
वहेच्यी आपो. ते कंक तम्हारा ओळानुं नथी. हरि  
योद्या लाई ? मङ्गाटो पासे कंध छेज नहीं ओहुं शुं ऐले  
छे ? आ प्रमाणे लोकेना कडेवाथी सांखणी सेन विचार  
करवा लाग्यो के.—

( १०४ )

श्रीमुर्खनाथवरित्र.

आक्षीरधारैकभुजा—मागर्भेकनिवासिनाम् ।

नमोऽर्थेभ्यो ये एथकत्वं, आतृणामपिकुर्वते ॥

अर्थ.—“ जन्मथी आरंभी एक स्थानमां लोजन करता अने गर्भथी आरंभी एक स्थानमां निवास करता एवा बंधुओनुं पछु जेए पुथ्रूपछुं करे छे तेवी संपत्ति-एने नमस्कार.” एम जाणी सेने पोतानो विभाग नाना पुत्रे आपी शांत कर्ये. पछु पाछो धरने माटे तेवीजरीते कुलेश करवा लाय्यो. एटले मुख्य धरमां हुरनी साथे तेने राख्यो. त्यारभाद तेए समज्या के जलभिंदु समान चंचल एवी आ संपत्तिए छे. अने आ जुवित विद्युत् समान चपल छे. तो धर, धन विगडे अस्थिर पदार्थामां कर्ये. विश्रान् पोताना बंधुओ साथे विवाह करे ? वर्णी जुनवयनना ज्ञाता अने संसार जन्य बहु हुःपोनी आवनाथी युक्त एवा पुढेने पछु धन संपत्ति माटे आवो कुलेश थाय छे. अडो ! भोहो भडिमा केवो छे ? एम वैराग्य परायणु थर्ठि तेए परस्पर अपराध क्षमाववा लाज्या के नेथी कुषायने लीध अमादृं सम्यक्त्व स्फलित न थाए।

पोतानी स्त्रीओ सेनने कुछुं के द्रव्य सहित पोतानुं धर पछु पुत्रोने आपी छेडा, हुवे तम्हाइं सेननो उपदेश शुं थशो ? सेन योह्यो हे प्रिये ! जेना हुद्यमहिरमां जैनमत निरंतर वास करी रहो छे तेने धन, गृह के चिंतामणीनी पछु शी गणुतरी ? पधी स्त्री योही स्वामिन् ! व्रत अहंगु करी हुवे लिक्षा मागो अने समशान, शून्यगृह के हेवमहिरमां वास करै. सेन योह्यो हे सुंहरी तुं धैर्यनो त्याग न करीश. अनुहूमे तहाइं वयन पछु सत्य करीश. आ लोकमां पछु धर्मनो प्रलाव प्रगट छे, ते हुं रहने हात बतावीश. एम कही सेन खास पोतानो भित्र जे

सेनश्रेष्ठी कथा.

( १०५ )

मंत्रो हुतो तेना घेर जयो अने तेनी आगण कुटुंभतुं सर्व  
 वृत्तांत क्लियुं, तेमज पोताने रहेवा माटे घरनी भागणी करी.  
 मंत्री योव्यो खांधव ? राजनुं घर आली छे; परंतु तेमां व्यंत-  
 रनो वास डोवाथी तेने फूषित गणी कोध पणु तेमां रही शक्तुं  
 नथो परंतु धर्मना प्रभावथी ते व्यंतर तम्हने कंध अडयच्छु  
 नहीं करी शके. आ प्रभाणे मंत्रीनुं वयन सांखणी तत्काण तेणु  
 ते शकुन गांडे खांधी लीधा अने ते व्यंतरवाणा धरमां गयो.  
 अहार उलो रही नैषेधिकी किया कर्या बाद आज्ञा लाई घरनी  
 अंदर तेणु प्रवेश कर्या. कर्या प्रतिकमी सेन श्रेष्ठी स्थिर चिते  
 स्वाध्याय करवा लाग्यो. के दे लुव ! गजसुकुमार, भेतार्य, महा  
 भुनि स्कंधकना शिष्य विगेरे साधुओनां चरित्रेनुं स्मरणु करतो  
 छतो तुं मात्र आटला उपरथी केम कोध करे छे ? विचार कर के  
 के महा सत्वधारी पुरुषो छे तेओ पोताना प्राणु जय तो पणु  
 अन्यनो द्रेष करता नथी. तो तुं आटली खधी ओछी शक्ति  
 वाणो क्यांथी ? के तहारामां वयन मात्रथी पणु आवी अक्षभा  
 रहेकी छे ? वणी दे लुव ? प्राणीओना सुख हुःअमां अन्य तो  
 एक निमित्त मात्र छे. पोतानां करेलां कर्म लोगवतो छतो तुं अ-  
 न्यनी उपर शामाटे वृथा कोध करे छे ! मोहुथी विभूठ बनेला लु-  
 वात्माओ धन-गुहादिकमां गाढ मूर्छित थर्द लुनवयन नहि जाणु-  
 वाथी संसार अटवीमां भ्रमणु करे छे. अहो ! येवा अनार्य मोहुने  
 वारंवार धिक्कार छे. जेना वश थयेला प्राणीओ निर्दय अने धा-  
 तडी बनी ग्रहार करतां पोताना पुत्र के भित्रोने पणु गाण्यता नथी.

आ प्रभाणे सेनश्रेष्ठीओ अर्धरात्री सुधी स्वाध्याय पाठ

कर्यो. ते सांखणी व्यंतर बहु युशी थयो।  
 अने योव्यो डे महाशय ? विकट संसार  
 इपी कुवामां हुं पडतो हुतो, तेमांथी तमे

( १०६ )

श्रीसुपार्थनाथयरितं

महारो उद्धार कर्ये। हुं अहु कोधी देव छुं। आ धर म्हें शून्य कर्युं छे. ते सांखणी सेन योव्योः—तमहारे तेम करवातुं शुं कार-ए ? व्यंतर योव्यो अथम आ धरनो अधिपति हुं होतो. महारे ऐ पुत्र होता तेचोमां नानो पुत्र म्हने अहु ग्रिय होतो तेथी सर्व सारी वस्तुओ तेने आपी; तेमज म्होटाने पण्य कंडक आपीने वीज धरमां राख्यो। अने मुख्य धरमां नाना पुत्रने राख्यो। तेथी कोधायमान थर्द म्होटा पुत्रे मने भारी नाख्यो। पधी लघुभंधुने पण्य राजकुलमां पकडावीने तेनुं घेर तेणु लध लीधुं। लघु पुत्र पण्य कारागृहमां भरी गयो। हुं भरीने अहीं व्यंतर थयो। परंतु विलंग ज्ञानने लीधे नरेष पुत्रनुं चरित जाणी कुटुंब सहित तेनो म्हें नाश कर्ये अने वीजुं पण्य के कोष्ठ आ धरमां रहे छे ते पण्य तत्काल मरण्य पामे छे. तेथी आ धर उज्जड थयुं छे. होवे तुं महारो धर्मगुड छे. माटे आ. धर हुं तमने आपुं छुं। एम कडी ते व्यंतरे पोतातुं दाटेलुं धन हतुं ते पण्य जलही ऐही काढीने सेनने अर्पणु कर्युं तेनी गण्यतरी करवाथी ते दशलाख सोनैया थया। नेथी सेन योव्यो हे व्यंतर देव ! म्हें परिवर्हनुं प्रभाणु करेलुं छे तेथी लाख महारा निमित्ते वपराशे, आडीना नवलाख धर्मकार्यमां हुं वापरीश। अने ते पुण्यना सोक्ता तमे थशो। व्यंतर योव्यो हे महाभाग ! तेमांथी अधुं पुण्य तमने पण्य मणशे, वणी वीजुं पण्य के कंद महारा लायक कार्य होय ते कडो, आपना उपकारनो अहो। महारा प्राण्यथी पण्य वाजवाने हुं समर्थ नथी। तमहारो स्वाध्याय सांखणी कार्य-अकार्यनो विवेक म्हें जाइयो। तेथी महारो वैरलाख नष्ट थयो, त्यारभाद सेन योव्यो, सर्व श्रवात्माओयो उत्तम अने अर्थाति पञ्चांद्रियपण्यं पामीने आत्महित कर्वुं। वणी ते आत्महित परोपकार करवाथी थाय

सेनक्रेष्टी कथा.

( १०७ )

छ. जे परोपकार लुनेंद्र लगवानना वचन प्रभाषे यथाथ  
करवामां आवे छे ते आत्माना हितलावे परिणुमे छे. एमां  
संशय नथी, जेओा अन्यतु अनिष्ट करवाथी पोतातुं हित माने  
छे. तेओने लुनवचनथी बाह्य जाणुवा. अने तत्पथी पोतातुं  
हित जाणुता नथी. माटे धर्म सिवायःआ हुनीयामां कंधपणु  
आत्महित छेज नहिँ. तेथी हे व्यंतराधिप ! हवे त्हारे  
हुमेशां धर्ममां उद्युक्त थवुं. व्यंतर ऐल्यो, हे महाशय !  
आपनुं कडेवुं सत्य छे, आपना वचन प्रभाषे हुं वर्तीश एम  
कही ते अदृश्य थयो.

ज्यारे सूर्योदय थयो. त्यारे सेनक्रेष्टीनी स्त्री नगरनी अंदर  
पोताना स्वामीनी शोध माटे कृती कृती

**सेनशिक्षा.** व्यंतरना घेर गाई तो विशेष अदंडारोथी  
विभूषित शेठने त्यां ऐडेला लेया. अने

कडेवा लागी के, हे प्रियतम ! आपने शोधवामां हुं  
बहु थांकी गाई. आ आखरण अने आ समृद्धि आपने कौणु  
आपी ? सेन ऐल्यो, हे सुंदरी ! धर्मना प्रजावथी आ सर्व  
प्राप्त थयुं छे. अन्य कंधपणु पूछ्यु नहीं. एम कही क्षणभास  
पधी शेठ लुनमंहिरमां गया. त्यां लक्ष्मिपूर्वक अनेक प्रकारना  
पुण्य तथा नैवेद्यवडे पूजा करी विस्तार पूर्वक संगीत करायुं.  
याचकेने पण्य द्रव्यहानवडे संतुष्ट कयो. पधी शुद्ध महाराजने  
वंदन करी पोताने घेर गया. अने साधर्मिकज्ञनो साथे लोङ्न  
कर्युं. एम करतां द्विस व्यतीत थयो. रात्री समये प्रार्थना  
कर्या सिवाय पण्य व्यंतरे स्नेहवडे राजना अंडारमांथी द्रव्यना  
करेला सेक्लश उठावीने शेठना घरमां मूळया. अने कह्युं के  
णीलकुल राजतरक्षथी लय राख्या सिवाय धृत्या प्रभाषे तमे  
हान आपो. आ द्रव्य थाई रहेशे एटले णीलुं लावी आपीश.

( १०८ )

श्रीसुपार्थनाथयरित्रि.

ते सांबणी शेठ कुँडक योत्वाने। विचार करता हुता तेटलामां ते व्यंतर पोताना स्थानमां चाल्यो। गयो। राजना नामवाणा कलश ज्ञेष्ठ शेठ पोते सवारमां सुभ्य पुढेने साथे लधर राज पासे गया। अने तेणु लेट भूझीने व्यंतरनुं सर्व वृत्तांत निवेदन कर्युः। राजन्ये पछु तेओमांथी एक कलश त्यां मंगावयो। उपर लघेलुं पोतानुं नाम ज्ञेष्ठ बहु झुशी थयो। अने ते योत्वयो के महाभाग ! आ सर्व ५०४ हुं तने अर्पणु कड़ं छुं। त्यारभाद बहु संतोषी एवो। सेन योत्वयो, हे नराधीश ! प्रथम व्यंतरे रहने दशलाख सेनेया आप्या छे, तेमांथी पछु भुदारे तो एकलाख ४ कामना छे। नवलाख सेनेया व्यंतरना कडेवाथी रहारे धर्ममां वापरवाना छे। एम सांबणी संतुष्ट थधर राजन्ये ते सर्व धन तेने अर्पणु करीने कल्युं के ल्हारी धर्मचारी प्रभाणु आ। सर्व धन धर्मकार्यमां सुज्ञेथी वापर। सेनश्रेष्ठीये पछु ते सर्व धन सात क्षेत्रोमां वापरीने दीक्षा अहुणु करी कर्म अपावीने सिद्धि सुख प्राप्त कर्युः। माटे हे अव्यवेक्षो ! सेनश्रेष्ठीनी माइक निरंतर संतोष इपी रसायननुं पान करो। के जेथी अद्य समयमां जरा भरबुथी सुकृत थधर भोक्ष सुख यामो।

**इतिपञ्चमाणुव्रतपरिपालनवृष्टान्ते श्रेष्ठिसेनकथानकं समाप्तम् ॥**

— → \* ← —

### नवघनशेठनी कथा.

**प्रथमक्षेत्रवस्तुपरिभाण्यातिक्भातियार**

दानिवीर्य राज योत्वयो, हे अव्यवान ! आप धर्मशासना उपदेशक छो। आप प्राणीयोने बहु उपकारक छो। माटे कृपा

नवधनश्रेष्ठी कथा.

( १०६ )

करी पांचमा अणुप्रतमां प्रथम अतियार श्रवणु करनारी अमारी अज्ञासा पूर्णु करे। श्रीसुपार्व्वप्रभु ऐत्या, हे राजन् ! गृहाहिक वस्तुओं परिमाणु कर्याणां अति लोकश्चपी गृहथी अस्त थै जे अणु करेला नियमथी अधिक परिग्रह करे छे, ते पुढ़प नवधननी घेडे अहु हःभी थाय छे।

शू ( सूर ) द्विजराज ( सूर्य अने चांद-क्षत्रिय अने आणुप्रवृहिक ) ना समागममां अहु उत्सुक उद्याचल नवधनहृष्टांत. समान उद्यपुर नामे नगर छे. तेमां उद्यादित्य नामे राज छे. वणी ते नगरमां नवधन नामे शेठ छे. ते हृमेशां नवीन भेदनी माझक सर्व याचक इपी क्षेत्रामां दानदपी जगनी वृष्टि करे छे. अहु उत्तम शीलवाणी संपद एवा नामनी तेनी स्त्री हुती. तेओ अन्ने स्त्री पुढ़प परस्पर त्नेहथी विषयसुअ क्षोणवतां हुतां. तेवामां जैनभादिरमां भडेत्सप चालतो हुतो. तेथी तेओ उत्तुहृष्टने लीघे त्यां जेवा भाटे गयां. वणी त्यां आगण शुशुरत्नोना निधान समान सूरीश्वर भव्यल्लयेने श्रावक धर्मनो। उपहेश आपता हुता. तेथी तेओ पणु सूरिने वंदन करी देशना सांखणवा घेठां. ते समये सूरिए पांचमा अणुप्रतनी व्याख्या करी. ते सांखणी शेठ अने शोठाणीए पणु सम्यक्त्व पूर्वक पांचमुं प्रत पणु अहणु कर्युः। पछी शुद्धनी आज्ञा लै अहु प्रसन्न थै ते अन्ने पोताने घेर गयां. वणी पोताने सांतान नहीं होवाथी तेओ विधिपूर्वक जैनधर्मनी आराधना करवा लाग्यां; तेमज नवधन शेठ शुद्ध नीतिपूर्वक वेपार चलावतो हुतो पोतानी हुठानमां उत्तम करियाणु राखतो हुतो, झूठ-कपटमां ते समजतो नहोतो।

तेमज शेठ पोते धीर धारने धंधे पणु सारी रीते करता

( ११० )

श्रीसूर्यपार्वतीनाथचरित्र.

**शेठाण्हीनी  
चतुराधि.**

हता. तेथी एक ठांडोरे तेनी हुकानेथी दश हजारनो माल लाई तेना इपीया तर- तज तेणु चुकवी हीधा. एम वारंवार तेअानी आप-ले अहु चालती हुती.

एवामां एक हिवसे ते ठांडोरे वाशा हजारनो माल शेठनी हुका- नेथी उधारे लीधो. पछी टेटलोळ समय गया आद नवधने तेनी उधच्छण्ही करी त्यारे तेणु डेण्ही बतावीने क्षुं के वाह ! तमे शेठ थाई आवा धंधा करी छो ? एम शेठनी मक्करी करी सिंद्हो जवाब यशु आप्यो नहीं. जेथो श्रेष्ठीम्हे ते वात मंत्रीने करी, त्यारे मंत्री ओव्यो:- शेठल तेमांथी अर्धुं धन मने आप्यो तो तमारा इपीआ अपावुं. आ वचन शेठने बीलकुल इच्छुं नहीं तेथी राजना अंगरक्षकने त्यां गया. तेणु पण्हु तेज प्रभाणे अर्धुंद्रव्य माव्युं. पछी छेवटे नगरशेठ तथा हुर्गिपाणनी मुखाकात लीधी. त्यांथी पण्हु तेवो ज जवाब मध्यो. जेथी शेठ गलराईने पोताने घेर पाई आव्या. त्यां स्त्रीम्हे पूछ्युं हे प्राण्प्रिय ? एकदम उद्दिज्ञ थवानुं शुं कारणु ? शेठ ओव्या हे सुलगे ? वीश हज- रनो माल लाई ठांडोरे हुवे जवाब आप्तो नथी. तेमज भीजो डेअ उपाय पण्हु चाले तेम नथी विगेरे सर्व वृत्तांत क्षो. ओ ओली हे नाथ ? आ बाबतनी तम्हारे कंध पण्हु चिंता करवी नहीं. एनो हुं तपास करीश. हालमां तमे डेअ पण्हु गाममां याव्या जाय्यो. जेटलामां हुं एनो उपाय शेषी काढुं. पछी ज्यारे हुं ओलावुं त्यारे तम्हारे अहीं आववुं. ए प्रभाणे स्त्रीनुं वचन सत्य मानी नवधन वषिक अन्य गाममां गयो. त्यारभाद संपह नामे तेनी स्त्री प्रथम मंत्रीने घेर गँड. शरीरे अहलुत शाण्हुगार सज्जेला छे. लावण्य अने विलास पूर्वक हास्यवडे युपकोना मनने रंजन करती ते स्त्री मंत्रीनी आगण लेट मुझी

नवधनश्रेष्ठी कथा.

( १११ )

नीये ऐडी. तेटलामां रात्रीनो प्रथम प्रहर थयो एटले लोकेने विद्याय करी तेना दर्शनथी कुलित थयेलो। मंत्री डामना उहगारे प्रगट करवा लाग्यो के अदे ! यंद्रनी शीतल छायाथी अंग अणी जाय छे. यंद्वनस विष समान विषम लागे छे. पुण्येनो हार खडु खारे लागे छे. ठडो पवन हेहुने तपावे छे तेमज शरीर उपर धारणु करेलां जगथी भीज्ञेलां आ कमगपत्र बाणुनी पंक्ति समान भीडा करे छे. तेनुँ कारणु हीर्द नेत्रवाणी अने कमग समान मुखवाणी आ स्त्री ज छे. आ प्रभाणु डामथी विहृत थयेला मंत्रीने जाणी ते योली हे न्यायाधीश ? एक झारी विनंति सांबणे। त्यारभाद उल्लास पामतो मंत्री योव्यो। झारा सरभुँ कंध पणु कार्य होय तो सुखेथी इरमावे। जेथी तेण्णीचे ठाकोर संबंधी सर्व वृतांत जणाव्युँ. मंत्रीचे पणु खुशी थैर्ते कार्य करवाने कधुल करी कहुँ के ठाकोर पासेथी पैसा देवा तेमां शी वार ? अनी कंध पणु चिंता राखवी नहीं. परंतु हे सुतनु ? हुं खडु डामातुर थयो हुं, माटे माझं पणु त्हारे कंधक कार्य करवुँ पडशे. त्यारे ते योली अमां शुं घेठुं छे ? हुं पणु आपने आनंद आपीश. परंतु आजे झारे अद्वयर्थ प्रत छे. तेथी आजे ते कार्य करीश नहीं. परंतु सवारे एकम थवानी छे तो रात्रीना प्रथम प्रहरे तमारे सुखेथा झारी पासे आववुं. अम कही त्याथी ते राजना अंगरक्षक पासे गध. अंगरक्षक पणु एकहम तेने आवती जेइ वितर्क करवा लाग्यो के आ नवीन प्रभादा कोणु आवे छे ? शुं पातालमाथी नागडन्या आवे छे ? के डाई विद्याधरनी सी हशे ? अथवा शुं हेवांगना, असुरांगना के सिंहांगना भनुष्य लोकमां आवी छे ? अम वितर्क करतो हुतो तेटलामां पोतानी पासे आवी ते उली रही. अने कुशल वार्ता पुणी आसन उपर ऐडी. पछी अंगरक्षकना पुछवाथी

( ૧૧૨ )

શ્રીસુપાર્વનાયચરિત્ર.

તેણીએ ઢાકોરનો સર્વ છતિહાસ કહ્યો. તે પણ સંતુષ્ટ થઈ એવ્યો હે ભૃગાક્ષિ ? આ તહારું કાર્ય જરૂર હું સિદ્ધ કરી આપીશ. પરંતુ અમારું દુદ્દય પણ તહારે શાંત કરવું પડ્યે. આપી એલી અમારાથી બને તેમ હથે તો અમે કરીશું. આ હેઠ જલભિંહું સમાન અસ્તિત્વ છે, માટે સજજનોના કાર્યમાં જે તે ઉપયોગી થાય તો તે સારભૂત ગણ્યાય. એ પ્રમાણે શેડાણીનું વચન સાંભળી આનંદિત થઈ તે એવ્યો. હે ચાર્ચાંગી ? હું તો હાલમાંજ તૈયાર છું. ત્યારબાદ તેણીએ પણ પ્રત્યુત્તરમાં તેને કહ્યું કે એકમની રાત્રીએ ખીંચ પ્રહુરે તમારે અહારી પાસે આવવું. એમ કહી ત્યાંથી નગરશોઠ તથા હુર્ગપાળને ત્યાં તે ગઈ. તેઓ પણ તેને આવતી જોઇ વિચાર કરવા લાગ્યા કે વર્ષારતુની લક્ષમી સમાન ઉત્ત્રત પચોધર ( મેધ=સ્તન ) છે જેના એવી, અને ધતુપ્લ લતાની માઝક શુષ્ણ ( હોરી=દ્યાહિગુણો ) વડે શુક્તા, ખર્જીલતાની માઝક ઉત્તમ ધારા ( હાર ) વડે વિભૂષિત છે વક્ષસ્થળ જેતું, તેમજ સંસારસુખની માઝક અત્યંત સૂક્ષ્મ છે મધ્યલાગ જેનો એવી આ એવી દેખાય છે. ક્ષણમાત્રમાં તે તેઓની પાસે ગઈ અને પૂર્વની પેઢે તેઓને પણ જવાબ આપ્યો. તેથી તેઓએ પણ તેના કહ્યા પ્રમાણે કણુલ કર્યું. નગર શેઠને ત્રીજે પ્રહુરે તથા હુર્ગપાળને ચોથા પ્રહુરે આવવાનું કહી ત્યાંથી તે સ્વી પણ પોતાને ઘેર આવી.

ખીજે દિવસે પ્રલાતકાળમાં પોતાની હાસીને શેડાણીએ કહ્યું કે આજે રહુારે વિશેષ પ્રકારે સ્નાન કર-  
**મંત્રીવિગેરેની** વાનું છે માટે ઉણું જળ અને ચંદ્નાદિક  
**વિડંબના.** સર્વ સાધનો વધારે તૈયાર કર હાસીએ  
પણ કહ્યા પ્રમાણે સ્નાનની સર્વ સામગ્રી  
તૈયાર કરી બાદ દિવસ અસ્ત થયો એટલે રાત્રીના પ્રથમ પ્રહુરે

નવધનઅભીનીકથા.

( ૧૧૩ )

મંત્રો સંજ થઈ શેડને ત્યાં આવ્યો. જેથી શેડાણુંએ મંત્રીને સહકાર કરી સુગંધિ તૈલવડે તેનું અંગમર્દન કર્યું. પછી સ્નાન કરાવી ચંદનનો લેપ કર્યો. તૈલવામાં દ્વારના કમાડ ડેકવાથી સાંકળનો અવાજ તેના સાંભળવામાં આવ્યો. એટલે પોતાની હાસીને દ્વાર આગળ મેઝલીને અભર કરાવી તો ત્યાં ઉલેલા અંગરક્ષકે કલ્યું કે કમાડ ઉઘાડ. તે સાંભળી મંત્રી ભયબીત થઈ ગયો. અને બોલ્યો કે હે પ્રિયે ? કોઈ પણ ગુમ સ્થાનમાં જલદી મુને સંતાડી હે, નહીં તો તે મુને વેખશે તો તેમાં મહારી બહુ ખરાથી થશે. શેડાણુંએ પણ તરત જ ઓરડીની અંદર મંત્રીને પુરી દીધો અને તેનું દ્વાર ખંધ કરી તાજું લટકાયું. મંત્રી પણ ભયને લીધે ચુપચાપ અંદર બેસી ગયો. ત્યારબાદ અંગરક્ષક અંદર આવ્યો. તેને પણ તૈલમર્દન કર્યો બાદ સ્નાન પૂર્વક વિલેપન કરી રહ્યાં એટલામાં નગર શેડનું આગમન થયું. તેથી અંગરક્ષકને પણ મંત્રાની માફક એક ઓરડામાં પુરીને શેડને અંદર બોલાવ્યા. તેમને પણ સ્નાનાદિક વિધિ કરી ત્રીજી ઓરડામાં પુર્યો. પછી ચાથા પ્રહરે હુર્ગિયાળ આવ્યો. તેને પણ તેવીજ રીતે તૈલમર્દનાદિક પ્રયોગ કર્યો બાદ બુદ્ધા ઓરડામાં પુરી દીધો, કારણું કે પ્રથમ કરેલા સંકેતપ્રમાણે શેડાણુનો ભાઇ દ્વારમાં આવી ઉસો હતો. ત્યારબાદ તેણે અંદર પ્રવેશ કર્યો અને પોકો મૂકી બહુ રોવા લાગ્યો. તે પ્રસંગે સંપદ શેડાણી પણ અગાધ હુંઘ સાગરમાં દૂધી હોયને શું ? તેમ મંત્રી વિગેરેના પ્રતિયોગિ માટે વિલાપ કરવા લાગી. તૈલવામાં એકદમ રાત્રી વિરામને સૂચન કરનાર શંખ વાય્યો. જેના ગંલીર શણદથી સર્વ દિશાઓ બહેર મારવા લાગી. વળી નવધન શેડ મરણ પામ્યા એવી વાર્તા સર્વ નગરમાં ફેલાઇ ગઈ જેથી સમય નગરના લોકો ત્યાં એકઢા થયા.

( ૧૧૪ )

શ્રીસુપાર્થનાથચરિત્ર.

તે વૃત્તાંત રાજના સંભળવામાં આંથું અને જાણ્યું કે એને સુત્ર નથી. માટે એનું સર્વધન મંત્રી મારકૃતે અહીં મંગાવવું જોઈએ. કારણું કે અપુત્રીયાનું ધન રાજ્યને સ્વાધીન થાય છે. એમ વિચાર કરી રાજએ મંત્રીને બોલાવવા માટે દ્વારપાળને હુકમ કર્યો. તેણે ત્યાં જઈ તપાસ કર્યો; પરંતુ મંત્રીને પત્તો લાગ્યો નહીં. તેથી તેણે ત્યાં આવી રાજને સર્વ હુકીકત નિવેહન કરી. પછી અંગરક્ષકની તપાસ કરાવી તેનો પણ મેળાપ થયો નહીં. ત્યારખાદ નગરશોઠ અને હુર્ગપાળને અનુકમે બોલાવવા મેાકદ્વા. તેએ પણ ન મળ્યા. તેમજ પૂછવાથી કંઈ સમાચાર પણ મળ્યા નહીં. પછી દ્વારપાળ પાછો આવીને રાજને કહેવા લાગ્યો કે હે નરેંદ્ર ? તેએ કોઈ પણ ઘેર નથી. તેમજ તેએ કચાં ગયા છે તે પણ કોઈ જાણ્યું નથી. તે સાંભળી વિસ્તિત થઈ રાજ પોતે જ નવધન શોઠને ત્યાં ગયો. અને યોગ્ય આસન ઉપર બેસી બોલ્યો. હે મુખ્યે ? હવે તું દિદન કરીશ નહીં. મહારા આગમનથી તહારે કોઈ પણ પ્રકારનું હુંઘ રાખવું નહીં. ધૂઢ્છા પ્રમાણે પોતાના વૈલબ્યએ આનંદ કર. તેમજ હાન પુછ્ય કર. કેડીમાત્ર પણ તહારું ધન અમારે લેવું નથી. તે સાંભળી સંપ્રદ્યોદાણી બોલી નાથ ? મહારે આ દ્રવ્યનું કંઈ પણ પ્રચોક્ષન નથી. મહારે હીક્ષા અહુણું કરવાની છે. જેથી આ સર્વ ધન આપ સુષેષી અહુણું કરો. એમ કહી શોઠાણીએ ચારે ઓરડાએ અહારથી અતાવ્યા અને કલ્યું કે હે રાજન ? આ ઓરડાએમાં નવધન શોઠનું સવ દ્રવ્ય લરેલું છે. તે આપ તપાસી જુઓ. રાજએ અનુકમે એકેક ઓરડો ઉધાવીને જોયું તો પ્રથમં ઓરડામાં સર્વાંગ લેપ કરેલો મંત્રી બેડો હતો. તેમજ બાકીના ઓરડાએમાં તેવીંજ સ્થિતિમાં અંગરક્ષક, હુર્ગપાળ અને નગર શોઠને જોયા. તેઓનાં અહુલુત સ્વરૂપ જોઈ રાજએ તેમને પૂછ્યું તો પણ તેઓએ શરમાદીને કંઈ પણ પ્રત્યુત્તર

नवधनश्रेष्ठोनीकथा।

( ११५ )

आयो नहीं त्यारे शेठाणी भोली हे राजधिराज ? हुं एमनुं सभथ वृत्तांत कहुं ; परंतु एओने अभयदान आपो. राजभे मंत्री विगोरेने अभयदान आयुं एटले संपद शेठाणीचे ठाकै-सना वृत्तांतथी आरंभी सविस्तर सर्व हडीकत कही बतावी.

राज ऐव्यो हे मंत्री ? आ स्त्रीजे जे वात कही ते खरी छे ? मंत्री ऐव्यो स्वामिन् ? तेनुं कडेवुं संपद शेठाणीचे सत्य छे. एम तेना कडेवाथी राज ऐव्यो आपेली शिखा. अरे ? मंत्री ? सूक्ष्म, आदर, दूर अने भणु. सभीप रडेली वस्तुचो जेवामां राजनां खरेखर नेत्र मंत्रीचो गण्याय छे. कारण्यु के कामदृपी अंधकारथी छवायेली अने विवेकहीन एवी राजनी चर्मचक्षु तत्त्वार्थ जाणी शक्ती नथी. तेथी हे सचिव ! आ त्हारी प्रवृत्ति खडु विपरीत थध. त्यारभाऊ संपद शेठाणीचे राजने विनांति करी कछुं के हे नराधीश ? आरटो अपराध आप क्षमा करो. एओने आमां कांध होष नथी, कारण्यु के कामदृपी महायोरटाच्याथी पीडायेला पुढेहो हळूत्य करीने तृण्याथी पणु हलकी स्थिति पाचे छे. कछुं छे के—

अकयपहारेण मणंगणॄ, कुसुमाउहेण वि खणेण ।

जे विवर्पंति हयासा, ते हुंति लहु तणाओ वि ॥

जे ग्रहार करतो नथी तेमजु कुसुमो जेनुं आयुध छे एवा कामना पाशमां जेओ पडे छे तेओ क्षणुभावमां निराश थर्ड तृण्याथी पणु हलका थाय छे. तेमजु आ हुनियामां कामदृपी अंधकारने दूर करवा माटे सूर्य चंद्र अजिन अने भण्यु रत्नो पणु समर्थ थता नथी. वणी कामांध पुढेहो सत्य पदार्थने होमी शकतो नथी अने असत्य वस्तुने हेणे छे. महा ऐहनी वात छे के

( ૧૧૬ )

શ્રીસુપાર્થનાભગરિત.

સૂર્યોદય થયો છે છતાં અપૂર્વ કામરૂપી ઘોર અંધકાર વ્યાપી રહ્યું છે. વળી હે રાજન્? શુભ વસ્તુને પ્રકાશ કરવામાં પ્રવીષુ એવા માનસિક વિવેક સિવાય કામરૂપી અંધકારને હૃઠાવવામાં અન્ય કોઈ પણ સમર્થ નથી. તેમજ જન્મથી આરંભી ફરેક લુંબાને વિષય સેવન બહુ પ્રિય હોય છે. તેથી પરમ સન્જનનેને સેવવા લાયક એવા ધર્મનું આચરણ કિંચિત માત્ર પણ આચરવામાં આવતું નથી. પરંતુ તે સદાચાર જ આ સંસાર સાગરમાં તારનાર છે. રાજ ઓદ્યો હે સુંદરી ? ચરણ એટલે શું ? તેનો અર્થ અમને સમજાવ. ત્યારખાદ સ'પહૃશોઠાણીએ અષ્પ્રવચન માતાતું સ્વરૂપ સવિસ્તર વર્ણવી અતાંયું. તે સાંભળી મંત્રી વિગેરે સર્વે પ્રતિષેધ પામ્યા. અને તેઓ ઓદ્યા કે પરમ દ્યાલુ એવી હે પરમેશ્વરી ? અમારો આ અપરાધ તું ક્ષમા કર' મોહરૂપી મહાસાગરમાંથી તેં જ અમારો ઉદ્ધાર કર્યો. વળી હવે કોઈ પણ રીતે સફુરુના ચરણ કમળનું દર્શન કરાવ. કે જેથી અમે આત્મહિત કરીએ.

એવામાં ત્યાં ઉદ્યાનપાળ આંદોલને વિનંતિ કરી ઓદ્યો.

કે હે નરેંદ્ર ? દેવ તથા અસુરેંદ્રોથી સેવાતા

**શ્રીચંદ્રમુનિ.**

શ્રીમાન् શ્રી ચંદ્રમુનિ ઉદ્યાનમાં પદ્ધાર્યા છે.

એ પ્રમાણે વચ્ચાનામૃતતનું શ્રવણુ પુટથી પાન કરી સંતુષ્ટ થયેલ રાજને પોતાના અંગે ઝેરેલાં સર્વ આલારણો ઉદ્યાનપાળને અર્પણુ કર્યાં. પછી મંત્રી પ્રમુખ ચારે જણાએ રાજને કલ્યું કે જે આપની આજા હોય તો સૂરીથરની પાસે અમારે હીક્ષા લેવી છે. રાજ ઓદ્યો તમે ઉત્તમ કુળમાં ઉત્પજ્ઞ થયા છો માટે તમને હીક્ષા લેવી ઉચિત છે. ત્યારખાદ સ'પહૃશોઠાણીએ તેઓને રનાન કરાવી ચંદ્રન લેપપૂર્વક નાના પ્રકારના અલંકારોથી વિભૂષિત કર્યાં. પછી માંગલિક ઉપયારો

નવધનશ્રેષ્ઠીનીકથા.

( ૧૧૭ )

કરી નરેંદ્ર સહિત તે ચારે જણા ઉત્તમ હસ્તિતએ. ઉપર બેસી બહુ આનંદથી મુનીંદ્રની પાસે ગયા. સૂરિએ પણ મંત્રી પ્રમુખને વિધી પૂર્વિક દીક્ષા આપી. અનુષ્ટુમે તેઓ કર્મપાશથી મુક્ત થઈ સિદ્ધ સુખ પામ્યા. રાજાએ પણ શ્રાવકધર્મનો સ્વીકાર કરી સંપ્રદ્ય શેડાણીને પોતાની જહેન તરીકે માની લીધી. અને તેના પતિને પણ બીજ ગામમાંથી બોલાવી નગર દોકેાની સાક્ષીએ તેને નગર શેડની પહોંચી આપી ત્યારથાદ તે ડાકેારને બોલાવી તેતું માગતું દ્રવ્ય પણ અપાવરાવ્યું.

નવધન સહિત સંપ્રદ્ય શેડાણી વિશે કરી નૈન મર્ધમાં તત્પર થર્ડ. કેટલોક સમય વ્યતીત થયા નવધનનો પ્રમાદ. બાદ રાજમાન્યના અલિમાનથી નવધન બહુ પ્રમત્ત થયો. અને પોતાની નલુકનાં ઘર અરીદી પોતાને તાણે કરવા લાગ્યો. તેથી તેની સ્વીએ કહ્યું કે એમ કરવાથી તમને અતીચાર લાગશે. કારણ કે પાંચમા અણુ-પ્રતમાં એક ઘર રાખવાનું તમે કહ્યું છે. અને તેજ પ્રમાણે તમેએ શુરૂ પાસેથી પ્રત સ્વીકારેલું છે. નવધન બોલ્યો હે ચંદ્રાનને? એક ઘર કહાચિતું નષ્ટ થાય તો શું બીજું નનોઈએ? કી બોલી પરંતુ તમ્હારું પ્રત નષ્ટ થવાથી સમસ્ત નષ્ટ થયું એમ નિશ્ચય જાણુનો. વળી તમે આ પ્રમાણે નિરપેક્ષ થર્ડ મુહારી આગળ જોટા જોટા ઉત્તર આપો છો માટે ઘર સહિત તમ્હારો ત્યાગ કરી હું દીક્ષા અહણ કરીશ. એમ કહી તેણીએ સહયુર પાસે જઈ દીક્ષા લીધી અને પોતાનું કાર્ય સિદ્ધ કર્યું. નવધન શેડ પણ ધાર્મિક અને વ્યવહારિક એમ બન્ને પ્રકારની સંપર્દાઓથી વિમુક્ત થયો. અને ધર્મહીન થવાથી તે ઘરનો અધિપતિ વ્યાંતર ફેલ તેને વળ્યો. નેથી તે ઉન્મત્ત થર્ડ ગાંડાની માઝુક નગરની અંદર ભરણું કરવા લાગ્યો. તેની ચારે તરફ છોકરાં વીંદાઈ-

( ११८ )

श्रीसुपार्थनाथचरित्र.

बणतां हुतां. तेच्चेमांथी केटलाक तो। तेनी उपर धुण नांगे, केटलाक पत्थर अने ढेक्का विगेरे देक्के तो केआळक हास्य करे छे आ प्रभाणे नवधन बहु हुईशा लोगवीने भरणु पाख्यो। बाह असुर लोकमां उत्पन्न थयो। माटे छे भव्य प्राणियो। अहुणु कुरेला प्रती अंदर स्वदृप पछु अतीयार सेवनो नहीं। कारणुके निरतियार प्रतपाणवाथी भोक्ष सुखनी प्राप्ति थाय छे अने आ हुनीयानी अंदर स्वज्ञनमां पछु ते हुःभी थतो नथी।

इति पञ्चमाणुव्रते प्रथमातिचारविषाके नवघनदृष्टांतः समाप्तः ॥

## भरत श्रेष्ठीनी कथा.

**द्वितीय इच्छसुवर्णुपरिभाणातिकभातियार.**

दानवीर्य राजा ऐत्यो हे कृपाणु ! हुवे पांचमा अल्प-  
प्रतमां द्वितीय अतीयारनुं स्वदृप अमने समजवो केथी  
अमारे। आ सांसार सागर सुखवडे तरवा लायक थाय। श्री सुपा-  
र्थग्रलु ऐत्या हे नरेश ! त्वारा प्रक्षनो उत्तर हृष्टांत सहित  
अमे कहीच्चे छीच्चे माटे हुं सावधान थर्ड श्रवणु ४२. जे पुरुष  
नरेंद्रादिकी सहाय भेगवीने परिगृहीत नियमथी वधारे द्रव्य  
भेगवी पछी ते द्रव्य पोताना भित्रे। वगेरेने व्हेंची आपे छे,  
ते भरतनी पेठे लीघेला द्रव्यविरति प्रतनुं अंडन करे छे।

मानगेट नामे एक नगर छे। तेमां मानवराज नामना

महाराज राज्य करे छे। हृदयने आनंद

**भरतहृष्टांत.** आपवामां साक्षात् विष्णुनी लक्ष्मी समान

परमथी नामे तेमनी छी हुती। वणी ते

नगरमां शंख नामे बहु विख्यात शेठ हुतो। श्वेतिका नामे

ભરતશ્રેષ્ઠીનીકથા.

( ૧૧૬ )

તેની સ્ત્રી હતી. તેઓને ભરત અને રત્નનામે વિજયવાન् એ પુત્ર હતા. તેમને કમલશ્રી તથા પદ્મશ્રી નામે અનુકુમે અતિસુંહર ખીએંની હતી તેમજ તેઓનું સર્વાદુદુંખ પણ સ્વભાવથી સરલ અને પરસ્પર સ્નેહ શ્રૂંખલાથી બંધાયેલું હતું.

એક દિવસ નગરની બહુર તેમના ઉદ્યાનમાં વિજયસૂરિ ગણું પધાર્યાં. તેઓ ચાર જાન ચુક્ત અને વિજયસૂરિ. ક્ષમાના સાગર હતા. હુવે તેજ બગીચામાં કીડા માટે ગચેલા ભરત અને રખસ એ બન્ને બંધુઓએ તેમને જોયા. તેઓએ પાસે જઈ બહુ ભક્તિપૂર્વક વંદન કર્યું. મુનિએ પણ ધર્મલાભ આપ્યો. પછી સંભાષણ કરવાથી તેઓ જીજાસુ થઈ નીચે એઠા, તેથી મુનિશ્રીએ જીનેંદ્ર કથિત બન્ને પ્રકારના ધર્મની વ્યાખ્યા તેમની આગળ કરી. પરંતુ મુનિ ધર્મધાર્યવામાં અશક્તા હોવાથી બન્ને જણે સભ્યકૃત્વ મૂલ શૃહીધર્મ સ્વીકાર્યો. અને વિશેષ કરી પાંચમું વ્રત તેઓએ સંકટ (ધણી સંકિર્ણતાથી) અહણું કર્યું. મુનિશ્રીએ ભરતને કહ્યું કે પાંચમા વ્રતમાં તને ખીંચે અતિચાર લાગશે માટે તું તે અતિ સંકટ (સંકડું) વ્રત લાદશ નહીં. ત્યારે તે પણ એલયો, જગત્ પ્રલો ! આ કંઈ સંકટ-સાંકડાધર્યવાળું નથી. મહેંતા થોડા દિવસ માટે આ લીધું છે. એમ કહી તે બન્ને જણું મુનિને વંદન કરી પોતાના ઘેર ગયા.

એક દિવસ પોતાના વાસભવનમાં ભરતે રાત્રીના પ્રસંગે એકાંતમાં લક્ષ્મીદેવીને જોઈ. લક્ષ્મી બોલી લક્ષ્મીનું આગમન. હે વત્સ ! હું તહારી ઉપર સંતુષ્ટ થઈ છું, જે કે તહારે લક્ષ્મીની ધર્યાંથી નથી તો પણ હું પ્રસન્ન થઈને આપું છું માટે તહારે જે દ્રોધની ધર્યાં હોય તે માગ. કારણુંકે રહેં પૂર્વભવમાં

( १२० )

श्रीसुपार्खनाथचरित्र.

પણ પદથી મહારી બહુ આરાધના કરેલી છે. અને હાલમાં તહાં ચિત્ત જૈનમતમાં નિશ્ચલ છે એમ હું જાણું છું. ભરત બોલ્યો, હે દેવી ! મહારે અધિક દ્રવ્યનું કંઈપણ પ્રયોજન નથી. કારણુકે એક લાખ રૂપીઆ મહારે ઘેર રાખવાની મુને છુટ છે. તેથી વધારે દ્રવ્યનો મહારો નિયમ છે. શ્રીદેવી બોલી વત્તસ ! દેવતા-એનું દર્શન નિષ્કળ હોતું નથી. પૂર્વલવમાં તું કરેડાપતિ હતો, માટે હાલમાં પણ તું તેવોજ થા, ભરત બોલ્યો, ભગવતી ! એમ કરવાથી મહારા વ્રતનો ભંગ થાય. દેવી બોલી જો એમ કરવાથી વ્રતનો ભંગ થાય તો તહારી ઈચ્છા પ્રમાણે પોતાના કુટુંબીઓને તે ધન આપી દે. એમ કહી તેજ વખતે ભરતે ના કદ્યા છતાં પણ કોઈ સુવર્ણની વૃદ્ધિ કરી લક્ષમીદેવી પોતાના સ્થાનમાં ગાઇ.

પોતાના અહુણુ કરેલાં નિયમના ભંગથી ભય પામેલા ભરતે  
કોટિ ધનના વિલાગ કરી સ્વજન વર્ગને  
રબસનો ઉપદેશ. વિના વ્યાજે ઉધારે આપ્યા. તે જેઈ  
તેનો નાનો ભાઈ રબસ બોલ્યો, ભાઈ !  
તેં પાંચમું વ્રત બહુ આદરથી અહુણુ કર્યું છે. તેને તું મલીન  
કરે છે તે ચોખ્ય ગણ્યાય નહીં. કારણુકે આપણે બન્નેને પરિથહુમાં  
એક લાખ રૂપીઆની છુટ છે, છતાં તું નિયમનો અનાદર કરી  
નિઃશંક થઈ કોઈ દ્રવ્યનો વિલાસ કરે છે. વળી જેથી બંધનમાં  
પડવું પડે એવા પાપકાર્યના મૂળાર્થ વૈલવનું આપણે શું પ્રયો-  
જન છે ? વળી ધર્મમાં તે ધન વાપરવું એમ જો તું કહેતો  
હાય તો તેવા ધર્મથી પણ શું ? કારણુકે જેનાથી વત મલીન  
થાય તે ધર્મ પણ ગણ્યાય નહીં. જેમકે આ મીએ છે એમ બોલીને  
વિષ ખાવામાં આવે તો શું તે મૃત્યુ જનક ન થાય ? માટે નિય-  
મથી અધિક જે દ્રવ્ય તેં સ્વજનાદિકને પોતાની સત્તાથી

ભરતશ્રેષ્ઠનીકથા.

( ૧૨૧ )

આખ્યું છે, તે ધનનો જલહી તું ત્યાગ કર. નહીંતો હું જૂદો રહીશ. ધનમાં લુણધ થચેલો. તે એલ્યો ભાઈ ! આ ધન મેળે વેપારથી મેળવેલું નથી, ડાઇની ચારી કરી નથી, તેમજ અગાંતકારથી પણ મેળવ્યું નથી. પરંતુ મહારા ના કદ્યા છતાં લક્ષમી દેવીએ આ ધન આપેલું છે. અને તે પણ મેં મહારા નિયમ પ્રમાણે રાખી બાકીનું સ્વરૂપનોને આપેલું છે. વળી એક લાખથી વધારે જે દ્વય હું મેળવું છું. તે સર્વ ધર્મમાં વાપરં છું. પછી રખસ એલ્યો બંધુ ! અહીંથાં તું એક દૃષ્ટાત સાંભળ.

આ નગરની અંદર પહેલાં ધનશ્રેષ્ઠી રહેતો હતો. તે બહુ ધનવાન् તેમજ મિથ્યાદાષિ હતો. અનુકૂમે ધનશ્રેષ્ઠી. બહુ પુત્રાદિકના પરિવારથી તેતું કુદુંબ બાહુ વધી ગયું. એક દિવસ તે રાત્રીએ સુતો હતો. તેવામાં શરીરે શ્વેત વાસ પહેરેલાં હતાં, કંઠમાં મનોહર હાર ધારણું કર્યો હતો, અને મૃગ સમાન જેનાં નેત્ર વિશાળ હીપતાં હતાં એવી લક્ષમી સમાન ઉત્તમ સ્વી તેના જેવામાં આવી. સ્વી એલી હે ધનશ્રેષ્ઠી ! તું મહુને એણાએ છે કે નહીં ? તે એલ્યો હા ! હું સામાન્ય રીતે જાણું છું કે તું સ્વી છે. પછી તે સ્વી એલી હું લક્ષમીદેવી છું. હું તહારા કુળમાં સાત પુરુષથી આરંભી બહુ સમયથી રહું છું. હવે હું અન્ય સ્થાનમાં જઈશ. કારણુંકે ઘણ્ણો. સમય એક સ્થાનમાં રહેવાથી હું ભિજી થાઉં છું. શ્રેષ્ઠી એલ્યો, જલહી ચાલી જા, અમહારે તહુને રૈકવા-તું કંઈ પ્રયોજન નથી, લક્ષમી એલી :—હે શ્રેષ્ઠી ! તું બહુ નિંદુર છે. કારણુંકે એટલું પણ તું ન એલ્યો કે તહારે જવાનું શું કારણું છે ? મહેં શું તહારો અપરાધ કર્યો છે ? જોકે હું સાક્ષાત્ લક્ષમી દેવી છું. છતાં પણ તહેં અલક્ષમી ધારી મહારો અપરાધ કર્યો. પરંતુ તહારી નિઃસ્પૃહપણ્ણાથી હું પ્રસન્ન થઈ છું. માટે હવે

( १२२ )

श्रीसुपार्क्षनाथवरित्रः

तહारी ईच्छा प्रभाणु वरहान माग. श्रेष्ठी योव्यो जे के तुं तुष्ट थઈ छे तोपणु भहारे तहाइँ काम नथी छतां जे भहारी उपर तुं अरेअर प्रसन्न थई होय तो भहाइँ समस्त कुदुं अ कोधपणु समये दंत कलेशथी. छुटुं न पडे तेवी दीतनो अ होअस्त कर. ते सिवाय बीजुं कंधपणु तहाइँ भहारे काम नथी. ते सांखणी हास्यपूर्वक लक्षभीहेवी आती. हेश्रेष्ठी! तुं व्यवहारमां खहु दक्ष छे. कारणु के आ वयनथी त्हें भहारा पग बांधी लीधा. वणी भहारा प्रयाणुनो सुख्य उपाय चे छे के प्रथम तो अंधुओने हुं दंत कलेश करावी परवपर स्नेहथी छुटा पाडुं छुं. पधी तेओ कलेश करी राजा पासे क्यर्याद करे छे. त्यां आगण चेक बीजुं तेओ विडुङ्ग योके छे. तेथी राजा तेओनो दंड करे छे. अथवा तो तेओ. अन्योअन्य शुद्ध करी पुण्यहीन थई मरणु पामे छे. त्यारभाद ते सर्व धन राजने स्वाधीन थाय छे. माटे हे अंधु ! लक्षभीमां कंध सार नथी. वणी हे लाई ! जे के धनश्रेष्ठी भित्याहृषि, अविवेकी अने जैनमतथी विमुख होतो छतांपणु तेनी छच्छा लक्षभी उपर थई नहीं. अने तुं तो विवेकी, मतधारी अने जैनमतमां निपुणु छे. तोपणु खहु निधुरताथी हुण्ध थई पोते शहुणु करेला नियम-नो लांग करे छे. रे भूढ ! आ व्रत लेती वर्खते शुद्धे तहने ता पाडी हुती छतांपणुहें आ नियम लीधो छे. माटे हजुपणु तुं आ अतियारथी विराम पाम, विराम पाम. ते सांखणी भरत योव्यो शु म्हें आ योटुं कर्युं छे ? जेथी भहने पणु उपहेश देवा तुं तैयार थयो छे. तुं एकलो ज धार्मिक हुशो ? बीजे कोध हुशो ज नहीं ? रक्षस योव्यो हे बांधव ! भ्लें जे कंध आपने कहुं छे ते आप क्षमा करो. अम कही ते पोतानो विभाग लाई जुहो रघो, अने पोतानी हुकानमां वेपार करवा लाग्यो, तेमज निरंतर विधि-पूर्वक धर्मनी आराधना करवा लाग्यो. हवे भरत पोतानी मरणु

અરતશ્રેષ્ઠનોકથા.

( ૧૨૩ )

પ્રમાણે ચાલતો હતો તેથી. ડોઈક વખતે એવા ગુનામાં આવી પણ્યો કે જેથી રાજને તેનો બહુ અપરાધ જાણી એવો હંડ કર્યો. કે જેથી સોજન માત્ર પણ તેને હુર્બલ થઈ પડ્યું.

**ધર્મનો-** રખસ વણિકની કાર્તિ તથા ધન સંપત્તિ હુમ્મેશાં વધવા લાગી. જેમ જેમ વૈલવ  
**ચમતકાર** વધવા લાગ્યો. તેમ તેમ ધર્મમાં અધિક દ્રોધ વાપરવા લાગ્યો. તેવામાં એક ખલ મુર્ખે છધ્યાને લીધે રાજને ચાડી કરી કે આ રખસ વણિક બહુ ધનાદ્ય છે. માટે એની પાસેથી દ્રોધ લેવું જોઈએ. એ વાત સાંભળી રાજને તરતજ રખસને મોલાવી તેને એકાંતમાં કહું કે હાલમાં અમારો ખજનો ખુટી ગયો છે. માટે એક લાખ રૂપીઓ મને આપો, તેણે યુક્તિ પૂર્વક જવાબ આપ્યો કે મહારે ધેર કે કંઈ સંપત્તિ હેતું તે આપની જ છે. આપને જોઈએ તેટલું ધન સુખેથી આપ અહંક કરો. જે કે અમહારા પ્રાણું પણ આપના આધીન છે. તો અનેક અનર્થ જનક એવા આ દ્રોધનો તો હિસાબજ શો છે ? પછી રાજને ધન લેવા માટે મંત્રીને તેના ધેર મોકદ્યો. તેવામાં શાસન દેવીએ રખસના સ્નેહથી તેના ધરમાં જે દ્રોધ હતું તે સર્વ શુભેત કર્યું. મંત્રી પણ ત્યાં ગયો અને તેનું ધર જોત કરી મંનુષા, પેરી પટારા વિગેરેમાં બહુ તપાસ કરીને જોયું. પરંતુ કોઈ ડેકાણ્યુ કિંચિત માત્ર પણ ધન જેવામાં આંધું નહીં. ત્યારથાદ મંત્રીએ તેના મનુષ્યોને બહુ દાખથી પૂછ્યું કે રખસ શ્રેષ્ઠી બહુ ધનવાન ગણ્યાય છે છતાં કેમ કંઈ દેખાતું નથી ? તેએ એવ્યા અત્યાર સુધી હરેક પેરીએ ધનથી લરેલી હતી. છતાં હાલમાં શું થયું તે સમજાતું નથી. તે સાંભળી મંત્રી વિસ્મય પાડ્યો. અને તે વાત જણાવવા માટે પોતાના માણુસને રાજ પાસે મોકદ્યો. તેના કહેવાથી રાજ પણ ચકિત થયું એકદમ રખસ સ-

( ૧૨૪ )

શ્રીસુપાર્થનાથચરિત્ર.

હંત ત્યાં આવ્યો, તેણે પણ ધનરહિત સર્વ સ્થાન જોઈ પોતાની સાથે આવેલા રલસને પૂછ્યું અરે ! આશું ? તહારું બધું ધન કયાં ગયું ? કિંવા શું કોઈ અન્ય સ્થળમાં તેં નાંખ્યું છે ? રલસ એહ્યો હે નાથ ! આ બાખતમાં હું બરોબર કંઈ સુમજુ શકતો નથી. કારણું કે હાલમાં હું હુકાનમાંથી હશ હજાર રૂપીઆ કેઠને અહીંથાં પેટીમાં ભરીને આપની પાસે આવ્યો હતો. એમ તેઓની વાત ચાલતી હતી તેવામાં અદ્યથથદું દેવી બોલી હેનરેંડ ! સાવધાન થએ તું એક મહારું વચન સાંલગ. આ રલસ વણિક નિરપરાધી છે. તેમજ જૈન ધર્મનો અનુરાગી છે, છતાં તેણે અનુધન લેવા માટે કે વિચાર કર્યો છે તે બહુજ તને અનર્થદાયક થશે. વળી હું એમ ન જાણી શકે મને પ્રથમ કલ્યું ન હોતું. હવે જે તેની કોઈ પણ વસ્તુ ઉપર તું ફષ્ટિ કરીશ તો ત્હારા પરિવાર અને નગર સહિત હું ચુરેચુરા કરી નાખીશ. એમ આકાશ વાણી સાંલળી રાજ ભયભીત થએ ગયો. અને રલસની ક્ષમા માળી કલ્યું કે, શોઠ સાહેબ ! આપનું ધન આપ સુખેથી લોગવો. મહારે તેનું કંઈ પણ પ્રયોજન નથી. ત્યારખાદ સર્વ દ્રવ્ય પ્રથમની માક્ષક દેખાવા લાગ્યું. વળી દેવીએ ચાડી કરનાર તે લંડ પુરુષનું સુખ વાંકુ કરીને છાડી મૂક્યો. રાજ પણ પોતાના સ્થાનમાં ગયો. ત્યારખાદ રલસ શ્રેષ્ઠી પણ અનાથાદિક લોકોને વિશેષ પ્રકારે હાન આપવા લાગ્યો. વળી ભરત શ્રેષ્ઠી પાંચમા વતને કંલકિત કરી ભરણ પામી નાગદોકમાં ઉત્પજ્ઞ થયો. અને ત્યાંથી નીકળી સાતમા લવમાં મોકસુખ પામશે. તેમજ રલસ શ્રેષ્ઠી ધર્મનું આરાધન કરી છેવટે સમાધિ પૂર્વક કાળ કરી ઘ્રણદોકમાં ઉત્પજ્ઞ થયો. ત્યાંથી પુષ્ય ઉપાર્જન કરી ત્રીજે લવે શિવસુખ પામશે. માટે હે લંઘ પ્રાણ્યોએ ? જેનો જન્મ તેનો નાશ અવસ્થય થવાનો છે. તેમજ વૈલવ પણ જલ

देशलनीकथा.

( १२५ )

भिंहु समान अति चंचल छे. आ प्रभाणे समज्जने निरंतर अहंग  
करेकां मरो पाणवानी द्रष्टवा राखवा

इति परिग्रहपरिमाणवते द्वितीयातिचारविपाके भरतकथा-  
नकं समाप्तम् ॥

—→॥॥←—

## देशल श्रावकनी कथा.

### धनधान्य परिभाणातिकमातियार.

दानवीर्य राज्ञ प्रखुने वंहन करी ऐव्यो हे भगवन ? हुवे  
त्रीज अतियारनुं लक्षणु द्रष्टांत सहित कडो जेथी आमारां पाप  
हूर थाय. श्री सुपार्व प्रखु ऐव्या ने पुउष विरतिनी विराधनाना  
भयने लाघे देशल श्रावकनी खेठे नियमथी अधिक राखेलुं धान्य  
स्वजनाहिकने आपे छे ते विरति धर्मने। विराधक थाय छे.

आ जगत्रमां प्रण्याति पाखेलुं पृथ्वी इपी खीना लालस्थ-  
गमां तिलक समान अत्यंत धूवित्र

**देशलश्रावक.** अने अनेक प्रकारनी शोभावडे संचु-  
क्त सिद्धपुर नामे नगर छे. तेमां शुद्ध

बुद्धिना प्रलावथी भेणवी छे कीर्ति लेण्ये एवा देवराज नामे सुप्र-  
सिद्ध राज्ञ छे. विनय शुणवडे लोडेने आश्चर्य करती प्रियदर्शना  
नामे तेनी खी छे. वणी ते राज्ञने त्यां चारसोनवाणुं मंत्रीआ छे.  
तेमज पांचसो पुरा करवा भाटे एक मङ्गाटा मंत्रीनो ते तपास  
करतो हुतो. वणी तेज नगरमां बहु धनाद्य वैश्रमण नामे श्रेष्ठी  
रहेतो हुतो. धन, धनपति, धवल अने यश नामे तेने चार पुत्र  
हुता. तेमां घेलो लेण विगेरेनुं काम करे छे. जीजे धन धान्यनो

( १२६ )

श्रीसुपार्खनाथवरित्र.

વधारे करे छे. त्रीजे पशुओंनो रक्षा अने चायें लंडारनुं काम करे छे.

ओक द्विस श्रेष्ठीचे पोतानो अंत समय जाणी घरना चार भुष्याओंमां चार कलश दाटया. पठी भीजे कार्य वस्था. द्विसे सर्वे पोताना कुटुंबीओंने योदाती लोजनाहिक सतकार करीने श्रेष्ठीचे कहुं. म्हें म्हारा भुजभग्यी पुष्कर द्रव्य भेगव्युं छे. परंतु पुत्राहिकना स्नेहथी विमूढ अनी शुक्लस्थानमां एक पाई पशु वापरी नथी. परंतु हातमां परदेशक मार्गे जतां भातु जेहिंचे, ते माटे एटली म्हारी प्रार्थना छे के साते पुष्य शेत्रोमां एक लाख रुपीआ म्हारा निभित्ते तमारे वापरवा. अने ते माटे हात ते रुपीआ तम्हारी पासे गाणी लाईने राखो. एम कही शेडे पोते ज तेओंने लाख रुपीआ गाणी आऱ्या. वणी पोताना भरणु पक्षात् पोताना पुत्रो धन माटे परस्पर कलेश करशे एम जाणी स्वजन समक्ष तेओंने तेणुं कहुं, के नेत्रथी मुख अने मुखथी नेत्र तेमज केशथी भस्तक अने भस्तकथी केश पशु शोले छे. तेमज एकचितावाणा ऐ खण्ड पशु पत्थर भरेलुं गाडुं ऐच्यी जाय छे अने जुदा जुदा चितावाणा आठ खण्ड जेज्या होयतो पशु ते गाडुं ऐच्यी शक्ता नथी. माटे हे पुत्रो ? निरंतरतम्हारे परस्पर ग्रीतिथी ज वर्त्तवुं. वणी ऐ प्रभाणु न चाली शको तो वीजे मार्ग भतावुं छुं ते प्रभाणु चालवुं. जेमके आपणु घरनी अंदर चारे भुष्याओंमां चार कलश म्हें ढाटेला छे. तेमांथी इशान भुष्यानो कलश म्हेटा पुत्रे, अग्नि भुष्यानो वीजाचे, नैदृत भुष्यामांथी त्रीजे अने वायव्य केाणुमांथी चाथाचे लध लेवो. ते चारे कलशोमां यथार्थ म्हें पोते ज सरभी योजना करेली छे. तेमज तम्हारां नाम लाखीने दरेक कलशमां नांझेलां छे. त्यारणां स्वजन वर्गने

દેશલનીકિયા.

( ૧૨૭ )

પણ શ્રેષ્ઠીએ ભલામણુ કરી કે મહારં મરણ થયા બાદ મહારા પુત્રો દ્વય માટે કલેશ ન કરે તેવી રીતે તમહારે તજવીત રાખવી. જે દ્વય મહેં જેને આપેલું છે તે દ્વય તેનેજ તમહારે પાસે રહીને અપાવવું. તેમાં કંઈ પણ ફેરફાર ન થવો જોઈએ. એમ કહી સ્વજન વર્ગની ક્ષમા માર્ગી. નમસ્કાર કરી તેઓને વિદાય કર્યા.

પોતાના પિતા મરણ પામ્યા પછી તેમની દહુનકિયા કર્યા બાદ  
ચારે ભાઈએ એકઠા થઈ પોતપોતાનાં  
**અંધુવિવાદ.** નામ જોઈ તે કલશો તેમણે લઈ લીધા.

ત્યારખાદ મહોટા ગ્રણ ભાઈએના કલશમાં જેયું તો પ્રથમમાં મૃત્તિકા, બીજમાં લેખપત્ર અને ત્રીજમાં હાડકાં ભરેલાં જેયાં. તેમજ નાના ભાઈનો કલશ ઉત્તમ રત્નોથી ભરેલો જેયો. તેથી મહોટા ગ્રણ ભાઈએ બોલવા લાગ્યા કે અરે? મરણ સમયે પિતાએ કેવો અન્યાય કર્યો? પોતે ધાર્મિક હોવા છતાં પુત્રોને પણ તેમણે છેતર્યા? માટે આવી ઠગાઈ કરવાથી છે તાત? તમહારી સદ્ગાત કેવી રીતે થશે? ત્યારખાદ તેઓએ નાના ભાઈને કંધું કે તહારો કલશ રત્નોથી ભરેલો છે માટે તેનો ભાગ અમને આપવો પડશો. લઘુઅંધુ જોડયો. જુને સ્વજન વર્ગની રૂથર્ડમાં પિતાળાએ રત્નકલશ આપ્યો. છે માટે તેમાંથી તમને કંઈ પણ માગશો નહીં. વળી તમહારા કલશોમાં મૃત્તિકાદિ જે જે વિકાર થયો છે, તે તમહારા કર્મનોજ દોષ છે. તેમાં પિતાનો શો દોષ? એમ તેણે કંધું તોપણ ગ્રણ જણે પોતાનો મત છોડ્યો નહીં, એટલે તેણે પોતાના કુદુંબીએને બોલાવી સર્વ વાત જણ્ણાવી. પછી સ્વજનોએ તેઓને બહુ સમજાયા. તો પણ તેઓએ પોતાનો કદાચહુ છોડ્યો નહીં. અને રાજ્યમાં જઈ મંત્રીની આગળ પોતાનો વિવાદ વિસ્તાર સાહુત સંભળાવ્યો. મંત્રીએ

( १२८ )

श्रीसुपाथ्यनाथवरित्र.

પણ બોધ આપી બહુ સમજાવ્યુ. પરંતુ તેઓ શાંત થયા નહીં. છેવટે તેઓ રાજ પાસે ગયા. ત્યાં નાનાભાઈએ સર્વ ભાઈઓનું વૃત્તાંત સંભળાવ્યું. તે સંભળી રાજએ કદ્યું કે વૈશમણ શેડ અન્યાય કરે તેવા હતા નહીં; કારણ કે તે જૈનધર્મમાં નિશ્ચિલ હતા. અને બુદ્ધિમાં પણ બૃહદ્ધર્પતિ સમાન સમર્થ હતા. ડોષ પણ પ્રકારે તેમનામાં કપ્તકલા હતી જ નહીં. માટે આ કલશોની અંદર ભૂતિકાદિક નાખીને પૃથ્વીમાં દાઢી સ્વજન સમક્ષ જે કહેલું છે તે બહુ બુદ્ધિથી વિચારવા જેવું છે, એમ સમજુ રાજએ સર્વ મંત્રીઓને બોલાવી લાવવાનો હુકમ કર્યો કે તરત જ પ્રતીહારી સર્વ મંત્રીઓને બોલાવી લાયો. એટલે રાજએ તેઓને કદ્યું કે આ ચારે ભાઈઓ છે. તેઓમાં ગ્રણ મ્હાટાએના કલશોમાં ભૂતિકાદિક વસ્તુએ ભરેલી છે અને ચોથા ભાઈના કલશમાં રતન ભરેલાં છે તો તેઓના પિતાને આવી રીતે પક્ષપાત કરવાનું શું કારણ ? આ સંબંધી વિચાર કરી જઈ આનો ખુલાસો આપો. સ્વક્રમભુદ્ધિના પ્રતાપથી સર્વ મંત્રીઓ પણ પરસ્પર વિચાર કરી ઓલ્યા કે હે નરેંદ્ર ? આ વાતનું ખર્દ તાત્પર્ય શું છે તે અમે જ્ઞાની શક્તા નથી.

ત્યારખાદ ભૂપતિએ પોતાના નગરમાં પટહ વગડાવ્યો. અને બહેર કરાવ્યું કે આ કલશોની ખરી હુકી-  
**વૈશમણુશોઠની** કિ જાણી જે પુરુષ આ વિવાદનો ન્યાય  
**બુદ્ધ.** આપશે તેને મહારા સર્વ મંત્રીઓનો ઉપરી  
      હું કરીશ. તે સંભળી પોતાની બુદ્ધિનો  
પ્રકાશ કરવા માટે એક વણુક પુત્રે તે પટહનો સ્પર્શ કર્યો. તેથી  
તેને રાજની પાસે લઈ ગયા. રાજએ તેની આગળ સર્વ કલશોનું  
વૃત્તાંત નિવેદન કર્યું. પછી તેઓનું ખર્દ તાત્પર્ય જાણીને તે  
ઓલ્યો-હે નરેંદ્ર ! જે પુત્ર જે કાર્યમાં કુશલ છે અને જે કામ

દેશભાની કથા.

( ૧૨૬ )

કરવાથી જેનું હિત થવાનું છે તે વસ્તુ તેઓને તેમના પિતાએ આપેલી છે. વળી તે રચના પણ ખાસ ઉપદેશ માટે કરેલી છે. જેના કલશમાં માટી ભરેલી છે, તેના ભાગમાં ક્ષેત્ર અને ખળાનાં ખાન્યાદિકની સર્વ સંપત્તિઓ સમજવી. કારણું કે જે ઐતીના કામમાં બહુ હુંશીયાર છે તે એનાથી જ જીવન ચલાયશે. તેમજ જેના કલશમાં અસ્થિ ( હાડકાં ) ભરેલાં છે તેના ભાગમાં ગાય, ખળાદ, ઘોડા, હાથી વિગેરે સર્વ પણ જાણવાં. તેઓનું ચોપણું કરવાથી જ જેનું હિત થવાનું છે એમ ઉપદેશ આપેલો છે. જેના કલશમાં લેખ પત્ર ભરેલા છે, તેના વિલાગમાં દેખુદારોનું સર્વ ધન જાણવું. કારણું કે તે ધીરધારનો ધંધે કરી ચોતાનું હિત જાધી શક્યો. વળી જે નાનો પુત્ર કે જે કૃષિ વિગેરે અન્ય કાર્યોમાં અશક્ત છે તે રતનાદિક ધનવડે બહુ કાલ સુધી નિર્વાહ કરશે એમ સમજું તમ્હારી ચોગ્યતા પ્રમાણે બહુ ગ્રેમથી તમ્હારા પિતાએ ઘોડું ધણું પણ જે કંઈ આપેલું છે તે બહુ વિચાર કરીને આપેલું છે એમ મહાડું સમજવું છે. માટે તુચ્છ લક્ષ્મી માટે પરસ્પર વૈર ન કરો. પિતાનાં વચન સંભારો. કારણું સહેદરનો સંબંધ આ હુનીયામાં બહુ હુર્બાં છે. કારણું કે બહુ પાલન ચોપણું કરેલા એવા પણ અન્ય સ્વજનો છુટા પડે છે. પરંતુ હુંખાવસ્થામાં કોપાયમાન થયેલા એવા પણ સહેદરો જ સહાય-ભૂત થાય છે. માટે તમ્હારે અન્યોઅન્ય કલેશ કરવો ઉચિત નથી.

ત્યારબાદ ભૂપતિએ શેઠના મ્હોટા પુત્રને પૂછ્યું કે ત્થાર  
કલશમાં ધાન્ય કેટલું છે. ત્યારે તે એલ્યે  
કોશાદનો પ્રભાવ. હે દેવ? એક લાખ મુડાથી પણ કંઈક વધારે  
દેખાય છે તેમજ બીજાને પૂછ્યાથી તેણે  
કહ્યું કે હાથી, ઘોડા, ઉંટ વિગેરે પણ એ દશ હજાર છે. ત્રીજાને

( १३० )

ओमपार्वतीनाथविद्वत्

પूछवाथी ते ओल्यो। मांडलिक राजाच्या पासे पंदर लाख रुपीच्या भागता नीकणे छे. पधी लघु पुत्रनी पासे रत्ननें कलश त्यां मंगाव्यो अने राजाच्ये अवेदीच्याने कल्पुं के आ रत्नोनी किंभते करो. तेथी तेच्योच्ये रत्नोनी किंभते पंदर लाख करी. ए प्रभाणु चारे पुत्रोना भागमां हाथी तथा धान्यादिकीनी किंभते पंदर पंदर लाख थधि. पधी ते वणिकनी विशेष बुद्धि जेई सर्वे संतुष्ट थया. त्यारबाढ भूपतिच्ये तेने पूछल्युं के तुं कोनो पुत्र छे ? तहारूं नाम शुं ? तहने कोया धर्म धृष्ट छे ? वणिक ओल्यो हे राजन् ? पूर्णाभद्र वणिकने ए पुत्र छे. तेच्योमां केशल नामे हुं भेण्ठो। छुं अने कुशल नामे भारो। नानो लाई छे. जैनधर्ममां बतावेलां श्राव. कनां यार व्रत अमे धारणु करेलां छे. ते सांखणी राज अहु प्रसन्न थयो. अने ओल्यो के हे बुद्धिनिधान ? आ मंत्रीमुद्रा तुं थहणु कर. केशल ओल्यो। मंत्रीमुद्रा झाराथी लक्षणकाळ नहीं. कारणु के ते हुष्ट कर्म गण्याय छे. तेथी अहने कळे नहीं. त्यारबाढ अहु अग्राहकारे राजाच्ये तेने मुद्रा विना पण सर्वे मंत्रीच्यानुं अधिपतिपण्युं आप्युं. वणी पोते राज पणु हरेक कार्यमां प्रथम तेने ज पुछे छे. तेथी सर्व मंत्रीच्या तेनी उपर धर्षणु थया अने रात्रि दिवस तेनां छिद्र शोधवामां तत्पर थया.

एक दिवस सर्व मंत्रीच्या एकमते थर्ड राजने कडवा लाग्या के हे जगत्पालक ? हेवगिरि नगरने। अधिमंत्रीच्यानुं कंपट. पति रिपुगंज नामे राज निरंकुश थधु आपनी आज्ञा मानतो नथी. माटे आ महामंत्रीने तेनी पासे भोक्लो। कारणु के ते अहु कुशल छे. माटे केवळपणु कुशल वृत्तांत लाई ते तेनी साथे संबंध यातो विदेश गमे ते नीकाल करे तो फीक. पधी भूपतिच्ये महामंत्रीने कल्पुं के तमे मंत्रीच्या पासेथी लेट लक्ष रिपुगंजनी पासे जायो.

हेतुकनी कथा.

( १३१ )

अने तमने जेम योग्य लागे तेम करो. हवे ते मंत्राओंचे पण्य ते न जाणे तेवी रीते करंडीआमां लेट नाखी ताणु हधने तेनी उपर शील कर्युः. अने महाभंगीने करंडीयो सोंपी दीधो. एटवे केशल मंत्री पण्य केटलाक परिवारने साथे लध पेतानी हृषी छेडी गिरिनगरमां गयो. राजद्वारमां गया पधी द्वारपाणे अंदर प्रवेश करायो. मंत्री पण्य राजने नमस्कार करी लेटनो. करंडीयो आगण मूळी योग्य आसन उपर बेठो. राजाचे करंडीयानुं शील तेडीने अंदर जेयुं तो. चंद्र अने शंकरना हास्यसमान उज्ज्वल भस्म लेई. लेथा राजानी भ्रकुटी झरी गई. तेथो तेणु मंत्रीने कल्हुं के त्हारो राज घडु निर्धन तेमज नीतिहीन जब्बाय छे. कारणु के झारी लेटमां त्हारा राजाचे राख भोकली छे तो. ढीक, शुं तुं अहीं मरवा भाटे आयो. छे ? तुं अहींथी जलही यावयो. ज, कारणु के दृत अवध्य डाय छे तेथी तने मुक्ता कृं खुं. तेथी तुं त्यां जैने त्हारा अधिपतिने निवेदन कर. के, राखना लेटण्याथी केपायमान थवानुं कुंदी पण्य कारणु नयी. हित के अहितनो सूक्ष्म युद्धिथी विचार करो. पधी राजाचे तेने ज ते संभंधी पूछयुः. त्यारे ते यावयो. हे राजन् ? अहारा स्वामिचे चार रस्ताचे वर्चये रात्रीना समये अंधयित्री नामे येागिनी विद्यानी साधना करी तेथी सिद्ध थर्त तेहीचे मंत्र सिद्ध आ चमत्कारी भस्म आपीने कल्हुं के जे आ भस्मनुं अेकवार ललाटमां तिलक करशे तेने डाकिनी, शाकिनी, येागिनी, भयंकरेताल, यक्ष, राक्षस, भूत अने प्रेत विगोरे केार्धपण्य हुळ प्राणीचोनो भय थये नहीं. ते सांखागी येागिनीचे आपेकी भस्मनुं तिलक राजाचे प्रथम कर्युः. पधी थाडी थाडी राणीचोने

( ૧૩૨ )

શ્રીસુપાર્વતિનાથચરિત.

તथा મંત્રી વિગેરે સુખ્ય લોકોને આપી. વળી બાકી રહેલી આ ભસ્મ આપને માટે લેટ તરીકે મોકલી છે. એમ સાંભળી રિપુગંજ રાનાએ પ્રસન્ન થઈ પોતે તે ભસ્મનું તિલક કર્યું. પણી સંતુષ્ટ થઈ કોશલ મંત્રીને પૂછવા લાગ્યો કે તમ્હારા રાનાની બીજી કોઈ પણ એવી શક્તિ છે અરી? કોશલ એલયો મહારા સ્વામિની અંદર એવી શક્તિએ રહી છે કે તેનો અંશ માત્ર પણ અન્યમાં લાગ્યે જ હુશે. વળી તેમની આજા શક્તિ એવી છે કે આ હુનીયામાં કોઈ પણ પ્રાણી તેનું ઉલ્લંઘન કરી શકતું નથી.

ત્યારખાદ કિન્જ દેશોમાંથી આવેલા પુરુષો રૂપર્ધાને લીધે પોતપોતાના રાનાએની આજાનું

**આજાનો**                          વર્ષાનું કરવા લાગ્યા. તેવામાં નગરની અંદર એકદમ લયજનક મહાન્દ કોળાહુળ થયો.

**ચુમ્બકોર.**                          તે સાંભળી રાનાએ તે સ્વરૂપ જાણવા માટે

તેના જાણકારને પૂછ્યું. અરે? આ બૂમ શાથી થઈ છે? તેનો તપાસ કરી એક સુલાટ બોલ્યો રાનિધિરાજ! હાલમાં નગરની અંદર વૃહાદિકને ઉપેડી નાખતો મહોન્મત ( નિરંકુશ ) થએલો એક હાથી પોતાની ધૂઢ્છા પ્રમાણે લોકોને ત્રાસ આપે છે. તે સાંભળી રાન બોલ્યો અરે! સુલાટો! જલદી આ હાથીને પકડો. તે વખતે તેનો જવાબ કોઈએ પણ ન આપ્યો. ત્યારે એક દ્વારપાળ વિનય પૂર્વક બોલ્યો. હે નરાધીશ! પોતાના રાનની આજાથી આ મંત્રી પોતે જ હાથીને વશ કરશે. એમાં બીજાની જરૂર નથી. માટે એને જ આજા આપો. રિપુગંજ રાનાએ તે પ્રમાણે કોશલને આજા આપી. ત્યારખાદ કોશલ મંત્રી રાનની આજા લઈ ક્ષણમાત્રમાં નૃપ અને નાગરિક લોકો સાથે હુસ્તિ પાસે ગયો. અને વિધિ સહિત હુસ્તીસ્તંભન વિધાનું ધ્યાન કરી હાથીને કલ્યું કે જે તું અહીંથી ઉગલું માત્ર પણ ચાલે તો તહેને મહારા

देवालनी कथा.

( १३३ )

राजनी आणु छे. ते सांखणी तरत ज नीची शुंद करी हाथी चिन्मामधुनी माझक स्थिर थड्ह गयेा. ते जेई परिज्ञन सहित नरेंद्र पण विस्तित थड्ह मंत्रीनी प्रशंसा करवा लाग्येा. अने क्युं के हे सत्पुरुष ? आ हाथीने तेना स्थानमां तुं लड्ह ज. पधी मंत्रीचे हाथीने क्युं के हे गजेन्द्र ? ज त्हारा स्थानमां तुं चाह्येा ज. हाथी पण आज्ञा प्रभाणे पोताना स्थानमां जधु उल्लो रह्यो. आ मेहेदुं आश्चर्य जेई राज्ये तेज हाथी तेने लेटमां आघ्येा. तेमज तेना राजनी आज्ञा पोताना भस्तके धारणु करी विवेक सहित ते मंत्रीतुं तेणु सन्मान क्युं अने तेने विहाय कर्यो. एटले ते केशल पोताना सिद्धपुर नगरमां आव्यो. हवे तेनी साथे मोक्षेला पोताना गुप्त सेवकेना मुख्यी प्रथम ज सर्व मंत्रीच्योचे आ हुकीकत जाणी हुती तेथी लेटमां असम मोक्षलवाथी पोते भरण्युनी शंका करता सर्व मंत्रीच्यो केशलनी पासे जधु पगमां पडी पोताना अपराधनी क्षमा भागवा लाग्या. अने तेनी अगाध खुद्धिनी प्रशंसा करता छता तेनी साथेव नरेंद्र पासे गया. केशल मंत्री पण सिद्ध नरेंद्रने नमस्कार करी त्यांने कार्य करीने आव्यो. होतो ते सर्व वृत्तांत निवेदन क्युं अने चोऱ्य स्थाने घेसी गयेा. ते सांखणी राज पण बहु खुशी थड्ह घोऱ्येा हे मंत्रीकर ! जेवी त्हारी धृच्छा होय ते प्रभाणे केईपण देश तुं अहणु कर. मंत्री घोऱ्येा हे नशधिप ? आपनी कृपाथा झारे केईपण प्रकारनी न्यूनता नथी, तो देशनुं शुं प्रयोजन छे ? कारणु के देश अहणु करवाथी झारा विरतिनतनी विराधना थाय छे. वणी जे झारी उपर आप तुष्ट थया हो तो झारी सहगतिने आपनार रथयात्राद्विक महेत्सवोवडे जैनशासननी उत्तिकरावेा. तेथी हुं परम संतोष मानुं छुं. त्यारभाद भूपति घोऱ्या जे के तुं निःस्पृष्ट छे तोपण

( १३४ )

श्रीसुपार्थनाथयरितं

धरभरय जेटलुँ धी, खांड, धान्य विगोरे योग्य वस्तु  
थहुणु कर. ठीक हे लेवी आपनी आज्ञा एम कही मंत्री  
पोताने घेर गये. त्यारबाह राज्ये अधिकारीने हुक्म कर्यो  
के हजार सुडा धान्यना अने हजार घडा धीना मंत्रीने त्यां  
माकलावो. एटदे तेच्योच्चे पण्य ते प्रभाणे अहोपस्त कराव्यो.

**केशल मंत्रीचे पोताना नाना भाई देशलने कल्युं के आपण्या  
नियमथी वधारे धन लेगुं थयुं हे, माटे**

**देशलनो तेनो हीसाब करी जे कंधक अधिक होय  
अत्याचार. ते सर्व राजभंदिरमां पाळुं आपी टो.**

देशले पण्य ते वात ध्यानमां लाई जे वस्तु  
अधिक हती ते पोताना परिवारने आपी अने कल्युं के आ  
सर्व वस्तुओ. पोतपोताना धरमां राखो. ज्यारे म्हारा नियम  
पुरो थें त्यारे आ सर्व पदार्थी तम्हारी पासेथी लाईश.  
स्वज्ञनोच्चे पण्य ते प्रभाणे कल्युल कर्युं. आ प्रभाणे देशलनो  
प्रपञ्च केशलना जाणुवामां आव्यो. तेथी देशलने अहु ठपको  
आपी कल्युं के हे अंधु ! आम अयोग्य प्रवृत्ति करवाथी पांचमा  
व्रतमां तीजे अतीचार तने लागे हे. माटे हजु पण्य नियमथी  
अधिक धननो उपयोग धर्मस्थानमां कर अने आ अतीचारथी  
छुटो था. एम अहु समजाव्यो. छतां पण्य देशले मान्युं नहीं.  
त्यारबाह ते देशल काण करी अद्य इद्धिवाप्तो व्यंतर हेव थये.  
वणी पांचसो मंत्रीओना आधपति केशल मंत्री पण्य मरणु  
समये हीक्षा लाई माहेंद्र कल्पमां उत्पन्न थये. कंधक अधिक  
सातसागरापम...आयुष पूर्णु करी त्यांथी चवीने महाविदेह  
क्षेत्रमां उत्पन्न थाई मोक्ष सुख पामशे. हे भव्य प्राणीओ ! आ  
प्रभाणे निष्कलंक व्रत पाणवाथी केशल मंत्री सुभी थये. अने

हुर्लंभगोपनी कथा.

( १३५ )

देशल व्रतनी विराधना करवाथी अहु छुःभी थयो. माटे ८६  
अुद्धिथी निरतियार व्रतपाणवामां प्रमाद करवो. नहीं.

इति पञ्चमाणुवते तृतीयातिचारविपाके देशलदृष्टान्तः समाप्तः ॥

### हुर्लंभगोपनी कथा.

**चतुर्थदिपहयतुपहपरिभाणुतिक्भातियार.**

दानविर्यं राज अहु अजासु छेवाथी प्रबुने नमन करी  
आयो, हे दयाणु भगवन् ! हुवे पांचमा व्रतमां चाथा अती-  
यारनुं लक्षण्य इष्टांत सहित आप कहो. जेथी अभारी अजासा  
शांत थाय. श्री सुपार्थप्रबु बोल्या, हे नरेंद्र ! दोलदृपी  
अहुथी अहुणु कराएवो ने पुरुष लीघेला नियमनो. अवधि पूर्ण  
थया आद पशुओनो प्रसव थाय तेवी गोठवणु करे छे. ते प्राणी  
हुर्लंभनी माझक उपहासनुं पात्र थाय छे.

म्हेटा महीधर ( पर्वत-राजाचो ) थी मनोहर, समुद्र  
समान परिखा ( खाई ) वडे विभूषित

**हुर्लंभदृष्टांत.** अने उत्तम प्रकारनां होनेवा जेमां रहेलां छे.  
एवा जं अुद्धीपनी माझक वास करवा लायड  
सौभाग्यपुर नामे नगर छे. तेमां महीधर ( पर्वत-राजाचो )  
नां शिर ( शिखर-मस्तको ) उपर स्कुरण्यायमान छे कर  
( किरण्य-हस्त ) जेना अने शत्रुउपी अंधकारने नाश करवामां  
सूर्य समान शूरसेन नामे राज राज्य करे छे. रंभा नामे तेनी  
खी छे. हुवे एक हिवस राज पेताना महेलनी अगांशीमां  
येठो हुतो, तेवामां पूर्व दिशा तरइ अहु उत्साही जता  
नागरिक देकोने जेठ राजाचे पेताना सेवकने पूछ्युं के आ

( १३६ )

श्रीसुपार्वनाथवरित्र.

લોકો હર્ષ ભર્યી કર્યાં જાય છે ? ઈદ, નાગેંદ્ર કે કાર્તિક સ્વામીનો મહોત્સવ આજે હોય તેમ દેખાય છે ! કારણું કે લોકો બહુ ઉમંગથી શાલુગાર સણ્ણ ચાલ્યા જાય છે. પછી સેવક એલ્યો, શાલધિરાજ ! આજે પૂર્વ હિશાના ઉધાનમાં ચાર જાનના ધારક જ્ઞાનસાગરસૂરિ પધાર્યા છે. તેમને વંદના માટે આ લોકો જાય છે. તે સાંભળી રાજ પણ પોતે તત્કાલ સજજ થઈ સર્વ દૃષ્ટિ સહિત ત્યાં જઈ વિનયપૂર્વક સૂરિશ્વરને વંદન કરી જૈનધર્મની વ્યાખ્યા સાંભળતો હતો, તેટલામાં અકસ્માત् ત્યાં એક દેવતું જોડલું આવ્યું. તેમાંથી એક દેવે અસ્ત્રાચો પાસે સંગીતનો આરંભ કરાવ્યો. અને ખીલોદૈવ મનોહર શળદવડે સુવર્ણશ્રુતંગ ( શરણુધ ) ને વગાડતો હતો. જેઓના કંઠમાં ઉત્તમ મેતી-ચોના હાર દીપતા હતા, શરીરે સુંદર વસ્તો પહેરેલાં હતાં અને જેમના પુષ્ટ અને ઉજન સ્તનમંડલ ધણાં શોભાયમાન દેખાતાં હતાં એવી ગોવાલણીઓની પાસે નૃત્યની શરૂઆત કરાવી. તેમજ તેઓ બહુ હાવભાવ અને અલિનય બતાવતી હતી. વળી તેઓના હૃદયમાં બહુ શુરૂભક્તિ દેખાતી હતી. મધ્યમાં છેદોના ઉદ્ઘાર કરતી.હતી, તેમજ જીનેંદ્ર બગવાવની સ્તુતિ કરતી હતી, કે જેમણે મણિસુપર્વ વિગેરે ધનનો સર્વથા ત્યાગ કર્યો છે, જેમના ચરણ કમદમાં સુરેંદ્રો તથા નરેંદ્રો નમન કરે છે. સાતનય સહિત સભ્યક્યુદ્ધિતવડે ઉત્તમ સૂત્રોની વ્યાખ્યા આપવામાં બહુ કુશલ, તેમજ પોતાના વચનામૃતોવડે દેવન-દેંદ્રાદ્ધિક સર્વ પ્રાણીઓને જાતોષ આપનાર, મતુષ્યોના હૃદયરૂપી માનસરોવરમાં ઉજવલ હંસ સમાન, શ્રેષ્ઠ એવા જાન દૃપી મહાસાગરના પારગામી, ગર્વ રહિત સર્વ શમાદિ ગુણોના આધારભૂત, શુષ્ણ સંપદાવડે વિજૂષિત, નિર્મણ બુદ્ધિના ધારક, ઉજત તથા સ્થિરતા ગુણુમાં મેરુ સમાન, યુગ પ્રમાણ અવલોકન

हुर्क्षभगोपती कथा.

( १३७ )

वडे मार्गमां गमन करनार उपहास्य के स्तुति करनारा प्राणीच्छा  
उपर समानक्षावे वर्त्तवावाणा हरिद्र अने नरेंद्रने समान  
गण्डता, सर्व गण्डरोमां उत्तम पद पामेला, जेमना धैर्यनी  
उपमा भगवी अशक्य छे, हुर्क्षर चारित्र दृपी भार जेमध्ये  
बहुन कर्यो छे अने भरत राजना वंशमां विशाल ध्वज समान,  
तेमज ग्रन्थलेकदृपी वंशमां भण्डि समान ऐवा आहिनाथ  
भगवानने अमे नभीच्छे छीच्छे. ए प्रमाणे नृत्यनी समाप्ति  
थया बाढ राज्याचे मुनीश्वरने पूछयुं के आ हेवताच्यानुं जेडलुं  
अहीं शा भाटे आ०युं छे ? तेमज गोवालणीच्छानो वेष घेठी  
आ हेव गोपीकांच्यानी भधये नृत्य करे छे, गाय छे अने स्तुति  
करे छे. वणी यीजे हेव पोताना वेषेज असराच्यानी अंदरनाचे  
छे. अने अनेक रथनावडे गायन करे छे तेनुं शुं कारणु ? त्यार  
बाढ गुड्ये खन्ने हेवेना पूर्वभवनी वात कडेवानो प्रारंभ कर्यो.

आ भरतक्षेत्रमां विनयवान् ऐवा सज्जनोना हेह समान  
नर्मदा नदीथी विभूषित विध्य नामे  
हेवेनो पुर्वभव. पर्वत छे. तेनी नलुकमां यमराजनी  
नगरी समान यमपह्यी नामे नगरी छे.

तेमां हुर्क्षका अने वृद्धाल नामे ऐ गोवाणीया रडेता हुता. अन्ने  
जाण्डा गायो विगेरे खडु वैभवेवडे परिपूर्ण हुता. वणी तेच्या  
ओक यीज उपर खडु स्नेह राखता हुता, खडु गोप अने  
गोपीच्याना परिवारथी संपत्त हुता. निरंतर तेच्या जण अने  
दीला धासवाणा पर्वतना लतागुडेमां गायो चरावता हुता.  
प्रमदाच्यानी वेणी समान वीणाना भधुर स्वरना उल्लास सहित  
रासना गायनेवडे प्रभुहित थए तेच्या हिवस रात्री निर्गमन करता  
हुता. तेमज शरण्डुर्धिच्याना नाढवडे हिंगंतोने गजवता हुता.

डॉर्डक सार्थवाहननी प्रेरण्डुथी भद्रा कृष्णदे अमे ते

( ૧૩૮ )

શ્રીસુપાર્થનાભચરિત.

**ધર્મેપદેશ.** યમપદ્ધીમાં ગયા. ત્યાં તે બન્ને જણા અમારી પાસે આવ્યા. અને વંદન કરી પૃથ્વી ઉપર એઠા. ત્યારબાદ અમોએ તેમને ઉપદેશ આપ્યો, રે રે ! મહાન હુર્દાભ એવો આ મનુષ્ય અવતાર પામી હુમેશાં તમારે ધર્મમાં ઉદ્ઘક્ત થલું જોઈએ. ત્યારબાદ નમસ્કાર કરી તેઓ પણ બોલ્યા કે અમે અમારા ધર્મમાં ઉદ્ઘક્ત થઈ હુમેશાં મૃગાહિક પશુઓનો વધ કરી નિર્વાહ કરીએ છીએ. પછી અમોએ તેમને પ્રતિણોધ આપ્યો કે પશુઓની હિંસા કરવી તમને ઉચિત નથી, તેમજ તે સત્ય ધર્મ ગણ્ય નહિ, કારણ કે આ જીવિત જલભિંહ સમાન ચંચલ છે. લક્ષ્મીનો વિલાસ વિજળીના પ્રકાશ સમાન અસ્થિર છે. સ્વજ્ઞન સંચોગ પવનથી કંપાયમાન કુમલપત્ર પર રહેલા જલ સમાન ચંચલ છે. સ્નેહ પણ મહોનમત કામિનીના કટાક્ષની માઝુક ક્ષણિક છે. યૌવન અવસ્થાનો વિલાસ યુવતીએના હુદયની વૃત્તિ સમાન ખહુ ચયતુ હોય છે. માટે તરફારે જૈનધર્મનું આચરણ કરવું તેજ ઉચિત છે. વળી તે જૈનધર્મનું મૂલ સમ્યક્તવ કરેલું છે. માટે વિશેષ પ્રકારે સમ્યક્તવ થણું કરી લુનેંદ્ર કથિત શુદ્ધ ધર્મનું તમે સેવન કરો. આ પ્રમાણેનો અમારે ઉપદેશ સાંભળી તેઓ વંદન કરી કૃતીથી બોલ્યા. હે ભગવન् ? અમને જૈનધર્મનો ઉપદેશ આપો, મુનિએ પણ બજે પ્રકારનો ધર્મ કદ્યો. તેમાંના પ્રથમનો મુનિ ધર્મ પાળવામાં અશક્ત હોવાથી તેઓએ બાર પ્રકારનો ગુહુસ્થ ધર્મ સ્વીકાર્યો. ત્યારબાદ અમોએ પણ ત્યાંથી અન્યસ્થલે વિહાર કર્યો.

હુર્દાભ અને વલલબ બજે જણુ વિધિ પ્રમાણે જૈનધર્મની આરાધના કરતા હતા. તેવામાં તેઓને ધર્મનો પ્રલાલ. કોઈક સમયે પાંચમા વ્રતમાં મહા સંકટ આવી પડ્યું. એટલે સંકિર્ણતા આવી પડી;

दुर्लभोपनी कथा.

( १३६ )

કારણુ કે તે બજે જણુઓએ પરિથહુનો નિયમ લીધો તે વખતે પશુ-  
આની થોડી સંખ્યા લીધેલી હતી. તેથી દરેક વર્ષે પ્રસવ થવાથી  
પશુઓની સંખ્યા નિયમથી અધિક થાય તો અતીચાર લાગે  
એમ જાણી વહ્લભ મૂળ પરિણામની સંખ્યા રાખીને વધારેનાં  
પશુઓ વેચીને નિયમની મર્યાદા બરોઅર રાપતો હતો. તેમજ  
હુર્લાં પોતાની ગાયોની મૂળ સંખ્યા પૂર્ણ થઈ એટલે નિયમનો  
સમય પૂર્ણ થાય ત્યારબાદ તેઓને ગર્ભ રહે તેથી યુક્તિ કરી:  
તે જોઈ વહ્લભરાજ એલ્યો રે મૂઢ ? આ પ્રમાણે વિરાધના કર-  
વાથી પાંચમા વ્રતનો અતીચાર તને બહુ દુઃખાયી થશે. એમ  
સાંલળી હુર્લભ એલ્યો:- મહેં ગુરુ પાસે પશુઓની જેટલી સંખ્યા  
લીધી છે તેટલીજ સંખ્યા હાલમાં પણ છે. મહેં કંઈ પણ અધિક  
ખરીદ કર્યું નથી કે જેથી અતીચાર લાગે. પોતાની મેળેજ  
પશુઓ મૈથુન સંજાથી ઉત્પત્ત થાય છે એમાં મહારી શો દોષ ?  
એવાં તેનાં વચન સાંલળી લેાડો તેનું ઉપહાસ કરે છે. વળી  
વહ્લભરાજ ગુરુના કદ્ધા પ્રમાણે સાવધાન થઈ વ્રત પાલન કરતો  
હતો. એ પ્રમાણે પ્રવૃત્તિ કરવાથી કેટલાક સુમચે તે બજે જણ  
મરણુ પામ્યા. તેમાં વહ્લભરાજ ધર્મના પ્રલાવથી પ્રથમ દેવ-  
લેાડમાં અને હુર્લભરાજ અતીચાર સેવવાથા ગાંધવ લેાડમાં  
ઉત્પત્ત થયો. ત્યારબાર તેઓ બજે જણ પૂર્ણભવનું સમરણ થવાથી  
મહારી પાસે પ્રગત થયા. તેઓમાંથી પ્રથમ દેવે તમહારી આગળ  
અષ્ટસરાંઓ. સાથે નૃત્ય મહોત્સવ કરીને પોતાના સત્ય નિયમનું  
કૃત પ્રકટ કરી બતાવ્યું, વળી વ્રતને કલાંકિત કરનાર આ ધીલ  
કિલિબધીક દેવે ગાયોને વિહાય કરી તમારા બોધને માટે ગોપીઓ  
સાથે ગાયન કર્યું. એમ તેઓનું ચરિત્ર કહી સૂરીધર મૈન રહ્યા.

ત્યારબાદ ગંધર્વ દેવ એલ્યો કે એક ગુરુ પાસે એમે બજે

( १४० )

श्रीमूर्ति श्रीनाथचन्द्रिन.

गंधर्वने  
पश्चात्ताप.

જણે પરિથિહ વિરતિપ્રતિ થહણુ કર્યું હતું,  
છતાં પ્રમાદવશ થહુ મહેં તે વ્રતને કલાંકિત  
કર્યું. બહુ મેહની વાત છે કે ચિંતામણિ  
સમાન વિરતિ વ્રતમાં કલાંક લગાડીને નિ-  
ર્ભાગી જનોમાં શિરોમણિ સમાન એવા મહેં કોઈ ધનને બદલે  
કોડી ખરીદી. વળી સંતોષદ્રોપી અમૃતતનું પાન કરીને હુર્ભાજ્યને  
લીધે મહેં તેને વમી નાણણું. કારણું કે વિરતિ વ્રત થહણુ કરી  
મૂઢ બુદ્ધિથી મહેં તેને કલાંકિત કર્યું. વળી આ દેવ અસરાચો  
સાથે ને કીડા કરે છે; તે તેના પરિથિહ વિરતિ વ્રતના પાલવાનું  
ક્રિલ છે. વળી હું પ્રલાપપૂર્વક પ્રાર્થના કરું છું તોપણું આ અસ-  
રાચો મને ઉત્તર પણ આપતી નથી. એમ સાંલળી રાજનાં  
હૃદયમાં વૈરાગ્યથી શુલ લાનના પ્રગટ થઈ. તેથી સ્તુરિ મહારા-  
જની પાસે તેમણે સમ્યક્તવાદિ ધર્મને સ્વીકાર કર્યો. બજે  
હેવો પણ શુરૂ મહારાજના ચરણુ કુમલમાં નમસ્કાર કરી પોતાના  
સ્થાનમાં ગયા. ત્યાર આદ પોતાના વિહારનો કદમ્પ પૂર્ણ થવાથી  
શુરૂઆ પણ અન્યસ્થલે વિહાર કર્યો. માટે હે લુઝાસુ પુરુષો !  
જેમ વહીનરાજે નિષ્કલંક વિરતિ વ્રત પાણ્ણું તેમ અન્ય લોકોએ  
પણ પ્રયત્ન પૂર્વક સ્વત પાલન કર્યું.

इતि परिग્રહપરिमાળતેચતુર્થાતિચારે દુલભરાજ  
કથાનકં સમાપ્તમ् ॥

—•૪૫૩૦—  
માનદેવશ્રેષ્ઠીનીકથા.

પંચમકુણ્યપરિમાણાતિકમાતિચાર.  
દાનવીર્ય રાજ બોલ્યો હે જગદ્ગુરુ ! હેવે પાંચમા અતી-

માનદેવની કથા.

( ૧૪૧ )

ચારનું સ્વરૂપ અમને સંભળાવો. શ્રી સુપાર્શ્વ પ્રલુબોલ્યા હે. નરેંદ્ર ! જે પુરૂષ પોતાના મૂળ નિયમથી અધિક થઈ ગયેલી પાત્રાદિક વસ્તુઓ ભાંગીને ફરીથી તેટલી સંખ્યા પૂર્ણ કરે છે તે માનદેવની માદ્રક વિરતિવતની વિરાધના કરે છે.

ગાંધીના હાટની માદ્રક સુગંધી દ્વારાથી ભરપૂર શાલિયામ નામે નગર છે. તેમાં અમૃત કલશ નામે માનદેવહૃદાંત. સુપ્રસિદ્ધ શ્રેষ્ઠી છે અને જીનદેવી નામે તેની આ છે. વળી તેઓને માનદેવ નામે એક પુત્ર છે. તે સર્વ કળાઓમાં કુશલ છે, છતાં પણ દરિદ્રતાને લીધે બહુ ઐદાતુર થઈ પરિબામણું કરે છે. એક દિવસ પોતાના પિતા સાથે મુનિ મહારાજ પાસે ગયો. મુનિને વંદન કરી દેશના સંભળવા માટે એડો. મુનિએ દેશનાનો પ્રારંભ કર્યો. આ હુનીયામાં મતુષ્ય કષ પામી સર્વર્મની સેવા કરવા. વળી તે ધર્મ સેવન પણ સંતોષથીજ ઉત્તમ પ્રકારે થાય છે. તે સંતોષ તૃપ્યાનો ત્યાગ કરવાથી થાય છે. તૃપ્યાનો ત્યાગ વિવેકથી થાય છે. વિવેક પણ સહશુરૂના વચ્ચનથી અગટ થાય છે. માટે બુદ્ધિમાન પુરુષે શુદ્ધ ચિત્તથી ગુરુ મહારાજનાં વચ્ચન સંભળવામાં નિરંતર સાવધાન રહેલું. કારણું કે સંતોષજ મોક્ષનું સુખ્ય સાધન છે. તેમજ આ લોકના સુખનું મૂળ કારણ પણ તે સંતોષજ છે. અન્યત્ર પણ કલ્યું છે કે—

સંતોષૈશર્ય સુखીનાં, દુરે દુઃખસમુચ્છ્યાઃ ।

લોમાશાબદ્ધચિત્તાના—મપમાનઃ પદે પદે ॥

અર્થ:—“સંતોષદ્વારી સમૃદ્ધિ વડે સુખ માનનાર પ્રાપ્તિએનાં હુંખ દ્વાર ચાહ્યાં જય છે. તેમજ લોક તૃપ્યાથી બંધાયેલા પ્રાપ્તિ-એનું દરેક સ્થાને અપમાન થાય છે.” વળી આ હુનીયાની અંદર ધીળએને જીતવાની ધીઢાવાળું જે પ્રાણીએનું હૃદય હોય છે તે

( १४२ )

श्रीसुपार्श्वनाथगतिः

म्हेठामां म्हेठुं हुः अ गण्याय छे, तेमज नेच्यो क्षम्भा रहित पण्ये  
वर्त्ते छे. तेच्यो उत्तमेत्तम सुभि गण्याय छे. क्षम्भुं छे के—

तन्दुलमानमेकं, कन्दर्धहराऽपिगुवतिरैकैवा ।

पृथ्वीपतेरपिफलं, शेषः क्लेशोऽभिमानो वा ॥

अर्थः—“उद्धरपूर्व्ति माटे यो आभाच्येत्तु माप एक सरभुं होय  
छे. तेमज कामदेवने हुरणु करनारी युवति पण्य एकज होय छे,”  
माटे म्हेठा पृथ्वीपतितु पण्य कुण मात्र तेटलुंज होय छे.” बाकीनो  
कुलेश अथवा अलिमान समजवो. वणी नेम नेम लोकानी शांति  
अने परिअहनो. आरंभ स्वल्प थतो. जय छे तेम तेम सुखनी  
वृद्धि अने धर्मनी सिद्धि थाय छे. ए प्रभाणु देशना सांकणी पुत्र  
सहित श्रेष्ठीचे देशनानो आवार्थ समलु मुनि पासे विनय  
पूर्वक सम्यक्त्व सहित पांचमुं आणुत्रत अहुणु कर्युं. पछी  
मानदेव सहित श्रेष्ठी मुनीद्रने नमस्कार करी चेताना स्थानमां  
गयो. पुत्र सहित ते क्लैनधर्मनी आराधना करतो हुतो, तेमज  
निर्धनताना हुः अथी कलांत थर्म मानदेव निरंतर अस्थिरवृत्तिचे  
हुतो. तेवामां एक दिवस ते नगरनी सभीपना म्हेठा  
उद्घानमां दूरवा नीकहयो. हुतो त्यां योगीश्वर नामे त्रीदंडीनो  
तेने समागम थयो. आद्धरपूर्व्ति क नमस्कार करी तेणु पृथ्वुं हे  
योगीश्वर ! केाळपणु एवो उपाय अतावो के लेथी म्हुने  
लक्ष्मीनो लाल थाय. वणी हे योगीद ! आज सुधी म्हें ने ने  
उपाय कर्या ते सर्व निष्कृण थया छे. त्यारे त्रीदंडीचे क्षम्भुं. म्हारी  
आगण नकामुं योलवानी कंध जडर नथी. हे वत्स ! जे त्हारे  
विशेष लक्ष्मी भेणवणी होय तो छ मास सुधी तुं म्हारी पासे रहे,  
केाळपणु समये म्हारी पासेथी त्हारे दूर जवुं नहीं. वणी लोजन  
विगेदेनी केाळ प्रकारे चिंता करवी नहीं. पछी मानदेव योद्यो  
आपत्तुं कडेवुं योग्य छे परंतु म्हारा मातापिताने लोजनमात्र

માનહેવની કથા.

( ૧૪૩ )

પણ આપે તેથું ડોઈ બીજું માણસ નથો. વળી તેઓ બુદ્ધ અવસ્થા હોવાથી અશક્તિ અને વ્યાધીને લીધે દીન અવસ્થામાં આવી પડ્યાં છે. તેથી ભૂરા વિરહને લીધે તેઓ જીવિ શકે તેમ નથી. તો હવે ભૂરારે શું કરવું ? ત્રીદંડીએ કણું હે વત્સ ! જે એવી અડચણ હોય તો વજાંકુશ નામની એક ઉત્તમ વિદ્યા હું તુંને આપું છું તે લઈ તું ઘેર જા અને માત્ર આ વિદ્યાના સ્મરણથી હુમેશાં તુંને પાંચ પલ રૂપું પ્રાપ્ત થશે. માટે સર્વ ઉપાય પડતા મૂકી આ ઉપાય તુંને જલદી કરવો, જેથી તું સુખી થઈશ એમ કહી તે ચોગીશ્વર અદ્રશ્ય થઈ ગયો.

માનહેવ વિદ્યા લઈ પોતાને ઘેર ગયો. રાત્રીએ વધિપૂર્વક વિદ્યાનું સ્મરણ કરી સુધી ગયો. પછી તે વિદ્યાનો ચમત્કાર. વિદ્યાદેવીએ પણ પ્રસ્તુત થઈ તેના ઓશીકા નીચે પાંચ પલ રૂપું સુકણું. પ્રભાતકાગમાં પોતે જાયત થયો અને ઓશીકા નીચેથી તે રૂપું લઈ બહુ ખુશી થયો. હુમેશાં એ પ્રમાણે રૂપું ભળવાથી બહુ પૈસાદાર થઈ ગયો. અને ઘર વિગેરે ખરીદ કર્યાં. તેમજ ધર્મમાર્ગમાં પણ કંઈક વાપરવા લાગ્યો. વળી રૂપાનાં વાસણું પણ ઘડાવવા લાગ્યો. તેનેછ તેના પિતાએ પૂછ્યું હે વત્સ ! ત્હારા ઘરમાં આ રૂપાનાં વાસણું કયાંથી આવ્યાં ? મૂળ દ્રવ્ય તો ત્હારી પાસે કંઈપણ હતું નહીં છતાં આટલું દ્રવ્ય ત્હેં કયાંથી મેળવ્યું ? ત્યારે માનહેવે પોતાનું સર્વ વૃત્તાંત કહી બતાગ્યું. એટલે શેડ બહુ ખુશી થયા. પછી પોતે તપાસ કરવા લાગ્યા અને પોતાના નિયમથી અધિક સંખ્યાવાળાં પાત્ર જેઠ વિરતિત્રતની વિરાધનાથી લય પામી તે એદ્યો આપણે બન્ને જણે દશ વાસણું રાખવાનો નિયમ લીધેલા છે. છતાં પાત્રો વધારે હેખાય છે. તે વાત માનહેવે કણુલ કરી ને નિયમથી અધિક વાસણું હતાં તે ભાંગી નાખી દશની

( १४४ )

श्रीमुखार्थनाथवरित्रि.

संख्या कायम राखी. अने कहुँ के हे तात ! पात्रनी संख्या भरावर हे माटे विरतिवतनो लंग हवे थवानो नथी. ते संख्याधी शीलकुल तम्हारे लय राखवो नहीं. वणी तोलमां पछु पांच पात्र तो हलकां कराव्यां छे. श्रेष्ठी योह्योः—वत्स ! अम छतां पछु विरति क्लंकित गण्युय. वणी अजिनमां प्रवेश, लयंकर अंधारा झूवामां अंपापात, तीक्ष्ण तरवारनी धारा उपर चालवुं, समुद्रमां पडवुं, शत्रुओमां वास करवो, विष लोज्जन अने वाधेणुना स्तनथी हुधतुं पान करवुं श्रेष्ठ छे; परंतु विज्ञनी समान चंचण लक्षभी माटे वीरपुरुषोऽमे क्लाई पछु समये विशेषे करीने अहंषु करेला व्रतनो लंग करवो योग्य नथी. माटे आ विद्यापडे प्राम थता धननो तुं त्याग कर. अथवा अधिक दृ०यनो धर्म कार्यमां नियोग कर, नहींतो अति लयंकर आ संसारमां विश्वति व्रत पामीने पछु तडारे भ्रमणु करवुं पडशे. पछी मानहेव योह्योः—तात ! आ तम्हारूं योलवुं सर्वथा अयोग्य छे. कारणुके पात्र लांगीने अकडां करवाथी तम्हारी अहंषु करेली संख्यानो लंग थतो नथी. त्यारणाह श्रेष्ठीमे पछु छेवटे पुत्रने कहुँ के तम्हारी आगण तडारे असत्यः उत्तर आपवो नहीं. हवे तुं तडारी आग वर्ध जुहो नीडण. मानहेव पछु पितानुं वयन मान्य करी जुहो रघो अने वेपार करवा लाग्यो. श्रेष्ठी पछु धर्ममां बहु रागी अनी निष्कलंक गुहिधर्म पाणवा लाग्यो. तेमज मानहेव पछु अनुठमे बहु धनवान् वर्ध गयो. पछु लोळदृपी अहंथी विभूठ अनी गयो. तेथी अकस्मात् भरडीना रोगथी भरीने नरक स्थानमां गयो. अने विरतिभंगना पापने लीघे चिरकाण ते भव भ्रमणु करशे. प्रथम तो मात्र अतीचार थयो हुतो, परंतु पछीथी वृतनो लंग पछु थयो. माटे प्रथमथोऽव व्रतमां किंचित मात्र पछु अतीचार सेववो उचित नथी; कारणुके थोडा पछु अपथ्य लोज्जनना सेवनथी रोगनी माझक ग्रति दिवस ते वृद्धि पामे छे.

આનદેવનીક્યા.

( ૧૪૫ )

અમૃતકલશ શ્રેષ્ઠો પણ શુદ્ધ વિરતિરલના પ્રભાવથી સમા-  
ધિપૂર્વક હેહને ત્યાગ કરી સનતકુમાર  
અમૃતકલશશ્રેષ્ઠી. દેવલોકમાં ઉત્પત્ત થયા. ત્યાંથી ચ્યવિને  
ત્રીજે લવે મોક્ષપદ પામશે. માટે હે લંબ  
પુરુષો ! ભલે થાડું પળાય તો થાડું પળવું શ્રેષ્ઠ છે, પરંતુ વ્રતમાં  
અતિચાર સેવવો ચોગ્ય નથી. તૃષ્ણાથી શુદ્ધ થયું છે શરીર  
જેમનું એવા હે મુસુકુજનો ! તમે સંતોષરૂપી રસાયણનું હમેશાં  
પાન કરો, જેથી જરા ભરણને હુર કરનાર નિવૃત્તિપદ પ્રાપ્ત થાય.  
જેઓ નિરંતર આનંદિત થઈને સંતોષરૂપી નંદનવનમાં કીડા કરે  
છે, તેઓને ધનવાન, શુણવાન, ક્ષમાવાન, વિવેકી અને વ્રત-  
ધારી જાણવા. વળી જે પુરુષને એક ખી હોય તેને ચિંતા પણ  
થાડી હોય છે. અને જ્યાં ખીઓને વધારો હોય છે ત્યાં ચિંતાનો  
પણ વધારો થાય છે. તેમજ પુત્રાદિક પ્રણ અને હાથી, ઘોડા,  
રથ, ધર અને ધનાદિક વૈસવની વૃદ્ધિ થવાથી મનુષ્યોના હૃદયમાં  
સંતાપની વૃદ્ધિ થાય છે. વળી પરિથહુથી વિમુક્ત થયેલા અને  
શાંતિસુખને અનુભવતા એવા સંતપુરુષોને જે નિવૃત્તિસુખ મળે  
છે, તે નિવૃત્તિરસ્ને તો તે મુનિવરોજ અનુભવે છે. અન્ય પ્રાણી-  
ઓ શું જાણી શકે ? તેમજ મનુષ્યોને જેટલા અંશે લોલ હોય  
છે તેટલું હરિદ્રપણું જાણવું, સંતોષી પુરુષ હરિદ્રિતા ઉપર પગ  
મૂકી સુખે સુર્ખ રહે છે. વળી ધનાદ્વય પુરુષ પણ અતિ હરિદ્રીની  
માઝીક પોતાનાથી અધિક એવા એક ખીના ઉપર દ્રષ્ટિ દેરવતો  
છતો અહુ હુઃખી થાય છે, તેમજ હરિદ્રી હોલા છતાં પણ સંતોષ-  
રૂપી રસાયણનું પાન કરવાથી ધનવાનની માઝીક આચરણ કરે છે.

इતિ પञ્ચમવ્રતપञ્ચમાતિચારવિપાકે માનદેવહૃષાન્તઃ સમાપ્તઃ ॥  
તત્ಸમાપ્તૌ શ્રીમલ્લક્ષ્મણગણિવિરચિતપ્રાકૃતપદ્યબન્ધશ્રીસુપાર્શ્વજિનચ-

( १४६ )

श्रीसुपार्श्वनाथवर्तम.

रित्रस्य श्रीसकलसूरिपुरन्दरायमाणपरमगुरुतपागच्छाधिराजशा-  
स्त्रविशारदजैनाचार्ययोगनिष्ठाध्यात्मज्ञानदिवाकरश्रीमद्भुद्धि-  
सागरसूरिशिष्यप्रसिद्धवक्तेति लब्धरूप्याति, व्याख्यान-  
कोविद जैनाचार्य श्रीमद अजितसागरगणिकृतगुरुर्ज-  
भाषानुवादे प्रभुदेशनाप्रबन्धे सद्विद्वान्तातीचा-  
रव्याख्योपेतं पंचमाणुव्रतं समाप्तम् ॥

—→ⒶⒶⒶ←—

### मनोरथवर्णिकनी कथा.

—○○○—

#### हिक्परिभाषुत्रत.

हानविर्य राज्ये प्रश्न कर्यो के हे लगवन् ? ४३५ हिज्वरभाषु  
त्रत क्षुद्रं हे तेनुं लक्षण्य अतीचार सहित संखणावी अमने कृ-  
तार्थं करे। श्री सुपार्श्वप्रभु योव्या हे राजन् ? वे श्रावक उंची  
नीची अने तिर्यग् दिशा सुंभंधी गमन करवामां योजन संख्या-  
नुं प्रभाष्य करे हे, ते योदरज्जु प्रभाष्य लोकमां रडेला ज्ञाने  
अलयहान आपवामां डेतुल्लू थाय हे। कारणुके आ लोकमां वि-  
द्वति विनाना ज्ञाने तपावेला लोठाना गोणा समान रडेला हे।  
माटे हिगृगमननुं प्रभाष्य करनार प्राणी भनोरथनो भाइक  
आत्महित साधे हे। ज्ञेमके-धन्यपुर नामे नगर हे, तेमां  
धन धन्यथी वृद्धि यामेला धण्णा विशुक्कनो वसता हुता。  
तेओमां सुधन नामे एक मुण्य भडोटो शेषी हुतो। अने याहु  
झीर्तिवडे प्रसिद्ध थओही भहिमा नामे तेनी खी हुती। तेओने  
भेघरथ अने भनोरथ नामे विनयवंत ऐ पुत्र हुता। तेओ  
हुभेशां उद्यान, ज्ञरोवर अने नही विगेदे स्थानोमां विलास करता  
हुता। एक हिवस तेओ। आअवनमां गया। त्यां लतामंडपमां

મનોરથનીક્ષણા.

( ૧૪૭ )

પદ્માસન વળી એહેલા, વળી તપશ્વિર્યાર્ડ્યી સૂર્યના તાપથી તપી ગયું છે શરીર જેમતું એવા અને હુઃખે ધારણું કરવા લાયક ચારિ-ત્રબારને વહન કરવામાં ધુરંધર સમાન તેમજ હુષ્ટ એવાં આઠ કર્મ-ર્યું શત્રુઓને મર્દન કરવામાં મહોટા મહ્ન જેવા, અત્યંત શ્વામ કાંતિને લીધે મેઘની ઉપમાને વહન કરતા, તેમજ મેલને ધારણું કરતા, નાસિકાના અચ લાગમાં છે ફષ્ટ જેમની, મનથી પણ પ્રત કાંગળી પ્રાર્થના નહીં કરનાર, અનેક ઉપસગેને લુતવામાં સમર્થ છે દેહ જેમનો, બાવીશ પરિષહેના મહોટા મંહિર સમાન, શુદ્ધ ભક્તિના સારભૂત અને સંસારર્યું મહાસાગરનો પ્રાર પામેલા એવા એક સુનીદ તેમના જેવામાં આવ્યા. અને તરતજ તે અન્ને જણે તેમને વંદન કર્યું. ત્યારખાદ સજજનોને આનંદહાયક એવા શૈક્ષીના મહોટા પુત્રે પ્રક્ષે કર્યો કે હે સુનીદ ! ઉત્તમ અને તેજસ્વી એવા આ ભર યૈવનમાં આપે શા માટે હીક્ષા લીધી છે ? વળી હે પ્રલો ! જે આપના ધ્યાનમાં વિદ્ધન ન થાય અને તેથી જે શુષ્ણ થતો હોય તો કૃપા કરી મહારા પ્રક્ષેનો ઉત્તર વિદંબરહિત કહેલા. ઉજવલ દાંતની પંક્તિવડે અધરેાથને હીપાવતા એવા સુનિ મહારાજ ભધુર સ્વરે ઓદ્યા—કમલપત્ર ઉપર રહેલા જલભિંહુ સમાન ચંચલ એવું ધન, યાવન, લુલિત અને ભિત્રથલ વિગેરે સર્વ વસ્તુ પણ પ્રત શ્રહણું કરવામાં કારણભૂત છે; પરંતુ મહારે પ્રત શ્રહણું કરવામાં હેતુભૂત તો એક રાજકન્યા થયેલી છે, તે સાંભળી સાવધાન ચિંતે વણિકું પુત્ર ઓદ્યો કે તે રાજકન્યાને તમારા વૈરાગ્યનો હેતુ થવાનું શું કારણું ?

સુનિએ વૈરાગ્યનું કારણું કહેવાનો પ્રારંભ કર્યો. આ ભરત-ક્ષેત્રમાં વિખ્યાત અને સર્વ સંપ્રદાયોથી વૈરાગ્યકારણું. ભરપુર ધરણીતિલક નામે નગર છે. તેમાં ઇપવડે સુરેંદ્ર સમાન અને દાન ઝીત્યાર્દ્ધિકુ

( १४८ )

श्रीसुपार्थनाशयरित्.

गुणोनो आश्रयभूत महेश्वर नामे राजा राज्य करतो हुतो.  
 इपमां रति समान, शुद्ध शील, लावण्य अने उत्तम लक्षणवाणी  
 तेनी क्षी हुती. केटेकोइ समय व्यतीत थतां तेच्छाने तिलोनात्मा  
 नामे एक पुत्री थई. अनुकमे लर यैवनमां आवेली ते पुत्रीने  
 जेह राजा विचार करवा लाग्यो. के, महारी आ पुत्रीनो यैव्य  
 कर्ता क्षेत्र थथे ? यैवनद्वयी अश्वने हमन करनार, इपमां काम  
 समान, उद्धत शत्रुओने वश करवामां ईद समान, हमेशां  
 अमारी आज्ञा प्रभाषे वर्तनार, सर्व मनोरथने पूर्ण करनार,  
 सर्व कलाओमां हक्ष अने बहु अुद्धिशाली एवो. ते हावो जेह-  
 ए. पछी राजाचे पूछयु हे पुत्री ! त्हारो वर क्षेत्र थथे ? ते तुं  
 जलही योल ? त्यारे ते योली हे तात ! सुखाट, नैमित्तिक अथवा  
 विज्ञानवेता, ए त्रिषुमां क्षेत्रपण उत्तम एवो एक महारा भर्ता  
 थाए. ए सिवाय ठीज डेहने हुं वरवानी नथी एवो. महारा  
 निश्चय छे. ए प्रभाषे पुत्रीनो नियम सांकणी राज्यते तत्काल  
 मंत्री, थगीधर-हुमुरी अने दंडाधपतिने हुक्म कर्या के यारे  
 हिशाओमां जलही तपास करो. अने डेहपण अथवा नैमित्तिकने अहीं लावो.  
 कदाचित् तेवो न मणे तो तेवा शुष्णवाणो. डेहपण वर शोधी  
 लावो के जेथी महारी पुत्रीनो मनोरथ पूर्ण थाय.

मंत्री विग्रे त्रिषु ज्ञेय प्रथम तो सर्व नगरमां शोध करो  
 अंग्यादिकनु परंतु तेवो शुष्णवान् क्षेत्र कुमार मध्ये।  
 प्रथाणु नहीं. तेथी तेच्छा बहारना गामोमां नीकणी  
 पड्या. अने त्यां जुदा जुदा डेहाणु शोध  
 करवा लाग्या. मंत्रीचे एक शूर पुरुषने  
 नेवो. ते धनुषविद्यामां खडुज कुशणी हुतो, मंत्रीचे तेने पूछयु  
 शत्रुओहुं सैन्य त्हारा सहामुँ आवे तो त्हारामां कर्त शक्ति छे ?

મનોરથનીક્યા.

( ૧૪૬ )

સુલાટ ઓલ્યો ધનુષવડે લક્ષ શત્રુઓને પણ ક્ષણુમાત્રમાં હું વિલક્ષ કરું છું. મંત્રી ઓલ્યો, તેમાં શું પ્રમાણ ? સુલાટ ઓલ્યો હજર સુલાટો મહારી સાથે ચુદ્ધ કરવા મોકલો. જેથી તમને પરીક્ષા થાય. મંત્રીએ તેની સાથે ચુદ્ધ માટે હજર સુલાટ મોકલ્યા. તેઓએ એક સુલાટ ઉપર હજરો બાણોની વૃદ્ધિ કરી. પણ તે સુલાટો પોતાની ચતુરાઈવડે શત્રુઓનાં હજરો બાણું અંડિત કર્યા. આ પ્રમાણે એક ક્ષણુમાત્ર તેનું પરાકર જેઠ મંત્રી ઓલ્યો હે સુલાટ ! હજરો વિજય થયો. માટે હવે આ ચુદ્ધને બંધ કર અને ચિરકાલથી ઉપાર્જન કરેલા પુણ્યથી પ્રાપ્ત થયેલી રતિ, રંભા અને પાર્વતી સ્વમાન રાજપુત્રિને હું પરણ. એમ કણી મંત્રીએ જોખીને ઓલાવી શુલ લગ્ન પૂછ્યું. જોખીએ કહ્યું કે આજથી સાતમા હિવસે ઉત્તમ લગ્ન આવે છે. એ પ્રમાણે નક્કી કરી મંત્રી નિવૃત્ત થયો. તેમજ પ્રતિહારે પણ ક્રતાં ક્રતાં મહા કણે એક વૈશ્ય શોધી કાઢ્યો. તે વિજાનશાસ્ત્રમાં બહુજ કુશલ હતો. તેણે પણ પ્રતિહારને એક ઉત્તમ રથ પોતાને બનાવેલો બતાવ્યો. તેમજ પ્રતિહારને તે સૂત્રધાર રથમાં એસારીને આકાશમાર્ગ લઈ અયો. પછી કીલિકામધોગવડે તેને ધરણીતિલક રાજ પાસે લઈ અયો. ત્યારખાદ ત્યાંથી કુમારીની મુલાકાત કરાવી. કુમારી રથને ચમત્કાર જોઈ બહુ ખુશી થઈ અને ઓલી કે હે સૂત્રધાર ! તુંજ મહારો ભર્તા છે. તેણે પણ કુમારીનું વચન અંગીકાર કર્યું. ત્યારખાદ ભ્રમણું કરતા થગિધરે પણ ત્રિકાલદર્શી સુદર્શન નામે ઉત્તમ નૈમિત્તિકને શોધી કાઢ્યો, અને પોતેજ ત્યાં આવી તે કન્યાનું તેણે સાતમે હિવસે એષ લગ્ન નિર્ધાર્યું. હવે તે સુલાટ, રથકાર અને નૈમિત્તિક એ ત્રણે જણાઓએ તે કન્યાને પરણુવા માટે રાનને કહ્યું. તેટલામાં તે તિલોાતમા કુમારીને કોઈક હરી ગયો. જેથી રાનએ તેજ વખતે નૈમિત્તિકને પૂછ્યું કે મહારી

( ૧૫૦ )

શ્રીમુખાંનાથઅરિણ.

પુત્રીને કોણું લઈ ગયો હુશે ? અને હાલમાં તે કયાં હુશે ? નૈમિન્તિક બોલ્યો. વિદ્યાધર તેને હરી ગયો છે અને હાલમાં તે વિંધ્યાચલમાં છે. પછી રાજને રથકારને કહ્યું કે રથ તૈયાર કર, તેણે પણ રથ તૈયાર કર્યો. ત્યારણાદ રાજને સુલાટને કહ્યું કે આ નૈમિન્તિકની સાથે રથમાં બેસીને જલહી તું અહીંથી જા અને તે વિદ્યાધરને જીતીને મહારી પુત્રીને અહીં લાવ. આ પ્રમાણે આશાનો સ્વીકાર કરી નણે જણ્ણા રથમાં બેસી ગયા અને નૈમિન્તિકે બતાવેલા સ્થાનમાં તેઓ ગયા. ત્યાં કુમારીની આગળ એઠેલો. અને મધુર વચ્ચનોવડે પ્રાર્થના કરતો યુવાન એવો. એક વિદ્યાધર તેઓના જોવામાં આવ્યો. પછી સુલાટે વિદ્યાધરને કહ્યું કે રે અધમ ! પુરુષનું સ્વરૂપ એટલે પુરુષાર્થ તું પ્રગટ કર, શાસ્ત્ર ધારણું કર અને ધિષ્ટેવનું સમરણ કરી લે. એમ કહી તેણે કામહેવના બાણુની માઝક પોતાના બાણોવડે વિદ્યાધરને વિંધિ નાખ્યો. અને તિલોચામાને રાજની પાસે લાવ્યો. પછી નૈમિન્તિક રથકાર અને સુલાટ એ નણે જણ્ણાએ તિલોચામાને પરણવા માટે પરસ્પર વિવાદ કરવા લાગ્યા, નૈમિન્તિક બોલ્યો. મહારા નિમિન્તશાલથી આ કુમારીનો પત્તો લાગ્યો. માટે આ કન્યાનો પ્રથમ હુક્ક મહારા છે. રથકાર બોલ્યો. મહારા રથવડે આ કુમારી અહીં આવી છે તેથી આ કુમારીને હું પરણીશ. ત્યારણાદ સુલાટ બોલ્યો. તમહારી સમક્ષ તે હૃદ વિદ્યાધરનો સંહાર કરી આ કુમારીને હું અહીં લાગ્યો. છું. માટે મહારા જીવતાં આ રાજકુમારીને જે વરશો તેને પણ વિદ્યાધરની માઝક હણ્ણીને આ કન્યાને હું જ વરીશ. આ પ્રમાણે તેઓનાં વચ્ચન સાંભળી રાજ ચિન્તાડૂપી મહાસાગરમાં પડ્યો. અને કુમારીને એકાંતમાં બોલાવીને તેની સાથે વિચાર કરવા લાગ્યો કે હે પુત્રી ? હવે આ સંકટ સમયમાં આપણે શું કરશું ? જોકે આ નણે જણ્ણા ઉપકારી છે. માટે કોને

મનોરથનીકથા.

( ૧૫૧ )

વરવાની રહારી ઈચ્છા છે ? કુમારી બેલી પિતાજી ? સુભાઈ સાથે મહુને પરણાવો. કારણુકે તે ખહુ પરાકરમી છે. તેથી તે બન્નેને મારી નાખે એમાં ડાઈ સહેલ નથો, જેકે ઘેણ પ્રથમથો ગૃહારા હૃદયમાં તો રથકારને સ્વીકારેલો છે; પરંતુ પોતાનું ચિંતિત સિદ્ધ થતું નથો. માટે હે પિતાજી ? હવે હું તે સુભાઈને વરીશ. અને રથકાર તથા નૈમિત્તિકને સમજનીને કહો કે તેઓ પોતાના સ્થાનમાં જલદી ચાલ્યા જાય. ત્યારખાં રાજાએ વિશેષ પ્રકારે સત્કાર કરી તે બન્નેને વિદાય કર્યો. અને સુભાઈને કન્યાદાન આપીને માંડલિક રાજના સ્થાનમાં સ્થાપન કર્યો.

તિલોત્તમા રાજકુમારીના વિરહને લીધે રથકાર વિલક્ષ થઈ  
ખહુ હુઃખી થયો. અને વિચાર કરવા લાગ્યો.

**રથકારચરિત્ર.** અહો આ કુમારીએ પોતાનું વચન ન પાળ્યું  
માટે આ ધન, સંપત્તિ, લુચિત, સ્વજન,  
પરિજ્ઞન કે વિજ્ઞાનનો પણ આ કુમારી વિના હવે શો ખપ છે ?  
એમ સમજી તે જલદી પર્વતના ઉચ્ચા શિખર ઉપર ગયો. અને  
મરણ માટે અંપાપાત કરતો હતો તેટલામાં ત્યાં ધ્યાનમાં એઠેલા  
મુનિ મહારાજ તેના જોવામાં આવ્યા. તેથી વિનયપૂર્વક તેણું મુનિની  
પાસે જઈ નમસ્કાર કર્યો. મુનિ પણ ધર્મલાલ આપી બોલ્યા હે  
ભદ્ર ? આ નિર્જન વનમાં તું કેમ આવ્યો છે ? ત્યારે તે બોલ્યોકે,  
હુઃઅનો માર્યો હું મરણ માટે અહીં આવ્યો છું. મુનીંદ્ર બોલ્યા,  
તમહારા સરખાએઓ બાલમરણ કરવું ઉચ્ચિત નથી. કારણુકે આ  
પ્રમાણે અકૃતા મૃત્યુ કરવાથી કર્મના આધીન થયેલા લુચને  
કુરીથી પણ ખહુવાર આવાં મરણ કરવાં પડે છે. માટે છિકુ,, અફુમ  
વિગેર વિશેષ તપશ્ચિર્યાથી કર્મનો તું ક્ષય કર. વળી તે તપશ્ચિર્યા  
મન, વચન અને શરીરની શુદ્ધિવડે સિદ્ધ થાય છે. તેમજ તે શુદ્ધ  
સર્વ સંગથી વિરક્ત થયેલા મુનિએને સારીરીટે પ્રાસ થાય છે.

( १५२ )

श्रीसुपार्थनाथचरित्र

माटे हुं पण्य सुनिधर्मनो स्वीकार कर. आ प्रभाषे सुनीद्वना सुआर्वदेशी उपदेश सांखणी तेणु ते प्रभाषे सुनिधर्मनो स्वीकार कर्यो. तज हुं पोते छुं.

अे प्रभाषे सुनीद्वनुं वयन सांखणी भेदरथ ओहयो हे सुनीद्व ? हुमेशां ल्योने सेंकडो आवा डेतुओ भेदरथ. आवी भगे छे. तेमां केटलाक आ प्रभाषे पण्य करे छे. माटे कृपा करी झुने पण्य म्हारा

लायक धर्मनो उपदेश आयो. जेथी हुं पण्य सम्यग् प्रकारे ते धर्मनो स्वीकार करीश. शुद्धे तेमने हितकारी अवो. सम्यक्त्वादिक आवक धर्मनो उपदेश आयो. तेमां पण्य हिग्रतने विशेष उत्तम भाष्याविस्तार पूर्वक ते क्ल्युं. तपावेला लोढाना त्यागा समान अति दाढ़ियु, वणी परिणामथी नहीं विराम पामेलो. अने हिग्रमननो जेणु नियम नथी कर्यो अवो. प्रभाही लव सर्वत्र क्ल्युं पाप नथी बांधतो ? हिग्रमनलुं परिभाषु अहंकु इत्याथी निरंतर नियम पूर्वक सुविश्वद्व लुपद्यानो परिणाम सिद्ध थाय छे. अने तेवा भावथी हुमेशां अहिंसा धर्म प्राप्त थाय छे. वणी तेथी अवश्य निर्जन थाय छे. माटे आ हिग्रत अहंकु इत्यालायक छे. तेमज आ प्रभाषे चिंतववुं के जेअ. निरंतर आरक्षना त्यागी छे. तेवा साधुओने नमस्कार थाअ. वणी जेअ स्वज्ञनादिकनो त्याग करी गाम नगरादिकथी विभूषित अवी पृथ्वी उपर विहार करे छे तेअने धन्यवाह धटे छे. तेमज धर्यादिक समितिअ पालवामां तत्पर थाई विधि पूर्वक विहार करता मुनिअ लुकन लक्ष्मीना हार समान भाष्यवा. अने तेअने वारंवार नमस्कार छे. आ प्रभाषे सुनिनो उपदेश सांखणी तेअअ पण्य गुहस्थाशभमां सारभूत अवो. सम्यक्त्वादि लैन धर्मनो विशेषे करी स्वीकार कर्यो अने संक्षेपथी हिग्रत पण्य सम्यग् प्रकारे अहंकु कर्यु.

મનોરથનીકથા.

( ૧૫૩ )

ઇરીથી સુનીદને વંદન કરી તેઓ પોતાના ધેર ગયા. અને સમ્ય-  
કર્ત્વાદિક સ્વીકારેલા ધર્મનું પાલન કરવા લાગ્યા.

સ્થારભાદ એક દિવસે વિકસ્પર શ્યામ કમલોવડે વિભૂષિત

**મૈધરથ** એવી શરદ્ધાતુમાં ઉત્તમ પ્રકારનું કરીયાણું  
લઈ બન્ને ભાઇઓ વ્યાપાર માટે ઉજા-

**અને** યિની તરરે ચાહ્યા. તેમજ તેવા પ્રકારનું

**મનોરથ.** કરીયાણું ભરી ભીજ પણ ઘણું વેપારીઓ

હેશાંતરમાંથી ત્યાં આવેલા હતા, તેથી ત્યાં

દરેક કરીયાણુના ભાવ બહુ ઘટી ગયા. તેવો પ્રસંગ જેઈ મનોરથ  
પોતાનું સર્વ કરીયાણું વખારની અંદર ભરાવવા લાગ્યો અને તેનો  
એવો વિચાર થયો કે હાલમાં આપણે માલ વેચવો નથી. મૈધરથ  
યોદ્યો બાંધવ ? ચાલો આપણે આ સર્વ માલ લઈ વારાણુસી  
નગરીમાં જઈએ. ત્યાં આગળ સારી કિંમત આવી જશે. વળી  
અહીં અધિક રહેવાથી કદાચિત ભાવ ઉત્તરી જશે તો મૂળ ધન પણ  
ગુમાવી જેસીશું. તે સાંલળી મનોરથ યોદ્યો તહારું કહેલું સત્ય  
છે પરંતુ એમ કરવાથી દિગ્નતનો લાગ થાય તેનું શું કરવું ?  
વળી ત્યાં જવાથી પણ આપણુને લાભ મળે એમ નક્કી નથી. પરંતુ  
નિયમનો ભાગ થાય તે તો નિઃસંદેહ છે. તેમજ શાખમાં કહ્યું છે —

યેર્થા: કલેશેન મહતા, ધર્મસ્યાડતિક્રમેણ વા ।

અરેવા પ્રણિપાતેન, મા સુ તેષુ મન: કૃથા: ॥

આર્થ—“બહુ કલેશ, અધર્મ સેવન અથવા શત્રુની સેવા વડે  
જે કાર્ય સિદ્ધ થાય તેવા કાર્યોમાં ડોઈ દિવસ મન કરવું નહીં.” મૈ-  
ધરથ યોદ્યો તમણારો વિચાર સારો છે પરંતુ પહેલ વહેલા આપણે  
વેપાર કરવા નીકળ્યા છીએ માટે જે આપણે તુકશાનીમાં આવીશું  
તો બોઝે આપણું ઉપહાસ કરશો. તેમજ આપણા માતાપિતા  
પણ આપણુને ઇરીથી વેપાર માટે મોકલશે નહીં અને તેમ થ-

( १५४ )

શ્રીસુપાર્વતાથમરિત.

વાથી ધર્મની વૃદ્ધિ પણ ખરોખર થઈ શકશે નહીં. કારણું ગુહસ્થા-  
અમીચેને દ્રોગ વડે તે સિદ્ધ થાય છે. પછી મનોરથ યોદ્ધો  
ન્યાયમાર્ગે ચાલતાં ઉપહાસ શું ? વેપારી લોકોને તો અન્યની  
ચોરી કરવાથી ઉપહાસ થાય. વેપારમાં કોઈ વખત લાભ અને  
કોઈ વખત લુકશાન પણ થાય છે તેમાં હરકત શી ? યુદ્ધમાં કેટ-  
લાક સુખટો નારી જાય છે અને કેટલાક જ્ય પણ મેળવે છે. વળી  
એમતો ન જ કહેવાય કે વેપારમાં એક વખત મૂળ દ્રોગની હાનિ  
થાય એટલે ક્રીથી વેપાર ન કરવો ? વળી કહ્યું છે કે—કેસરીસિંહ  
બહુ વેદીઓથી છવાઈ ગયેલા ઘોર વનમાં પ્રવેશ કરી શકતો નથી,  
તો પણ તે મહોનમજ હુસ્તિઓના ગંડસ્થળોને કોઈ નાખે છે.  
વળી તું કહે છે કે આપણું માતા પિતા આ પ્રમાણે કરવાથી  
આપણું કરવાથી વેપાર નહીં કરવા હે. એ તહારું માનવું અયોગ્ય  
છે કારણું કે એમ તેઓ કરશે તો પણ આપણું શી હરકત છે.  
તેમજ તહારું માનવું એમ છે કે ધનવડે શ્રાવક લોકોને ધર્મની  
વૃદ્ધિ થાય છે તે પણ અયુક્ત છે. કારણું કે કોઈએ પણ ધર્મને  
માટે શું અયોગ્ય પ્રવૃત્તિ કરવી તે ચોગ્ય ગણ્યાય ખરી ? તેમજ  
અન્યત્ર પણ કહ્યું છે કે—

અન્યાયોપાત્તવિજ્ઞન, યો હિતં હિ સમીહતે ।

મક્ષણાત્કાલકૂટસ્ય, સોડભિવાજ્ઞતિ જીવિતમ् ॥

અર્થ—“જે પુરુષ અન્યાયથી મેળવેલા ધનવડે પોતાનું હિત ઈચ્છા  
છે, તે કાલકૂટ વિષનું પાન કરી લુચિતની ઈચ્છા કરે છે.” વિગેરે  
અનેક યુક્તિઓવડે તેને નિરૂપિત કર્યો તો પણ ક્રીથી તે યોદ્ધો છે  
બાંધવ, જે તહારે એમ કરવું હોય તો તું મહને મહારો ભાગ જુદો  
આપી હે. ત્યારે મનોરથ યોદ્ધો સર્વ ધન તું તહારી પાસે લઈ  
જા. મહારે કંઈપણ જોઈતું નથી. કેટલાક દિવસ હું અહીં રહીને  
પછી માતા પિતા પાસે જઈશ. પરંતુ મનથી પણ હું મહાગ

મનોરથનીકથા.

( ૧૫૫ )

નિયમનો લંગ કરીશ નહીં. એવો મહારો ખાસ નિશ્ચય છે. કારણું આજથી આરંભીને હિંગ્વત મારે બહુ માનવા લાયક છે. વળી મહુને એકલાને મૂકીને તેમજ ક્રતનો લંગ કરી ધનની વાંધાથી મૂઠ બનેલા રહારે પણ વારાણુસી નગરીમાં જરૂર ઉચ્ચિત નથી. તે જાંલળી મેધરથ જાણ્યો હે બંધુ ? આ સંબંધિ રહારે કંઈપણ બોલવું નહીં. મહારા પુષ્યની પરીક્ષા માટે અવશ્ય મહારે ત્યાં જરૂર એ વાત નહીં છે. આ પ્રમાણે તેનો આશ્રમ જાણી મનોરથે સર્વ ધનમાલ તેને આપી દઈને પોતે નિવૃત્ત થયો. ત્યારબાદ મેધરથ પણ લોલને લીધે હિંગ્વતનો ત્યાગ કરી સાર્થની સાથે ત્યાથી ચાલ્યો. અને અનુકૂળે વારાણુસી નગરીમાં ગયો, ત્યાં દાણી લોકોએ દાણ માગ્યું તેથી તેણે કેટલાક કરીયાણું નું દાણ આપ્યું અને બાકીનું દાણ છુપાવી રાખ્યું. તે વાત દાણી લોકોના જાણવામાં આવી. તેથી તેનું અપમાન કરી બાકીનું સર્વ દાણ ચુક્કે લઈ લીધું. વળી બજાર બહુ સોંઘો થઈ જવાથી પોતાના કરીયાણુની મૂળ કિંમત પણ ઉપજ નહીં અને બહુ નુકશાનમાં તે આવી પહ્યો. તેથી તે બહુ ચિંતાતુર થઈ ધર્મથી પતિત થયો.

હવે મનોરથ એકી અતિશાખ ધર્મનુરાગી થઈ ઉજ્જવિનીમાં.

માહેંદ્રસિંહ વણિકને ત્યાં દિવસો નિર્ગમન

**મનોરથનો** કરે છે. એક દિવસ ઉદ્ઘયપાલ નામે રાજકુ-

**સદાચાર.** માર પોતાના બાલ મિત્રો સાથે એક ઉદ્ઘ-

નમાં કીડા કરવા ગયો. તેવામાં તેના

પગના અંગુઠે સર્વ કરખ્યો. તેથી તે કુમાર તેજ વખતે પૃથ્વી

ઉપર મૂઢિંત થએ પડી ગયો. અને એકદમ કોલાહલ પ્રસ્તરી ગયો.

વળી તેચોમાંથી કુમારનો એક મિત્ર રાજમંહિરમાં અખર આ-

પવા નીકળી ગયો. અને રાણની આગળ જઈ સંભ્રમથી કહેવા

લાગ્યો કે હે રાજનું ? કુમારને સર્વ કરખ્યો છે અને વિષ પ્રસ્તરી

( ૧૫૬ )

શ્રીસુપાર્થનાથવરિત્રી

જ્વાથી અચેતન થઈ ગયો। છે. આ પ્રમાણે વજ્ઞ સમાન તેનાં વાક્ય સાંભળી રાજાએ પોતાના પુરુષે મારદ્દિત ઉત્તમ ગાડુંડિક લોકોને ખોલાવી બહુ સન્માન પૂર્વક સર્વને કુમાર પાસે લઈ ગયો. વિશેષ વિષયી પીડાએલા કુમારને જોઈ તેઓએ કલ્યાં કે હે નરાધીશ ? કુમારને ઘેર લઈ ચાલો. પછી આપણે ઉપાય કરીશું. રાજાએ પણ તેમનું વચન સત્ય માની કુમારને પોતાને ઘેર લઈ ગયો. ત્યારથાદ માંત્રિક લોકોએ વિધિપૂર્વક વિષ ઉતારવાના ધણા મંત્ર પ્રયોગ કર્યા. તેમજ પોતાના શુરૂ જનોએ બતાવેલા ઔષધેના ઉપયારો પણ કર્યા. પરંતુ કંઈપણ ક્રાયહો થયો. નહીં. ઉલટા જે જે મંત્રવાની ઓએ ઉપયાર કર્યો તે સર્વે વિષ લોલની માદ્રક વિંહુળ=અચે. તન થઈ ભૂમિ ઉપર આળોટવા લાગ્યા. તે જોઈ રાજ ભયબહિત થઈ ગયો અને ખોલ્યો કે હે હર્ણાણ ? નગરમાં સર્વ ડેકાણે પટહ ઘોષણું કરાવો. કે જે પુરુષ કુમારને સણુંબન કરે તેને અધ્યું રાજ્ય આપવું. પછી આરક્ષકે પણ સર્વત્ર ઘોષણાવડે જાહેર કરાવ્યું. તેથી વણા મંત્રવાદીઓ રાજ્યના લોકથી ત્યા આવ્યા અને બનતા ઉપાય કર્યા પરંતુ સર્વે નિષ્ઠળ થયા. કિંચિત માત્ર શુણું તો થયો. નહીં પરંતુ પૂર્વની માદ્રક તેઓ પણ મૂર્છિત થઈ ગયા. તેથી સર્વ લોકો ક્ષુભિત થયા. તેમજ સર્વ નગરમાં હાહાકાર થઈ ગયો અને દરેક ડેકાણે આ વાત પ્રસરી ગઈ.

આ વાત મનોરથના સાંભળવામાં આવી. તેથી તેણે મહેંદ્ર-

**વિદ્યાનો**

સિંહને કલ્યાં કે જે તમે કહેતા હો તો હું

**ચામતકાર.**

રાજકુમારને ક્ષણુમાત્રમાં સણુંબન કરું.

કારણું કે આ સંબંધી મહુને પણ મહારા શુરુએ ઉત્તમ ઉપહેશ આપ્યો. છે. એમ સાંભળી મહેંદ્રસિંહ ખોલ્યો હે વત્સ ? આ વિચાર તું ત્હારા મનમાં પણ લાવીશ નહીં કારણું અહીંયાં જે કોઈ મંત્ર, તંત્ર, કે ઔષધના પ્રયોગ કરે છે તે વિષ

મનોરથનીકથા.

( ૧૫૭ )

લોળની માઝેક એકહમ અચેતન થઈ પૃથ્વીપર્યં પડી જાય છે. વળી જ્યાં અનેક રાજકોડે પણ આવેલા છે ત્યાં આગળ કિંચિતું ગુણવાન् એવા રહારા જેવા વાણીયાની શી ગણુતરી ? તેમજ અન્યત્ર પણ કણું છે કે—

યસ્ય વજ્રમળેમેદે, વિદ્યન્તે લોહસૂચયઃ ।

કરોતું તત્ત્વ કિં નામ, નારીનખવિલેખનમ् ॥

અર્થ—“જે વજ્રમણિને વિંધવામાં લોટાની સોયો પણ ભાંગી જાય છે તે વજ્રમણિને સીયોના નખ શી રીતે વિંધી શકે ?” માટે હે વત્તસ ? સાહસ કાર્યમાં પોતાનું જીવિત તું શા માટે વિનાશ કરે છે ? મહારાજાનું કહેવું માની છાનો માનો એસી રહે. એમ સાંલળી મનોરથ એલ્યો હે શેકદળ ? આપનું કહેવું સત્ય છે. એમાં કોઈ પ્રકારનો સહેલ નથી. પરંતુ આ સર્વ લોકો બહુ હુંણી થયેલા છે. તેઓની સ્થિતિ જેઈ મહને હ્યા આવે છે. વળી સત્પુર્ણો પરૈપકારને માટે પોતાના જીવિતને પણ તુણ સમાન ગણે છે. જીવિત અને લક્ષ્મી ડેને ધૃષ્ટ ન હોય ? છતાં સમય ઉપર સે અન્ને તુણથી પણ હલકાં થઈ પડે છે. વળી આજે પાછલી રાત્રીએ મહને સ્વમ આંધું હતું. તે ઉપરથી હું મહારા આત્માનું સર્વથા કુશલપણું જોઉ છું. એ પ્રમાણેનું મનોરથનું વચ્ચન માન્ય કરી મહેંદ્રસિંહ તેને રાજ પાસે લઈ ગયો અને તેની શક્તિ કહી બતાવી. ત્યારખાદ રાજ કુમારને સળુવન કરવા માટે તેની પાસે દર્ઢ ગયો. ત્યાં જતી વખતે મનોરથે પણ નૈષેધિકીનો ઉપયોગ કરી પંચપરમેષ્ઠોના સ્તોત્રનો પ્રારંભ કર્યો જેમકે—પ્રચંડ મોહિંદ્રપી મદ્વાને લોધવામાં કુશલ, આડ મહાપ્રાતીહાર્યવડે વિભૂષિત અને લઘ્ય જનોદ્રપી કમલોના પ્રતિભાધક એવા સર્વ જીનેં જગવાનને નમસ્કાર ? સિદ્ધિ સુખમાં મન થયેલા, દર્શન અને ઉત્તમ શાનદ્રપી તેજવડે વિરાળત અને પ્રણ લોકમાં પ્રસિદ્ધ પામેલા. સર્વ સિદ્ધ પરમાત્માઓને વારંવાર નમસ્કાર. તેમજ

( ૧૫૮ )

શ્રીમુપાર્થનાથવરિત્ર.

કામરૂપી મહોન્મત હસ્તીના ગંડસથળ લેદવામાં સિંહ સમાન, વિશુદ્ધ ગુણુરૂપી રત્નોને આશ્રય આપવામાં રૈહલુગિરિ સમાન અને પાંચ પ્રકારના શુદ્ધ આચારના પાલન કરનાર એવા સર્વે આચાર્યને નમસ્કાર કામરૂપી અગિને શાંત કરનાર, નિરંતર મુનિઓને ઉચિત સ્વાધ્યાય દાન આપવામાં મળું થએલા અને સિદ્ધિરૂપી સ્વીએ હુમેશાં ધ્યાન કરાએલા; સમસ્ત ઉપાધ્યાયોને પ્રેમ પૂર્વક નમસ્કાર, વળી જેએઓએ સર્વ સંગનો ત્યાગ કર્યો છે, તેમજ પ્રબળ તપશ્ચાર્થીવડે જેએઓનાં સર્વ અંગ સુકાઈ ગયાં છે અને બધુ પ્રકારના ઉપસર્ગો સહન કરવામાં જેએઓનો નિશ્ચય હુદ્દ હોય છે એવા મુનિઓને બધુ ભક્તિ પૂર્વક અમે નમસ્કાર કરીએ છીએ. વળી જેએઓએ સંસારરૂપી કુવામાં પડેલા સર્વ જગત્તનો ઉદ્ધાર કર્યો છે એવા પરમ પુરુષોના શરણુને આ હાસ જન પ્રામ થએલો છે. “આ પ્રમાણે પરમપદે વિરાજમાન, સર્વ હુઃખ્યી વિમુક્તા, નિર્બિંદુ સ્થિતિવાળા અને ત્રણે કાળમાં રહેલા એવા પંચપરમેષ્ઠીઓનું જે સ્તવન કરે છે તે પ્રાણી અતિ હુસ્તર હુદ્દ સાગરને તરી જાય છે. અને તે સ્તોત્રમાં લક્ષ રાખવાથી સાધુ અગર શ્રાવક મોક્ષ સુખને પામે છે.” આ સ્તોત્ર અણીને મનોરથે કરીથી કુમારનાકાનમાં વિધિ પૂર્વક ધ્યાન સહિત ઊँ હું હી પદ્મપરમેષ્ઠિને નમઃ એ મંત્રનો એકવીશ વાર પાઠ કર્યો. આ મંત્ર શ્રવણુના પ્રલાઘથી વ્યાંતરે અહુણુ કરેલો રાજકુમાર બોલ્યો પરમ હ્યાજુ એવા હે ધર્મબંધુ ? હાલમાં તેં ઝાડારો ઉદ્ધાર કર્યો. કારણુ કે પંચપરમેષ્ઠીનું સ્તોત્ર સાંલળવાથી ઝણે અવધિ જાન થયું છે. જેથી પૂર્વ જાવનું ઝણે જાન થયું છે. તેમજ સૂર્યના તેજથી અંધકારની માઝક ઝાડારું ભિન્ધાતવ હુર થયું છે. હુવે વ્યાંતર પોતાનો પૂર્વભવ કહે છે કે પ્રથમ ભવમાં શ્રાવક ધર્મને કલાંકિત કરી આયુષના અંતમાં પુણ્યયોગે હું વ્યાંતરપણે મહોરગની જાતિમાં ઉત્પજ થયો છું. વળી તેજ હું વનની અંદર

મનોરથનીકથા.

( ૧૫૬ )

કીડા કરતો હતો. તે વખતે કોગળા નાખતા આ કુમારે મહને બહુ દુઃખી કર્યો. તેથી કોપાયમાન થઈ નાગલું સ્વરૂપ ધરી હું એને કરજ્યો. વળી હાલમાં મહને શુલ એવું જોવિજ્ઞાન પ્રામણ વાણી મહારો રોષ શાંત થયો છે, હવે જે આપની આજા હોય તો હું મહારા સ્થાનમાં જાઉં. પરંતુ કુમાર સહિત રાજાએ જૈનધર્મની આરાધના કરવી જોઈએ. એવી મહારી ભલામણું છે. કારણ કે આ અન્ને જણું જન્માંતરમાં પણ તહારી કૃપાથી સુખી થાય. એમ સાંલળી મનોરથ જોલ્યો, હે મહાશય ! વિષથી મૂર્છિત થએલા આ સર્વે લોકેને પણ તું સચેતન કર. ત્યારખાદ વ્યંતરે મૂર્છિત થએલા સર્વે લોકેને વિષ રહિત કર્યો. પછી મનોરથ વ્યંતરને કહું કે તું અન્ય કોઈ પાત્રમાં ગ્રવેશ કર. મહારે કંઈક તહને પૂછવાની દુચ્છા છે. પછી તે વ્યંતરે દીવામાં ગ્રવેશ કર્યો. કે તરત જ નિદ્રામાંથી જથ્થતુંની માઝક સંભ્રમ સહિત કુમાર એડો થયો. અને તે જોલ્યો હેતાત ? આ સર્વે લોકો શામાટે અહીંયા એકઢા થયા છે ? રાજાએ મૂળથી આરંભી સર્વ વૃત્તાંત તેની આગળ કહી સંલગ્નાંયુઃ.

ત્યારખાદ નૃપાદિક સમક્ષ મનોરથ જોલ્યો હે વ્યંતર ? પૂર્વ વ્યંતરનો પૂર્વભાવ. લખમાં દેશવિરતિ ક્રત શામાટે તહારે કલાં

કિત કરવું પડયું ?

વ્યંતર જોલ્યો—આ અરતક્ષેત્રમાં શિવપુર નામે નગર છે. તેમાં શિવલદ નામે સમ્યક દૃષ્ટિ શ્રેષ્ઠી હતો. પ્રિયંવદા નામે તેની ઓં હતી. તેમને વર્ણા, શુણ્યચંદ્ર, સુંદર, યશોહેવ અને મહેંદ્ર નામે પાંચ પુત્ર હતા. તેઓનો એક બીજા ઉપર બહુ સ્નેહ હતો. પરંતુ તેઓ અધર્મમાં પ્રીતિવાળા અને ખરાબ ચેષ્ટાએમાં તત્પર હતા. તેમજ દરેક અનથેનું તેઓ કુલભવન ગણ્યાત્તું હતા. હવે એક દિવસ શેડની ચાનશાળામાં એક સ્તરીશ્વર પધાર્યી હતા, તેમને વંદન કરવા માટે માર્ગમાં ચાલતા નાગરિક લોકેને જોઈ પોતાના પાંચ પુત્ર સહિત શિવલદ શ્રેષ્ઠી પણ ત્યાં ગયો. સર્વ

( ૧૬૦ )

શ્રીમુપાર્થનાભારિત.

લોકો વંદન કરી નાચે ખેડા. સૂર્યને પણ તેઓના હિત માટે સમ્યક્તવાદિ જૈનધર્મનો ઉપહેશ આપ્યો. પણી શિવલદ્ર શ્રેષ્ઠીએ કહ્યું હે પ્રભુ ? આ રહારા પુત્રો શ્રાવક કુળમાં જન્મ્યા છે પરંતુ દેવ શુરૂનું નામ માત્ર પણ જાણ્યા નથી. તો શ્રાવકના વિશેષ ક્રત સંબંધી અતિચાર જાણ્યાની તો વાત જ કચાંથી હોય ? પણી તેઓને ઉદેશી શુરૂ બોલ્યા પોતે શ્રાવક થઈ આ પ્રમાણે મરણ માઝક ચાલવું તે તમને ઉચિત નથી. વળી રહેઠા તરંગોથી બ્યાંકુળ, મહામન્દિર, જળહસ્તિ અને મંદ્ર વિગેરે હુણ જળજંતુઓથી ક્ષયંકર અગાધ સમુદ્રમાં પડેલા રતની માઝક રાગ દ્વેષરૂપી શ્રાહનથી ભરેલા અને જન્મમજરા, મરણ તથા રોગરૂપી તરંગોવડે દ્વોલાયમાન એવા આ સંસાર સમુદ્રમાં નાદ થયેલા મનુષ્ય ક્ષવની દૂરીથી પ્રાપ્તિ પણ હુલ્લાં છે. તેમજ રૂપ સંપત્તિ વિગેરે અનેક શુણું ચુક્તા મનુષ્ય લવ પામીને પણ ક્ષવસાગરમાં નાવ સમાન જૈન ધર્મ બહુ હુલ્લાં છે. વળી જૈન ધર્મ પામીને પણ જે પુરુષ જરારૂપી સન્મુખ પવનથી પ્રેરાયેલા મરણરૂપી દાવાનળને નાલુકમાં આવતો જોઈને પણ ધર્મમાં પ્રમાદ કરે છે તે પુરુષ સન્મુખ પવનમાં ઓશીકે અજિન સળગાવીને લુષ્વવાની ઈચ્છા કરે છે. તેમજ જે પ્રાણી સંસારરૂપી હુઃઅ સાગરમાં પડ્યો છતો ધર્મમાં પ્રમાદી થાય છે તે પુરુષ અગાધ જળમાં દુષેલા સમાન તથા બળતા મંહિરમાં સુઈ રહેલા સમાન છે. વળી વેરી લોકો પ્રહાર કરે અથવા ચોર લોકો ધનસંપત્તિ હુંટી લે તો પણ જે વિશ્વાસ રાખી ઉંચે છે તે પુરુષ ધર્મમાં પ્રમાદી થાય છે. તેમજ ધર્મમાં પ્રમાદ કરવાથી દદ જોડેલા એવા પુરુષાર્થી જરૂર વિભરાઈ જાય છે અને સારી રીતે ધર્મની આરાધના કરવાથી અહુ કાલથી છુટા પડેલા પણ પુરુષાર્થી તત્કાલ પ્રાપ્ત થાય છે. એ પ્રમાણે દેશના સંસારની શિવલદ્ર શ્રેષ્ઠીના પુત્રો સૂર્યની અત્યે વિનિયો

મનોરથની છા.

( ૧૬૧ )

પૂર્વક જોલ્યા. હે ભગવન् ! અમારી ચોખ્યતા પ્રમાણે  
અમને ધર્માપહેશ આપો ગુરુએ સર્વને સફર્શનનો ઉપહેશ આપીને  
દિગ્નિરતિ પર્યંત પ્રાણી વધાડિકથી વિરામ પામવા વિષે બરે-  
બર ઉપહેશ આપ્યો. નેથી તેઓએ દિગ્નવત અહણું કર્યું. અને  
બાકીનો ઉપહેશ શ્રદ્ધાપૂર્વક અહણું કરી મરણ પર્યંત મન, વચ્ચ  
અને કાચાવડે મિથ્યાત્વનો ત્યાગ કર્યો. તેથી શ્રેષ્ઠી બહુ ઝુશી થયો.  
અને વંદન કરી જોલ્યો. હે ભગવન् ! ધર્મ સંખ્યી ઉપહેશ આ  
મૃહારા પુત્રોને શું કોઇએ નહીં આપ્યો. ડાય ! પરંતુ બરેલા  
ઘડામાં લેમ પાણી અંદર ઉત્તરતું નથી તેમ આ લોકોને પણ  
દૈવયોગ આજ સુધી ધર્માચાર્યોનાં વચ્ચન પરિણયાં નહીં. પણ  
આજે આપનો ઉપહેશ એમને અમૃતની માદ્દાક ઇચ્છિકારક થયો  
છે. ત્યારબાદ ગુરુએ શ્રેષ્ઠીના પુત્રોને જોધ આપ્યો. કે તમે ધર્મમાં  
કુદુર્યો. એ પ્રમાણે ગુરુનું વચ્ચન માન્ય કરી તેમના ચરણ  
કમલમાં પ્રણામ કરીને પોતાના પિતા સહિત તેઓ પોતાના વેર  
ગયા. ત્યારબાદ તેઓ ધર્મ ધ્યાનમાં આસક્તા થઈ દિવસો નિર્ણય-  
મન કરવા લાગ્યા. તેથી તેમની કીર્તિ સર્વ ટેકાણે પ્રસરી ગઈ  
એને ધર્મમાં પ્રવીણતા મેળવી તેમજ ધર્મનુર્વેદમાં કુશાલ અને  
સત્યવાદી એવા તે વણિકપુત્રો સર્વ સંપત્તિઓના પાત્ર થઈ ગયા.

ત્યારબાદ તેઓની પ્રસિદ્ધિ તે નગરના રાજાએ સાંભળી  
તેથી તેણે શિવભદ્ર શ્રેષ્ઠીને જોલાવી આદર  
**રાજનિ ચોગ.** સહિત એકાંતમાં કહ્યું કે હે શ્રેષ્ઠિન્ ? રહ્યારે  
કોઈપણ પિતા, બાંધુ કે સ્વજન વર્ગ નથી,  
માટે આપના પુત્રોને આપ કહો કે મને સહાય કરો. મૃહારી  
સાથે કરવા માટે બહાર નીકળો. અને ફરેક કાર્યમાં મૃહારી સાથેજ  
રહો. નહીં તો હે શ્રેષ્ઠિન્ ! મૃહારા મનની શાંતિ કોઇ પણ સમયે

( १६२ )

श्रीसुपार्थनाथचरित्रं

थवानी नथी. ते सांबणी श्रेष्ठी योवयो हे राजेन् ? अहाऽङ् लुकित  
 पषु आपना आधीन छे तो पुत्रो होय तेमां शी नवाधि ? परंतु  
 तेच्यो प्रत धारी श्रावक थया छे. तेथी तेच्यो नरकाहि हुःअना  
 कारण्यभूत एवा प्रचंड कार्येना अधिकादेथी विरक्त थया छे.  
 तेमज यैत्यवंदनादिक धर्म कार्यमां निरंतर तत्पर रहे छे अन  
 धर्मना उपदेशक मुनियो पासे हुभेशां तेच्यो जाय छे. माटे आ  
 अहारा पुत्र आपनी सहायमां केवी रीते वर्ताशे ! राज योवयो  
 एवां उथ कार्य तेमनी पासे नहीं करावीये यैत्यवंदन विग्रहे  
 धर्म कार्य करवामां तेच्योने केाऽपषु विध अमे नहीं करीये.  
 भाव अहारी पासेज तेमने रहेवुं पडये. आ प्रभाषु राजलुं पचन  
 मान्य करी शिवलद्र श्रेष्ठी पषु पोताना घेर गयो. प्रलातमां पुत्रोने  
 शिखामषु दृढ़ राजद्वारमां विहाय कर्या. तेच्यो पषु राज पासे  
 गया अने पोतानी अनुकूलता प्रभाषु कर्युल करी राज सेवामां  
 हाजर रहेवा लाग्या तेमज निरंतर धर्म सेवा पषु युक्ता  
 नथी एम केटलोऽ समय गयो एवामां एक हिंस राजये  
 तेच्योने कहुं के हातमां अहारे अगत्यनुं एक कार्य आवी  
 पडयुं छे ते तअहारा विना थीज डेहिथी सिद्ध थाय तेम  
 नथी. तेच्यो योवया हे राजधिराज ! भुशीथी करमावो, राज  
 योवयो अहु भववान् एवा चार अहारा राजयो चारे दिशाओमां  
 अहारा विद्यु पडया छे अने पांचमे राज मलयाचल हुर्गमांथी  
 आपणु हेश उपर हुमदो करी रहो छे. माटे युद्धिभव सहित  
 तमे पांचे लाईयो हस्तीभव साथे लाई पांचे शत्रुयो उपर  
 शक्ति सुज्जभ युद्ध करवा जेने ने योग्य होय त्यां ते योवया जायो.  
 अने ज्य मेणवी आपणु राजयनी आआही करे. वणी अमे  
 अहीं देशनी अंदर रहीये छीये तेथी अहींनी चिता तअहारे  
 कंध पषु करवी नहिं. माटे तमे जलही तैयार थायें. एम कहा

મનોરથની કથા.

( ૧૬૩ )

બાદ પાંચે ભાઈઓ પોતાના પિતા પાસે ગયા અને રાજાએ કહેલી વાર્તા તેમની આગળ એકાંતમાં રહી.

**શિવભદ્રાંશુભી** રાજ પાસે ગયો અને પોતાનો અભિપ્રાય કહ્યો  
કે હે રાજન ! એક રહારી વિનંતિ છે તે આપ  
**શિવભદ્રાંશુભી.** કૃપા કરી સાંસારો, બલે રહારા ચાર પુત્રને  
આપના કાર્ય માટે મોકલો પરંતુ નાનો પુત્ર

જઈ શકે તેમ નથી કારણું એક નૈમિત્તિકે તેને વિશમે વર્ષે દેહાંત આપત્તિ કહેલી છે. માટે હે નરેંદ્ર ! આ તેનું વિશમું વર્ષ ચાલે છે. રાજ એલયો શું અહીં રહેવાથી તેનો અચાચ થશે ખરો ? કોઈ પણ દિવસ જાપિતન્યતા અન્યથા કરવા કોઈ સમર્થ નથી. શ્રેષ્ઠી એલયો આપનું કહેવું સત્ય છે પરંતુ સોપકમ અને નિરૂપકમના ક્ષેદથી આપત્તિ એ પ્રકારની છે. તેમાં સોપકમ-શીથીલ વિપત્તિ ઉપાય કરવાથી શાંત થાય છે અને નિરૂપકમ આપત્તિ તો નિકાચિત કર્મ સંબંધને લીધે શાંત થતી નથી, એમાં વિશેષ હકિકત તો જાની જાણો ! પરંતુ બન્ને પ્રકારની વિપત્તિમાં અવસ્થય ઉપાય કરવો જોઈએ. વળી સોપકમ ઉપદ્રવનો નાશ થવાથી કાર્ય સિદ્ધ થાય છે અને નિરૂપકમથી જરૂર મરણ થાય છે એમ પણ સાંસારનામાં આવે છે કે આપત્તિથી રક્ષણુ કરાયેલો પ્રાણી સો વર્ષનો થઈ શકે છે એમ લોક પ્રસિદ્ધ કહેવત છે. વળી આ પ્રસંગે એક કથાનક કહેવાય છે કે-પોતનપુર નામે એક નગર છે તેમાં મૃગાંઠ નામે રાજ બહુ વિખ્યાત હતો. નીતિધટ નામે તેનો મંત્રી હતો. અને રેહિણી નામે તેની ઊંડી હતી. તેને ગર્ભ રહ્યા ત્રણ માસ થયા એટલે મંત્રીએ નૈમિત્તિકને પૂછ્યું. આ ઊંડીને પુત્ર થશે કે પુત્રી ? નૈમિત્તિક એલયો આ ઊંડીને પુત્ર જન્મશે. પરંતુ વિશ વર્ષ સુધી તરહારે એતું ખરોખર રક્ષણુ કરવું નહિ તો જરૂર તે પુત્ર કુલનો નાશ કરનારો થશે. કારણું જે લાનમાં તહેં પ્રશ્ન કર્યો

( ૧૬૪ )

શ્રીસુપાર્થનાભાવરિત.

છે તેજ લગ્નમાં તેનો જન્મ પણ થશે. અને વિશ્વ વર્ષ થયા પછી અનુકૂળે તે પુત્ર હારા કુલની વૃદ્ધિ કરનારો થશે. માટે આ સ્વીને આજથી હવે લેંયરામાં રાખો. અને પ્રસવ પણ ત્યાંજ કરાવવો. આ વાત કોઈ ન જાણો તેવો બંદોબસ્ત રાખવો. પછી મંત્રીએ તે દ્વિવસ્થી પોતાની સ્વીને લેંયરામાં રાખી. માસ પૂર્ણ થવાથી પુત્રનો જન્મ થયો. રાહિણીની જ્હેને સૂતિકા કર્મ શુસ રીતે કર્યું. કોઈના જાણવામાં આ વાત આવી નહીં. ત્યારખાદ મંત્રીએ તેની જ્હેને પણ પરદેશમાં માંકલી દીધી અને હુમ્મેશાં પુત્રની સારવાર રાહિણી પોતેજ સાવચેતીથી કરતી હતી, અનુકૂળે તે પુત્ર પાંચ વર્ષનો થયો. એટલે અફ્યાસ માટે તેને શુસ રીતે કલાચાર્યને સેંપી દીધો. ન્યાય, વ્યાકરણ, સાહિત્ય વિગેરે શાસ્ત્રો દ્વારા વર્ષની અંદર તે શીખી ગયો. તો પણ કલાચાર્યનો સંબંધ તે છોડતો ન હોતો.

મંત્રીના ઘરની પાસે એક બાલપંડિતા રહેતી હતી, તેણીએ તેના ઉપાધ્યાયને. પૂછ્યું કે હુમ્મેશાં તમે બાલપંડિતા, કયાં જાઓ છો ? શયન અને લોજન સમયેજ તમે ઘેર હેખાઓ છો. ત્યારે ઉપાધ્યાય એલ્યો હુમ્મેશાં એવા પ્રસંગ આવી પડે છે કે કોઈને કોઈ ડેકાણું જવું પડે છે. કુરીથી બાલપંડિતા એલી દરરોજ મંત્રીના ઘરમાં આવતા જતા તમને હું જોઉ છું. તો ત્યાં નિત્ય એવું શુકામ હોય છે ? ઉપાધ્યાય એલ્યો, વત્સે ! આ બાખત હારે પુછવી નહીં. કારણું સ્વીચ્છાનું હૃદય બહુ તુચ્છ હોય છે. અને કોઈ પણ શુસ વાત કરી હોય તો તેઓના હૃદયમાં ક્ષાણુ માત્ર પણ તે ટકતી નથી. તે સાંભળી તેણીએ પ્રતિજ્ઞાપૂર્વક સર્વ વૃત્તાંત પૂછી લીધું. ત્યારખાદ તેણીએ પોતાના ઘરથી આરંભીને તે ઘરના લેંયરા સુધી એક વિશાળ સુરંગ એલાવીને તેની અંદર થઈ તે લેંયરામાં જઇ

મનોરથની કથા.

( ૧૬૫ )

તેણું મંત્રીના પુત્રની ભૂલાકાત લીધી. પછી પુત્ર બોલ્યો તું કાણું છે ? અહો, શામાટે આવી છે ? બાલપંડિતા બોલ્યી હું શોઠની પુત્રી છું અને આપના દર્શાન માટે અંહિયાં આવી છું. વળી તું ક્યાં રહે છે ? કુરીથી તે બોલી આ નગરની અંદર ત્હારા પિતાના ઘર પાસે ઘરદેરાસર, કૂપ, વાપી વિગેરેથી સુશોભિત રહારા પિતાની હુવેલી છે તેમાં હું રહું છું. કુરીથી તેણું પૂછ્યું કે મંહિર તથા નગરાદિકનું સ્વરૂપ કેવું હશે ? તેમજ ચંદ્ર સૂર્યનાં નામ પણ હું નામભાવામાં ભાગી ગયો છું પરંતુ તેમનું સ્વરૂપ હું જાણુતો નથી. બાલપંડિતા બોલી હે કુમાર ? રહારી સાથે ચાલ હું તને પ્રત્યક્ષપણે સર્વ બતાવું, ત્યાર બાદ તેનીસાથે તે બહાર નીકળી નગરની અંદર કુરવા લાગ્યો. અને જે જે વસ્તુએ જુએ છે તે સર્વનાં નામ તે બાળને પુછે છે. કેટલોક સમય નગરમાં કુરવી કુરીથી તેને પોતાના સ્થાનમાં તે લઈ ગાડ. કુમાર બોલ્યો હે બાલ પંડિતે ? દરરોજ ત્હારે અહીં આવવાનું અને અનુકૂળે દરેક પદાર્થનું જ્ઞાન મુહેને કરાવવું એ પ્રમાણે તેનું વચ્ચન માન્ય કરી હુમેશાં બાલપંડિતા તેની પાસે જવા લાગી અને નગરની અંદર કુરીને દરેક પદાર્થી તેને બતાવવા લાગી. અહું, નક્ષત્રાદિકનું પણ પ્રત્યક્ષ જ્ઞાન તેને કરાવ્યું, ત્યારબાદ તે બોલ્યો. હે સુભગે ? રહારે રાજકુલમાં જવું છે માટે ત્યાં તું રહુને લઈ જ ત્યાર બાદ બાલપંડિતા તેની સાથે ગાડ અને દૂર ઉલ્લી રહી ને તેને સર્વ રાજકુલન બતાવ્યું એમ અનુકૂળે જોવા લાયક ધણો ખરો આગ તેને બતાવી દીધો. પછી તેણું એ કહ્યું કે હુવે હું આપની પાસે આવીશ નહીં, કારણું કે જો આ વાત તરહારા પિતાના જાણવામાં આવે તો રહારા પિતાને બહુ અડચણું થાય તેમજ તરહારે પણ હુવેથી બહાર નીકળવું નહીં. કારણું નૈમિત્તિ કે વિશ વર્ષ સુધી તમને બહાર નીકળવાની ના પાડી છે. એમ કહી તે પોતાના વેર ચાલી ગાડ.

( ૧૬૬ )

શ્રીસુપાર્થનાથઅરિન્

ત્યાર ખાદ તે કુમારને દરરેજ ક્રવાતું વ્યસન પડયું જેથી  
 તે રાત્રિના સમયે ભ્રમણું કરવા લાગ્યો.  
**ત્રીહંડી**      તેવામાં તેને ડોઈક ત્રીહંડીનો સમાગમ થયો.  
 અને તેની સાથે બહુ સ્નેહ બંધાયો તેથો  
 ગ્રોહંડીએ તેને અદૃષ્ટ થવાની વિદ્યા આપી. તે વિદ્યાના પ્રભા-  
 વથી અદૃષ્ટ રૂપ કરીને એક દિવસ તે રોજભવનમાં ગયો પ્રાહ-  
 રિક લોકો ન જાણે તેવી રીતે ખાસ રાજના શયન સ્થાનમાં તેણે  
 પ્રવેશ કર્યો અને રત્નમય હપુણું, તરવાર, છરી અને ધીજક સહિત  
 બાહુ રક્ષક લઈ લીધાં ખાદ ચુનાના લેપથી રાજની નાસિકા રંગી  
 ને તે પોતાના સ્થાનમાં ચાલ્યો ગયો. પછી દર્પણાહિક સર્વ  
 બસ્તુએ ચુપ્ત ડેકાણે મૂકીને તે સુધ ગયો. ત્યાર ખાદ રાજ પણ  
 પ્રભાત કાલમાં જગી ઉડ્યો અને પોતાતું સુખ જોવા માટે દર્પણ  
 રહ્યાની દૃષ્ટિ કરે છે તેટલામાં દર્પણ તેની નજરે પડયું નહીં  
 એવામાં ત્યાં અંગરક્ષિકા આવી અને ચુનાથી ધોળેલી નાસિકા  
 જોઈ રાજને કહ્યું કે હે સ્વામિન્ ? નાક ઉપર ચુનો કેમ ચોપડયો  
 છે ? પછી રાજએ ધીજું દર્પણ મંગાવીને જોયું તો નાકની  
 શોલાવિલક્ષણ જોવામાં આવી તેથી રાજને બહુ કોધ થયો. અને  
 વિચારમાં પડ્યો કે આ અકૃત્ય ડેકાણું કર્યું હશે ? ત્યારખાદ તર-  
 વાર ઉપર રાજની દૃષ્ટિ પડી તો તે પણ તેના જોવામાં આવી નહિં  
 પછી છરી જોવા ગયો તો તે પણ દીઠી નહીં. તેમજ બાહુ રક્ષક  
 જોવામાં આવ્યો નહીં. તેથી રાજ બહુ શોલાયમાન થઈ ગયો.  
 અને પ્રાહારિક લોકોને કહ્યું કે અરે ? તમ્હારા પ્રમાદને લીધે  
 રહારં સર્વસ્વ ડેણું લઈ ગયું ? તેનો જલદી તમે તપાસ કરો.  
 પ્રાહારિકા યોદ્યા, હે રાજન ! ડોઈ પણ અન્ય પુરુષ અહીં આવી  
 શકે એ બનવું બહુ અશક્ય છે. કરણું કે આપના શયન બાવનતું  
 દ્વાર અમોદે બંધ કર્યું હતું. તેમજ આપી રાત સાવધાનપણે

મનોરથની કથા.

( ૧૬૭ )

અમે ઉલા રહ્યા છીએ. કષણુમાત્ર પણ અમેએ પ્રમાદ કર્યો નથી તે સંભળી રાજ બહુ કોધાતુર થઈ ગયો અને લાલ નેત્ર કરી પ્રધાનાદિકની આગળ દર્પણાદિકની ચોરી કઢી સંભળાવી પ્રધાને વિચાર કરી કદ્યું કે, હે સ્વામિન ! બહુ પરાહની એવા હબદાર મુખટોથી રક્ષણ કરતા આપના ભવનમાં ચોરી કરનાર સામાન્ય પુરુષ ન જાણુવે. પરતું વિદ્યાધરની માદ્રાક વિદ્યાસિદ્ધ અને, હનારે મુખટોથી પણ હુર્ચાહ્ય એવા તે ચોર હોવો જોઈએ. તેમ છતાં જો તેને પકડવાની ધર્યા હોય તો ચોરની અંદર મધ્ય ભાગમાં બહુ, હિંચ્યા અને કોઈ પ્રવેશ ન કરી શકે તેવો એક મહેલ કરાવો. તેના થારે બાળુએ નાના પ્રકારના ચોકીદાર મૂડો. અને તેની અંદર નવયૈવન વડે અતિ વિભૂષિત અને મનમોહક એવી વાસવદાતા નામે કુમારીને સુકામ કરાવો. વળી તેને ફર્લાંડ કે હે વત્સે ! જે કોઈ પુરુષ તહેને ખી યુદ્ધિથી દર્પણાદિક આપે તેને ત્હારે પરણું. શુભ લગ્ન અને ઉત્તમ સુહૃત્ત તેજ દિવસે ત્હારે સમજવું એ પ્રમાણે નિશ્ચય કરી મંત્રી મધ્યાન્હ પછી પોતાને બેર ગયો. અને લોજન કાર્ય માટે પોતાના પુત્રની પાસે તેની માને પહેલી મોકલી લોજનની વાર થઈ એમ જાણી પુત્ર ઓલ્યો હે જનની ! આજે એવું શું કામ હતું કે આટલી વાર લાગી ! માતાએ પણ દર્પણાદિકની ચોરી સંભંધી વાત કઢી અને તેની પ્રાપ્તિ માટે ત્હારા પિતા આજે દોકાયા હતા. વળી મહેલ ચણું વીને તેની અંદર વાસવદાતા રાજકુમારીને રાખી છે. આ ઉપાય કરવાના કારણુને લીધે ત્હારા પિતાને પણ આજે બહુ વિલંબ થયો છે. તેમજ તેમની આજા લઈ તરતજ હું અહીં આવી છું. તે સંભળી કુમારે લોજન કરી લીધું અને પોતાની માને વિદ્યાય કરી. રાજાએ નિર્માણ કરેલા મહેલમાં વાસવદાતા રાત્રીના સમર્યે

( ૧૬૮ )

શ્રીસુપાર્થનાથમરિચ.

એડી હતી. ચોકી પહેરેં ચારે તરફ મોનુદ  
**વાસવહૃતા** અને હતો. છતાં રાત્રીના સમયે અદ્યથ થધ  
**મંત્રી પુત્ર** મંત્રી પુત્ર રાણનું ખડગ લઈ મહેલની અં-  
 દર પ્રવેશ કર્યો. કુમારને લેઈ વાસવહૃતા  
 બોલી. તું કોણું છે ? મંત્રી પુત્ર બોલ્યો આટલી રાત્રીએ પર-  
 સ્થાનમાં કોણું પ્રવેશ કરે ? તે સાંભળી વાસવહૃતા સમજુ કે જેણે  
 રાણની ચોરી કરી છે તેજ આ પુરુષ છે. એમ જાણ્યી તે વિતર્ક  
 કરવા લાગી કે આ તે ધ્રુવ છે કે કોઈ વિદ્યાધરેંદ્ર છે ! વળી રૂપ  
 અને કાંતિ ઉપરથી કામદેવ અથવા કોઈ દેવ દાનવ જણ્યાય છે.  
 અદે ગમે તે હોય પરંતુ એની સાથે જરૂર મહારે લગ્ન કરવું  
 જોઈએ. એમ નક્કી કરી કુમારના હુથમાંથી ખડગ લઈ વાસવ-  
 હૃતા બોલી હે મહાકાગ ! પોતાના પુરુષથી પ્રાપ્ત થયેલી મહને  
 તું પરણીને કૃતાર્થકર ! કુમાર બોલ્યો, હે સુખગે ! મહારાજ  
 નામ, કુલ, શુહાદિક કંઈ પણ તું જાણુતી નથી છતાં તું  
 અહને કેવી રીત પરણીશ ! વાસવહૃતા બોલી તમહારા શુણો.  
 ઉપરથી કુલાદિક સર્વ પ્રસિદ્ધ જણ્યાય છે માત્ર મહારે તમને  
 કહેવાનું એટલું જ છે કે રાણની દર્પશુદાદિક લીધેલી વસ્તુઓ  
 તમારે મહને આપવી પડશે. એમ કહી ગંધર્વ વિવાહથી  
 તે તેને વરી. કુમાર પણ કશ્યુમાત્ર ત્યાં રહી પોતાના સ્થાનમાં  
 જયો. ત્યાર બાદ હુમેશાં તે કુમાર રાત્રીએ વાસવહૃતાની પાસે  
 જવા લાગ્યો. અને દર્પશુદાદિક સર્વ વસ્તુઓ વાસવહૃતાને સ્વા-  
 ભીન કરી. તોણીએ પણ તે સર્વ વસ્તુઓ રાણ પાસે મોકદી  
 આપી. તોપણ નાક ઉપર ચુનો ચોપડવાથી ઉમજ થયેલો. કે  
 રાણનો કોઈ હતો તે શાંત થયો. નહીં. તેથી તેણે મંત્રીને કહ્યું  
 કે વાસવહૃતાની પાસે જરૂર તેને જણાવો કે કોઈપણ ઉપાયથી  
 ચોરી કરનાર તે પુરુષને મહારી પાસે તે મોકદે હું

अनोरथनी कथा.

( १६६ )

पेतेज तेने मारी नाखुं. अन्यथा भहारै कोध शांत थवानो नथी. मंत्री ऐल्यो, हे स्वामिन् ! तेने आप केवी रीते मारी शक्यो ? कारणु के ते तो आपनो जमार्द थयो छे. राज्ये क्षेत्र त्हारै क्षेत्रुं सत्य छे. परंतु भहारै कोध शांत थतो नथी. प्रधान ऐल्यो जुद्धिमान् पुरुषे आनंदना स्थानमां रेख करवो. नहीं. कारणु के चारेको माल आपणो. बधो पाणो आव्यो छे. एट्टलुंज नहीं परंतु प्राणु थडी पछु विशेष प्रिय ऐवी आपनी पुत्री तेनी साथे परण्ही छे. अने हज्जु पछु आपना प्रसादने ते बहु लायक छे भाटे प्रसन्न थई आपनी पासे तेने ऐलावरावो. विगेरे बहु युक्तिएवडे प्रधाने राज्ये कोध दूर कर्यो.

राज्ये वासवदत्ताने क्षेत्रवरांयुं के त्हारा पतिने भहारी पासे लाव. कारणु के तेनी उपर हुं बहु प्रसन्न पुत्रजन्म. थयो छुं. तेथी भहारे त्हेनो बहु सत्कार करवानो छे. वासवदत्ताए पछु पेताना

पितानो संदेशो पेताना पति आगण कह्यो. मंत्री पुत्र ऐल्यो. हे स्त्री ! पांच वर्ष पछी हुं राजा पासे आवीश. पछी वासवदत्ताए पछु पेताना पिताने ते सभाचार आभ्या. ऐम केट्टेक सभय व्यतीत थतां वात्सवदत्ताने एक पुत्र जन्मयो. त्यार बाह देको न हेप्ही शके ? तेवी रीते अहृस्य थह ते कुमार हुमेशां वासवदत्तानी पासे पुत्रने रमाडवा भाटे ते आवतो अने पाणो पेताने घेर जतो. हुतो. ऐम करतां तेने पांच वर्ष पुरा थयां. त्यारे तेषु वासवदत्ताने क्षेत्रुं के तुं त्हारा पितानी पासे ना. हुं पछु सात दिवस पछी जङ्गर त्यां आवीस. त्यार बाह वासवदत्ताए पेताना पिता पासे जै घेतानो पुत्र बताव्यो. इपाठिक गुणु अने लक्षणोथो पूर्ण ऐवा ते पुत्रने जेई राज्ये पेताना ऐणामां ऐसारी वारंवार चुंबन करी क्षेत्रुं के

( ૧૭૦ )

શ્રીસુપાર્થનાથચરિત.

હે વત્સ ! તહારા દર્શનથી તહારા પિતાનાં પણ દર્શન થયાં.  
પરંતુ ચકોરપક્ષી પૂર્ણિમાના ચંદ્રને જેમ છુંછે છે તેમ અહારં  
હૃદય પણ તહારા પિતાના દર્શન કરવામાં બહુ ઉત્સુક થયું છે.  
એ પ્રમાણે તેને દરરોજ બહુ સ્નેહ પૂર્વક પોતાના જોગામાં  
બેસારી ચુંબન કરે છે અને નાના પ્રકારના અલંકાર ફેરાવે છે.

**મંત્રીના પુત્રને વિશ વર્ષ પુરાં થયાં તેજ હિવસે પોતાની**  
**ખી સહિત મંત્રી લોંઘરામાં પોતાના પુત્રની**  
**મંત્રી પુત્રનો**      પાસે ગયો. એકદમ મંત્રીને જોઈ પુત્ર  
**સમાગમ.**      પોતાની માને પુછવા લાગ્યો. હે જનની ?

આ કોણું છે ? માતા જોલી લાઇ ? આ  
તહારા પિતા છે. માટે એમને નમસ્કાર કર. તેણે પણ તરતજ  
પિતાને પ્રણામ કર્યો. મંત્રીએ આદિંગન કરી પ્રથમ કહેલું નૈમિ-  
તિકિનું વચન તેને સંભળાવ્યું. ત્યાર બાદ મંત્રી તેને અગાશી  
ઉપર લઈ ગયો. અને પોતાની સાથે સ્નાન વિનિરે કરશવીને તેને  
રાજ પાસે લઈ ગયો. ત્યાં પ્રણામ કરી બંને જણું એડા એટલે  
રાજએ પૂછયું હે મંત્રી ? આ કોણું છે ? મંત્રી જોલ્યો. આ અહારે,  
પુત્ર છે. તે સાંભળી રાજ વિનિમિત થયો. અને જોલ્યો, ઝોઈ હિવસ  
તઅહારે પુત્ર થયો તે વાત અમે જાણી નથી છતાં આ શું ?  
મંત્રી એ રાજના કાનમાં શુમ રીતે નૈમિત્તિકિનું વચન કહ્યું તેમજ  
તેણે કરેલો. ઉપાય પણ કદ્યો તેટલામાં બાલરક્ષક પુરૂષ વાસ્તવ-  
દ્યાના પુત્રને લઈ ત્યાં આવ્યો. અને તે પુત્ર પોતાના પિતાને  
નોઈને પ્રેમ પૂર્વક બાપા, બાપા; એમ જોલતો હુઠ આદિંગન  
કરી તેના પિતાના જોગામાં તે એડો. એટલે રાજ તેમજ ત્યાં  
એડેલા સર્વે દોડો. તેને જોઈ બહુ ઝુશી થયા. વળી તે સંમયે  
મંત્રીના હૃદયમાં ક્ષોલ થયો. તેથી તે કંધક જોલવાનો વિચાર  
કરતો. હતો તેટલામાં રાજ પોતેજ જોલ્યો કે શું તે વીર પુરૂષ

મનોરથની કથા।

( ૧૭૧ )

તું પોતેજ છે ? હા હું છું એમ તેના કહેવાથી રાજાએ તેને પોતાની પાસે બોલાવી આવિંગન દઈ સતકાર પૂર્વક પોતાની નાળુક બેસાડ્યો. ત્યાર ખાદ રાજ્યના પંચાંગનો પ્રસાદ કરી હાથી, ઘોડા, અણના, ઉત્તમ દેશ અને સર્વ રતુઓ માં વાસ કરવા લાયક ઉત્તમ એક મહેલ આપ્યો.

એક દિવસ રાજ એકાંતમાં બેઠો હતો તે સમયે મંત્રીનો પુત્ર પણ ત્યાં હાજર હતો. રાજાએ તેને રાજાનો મોક્ષ. પુછ્યું કે હે મહાશય ? તું સત્કુલમાં ઉત્ત્રમનું થયો છે છતાં આ નિંદિત કામ તહારે થા માટે કરવું પડ્યું ? મંત્રી પુત્ર બોલ્યો. મહારા પિતાને નૈમિત્તિકે ને પ્રમાણે કલ્યાં હતું તેના અનુસારે મહેં કાર્ય કર્યું છે. તેમાં કંઈપણ નિંદિતપણું નથી. રાજ બોલ્યો. તે નૈમિત્તિક શું સત્ય વાહી છે ? મંત્રી પુત્ર બોલ્યો. આ વિષયમાં હે નરેંદ્ર ? મહારાં કર્મ સત્ય છે. અને કર્મના અનુસારે મહેં આ પ્રમાણે આચરણ કર્યું. વાગી જન્મ સમયે શુલાશુલ થહ, નક્ષત્ર, લગ્ન, યોગાદિકું પણ કર્મથીજ આવી મળે છે, સિદ્ધાંતમાં પણ કલ્યાં છે કે-હરેક પ્રાણીએ પૂર્વે કરેલા કર્મીના ફૂલ વિપાકને લોગવે છે. પણ થહ નક્ષત્રાદિક તો ફૂકા નિમિત્ત માત્ર થાય છે. અશુલ અને શુલ કર્મ-જન્ય સોપકમ કાર્યમાં વિશેષે કરી સુખ્ય પણે દર્ય, શેત્ર, કાલ અને લાવ કારણું હોય છે. એમ અનેક પ્રકારનાં મંત્રી પુત્રનાં મનોહર વચ્ચનો સાંલળી રાજ સંસારથી વિરકૃત થયો. અને તેનેજ પોતાનું રાજ્ય સૌંપી હીક્ષા થહણું કરીને પોતે મોક્ષ સ્થાનમાં ગયો. આ પ્રમાણે શિવભદ્ર શ્રેષ્ઠીએ રાજને દૃષ્ટાંત આપી ફરીથી કલ્યાં હે નરેંદ્ર ? એમ બજે પ્રકારની આપત્તિમાં ધણું ભાગે ઉપાય કરવાથી કાર્યસિદ્ધ થાય છે. જેવી રોતે મંત્રીએ પુત્રના રક્ષણ માટે ઉપાય કર્યો તેવી રીતે મહારે પણ ઉપાય કરવો જોઈએ.

( १७२ )

श्रीमुपार्थनाथयरितं.

त्यार बाह राजनी आज्ञाथी तेणु पोताना नाना पुत्र महेंद्रने  
पोताना धरमां राख्यो। बाडीना चारे पुत्रोने राजना हुकम प्रभाणु  
पोते पथु युद्ध करवा जवानी आज्ञा आपी। पछी तेचो चारे  
हिशाओमां सैन्य संहित शत्रुओने छुतवा भाटे गया। तेमां  
प्रथम पुत्र वड्थु चतुरंग सेना संहित भलयाचब तरक्क आव्यो  
अने त्यां जधु हुर्गनी तेणु पठाव कर्यो।

शिवलक्ष्मने नानो पुत्र महेंद्रसिंह वड्थुना स्नेहने लीघे  
पोताना पितानी आज्ञा लीधा शिवाय  
**महेंद्रसिंह.** महा कष्टवडे घेरथी नीडल्यो। अने वड्थुनी  
पासे गयो। वड्थु पथु तेने पोतानी पासे अहु  
आवयेतीथी राख्यो। अने पोताना पिता उपर लोख भेक्ती  
महेंद्रसिंहुना समाचार जग्याव्या के एनी श्रीकर चिंता  
करशो नहीं, त्यारबाह त्यां एक वृद्ध लीहा आव्यो। अने वड्थु  
ने कडेवा लाव्यो के हे महाशय ! हुपा करी एकांतमां  
झारी साथे आप चाव्यो। आपने तेडवा भाटे हुं आव्यो। हुं  
वड्थु पथु तेना कडेवा प्रभाणु कधुल कर्युं। पछी ते लीहा  
आव्यो। मनुष्योचे प्रवेश करी शकाय तेवी गुद्धानी अंदर  
हुंचे अडवानी एक भेटी सुरंग छे, ते सुरंग किहाना मध्य  
लाग सुधी लाभी छे। अने ते डेकाणु एक सुंदर महेल छे,  
तेनी अंदर शम्यामां ते किहाओनो अधिपति विराजे छे। ते  
किहावो ने तुं रहने आपे तो हुं तने तेनी पासे लक्ष लाउं।  
वड्थु पथु ते प्रभाणु तेनु वचन मान्य करी तेनी साथे चाव्यो  
अने महेंद्रसिंहने पोताना सैन्यनी अंदर राख्यो। त्यारबाह  
सुरंगमां थँड अनुकमे वड्थु संहित लीहा महेलमां गयो। तेना  
मध्य प्रदेशमां लीहा लोकेनो ते अधिपति पोतानी स्त्रीओ साथे  
मुर्द गयो। हुतो। ते वृद्ध लीहे तेने ते अताव्यो। पछी तेज

મનોરથની કથા.

( ૧૭૩ )

વખતે વરુણુની આજાથી તેના સુખટોએ કીએઓ સહિત તેને બાંધી એડીએથી કબળે કરી સેનાધિપતિને સોંપી હીધેએ, એટલે સેનાધિપતિએ પણ પોતાના રાજ્યમાં આરક્ષકજીનોને રસ્તા માટે ભાતું આપી બંદોખસ્ત કરી તેને પોતાના રાજ પાસે મોકલાવી હીધેા. તેમજ રાજને લેટ માટે સંસાંગ તેની લક્ષ્મી પણ તેની સાથેજ મોકલાવી હીધી. અને પોતાના પિતાને પૂજવા માટે સ્ક્રિટ રત્નમય જીનેંદ્ર ભગવાનની પ્રતિમાએ. પણ ત્યાં મોકલાવી. ત્યારબાદ તે વૃદ્ધ લીલાના કહેવાથી તેના પુત્રને તે હુર્ગાધિપના સ્થાનમાં સ્થાપન કર્યો અને તે હુર્ગમાં વરુણુ પોતાના અધિપતિની આજા ફેલાવી.

**હવે મહેંદ્રસિંહ પોતે શિબિરમાં રહ્યો હતો. ત્યાં એક ભીલુ આંદ્રો, તેણે મહેંદ્રસિંહની સુલાક્ષાત લઈ વ્યંતરહેવી.** તેને સિદ્ધિહાયક એક કદ્વપતું ટિપ્પણું આપીને કહ્યું કે હુર્ગાગિરિ પાસે એક સુરંગ છે. ત્યાં ચાલો હું તમને નિર્વિઘ્નપણે ત્યાં લઈ જઈશ. પછી મહેંદ્રસિંહ પોતાનો પરિવાર ન જણે તેવી રીતે હાથમાં તે કદ્વપતું ટિપ્પણ લઈ ભીલાના કહેવા પ્રમાણે તે સુરંગની અંદર તેણે પ્રવેશ કર્યો. તેટલામાં ત્યાં આગળ એક વ્યંતરીનું ભવન તેણે જોયું. તેની અંદર પ્રથમ ગુણુસ્થાને રહેલી એક વ્યંતરી એડી હતી. મહેંદ્રસિંહને જોઈ તે એલી, હે સ્વામિન् ! અહીં પધારો. અહારી સાથે કીડા કરો. હું વ્યંતર લોકોની વારાંગના છું. મહેંદ્રસિંહ એલ્યો દેવીએ. સાથે લોગ લોગવવાનો મન, વચ્ચન અને કાયાથી બન્ને પ્રકારે અહારે પ્રતિબંધ છે. તે સાંલળી કોધાતુર થઈ વ્યંતરી એલી જે અહારી સાથે તું કીડા નહીં કરે તો તહારે અહીં આવવાનું શું કારણ ? મહેન્દ્રસિંહ એલ્યો, માત્ર કૌતુકને લીધે જ હું અહીંયા આંદ્રો છું. માટે કંઈપુણું

( १७४ )

શ્રાવણિકાર્યનાથમંત્ર.

કોતુક ખતાવું વ્યાંતરી એલી અરે મૂઠ ! રહારી સાથે રમવાથી અધિક બીજું કર્યું કોતુક રહારે જોગચે છે ? જે રહારી સાથે લોગ નહીં લોગવેતો હાલમાં જરૂર તું મઃયુવશ થઈશ. મહેન્દ્રસિંહ યોજ્યો, હે મૃગાક્ષી ! બાદે મૃત્યુ થાય પરંતુ હું રહારા નિયમનો ભાંગ કરીશ નહીં. વળી તું જણાવ કે પુઢ્યીના શામ ભાગ ભૂતળથી રહાડું સ્થાન કેટલું ફર છે ? વ્યાંતરી એલી રહાડું રહેવાનું સ્થાન અહીંથી બહુ ચોજન ફર છે. મહેન્દ્રસિંહ યોજ્યો જે એમ હોય તો અધો દિશાએ ગમન કરવામાં રહારે એક ચોજનથી વધારે ગમન કરવાનો નિયમ છે. માટે એક ચોજનથી અધિક ગમન કરું તો દિગ્ભૂતમાં રહુને બીજે અતિ-ચાર લાગે. તે સાંકળી વ્યાંતરી બહુ કોધાતુર થર્ડ ગઈ અને મહેન્દ્રસિંહને પાટુ મારવા જાય છે તેટલામાં કોઈક સર્વયગ્નદિપ ફેવ ત્યાં આવ્યો. અને તે બન્નેની વચ્ચમાં પડ્યો. તેમજ મહેન્દ્રસિંહને ત્યાંથી તે જલહી આકાશમાર્ગે ઉપાડી વરણુના સૈન્યમાં તેને મૂડી હીવ્ય વસ્તો આપીને તે ફેવ પોતાના સ્થાનમાં ગયો. હવે વરણુ ઉર્ધ્વહિશાએ ગમન કરવાના પ્રતની મર્યાદા કરવામાં વિચાર કર્યો. ત્યારે તેને રમરણ થયું કે એક ચોજનની મર્યાદાનો સ્વીકાર કર્યો છે, છતાં એ ચોજન પ્રમાણું હું ગમન કર્યું એમ જાણી તે બહુ ઘેદ કરવા લાગ્યો કે સર્વવિરતિ ધારણું કરવાની શક્તિ તો ફર રહી, પરંતુ એક સાધારણ નિયમનો પણ હું ભાંગ કર્યો. એક મગનો ભાર ઉપાડવામાં જે અશક્ત હોય તે પર્વતને કુલી રીતે ઉપાડી શકે ? જે મહાતુભાવમુનિએ ત્રિવિધ ત્રિવિધ મન, વચ્ચન અને કાયાથી જીવન પર્યત સર્વ વિરતિ પત પાળે છે તેઓ વંદન કરવા લાયક કેમ ન થાય ? તેમજ પૂજ્યવા ચોગ્ય કેમ ન ગણ્ય ? હા ! હા ! હું મહાત્મ અધમ ગણ્યાઉં. કારણુંકે દેશવિરતિ પણ ન પાળી શક્યો. એ પ્રમાણે વરણુ બહુ પણ્ય-

अनोरथनी कथा.

( १७५ )

ताप करी हुर्ग नगरमांथी नीचे उतरीने पोताना सुकाममां आयो। अने महेंद्रसिंहनी आगण अतिचारादिक सर्व वृत्तांत निवेदन कर्युं, त्यारभाद तेणु पछु पोतानुं चरित्र अने अधो-दिशामां गमन करवाथी लागेदो। अतीचार पछु कष्टो। पछी महेंद्रसिंह सहित बद्धु त्यांथी पोताना नगरमां आयो। राजने नमस्कार करी हुर्गचरहुण्डादिक सर्व वार्ता निवेदन करी तेमज पोताना नियमनो लंब पछु कष्टो। राजने कहुं के रुद्धारी आजाथी तेमां लहने किचिंत् भाव पछु दोष लागवानो नथी।

**पूर्व दिशामां शुशुचंद्र गयो हुतो। ते अखंड प्रयासु वडे ते देशना सीमाडामां गयो। अने ते देशना**

**शुशुचंद्र.** राजने अधर अपावी। त्यारभाद युद्ध करवामां बहु कुशल अने पूर्वदिशामां

आभूषण समान ते देशना अधिपतिये पोताना दृत भारकृत शुशुचंद्रने कडेवरायुं के छे विश्वपुत्र ! पांच दिवस सुधी रुद्धारा देशमां लहारे प्रवेश करवो नहीं। आ बाखतमां ज्ञे हुं कटप करे तो लहने लहारा देव शुद्धना सोगन छे। वणी हुं पोतेज पांच दीवस पछी लहारा रुद्धमो। आवीश। आ प्रभाषे सांभगी शुशुचंद्र ओहयो छे दृत ! पांच दिवसनी अंदर ज्ञे हुं लहारा शीमाडानुं उद्दलंधन कड़ तो जड़र रुहने आ सोगन छे। पछु ले लहारा कष्टा प्रभाषे लहारो स्वाभी नहीं आवे तो छठे दिवसे हुं आवीने त्यां ऐठेला तेने पकडी लक्षण। एम कही दृतने विदाव कर्यो। पछी ते दृते पोताना नगरमां जर्ध राजने सर्व समाचार कष्टा। राजने दृतने पूछहुं ते वालियानुं सैन्य केटलुं छे ? दृत ओहयो, छे राजन् ! आपछु सैन्य करतां भमल्लुं छे। अने शुशुचंद्र पोते बहु पराकर्मी छे, कमवार कार्यनो साधक छे। तेनी पाखमां रहेटा हाथीओ। रहेला छे। भाटे पोतानो देश छाप्रे

( ૧૭૬ )

શ્રી સુપાર્ખનામ અરિત્રી.

દઈને પણ પોતાના આત્માનું રક્ષણું કરેલા. અથવા દંડ આપીને છુટવાનો ઉપાય કરેલા. નહિં તો આપને જીવનું પણ સુસ્કેલ થશે, એમાં કંઈ સંશય નથી. એ પ્રમાણે સાંભળી રાજ ભયબીત થઈ ગયો અને રાત્રી દિવસ ગમન કરી ત્યાંથી બહુ ફર ચાલ્યો. આ વાત તેના હૃતના કહેવાથી શુણ્યાંદના જાણવામાં આવી એટલે તરતાજ શુણ્યાંદ્ર તેની પાછળ ચાલ્યો. આગળ રાજ અને પાછળ શુણ્યાંદ્ર ચાલ્યો જાય છે. એમ કરતાં શુણ્યાંદ્ર સો ચોજનથી કંઈક અધિક નીકળી ગયો તેવામાં તેને દિગ્ભૂતભૂં સમરણ થયું અને વિચાર કરતાં તેણે જાણ્યું કે નિયમથી દશ ચોજન અધિક હું આવ્યો, તેથી મહારાજાનું દિગ્ભૂત કલાકિત થયું. વળી મહારા આલાસ માત્રથી તે રાજ નાશી ગયો. એમ જાણ્યી હું બહુ ખુશી થયો, પરંતુ પોતાના નિયમના ભંગદ્વધી દડવડે હું દાયો. એમ મહારા જાણવામાં આવ્યું નહીં. વળી લેશમાત્ર પણ નિયમનો ભંગ કરવાથી અતિ દાડણું હું અ ઉત્પજ થાય છે. કિંચિતું માત્ર પણ હાતાહુલ વિષ ખાવાથી જેમ પ્રાણી જરૂર મૃત્યુ પામે છે તેમ આ અતીચારતું સેવન પણ અમંગલિક છે. માટે હુદે અહીંથી એક રંગદું માત્ર પણ આગળ ચાલવું ચોગ્ય નથી, એમ ધારો શુણ્યાંદ્ર ત્યાંથી પાછો વળ્યો. અને તે રાજના નગરમાં પોતાનો એક અધિકારી મૂડી સૈન્ય સહિત પોતાના નગર તરફ પાછો કર્યો. આદ વિલૂતિ સહિત શુણ્યાંદ્ર પોતાના રાજ પાસે જઈ નમસ્કાર કરી સર્વ વૃત્તાંત તેમને નિવેદન કર્યો.

મહા ખુદ્ધિશાળી સુંદરને ઉત્તર દિશામાં સમરવીર રાજ પાસે મોકલ્યો હતો. કારણું તે રાજ બહુ પરાકરી હતો. અને તેની સેનાપણ ધાણીજ ફર્જય હતી. તેથી તે દંડ સાધ્ય નહોંત્રી

મનોરથની કથા.

( ૧૭૭ )

પરંતુ માત્ર શાંતિથી સાધવા લાયક હતો. ચુદ્ધમાં ડેઢથી પણ તે જીતી શકાય તેવો નહોતો. છતાં પણ સુંદર નિરંતર પ્રયાણ કરવાથી ચતુરંગ સેના સહિત પેતાના દેશના સીમાડામાં ગયો. અને વિચાર કરવા લાગ્યો. કે ચારે દિશાઓમાં સો ચોજન સુધી ગમન કરવું એવો મહેં નિયમ લીધો છે. તો તેટલો નિયમ પુરો થઈ ગયો. હવે અહીંથી રહારે શું કરવું ? એક તરફ પોતાનો નિયમ છે અને બીજુ તરફ રાજની આજા છે. વાધ અને નહીનો ન્યાય અહીં રહુને પ્રાપ્ત થયો. એમ વિચાર કરતાં તેના હૃદયમાં સ્કુદી આંધું કે ત્રણે દિશાઓમાંથી દશ દશ ચોજન લઈને આ ઉત્તર દિશામાં ઉમેરીને વ્રતની રક્ષા માટે અધિક સંખ્યા કરવી ઠીક છે. વળી અહીંથી શ્રી સમરવીર રાજનું નગર પણ એકસો ગ્રીસ ચોજન છે. એમ નિશ્ચય કરી સુંદર ત્યાંથી ચાલ્યો. અનુકૂળે તેના નગરમાં ગયો. અને રાજની આગળ જઈ બહુ લેટ મૂડીને પ્રણામ કર્યા બાદ સુંદર પોતાને, હે રાજન ! વિકલ્પબદ્ધ લૂંપતિએ રહુને આપની પાસે મોકદ્યો છે. અને તેમણે કલું છે કે હે નરેંદ્ર ! તમહારા સીમાડામાં અમારાં ને ગામો રહેલાં છે, તેઓ ઉપર તમહારા ઠકોરેં હાલમાં હુમલા કરે છે, છતાં તમે ડેમ ઉપેક્ષા કરો છો ! વળી સમસ્ત શુષ્ણોના આધાર ભૂત એવા હે નરેશ્વર ! પૂર્વ પુરુષોની મર્યાદા પાળવી તે તમને ઉચિત છે. તેમજ વિકલ્પબદ્ધ રાજ તમહારો સાથે બહુ સ્નેહ ધરાવે છે. માટે તમહારા હૃદ ઠકોરેનું આ અયોગ્ય વર્તન કહેવા માટે રહુને મોકદ્યો છે. નહીંતો હે રાજન ! જેની આજા અનેક રાજાઓ માથે ચડાવે છે એવા અમારા સ્વામીની આગળ આ ઠકોરેની શી ગણુત્તી ? તે સાંલણી સમરવીર રાજ એવ્યાદી આં વાત રહારા જાણવામાં નથી. નહીં

( ૧૭૮ )

શ્રીસુપાર્થનાથવરિન.

શું રહ્યારા મિત્રના ગામે ઉપર હું ઉપદ્રવ કરવા દઈ ખરો ? હું તે ઠકોરોનો એટલો દંડ કરું છું કે એમને જે દેશ રહેં આપેલા છે તે દેશ આજથી હું તમને આપું છું. હાલ તમે ક્ષમા કરો અને તેઓનો જે દેશ હાય તે તમેજ જલદી કળને કરો. વળી બીજું કંઈપણ રહ્યારે લાયક કાર્ય હાય તો ફરમાવો, એમ કહી તેણે વિકુભલ રાજ માટે લેટ આપી અને સુંદરનો બહુ સતતાર કરી વિદાય કર્યો. ત્યારબાદ સુંદર ત્યાંથી નીકળી અનુકૂળે પોતાના અધિપતિ પાસે ગયો. અને નમસ્કાર કરી સર્વ વૃત્તાંત તેમને નિવેદન કરી તે પોતાને ઘેર ગયો.

યશશ્વરંદ નામે શિવભદ્રના ચોથા પુત્રને ચતુરંગ સેનાસહિત સિંહુ દેશના રાજ ઉપર મોકદ્યો હતો.

**યશશ્વરંદ.** તે દેશમાં ગયા પછી તેને વિચાર થયો કે

સદ્ગુરુ પાસે રહેં જે દિગ્પરિમાણ લીધું છે, તેનો રહેં બીલકુલ વિચાર કર્યો નહીં, અહો ! હું બહુ પ્રમાણી થયો, રાજ્યલક્ષ્મીના મદમાં રહુને કંઈપણ વિચાર આવ્યો નહીં, તેમજ સદ્ગુરુનો ઉપદેશ પણ હું ભૂલ્યો ગયો. અહો ! રહેં સર્વસ્વ ગુમાંયું. એમ તે પર્યાતાપ કરતો હતો તેવામાં હસ્તિક લોકો તેની પાસે આવી કહેવા લાગ્યા કે હાલમાં આ દેશનો રાજ અહીંથી નાસવાની તૈયારી કરે છે. માટે જે તમે જલદી પ્રયાણ કરી ત્યાં આવો તો ચિરકાળ લોગવેલી તેની સસંગ લક્ષ્મી આપને સ્વાધીન થાય. પછી તેજ વર્ષો યશશ્વરંદે પ્રયાણ માટે નિશાન ડકો વગડાવ્યો. પોતાની સાથે કેટલું કે ખળવાન સૈન્ય લર્ધ રાત્રોના પ્રથમ પ્રહરે ત્યાંથી તે નીકળ્યો. અને બહુ દેશ ઉદ્ધારન કરી ત્યાં ગયો. સિંહુ દેશનો રાજ પણ યશશ્વરંદ ને આપતો જાણી લુચ લર્ધ ત્યાંથી નારી ગયો. તેથી તેનું સર્વસ્વધન તેણે પોતાને સ્વાધીન કર્યું. ત્યારબાદ ત્યાં આગા

अनोरथनी कथा.

( १७६ )

केटलुंक सैन्य भूँडी पेताना नगरमां राजा पासे गयो। अने यथार्थ सर्व वार्ता तेमने निवेदन करी. त्यारबाद राजाना यथा योग्य सत्कारनो स्वीकार करी ते पेताने घेर गयो।

अनुकमे यारे भाईचो ज्यारे पिताश्रीना यरछु कमलमां नभवा माटे गया त्यारे पिताचो पुण्यभुं  
**शिवभद्रनो** के हे पुत्रो ! तमारा नियमनी शी स्थिति  
**उपदेश.** थहु ते कहो। तेओचो उध्वं दिशा विगेरे  
प्रदेशोमां गमन करवाथी पेतपेताना

नियमोमां लागेला अतियार विस्तार पुर्वक कर्हा. ते सांखणी श्रेष्ठी बोल्यो, भाईचो ! अहु तुच्छ लक्ष्मी माटे तम्हें धृष्टं अयोग्य काम कर्युं एटलुंज नहिं परंतु उत्तम छे कुक्षि जेनो अने प्रसन्न सुखवाणी ऐवी भोक्ष लक्ष्मीनो तमे परिहार कर्यो। विरतिनो लंग करी ज्वे राज्यलक्ष्मी भेणवी ते तो अलक्ष्मीज गण्याय; माटे हुवे शुद्ध पासे जैक तमे पेताना हुश्चितनी आलोचना करो। अने ग्रायश्चित्त करी शुद्ध थाच्यो। तेमज्ज्ञे तमे सर्वज्ञहेवने आथुता होतो आजथी हुवे राज्यसेवानो त्याग करो। आ प्रभाष्य पेताना पितानो उपदेश सांखणीने पछु तेओ। राज्य वैकाशना दोक्षणी तेमां अहु आसक्त थया अने ते सर्वे अंधुओ पितानी दृष्टदमां अविनयना वयन ऐलवा लाग्या। हे तात ! ज्ञे अभारी उपर आपनो आटलो बघो ग्रेम हुतो तो प्रथमथीज राज पासे अमने शामाटे भोक्या ! हुवे अमे वेपार करवामां शर-माईचो धीचो, वणी हे पिताज ! प्रभावनाद्विक करवा वडे हुवेथी अमे निरंतर ज्ञैन धर्म पाणीशुं, अने तमे पछु निश्चिंत थहु धर्म साधन करो। हुवे तमारे कोईनी पछु सेवा करवानी जड्ड नथी, मात्र सुगुरुओनी सेवा करो। तेमज्ज्ञ यत्न पूर्वक दानधर्ममां प्रवृत्त थाच्यो। वणी कोईपछु वधते अभारी चिंता मनथी पछु

( ૧૮૦ )

શ્રીસુપાર્વતિનાથચરિત્ર.

તમારે કલ્પી નહીં, એમ તેઓનો પ્રત્યુત્તર સાંખળી શ્રેષ્ઠોએ  
પણ મૈનવત ધારણુ કર્યું, ત્યારથાદ તેના ચારે પુત્રો ત્યાંથી  
કૃણે પોતપોતાના સ્થાનમાં ગયા. તેમજ કાર્ય પ્રસંગે રાજસ-  
ભાયોમાં તેઓ જતા હતા. અને રાજવૈષણ વડે મહોન્મતા  
અનો સ્વેચ્છા પ્રમાણે વિવાસ કરતા હતા. જેમ જેમ તેમને રાજ  
તરફથી સન્માન મળતું ગયું. તેમ તેમ તે વર્ણાદિક ચારે  
બાધ્યોનો ધર્મ સંબંધી આચાર દ્વાર થવા લાગ્યો. તેવામાં  
આયુધ પુર્ણ થવાથી શિવઅદ શોઠ પણ કાલ કરી સુરલોકમાં  
ઉત્પજ થયા. ત્યારથાદ તે ચારે ભાઈઓ લોગ વિષયમાં બહુ  
આસક્ત હોવાથી તેમણે ધર્મનો માર્ગ છેડી દીધો, જેથી તેઓ  
અનુકૂળે મરીને કુગતિમાં ઉત્પજ થંડ અનેક હુઃખ લોગવી  
ફરીથી નૈનધર્મ પામી છેવટે સુગતિ પામશે. વળી તેઓમાં  
વર્ણ નામે જે પ્રથમ પુત્ર હતો, તેજ હું પોતે હિગ્રવતની વીર-  
ધના કરવાથી કાલ કરીને મહોરગમાં ઉત્પજ થયો છું. તે  
સાંખળી રાજકુમારાદિક ઘણું લોડો ખોધ પાસ્યા.

ત્યાર ખાદ રાજયે મનોરથ શ્રેષ્ઠીને કહ્યું કે આ રહાડં

|                 |   |
|-----------------|---|
| <b>મનોરથ</b>    | રાજ્ય તમે અહણુ કરો. કારણુ કે તમે રહારા<br>મરેલા પુત્રને સળુવન કર્યો તેમજ રહુને<br>પણ ઉત્તમ ધર્મમાં સ્થાપન કર્યો. તેથી<br>તમે રહારા પરમ ઉપકારી છો. મનોરથ   |
| <b>શ્રેષ્ઠી</b> | એદ્યો, હે રાજન ! પ્રાણી ભાત્રને પોતાનું પૂણ્યજ ઝૂપે છે. વળી<br>પુષ્યના ઉદ્યમાં અન્ય તો માત્ર નિમિત્તજ ગણ્યાય છે. માટે હે<br>નરેંદ્ર ! રહારે રાજ્યનું કંઈ પ્રયોજન નથી ધર્મમાં ઉદ્યમ કરવો.<br>એજ રહાડં નિત્ય કર્મ છે. એમ સમલુ તરહારે પણ નિખાલસહૃદ-<br>યથે હુમેશાં યત્ન પૂર્વક ધર્મ કાર્યમાં તત્પર રહેલું. આ પ્રમાણે<br>ઉપરેશ અહણુ કર્યા ખાદ ભૂપતિએ મનોરથને રહેવા માટે અહુ |

મનોરથની કથા.

( ૧૮૧ )

સમૃદ્ધિ (રક્ષા) સહિત અને દેવાંગનાઓને સેવવા લાયક હુરે  
સમાન બહુ સુંદર એક મહેલ આપ્યો અને વિશેષ સત્કાર પૂર્વિક  
નગર શોઠના સ્થાનમાં તેને સ્થાપન કર્યો. ત્યાર બાદ તે મનોરથ  
પણ નિરંતર જૈન ધર્મની આરાધનામાં દિવસો નિર્ગમન કર-  
વામાં પોતાનું જીવન અફ્ઝલ માનતો હતો.

પોતાના નાના ભાઈની વાત મેધરથના જાણુવામાં આવી  
તેમજ તે બહુ નિર્ધિન દશામાં આવી ગયો

**મેધરથ.** હતો, પોતાની પાસે કોડી માત્ર નહીં હો-  
વાથી મનોરથ શોઠની પાસે તે આવ્યો. સંદ્યા  
સમયે તેના ઘરની અંદર પ્રવેશ કરવાની તે તૈયારી કરતો હતો  
તેટલામાં ત્યાં ઉલ્લેખ દ્વારાપણે ખલ પુરુષની માફક મેધરથને  
અટકાવ્યો. એટલે મેધરથ યોદ્યો કે, મનોરથ શોઠનો હું મહેઠો  
બાઇ છું નહાડું નામ મેધરથ છે. વારાણુસી નગરીમાંથી હું આવ્યો  
છું. તમને અવિશ્વાસ હોય તો શોઠને પૂછી જુયો, પછી દ્વારાપણા  
ના કહેવાથી મનોરથ શોઠ પોતે બહુ ઉત્તાપણથી તેને મળવા માટે  
સ્ફૂર્તા આવ્યા. અને બહુ સ્નેહથી નમસ્કાર પૂર્વિક મળીને મેધ-  
રથને ઘરમાં લઈ ગયા. તેમજ સમયોચિત બહુ સત્કાર કર્યો. પ્ર-  
ભાતકાળમાં ઉત્તમ શાખુગાર પહેરાની મનોરથ પોતાની સાથે તેને  
જીનમંદિરમાં લઈ ગયો. અને વિધિ પૂર્વિક તેની પાસે અણપ્રકારી  
પ્રભુની પૂજન કરાવી પછી મનોરથે રાજને પોતાને ધેર યોદાવાવી  
ને મેધરથની ઓગાખાણ કરાવી. એટલે તેનાં માતાપિતાને પણ  
રાજને ત્યાં યોદાવશરાવ્યાં. તેઓ પણ ત્યાં આવીને સારી રીતે  
જૈન ધર્મની આરાધના કરવા લાગ્યાં. માટે હે લંઘ જનો?  
જેમ મનોરથ શ્રેષ્ઠીએ અતિચાર રહિત હિગ્રતની આરાધના કરી  
તેમ અન્ય જનોએ પણ દિગ્નેત પાળવામાં ઉદ્યુક્ત થવું. વળી  
ને પુરુષ સિદ્ધાંતના અનુસારે દિગ્નેત પાળે છે તે સર્વ જગતનું

( १८२ )

श्रीसुपार्थनाथवरित्र.

तथा पेताना आत्मानुं छित साधे छे. तेमज्ज अतियार दृपी काढ-  
वथी मुक्त थर्थ ने धीर पुढ़्य दिग्नवत धारणु करे छे ते दशे हिशा-  
आमा पेतानी उज्ज्वल कीर्ति इलावीने परभ सं पत्तिनु पात्र बने छे.

इति पञ्चाऽतिचारहप्पान्तयुक्तंदिग्नवते मनोरथकथानकं समाप्तम् ॥ तत्स-  
मासौ श्रीमल्लक्ष्मणगणिविरचितप्राकृतपद्यबन्धश्रीसुपार्थजिनचरित्रस्य  
श्रीसकलसूरिपुरन्दरायमाणपरमगुरुतपगच्छाधिराजशास्त्रविशा-  
रदैजैनाचार्ययोगनिष्ठाध्यात्मज्ञानदिवाकरश्रीमद्भुद्दिसा-  
गरसूरिशिष्यप्रसिद्धवक्तेतिलब्धरूपातिव्याख्यानको-  
विदैजैनाचार्यश्रीमद्भुजितसागरसूरिकृतगुर्जरभा-  
षानुवादे प्रभुदेशनाप्रवन्धे सद्षष्टान्ताऽति-  
चारव्याख्योपेतं प्रथमगुणव्रतं समाप्तम् ॥



विश्वसेननी कथा.

( १८३ )

## विश्वसेनकुमारनी कथा.

—•—

### लोगपरिभोगविरभणुव्रत.

दानविर्य राज्ञाचे प्रश्न कर्यो के, हे भगवन्! हवे अमने लोग परिलोगव्रततुं स्वदृप समजवेऽ। श्रीसुपार्क्ष प्रभु योत्या, हे राज्ञ? लोगव्रत लोज्जन अने कर्मना लेहथी ऐ प्रकारतुं छे. वणी तांभु-लादिकनो आहार कर्वो ते उपलोग अने श्री वस्त्रादिकनो उपयोग कर्वो ते परिलोग कडेवाय. तेमज वणी श्रावकेचे लोज्जनमां निर्दीष अने पेताने योग्य कृपता दृव्यनो उपलोग कर्वो. कदाचित् शुद्ध दृव्य न मणे तो अनेषणीय पण वापरवुं. परंतु सचित्तनो तो त्यागज कर्वो. तेवुं पण ने न मणे तो अनंतकाय तथा खडु थीजनो त्याग करी अन्य वस्तुनो उपलोग कर्वो. तेमज लोज्ज्य वस्तुमां आहु विगेरे अने पीवानी वस्तुमां मैंसरसादिकनो सर्वथा त्याग कर्वो. तेमज खाद्य वस्तुमां पांच प्रकारना उद्भवरनो निरंतर त्याग कर्वो, वणी स्वाहिण वस्तुमां भध विगेरनो त्याग कर्वो, ए प्रमाणे जानी पुढेनो उपदेश छे. तेमज परिलोगमां किंभती उत्तम वस्त्रादिक, परिभित शय्या, अने शासननी उल्लिति भाटे उत्तम देव हूऱ्य (चिनाई वस्त्र) विगेरे श्रेष्ठ वस्तुओ जाणुवी. परंतु दरेक वस्तुतुं परिमाणु करवुं. वणी श्रावक लोडो काणी व्यवहारना नियमथी गुप्ति रक्षणादिक जे कार्य एक वार करे छे ते कर्म वडे उपलोग कडेवाय छे. अने जे वारंवार एकजू वस्तु सेवन करवामां आवे ते परिलोग कडेवाय छे. वणी अन्य आचार्य कर्मथी योज्जना करता नथी. परंतु उपलोग तथा परिलोगमां जानि-

( १८४ )

श्रीभुपार्थनाथचरित्रः

ओनो पूर्वोक्त उपहेश छे. वणी हें दानविर्य ! जे श्रावक सदा-  
अत सचित्त आहारनो त्याग करे छे. ते विश्वसेन कुमारनो माझेक  
अनुकेमे भोक्ता लक्ष्मी पामे छे. जेमडे-

आ भरतक्षेत्रमां नंहनवननी माझेक अडोटा शाळ (वृक्ष-  
ठिक्का ) वडे सुशेषित अने हुस्तिना  
**पुरंदरराजा.** मुख्यनी माझेक अनेक प्रकारनां रत्न अथवा  
रथना वडे भनोहुर लोगपुर नामे सुप्र-  
सिद्ध नगर छे. तेमां चंद्र समान उज्ज्वल ईर्ति वडे विलूप्तित  
विषुधहेव ( पंडिता )ने खडु प्रिय अने वज्र ( रत्न=रेखा ) वडे  
पवित्र छे हुस्त कुमल केनो एवा ईद्रसमान उद्धृत वैरीओने  
शांत करनार पुरंदर नामे राज छतो. इपमां रति समान, विवा-  
सेनुं कुलभवन, शील गुणुमां अवेसर अने स्वलावथी सरल, विभ-  
मवती नामे तेनी स्त्री हुती. तेमज गुणो वडे सर्वत्र विज्यात अने  
उज्ज्वल गुणोनो मुख्य आधार, कुमारोमां हुस्तिन समान, कांतिमां  
गंधहुस्तिन समान विश्वसेन कुमार नामे तेओने एक पुत्र हुतो.  
तेमज गुणुचंद्र अने सोभचंद्र नामे ऐ ते कुमारना भित्र हुता.

एक दिवस विश्वसेन कुमार भन्ने भित्रो साथे दूरवा भारे  
मलयाचेणना शिखर उपर गयो त्यां  
**विश्वसेन** आगण सुंदर शणुगार सलु उलेली एक  
**कुमार** चुवति तेना जेवामां आवी. जेण्हीना हाथमां  
पाडेली आम्रझणनी लुंब पडेली हुती. तेना

नितं अनी शोभा विशाण दिपती हुती अने मुख्यनी कांतिपूर्ण  
चंद्रने अनुसरती हुती, तेमज उत्साहने लीषी उद्दिश्यास पाभता पंच-  
भस्तरना भनोहुर नाहवडे विरहसूचक भनोहुर गायनो गाती हुती.  
अने जेण्हीनां अंग विरहाजिथी तपेलां होआतां हुतां. वणी मृगना-  
वियोगथो भृगलीनी माझेक तेमज प्रियना वियोगथी चकवाडीनी

માઝક, વિરાહાભિના હું અથી લાંબા નિશ્ચાસને દીધે શુષ્ટ અધરે-  
ષ્ટને ધારણું કરતી, તે ખી મુખથી પોલતી હતી કે, વસ્તું તરુંમાં  
કામ લતાની મંજરી સમાન આંખાની માંજર જોઈ, વિશ્વસેન  
કુમાર ઉપર હું બહુ આસક્ત થઈ છું. તેથી ઉત્તમ શાખ-  
ગાર સણ્ણ બહુ દિવસથી હું હુંઘી થાડું છું. અને તેના  
વિચોગથી જ આ મહારં સુંદર શરીર પણ અતિ કૃષ થઈ ગયું છે.  
તેમ છતાં પણ હું તેના માટે અહીં રહું છું. માટે જરૂર હું તે કુમારને  
ઉત્તમ પ્રકારે માનનીય થઈશ. વળી તે કુમારે મહને હૃદય શૂન્ય  
કરી છે. આ પ્રમાણે તે યુવતિના વિલાપ સાંલગી પોતાના નામની  
શાંકા થવાથી વિશ્વસેન કુમારે તેને પૂછું કે, હે સુતાનુ ! તું જે  
કુમારનું સમરણ કરે છે તે કોણું છે ? વળી હે સુંદરી ? જે તેને  
ચોણ્ય લાગે તો મહારા પ્રશ્નનો જવાબ આપ. આટલું વાક્ય સાંલ-  
ગતાંજ તેનું શરીર રોમાંચિત થઈ ગયું અને સંભ્રમ સહિત  
કુમાર તરફ હૃદિ કરે છે, તેટલામાં તે ભાલાના હૃદય સરોવરમાંથી  
રસ તરંગો ઉલસાઈ જવા લાગ્યા અને વિચાર કરવા લાગી કે શું  
તેજ આ કુમાર હશે ? એમ જાણી પ્રથમ તો તે બહુ ખુશી થઈ.  
પરંતુ અહીં તે કયાંથી હોય, એમ જાણી શોકાતુર થઈ, આ કોઈ  
અન્યપુરુષ છે એમ જાણી ભયલીત થઈ, પુનઃ બહુ ઇપવાન છે  
એમ સમજું સશક્તિત થઈ ગઈ. છતાં ફરીથી સમરણ થયું કે નૈમિ-  
તિકે આજે મહને મહારા પતિનો સમાગમ કહેવો છે માટે તે વચ્ચન  
અસત્ય ન હોય, તેમજ વામ હુસ્ત તથા નેત્રના સ્કુરવાથી શુલ્ભ  
શુલ્ભ જાણી હૃદ નિશ્ચય કરી પોતાના હૃદયમાં વિચાર કરવા લાગી  
કે, ભાવે તે ગમે તે હોય. પરંતુ અહીં અતિથિ તરીકે આવ્યો છે  
માટે તેનો મારે વિનય કરવો ઉચિત છે. એમ જાણી તેણીએ  
વાતાપલ્લવોતું આસન આપી તે કુમારનો સત્કાર કર્યો એટલે  
કુમાર ખુશી થઈ આસન ઉપર એઠો. ત્યારબાદ કુમારી પોલી જે કે

( १८६ )

શ્રીમુપાર્થનાભચરિત્ર.

પોતાના પતિનું નામ કીએ ન બોલવું જોઈએ. કારણ કે અન્યત્ર પણ કહું છે કે—

આત્મનામગુરોનામ, નામાડતિકૃપણસ્ય ચ ।

શ્રેયસ્કામો ન હીયા—જ્યેષ્ઠાપત્યકલત્રયોः ॥

અર્થ—“પોતાનું તથા શુરું, અતિ દુઃખું, મહોટા પુત્રનું અને પોતાની કીનું નામ કલ્યાણની ઈચ્છાવાળાએ બોલવું નહીં.” આ પ્રમાણે નિષેધ છે છતાં પણ પતિનું નામ બોલવામાં મહારી લુભને અમૃત રસનો સ્વાદ મળે છે. કારણ કે સત્પુરુષનું નામ બોલવાથી સર્વ હુંઘ દૂર થાય છે તેથી મહેં નામોદ્યાર કર્યો છે. વળી હે કુમાર ! લોગપુર નગરના અધિપતિનો પુત્ર વિશ્વસેન કુમાર મહાદાની તેમજ પ્રત્યુપકાર કરવામાં બહુ સમર્થ અને પોતાની પ્રતિજ્ઞા પાલવામાં મહાધીર છે વિગેરે અનેક શુણું સંપત્ત તે કુમારનું વર્ણન જ્યારે હું પોતનપુર નગરના ઉદ્ઘાનમાં જૈતનમંહિરમાં દર્શન માટે ગાઈ હતી ત્યારે મહારી આગળ માગધીકોએ કર્યું હતું. વળી બહુ પ્રેમથી મહેં તેઓને તે સંબંધી પૂછ્યું પણ તેઓ કંદુપણ. બોલ્યા નહીં. ત્યાર બાદ મહારા પિતાએ મહારા વર માટે નૈમિત્તિકને પૂછ્યું. ત્યારે તેણે પણ માગધીના કલ્યા પ્રમાણે તેજ વર કલ્યો. તેથી તે વિશ્વસેન કુમાર ઉપર મહારો બહુજ પ્રેમ બંધાયો છે. ત્યાર પછી મહેં મહારી સખી પાસે તે નૈમિત્તિકને પૂછાયું કે તે કુમારની સાથે કુમારીનો ચેળાપ ક્યારે અને કયાં થશે ? જવાબમાં તેણે જણાયું કે આજથી સાતમે દિવસે મલયાચલ ઉપર તેની સાથે અચિંત્ય સમાગમનું સુખ તેને પ્રાપ્ત થશે. પરંતુ તે પર્વત અહીંથી બહુ દૂર છે અને દિવસ તો થોડા રહ્યા છે. એમ કહી તે આનંદપૂર્વક બોલ્યો કે, હાલમાં મહારે કોઈ કાર્યને લીધે જવાની ઉતાવળ છે. ક્ષણમાત્ર પણ

વિશ્વસેનની કથા.

( ૧૦૭ )

મહારાથી રહેવાય તેમ નથી. નહીં તો આ બાબતનો પણ સર્વ ખુલાસો તને આપત. એ પ્રમાણે નૈમિત્તિકતું વચન સાંભળી તુછ થઈ તે સાખી કુમારીની પાસે ગઈ અને નૈમિત્તિકતું વચન તેને નિવેહન કર્યું. કુમારી ઓલી, હે સાખી ? હવે દિવસ સાત રવ્યા અને વિશ્વસેન કુમાર સાતસો ચોજન હર છે, તો નૈમિત્તિકતું વચન કેવી રીતે સત્ત્વ થશે ? આ કાર્ય બનવું ધણું હૃદાટ છે. પરંતુ જે કેવળ હૈવ અનુકૂલ હોય તો તે સિદ્ધ થાય. અથવા નૈમિત્તિકની વિઝ્યાતિ સારી છે તેથી તેનું વચન સિદ્ધ થશે એમાં કંઈપણ સંદેહ કરવા જેવું નથી. પરંતુ હવે ત્યાં કેવી રીતે જવાશે ? એમ સંદેહરૂપી હિંદુલામાં આરૂપ થઈ ગાઠ પ્રેમરૂપી ભારને વહન કરતી અને બહુ ઉલ્કાને લીધે રથૂલહેહને ધારણું કરી હું ભૂમિ ઉપર આગોટવા લાગી. તેવામાં ત્યાં અપરિચિત એક વિદ્યાધર આવ્યો. અને તરતજ મહુને હરણું કરી તે અહીં લાવ્યો. પછી આજ સુધી તેણે મહારી પ્રાર્થના કરી કે હે સુંદરી ? મહારી સાથે તું લગ્ન કર. ઉત્તરશ્રેષ્ઠનો અધિપતિ પવનવેગ નામે વિદ્યાધર છે અને કનક ચૂડ નામે હું તેનો પુત્ર છું વિગેરે વાક્યો તે એલાટો હતો તેટલામાં સાક્ષાત રત્નરાશિ હોય ને શું ? એમ પોતાની કાંતિવડે સ્રૂયમંડલને પણ ઉદ્ઘાંધન કરતા એક સુનીદ ઉત્તર દિશા તરફથી ત્યાં આવ્યા. ઉસાં થઈ અમે અજોજણે મુનિ મહારાજના ચરણુકમલમાં નમસ્કાર કર્યો. ચારણું મુનિએ ધર્મ લાસ આપી કહ્યું. હે કનકચૂડ ! સનજનપુરુષેંબોએ નિંદ્વા લાયક આ હુરાચાર તહેં કેમ આરંભ્યો છે ? મહારા ભાઈનો તું પુત્ર થઈ આ અનુચિત કાર્ય કરતાં તહેં લાજ આપતી નથી ? વળી રહારા કુલમાં ડેઢિપણું વખત ડેઢિએ કલાંકની શાંકા પણું કરી નથી. હે વત્સ ? હાલમાં ક્રક્ષત રહાર્દંજ વર્તાન વિપરીત હેખાય છે. વળી વિષયમાં રક્ત થઈ અહીં તું પરસ્કીએ લોગવે છે તેથી જરૂર

( १८८ )

श्रीमुपार्थनाथचरित्र.

तહारे अहु तिरस्कारपूर्वक अनेक हुःओ सहन करवां पडथे. शु विषय लोगववाथी तृष्णुनो क्षय थाय अरो ? आइं जल पीवाथी उत्ती तृष्णा वधारे लागे छे. वणी नीतिपूर्वक विषय लोगववाथी पशु हुःसह हुःअ प्राप्त थाय छे तो अनीतिनी तो वातज शी ? एम जाणी धीर पुढेओ विषय लोगनो त्याग करे छे ? अने तु तो अन्यायथी विषयनी हुँच्छा करे छे. वणी आरंभमां विष वृक्षना दूळ समान विषयो अहु ग्रेमथी सुखपूर्वक लोगववाय छे पशु परिणाममां तेनाथी भयंकर हुःभद्रायक महा मोहनी प्राप्ति थाय छे. जेम विद्वान् पुढेओने बुगार जधन्य अने निंदनीय गायाय छे तेम लुनवचनना ज्ञाताओने विषय सेवन पशु निंदनीय छे. ग्राण्डीओ जेम धूतवडे धण्डा काणथी मेणवेला वैखवने क्षणुमात्रमां गमावे छे तेम विषयमां आसकत थयेलो. पुढेपशु चिरकाणथी संचादन करेला सुझृतनो नाश करे छे. माटे हे वत्स ? विचार करीने जेम तहने उचित लागे तेम कर. परन्तु याद राख्ने के आ हुराचार सेववाथी जन्मांतरमां तहने अहु हुःअ पडथे.

**कुश्चरित्रथी** प्रगट थता हुँकुर्मथी उमज थतां आवी हुःओथी  
**विद्याधरनो** भय पाभी ते विद्याधर मुनिने नमस्कार  
**पश्चात्ताप.** करी प्रार्थना करवा लाग्यो. के, हे लगवन् !  
 विमूळ हुँदृश्यने लीघे भयंकर आ संसार सागरमांथी आप भव्या होत तो  
 अहारे. उद्धार शी रीते थात ? एम कही तेणु परस्ती गमननो  
 नियम लीघे. त्यार आह ते उलो थध म्हारी क्षमा माणीने घोल्यो,  
 हे सुखगे ! हवे तुं म्हारी झेन छे. माटे चाल हुँ तहने तहारा

વિશ્વસેનની કથા.

( ૧૮૬ )

સ્થાનમાં લઈ જાઉ. પછી ભેં કહું કે તમે ખુશીથી જાઓ હુંતો અહીં રહીશ. કારણ કે નૈમિત્તિકે રહારા પ્રિય પતિનો સમાગમ રહુને અહીં કહેદો છે. તે સંભળી ઠનકચૂડ હાલજ પોતાના સ્થાનમાં ગયો. અને ચારણુ મુનિ પણ આ : મલયાચ્યલની ગુદ્ધામાં હાલ બીરાજે છે. આ પ્રમાણે રહારી સર્વ હંકિત ભેં તમને કહી હુવે આપની વાર્તા સંભળાવીને રહુને શાંત કરો. વળી હે કુમાર! આપ કથા વંશને દીપાવો છો ! તેમજ અહીં આપનું શા માટે આવું થયું ? અથવા નૈમિત્તિકના કહેવા પ્રમાણે તમહારા ચેષ્ટિત ઉપરથી ભેં તમહુને ઓળખ્યા. રહારા પ્રાણુપ્રિય એવા વિશ્વસેન કુમાર તમેજ છો, માટે પોતાના હૃસ્તકમળથી પાણી અહુણુ કરી રહારું સંરક્ષણુ કરો. કારણુકે જે સમયે ચિંતામણિનો ચોગ થાય તેજ સમય શ્રેષ્ઠ જાણુવો. ત્યારબાદ કુમારે સમયેચિત્ત વિધિ પ્રમાણે તેના બહુ આચરણી તેની સાથે લગ્ન કર્યું. અહો ? સજજન પુરુષો અન્યની પ્રાથનાવડે પ્રિય એવા પોતાના પ્રાણ્યુનો પણ ત્યાગ કરે છે. પછી પરિજ્ઞન સહિત કુમાર પોતે તે કુમારી સાથે મલયાચ્યલની ગુદ્ધામાં ગયો. અને વિધિપૂર્વક ચારણુ મુનિને પણ્યામ કરી હાથ નેડી ઉલો રદ્ધા. મુનિએ પણ ઉત્સાહપૂર્વક ધર્મ લાલ આપી સતકાર કર્યો. પછી કુમાર વિનયપૂર્વક ભૂમિ ઉપર બેઠો. મુનિએ પણ દેશનાનો પ્રારંભ કર્યો. હે કુમાર ! નિરંતર મરણ, રોગ, શોક, ભયાદિકથી બ્યાફુલ એવા આ સંસારમાં પ્રાણીએને ક્ષણુ ભાત્ર પણ સુખ નથી તે શું તું નથી જાણુતો ! જેથી સ્વેચ્છા પ્રમાણે ભર્યાદા રહિત મહોન્મતા હૃસ્તિની માઝક તું વિલાસ કરે છે. આ હુનીયાની અંદર ઉજવલ કીર્તિ મેળવ ! તેમજ અયોગ્ય આચરણનો ત્યાગ કર ! કારણુકે સર્વ સંગનો પરિહાર કરવાથી અતુચ્ચિત ડાર્યનો ત્યાગ થાય છે, વળી તે સર્વ સંગનો ત્યાગ રાગ દેખના અલાવથી સિદ્ધ થાય છે,

( १६० )

श्रीसुपात्र नाथवरित्र.

रागदेवनो निशेख सञ्चयरथुथी थाय छे. अने सदाचार ईद्रियोना  
 कुशलपण्ठुथी सिद्ध थाय छे. वणी ईद्रियोनुं प्रभलपण्ठुं यौवन  
 अवस्थामांज थृष्ठ शडे छे. कारणुडे लुवोने वृष्ठ अवस्था प्राप्त  
 थवाथी कोईपण्ठु समये फुर्वरज्जराने लीघे लुर्ख थयेली ईद्रियो  
 अगुणु थती नथी. तेमज बाह्यअवस्थामां कार्याकार्य विगेरेना  
 ज्ञानथी शून्य एवा प्राणीओने ईद्रियोनी पटुता होय छे तोपण्ठु  
 सत्प्रवृत्ति क्यांथी थृष्ठ शडे ? नेवी रीते अधम पुरुषो यौवन  
 अवस्थामां विषयरूपी मांसनी छच्छा करे छे तेवीज रीते सज्जन  
 पुरुषो यौवन अवस्थामांज विषय सुखथी विमुख थृष्ठ मेक्ष  
 सुखनी अभिलाखा करे छे. हे कुमार ! आ कारणुथी पोताना  
 कर्मनो संहारकरवा तुं तत्पर था ! अने युवानछे, छतां पण्ठु मेक्ष  
 सुख माटे सहधर्ममां उद्युक्त था ! वणी ते धर्म ऐ प्रकारनो  
 कड्डो छे. प्रथम अत्यंत उत्कृष्ट सुनि धर्म अने भीजे श्रावक  
 धर्म. तेमांथी सुख्य सुनि धर्मनो प्रथम उपदेश सुनिए तेने  
 आच्यो, त्यारबाद सञ्चयकर्त्तवाहि गृहि धर्मनी व्याख्या करी.  
 असाधारणु एवा सुनि धर्मने पाणवाने अशक्त डोवाथी कुमारे  
 झुर पासे श्रावक धर्मनो स्वीकार कर्यो. पछी गुण्यांद, सोम्यांद  
 अने विवासवती संहित कुमारे बार प्रकारनां प्रतोनो लावार्थ  
 जाणी धीन्जुं शुणुन्त खडु श्रद्धापूर्वक संकिरणुताथी थहुणु  
 कुर्यां. जण तथा पत्र विना आडीनी सचिता वस्तुनो लोज्जनमां  
 तेणु नियम कर्यो. तेमज कर्मथी हरेक प्रयंड कर्मादिक्तुं आय-  
 रथु न करवुं एवो यतनानो. नियम लीघो. अन्य लागमां अप-  
 क्षव, हुप्पक्ष अने असार अक्षशुनो त्याग कर्यो तेमज सचिता  
 तथा तेना संबंधवाणा पदार्थीनो शुद्ध परिष्वामधी त्याग कर्यो.  
 विगेरे नियम लाई सुनीद्वाने वंदन करी ते त्यांथी चालतो होतो  
 तेटलामां त्यां एक देवतानुं जेडलुं आ०युं.

વિશ્વસેનની કથા.

( ૧૬૧ )

હેવ અને હેવોએ મુનીદ્રને નમસ્કાર કરી કુમારને કહ્યું કે  
 એક ક્ષણુમાત્ર અમારું સંગીત તથા નૃત્ય  
**હેવોનું સંગીત.** જુઓ ! તે સાંલાગી કુમાર નીચે એડો એટલે  
 તેઓએ તત્કાલ કલિપત હેવહેવોએનાં બહુ  
 સ્વરૂપ કરી નાટકનો પ્રારંભ કર્યો. આશ્ર્યની ભાષ્ટક તે જોવામાં  
 કુમાર તલ્લીન થઈ ગયો એટલે તે હેવોમાંથી સંદ્યા સુમાન  
 વર્ણવાળો નૃત્ય કરતો એક વ્યંતર હેવ વિલાસવતીના કંઠમાં  
 વળગીને ખોલ્યો હે વત્તે ! આજે સાતમા દિવસે તું જોવામાં  
 આવી હું તહારા બાપની મા છું. તહારા વિયોગને લીધે ગળે  
 પાશ બાંધી કણ કરીને હું વ્યંતરી થઈ છું. વિલંગ જાનવડે  
 રહેને અહો જાહીને બહુ પ્રેમને લીધે હું આવી છું. વળી તહારે  
 પિતા પણ તહારા વિરહથી હૃદય લેદીને મરી જશે. કારણુંકે જે  
 દિવસે તહારું હરણ થયું છે ત્યારથી તેણે નિદ્રા તથા લોજના-  
 હિકનોં ત્યાગ કર્યો છે. અને હું તો તેજ વખતે પ્રાણું વિયુક્ત  
 થઈ છું. વગી તે દિવસે સર્વીત્ર શોધ કરાવી પરંતુ કોઈપણ  
 ડેકાણે તહારો પત્તો મળ્યો. નહીં તેથી તહારા પિતા વિગેરે મહા  
 હુંઘ સાગરમાં દૂણી ગયા છે. માટે તમે સર્વે અહીં ક્ષણુમાત્ર  
 સ્થિતિ કરો. જેથી હે પુત્ર ! હું તહારા પિતા રણુમદ્દ રાજને  
 લઈ જવાઈ અહીં આવું છું. એમ કહી તે વ્યંતરી ક્ષણુ માત્રમાં  
 ત્યાં જઈ તેના પિતાને લઈ ત્યાં પાણી આવી. રણુમદ્દ પણ  
 મુનીદ્રને વદન કરી નીચે એડો. ત્યારબાદ કુમારાહિક સર્વે જનોના  
 તેને નમ્યા. પણી રણુમદ્દ ખોલ્યો હે વિલાસવતી ? તહારી માના  
 કહેવાથી સર્વ સમાચાર જાણ્યા એમ તે વાત કરતો હતો. તેવામાં  
 કુમારનો પિતા પુરંદર રાજ પણ તેની શોધ કરતો ત્યાં આવ્યો. રણુમદ્દ  
 વિગેરે સર્વે ઉલા થઈ રાજને પ્રધ્યામ કરી વિનયપૂર્વક  
 નીચે એડો. ત્યારબાદ મુનીદ્રિ પણ કુરીથી તેઓને ઉહેશી દેશ-

( १६३ )

श्रीमुपार्थनाथयरित्.

नानो प्रारंभ कर्यो. मुनि धर्म तथा गृहस्थ धर्म विस्तारपूर्वक  
कर्यो, अने विशेषमां जग्याव्युँ के—

देशादन्यस्मादपि, मध्यादपि जलनिधेर्दिशोऽप्यन्तात् ।

आनीयज्ञटिति घटयति, विधिरभिमतमभिसुखीभूतः ॥

अर्थ—“ पोताने अनुकूल थयेको। हैव देशांतर, मध्यसमुद्र,  
अने दिशाओना अंत लागभांथी पछु लावीने ईष्ट वस्तुनो। जलही  
संयोग करावे छे। विगेहे देशनानी समासिमां रथुमहु राज्ये  
पुरंदरने जग्याव्युँ के आ गहारी पुत्री भहारा प्राणुथी पछु अधिक  
प्रिय छे। तेथी भ्रीतिपूर्वक तेनी संभाण तम्हारे लेवी। त्यारपाठ  
पुरंदर राज्य गुण्यंद्रना कडेवाथी समय संबंध लाणीने रथुमहुने  
पोताना नगरमां लक्ष्य गयो। हैवताच्योनुं लोडलुं पछु कुमार तथा  
तेनी लीने उत्तम रत्नाभूपछ्यो। आपीने पोताना स्थानमां गयुः।  
मुनिए पछु अन्यत्र विहार कर्यो।

पुरंदरे रथुमहु राज्यने केटलाङ् दिवस पोताने त्यां राखीने  
सन्मान करी विदाय कर्यो। एट्टेते पोताना  
कुमारनो उपदेश, नगरमां आवी सहधर्मनुं पालन करतो हुतो।

तेमज् लीज् गुण्यवतनी रक्षामां तत्पर  
अवे। श्री विश्वसेन दुमर सुगुडनी उक्कृष्ट आज्ञामां आसक्त  
थृष्ट विषय लोगभां दिवसो निर्गमन करतो हुतो, गुण्यंद्र अने  
सोमयंद्र केटलोऽक समय गया बाह सुगुडना उपदेशथी शिथील  
थया, अने लीज् गुण्य व्रतमां अतियार करवा लाभ्या। गुण्यंद्र  
हिथीतथा शीघ्रो शेशीने आवा लाभ्यो। तेमज् सोमयंद्र पछु  
कहान्ति अपक्वन्तो उपक्षोग करवा लाभ्यो। ते वात ज्यारे  
विश्वसेनना लाभ्यतामां आवी त्यारे तेहु भधुर वाणीवडे हृष्टुं के  
हे भित्रो। आ प्रमाणे गुण्यवत् इत्किंत करवुं ते आपण्यने

વિષસેનનીકથા.

( ૧૬૩ )

ઉચિત ગણ્યાય નહોં. કદાચિત્ અતિ પ્રયંડ વિષધારી સર્વના સુખમાં હસ્ત ફેંકવો, સહસા હળાહળ વિષપાન કરવું, તત્કાલ પ્રસ્તેલી વાધણુના સ્તનમાંથી દ્રોધ પીલું, રહામા પવનથી પ્રજ્વલિત અગ્નિની નળુકમાં શયન કરવું, મધુર વિગેરે પ્રાણીઓથી બ્યા કુદુરીએવા સસુદ્રમાં સંતોષપુર્વક પ્રવેશ કરવો, તેમજ તીકણું નખોથી અતિ ભયંકર રોછિ વિગેરે ધાતક પ્રાણીઓની સાથે આલિંગન કરવું, તે સર્વ શ્રેષ્ઠ ગણ્યાય, પરંતુ ક્ષણું માત્ર પણ ધર્મમાં પ્રમાદ કરવો તે ચોંચ ગણ્યાય નહોં. કારણું કે તે પ્રમાદ દરેક જન્મમાં હુસહ હુઃખ આપવામાં અતિ પ્રયંડ છે. આ પ્રમાણે અમૃત સમાન આનંદધારક કુમારની વાણી સાંસારી તે અને જણ્યાએ. અતિચારના આચરણથી લનજા પામ્યા.

અન્યથા વસંતસમયમાં વિલાસવતી કુમારને કહેવા લાગી કે, હે પ્રિય ! હાલમાં તમે કીડા રસથી વસંતકીડા. પરાઊસુખ થયા છો, પરંતુ રહને તે વાતનો બહુ શોખ છે. માટે તહે નંદનવનમાં રહારી સાથે કીડા કરવા ચાલો. ત્યાં જઈ કેળા, ઈલાયચી અને લબિંઅ વિગેરે લતાએના મંડપમાં આપણું કીડા રસનું પાણ કરીએ. કુમાર ગોચરે, હે મૃગાક્ષિ ! આ કાર્ય કરવું આપણુંને ઉચિત નથી, પરંતુ તહેરા આખરને લીધે રહારે આવવું પડશે. એમ કહી તેણીની સાથે તે ચાચ્યો. અને નંદનઉદ્યાનમાં ગયો. પ્રથમ જીનમાંદ્રિમાં જઈ અક્રિલાવ યુક્તા જીનેંદ્ર અગવાનની પુણ કરી. પછી સુતુતિ કરી ત્યાંદી બહાર નીકળ્યો. ત્યારબાદ મધુર ગુંબદવ કરતા બ્રમરા તેમજ કેયલના નાદથી વાચાલિત ગંલીર વૃક્ષોની ઘટાવાળા વનમાં તેમજે પ્રવેશ કર્યો. ત્યાં આગળ સુંદર પુણ્યો પડે કલ્પવૃક્ષના ગર્વને હરણ કરનાર, તેમજ બહુ સરલ અને

(૧૬૪)

શ્રીમુખાર્થનાથવાર્તા.

લાંબી છે શાખાઓ જેની, એવો એક મહેઠો વૃક્ષ તેઓના જેવામાં આવ્યો. પછી તેની નીચે ગાઠ છાયામાં વિલાસવતી સહિત કુમાર ઐઠો અને આનંદપુર્વક તેની થોભા જેતો હતો, તેટલામાં ખટ્ટવાંગ શિવના આયુધથી વિભૂષિત છે હસ્ત જેનો, વળી ઉજ્જીત જરાવડે સુશોભિત છે મસ્તક જેનું, તેમજ પ્રગટ કર્યો છે ઘંટા તથા જાંઝરનો નાદ જેણે, જેના હૃથમાં લિક્ષાપાત્ર ધારણ કરેલું છે, પ્રાણીઓનો જણે પ્રતયક્ષાલ આવ્યો હાયને શું? એમ ડમડમ વાગતા ડમડના નાદથી અતિ લયંકર હેખાવ આપતો અને મનમોહક આકૃતિવાળો. એક મહાબતી આકાશમાંથી એકદમ ત્યાં આવ્યો. કુમારને જોઈ ચિત્રામણની માદ્રક સ્તરથી થઈ તે કંઈ પણ બોલી શક્યો નહીં. ત્યારે કુમારે વિલાસવતીને કહ્યું કે, હે સ્વી! આ પુરુષ નથી પણ સ્વી છે. વિલાસવતી બોલી, હે નાથ! પુરુષનું રવરૂપ સાક્ષાત્ હેખાય છે અને સીનો આકાર ભીલકુલ હેખાતો નથી છતાં આ સ્વી છે એમ તમે શાથી કહો છો? કુમાર બોલ્યો, હે સુંદરી! તું એની ચૈદ્યા જે. વહુ દૃષ્ટિથી જુઓ છે. વળી મહારા સહામું જોઈ શરીરે રવેહ જલ વહન કરે છે, તેમજ શરીર રોમાંચિત થઈ ગયું છે. પગના અંગુઠાવડે પૂર્ખી જોતારે છે. તે ઉપરથી આ સ્વી છે એમાં કોઈ પ્રકારે સહેદ નથી. વિદ્યા સાધવા માટે આ સ્વીએ પુરુષનો વેશ ધાનણ કર્યો છે. કારણું વિદ્યાઓ અનેક પ્રકારની હોય છે અને તેઓને સિદ્ધ કરવાના ઉપાય પણ બહુ પ્રકારના હોય છે. એમ કુમાર બોલતો હતો તેટલામાં તે વિદ્યા તેને સિદ્ધ થઈ ગઈ. તેથી તેણે કાપાલિકનો વેશ છોડી દઈ સ્વી રૂપ ધારણ કરી કહ્યું કે, હે કુમાર! આપના દર્શનથી ધણ્ણા દિવસે આજે મહારી વિદ્યા સિદ્ધ થઈ એમાં કંઈ આશ્ર્ય નથી. કારણું કદ્વપુરુષની માદ્રક સતપુરુષના દર્શનથી દરેક કાર્ય સિદ્ધ થાય છે. વળી હે કુમારેં! આ મહારેં

વિશ્વસેનનીકથા.

( ૧૬૫ )

હેઠ તથા જીવિત વિગેરે આપનું જ છે. હે પ્રાણુભિય ! ક્ષણ માત્રમાં વૈતાંદ્ર પર્વતમાં જઈ રહારા માતા પિતાને લઈ પાણી હું અહીં આવું છું. ત્યાં સુધી આપ રહારી ઉપર કૃપા કરી અહીં રહેશો. તમે રહારા ખડુ ઉપકારી છો, માટે રહારો હેઠ પણ હું તમને અર્પણ કરું છું. એમ કહી તે ત્યાંથી વિહાય થઈ.

હવે પ્રછન્દરૂપ ધારણુ કરીને તે ખીની પાછળ ભ્રમણુ કરતા એક વિદ્યાધરે આ સર્વ વાત્તી સાંભળા પ્રછન્દરૂપધારી અને તેનું સર્વ ચરિત્ર જોયું. વળી તે વિદ્યાધર. વિદ્યાધર તેની ઉપર અનુરક્ત થઈ છ માસથી તેની પાછળ ફરતો હતો અને વિદ્યા સિદ્ધિની આકંક્ષાથી આજ સુધી તેણે તેના સમાગમની વાટ જોઈ, પરંતુ હવે પોતાને મનોરથ નષ્ટ થવાથી તે વિદ્યાધર કોધાયમાન થયો. તેથી તે હસ્તીનું સ્વરૂપ ધારણુ કરી કુમારને ઉપાણી આકાશમાં ઉડી ગયો. તે જોઈ કુમારનો સર્વ પરિવાર વિસ્તિત થયો, અને વિલાસવતીએ વિરહને લીધે વિલાપના શાખાથી પોકાર કર્યો. તેથી તીક્ષ્ણ શાસ્ત્રો ધારણુ કરી શુણ્યાંદ્ર વિગેરે તેની પાછળ હોઇયા. રાજ પણ કોઈના કહેવાથી કુમારનું ફુઃખ જાણ્ણું ત્યાં આવ્યો, અને જોયું તો મૂર્છાથી જેનાં નેત્ર મીચાઈ ગયાં છે એવી વિલાસવતીને પૃથ્વી પર પડેલી જોઈ. પછી પોતાના પુરુષાને તેણે કહ્યું કે, ગંધોઈક લાવી જલદી એને છાટો, તેમજ વીજણુથી પવન નાખો. તે પ્રમાણે શીતલ ઉપચાર કરવાથી વિલાસવતી સચેતન થઈ, તેટલામાં શુણ્યાંદ્રાદિક સુલટો ત્યાં આવી રાજની આગળ કહેવા લાગ્યા, હે હેવ ! કુમારને કોઈ હસ્તી આકાશમાર્ગે લઈ ગયો, તે જોઈ અમે તેની પાછળ હોઇયા પણ અમારો કંઈ ઉપાય ચાહ્યો નહીં. અમારાં ખાણ્ણો

( ૧૬૬ )

શ્રીસુપાર્વતિનાથચરિત્ર.

પણ નિષ્ક્રિયાં હવે શું કરવું ? એટલામાં તે વિદ્યાધરી પણ પોતાના માતપિતાની સાથે ત્યાં આવી અને પુછવા લાગી કે, આપને કુમાર કરાં ગયો ? રાજ ભાવયો, કોઈક વિદ્યાધર હસ્તીનું સ્વરૂપ ધારણું કરીને અમારા કુમારને લઈ ગયો. વિદ્યાધરી સમજી ગઈ કે આ કાર્ય તે હૃદ ખેચરનું જ છે. તેથી તેનું સર્વ વૃત્તાંત તેણીએ પોતાના પિતાની આગળ કહ્યું. ત્યારખાદ તે વિદ્યાધરે રાજને ધીરજ આપી કહ્યું કે, સાત દિવસની અંદર તમ્હારા પુત્રને હું જરૂર લાવી આપીશ. હવે તમ્હારે કિંચિતસમાત્ર પણ એહ કરવો નહીં. અને સુખેધી તમે પોતાના સ્થાનમાં પદ્ધારો. એમ સાંલળી રાજ પણ શુણુંદ્ર પાસે વિલાસવતીને ધૈર્ય ધારણું કરાવી ધર તરફ ચાલ્યો. તેમજ વિદ્યાધર પણ કુમારની શોધ કરવા માટે પ્રવૃત્ત થયો. હવે તે હૃદ ખેચર સસુદ્ધીપમાં તે કુમારને ઝેંડી દર્મને વૈતાળ્ય પર્વતમાં જઈ પરણુવાની સામગ્રી તૈયાર કરતો હતો.

હવે કુમાર પોતે દ્વીપની અંદર ફરતો હતો તેવામાં ત્યાં

વનદેવતા સમાન મનોહર આકૃતિવાળી એક

**કુનકશ્રીનો** સ્ત્રી તેના જેવામાં આવી. કુમારે પૂછ્યું,

**સમાગમ.** તું કોણું છે ? અને અહીં શા માટે આવી

છે ? બહુ ઉણ્ણુ નિઃખાસ મૂકૃતી તે બાબી,

જેણું મુને નિર્માણ કરી પ્રસિદ્ધ કુલમાં જન્મ આપી અત્યાંત હુઃખશી ઘેરાયેદી અહીં આણી છે એવા તે હૈવને પૂછો ! એમ

કહી તે ઝદન કરવા લાગી, એટલે કુમારે તેને શાંતિ આપીને કહ્યું કે, હવે તહારે એહ કરવાનું કંઈ કારણ નથી. તું હૈવગતિનો

વિચાર કર ? ઉચ્ચા હોય તે નીચા થાય છે અને નીચાના ઉંચ

પણ થાય છે. ધનાળ્ય દરિદ્રી અને દરિદ્રી ધનવાનું, રાજાઓ રંક અને રંકના રાજાઓ પણ થાય છે. તે સર્વ કર્મનોજ પ્રભાવ છે.

विश्वसेननीकथा.

( १६७ )

माटे हे सुश की ! कर्मनो उच्छेद करवामां तुं तत्पर था. नेथी  
इरीने केाळि वभत ठहने आवुं सांसारिक फुःअ प्राप्त थाय नहि. अम  
डेटलोऽक उपदेश आपीने कुमारे तेना शोऽक फूर कर्यो. अने  
गोप ज्ञेम गोपीनुं आश्वासन करे तेम कुमारे पोताना स्थानथी  
भष्ट थयेती एवी पणु ते खाणाने स्वस्थता पूर्वक पोतानी पासे  
स्थापन करी. त्यारभाद तेण्हीमे पोतानुं चरित्र कुमारनी आणगा  
कहेवानो प्रारंभ कर्यो.

श्रीनगरनो रघीश सोमदेव नामे श्रेष्ठी छे. तेनी कनकश्री नामे  
हुं पुत्री छुं. वणी तेज नगरवासी शालीकद  
कनकश्रीनुं नामे श्रेष्ठीनी साथे हुं परणेली छुं. तेमज  
चरित्र. भहु सत्कार पूर्वक ते झुने पोताने घेर लाई  
गयो. अने भहारी साथे भहु आनंदथीविषय

सुख लोगवतो हुतो, वणी तेणु झुने कल्युं के, हवे त्हारा पिताने  
त्यां केाळि हिवस त्हारे जवुं नहीं. भहुं पणु ते प्रमाणे कल्युल कर्यु.  
त्यारभाद विनय पूर्वक भहुं कल्युं के, हे नाथ ! भहारा मातापिता  
कदाचित झुने योलावं तो तम्हारे छुटी आपवी पडेशे. ते पणु  
तेणु भरेभर मान्य कर्यु नहिं. त्यारभाद एक हिवस अर्ध रात्रीना  
समये नलुकना धरभां केाळिक पुरुष गायन करतो हुतो, तेनो सु दर  
नाह भहारा सांखणवामां आळयो. ते उपरथी भहुं भहारा स्वा-  
मीने कल्युं के, हे नाथ ! आ गायन करनार पुढूषनी पचीश वर्षानी  
उंभर छे. ते ज्ञते क्षत्रीय छे. तेना शरीरनी कांति जौर छे. तेतुं  
आयुष्य थाङुं छे. आकृति भहु भनेहर अने शरीरे ते पुष्ट छे.  
शुद्ध स्थलमां एक तिलनुं तेने चिन्ह छे, अने धनुर्वेदमां ते भहु  
कुशल छे. आ प्रमाणे भहुं स्वरशास्त्रथी विशेष हुक्कीकत जाणीने  
तेने कल्युं. तेथी तेना हुद्यमां एकदम धृष्या इपी अग्नि सणगी  
हृष्यो. अने तेज हिवसथी भहारी साथे तेणु योलवानो संबंध

( ૧૬૮ )

શ્રીસુપાર્બતનાથચન્દ્ર.

પણ બંધ કર્યો. પછી ભેં વિચાર કર્યો કે, ગુણુ પણ દોષનું કારણું જેને છે. ત્યારબાદ આવા અયોગ્ય કંટાળાને લીધે તે દિવસથી આરંભીને તે પણ સમુદ્રની સુસાક્ષરી માટે તૈયાર થયો. પછી પોતાના પિતાની આજા લઈ શુલ સુહૃત્તમાં તે દેશાંતર ચાલ્યો. તે વખતે તેનો બીલકુલ આશ્રણ નહોતો છતાં હું પણ તેની સાથે વહાણુમાં એડી. રાત્રીના સમયે સમુદ્રમાં ચાલતાં નિદ્રામાંથી હું જાગ્યી ઉડી. અને દેહચિત્તા ટાળવા માટે જજરૂમાં જતી હતી તેવામાં તેણું ધ્યક્ષો મારી મહને સમુદ્રમાં નાખી હીધી. તે પ્રસંગે દૈવયોગે મહારા હાથમાં એક પારીયું આવી ગયું. તેથી તેનો આશ્રય લઈ હું અહીં આવી છું. વળી હે કુમાર ! હાલમાં મહને બહુ લુઅ લાગ્યી છે, એમ કહી તેણીએ કુમારની આગળ પોતે આણુલાં સચિત્ત ફળ મૂક્યાં. કુમારે પોતાના હૃહયમાં અહેણું કરેલા નિયમનું સમરણું કરી તે ફળ આધાં નહીં. ત્યારે તેણીએ બહુ આશ્રણ કરી કુમારને પૂછ્યું કે, આ સુંદર ફળ તમે શા માટે ખાતા નથી ? કુમાર બોલ્યો, પત્ર અને પાણી વિના બાકીની સચિત્ત વસ્તુનો મહારે ત્યાગ છે. એ પ્રમાણે સાત દિવસ સુધી કુમારે મનથી પણ સચિત્ત દ્રબ્યની ઈચ્છા કરી નહીં. તેમજ ધર્મનો ઉપદેશ આપી તે ખીને પણ ભાર ન્રતધારી આવિકા કરી. ત્યારબાદ સચિત્તનો નિયમ કરવાથી તે પણ સાત દિવસ સુધી ઉપવાસી રહી.

તે દરમીયાન પૂર્વોક્તા વિદ્યાધરી બહુ પરિવાર સાથે ત્યાં આવી. તે પ્રસંગે બહુ કૃશ થયેલી અને પોતાની ફરીથી વિદ્યાધર-આગળ રહેલી તે ખી સાથે કંઈક વાતચિત્ત રીતું આગમન. કરતા કુમારને અત્યાંત હુર્ભળ અવસ્થામાં તેણું જોયો. પછી મસ્તકે હાથ જોડી તે વિદ્યાધરી બોલી, હે પ્રાણુવલલા ! આપ આ વિમાનમાં એસી જાઓ. જેથી આપણે તમારા નગરમાં જઈએ. વળી તમારો અપકારી

વિશ્વસેનનીકથા.

( ૧૬૬ )

જે એચર હતો તેને રહારા પિતાએ માર્યો છે. તે સાંભળી કુમાર જોત્યો અરે ! આ બહુ વિડ્ધ ડામ કર્યું. કારણ કે તે મહને અહીં લાવ્યો હતો. તેથી મેં કનકશ્રીને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો, માટે તે એચર રહારે પરમ ઉપકારી ગણ્યાય. અથવા પૂર્વ કરેલા વિડ્ધ કર્મતું આજે તહેને આ રૂળ મળ્યું. એમ કલ્યા બાદ વણિકની સ્વીએ વિદ્યાધરીને કહ્યું કે, આજે સાત દિવસથી કુમારને ઉપવાસ છે. કારણ કે આ કુમાર બહુ ધર્મિક છે. અને તે સચિત્ત આહાર લેતા નથી. પછી વિદ્યાધરીના પરિવારે ફ્લ, પત્ર, પુષ્પ અને કંદમૂળ લાવીને કુમારની આગામ મૂક્યાં. પરંતુ પોતાના નિયમને લીધે પૂર્વની માઝક તેતું પણ તેણે લોજન કર્યું નહીં, ત્યારખાદ તેના પરિવારે તે સર્વ ઇલાહિક આધાં તેથી તરતજ તે સર્વે લોકો મરણ પામ્યા.

કુમારે મનમાં વિચાર કર્યો કે, જેના પ્રલાવથી ભન્ય પુરુષો

સંસાર સમુદ્રને તરી જય છે એવો ધર્મ જ

**ધર્મમહિમા.** આ જગતમાં સત્ય છે. અને તેથીજ સર્વત્ર

જય થાય છે. તેમજ ઉત્તમ ગુણોથી વિરા-

જૃત, વળી શુલ રૂળ આપવામાં કલપવૃક્ષ સમાન, અજ્ઞાન રૂપી અંધકારને હૂર કરવામાં સૂર્ય સમાન અને જેઓએ ઉપદેશ પૂર્વક નિયમ આપી રહારે ઉદ્ધાર કર્યો એવા ધર્મગુરુઓનો આ જગતમાં જય થાઓ ! તેમજ અનેક વિપત્તિઓવડે બહુ જથુંકર એવા આ સંસાર કૂપમાંથી રહારે ઉદ્ધાર કર્યો અને અતિ વિકટ લવડપી અટવીમાંથી જેમણે રહારું પરિજ્ઞમણુનિવાર્યું તે ગુરુઓ રહારા પરમ ઉપકારી છે. એમ તે કુમાર ચિંતવતો હતો તેટલામાં વિદ્યાધરીએ વિદ્યાના પ્રલાવથી જાણ્યું કે દ્રેષ બુદ્ધિથી પૂર્વોક્ત તે એચરે વિષ મિશ્રિત કરી આ ઇલાહિક વસ્તુઓ પ્રથમ અહીયાં મૂકેલી હશે અને તેઓનો પ્રભાવ

( ૨૦૦ )

શ્રીમુપાર્થનાભઅરિત્રી

હાલમાં પ્રગટ થયો એમ નિશ્ચય કરી તરત જ તે પોતે વિષ સંહારિણી ઔષધિ લઈ આવી, અને તે તેઓના નાડ ઉપર મૂડવાથી એકદમ તેઓ સર્વ સચેતન થયા. ત્યારબાદ તે વિદ્યાધરી કનકશ્રી સહિત કુમારને વિમાનમાં બેસાદી લોગપુરમાં લઈ ગઈ. ત્યાં બહુ વિદેશની પીડાથી હુંઘી થયેલાં એવાં પોતાનાં ભાતા પિતાને કુમારે નમસ્કાર કર્યો અને સર્વે આનંદમય થઈ ગયાં. ત્યારબાદ મ્હેઠી વિલૂપ્તિ સાથે એચરેચે વિવાહ ઉત્સવ પ્રારંભ્યો. કુમારે મુનિઓને પણ મોહરનક એવી સુરસુંદરી નામે તે વિદ્યાધરીનું પાણિઅહૃદ્ય કર્યું. તેમજ નિરંતર આવક વત પાગવામાં દફન ચિત્તવાળી કનકશ્રી પણ કુમારને ઘેર રહી અને કુમાર પણ તેને પોતાની જ્હેણ સમાન માનવા લાગ્યો.

વિશ્વસેન કુમારને શુદ્ધ મુહૂર્તમાં રાજ્યાસન ઉપર સ્થાપન  
કરી રણમહલ રાજ્યે પોતાનો ચોગ્ય  
વિશ્વસેનનો ગૃહ. સમય જાણી જોને દીક્ષા અહૃદ્ય કરી. કુમાર  
સ્થાશ્રમ. પણ રાજ્યાસન અહૃદ્ય કરી બન્ને ખીચો  
સાથે અક્ષય રાજ્ય સંપદાઓ લોગવંતો  
નિરંતર નિરતિચાર આવક વત પાગવામાં તત્પર થયો. એમ  
કેટલોક સમય વ્યતીત થતાં વિલાસવતીને સુંદર આકૃતિવાળો  
જગાદાનનદ નામે એક પુત્ર થયો. તેણે અનુકમે એંતેર કણા-  
ઓમાં નિપુણતા મેળવી. અને અનુકમે યૌવન અવસ્થાથી તે  
અલંકૃત થયો. વળી સુરસુંદરીને પણ પૂર્ણ લક્ષ્ય સહિત એક  
પુત્રી થઈ. માત્ર તેનું આટલું જ કુદુંબ હતું. ત્યારબાદ કુમારે ખાલ્સ-  
ચર્ચ વતનો નિયમ લીધો. તેમજ રાજ્યને દફતરભાષ સમાન, અને  
ઝી વર્ગને બુજાંગી સમાન માનતો છતો તે પોતાનો કાલહેપ  
કરતો હતો. વળી જે કુમારને પ્રતાપ રૂપી પ્રણ રક્ષક, પોતાની

વિશ્વસેનનીકથા.

( ૨૦૧ )

બુદ્ધિ રૂપી મંત્રી, આજા રૂપી ચારક બંધન અને પુષ્ટયબંધ  
રૂપી સંપત્તિ છે. તેવામાં કોઈ ફુલકર્મને લીધે વિલાસવતીના  
શરીરે ભણારોગ ઉત્પન્ન થયો. વૈદ લોકોએ બીજોરાના ઉપચારવડે  
વ્યાધિથી તેને વિમુક્ત કરી. તો પણ વિલાસવતી દરરોજના અસ્થ્યા-  
ખને લીધે સચિત વસ્તુનો આહાર કરવા લાગી. રાજાએ બહુ  
સમજાવીને કલ્યાંકે, સાચાત આહાર કરવાથી તહાર્દું બીજું શુદ્ધારત  
દ્વારા થાય છે. વળી કારણું વિના અતિચાર સેવવો તે ચોઅય  
ગણ્યાય નહીં. તે સાંભળી ગાઢ આસક્તિને લીધે તેણીએ જવાબ  
આપ્યો કે, જે હું મધની સાથે બીજોરાનો પ્રચોગ હાલમાં છોડી  
દઉં છું તો ભણાર શરીરે રોગ બહુ પીડા કરે છે. રાજ બોલ્યો, હે  
પ્રિયે ! સચિત ઔષધાહિકથી તહાર્દું શરીર નીરોગી થયું છે  
એમ જાણી તું જે ઉત્તર આપે છે તે ઉચ્ચિત નથી. કારણું  
પોતાના એક જીવિત માટે બહુ જીવ કોટીને જેઓ હુઃખમાં નાખે-  
છે તેઓનો આત્મા શું સદા કાલ અમર રહેવાનો છે ? તેમજ  
શાખમાં તો કલ્યાંક છે કે—

કુમયો ભસ્મ વિષા વા, નિષા યસ્યેયમીદર્શી ।

સ કાયઃ પરપીડામિઃ, પોષ્પતામિતિ કો નયઃ ? ॥

મહતા પુણ્યપણ્યેન, ક્રીતેયં કાયનૌસ્ત્વયા ।

પાર દુઃખોદર્ઘેર્ગન્તું, ત્વર યાવત્ત્રમિદ્વતે ॥

અર્થ—“જે શરીરની સ્થિતિ કીડા, ભસ્મ કે વિષાર્પ થાય છે તે  
શરીરને અનેક જીવને હુઃખ આપી પોષવું તે સર્વથા અનુચ્ચિતજ  
ગણ્યાય.” તેમજ હે જીવ ! મ્હોટા પુષ્ટયરૂપી કિંમતવડે શરીરરૂપી  
નોકા તહેં ખરીદી છે તો જ્યાંસુધી તે લાગી ન જાય તેટલામાં  
હુઃખ સાગરનો પાર પામવા માટે તું જલહી તૈયાર થા. વળી હે  
મુજાક્ષિ ? સફણુંના મુખ કમળમાંથી નીકળેલાં અને પોતે શ્રદ્ધા

( २०२ )

श्रीमुपार्थनाथवरित्.

કરेलां વચ્ચેનોનો અનાદર કરવો તે માત્ર મોહનોજ પ્રલાવ છે એમ હું માનું છું. અને તેમ કરવાથી તો આ લોક અને પરલોકમાં અતુલ હુઃખ પ્રાપ્ત થશે. વળી સફુગુરુની આજાનો ભંગ કરવાથી ભવિષ્યમાં એધિ પણ હુલ્લાલ થશે. એમ બહારું મંતવ્ય છે. એ પ્રમાણે અનેક બુક્ટિત્યોથી બહુ ઉપદેશ આપ્યો પરંતુ દારણું કર્મને લીધે તેણીએ તે વચ્ચન માન્ય કર્યું નહીં. “ અહો ! મોહમહિમા કેવો દારણું છે ? ” એમ જાળી એ ભૂપતિએ તિરસ્કારપૂર્વક તેનો ત્યાગ કર્યો. ત્યારથી તે વિલાસવતી પણ બહુજ કંદાદિકનું લોજન કરવા લાગી. તેથી રોગ પણ વધારે વ્યાપી ગયો. અંદર અને બહારથી અંધ બની ગઈ. ત્યારભાડ તે અનેક હુઃખ અનુભવી અસમાધિથી મરણ પામી વ્યંતર ચેનિમાં ઉત્પજ્ઞ થઈ ! ત્યાંથી નીકળી પુનઃ બહુકાગ ભવ અમણું કરી અનુકૂમે કર્મનો ક્ષય કરી મોક્ષ જશે.

કનકશ્રીએ પણ બીજું શુણુંત લીધેલું હતું છતાં વિલાસવતીના સંસર્ગને લીધે તેમાં તે શિથીલ બની ગઈ અને સચિતનો નિયમ કરેલો છે તોપણ ઘણાં પાકેલાં આગ્રહણ અચિત્ત

ગણ્યાય એમ માની સચિત લોજન કરવા લાગી. તે નેઈ રાજીએ તેને કહ્યું, હે સુંદરી ! અંજલિમાં રહેલા જલબિંહુ સમાન આયુષ ક્ષીણું થાય છે. તે શું તું નથી જણુતી ? તેમ હે મૃગાક્ષિ ! લક્ષ્મીનું સુખ વિરસ, પરિણામે દારણું હુઃખદાયક અને અનંત ભવ અમણુમાં કારણુભૂત થાય છે. તે શું તું નથી દેખતી ? વળી ને પ્રાણી નિયમ લઈ પ્રમાદવડે તેનો નાશ કરે છે તે મનુષ્ય તુચ્છ વિષયોના લોગ માટે ડેરી ધનને અદ્દલે ડાંડી અરીદે છે. એમ કિચિત્ત માત્ર આધેલું હલાહલવિષ મરણદાયક થાય છે. તેમ થોડો પણ નિયમનો કરેલો ભંગ આણીએને મહા હુઃખ-

વિષસેનનીકથા.

( ૨૦૩ )

હાયક થાય છે. માટે સચિત આહારનો તું ત્યાગ કર. અને સહયુક્તનું વચન માન્ય કર. એમ તેણે ધર્મા પ્રતિષ્ઠાધ કર્યો, પરંતુ કારે કર્મના બંધથી મૈન ધારણ કરી કંઈપણ તે એલી નહીં. રાજના તિરસ્કારને લીધે તે પણ આદોચના કર્યા વિના લાંથી ભરણ પામી સૌધર્મ કદમ્બમાં મધ્ય દેવપણે ઉત્પન્ન થઈ.

**સુરસુંદરી** પણ દ્વિતીય ગુણુત્તમાં શિથિલ થઈ અને નિર-

તર પ્રમાદથી તુચ્છ ઔપધિન્યાનો ઉપલોગ

**સુરસુંદરી** કરવા લાગી. તે વાત રાજના જણવામાં આવી. એટલે તેણે કલું કે, હે પ્રમદે ?

સ્વેચ્છા પ્રમાણે આહાર લેવો તે તહેને ઉચ્ચિત નથી. અંગીકાર કરેલું ક્રત જે પાણો શકાય નહીં તો જીવિત પણ નિરર્થક છે.

વળી ધીર પુરુષો પ્રથમથી સ્વીકારતા નથી અને જે સ્વીકારે તો પછી તનેના ત્યાગ કરતા નથી. સત્ય વાણીવડેજ મનુષ્યો જીવતા ગણ્ય છે, અન્યથા મહા સમાન ગણ્ય છે. વળી હે સુંદરિ !

મહારી પાસે પ્રથમજ તહેં ગૃહસ્થ ધર્મ સ્વીકાર્યો છે. વળી બંદું ઉત્સાહપૂર્વક તહેં બીજું ગુણુત્તમ પણ લીધેલું છે. તેમજ પોતાના દેહ માટે પુષ્પ, તાંખુલ અને જળ વિના ખાકી સમસ્તા

સચિત વસ્તુનો સર્વથા તહેં ત્યાગ કર્યો છે. છતાં તું દ્વિતીય ગુણુ-

તતને અતિચારવડે કલાકિત શા માટે કરે છે ? પોતાના મુખે

કખુલ કરેલા આ ક્રતનું સમ્યકુ પ્રકારે તું પાલન કર ? કારણું જીવિત

જલણિંહ સમાન ચંચલ છે. વિષયલોગ વિજળી સમાન ક્ષણુલા -

ગુર છે. પ્રિયનો સમાગમ પરિણુભે શોકદ્યાયક છે. એમ જાણી પ્રમાદ-

વડે આ અતિચાર સેવવો ત્યારે ઉચ્ચિત નથી. દ્વાર્કર્મના વશથી તે

પણ રાજને કંઈ ઉત્તર આપી શકી નહીં. પછી રસાસ્વાદમાં લુખ્ય

થવાથી તેને સંનિપાત થઈ ગયો. અને મુંગાની માઝક ઐલાન થઈ

ગઈ. વળી રાજના તિરસ્કારને લીધે વિરતિ સમ્યક્તવના અભાવ-

( २०४ )

श्रीसुपार्श्वनाथअरित्र.

બહે કર્મવશથી કાળ કરીને તે વ્યાંતરી થઈ. તેમજ શુણુંદ્ર અને સોમચંદ્ર પણ આલોચના નહીં કરવાથી નાગલોકમાં ઉત્પત્ત થયા અને ત્યાંથી ચચીને અહીંજ ગ્રીને ભવે તેઓ મોક્ષ પદ પામશે.

વિશ્વસેન રાજ ધર્મ પરાયણુ થઈ સમય નિર્વહન કરતો હતો. એક દિવસ અર્ધરાત્રીના સમયે ડેંડિક

**વિશ્વસેનરાજ.** પુરુષ એક ગાથા આલતો હતો તે તેના સાંભળવામાં આવી—નેમકે—

મુચ્ચંતિ રજુબઢા, સંકલબઢા ય નિયલબઢા ય ।

નેહનિયડેસુ બઢા, ભવકોડિગાયા કિલિસસંતિ ॥

અર્થ—“હારી, સાંકુજ અને બેડીએથી બંધાયેલાં પુરુષો સુકત થાય છે, પરંતુ સ્નેહપાશથી બંધાયેલાં પ્રાણીએ તેા કેટિ લખભ્રમણુ કરી બહુ કદેશ પામે છે.” આ પ્રમાણે ગાથાનો અર્થ સમજુ વિશ્વસેનરાજ પોતાના ઝુદ્ધયમાં લાવના લાવવા લાગ્યા. રે જીવ ! આ પ્રમાણે જાણીને ડેંડ ડેકાણે તહારે પ્રતિબંધ કરવો નહીં. વળી હે જીવ ! શાન્દ્યાદિક વૈભવોમાં કિંચિત્ ભાત્ર પણ તહારે લુણ્ધ થવું નહીં તેઓ પરિણામમાં હરત હૃદાયક થાય છે. તેમજ રે જીવ ! આહિ, મધ્ય અને અંતનો યથાર્થ તું સ્ફુર્તમ બુદ્ધિવહે વિચાર કર. કે ધર્મ એજ કેવલ સુખદાયક છે. અને રાખ્ય વૈભવ નિશ્ચય હૃદાયક છે. વિષેકી પુરુષો એ બન્નેમાં બહુ વિશોષતા જાણે છે. અને મૂઢ પુરુષો દેખવામાં મનોહર અને પરિણામે વિરસ એવા રાખ્ય સુખમાં લુણ્ધ થઈને છેતરાય છે. એમ વિશ્વસેનરાજ અનેક પ્રકારે વિચાર કરતો હતો તેટલામાં સૂર્યોદય થયો. એટલે તરતજ આવસ્થકાદિ નિયમ કરી રાજ સલામાં આવ્યો, અને પ્રધાન વિગેરે અધિકારીએને આલાવ્યા. પછી તેઓની આગળ રાજએ પ્રક્ષ કર્યો કે, બગતા ઘરની અંહર

વિશ્વસેનની કથા.

( ૨૦૫ )

તેનો સ્વામી સુર્ખ ગયો હોય અને પછી જાયત થઈ કદાચિત્ તે તેમાંથી બહાર નીકળતો હોય તો તેને તેના સ્વજનોએ હૃથ પકડી અગાર્લારે ત્યાં રોકી રાખવો કે બહાર નીકળવા હેવો ? તે તમે અરોભર વિચાર કરીને કહો ! તેઓ બોલ્યા, હે નરેંદ્ર ! આ આખત તો નાનું આલંક પણ જાણું છે કે પોતાનો સ્વામી નિદ્રામાં સુતો હોય તોપણું સ્વજનોએ જગાડીને તેને બહાર કાઢવો બેઇઓ. તેમજ જો પોતાની મેળેજ જાયત થઈ તે બહાર નીકળતો હોય તો બહુ પ્રશ્નાંસનીય ગણ્યાય. વળી તેમાં જેઓ વિધનકર્તા થાય છે તે તો તેના પરમ વૈરી ગણ્યાય છે. પછી રાજ બોલ્યો, જે એમ હોય તો બહારનું એક વચન સાંભળો. પ્રમાણ ઇપી અનિયી બળતા સાંસારદ્વારી ઘરમાં મેહનિદ્રાવડે સુર્ખ રહેલા મુને જે જાયત કરે તેને તમારે કોઈએ ના પાડવી નહીં.

એ પ્રમાણે રાજનું વચન સાંભળી તેઓ પ્રત્યુત્તર તરીકે કંઈક બોલવાનો વિચાર કરતા હતા, તેટ-  
**ઉદ્ઘાનપાલનું** લામાં દ્વારાપાલે પ્રવેશ કરવેલો ઉદ્ઘાનપાલ  
**આગમન.** ત્યાં આંધો અને રાજને નમસ્કાર કરી  
 વિનિતિ કરી કે, હે રાજધિરાજ ! સુપાત્ર એવા  
 મુનિઓશ્ચી પરિવૃત, ચતુર્ણાનિ ધારક અને ઉત્તમ મંગલદાયક શ્રી  
 નેમિયંડ આચાર્ય ઉદ્યશેષાર ઉદ્ઘાનમાં પદ્ધાર્ય છે. આ પ્રમાણે  
 વચનામૃતના પાનથી સંતુષ્ટ થયેલા રાજને પોતાના અંગપર  
 રહેલાં સર્વ આભૂષણો ઉદ્ઘાનપાલને અર્પણું કર્યાં તેમજ તત્કાલ  
 મુનિ મહારાજને વંદન કરવા માટે પરિવાર સહિત વિશ્વસેનરાજ  
 ઉદ્ઘાનમાં ગયો. અને આચાર્યના ચરણમાં નમસ્કાર કરી ચોગ્ય  
 સ્થાને એસી ગયો. મુનીદ્રે ધર્મલાલ આપી દેશનાનો પ્રારંભ  
 કર્યો દેશનાનો સાર સમજુને તે પોતાને ઘેર આંધો. પછી જગ-  
 ધાનંદ કુમારને રાજ્યાસને એસારી મહેત્સવપૂર્વક સૂરીધરની

( २०६ )

श्रीसुपार्थनाथ चरित्रः

पासे तेणु दीक्षा अष्टमु करी. तेमज बन्ने प्रकारनी दिक्षा लीधी. अने अनुकमे भोक्ष पहने पष्ठु प्राप्त थया. तेमज तेनी बन्ने खीच्यो। पष्ठु घोर संसारमां अष्टमु करी क्लैन भत पाभी उटलाक ज्ञवनी अंदर कर्मनो क्षय करी सिद्धपद पाभयो. माझे हे ज्ञव्य आणुच्यो। आ विश्वसेनराज्ये जेम द्वितीय गुणु व्रत धारणु करीने अति विषम कालमां पष्ठु लवन पर्यंत अभांडित पाष्ठु; तेम भावि छे शुभ जेमनु अेवा अन्य ज्ञव्यजन्नेाचे प्राप्तुंत मुखी पष्ठु गुड साक्षीच्ये लीधेलो। नियम निरपेक्षपणे अवश्य पाणवो नेहीच्ये.

इति श्रीभोगपरिभोगब्रते ० विश्वसेनकुमारकथानकं  
पञ्चातिचारकथासमन्वितं समाप्तम् ॥

तत्समाप्तौ श्रीमछक्षमणगणिविरचितप्राकृतपद्यबन्धश्रीसुपार्थनाथजिन  
चरित्रस्य श्रीसकलसूरिपुरन्दरायमाणपरमगुरुतपागच्छाधिराजशा-  
स्त्रविशारदजैनाचार्ययोगनिष्ठाद्यात्मज्ञानदिवाकरश्रीमद्भुद्धि-  
सागरसूरिशिष्यप्रसिद्धवक्तेति लब्धख्याति, व्याख्यान-  
कोविद जैनाचार्य श्रीमद् अनितसागरसूरिकृतगुर्जर-  
भाषानुवादे प्रभुदेशनाप्रबन्धे सदृष्टान्तातिचा-  
रव्याख्योपेतं उपमोगपरिभोगब्रतं समाप्तम् ॥



દત્તશ્રેષ્ઠીની કથા.

( ૨૦૭ )

## દત્તશ્રેષ્ઠીની કથા.

---

### મધ્ય-મૌસ-ધૂત-રાત્રિભોજન.

હાનવિર્ય રાજાએ પ્રક્રિયા કર્યો, કે, પરમ દ્વારા એવા હેઠળ વન्! દ્વિતીય ગુણુત્તમાં લાગતા અતિચારનું સ્વરૂપ દાંત સહિત અમને સંભળાવવા માટે કૃપા કરો. શ્રી સુપાર્શ્વપ્રભુ ઐદ્યા, હે રાજન्! દ્વિતીય ગુણુત્તમાં પુરુષોએ કાચા ગોરસ (દહીં, દ્વધ) સાથે મિશ્ર કરી દ્વિદિવિ (કઠોળ) ખાવું નહીં. તેમજ સર્વ ધર્માર્થી જનોએ લોજનથકી મધ્ય, મૌસ તથા રાત્રી લોજનનો સર્વથા ત્યાગ કરવો. વળી જેએ મુનીદ્રિનું વચ્ચન અંગીકાર કરી દ્રાતાની માઝેક રાત્રી લોજન કરતા નથી તેએ આ ભવ અને પરભવમાં પણ સદાકાળ સુખી થાય છે. જેમકે-સુપ્રભાત- (સુપય આશાડ) સેંકડો ઉત્તમ પ્રભાએ. જેમાં રહેલી છે (ઉત્તમ દ્વધથી લર્પૂર) સર્ગોધ (રાજાએ સહિત-ગોવાળીયાઓ સહિત) તેમજ અનેક પ્રકારના વનાંડો જેમાં રહેલા છે, વળી સુવૃક્ષ (સુવત્તસ) ઉત્તમ વૃક્ષોની છાયાવાળો (ઉત્તમ વાચિદાએને સુખદ્યાયક) ગોઢાની માઝેક પવિત્ર તીર્થોવડે વિલૂઘિત સૌરાષ્ટ્ર નામે દેશ છે. તેમાં ધન ધાન્યાદિક સંપત્તિઓનું નિવાસસ્થાન અને અનેક સમૃદ્ધિઓથી વિરાળુત ગિરિનગર નામે નગર છે. તે નગરમાં વૈરિબલને મથન કરનાર મથન નામે સુપ્રસિદ્ધ રાજા છે. તેમજ તેમાં બહુ ધનવાન મહેધરદાતા નામે શ્રેષ્ઠી છે અને દૃપમાં મનોહર લક્ષીતા નામે તેની સી છે. દત્ત નામે તેઓને એક પુત્ર થયો. તે પોતાની છિંબા પ્રમાણે હર્મેશાં ગોઢી કિયા કરવા લાગ્યો. તેમજ ભાતાપિતાની સંમતિ લેઈ દરેક નગરમાં સર્વ ડેકાણું દૂરવા લાગ્યો. એમ અનેક પ્રકારના વિલાસોમાં આસક્ત થર્ડ

( २०८ )

श्रीसुपार्थनाथ अरिज.

वेश्याओंनां धर पणु तेणु शोधवा मांड्यां, ए प्रभाणु निरंतर  
महिरापान करीने मैथुन कियामां आसक्त थृष्ट ते हिवसो व्यतीत  
करवा लाग्यो।

**एक हिवस दत्त पोताना परिवार साथे उद्यानमां उल्लासी  
करवा गयो। हुतो ते सभये तेणु महिरा,  
दत्तकथा मोहक, खाळां, शुंदर, वडां, अने करंणक  
विगेरे पदार्थीनां धणुं गाडां लरी साथे  
लीधां हुतां, तेमज वीणुा, वेणुं, अने भृङ्गादिक वाद्यमां प्रवीणु  
ओवा गायक बोकेने पणु साथे राख्या हुता। पट्ठी उद्यानमां जर्ज  
स्वमठ जगथी परिपूर्ण अने गंभीर ओवा सरोवरना कीनारे  
तेणु मुकाम कर्यो। अने केलोना मंडपमां जर्ज संगीतने। प्रारंभ  
कर्यो। तेवामां केाઈ एक हिशामांथी प्रसरतो असह्य गंध तेनी  
नासिकामां लराई गयो। तेथी दत्तानुं चित्त ते तरह ऐंचायुं।  
तेथी सावधान थर्ज तेणु पोताना परिजनने घूळयुं के, अत्यंत  
आ हुर्धर गंध क्यांथी आवे छे ? आवा गंधनो अनुलव तो  
केाઈपणु सभये झुने थयो। नडोतो।**

त्यारभाद परिजनमांथी एक जणु ते गंधना अनुसारे तेना  
शोध माटे नीकर्यो। तेवामां ते वननी  
मुनिदेशना। अंदर ऐडेला एक मुनीद्र तेनी दृष्टिगोचर  
थया। केमनी आकृति निरूपम अने दृष्टि  
सूर्योङ्गिण रहामी नेउली हुती। वणी मोक्षमार्गने भतावता  
होयने शुं ? तेम पोताना अन्ने हाथ जेमणु उंचा राख्या हुता。  
गाढ रोमना छिद्रोद्धाराचे नीकणता स्वेददृपी जलनी धाराओवडे  
तपश्चर्याडपी अभिथी तपेला हेहुमांथी पापदृपी भणने बहार  
काढता होयने शुं ? तेम तेओ। हेखाता हुता, ए प्रभाणु  
प्रचंड गंधने फैलावता, जाय सुपर्णु समान हेही यमान वर्षु-

દાત્રેકીનીક્ષા.

( ૨૦૬ )

વાળા અને કામદેવ સમાન રૂપધારી તે મુનિવરને કોઈને ચહીના થઈ ગયા. અને તરતજ તેણે પાછા આવી દત્તને સર્વ વૃત્તાંત નિવેદન કર્યું. તેથી દત્ત ખડુ ખુશી થઈ પોતાના મિત્રો સાથે તે મુનીદની પાસે ગયો અને શાંત મુદ્રાધારી એવા તે મુનિવરને નમસ્કાર કરી નીચે એડો. મુનાદ્રિ પણ ધ્યાન સુદ્રામાંથી મુક્ત થઈ ધર્મલાભ આપી ઓલ્યા, હે દત્ત ! ધર્મનું અવલંબન છેડી (ધર્મના અવલંબન વિના) હવે તું નિર્બિયપણે કેમ જ્ઞમણું કરે છે ? કહ્યું છે કે—

સત્ત્ય મનોરમાઃ કામાઃ, સત્ત્ય ર્મ્યા વિભૂતયઃ ।

કિન્તુ મત્તાઙ્ગનાપાঙ્ગ—મઙ્ગલોલં હિ જીવિતમ् ॥

લક્ષ્મીલતાકુઠારસ્ય, ભોગાસ્પોદનમસ્ત: ।

શ્રદ્ધારવનદાવસ્ય, કો હિ કાલસ્ય વિસ્મૃત: ? ॥

અર્થ—“વિષયસોાગ અને સંપત્તિએ દરેકને પ્રિય હોય છે, તે વાત સત્ય છે. પરંતુ પ્રાણીએ તું જીવિત મહોન્મત ખીએના કુટિલ કટાક્ષ સમાન ચંચલ છે. એમાં કોઈ પ્રકારનો સંદેહ નથી.” તેમજ લક્ષ્મીરૂપ વેલડીને છેદવામાં કુઠાર સમાન, મેઘરૂપી વાઢણને વિષેરવામાં વાયુ સમાન અને શૃંગારરૂપી વનને ભાગવામાં અન્ન સમાન એવા કાળની ગતિને કોણ નથી જાણું ? ” વળી હે દત્ત ! પ્રચંડ પવનવડે અતિ ચંચલ એવા સસુદ્ર તરંગની માઝુક આ શરીર અનિથર છે. ચંચળ શુણુને લીધે જીવિતન્ય પણ ચંદ્રને અનુસરે છે. અર્થાત્ ક્ષય પામે છે. યમપાશની માઝુક જરા, કુષ, ધ્વાસ, હેડકી, શિરોવેદના અને વિસૂચિકાદિ વ્યાધિએાવડે નિરંતર જીવિત આકર્ષિય છે. તેમજ ઘડી, સુહૂર્ત, પ્રહર, હિવસ, પદ્મ, માસ અને વર્ષાદિક વિભાગોવડે જીર્ણ વૃક્ષની માઝુક પ્રાણીનું જીવિતરૂપી વૃક્ષ વિભરાઈ જાય છે. માટે હે દત્ત ! હે અને આત્માની આવી વ્યવસ્થા હોવા છતાં પણ તું સ્વેચ્છા

( २१० )

श्रीसुपार्थनाथरित्रि.

મુજબ વિલાસ કરે છે. તેમજ મધ્ય અને મધ્યતું પાન કરે છે. આ પ્રવૃત્તિ ઉત્તમ કુદમાં ઉત્પન્ન થયેલા તહેને ઉચિત નથી. કારણુકે સત્કુલમાં જન્મી આતું અયોગ્ય આચરણ કરવું તે સર્વથા નિધિ ગણ્યાય છે. વળી તું રાત્રીએ લોજન કરે છે તેમજ જીગાર છોડતો નથી અને વેશ્યાઓને સાંગ કરે છે. પરંતુ ધર્મની વાતો તે કોઈ દિવસ પણ પૂછતો જ નથી. તે સાંભળી હતી બોલ્યો. હે મુનીદ્ર ! મધ્યપાનાદિકમાં શો હોષ છે ? તે કૃપા કરી આપ રહેને કહો. જેથી હું તેઓને ત્યાગ કરેં. મુનીદ્ર બોલ્યા આ જગતની અંદર નિર્બિલખ્યે જે અનાચારો રહ્યા છે તે સર્વે અનાચારો પ્રમત્ત એવા બાલજીવોને એક સાથે જલદી વીરાધ વળે છે. જેથી તેઓ કાર્ય અકાર્યતું સ્વરૂપ જાહી શકતા નથી. વળી મધ્યપાન કરવાથી વિજાનનો નાશ થાય છે, માટે મહા અનર્થકારક મધ્યને ધિક્કાર છે. એ વિષે એક દાયાત તું સાંભળ. એક નગરમાં બજે જાહીએ પરસ્પર બહુ સનેક પૂર્વક વસતા હતા. તેવામાં મહોટો લાઈ મરણ પામ્યો. તેની જી તેના નાના ભાઈ ( દીયર ) ઉપર બહુ રાગવાળી હતી. એક દિવસ તે જી ડામના આણેને નહિ સહન કરતી પોતાના દીયરને કહેવા લાગી કે, હવે તમેજ રહાડ શરણ છો. માટે રહારી સાથે તમે વિષયસુખ લોગવો. ત્યારબાદ દીયર બોલ્યો, અરે ! આ શું તમે બોલ્યાં ? આ અસર્ય પાપ કેવી રીતે છુટે ! મહોટા ભાઈની જી તો દોકમાં માતા સમાન ગણ્યાય છે. માટે સ્વર્ણમાં પણ આવા પાપતું ચિંતવન તમહારે કરવું નહીં. મહા એહની વાત છે કે ઉભય દોક વિરુદ્ધ અને બહુ અનિષ્ટ કૃગાદાયક એવી આ નિષ્કુર કિયાના આચરણને અવશ્ય માત્ર પણ કોણ કરે ! એ પ્રમાણે દીયરતું વચન સાંભળો તે મૌન રહ્યી અને લજન આનીને પોતાનું ગૃહકાર્ય કરવા લાગી. પછી દીયર ભણું તેને બહુ માનતો હતો. એમ કેટલોક સમય વ્યતીત થયો.

દત્તશ્રેષ્ઠનીકથા.

( ૨૧૧ )

એક દિવસ પોતાની લોજિં કપટ ભાવથી સમય ઘરના કાર્યની ચિંતા છોડી દઈ ઓરડામાં આટલો લોજિં કપટ. ઢાળો સુઈ ગઈ. તે વખતે ડોઈપણું કાર્યને લીધે તેનો દીયર બહાર ગયો હતો, તે પોતાનું કામ કરી પાછો ઘેર આવ્યો. અને ઘરમાં જુઓ છે તો પોતાની લોજિં દીઠી નહીં. તેથી તેણે પોતાની સ્વીને પૂછ્યું કે, ત્હારી જેઠાણી આજે કર્યાં છે ? ત્યારે તે ઓલી, માથાની વેદનાને લીધે તેમનું શરીર સારું નથી. તેથી તેઓ અનુદરના ઓરડામાં સુઈ ગયાં છે. તે સાંખળી તરતજ તે ગલરાઈ ગયો. અને કમાડ બંધ હોવાથી દ્વાર આગળ જઈ તે ઓહ્યો, કમાડ ઉધાડો ! મહારે તમારા કુશળ સમાચાર પૂછવા છે. પણી તેણીએ દ્વાર ઉધાર્યાં એટલે તરત જ તે અંદર ગયો. એટલે તેણીએ ફરીથી કમાડ બંધ કર્યાં. અને દીયરની સાથે દઠ આલિંગન કરી કામચેણ પ્રકટ કરી. ત્યારથાદ થાળી નીચે ઢાંકેલો દીવો પણ ખુલ્લો કર્યો. વળી પ્રથમ લાવી રાખેલું ભધતથા માંસ પણ તેની આગળ હુંજર કર્યું. અને તેણીએ તેને કહ્યું કે, આ ભધતથા માંસ આપના માટે તૈયાર છે. આપની ધૂઅણ પ્રમાણે બન્નેમાંથી ગમે તેને આપ ઉપયોગ કરો, નહીં તો અહીંથી છુટવાને હવે ઉપાય નથી.

અકુસમાતું અસદ્ય હુઃખ આવી પડવાથી તે વિચાર કરવા લાગ્યો કે, આ મહારા ઝોટા લાઈની ઓની અકુસમાતુસંકટ. છે તેથી તે મહારે માતા સમાન માનવા લાગુ છે. વળી શિષ્ટ પુરુષોને માંસ લક્ષણ પણ અતિ અનુચિત છે. કારણું અધમ જનેને વિલાસકારક, ફુર્ગિંધ અને ભલિનતાથી ભરેલું, ચરણીથી ખરડાએલું, હિંસાનું મૂળ કારણ અને રાક્ષસોએ સ્વીકારેલું એવું તે માંસ સર્વથા અભક્ષ્ય છે. જે પ્રાણી માંસની પેશીને હાથમાં લઈ દાંતે

( २१२ )

ओमपात्रं नाथवरित्रं

કરડી લક્ષ્ણ કરે છે. તે પ્રાણી કુલીન પુરુષોને ખાનની માઝેક અસ્પૃશ્ય થાય છે. માટે કોઈપણ પુરુષે માંસ લક્ષ્ણ કરવું ન જેહાચો. વળી ધાન્ય અને કાષથી ઉત્પત્ત થયેલું એવું મધ્ય તો શ્યામ રંગવાળું જળ ગણ્યાય છે. જેથી તેમાં કંઈ દોષ જણ્યાતો નથી. તેથી વિદ્ધાનો પણ નિઃશાંકપણે શરભતની માઝેક તેતું પાન કરે છે. એમ વિચાર કરીને તે ઓટ્યો, હે મુગાક્ષિ ! તમે અહુને મધ્યપાન કરાવો. જેથી જલદી હું અહીંયાથી ચાલ્યો. જાઉ. નહીંતર લોકો આપણુને કંઈપણ અપવાહ આપ્યા વિના રહેશે નહીં. કારણું કે એકાંતમાં જનની સાથે વાત કરતાં પણ અપવાહ લાગે છે. તો વળી કામાતુર એવી હારી સાથે વિદંભ થવાથી કેમ ન લાગે ? ત્યારબાદ તે ઉલ્લી થઈ, અને હાથમાં બાટલી લઈ એક સાથે તેને એટલો દાડ પાઈ દીધો. કે તરતજ તે લોટવા લાગ્યો. તેમજ તેને કંઈપણ લાન રહ્યું નહીં. એટલે તે પ્રેાદ રીચે તેની સાથે બહુ પ્રકારની કીડા કરી. પછી તેને માંસ પણ અખડાયું. તેથી અનર્થની મર્યાદા કંઈ પણ બાકી રહી નહીં, માટે હે દા ! સેંકડો અનર્થદાયક અને બહુ દોષમય એવા મધ્યપાનનો હહારે સર્વથા ત્યાગ કરવો. હવે ધૂતતું દાંત પણ સાવધાન થઈ તું સાંભળ.

આ ભરતક્ષેત્રમાં કુસુમપુર નામે એક નગર છે. તેમાં સુદર્શન એવા નામનો ધનશ્રેષ્ઠનો એક પુત્ર સુદર્શનશ્રેષ્ઠી. રહેતો હતો. વળી તે દરેક કલાએમાં કુશળ હતો. છતાં પણ જુગારનો તો બહુ વ્યસની હતો. પોતાના ઘરમાંથી તેણે એ કરોડ સૌનૈયા જુગારમાં શુમાંયા, તે નગરના દુતકારોનું શજરાન તેની લક્ષ્મીથી જ ચાલતું હતું. પછી બહુ અત્યાચાર થવાથી તેના પિતાએ તેને બહુ ડપકો આપ્યો. તો પણ તેની માતા શેડ ન

જાણેષોનોકથા.

( ૨૧૩ )

જાણે તેવી રીતે તેને કંઈક અલાંકારાદિક આખ્યા કરતી હતી. તે વાત કોઈના કહેવાથી ધન શ્રેષ્ઠીના જાણવામાં આવી. તેથી તેણે પોતાની ઝીને બહુ ધિક્કાર આપ્યી જુદા વરમાં રાખીને તેને નિર્વાહ જેટલું જ અજ આપવા લાગ્યો. તેવામાં એક દિવસ કુદું ખુદ્ધિવાળો સુદર્શન બહુ ધન હારી ગયો. તેથી જુગારી લોકેઓ તેને પકડીને બંધીખાને પૂર્ણો. તે વાત તેની માતાને કોઈએ કહી. તેથી તે ભૂખી, તરસી, અને રૂદ્ધન કરતી ઉતાવળથી તે ઘૂતકારોની પાસે ગઈ, અને પુરસ્કૃત-આગેવાનોને તેણીએ પૂછ્યું, કે કેટલું ધન આપવાથી તે છૂટી શકશે ? તેણે કહ્યું, હે શેઠાણી ! લાખ સોનૈયા આપો તો અમે તમણારા પુત્રને છોડી દઈએ. ત્યારે શેઠાણીએ કહ્યું કે, તેટલું ધન તો શેઠના ઘરમાં પણ મળવું સુશકેલ છે. વળી હાલમાં તો તેમને લોજન પણ સુશકેલ થધું પડ્યું છે. માટે તેના બદલામાં મહુને રાણી તમે એને છુટો કરો. એમ શેઠાણીના કહેવાથી પુરસ્કૃતે તેને રાખીને સુદર્શનને સુકત કર્યો. ત્યાંથી જતી વખતે સુદર્શન પોતાની માની પહેરેલી સાડી જેંચી લઈ ચાલતો થયો. તેથી પુરસ્કૃતને લજણ આવવાથી તેણે બીજી સાડી શેઠાણીને ઘેરવા માટે આપી. ઇરીશી સુદર્શન તે સાડી મૂકીને જુગાર રમ્યો. અને તેમાં પણ તે હારી ગયો. હવે શેઠાણી પુરસ્કૃતને ત્યાં હાસીની માઝક કામકાજ કરે છે. તે વાત કોઈના કહેવાથી શેઠના જાણવામાં આવી, એટલે તેમના હૃદયમાં બહુ પશ્ચાત્તાપ થયો અને વચ્ચારમાં પડ્યા કે, પુત્ર ઉત્પત્ત થવાથી પ્રથમ તો માતાના યૌવનને હરે છે. ત્યારથાં નામાદિક સંસ્કારોમાં પિતાની લક્ષમીનો બ્યય કરાવે છે. અનુકૂમે મહોટો થાય ત્યારે લોજન અને પાન વિગેર કાર્ય વડે ધનનો ઉપયોગ કરે છે. તેમજ પિતાનાં જે જે સુખસાધન હાય છે તે એને પણ પોતેજ થહુણ કરે છે. વળી તરણું અવસ્થાના મદને

( २१४ )

श्रीसूपार्थनायत्तरित्.

लीघे कामातुर थई पिताना समथ वैभवनो निःशंकपणे ते  
 विनाश करे छे. एम अनेक कारणोने लीघे पुत्रात्पत्ति सर्वथा  
 पिताने हुःभद्रायक थाय छे. छतां पछु पुत्र उपर महान् प्रति-  
 बंध करवामां आवे छे. ते भेदादुःआश्र्य छे. अथवा जे  
 भोग्नीकर्मना भोग्निमानी संपत्ति न होय तो हुःभद्रायक एवा  
 पुत्रनो जन्म सांकणी केणु आनंद भाने ? आ उपरथी भूरे  
 तो हुवे पुत्र संबंधी नियम छे. वणी ते स्त्री भाटे भाइ छुट्य  
 अहु अणे छ. ते भियारी आ हुःभमांथी केवी रीते छुट्ये ?  
 हा ! तेनो एक उपाय छे. श्रीनगरमां तेना लाभान्नो आ  
 सर्व हुकित डोळ्हक पुरुष द्वारा पत्र भोड़वी हुँ जणुवु, जेथी  
 तेओ धन आपीने पोतानी घेनने छेडावशे. एम विचार करी  
 पत्र लाखी एक पुरुषने त्यां भोड़व्ये. तेणु पछु थेडा द्विसोमां  
 श्रीनगरमां जध तेओने पत्र आप्ये. पत्र उडेवी वांच्यो तो  
 तेमां लाख्युँ हतुँ के, जेम अगस्त्य मुनिए समुद्रनुँ जलपान  
 करी जण खुटाडयुँ हतुँ तेम तभारा भाणुने जुगारना व्यसन  
 वडे एक साथे समथ भारा धननो विनाश कर्यो छे, तभारी  
 घेनने पछु जुगारीओ तेना देवापेटे एक लाख रुपीआ  
 भाटे पोताने कज्जे राखी छे. भाटे आपने जेम योग्य लागे  
 तेम करशो. आ प्रभाणु लेख वाची तेओनां नेत्रोमांथी  
 अशुद्धाराओ वडेवा लाणी. अने परस्पर स्नेहने लीघे योद्वा  
 लाग्या के, अहो ! घेनने दारूपु हुःभ आवी पडयुँ छे, तो पछी  
 हाथीना कान समान चंचल एवुँ आ धन आपणु शा कामतुँ  
 छे ? आ सर्व समृद्धि घेनने भाटेज छे. वणी जेना आशीर्व-  
 दथी अनेक विष्णो हूर थाय छे. एवी अग्निसी समान समथ  
 कुटुँभनी अनहर भीजुँ केणु छे ? सर्व उत्सवो पछु घेनने  
 लधनेज अवृत्त थाय छे. भाटे धन्य छे ! ते गृहस्थाश्रमिओ ते

દત્તશ્રેષ્ઠની કથા.

( ૩૧૫ )

જેને ત્યાં આવો શિલાવતી બહેનો હોય છે. એમ અનેક લાવના ઓથી આડર્થી તેઓએ પોતાની સર્વ વસ્તુઓ વેચીને એકલાખ રૂપીઆ મહાઊણે એકડા કર્યો. પછી તે ભાઈઓ સર્વ ધન લઈ તે નગરની નજીકમાં એક સરોવરનો પાળ ઉપર ગયા. તેવામાં માથા ઉપર ઉપાડેલા જલપાત્રના લારથી નમી ગઈ છે ડોક જેની એવી પોતાની બહેન માર્ગમાં જતી હતી. તે તેમના જેવામાં આવી તે તરત જ તેમણે ઓળખી, અને જલદી તેની પાસે જ બહેનું ઉતારી પૃથ્વી ઉપર નીચે મૂક્યું. પછી મસ્તક નમાવી તેઓ તેસે નમ્યા. શેડાણી પોતાના લાઇએને જોઈ બહુ લગ્નન પામી નેત્રમાં અશ્વધારા વહન કરતી તે ઓલી, તમે સર્વ સુખી છો ? અકસ્માત્ તમારું અહીંયાં આગમન કયાંથી થયું ? શું કોઈ પણ કારણને લીધે અહીં આવવું થયું છે ? એમ સાંભળીને શોક સાગરમાં દુષેલા એવા તેઓ બોલ્યા, અરે ! અમારું કુશલપણું કયાં રહ્યું ? કારણ કે અમારા જીવતાં છતાં અમારી બહેન દાસી થઈ પરદેર પાણી ભરે છે. વળી મહા ઐદની વાત છે કે સુંદર નેત્રવાળી હે લગિની ! તહાં તાથામાં હુલરો લોકો કામ કરતા હતા. એવી તું આજે દાસીની માઝુક તેઓના તેમજ બાળએને ત્યાં પાણી ભરે છે. રે હૈવ ! અનુચિત કાર્યમાં તું બહુજ ઉદ્ઘૂરત થયો છે. હવે તહેને શું કહેવું ? જેણીનું મસ્તક પુષ્પનો લાર પણ સહુન કરવાને અશક્ત હતું, તે હાલમાં પાણી ભરેલા ઘડાએ વહન કરે છે. હે હૈવ ! તહારી રચના બહુ નિષ્કુર છે. તેમજ તું સ્વેચ્છા પ્રમાણે વિલાસ કરે છે. વિગેરે બહુ વિલાય કરતા તેઓએ પોતાની બહેનને મેનામાં એસારી પુરસ્કૃતને ઘેર લઈ ગયા. તેણે પણ લાખ રૂપીઆ લઈ તેને સુક્તા કરી. ત્યાંથી તેને લઈ સર્વ બંધુએ શેઠને ત્યાં ગયા. શેઠને નમસ્કાર કરી પોતાની બહેન તેને સોંપી. પછી શેઠને પણ

( २१६ )

श्रीमुपार्थनाथचरित्र.

निर्वाह भाटे कंडक धन आपीने तेओ। पोताना स्थानमां गया।  
हવे सुदर्शन पणु जुगार ऐलवामां हाथ, पग अने नाक मुळां  
गुभावी अडो। छेवटे जुगारना व्यसनथीज भरणु पाम्यो। भाटे  
हे दत्त ! जुनी माझक खडु हुःभद्रायक जुगारने समलु तेनो  
त्याग करवो। कारणु के तेनाथी कुण, शीण विगेरे गुणोनी साथे  
द्रव्यनो नाश थाय छे।

श्री मुपार्थ प्रभु घोट्या, हे दानविर्य ? रात्री लोजन कर-  
वाथी घण्टा दोपो प्रगट थाय छे। ते पणु हुं  
रात्रिलोजन. हवे सावधान थई सांसार ? आ लोक अने  
परलोकमां हुःख्तुं कारणु रात्री लोजन  
कहुं छे। वणी रात्रीचे राक्षसो करवा नीकणे छे तेथी अज्ञाहिक  
वस्तुओने तेओ। उचिष्ठ करे छे। अने ते उचिष्ठ करेलुं अज्ञ  
आवामां आवे तो ते आनाराच्यो पणु राक्षस समान थाय छे।  
भाटे सूर्यना किरण्याथी पवित्र अने कंचुआ, कीडीच्यो रहित एवा  
शुद्ध अन्तुं लोजन अतिथिनो विलाग कह्या बाढ हिवसे ज  
करवुं। वणी रांधेला अज्ञमां सूक्ष्म अने बाढर संपातिम लुवो  
खडु पडे छे। जेथी रात्रीलोजन करवामां खडु लुवोनी विराधना  
थाय छे। तेथी भारे पाप अंधाय छे। अने तेने लीघे संसार  
भ्रमणु करवुं पडे छे। संसार भ्रमणुमां महा हुःओ लोगववां पडे  
छे। भाटे पोताना लुवितनी भाझक सर्व लुवोनी रक्षा कर्वी।  
वणी ते लुव रक्षा जेया विना थई शक्ती नथी। तेमज ते दृष्टि-  
गोचर हिवसे थई शक्ते छे। रात्रीचे भरोभर जेई शक्तुं नथी।  
भाटे हिवसे पोतानी दृष्टिवडे सारी रीते निरीक्षणु ४२ लुव  
रहित पवित्र लोजन करवुं। सूर्योस्त पधी सर्वथा लोजनो  
त्याग करवो। वणी अज्ञानथी अंध अनेला अने पुण्य पापना  
सहभावथी मुक्ता थयेला जे मुळध पुडेओ। रात्री लोजनमां आसक्ता

દુષ્ક્રિયાની કથા.

( ૨૧૭ )

થાય છે તેઓ કુગતિમાં જાય છે. અશુદ્ધ અને અનાચારી પ્રેતોએ ઉચ્ચિષ્ટ કરેલું, તેમજ સાવધ અને વિષ સમાન તથા અનેક જીવોનો ધાત કરનાર એવા રાત્રી લોજનનો ડાઢા પુરુષો સર્વથા ત્યાગ કરે છે. દિવસ અને રાત્રીનો સમાન કાળ ગણ્યાય છે માટે જેઓ રાત્રી લોજન નથી કરતા તેઓ અર્ધ ઉપવાસી ગણ્યાય છે. વળી જે રાત્રી લોજનનો ત્યાગ કરી સો વર્ષ જીવે છે તે જાયાતમા પચાશ વર્ષના ઉપવાસનું ફળ મેળવે છે. અને તેથી તે જીવ સ્વર્ગ લોકમાં હેવાંગનાઓ સાથે સુખ લોગવી પુનઃ મનુષ્ય જાવમાં ઉત્પન્ન થાય છે. અને તે જાવમાં જૈન દીક્ષા અહંક કરી કર્મનો ક્ષય થવાથી છેવટે મોક્ષ સુખ મેળવે છે. આ પ્રમાણે સમજુને જે રાત્રી લોજન વ્રત પાળે છે તે સર્વદા સુખી થાય છે. અને જે પ્રાણી નિયમ લઈને ફરીથી રાત્રી લોજન કરે છે તે પ્રાણી સુલસની માઝક હુંઘી થાય છે.

અવંતી દેશમાં ચોગિનીના સુખ્ય રથાનભૂત ઉજાજયિની નામે નગરી છે. જેના રાત્રી અને દિવસો સમાન

**સિદ્ધરાજ.** સ્થિતિમાં ચાહ્યા જાય છે એવો મહાન પરાક્રમી સિદ્ધરાજ નામે રાજ તેમાં રાજ્ય કરે છે. વળી તે રાજ દિવસે ખીઓ સાથે અને રાત્રીએ ચોગિનીએ સાથે કીડા કરે છે. એમ કીડા વિલાસમાં અતિ આસક્ત હોવાથી તે રાજ ગત સમયને પણ જાણું નથો. એક દિવસ સિદ્ધરાજ પોતે રાત્રી ચર્ચા માટે બહાર નીકળ્યો. અને ફરતો ફરતો જાયંડર સમશાન ભૂમિમાં ગયો. ત્યાં જરૂર નિર્ભય મનથી ઉદ્ય સ્વરે યોદ્યો, હે ભૂત, પીશાચ, રાક્ષસ, યક્ષ અને ચોગિનીએ ! કાણુમાત્ર એકાથ ચિત્તે એક મહાદુર વચ્ચન તમે સાંલળો. હું સિદ્ધરાજ નરેંદ્ર પોતે તમ્હારી પ્રસિદ્ધ સાંલળી કોતુકવડે અહીં આં ચો છું, માટે તમ્હારી ઇંદ્ર સહિત તમે પોતપોતાનાં સ્વરૂપ

( २१८ )

श्रीसुपार्थनाथचरित्र.

अगट करे। एम सिद्धराजनुं वयन सांखणी तेज्याए भयं कर शण्डो साये कलकलाट करी मूँडये। तेमज तेज्याना पगना अहारोवडे क्षणुमात्रमां पृथ्वी पणु धुज्वा लाणी। अने ग्रेत मंडल श्रीटकार करवा मंडी गयुं। भूत टोणी पणु धुवडनी माझक हुंकरा करवा लाणी। तेमज घडभडाट हास्यने लीघे दिशाएने उंखल करता राक्षसो पणु खगलणी उठ्या।

तेज्यो मांथी एक असिताक्ष नामे यक्षराज ऐव्यो, अहो ! आ सुतेलासिं हुने केणु जगाडे छे ? भरज भाग-  
असिताक्षयक्ष. वा माटे पोतानी लुकवडे सर्पनी इष्णानो  
वारंवार डेणु स्पर्श करे छे ? यमपुरी  
समान भयं कर आ स्मशान भूमिमां आ प्रमाणे पोतानुं वाचा-  
लपणुं केणु प्रगट करे छे ? ते सांखणी राज ऐव्यो, अहे !  
आ प्रमाणे गर्व करवानुं तम्हारे शुं कारणु छे ? जे कोई पणु  
प्रकारनी तम्हारामां शक्ति होय तो हालमां म्हारी आगण तमे  
प्रगट करे। आ प्रमाणे राजनुं असद्य वयन सांखणी असि-  
ताक्ष यक्षे ऐ योजन प्रमाणनुं बहु उच्चुं पोतानुं स्वरूप प्रगट  
कर्युं। वणी कंठमां नरमुङ्ड माणा धारणु करीने हाथमां प्रयंड  
मुहूर्ग अने गहा लीधां, वणी हस्ती समान गंभीर गर्वक्षयथी  
दिशाएने गज्जंवी मूँडी। तेमज पोताना अहंकावथी कोईने  
नहीं गणुतो अने यारे तरइ पोतानुं अण विस्तारतो ते राजनी  
सन्मुख आ०यो। आ प्रमाणे यक्षनो चितार जोई सावधान थिं  
राज ऐव्यो, आ त्हारूं स्वरूप स्वाभाविक छे ? कै त्हें कोधने लीघे  
धारणु कर्युं छे ? वणी हे यक्ष ! आ स्वरूप जे त्हारूं स्वाभाविक  
होय तो तुं त्हारा स्थानमां याव्यो ज. कारणुके म्हारे जे जेवातु  
हतुं ते जेध लीधुं। केम्के देवताए देखवामांज सुंदर होय छे ते  
वात प्रसिद्ध छे। वणी जे कोधथी आ स्वरूप त्हें प्रगट कर्युं

हत्तमेहिनी कथा.

( २१६ )

होय तो होध करवानुं तहारे शुं कारणु छे ? अनेजे तुं एम कहेतो होय के म्हारा स्मशानमां तमे आव्या तेथी म्हारे होध करवो उचित छे. एम तहारूं भानवुं होय तो ते पछु घोटुं छे. कारणुके समुद्र पर्यंत पृथ्वीनो आधपति तो हुं छुं. माटे आ समस्त पर्वत, नगर, आम, अरण्य विगेरे ए सर्व म्हारूं छे. जे तम्हारे अहीं रहेवानी धृष्टा होय तो म्हुने कर आपीने सुणेथी तमे अहीं रहें. नहींतो म्हारी भूमिनी अंदर तम्हारे रहेवुं नहीं. जलही चाल्या जाओ. ते सांखणी सर्व भूत प्रेतादिक प्रकृपित थैर्ड घोल्या, हे राजन ! हालमां जलही हुं तहारूं शरण शोधी ले, अथवा धृष्टहेवतुं स्मरणु कर. एम कही असिताक्षयक्ष मुहगर उगामी राजने प्रहार करवा होयो. तेट्लामां राजन्ये एकदम स्तंलन विद्यावडे स्तंलनी भाईक ते यक्षने स्तंलित कर्यो. त्यारभाद अति विकराल अने अहलुत वेषधारी एवो ते भूत गर्जारववडे क्षुलित करतो राजनी आगण आव्यो. एटले सिद्धराजे मंत्रना प्रलावथी चोरनी माईक तरतज तेने पाणु बांधी हीधो. आ प्रमाणे सिद्धराजने प्रलाव ज्ञेई तेनो सर्व परिवार एकठो थयो अने राजनी स्तुति करवा लाग्यो. हे महाराज ! एमने खंधनथी मुक्त करे. कारणु के आप कहेशो ते प्रमाणे कर आपवा अमे तैयार धीमे. राज घोल्यो, आ असिताक्ष यक्ष आस म्हारे. अंगरक्षक थाय. वणी एक राक्षस म्हारे. छत्रधारक थाय. तेमज अन्य भूत पिशाचादिक हुंभेशां म्हारी आगण संगीत साथे नृत्य करे. ए प्रमाणे सांखणी तेओचे विनयपूर्वक राजना कह्या प्रमाणे समश आजानो स्वीकार कर्यो. त्यार भाद असिताक्ष तथा भूतने खंधनथी मुक्त उरी सिद्धराज रात्रीना छेव्ला प्रहरे प्रेतादिक सहित पोताना म्हेलमां गयो. तेट्लामां त्यां प्रलात सूचक पटह, ठेंग, लेरा, भूदंग अने शंभादक वालुंत्रोनो म्हान् शण्व थयो.

( २२० )

श्रीसुपार्थनाभवरिष्ट

प्रभात इपी हस्तीअे ऐच्छिकी अने चंद्र इपी पक्षीअे  
त्याग करेकी एवी रात्रि इप लतानां तासा  
सखामां संगीत. इपी उज्ज्वल पूष्पो क्षीणु थवा लाभ्यां.  
तेमज सूर्यना किरणु इपी मांजरने धारणु  
करतां दिशा इपी स्त्रीओनां सुख कमल शोभवा लाभ्यां. पछी  
सिद्धराज पोतानो प्राभातिक नित्य नियम करी यक्ष, राक्षस,  
पिशाचाहिकने साथे लाई सखामंडपमां विश्वजमान थयो. त्यार  
बाह भूत पिशाचाअे पोत पोतानां स्वरूप विकुर्वि समस्त  
सख्यजनो समक्ष विविधरचनावडे संगीत प्रारंभयुः. तेमां एक  
महा राक्षस वृद्ध वष्णुकनो वेष पहेळी हाथमां त्राजवां लाई नाचवा  
लाभ्यो. ते जेड राज्ञाअे पूछयुः तुं वृद्ध वाणीयानो वेष लाई  
केम नाचे छे ? त्यारे ते आव्यो हातमां तो हुं नृत्य कडं छुं माटे  
पछीथी हुं महारूप चरित्र आपने सांख्यावीश. एम कहीने नाचवा  
लाभ्यो, अनुकमे नृत्यनी समाप्ति थह. त्यार बाह पोतानी लहान  
बहार काढीने राक्षस क्षणु भाव मूर्धित थह गयो. पछी सावधान  
थह ते आव्यो हे नरेंद्र ? महारा नृत्यनु कारणु आप सांख्यो.  
पूर्वलवमां हुं लहाना दोषथी लैनधर्म पामीने पणु मनु-  
ष्यपण्यु हारी गयो. राज्ञ आव्यो हारी जवानु शुं कारणु ? तेना  
जवाबमां ते राक्षस आव्यो हे राजन् ? महारा पूर्वलव सांख्यो॥

आ नगरमां प्रसिद्ध शुणेनो आधार भूत धृश्वर नामे श्रेष्ठी  
प्रथम रहेतो हुतो. अने बंधुमती नामे  
राक्षसनो पूर्वलव. तेनी ओ हुती. तेओने सुलस नामे एक  
पुत्र हुतो. अनुकमे यैवन अवस्था पामेद्वा  
एवो ते सुलस स्वेच्छाचारमां इसाठ पख्यो. एक हिवस ते  
बहार इरवा नीकछयो हुतो तेवामां भावीस परीष्फ सहन करता  
एक मुनींद्र तेना जेवामां आव्या. एटले तरतज तेमनी पासे

हतशेषीनी कथा.

( २२१ )

ते गये अने वंहन करी अति मधुर देशना सांखणवा ऐडो। देशनानी अंहर रात्री लोजननी व्याख्या चालती हुती। तेमां रात्री लोजन करवामां होष अने नहीं करवामां शुब्रोतुं वर्णुन अहु विस्तारपूर्वक तेना सांखणवामां आऽयुं। तेथी तेणु पण्ड भद्रक भावने लीधे रात्री लोजन नहि करवानो नियम लीधे। परंतु सभ्यकृत्वाहि वृही धर्मनो तेणु स्वीकार कर्यो नहीं वणी ते सुलसने पिता ईश्वर श्रेष्ठी पण्ड पेताना पुत्रने शोधवा भाटे त्यां आव्यो हुतो। तेणु तो सभ्यकृत्वाहि श्रावकधर्म पण्ड मुनि पासेथी लीधे। पधी पिता पुत्र अन्ने जणु मुनिने नमस्कार करी पेताने घेर गया अने पेताना नियम प्रभाणु तेच्चो धर्म पाणवा व्याख्या, तेमज निरंतर धर्मना प्रभावथी मनोवांछित सुख तेच्चो अनुभवता हुता।

**एक दिवस अर्ध रात्रीना सभये सुलस पेताना भित्र साथे विटचर्चा ( जारकर्म ) वडे चौटामां जुगासुलसनो शिथित-** रना स्थानोमां इरतो हुतो। तेवामां तेना आचार। भित्रे घेअर, आज, विगेरे पकवान लावी सुलसने कहुं के आ पकवान तहारा भाटे लाव्यो छुं भाटे तुं लोजन कर। सुलस योऽयो, नारे भाई ? अत्यारे आ सर्व महारे अनुपयोगी छे। डारणु के हुं रात्रीलोजन करतो नथी। शुद्ध समक्ष महे रात्रीलोजननो नियम लीधे। छे। भाटे हे बांधव ? लोजन संबंधी महुने कंध पण्ड तहारे कहेवुं नहीं अने ते संबंधी हुवे योले तो तहने महारा सोगन छे। ते सांखणी ते उद्धृते कहुं के रात्री लोजन करवाथी शुं केणीच्चो कानमां जतो हुशो ? अने मुखमां नहीं जतो होय ? हीवाना प्रकाशथी सारी रीते कुंचुआ, किडीच्चो विगेरनो तपास करी छुव रहित मोहकादिक भित्रान जमवामां शो होष छे ? हे बांधव ? अत्यार

( २२२ )

श्रीसुधार्थनाथ चरित्रः

सुधी विशुद्ध लोकनथी तुं छेतराचो छे. कारणु के शत्री लोकन कामीपुरुषोने खडु आनंद दायक थाय छे. माटे आने तो महारा आश्रहथी प्रमदाचोनी साथे आनंदपूर्वक तुं लोकन कर. पर्ही विचार करी जेम तहने दृच्ये तेम तुं करजे. एम कही तेणु एक वैश्याने संकेत कर्यो एटले तेणीचे सुलसना मुळमां बणात्कारे भेदाकनो एक कडो मूळी हीधी. अने बाकीतुं सर्व पोते खाध गयो. त्यार बाढ हृभेशां रात्रीचे भित्रा साथे ते खबरमां इरतो हुतो अने पकवानतुं लोकन पाणु करवा लाग्यो. तेनी पाछण केटलीक चांडालिनीचो सुखवरे गायन करे छे, वगी केटलीक नृत्य करे छे. एवी रीते विलासकारी प्रमदाचो साथे ते सपार सुधी विलास करवा लाग्यो. तेमज कोइक वर्खत वैश्याचोने त्यां पणु सूर्य रहे छे. त्यांथी भध्यान्ह समये जागीने पोताना पिताने त्यां ज्ञाय छे. आ प्रमाणे सुलसनुं सर्व वृत्तांत तेना पिताना जाणुवामां आवयुं. एटले तेणु तेने खडु तिरस्कार आपीने कहुं के रे जाग्यडीन ? रात्रीलोकननो नियम पणु त्हें जाग्यो ? खडु ऐहनी वात छे के भनुष्य जन्म तुं हारी गयो. वगी शत्रुओनी सेवा करवी उत्तम छे, सुलटोना प्रहारथी भरवुं श्रेष्ठ छे. तेमज उच्ची जगावाथी व्याकुल एवा अग्निमां प्रवेश करवो. पणु उत्तम अण्याय छे. परंतु व्रतमां विक्ष करनार रात्रीलोकन करवुं ते उचित नथी. हे वत्स ? आ अपथ्य सेवन करवाथी तहने खडु पश्चात्ताप थशे. सुलस णाल्यो मात्र श्रावक विना अन्य सर्व दोङो. रात्री-लोकन करे छे. माटे तेओनो मार्ग छ्हें अहं श्रहणु कर्यो छे. तेथी आ संबंधी तम्हारे हवे महने कंध पणु कडेवुं नहीं. जेनी जेवी योग्यता हाय ते प्राणी तेवा अनर्थनो स्वीकार करे छे.

त्यार बाढ तेना पिताचे तेनो खडु तिरस्कार कर्यो. तेथी

દ્વારીણી કથા.

( ૨૨૩ )

**સુલસનું મરણુ.** લોજન કરવા લાગ્યો. તેમજ જાર પુરુષો સાથે સ્વચ્છ દાચારી થઈ અકૃત્યો પણ કરવા લાગ્યો. એક દિવસ કોઈ ઉત્તમ શ્રાવકધર્મમાં કુશલ એવા વસુ-મિત્ર સાથે પોતાનો બાળ મિત્ર જાણી સુલસ વિવાહ પ્રસંગે જનમાં ગયો. ત્યાં રાત્રીએ સર્વ લોકો ગામમાં ગયા. એટલે જનનો ઉતારો આપ્યો અને વેવાધિએ પૂછ્યું કે, આ જનમાં આવેલા લોકો માટે કેટલી રસોધ અમે કરાવીએ ?

ત્યારે તેઓ બોલ્યા અમે કોઈપણ રાત્રી લોજન કરતા નથી. ત્યારે સુલસ બોલ્યો, કે, હું તો રાત્રે પણ જમીશ. તેથી ન્હારે માટે હુધપાક, પુરી અને દાળભાત વિગેરે તૈયાર કરાવો. એટલે વેવાધિએ તેના કહેવા પ્રમાણે રસોધ તૈયાર કરાવી પરંતુ ઉકળતા હુધમાં અકસ્માતું ઉપરના ભાગમાંથી બહુ ધુમના ગોટાથી અકળાધ ગયેલો. એક સર્વ આવી પડ્યો અને તરતજ બહુ તાપને લીધે તેનાં સમય ગાત્ર ગળી ગયાં, કેથી આ વાત કોઈના જાણુવામાં આવી નહીં, લોજનનો સમય થયો. એટલે સુલસ આવીને પાઠલા ઉપર એઠો. હુધપાક વિગેરે સર્વ રસોધ પીરસાધ ગાધ, જમવાનો આરંભ કર્યો કે પ્રથમ આસમાંજ તેની લુલ દુકી પડી ગાધ, હાથમાંથી પાત્ર પડી ગયું. અંગોપાંગ શિથિલ થઈ ગયાં. અને મૂર્છિત થઈ તેજ આસન ઉપર પડી ગયો. તે જેણું પીરસનાર ખી પણ ગભરાધ અને તેણે બૂમ પાડી, તેથી ઘણ્યું લોકો ત્યાં દોડતા આવ્યા. પોતાના મિત્ર સહિત જનૈયાએ પણ આવી પહેંચ્યા. દીવાનો બહુ પ્રકાશ કરી થાળીમાં તપાસ કરી જેણું તો હુધપાકની અંદર રંધાધ ગયેલા સર્પના કકડા જોવામાં આવ્યા. એટલે સુલસનો મિત્ર બોલ્યો, કે વિષહારક રત્નમણું લાવો. તેમજ મંત્ર તથા તંત્ર વાઢી એવા ઉત્તમ ગાડિકેને

( २२४ )

श्रीसुभाष्यनाथवरितः

पण जलही ऐालावें, लोडे ते प्रभाणे उपचार करवा लाग्या.  
वणी पाणी साथे माणी धसीने तेना नेत्रो अने कानमां छट-  
छडाट छांटयुं. तेमज मंत्रवाहीओंचे पण पोताना अनता  
प्रयासे मंत्र तथा तंत्रोंनो उपचार कर्या. परंतु कोई पणु प्रकारनो  
शुष्क थयो. नहीं अने सर्वने जेतां ज ते तत्काल मरणु पाख्यो.

**सुलसनो भित्र अहु विलाप करवा लाग्यो.** हा ! हा ! हा !

भित्र ? म्हें ना पाडी हुती तो पण त्हें

**वसुभित्रनो रात्री लोजनमां आसक्त थई नियमनो.**

**विलाप.** भंग कर्या. तेथी त्हारी आ दशा आवी.

वणी उत्तम श्रावकनो पुत्र थई त्हें सह-  
शुद्धनी आज्ञानो लोप कर्या, तेमज नरसवमां उत्पन्न थई रसा-  
स्वादने लीधे जन्म गमावी आ प्रभाणे मरणु वश थयो. एम  
अहु प्रकारे विलाप करी तेणु तेना देहनो अभि संस्कार कर्या.  
त्यार बाद ते वसुभित्र विवाह उत्सवनो त्याग करी पोताने घेर  
आव्यो. वणी हे राजन् ! ते हुं वसुभित्रनो कुमित्र मरणु  
पाभी राक्षस थयो छुं. तेमज तम्हारो भंडारी अने झुरारा  
आस भित्र, एवा आ वसुभित्रने जेई पूर्वालवना स्नेहयी विलंग  
ज्ञानवडे म्हें झारूं पोतानुं चरित्र जाणी आपने निवेदन कर्युं  
हुवे आप आज्ञा इरमावी म्हने कृतार्थ करै. ते सांलणी राज्ञे  
वसुभित्रने पूछयुं के, आ आनुं ऐलवुं शुं सत्य छे ? वसुभित्र  
ऐलव्यो, स्वामिन् ! एनुं वयन वथार्थ छे. त्यारथाद लयलीत  
थई राज्ञे यक्ष, राक्षस विगेरेने विद्याय कर्या अने पोते पणु  
सुलसनुं चरित्र सांलणी रात्री लोजननो नियम लीध्यो.

हे दत्त ! आ उपरथी तुं पणु रात्री लोजननो त्याग कर  
करणु के रात्री लोजनमां अनेक दोष रक्षा

**दत्तनो नियम.** छ. लौकिक सिद्धांतमां पणु क्षुद्र छे के—

દત્તશ્રેષ્ઠીનીક્ષયા.

( ૨૨૫ )

નૈવાહુતિને વા સ્નાનં, ન આદ્ધદેવતાર્ચનમ્ ।  
દાનં વા વિહિતં રાત્રૌ, ભોજનં તુ વિશેષતઃ ॥

અર્થ—“રાત્રીના સમયે આહુતિ, સ્નાન, આદ્ધક્ષિયા, દૈવપૂજન અને વિધિપૂર્વક દાન કરવું નહીં. તેમજ લોજન તે વિશેષે કરીને કરવું જ નહીં.” વળી સમૃતિકારક પણ કહે છે કે—

દિવસસ્યાષ્ટમે ભાગે, મન્દીમૂતે દિવાકરે ।  
નક્કં તદ્ધિ વિજાનીયા, ન્નક્કં નિશિ ભોજનમ્ ।  
દિવસં પક્ષં માસં, ચાતુર્માસ્યાયનં ચ અબ્દં ચ ।  
યસ્તુ ન ભુંકે રાત્રૌ, કૃતપુન્યઃ સોડપિ કૃષ્ણમતે ॥  
નોદકમપિ પાતવ્યં, રાત્રાવત્ર યુધિષ્ઠિર ? ।  
તપસ્નિના વિશેષેણ, ગૃહિણાપિ વિવેકિના ॥  
સૂત્રોદિતેન વિધિના, કૃત્વા રાત્રયશનવર્જનં પ્રયતઃ ।  
યદિ ગ્રિયતે હિ મનુષ્યો, અનશનફલમેવમાળોતિ ।  
જાત્યકાચ્છનવર્ણમા, ઉદ્યદ્રવિસમપ્રમા: ।  
વૈમાનિકા: પ્રજાયન્તે, રાત્રિભોજનવર્જનાત् ॥

અર્થ—“ દિવસના આઠમા ભાગમાં સૂર્યનું તેજ મંદ થાય છે. ત્યારે નક્તા કાળ ગણ્યાય છે. તેથી તે વખતે લોજન કરવું નહીં, કારણ કે તે રાત્રી લોજન ગણ્યાય છે. દિવસ, પક્ષ, માસ, ચારમાસ, છમાસ અને એક વર્ષ પર્યાંત જે રાત્રી લોજન કરતો નથી તે મનુષ્ય વૈષ્ણવ મતમાં પૂરુષશાળી ગણ્યાય છે. વળી હે યુધિષ્ઠિર ! વિવેકી એવા ગૃહસ્થાશ્રમી અને વિશેષે કરી તપસ્નિએ રાત્રીએ પાણી પણ પીવું નહીં. જે સૂત્રમાં કહેલા વિધિ પ્રમાણે જે મનુષ્ય પ્રયત્ન પૂર્વક રાત્રી લોજનનો ત્યાગ કરો

( २२६ )

श्रीमुपार्थनाथयरितं

મરણુ પામે છે તો તે પ્રાણી અનશન કરવાનું ફેલ પામે છે. તેમજ રાત્રી લોજનનો ત્યાગ કરવાથી ઉત્તમ સુવર્ણ સમાન કાંતિવાળા અને ઉહ્ય પામતા સૂર્ય સમાન તેજસ્વી એવા વૈમાનિક દેવોમાં તે ઉત્પત્ત થાય છે. ” વળી જેએ આ વતને થહણુ કરી પશ્ચાત તેની વિરાધના કરે છે, અથવા અતિચારવાળું કરે છે, તેએ હુઃએ એધ કરવા લાયક કિલિબષિ દેવતાએમાં ઉત્પત્ત થાય છે. આ પ્રમાણે ઉપદેશ સાંભળી દત્તવણિકે રાત્રી લોજનનો નિયમ લીધો. માટે સુશ્રાવકોએ લોજનથી રાત્રી લોજનનો ત્યાગ કરવો અને કર્મથી અંગારાદિક વેપાર કર્મનો ત્યાગ કરવો. તેમજ દ્વિતીય ગુણુત્ત્વતથારી પુરુષે અતિ કઠોર કર્મનો પણ સર્વથી ત્યાગ કરવો ઉચિત છે. વળી લોગોપલોગથી વિરક્ત થયેલા, સ્વાધ્યાય, ધ્યાનક્રિયાએમાં તત્પર થયેલા અને ગુણુરૂપી રતનને ધારણુ કરતા એવા જે મુનિએ કૃપાયોથી શાંત થયા છે. તેઓને અનેકવાર નમસ્કાર. વળી હે દાનવિર્ય ! જેએ આ લોકમાં અતિચાર રહિત દ્વિતીય ગુણુત્ત્વત પણે છે તેએ હુંક સમયમાં સુરેંદ્ર લક્ષ્મીના લોગ પાત્ર થાય છે.

ઇતિમોજનતઃ કર્મતોડપિ સાતિવારં દ્વિતીય ગુણવતં સમાપ્તમ् ॥

—◆◆◆—

## વિમલશ્રાવકની કથા.

—◆◆◆—

### અતર્થદિવિરમણુત્ત્વત.

દાનવિર્ય રાજાએ પ્રશ્ન કર્યો કે હે દ્વારાસાગર ! હવે ત્રીજા ગુણુત્ત્વતનું સ્વરૂપ દૂધાંત સહિત સાંભળાયે, શ્રી સુપાર્થપ્રલુ ઓદ્યા, હે રાજન ! ઉપદેશ શ્રવણુ કરવામાં તું ખુલુ શ્રદ્ધાળુ છે. વળી તું ઉપદેશને લાયક છે. માટે સાવધાન થધ શ્રવણ કર. અતર્થને

વિમલનીકથા.

( ૨૨૭ )

માટે જે શાસ્ત્ર, અજિન, મુશલ ( સાંખેલું ) વગેરે ધાતક વસ્તુઓએ  
અન્યને આપવી અથવા અપાવવી તેને અનર્થદંડ નામે ગ્રીઝું  
ગુણુવત કહ્યું છે. તેમજ જે પ્રાણી જૈનમતમાં રક્ત થઈ ગ્રીઝું  
ગુણુવત અતિચાર રહિત પાણે છે તે વિમલ શ્રાવકની માફક  
સ્વર્ગ અને મોક્ષનાં સુખ મેળવે છે.

આ ભરત ક્ષેત્રમાં સુમનસ્ ( પંડિત-પુણ્યો ) થી ઉદ્ઘાસાય-  
માન તેમજ અનેક પ્રકારના વિલાસોની

**વિમલદષ્ટાંત.** શોભા જેમાં રહેલી છે, અને બહુ વિસ્તાર  
વાળા શાલ ( કિલ્લો-વૃક્ષો ) વડે સુશોભિત  
નંદનવન સમાન કુશલસ્થળ નામે નગર છે. તેમાં ભૂમંડલને  
આનંદ દાયક કુવલયચંદ નામે શ્રેષ્ઠી છે. શ્રીલગુણુસંપત્ત એવી  
આનંદશ્રી નામે તેની સ્ત્રી છે. તેને વિમલ અને સહદેવ નામે એ  
પુત્ર થયા. તેમાં વિમલ બહુ ગુણવાન્ત હતો. અને સહદેવ ફુરાચારી  
હતો. પરંતુ તેઓને પરસ્પર બહુ પ્રીતિ હતી. તેથી બન્ને  
રમવા માટે સાથે જય છે, અને લાણવા પણ સાથેજ જય છે.  
તેમજ વેપાર વિગેરે ફરેક કાર્યો સાથેજ કરે છે.

એક દિવસ બન્ને ભાઈઓ રથમાં બેસી ઉદ્ઘાનમાં ગયા,  
અને ક્રિલ પુણ્યો તેઓ વીણુતા હતા, તેવામાં

**મુનિદર્શાંન.** ત્યાં આંધાની નીચે એકેલા રતિના વિરહુથી  
કુશ થયું છે શરીર જેનું એવા કામહેવ  
સમાન એક મુનીદ્રને તેમણે જેયા. ત્યારણાદ તેમનું દર્શાન  
કરી બહુ આનંદ માનતા એવા તે બન્ને જણ્ણા મુનીદ્રના ચરણું  
કમલમાં વંદન કરી નીચે એડા. મુનિએ પણ ધ્યાનની સમાપ્તિ  
થયા બાદ ધર્મ લાલ આપ્યો. વળી કેએઓ મગના ઓસામણુને  
લાયક હોય તેઓને મિષ્ટાજનો આહાર હિતકારી થતો નથી.  
એમ જાણી મુનિએ તેમને લાયક ધર્મ દેશનાનો પ્રારંભ કર્યો,

( २२८ )

મીસુપાર્થનાથચરિત્ર.

જેમકે-હે લભ્યાતમાચો! દ્વા જેમાં મુખ્ય હોય તે ધર્મ કહેવાય, તેમજ જેની અંદર અધાર હોય ન હોય તે દેવ અને તત્ત્વોમાં કુશળતા જેમણે મેળવી હોય તે સહગુરુ કહેવાય. આ ત્રણ રત્નોને જ શિવમાર્ગ કહો છે. દરેક ટેકાણે ધર્મ એવા નામાદ્ધરીને સર્વ મનુષ્યો સાંકળે છે, પરંતુ તેઓમાંથી કેાઈકજ આત્માર્થી પ્રાણી પરમાર્થ જાણે છે. વળી હુર્ગતિ રૂપ નગરમાં પ્રયાણુ કરતા સમય પ્રાણીઓને અટકાવીને શુભ સ્થાનમાં લઈ જાય તે ધર્મ કહેવાય. તેમજ જેનું સેવન કરવાથી સમસ્ત જીવાત્માઓ સ્વર્ગ અને મોક્ષનું સુખ મેળવી શકે તે ધર્મ કહેવાય. વળી બિનન બિનન શાસ્ત્રોને લીધે હર્ષનકારોએ વિવિધ પ્રકારનું ધર્મ સ્વરૂપ કહ્યું છે. પરંતુ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત જે હોય તે ધર્મ મુખ્યતાચે બુદ્ધિમાન પુરુષોએ અહૃણુ કરવો. વળી ગામાંતર જતા પુરુષને ગામાંતર જવાના બહુ રસ્તાઓ આવે છે પણ તે અન્ય માર્ગોનો ત્યાગ કરી જેમ સુગમમાર્ગ જાય છે. તેમ બુદ્ધિમાન પુરૂષ બહુ પ્રકારના ધર્મો હોવા છતાં પણ મોક્ષનગરના હેતુરૂપ ધર્મને સ્વીકારે છે. જેમ બુદ્ધિહીન મૃગલાઓ તૃપાને લીધે ક્ષાર ભૂમિમાં જલ બુદ્ધિ માને છે, તેમ અવિવેકી પ્રાણી અધર્મમાં પણ બુદ્ધિ માને છે. વળી જે પ્રાણીનાં નેત્ર વિવેકરૂપ અંજનથી પ્રકુષ્ટ થાય છે તે પુરૂષ પૂર્વાપર વિચાર કરી સદ્ગર્મને અહૃણુ કરે છે. જેમ જીવરહિત દેહ કાર્ય સાધી શકતો નથી તેમ સર્વોત્તમ દ્વાવિના ધર્મની સિદ્ધિ થતી નથી વળી તે દ્વા જૈન ધર્મમાં જ રહેલી છે. એમ જાણી તમે જૈન ધર્મનું જ આચરણ કરો. અને તેજ પ્રમાણે ધર્મનું સ્વરૂપ હું કહું છું તે તમે સાવધાન થઈ શ્રવણ કરો. રાગ દ્રેષથી ઉત્પન્ન થયેલા એવા સમય સાંસારિક દોષથી મુક્ત થયેલા અને ચોત્રીશ અતિશય વડે વિલૂષિત એવા જીનેંદ્ર જગતાનું છે. તેમજ ત્રણ ગૌરવનો

વિમલનીકથા.

( ૨૨૬ )

જેમણે ત્યાગ કર્યો છે, ત્રણ શુભિઓના રક્ષણ કરનાર, ઈંદ્રિયો  
જેમણે વશ કરી છે, મમતવનો જેમણે ત્યાગ કર્યો છે, વિધિ  
પ્રમાણે વિહાર કરવાવાળા, મધ્યસ્થ વિગેરે વિશુદ્ધ શુણોના  
આધારભૂત, સતતશાલી અને ગીતાર્થ એવા જે શુરૂઓ હોય  
છે, તેઓને આ સંસારસાગર તરવામાં નાવ સમાન ઉપકારો  
કહ્યા છે. આ પ્રમાણે મુનીદ્રનું વચન સાંભળી હૃષ્કર્મ દૂર થવાથી  
વિશુદ્ધ પરિણામને ધારણ કરતા એવા તેઓના હૃદયમાં દેવ,  
શુરૂ અને ધર્માર્પી ત્રણ રતન સ્થિર થયાં.

ત્યારખાદ હુર્ધર એવા મુનિ ધર્મની ધુંસરી વહન કરવામાં  
અશક્ત હોવાથી તે અન્ને જણે સમ્બન્ધત્વાદિ

**ધર્મસેવન.** બાર પ્રકારના શ્રાવક ધર્મનો સ્વીકાર કર્યો.

વિશેષ પ્રકારે ત્રિજ શુણુતતનું સ્વરૂપ  
તેઓના પૂછવાથી મુનિએ ચારે પ્રકારના લેદ સહિત સંભ-  
ળાવ્યું. તે પ્રમાણે પોતે સમજુને શુરૂને નમસ્કાર કરી અન્ને  
શાધારો પોતાને ઘેર ગયા. ત્યારખાદ આર્ત્થાન તથા મધ્યાદિ  
પાંચ પ્રકારનો પ્રમાદ તેઓ સેવતા નથી. તેમજ શાસ્ત્ર કોઈને  
આપતા નથી. સાવદ ઉપરેશ પણ કોઈને આપતા નથી. તે  
અન્નેમાં વિમલનો સ્વભાવ બહુ સરલ હતો અને સહદેવનો સ્વભાવ  
ઘણો ચંચલ હતો. તેમજ કીડા કરવામાં તે બહુ બોલુપ  
હોવાથી ધર્મમાં બહુ પ્રમાદી થયો.

એક દિવસ તે અન્ને લાઈએ ઉત્તમ કરીયાણું લઈ પૂર્વ  
હેશમાં વેપાર માટે નીકળ્યા. અર્ધ માર્ગ

**પથિકનો.** ચાલતાં એક પથિક મળ્યો. તેણે વિમલને

**સમાગમ.** પુછ્યું લાઈ ! સિદ્ધો, કાંટાવિનાનો, ધાર  
પાણી અને કાણ વિગેરે જ્યાં સુલભ હોય

તેવો માર્ગ અમને બતાવો. ધર્મકાર્યમાં દક્ષ એવો તે વિમલ

( २३० )

શ્રીસુપાર્થનાથચરિત્ર.

ઓલયો, માર્ગ સંબંધી કોઈપણ હકીકત અહારા જાણુવામાં નથી. ફરીથી પથિકે પૂછ્યું હે શોઠ ! તમે કયે ગામ જાઓ છો ? વિમલ ઓલયો, જ્યાં કરીયાણું મોંઘા ભાવે વેચાશે ત્યાં અમારે જવું છે. વળી ફરીથી પથિક ઓલયો, શોઠળ ! આપ કયા નગરમાં રહેણો છો ? મહેરભાની કરી આપના નગરનું નામ તો કહો. પછી વિમલ ઓલયો, રાજધાનીમાં અહારનું નગર નથી. પથિક ઓલયો, હું પણ આપની સાથે આવોશ. ત્યારે વિમલ ઓલયો, એમાં અમે શું કહીએ ? જેવી તમહારી ઈચ્છા, તે સાંભળી પથિક પણ તેની સાથે ચાલતો થયો. આગળ ચાલતાં એક નગર આવ્યું. તે નગરની ખહાર અંડ ઉદ્ઘાનમાં તેઓએ સુડામ કર્યો. અને રસોઈ માટે અગિન સળગાંયો, એટલામાં એટલાક નોકરોએ પાણી વિગેરે જામણી પણ તૈયાર કરી. ત્યારબાદ પથિકે રસોઈ માટે વિમલનો પાસે જણ અગિન માંયો. એટલે વિમલે કહ્યું લાદ ! તમ્હે અહીં જમને પરંતુ અમે કોઈને હેવતા આપતા નથી, કારણે અગિન વિગેરેના હાનનો શાસ્ત્રમાં નિષેધ કર્યો છે. જેમકે—

ન ગ્રાહાણિ ન દેયાનિ, પચ્ચ દ્રવ્યાણિ પણ્ડિતો : ।

અગિનર્વિષં તથા શાસ્ત્રં, મદ્ય માંસં ચ પચ્ચમમ् ॥

અર્થ—“ અગિન, વિષ, શાસ્ત્ર, મદ્ય અને માંસ એ પાંચ વસ્તુઓ પંડિત પુરુષોએ લેવી નહીં તેમજ આપવી પણ નહીં.” આ પ્રમાણે વિમલનું વચ્ચેન સાંભળી કોધિની માઝક તે ઓલવા લાગ્યો. રે ધૂષ ! પોટા! ધર્મનો આડંબર કરનાર, હે મૂઢ ! અહારી આગળ આ પ્રમાણે અસત્ય ઓલતાં તું લજવાતો નથી ? વળી આવી રીતે ઓલતાં તહુને કંઈપણ વિચાર નથી આવતો ? એમ કહી તેણે પોતાનું શરોર એટલું બધું વધાર્યું કે તેના ભયને લીધે આકાશ પણ ઉચ્ચું ગયું લોય તેમ જાણ્યું અને તેવા

વિમલની કથા.

( ૨૩૧ )

પ્રકારની અહિસુત આકૃતિ જેઠને સર્વ દોડો ભય પામી ત્યાંથી નારી ગયા. ત્યારબાદ તે પથિક વિમલને કહું કે જે તહારે લુષ-વાની ઈચ્છા હોય તો મહુને અજિન આપ. કારણું મહુને બહુ ભૂખ લાગી છે. માટે અજિનમાં મનુષ્યતું માંસ રાંધીને હું લોજન કરી તુસ થાઉં. વિમલ એલ્યો, જેમ તહને ચોગ્ય લાગે તેમ કર. કારણું આ હુનીયામાં હરેક જન્મેલાં પ્રાણીઓનું મરણ તો જરૂર થવાનું છે એમાં કંઈ સંદેહ નથી. વળી નિયમનો લંગ કરવાથી અવશ્ય ધર્મનો નાશ થાય છે. અને ધર્મનો દોપ થવાથી હળવો લવમાં અનેક હુંએ ઉત્પન્ન થાય છે. પરંતુ નિયમવાળા પ્રાણીનું મરણ થવાથી તેને કિચિંત્ર માત્ર પણ હુંએ થતું નથી. માટે તહારે જેમ કરવું હોય તેમ કર. પરંતુ મહારા નિયમનો લંગ હું નહીં કરું.

**આ પ્રમાણે વિમલનું ઘેર્ય જાણી વિકરાળ સ્વરૂપનો સંહાર કરી પોતાનું દીવ્ય સ્વરૂપ પ્રગટ કરી તે ટીવ્યસ્વરૂપ.** પથિક એલ્યો, હે મહાશય ! તહને ધન્ય છે.

તહારો મનુષ્ય ભવ પણ સઝળ છે. દેવ સભામાં દેવોની મધ્યે શકેંદ્ર તહારી સ્તુતિ કરતો હતો કે, વિમલ આવક ધર્મમાં બહુ દુદ છે. અને ત્રીજા ગુણુત્તત્વથી તહેને ક્ષુલિત કરવાને દેવ અથવા દાનવ પણ સમર્થ નથી. તે સાંસણી મહુને અશ્રદ્ધા થઈ. તેથી હું તહને ચલિત કરવા માટે અહીં આંદ્યો છું. મહેં તહને બહુ પૂછ્યું તો પણ તું તહારા નિયમથી ચલિત થયો નહીં, માટે હું તહારો ઉપર તુષ થયો છું. તેથી તહારી ઈચ્છા પ્રમાણે તું વરદાન માગ. વિમલ એલ્યો મહારા નિયમની પરીક્ષા માટે તહેં આ પ્રયાસ કર્યો તેમજ તહેં તહારું દીવ્ય સ્વરૂપ પ્રગટ કર્યું તેથી મહુને સર્વ મળી ચૂક્યું છે. પરંતુ એટલી મહારી પ્રાર્થના છે કે, ધર્મમાં સારી રીતે તું પ્રવૃત્તિ કરજે. વળી વણ્ણા દોડો તપ-

( ૨૩૨ )

શ્રીસુપાર્થનાથબક્તિ.

શર્યા કરે છે. તેમજ મંત્રાહિક વિધાઓનો જ્યુ કરે છે, તોપણું ડોઈ વિરલાઓનેજ દેવતાઓ દર્શન આપે છે. ત્યારખાદ દેવ ઘોલ્યો ને કે તહારે ડોઈ પ્રકારની ધૂચાન નથી તોપણું રહ્યે આ એક દીવ્ય મણિ હું આપું છું. તેનો તું કૃપા કરી સ્વીકાર કર. વળી આ મણિનો પ્રકાર એવો છે કે, તેની સાથે ધસેલા જગના રૂપર્થથી દરેક સર્પનું વિષ ઉત્તરી જય છે. એમ કહી વિમલની ધૂચા નહોંતી તોપણું બળાત્કારે રહેના ઓઢવાના વસ્તુ સાથે તે મણિને બાંધીને તે દેવ સ્વર્ગમાં ગયો. અને શહેરની આગળ તેણે સર્વ વૃત્તાંત નિવેદન કર્યું.

**વિમલશ્રેષ્ઠીએ** પણ ભૂમ પાડીને સહદેવ વિગેરે નારી ગ-

એલા સર્વે લોકેને પોતાની પાસે ઘોલાંયા.

**નગરમાં પ્રવેશ.** તેઓ પણ તેનો શબ્દ સાંભળી તેની પાસે આંયા. અને; પથિકનું વૃત્તાંત પૂછવા લાગ્યા.

એટલે વિમલે વિસ્તારપૂર્વક પથિકની વાર્તા કહી. તેથી તેઓ બહુ ઝુશી થયા. પછી તેઓએ લક્ષ્ણિવડે જુનેંદ્ર લગવાનને વંદન કરી મુનિ મહારાજનાં દર્શન કર્યાં બાદ પોતાના પરિવાર સહિત લોજન કર્યું. ત્યારખાદ ત્યાંથી સુકામ ઉડાવી નગર તરફ ચાહ્યા, અને દરવાનમાં તેઓ પ્રવેશ કરતા હતા, તેટલામાં વાણીયાએ પોતપોતાની હુકનો બંધ કરી ઉતાવળથી તાળાં દેતા હતા, તેનો અડખડાટ તેઓના સાંભળવામાં આવ્યો. વળી એક તરફ સજજ કરેલા ઘોડાઓ જેવામાં આવ્યા તેમજ અનેક સુભાટોવડે સુશોભિત રથ અને ચારે તરફ ફરતા અને તૈયાર કરેલા ફસ્તિએ પણ તેઓને દેખાવા લાગ્યા. શસ્ત્રધારી અનેક સૈનિકો સહિત સેનાપતિ પણ પોતાનો કાર્યક્રમ દર્શાવી રહ્યો હતો. તે જોઈ વિમલે ડોઈક નગરવાસીને પૂછ્યું. ભાઈ ! અહીંઓ શું છે ? આ સર્વે લોકો નગરની અંદર શામાટે ખળલળી ઉઠ્યા છે.

વિમલની કથા.

( ૨૩૩ )

વળી આ સર્વે લોકો હુકાનો કેમ બંધ કરે છે ? આ નગરના દરવાજા કેમ બંધ કર્યો છે ? તેમજ આ સુખટો કિંદળા ઉપર કેમ ઉભા રહ્યા છે ? શું સ્વરાજ્ય કે પરરાજ્ય અથવા તે બન્નેથી કંઈ જય થયો છે ? કિંવા રાજને કંઈપણ હૈવી આપની આવી પડી છે ?

ત્યારબાદ તે નગરવાસી પુરુષે વિમલના કાનમાં કલ્યાં કે આ નગરમાં ત્રણ લોકમાં વણ્યાત એવો પુરુષો કુમારને સર્પદંશ. તામ નામે રાજ છે, ઇપમાં આમદાવ સમાન અરિમહલ નામે તહેને એક પુત્ર છે. તે પોતાના શયન ગૃહમાં સુતો હતો. તેવામાં તહેને એક હૃષ સર્પ કરડયો છે. તે જોઈ તેની સ્ત્રીએ પેઢાર કર્યો. તેથી તહેનો પરિજ્ઞન ત્યાં આવી પહોંચ્યો. અને તપાસ કર્યો તેટલામાં તે સર્પ કોઈપણ ડેકાણે નાશી ગયો, આ વાત રાજના સાંભળવામાં આવી કે તરતજ તે પણ ત્યાં આવ્યો. અકર્તમાતુ મડદા સમાન પોતાના પુત્રને જોઈ તે મૂર્છિત થઈ ગયો અને પોતાના પુત્રના પ્રાણનું હરણ કરનાર એવા તે સર્પની પાછળ જવા માટે તેનું અનુકરણ કરતો હોય ને શું ! તેમ તે પૃથ્વી ઉપર આણોટવા લાગ્યો. તેમજ પોતાની રાખ્યીએ અને નગરના લોકો પણ અતિ કંઈપુણું સ્વરે રૂદ્ધ કરવા લાગ્યાં. તેમજ મંત્રીએ દરેક સ્થાનેથી મંત્રવેદી લોકોને બોલાવ્યા. તેઓએ પણ જલદી ત્યાં આવીને પોતપોતાના મંત્ર તંત્રના પ્રયોગ કર્યો પરંતુ તેથી વિષ ઉત્તરવામાં કંઈપણ ઝાયદો જણ્ણાતો નથી. વળી જળાદિકના શીતોપચારથી રાજ પણ મહામુશીભતે સ્વસ્થ થયો છે. અને પ્રધાનાદિકને કહેવા લાગ્યો કે જો કોઈપણ પ્રકારે આ કુમારનું મરણ થશે તો હું તેના પહેલાં ચિતામાં પ્રવેશ કરીશ. એવો મહારો નિશ્ચય છે. એમ તમે સર્વે જાણો. આ પ્રમાણે રાજનું વચન સાંભળી સર્વે લોકો

( २४ )

श्रीसुपार्थनाथचारणः

ગલરાઈ ગયા. અને અનેક ઉપયારો કરવા લાગ્યા વળી રાજાએ પણ નગરમાં આ પ્રમાણે પટહદોષણું કરાવી છે કે ને કુમારને સળવન કરે તેણે અધું રાજ્ય આપવું.

તે સાંભળી સહદેવે વિમલને કહું કે ઢીક છે તમે ઉપયાર કરો. આપણી પાસે દેવતાએ આપેદો મણિ મણિનો પ્રભાવ. છે તેને પાણી સાથે ધસીને તે પાણી છાંટો જેથી કુમાર સળવન થશે અને આપણને અધું રાજ્ય મળશે. વિમલ યોહ્યો લાઈ! આ મહોટા પ્રમાણુવાળા પરિશહુનો આશ્રય કરવો આપણુને યોગ્ય નથી. વળી દોષતું સુખ્ય કારણુભૂત આ રાજ્યનું પણ આપણે શું પ્રયોજન છે! એ પ્રમાણે વિમલનું વચન સાંભળી સહદેવ યોહ્યો તમે રાજ્ય મેળવીને આપણું કુદુંબનું દરિદ્ર જલદી ફર કરો. તેમજ રાજકુમારને જીવતો કરી મણિ રલનું માહાત્મ્ય પણ આપણે નેછાયે. વળી કોઈપણ પ્રકારે આ રાજકુમાર સળવન થશે તો ધર્મ પણ પામશે. એમ સહદેવનું વચન સાંભળી વિમલ મૈન રહ્યો. એટલે સહદેવ વિમલના વખ્ટની ગાંડ છોડી મણિ લઈ લીધો. અને બહુ ઝુશી થઈ તેણે ધોષણું કરતા નગારનો સ્પર્શ કર્યો. તેથી રાજ-પુરુષો તેને રાજકુમાર પાસે લઈ ગયા. પછી સહદેવ પાણીમાં મણિ ધસીને કુમારને છાંટ્યું કે નિદ્રામાંથી જાથત થયેલાની માઝે તે કુમાર દિશાઓમાં દશ્ટ ફેરવવા લાગ્યો, અને પોતાની પાસે ઉલેલા સર્વ લોકોને નેછ પોતાની માતાને તેણે પૂછ્યું, કે, આ સર્વ લોકો અહીં એમ આવ્યા છે! પછી હર્ષને લીધે અશુદ્ધારાને વહુન કરતી એવી તેની માતાએ વિસ્તારપૂર્વક સર્વ વૃત્તાંત નિવેદન કર્યું.

ત્યારખાં સહદેવને અધું રાજ્ય આપવા માટે રાજાએ પ્રાર્થના

વિમલની કથા.

( ૨૩૫ )

કરી. એટલે સહૃદેવ બોલ્યો હે રાજન! વિમલ અને રાજા-વિમલ નામે ભારે મહાઠો લાધ છે તેના ની મુલાકાત. પ્રલાવથી આ કુમાર સજીવન થયો છે. વળી તે પોતાના પરિવાર સહિત ચૈટામાં બેઠો છે. માટે તેને અહીં જઈ બોલાવો. અને તેના ઉપર તમે આ પ્રસાદ કરો. પછી રાજ પોતે સહૃદેવની સાથે હાથી ઉપર બેસી ત્યાં ગયો. અને વિમલને જેઠ હાથી ઉપરથી નીચે ઉતરી તેને લેટી વિનયપૂર્વક બોલ્યો. હે પરોપકારો ! અતિહીન અવસ્થામાં લુઠા એવા મહુને તહેં પ્રાણુભિક્ષા આપી છે. માટે કૃપા કરી મહારં આંગણું તમે પવિત્ર કરો. એ પ્રમાણે રાજ વિનયપૂર્વક જેમ જેમ પ્રાર્થના કરે છે તેમ તેમ વિમલના હૃદયમાં શરૂયની માર્ગીક વત સંખાંધી અતિચાર સ્કુરે છે. પછી વિમલ બોલ્યો હે નરાધીશ ! આ ઉપકાર તો સહૃદેવનો છે, માટે જેમ આપને યોગ્ય લાગે તેવી રીતે તમે તેનો સતકાર કરો. ત્યારખાદ રાજએ વિમલનો હાથ પડ્યો તેને હાથી ઉપર બેસાર્યો. અને પોતાના મહેલમાં લઈ ગયો. બાદ અન્ય લોકોને વિહાય કરી સહૃદેવ સહિત વિમલને સ્નાનાદિક કરાવી લોજન કરાયું, પછી પાન સોપારી સુખ-વાસ થયા. બાદ રાજએ વિમલને કલ્યું કે પોતાના પૂજ્યબળથી પ્રાસ થયેલું એવું આ અર્ધ રાજય તમે બહુણું કરો. બાદ વિમલ બોલ્યો. આટલું મહેલું શાસન અમને યોગ્ય નથી. કારણું અંશ માત્ર પણ રાજ્ય અમને કદ્યે નહીં તો સમૃદ્ધિ ચુક્તા અર્ધ રાજ્ય કેમ કદ્યે ! કેમકે જેની અંદર એક તો પ્રથમ પ્રચંડ કાર્ય કરવાનાં અને ઝીલ તરફ નિયમથી અધિક લક્ષ્મીના લોગરૂપ પાંચમા વતનો અતિચાર લાગે માટે રાજ્યનું અમારે કંઈપણ પ્રચોકન નથી.

ત્યારખાદ સહૃદેવની ધૂઢ્યા બાળી રાજ બોલ્યો હે સહૃદેવ !

( २३६ )

श्रीसुपार्थनाथचक्रित्

अमारा नलुकनो उपकारी तो तुं छे भाटे  
राज्यदान. आ अर्धा राज्य अमारा क्ष्या प्रमाणे तुं  
 अहंषु करे. सहृदेव ऐवयो आपतुं वयन  
 सत्य करे. राज्ये भेल, रथ, घोडा अने हाथी विग्रेनो विकाग  
 करी ते सर्वे सहृदेवने अर्पणु कर्युः. अने विमलनी धृच्छा नहोती  
 तोपथु तेने नगरशेठनी पहवी आपी. त्यारभाद तेओये पो-  
 ताना भातापिताहिं परिवारने पोतानी पासे ऐलावयो. आद  
 विमल पोते धर्म कार्यमां हिवसो निर्गमन करी आत्मसाधन  
 करतो हुतो. हुवे राज्य, देश अने विषय सुणमां लुण्ध थर्म सहृदेव  
 निरंकुशपथु भविन कार्यमां निष्कुर थई गयो. अने पोताना  
 गामोमां द्वाज्वल पडेली जमीनने शोडा कर लई ऐडाववा लाग्यो.  
 तेमज चोरोपासे धाड पडावी परराज्यनां गामडांओ लुंटावे  
 छे. अने केटलांड गामडां भागी नंभावे छे. वणी पोताना राज्ये  
 हुष्ट उपहेश आपे छे के आ लोडो. बहु धनवान् छे तेथी तेओने  
 दंडादिकथी क्षीणु करवा जेईये. अने बीज करे. पछु वधारवा  
 जेईये. आ प्रमाणे सहृदेवनुं हुष्ट चरित्र जेई विमले तेने  
 एकांतमां ऐलावीने कहुँ के त्हें पोतेज अनर्थ दंडो  
 नियम लीधो छे छतां तेमां तुं अतिचार केम लगाउ छे ? वणी  
 विशेषमां एटहुँ जाणुवु जेईये के मनुष्य लवमां एक तरक्के  
 प्राणीओना शरीरने विकराण वाधेणुनी माझक धुर्धर शण्ठ करी  
 जरा दृपी राक्षिणी कोधायमान थई वण्गे छे. त्यारे बीजु तरक्के  
 दारणु हुःभद्रायक व्याधियो सुंहर देहमां डाकिनीनी चेठे हुम्मेशां  
 आनंदपूर्वक नृत्य करे छे. तेमज लयंकर मरणुदृपी महा राक्षस  
 जता, आवता, भाता, पीता अने सूतेला एवा प्राणीओतुं  
 छल हुम्मेशां शोध्या करे छे. वणी धन, जुवित अने बंधुओनो  
 विनाश करवामां समर्थ एवा बीज पछु धण्डा उपरवो प्राणी

વિમલનીક્ષા.

( ૨૩૭ )

માત્રની સમીપમાં સહાકાળ રહ્યા છે. માટે હે અન્ધુ ? પરભવમાં જો તને સુખની ઈચ્છા હોય તો બહુ હુલ્લિલ એવી અનર્થ હંડ વિરતિને તું ફૂષિત કરીશ નહીં. હવે આથી વધારે શું કહેવું ? તે સાંસણી સહૃદેવ ઓછ્યો. જો હું આ પ્રમાણે રાજને ઉપરેશ ન આપું તો જરૂર આ રાજ મુહારો ઉપર કોધાયમાન થાય. વળી તહારો આ ઉપરેશ તો જળથી ભરેલા ઘડાની ઉપર પડતી એવી જલધારાની માઝક બહાર ક્રિયા કરે છે. એનાથી મહને કંઈ પણ અસર થવાની નથી. આ પ્રમાણે સહૃદેવનો નિશ્ચય જાણું વિમલે. તે વિષયમાં મૈનભાવ સ્વીકાર્યો. ત્યાર બાદ સ્વચ્છંહ પ્રવૃત્તિને લીધે સહૃદેવ વિરતિથી રહિત થયો. અને જૈનગતમાં શ્રદ્ધાળીન થર્થ ગયો. તેમજ બહુ ઝૂર એવા અનર્થ હંડ પોતે કરવા લાગ્યો. અને અન્યને ઉપરેશ આપી તેની ચોજના કરવવા લાગ્યો. એક હિવસ નિરર્થક ડોઈક પુરુષને બહુ હુઃખી કરી તેનું સર્વ ધન પોતાને કરું જે કરી તેને છોડી મૂક્યો. પછી બહુ કોધાયમાન થએલા એવા તે પુરુષે લાગ શોધીને અધમી એવા તે સહૃદેવને ઠાર મારી નાખ્યો. અને તે પ્રથમ નરકભૂમિમાં ઉસ્ત્ર થયો. ત્યાંથી નીકળી કેટલીકબાર સંસારમાં અમણુ કરી અનેક હુઃખો અનુભવી છેવટે દીક્ષા લઈ સમાધિપૂર્વક સકળકર્મનો ક્ષય કરી તે મોક્ષ સુખ પામશે. વળી વિશુદ્ધ પરિણામી વિમલશ્રેષ્ઠી અસ્થિલિત રીતે ગૃહિધર્મનું પાલન કરી વિધિપૂર્વક પરલોકના માર્ગની આરાધના કરી સર્વ સુખ પામ્યો. માટે હે અભ્યાણીઓ ? જેવી રીતે વિમલશ્રેષ્ઠીએ નિરતિયાર આ પ્રત પાછયું તેવી રીતે અન્યજનોએ પણ નિરંતર પાળવું જોઈએ.

॥ ઇતિ શ્રીતૃતીમયગુણવતપરિપાલને વિમલ-  
વૃષ્ણાન્તઃ સમાપ્તઃ ॥

૨૫ @ ૯૬

( २३८ )

श्रीसुपार्खनाथयरित्रः

## मित्रसेननी कथा.

### प्रथमकंहपैत्सर्पणवचनातियार.

दानविर्य राज आद्यो हे लगवन् ? हुवे ग्रीष्म शुखुव्रतमां प्रथम अतियारत्नुं लक्षण्य क्षेत्र, श्री सुपार्खप्रभु आद्या हे राजन् ? ग्रीष्म शुखुव्रत धारण्य करी ने पुरुष कामेहीपक वचन आदे छे ते मित्रसेननी भाइक संसारमां वारंवार जन्म धारण्य करै छे.

बहु सुंदर पर्व ( गंडेरी-उत्सवना द्विसो ) वडे मनेहुर, प्राणियोना हुद्यने आनंद आपनार, अने

**मित्रसेनकथा.** गाठ रसवडे उत्कृष्टता पामेली शैलडीनी लाडी समान प्रीतिकारक अयोध्या नामे नागरी छे. तेमां ईक्षवाकु राज्योना वंशमां उमज्ज थयेदो, चांद अने भोगराना पुण्य समान उज्ज्वल छे क्षीर्ति केनी अयोज्ययंद नामे राज छे. प्रियदर्शना नामे शुद्धशीलवती तेनी मुख्य राणी छे. चांद नामे तेने एक पुत्र छे ते धर्मकार्यमां बहु मंद छे. वणी ते राजने सेननामे पुरोहित छे अने मित्रसेन नामे तेनो पुत्र छे. हुवे चांदकुमार वंसतद्वतुने लीषे एक द्विस मित्रसेन साथे उद्यानमां झरवा गयो त्यां ईलायचीना वनथी विलूषित कीडा शैलनी एक सुंदर शिला उपर ऐठेला महा तपस्वी अने सर्व संगथी विमुक्ता अवा एक मुनीद्वनां तेने दर्शन थयां. आ म्हेटो योगी छे एम आकृति उपरथी अनुभान करी ते बन्धे ज्ञेते भने नमस्कार कर्यो. मुनिये धर्म लाल आपी तेओना हित भाटे धर्म देशनानो ग्रारंभ कर्यो. हे लव्यात्माचो ? नेम नद्दस्थलमां कमलोथी विलूषित सरोवर अने दरिद्रीने त्यां चिंतामणि रत्न छर्वक्ष होय छे तेम आ संसारमां जैनधर्म सहित भनुध्य भव

મિત્રસેનનીકથા.

( ૨૩૬ )

પામવો ખહુ હુર્દિલ છે. વળી તે ધર્મ રાગ દેખાદિકથી મુક્તા થયેલા જીને દ્રલગવાને ત્યાગી અને ગૃહસ્થના લેદાંડે એ પ્રકારને કહ્યો છે. તેમજ દ્રશ તથા ભાર પ્રકારે પણ વર્ણાચ્ચો છે. એમ કહી પોતે પણ યથાર્થ દરેક લેદાનો ઉપહેશ આપ્યો. તે સાંભળી મુનિધર્મ પાળવાને અશક્ત હોવાથી તે ખજેજણે સાથે ગૃહસ્થ ધર્મનો સ્વીકાર કર્યો.

એક દિવસ મિત્રસેને કુમારને એકાંતમાં કલ્યાં કે જે તરહારી આજા હોય તો કોઈ અપૂર્વ કૈસુક હું બતાવું.

**મિત્રસેનનો** કુમાર બોલ્યો તહારી ભરળ, એમાં મહને ચુમતકાર.

કંઈ હરકત નથી. પછી મધ્યરાત્રાના સમયે મિત્રસેન શિયાળનો શાષ્ટ કર્યો. તે સ્વર સાંભળી બીજા શિયાળીઓ બહાર મેદાનમાં આવી ઉચ્ચા સ્વરે બોલવા મંડી ગયા. નેથી સર્વ લોકો નિદમાંથી જગી ઉઠ્યા. તે ભગલગાટને લીધે કુકડાઓ. પણ બોલવા લાગ્યા. તે ઉપરથી લોકોને જાણ્યું કે હવે રાત્રી થાડી રહી છે. વળી કણુતર પણ જાયત થઈ બોલવા લાગ્યા. નેથી ૬૬ શીલવાળી એવી ખીએ પણ કામાતુર થઈ ગઈ. પછી ચંદ્રકુમારે મિત્રસેનને સમજાયો કે આ પ્રમાણે તહારે કોઈ વખત આચરણ કરવું નહીં. કારણું કે ત્રીજા ગુણુતતમાં આ પ્રથમ અતિચાર કર્ણેલેા છે. એમ કુમારે ઘણ્ણો ઉપહેશ આપ્યો. તોપણું મિત્રસેન તેનાથી અટક્યો નહીં, ઉલટો કામ ભાવનામાં ખહુ આસક્ત થયો. છેવટે ચંદ્રકુમારે કીડા રસમાં ખહુ વ્યાખ જોઈ તેનો ત્યાગ કર્યો.

એક દિવસ જેનો પતિ ગામ ગઢેલો હતો એવી એક લટની ખી મિત્રસેનના જેવામાં આવી કે તરતજ દુરાચારની શિક્ષા. તેણું તે ઓની આગળ કામકીડાની ચેષ્ટા કરો. તેથી તે ખી કામાતુર થઈ તેનાજ

( २४० )

श्रीसुपार्थनाथवरित्र.

કંડમાં વળગી પડી. એવામાં તે ખીને દીયર ત્યાં આવી પહોંચ્યો. અને મિત્રસેનને જેઠ બહુ કોધાતુર થઈ તેને તિરસ્કાર કરવા લાગ્યો, કે, રે ધૂષ ? આ સુર્ખીલા એવી ગરીબ ખીને તહેં કામાતુર કરી ? એમ કહી તેણે મિત્રસેનને ગાઢ બંધનો વડે જકડી લીધ્યો. અને કહું કે તું ચંદ્રકુમારનો ખાસ મિત્ર છે તેથી તહેં મારતો નથી. નહીં તો બીજાને જીવતો જવા ફર્છિં નહીં. આ વાત ચંદ્રકુમારના જાણુવામાં આવી એટલે કુમારે તેને તેની પાસેથી છોડાવ્યો. અને તેને તેના ઘર મોકલી દીધ્યો. પણી કુમારે તેને શિક્ષા આપી કે હે મિત્ર ? આ લોકમાં પણ તહેં અતિચાર રૂપી વૃક્ષનું પુણ્ય ગ્રામ થયું. તેમજ પરદોકમાં પણ પ્રચંડ ફર્છિં અનું ફ્લેન તહેં માર થશે. કારણું કે મહેં તહેં બહુ વાર્યો હતો. તો પણ તું અતિચારથી વિરઘ્યો. નહીં તેતું આ પરિણામ આવ્યું. હંજુ પણ તું અર્હતલગ્નાન અને જ્ઞાની સહચુરનું સમરણ કર. તેમજ પોતાના હુશ્વરિત્રની આલોચના કર. અને સર્વ પ્રાણીઓની ક્ષમા માગ. તે સાંભળી મિત્રસેન બોલ્યો. પ્રિયબંધુ ! દઢ બંધનોની પીડાને લીધે હું બહુ ફર્છિં છું, તેથી બીજું કંઈપણ મહેને સાંભળતું નથી. માટે મહારા ફર્છિં અનો બીજો કેદીપણ ઉપાય તું કર, એમ બોલતો તે મરણ પામીને વિદ્યાચળમાં હસ્તીપણે ઉત્પન્ન થયો. તે ભવમાં આચુષ પૂર્ણ કરી બીજા આડભવ કરીને તે સિદ્ધિ પદ પામશે. ચંદ્રકુમાર પણ નિરતિચાર શ્રાવક ધર્મ આરાધી વિધિપૂર્વક દીક્ષા પાળી અંતે સમાધિ સહિત મોક્ષ સુખ પાખ્યો.

॥ ઇતિ શ્રીતૃતીયંગુણત્રતે પ્રથમાતીચારવિપાકે મિત્રસેન-  
કથાનકં સમાપ્તમ् ॥



सिंहवधिकृतीकथा.

( २४१ )

## सिंहवणिकूलीकथा.

### द्वितीयकौकुच्यातिचार.

हानविर्य राजाए प्रश्न कर्यो के, हे जगहुङ्ग ! त्रीज्ञ शुश्रेष्ठमां भीज्ञ अतिचारनुं स्वदृप्र द्रष्टांत सहित सांखणवा महारी कृच्छा छे तो आप कृपा करी ते अमने कहो. श्री सुपार्थप्रभु बोह्या, हे राजन् ! नेत्रादिक अंगोना नाना प्रकारना विकार सहित ने चेष्टा करवी तेने कौकुच्य कहेल्युं छे ते कौकुच्यने विट पुढेषादिकनी माझक जे पुढेष करे छे ते सिंहवधिकृती माझक खड्हु फुःणी थाय छे.

आ भरतक्षेत्रमां खड्हु पा (५) त्री (पवित्र पुढेष=पांडां)वडे सुशोभित, लक्ष्मीनुं सुंदर स्थानभूत अने राजहु सोथी विराग्यत पञ्च समान पोतानपुर नामे सुप्रसिद्ध नगरछे. तेमां कुण्डेर समान खड्हु धनाढ्य धनह नामे श्रेष्ठी रहे छे. सोमश्री नामे तेनी ओ छे. सेंहु नामे तेने एक पुत्र छे. अने जन्मथीज सहदेव नामे तेनो एक भित्र छे. हवे एक द्विस रमवा माटे सिंह पोताना भित्र साथे रतिसागर नामे उद्घानमां गयो. त्यां आगण सुंदर लतामंडपमां विविध विलासपूर्वक ते खने जाणु कीडा करता हुता. तेवामां त्यां भधुर ध्वनि तेओना सांखणवामां आव्यो. त्यारणां तेओ ते शण्डना अनुसारे आगण जता हुता ओवामां एक सूरि महाराजनां दर्शन थयां. वणी सूरीदानी आसपास खड्हु सुनिओ ऐडा हुता, तेथी ते तारामंडल सहित चंद्रमानुं अनुकरणु करता हुता. तेमज अन्यप्राणीओने स्वर्ग अने मोक्षमार्गनो उपदेश आपता जाणु मूर्त्तिमान धर्मराज छायने शुं ? ओवा ते सूरी-श्वरने नमस्कार करी भित्र सहित सिंहकुमार त्यां ऐडो. अने

( २४२ )

श्रीसुपार्खनाथ चरित्र.

अवसर जेई सूरोक्षरने तेणु एक प्रश्न पूछयो. हे लगवन्! महारा एक संशयने हूर करवा तमे कृपा करो. धर्माकार्य करवायी कैषिपणु पुरुष लक्ष्मीभी अष्ट थाय घरो! मुनि ऐत्या, लाभना अंतरायथी तेम पणु थाय छे. सिंह ऐवयो, जो धर्मी पुरुष पणु लक्ष्मी-हीन थाय तो कलेशना कारणुभूत एवा धर्मने करवानुं शुँ हळ? मुनींद ऐत्या, जो के धर्मांतरायना होपथी लक्ष्मीनो. नाश थाय छे परंतु जे निश्चयपूर्वक धर्म करे तो इरीथी पणु धर्मना प्रभावथी विशेष धन प्राप्त थाय छे. तेमां मुनिदासश्रेष्ठीनुं दृष्टांत सावधान थाई तुं सांखण.

देवलोकेऽप्य निर्माणु करेला, अति उक्त अने उक्तवत चैत्यो वडे विभूषित भयुरा नामे नगरीमां मुनिदास श्रेष्ठी. नामे एक श्रेष्ठी होतो. जेना वैक्षवनुं प्रमाणु पणु अज्ञात हुतुं, अर्थात् तेनी पासे दृष्ट वाणुं हुतुं. तेमज तेनुं सम्यक्त्व पणु बहु विशुद्ध हुतुं. डेट्लोक समय गया बाद डेई कर्मने लीये अनुकमे तेनो सर्व वैक्षव नष्ट थयो. तेथी ते दृक्केंड्रकाणु अपमानने पात्र थाई पडयो. तेमज राजा, बंधु, पुत्र अने पोतानी ओने पणु ते अप्रिय थाई पडयो! एटलुंज नहीं परंतु तेने डेई प्रत्युत्तर पणु आपता नथी. तो-पणु ते श्रेष्ठी पोतानो नियम चुक्तो नथी. वजी हुमेशां त्रिषु काणमां उत्तम भाववडे पोते अंधावेला मंहिरमां लुनेंद्र लगवाननी पूजा करे छे. ते जेई बहु हःभी थता तेना पुत्रो कडेवा लाझ्या ते, हे पिताल! हवे पूजा करवी बंधु करो तो बहु साढ. कारण्युके डेट्लो समय तमे वेपारमां रोको तो लोजन जेटलुं दृष्ट घेहा करो. वजी अमे अन्य गृहस्थाने त्यां चाकदी करीने वस्त्राहिक सर्व उपार्जन करोशुं, अने लगवाननी पूजानुं दृण तो तम्हे अहंयाज नोयुं, छतां पणु हन्तु अनो छुटको करता नथी, तमे आटली अवस्था गाणी तो पणु भूठने भूठ जेवा रह्या!

सिंहविष्णुइनीकथा.

( २४३ )

शेठे जवाब आપ्यो, भाईचो ! आ प्रभाणु लोकवुं तम्हाने  
लायक नथी. कारणुके धर्मनो त्याग करवाथी  
**शेठनो हृषि** निश्चय. कौष्ठपणु समये कार्यसिद्ध थती नथी. वणी  
धर्म कर्ये छते आ जन्ममां म्हाने जे हारिद्र-  
हुःअ प्राप्त थयुं छेते पूर्व जन्मना पापनो  
प्रक्षाप छे. शास्त्रकार कहे छे के—

सुंदरधर्मरयाणवि, विसमं विहिविलसियं समावड्ह ।  
जं तत्थ कारणमिणं, अन्नमवे खंडिओ धम्मो ॥

**अर्थ—**“सुंदर धर्ममां राणी अनेको एवा अव्य प्राणीचोने  
पणु हैव तरक्षथी विषम हुःअ आवी पडे छे, तेतुं कारणु अन्य अवमां  
अडित करेलो धर्म गण्याय छे.” माटे लक्ष्मी चाली जाय, अंधुओ.  
छुटा पडे, अने लोकेभां अपभान थाय परंतु उनपूजानो त्याग  
तो हुं करीश नहीं. कारणुके उनपूजातुं इल तोरवर्ग अने भोक्ष-  
दायक थाय छे. माटे तमे पणु तेमां आदरवाणा थाओ. ए  
प्रभाणु शेठनुं वचन सांखणी तेलोडे कहेवा लाभ्या के, जेम जेम  
तमे उनपूजा करो छो तेम तेम तम्हारे त्यां हारिद्रचड्पी वृक्ष  
भहु इलदायक थाय छे. ए प्रभाणु लोकापवाद जाणी धर्मनी  
हेलना थाय छे एम समज श्रेष्ठी पोतातुं नगर छोडी नल्लकना  
गाममां रहेवा गयो. त्यां पणु त्रणु काल गृह मंहिरमां उन प्रति-  
मानी निरवद्य पूजा करे छे.

त्यारभाद चतुर्मासमां शेठ मधुरामां गया. त्यां देवासरमां  
दर्शन करवा जता हुता. तेवामां उन-  
धर्मकावना. मंहिरना द्वारमां ऐठेली भालणु कहुं के,  
शेठल ! चार सेरोनो सुंदर आ पुण्यहार  
देता जाओ. अने उनेंद्र भगवाननी पूजा करो. पोतानी पासे

( २४४ )

श्रीसुपार्थनाथयरितं

ऐसा नहीं होवाथी शेठे ना पाई, एटले ते इतीथी ऐली, आ महारा शरीरे घेडेला सर्वे अदंकार आपनी महेरभानीथी थये. ला छे. हुवे महारे ऐसानी दरकार नथी. वणी प्रथम आप जेवी-रीते पुण्य लઈ पूजा करता हुता तेवीज रीते हात पछु पुण्य लઈ सगवाननी पूजा करो. हुं तमने पुण्य माटे पुण्य आपुं झुं. महारे कंधपछु लेवुं देवुं नथी. पधी श्रेष्ठीचे पोताना हाथमां पुण्य लઈ नेवेधिकी पाठ भाणी विधिपूर्वक भगवाननी पासे गया. अत्यंत अकिता-भावथी दोभांयडपी कंचुकने धारणु करता एवा ते श्रेष्ठीचे उनेंद्र भगवाननी पूजा करी अने हृष्यमां भावना भाववा लाग्या. अहो ! महुने धन्य छे. डारणुके अनाहि अपार एवा आ संसार सागरमां अनेक जन्ममां पछु हुर्लिल एवुं धर्मडपी नाव महुने प्राप्त थयुं छे. धर्मना अभावथी जन्मांतरमां पछु भाव्यप्राणिच्छो. हुर्गति पामता नथी. अपूर्व चिंताभाणी अने ३६५वृक्ष पछु धर्मज छे. वणी धर्म एज उत्तम मंत्र छे. धर्म-मांज उत्कृष्ट अभृत रहेलुं छे. तेमज उपकारनी अपेक्षा रहित लेडाना हित भाटे जेओ. धर्मेपहेश आपे छे तेओने भाव पूर्वक वारंवार नमस्कार. वणी विमानेभां वास डरवो. सुलभ छे, एक छत्रवाणी पृथ्वीतुं राज्य पछु सुलभ छे, परंतु समय लोकभां मनुष्योने जैनधर्म भगवो. अहु हुर्लिल छे. तेपछु महुने प्राप्त थयो. छे. भाटे ते धर्म विना धीज डोळनी पछु महारे जडर नथी, एम चिंतवन करी तेषु देववंदन कर्युं.

त्यारपधी मुनिहास श्रेष्ठी व्याख्यानशाणामां गया. अने त्यां भाव्य प्राणीच्छोने धर्मनो उपहेश आपता सूरिनो उपहेश. सूरि महाराजानां दर्शन कर्यी. पधी वंदन करी चोते हूर उलो. रब्बो. एटले सूरिच्ये पछु उच्चे स्वरे आहरपूर्वक धर्मलाल आपी ते शेठे उद्देशीने उपहे-

सिंहवश्चिकृनीक्या.

( २४५ )

શનો પ્રારંભ કર્યો સમુક્રમાં પડેલા રતનની પેઠે આ સંસારમાં મતુષ્યભવ બહુ દુર્લભ છે. માટે જાયાત્માએએ મતુષ્ય ભવ પામીને સુગતિના માર્ગમાં યતન કરવો. લુનેંદ્ર જગવાનની પૂજા, વત પાળવામાં ગ્રીતિ, સામાચિક અને પૈષધમાં પ્રયાસ કરવો, સુપાત્રમાં દાનઅદ્ધિ, ઉત્તમ તીર્થોમાં ગમન, અને સુનિન્દ્રાની સેવા એ સુગતિનો માર્ગ છે. એ પ્રમાણે બહુ વિસ્તારથો સૂરિએ દેશના આપી. ત્યારથાદ વૈરાગ્યથી એંચાયું છે ચિત્ત જેનું એવો તે શ્રેષ્ઠી સૂરિની આગળ હાથ નોડી યોદ્યો, હે જગવાન! આપની કૃપાથી હુમેશાં હું લુન પૂજા કરે છું. પરંતુ મહારા પુત્ર મંહને હસે છે અને કહે છે કે હેતાત! હુમેશાં તમે પૂજા કરો છો પણ તેનું કંઈ પણ દૂસ દેખાતું નથો. ઉલ્કાનું પ્રથમ મેળવેલું ધન પણ ઘરમાંથી ચાલ્યું ગયું. તેમજ લોકો પણ એમજ કહે છે કે સુનિહાસનું ધન ધર્મથી નષ્ટ થયું. આ પ્રમાણે લોકો ધર્મની હેલના કરે છે. પરંતુ તેઓનું વચન ડિંચિતું માત્ર પણ મહારા હુદ્ધયમાં અસર કરતું નથી. છતાં હે સુનિંદ્ર! તેઓને સ્થિર કરવાનો જો કોઈ પણ ઉપાય હોય તો હું સુખેથી ધર્મ કરી શકું. એમ કહી શ્રેષ્ઠી મૈન રહ્યા. પછી સૂરિએ ઉપકાર જાહી નિર્દેષ અને પાઠ સિદ્ધ એવા એક મંત્રનો ઉપદેશ આપ્યો, અને તહેને વિધિ બતાવ્યો કે કાળી ચોહશની મધ્ય રાત્રીએ સમશાનમાં કાયોત્સર્ગ ઉલા રહી તમારે આ મંત્રનું સમરણ કરવું એટલે સુહૂર્ત માત્રમાં કપર્દી નામે યક્ષ પ્રત્યક્ષ થઈ રહેશે કે ચોગ્ય વરદાન માગ! ત્યારે તહારી ઈચ્છા પ્રમાણે વરદાન માગવું. એમ કહી સૂરિએ ત્યાંથી વિહાર કર્યો.

સુનિહાસ શ્રેષ્ઠી કાળી ચોહશની મધ્ય રાત્રીએ સમશાનમાં ગયો. અને કાયોત્સર્ગ કરી વિધિ પ્રમાણે

કપર્દીયક્ષ. સૂરિએ આપેલા મંત્રનો પાઠ કરવા લાગ્યો. કણ્ણ માત્રમાં યક્ષ પ્રગટ થયો. શ્રેષ્ઠીને કહ્યું-

( २४६ )

श्रीसुपार्थनाथचरित्रः

કે, વર ભાગ. શ્રેષ્ઠી યોલ્યો, જે તહારામાં શક્તિ હોય તો ચાતુર્માસના દિવસે મહેં ચારસરીપુણ્યમાલાવડે જીનેશ્વરની પૂજા કરી છુતી તેનું ઇલ મને આપ. તે સાંભળી યક્ષે અવધિજાનનો ઉપયોગ કર્યો અને કલ્યું કે, તે પૂજાનું ઇલ આપવા માટે હું સમર્થ નથી, કારણું કાં પૂર્વક પુણ્યના એક હાર વડે જીનેં ભગવાનની પૂજા કરી હોય તો તેથી બહુ સુંદર અને વિશાળ એવી સ્વર્ગ લક્ષ્મી પણ પ્રાપ્ત થાય છે તો આ ચારસરાહારનો તો વાતજ શી કરવી ? વળી હું વ્યંતર જાતિ છું તેથી આ શિવાય ઓળું જે કંઈ જોઈએ તે યોલ્યો ! શ્રેષ્ઠી યોલ્યો, હે યક્ષ ! માત્ર તહારા દર્શનથી હું સંતુષ્ટ થયો છું. તું તહારા સ્થાનમાં ચાહ્યો જા, તેવી કોઈ પણ વસ્તુ નથી કે જે જૈનધર્મના પ્રભાવથી મહેન નહીં મળે ? તે સાંભળી યક્ષ યોલ્યો, આપનું કહેવું સત્ત્ય છે પરંતુ જ્હારી શક્તિ પ્રમાણે આપનું વાતસદ્ય જ્હારે કરવું જોઈએ. સાધમિક જાણી શ્રેષ્ઠીએ તેનું વચ્ચે માન્ય કર્યું. પછી યક્ષ યોલ્યો, તમ્હારા ઘરના ચારે ખુણાએમાં મહોટા નિધાનો ફાટેલા છે. તે તમ્હારે લઈ લેવા. એમ કષી યક્ષ પોતાના સ્થાનમાં ગયો.

પ્રભાતકાળમાં શ્રેષ્ઠી પોતાને ઘેર ગયો અને પોતાના પુત્રોને કલ્યું કે, જે તમે ધર્મમાં ખુદ્દી પૂજાનો પ્રભાવ. રાખો તો આ જન્મમાં પણ તેનું પ્રત્યક્ષ ઇણ હું તમને બતાવું. પુત્રો યોલ્યા, જે એમ થાય તો તમારા દેખતાં અમે અમણ્ણો ધર્મ કરવા તૈયાર છીએ. શ્રેષ્ઠીએ તેઓને પ્રતિજ્ઞા કરાવીને કલ્યું કે, હુમેશાં ત્રિકાલ જીનમંહિરમાં દર્શન કરવા જવું અને પૂજનાહિક કાર્ય પણ તમારે નિયમીત કરવાં. તે પ્રમાણે તેઓએ કણુલ કર્યું. એટલે શ્રેષ્ઠીએ એક નિધાન બતાવ્યો. પછી સંપૂર્ણ સોનૈયેથી ભરેલો. એક

सिंहविष्णुकी कथा.

( २४७ )

अजनों जेठ आपतुं कडेवुं सत्य छे—ओम कही तेओ अहु खुशी थया अने हमेशां लावपूर्वक शेठनी आजाप्रभाषे वर्तवा लाग्या. त्यारपछी अनुकमे बाकीना पोताना धरनी अनहर रहेला त्रणे अजना श्रेष्ठीचे बताव्या. त्यारभाद कृतीथी तेज सूरीश्वर त्यां पधार्या. ते वात सांखणी पोताना उत्रो सहित श्रेष्ठी झेला वेळव साचे तेमने वांडवा भाटे गया. तेम बीज नगरवासी लोको पण शाणुगार सल्ल अहु उमंगथी त्यां गया. पछी त्रण प्रदक्षिणा पूर्वक सूरिने नमस्कार करी तेमनी आगण सर्वे लोको ऐसी गया. त्यारभाद अवसर जाणी श्रेष्ठीचे प्रार्थना करी, के हे लगवन् ! अहारा उत्रोने सम्यक्त्वादि उपदेश आपीने अहुस्थधर्म आपो. सूरिचे पण ते प्रभाषे उपदेश आप्यो. ते सांखणी सिंहकुमार ऐव्यो, हे लगवन् ! अहुने पण श्रावक धर्मने उपदेश आपो. जेथी हुं पण तेनो स्वीकार करी कुतार्थ थावि. भाद शुद्ध महाराजे सभानी अंहर विशेष प्रकारे श्रावक धर्म उपदेश आप्यो. त्यारभाद केटलाक लोकोचे सम्यक्त्व अने केटलाके आणुवतादिक अहुणु कर्या. वणी सहदेव सहित सिंह श्रावके सम्यक्त्व पूर्वक अनर्थ हंड्रतनो नियम लीघा. पछी शुद्धे विस्तार पूर्वक तेनुं विवेचन करी कल्पुं के, पापनो उपदेश, शक्तादिकनुं दान, आर्तिक्यान अने भवादि प्रभाहथी चार प्रकारे अनर्थ हंड थाय छे. तेमज अहु साधनेनी तेयादी, लोगोपलोगनी वृद्धि, अहु वाचालता, काम किंडा अने काम जनक चेष्टाएनो अनर्थ हंड प्रतधारक गृहस्थ पुढेचो सर्वथा त्याग करवा जेठाचे. ए प्रभाषे शुद्ध सुखथी उपदेश सांखणी सिंह अने सहदेव अन्ने भक्ति साचे शुद्धने नमस्कार करी पोताने घेर गया अने जैन धर्मनी आराधना करवा लाग्या.

हे सिंहविष्णुक पोतानी हुकानमां वेपार करतो होतो,

( २४८ )

श्रीमुखार्थनाथवरित्रः

तेवामां सुंदर रागथी भधुर वयन योहतो  
**ऐकविटपुड्ड.** ऐक विट ( भवाईओ ) त्यां आवयो अने  
 योहयो के, शेठल ! जुना सडी गयेला  
 वडिका ( वस्त्र के कागण उपर लगेला लेख ) अंडना योकडा  
 झाडा, झारे लेवा छे. सिंहे ते प्रभाणे योकडा अताव्या.  
 अने तेनी किंमत ठरावीने ते घेटलुं तेने सोांपी हीधुं  
 त्यारभाद हरेक वडिका अंडने गोताना कानना भूगमां  
 अद्वावी जेया, पछी तेणु ( ते लांडे ) क्लिं के, कौर्ह पछु  
 वर्खत आवो कानने आनंदकारक चर चर शण्ह झुआरा सांकणी  
 गवामां आव्यो नहोतो आ प्रभाणे विटलुं वयन सांकणी त्यां  
 उलेला वणिक मुत्रो सहित सिंह बहु हसवा लाव्यो. अने तेनी  
 किंमत पछु छोडी हृष्य पान सोापारी आपी ते विटने विद्याय कर्यो.  
 त्यार भाद ते विट हुमेशां सिंहनी पासे आववा लाव्यो.  
 अने अनेक प्रकारना विकारवणी चेष्टाओ तेमज झुकुटी आही  
 अंगो वडे हास करी विट विधाना चमत्कार देखाऊने ते सिंह  
 विगोरे सर्वे लोकेने खुश करी हसावतो हतो. परंतु ते प्रसंग  
 सहदेवने भीलकुल गमतो नहोतो. वणी विटना सहवासथी  
 अुद्धिनो मंद आवो ते सिंह वणिक हुमेशां मुख नेत्राहिकना विकार  
 करवा लाव्यो. एटलुंज नहीं परंतु ते विटनो पछु भेण्टो शुरु  
 थृष्य पड्यो. सहदेव हुमेशां तेने बहु ठप्डो आपे छे तो पछु  
 तेनो अनादर करी अनेक प्रकारनी काम चेष्टाओ वडे युवति ज-  
 नोने आनंद आपवामां ते प्रवृत्त थयो. अज्ञानताने लीष्ये गोताना  
 भिन्ने कहेला अतिचारने पछु ते गणुतो नथी. हास्य रसमां गरक  
 थृष्य सर्वे लोकेने हसावे छे. पछु एटलुं तेजाणुतो नथी के  
 हास्य कीडा बहु हुःभद्रायक थाय छे.

**ऐक हिवस कण्ठार्टक देशना** कौर्ह ऐक रज्जुतनी स्त्री वस्त्र

सिंहण्डिनी कथा.

( २४६ )

**सिंहनुं भरणु.** खरीदवा भाटे सिंह वणिकनी हुकाने गृह, तेना हाथमां वख आगोने पोते नेत्रादिकथी काम विकारनी चेष्टाओ उरवा लाग्यो. श्री भदु अद्रिक डेवाथी ते तरक्त तेनुं लक्ष्य नहेतुं अने वखनी ठिंभत करावी भोडे भाग्युं मूल्य आपती हुती तेवामां तेनी पाछण तेनो धण्ही आव्यो. अने तरतज सिंहनी सर्व विकृति लेइ भदु कापायमान थर्द गयो. पछी तेना गाल उपर ते रज्जुते ताण्हीने एक तमाच भारीने क्षुँ डे रे ! अनार्य ! वाणीओ थर्द तुं अहारी श्री आगण वीट पुऱ्येथी पणु अधिक अनेक प्रकारना काम विकारो अतावी रह्यो छे ? एम कही झरीथी भारवा ज्ञतो हुतो तेटलामां आसपासना यीन वाणीयाओ वख्ये पख्या अने रज्जुतना हाथ पकडी लीधा, पछी तेने शांत करवा लाग्या. डे महाशय ! हवे क्षमा कर, कारणुडे सत्पुऱ्येनुं भूषणु क्षमा हेय छे एम अनेक कालावाला करी तेनो कोध शांत कर्यो, हवे तीव तमाचाना आधातथी पीडा भदु वधी गर्द तेथी ते सिंह क्षणुवार मूर्छित थर्द पख्यो रह्यो. वगी जे तरक्त मार पख्यो हुतो ते आंखनो डेयो. बहार नीकणी पड्यो. पछी चंदनादिकना उपचार करी कुङ्कुम चेतनमां आव्यो. एट्टे तेने तेना घेर लध गया. अने भदु उपाय कर्या, परंतु गाढ वेहनाथी घेराई गयो. आढ सहडेवे भदु उपदेश आप्यो. त्यारभाद सातमा दिवसे हुङ्कुतनी आलोचना कर्या विना सिंह वणिक भरणु पाभी नागकुमारमां उत्पन्न थयो, त्यांथी नीकणी घेर संसारमां भदु हुःभी थर्द परिभ्रमणु करशे. वगी सहडेव निरंतर निःक्लंक व्रततुं आराधन करी अवसानमां समाधिपूर्वक डाण करी सौधर्म देवलोकमां उत्पन्न थयो. त्यांथी व्यवीने महाविदेहमां उत्पन्न थर्द चारित्र पाणी कर्मनो क्षय करी समाधिपूर्वक भोक्षयह पाभशे.

**इतिवृत्तीयगुणवत्तेद्वितीयातिचारविपाकेसिंहवणिकथानकंसमाप्तम्।**

( २५० )

શ્રીસુપાર્થનાથઅરિત્રિ.

## પદ્મવણિકુનીકथા.

### તૃતીયમૈખર્યાતિચાર

દાનવાય રાજ ઓદ્ધો, જગત્પૂળ્ય એવા હે ભગવાન् !  
 તૃતીય ગુણુક્તમાં ત્રીજા અતિચારનું સ્વરૂપ હૃદાંત સહિત સાંભ-  
 ણવાની રહેને બહુ ધર્ષણ છે માટે કૃપા કરી નિવેદન કરેનો. શ્રી સુ-  
 પાર્થીપ્રભુ ઓદ્યા, હે રાજન ! ત્રીજા ગુણુક્તને ધારણુ કરી જે  
 આવક વાચાલપણથી કોઈને મિથ્યા અપવાદ આપે તો તે પણની  
 પેઠે બહુ હુદાખી થાય છે.

પુરિમિતાલ નામે નગર છે. વિજયપાળ નામે રાજ તેમાં  
 રાજ્ય કરે છે. સુંદર લોગોનું એક સ્થાન-  
**વિજયપાળ** ભૂત અને રૂપમાં રંભાસમાન રંભાનામે  
 તેની મુખ્ય રાણી છે. એક દિવસ વિજય-  
 પાળ રાજ હુથી પર બેસી પરિવાર સહિત રાજ્વાટિકમાં જતો  
 હતો. તેવામાં માર્ગ ઉપર એક શેઠીયાને ત્યાં નવીન ઉદ્ઘાસ પામતા  
 ચૌબનરસ્થી વ્યાકુળ અને સુંદર રૂપવાળી લક્ષ્મી નામે એક કન્યા  
 તેના જેવામાં આવી, તેથી તેની પર રાજનું ચિત્ત બહુજ લાગી  
 ગયું. જેથી તેના માતાપિતાની પાસે માગણી કરીને પોતાની મેળે  
 તેને તે પરછ્યો. અને પોતાના અંતઃપુરમાં લાવી તેની સાથે વિલાસ  
 કરવા લાગ્યો. જેથી નગર, અન્ય રાણીઓ કે રાજ્યની પણુ તે ચિંતા  
 કરતો. નથી. ક્રિકા તે લક્ષ્મી રાણી ઉપર અતિ આસક્ત થઈ રાત્રા  
 દિવસ તેની પાસેજ પડી રહે છે. વળી તે સ્ત્રીના સ્નેહથી તે એટલો  
 બધો એંચાયો છે કે સર્વથા વિવેક શુન્ય થઈ ગયો. જેથી અન્ય  
 સમય કાર્ય છાડી હીધાં.

ત્યારે મંત્રીએ કલ્યું કે હે રાજન ! આ પ્રમાણે લીને વશ

પદ્મવિષુવૃત્તીકથા.

( ૨૫૧ )

થયેલો સામાન્ય માણુસ પણ લોકોમાં નિંદભંગીનો ઉપદેશ નીચ થાય છે, તો આંતરિક છ શત્રુઓથી ઘેરાયેલા આપના સરખા રાજાઓને તો શું કહેવું ? વળી ને રાજાઓ ધર્મ, અર્થ અને કામ એ નષ્ટ પુરુષાથ્રને નિતિપૂર્વક સેવે છે તેઓને પુરુષાર્થ ક્લિનાર્યક થાય છે. અન્યથા નિષ્ક્રિય થાય છે. વળી રાજાંધ પુરુષોથી શુણ્ણો દૂર નાસી જાય છે તેમજ શાસ્ત્રાર્થ અને શુદ્ધનો ઉપદેશ પણ અસર કરતો નથી. તેમજ રાજ્ય-રાષ્ટ્ર, અને ધર્મનો ત્યાગ કરી આ સ્ત્રીમાં મોહિત થઈ રહ્યે હુંમેશાં તેમાં પ્રવૃત્ત થયા છો, તે આપની મહોટી ભૂલ થઈ છે. રાજ બોલ્યો, હે મંત્રી ! મહારી પાસે રહારે કંઈપણ વધારે બોલવું નહીં, આ રાજ્ય મહેં તને સોચ્યું છે. તેથો તેનું સરકારું રહારેજ કરવું. વળી જયાં સુધી આ મુગાદ્ધી મહારી દિદ્ધિગોયર છે. ત્યાં સુધીજ મહારાજ જીવિત પણ સમજવું, તો પછી મારે રાજ્યાદિકતું શું પ્રયોજન છે ?

અહો ! જુઓ તો ખરા ? આ રાજ સ્નેહપાશથી કેવો બંધાયો છે ? તેને પોતાના આત્માનું પણ લક્ષ્મીનું મરણું. ભાન નથી. અહો ? નિર્બન્જ થઈ આ પ્રમાણે બીજે કોણું બોલી શકે ? એમ મંત્રી ચિંતવતો હતો તેવામાં તેજ રાત્રીના પરોઢમાં લક્ષ્મી રાણીને વાસિતવમન થયું. તે નેઈ રાજ બહુ ગજરાઈ ગયો. વૈદ્યને બોલાવ્યા, વૈદ્ય લોકોએ અનેક પ્રકારના ઉપયારો કર્યા. પરંતુ દૈવગતિને લીધે તે સર્વ નિષ્ક્રિય થયા. એમ કરતાં સૂર્યોદય થયો કે તરતજ હેવીના પ્રાણું છુટી ગયા. તે નેઈ રાજાનું ધૈર્ય છુટી ગયું અને મૂર્છિત થઈ પૂછ્યો પર પડ્યો. તેટલામાં તેને પરિજ્ઞન એકઠો થઈ ગયો. અને કાષ સમાન ચેષ્ટા શૂન્ય રાજને નેઈ ચંદનાદિક રીતલ ઉપયાર કરીને સચેતન કર્યા.

( २५२ )

श्रीसुपार्खनाथचरित्र

पछी ते राजा बहु पोकार करी विलाप करवा लाग्यो, हा !  
 लक्ष्मी हेवि ! दरेक कार्यमां तुं बहु दक्ष  
**नृपविलाप.** हुती छतां रहने प्रत्युतर केम आपती  
 नथी ! हे भूगाक्षी ? रहारो कंधपण्य आप-  
 राध थयो छाय तो क्षमा कर ? पूर्ण चंद्र समान मुखवाणी हे  
 सुतलु ! रहारी उपर तुं केम इष्ट थई छे ? आ प्रभाणु विलाप  
 करतो राजा ते स्तीतुं पठायुं क्षणुमात्र पण्य छोडतो नथी. तेमज  
 अन्नपाणी पण्य लेतो नथी. तेमज घीज डेहने ते भड्हानी  
 पासे ज्वा हेतो पण्य नथी. पछी मंत्रीमे कहुं हे स्वामिन ! आ  
 राणी भरी गई छे. माटे हवे शोक करवो वुथा छे. अने आप  
 अहींथी उठो तो अमे अने समशानमां लध जध अग्नि संस्कार  
 करावीये. ते सांबणी राजा कोधातुर थई गयो अने आवयो के,  
 पोताना पुत्र प्रगौत्राहिक सहित तुं त्हारा देहनो संस्कार कराव.  
 रहारी माणुप्रिया तो कोड वर्ष सुधी ज्वशे. वणी आ स्ती  
 संभांधी खराब तथा अशुल वयन रहारी आगण जे कोड  
 आवशे ते पुरुष ज़्यूर मरणुने आधीन थशे ! आ प्रभाणु राजानो  
 निश्चय जाणी मंत्रीमे कोडपण्य उपायथी राजानी दृष्टिने छेतरी  
 शुभ रीते पोताना चुलटो पासे ते राणीना हेहनो अग्निसंस्कार  
 करावयो. त्यारबाह ते स्तीने नहीं जेवाथी राजा पोडपोड भूजी  
 बहु रोवा लाग्यो, अने विलाप करतो आवयो के, भारी स्तीने  
 ज्यारे जोईश त्यारेज हुं जोजन करीश. वणी रहारी राणीने  
 अहींथी जे कोड लध गयो हशे तेने भार्या विना हुं जोजन करवानो  
 नथी. ए प्रभाणु प्रतिज्ञा करो ते राजाचे दश दिवस व्यतीत कर्या.

**मंत्रीमे कोडपणे शीखवाडी राजानी पासे भेकवयो.**  
 ते पुरुष पण्य राजा पासे गयो अने मंत्रीना  
**मंत्रीनी चुक्ति** क्षमा प्रभाणु आवयो. हे नरेंद्र ! आपनी  
 स्तीना समाचार हुं जाणुं छुं. तेथी आपने

વધામણી આપવા માટે હું અહીં આવ્યો છું. રાજ બોલ્યો,  
 હાલમાં મહારી પ્રાણુપ્રિયા કયાં છે ? પુરુષ બોલ્યો, હે નાથ !  
 હાલમાં લક્ષ્મી દેવી સ્વર્ગલોકમાં સુરેંદ્રની પાસે આનંદપૂર્વક  
 વિલાસ કરે છે. વળી આપને સંહેશો કહેવા માટે તેણીએજ મહુને  
 મોકલ્યો છે. હે સ્વામિન ! મનુષ્ય લોકમાં વાસ કરવો ઉચ્ચિત નથી,  
 કારણુકે મનુષ્યલોક બહુ ફર્ગંધમય તેમજ જન્મ, જરા, વ્યાધિ  
 અને મરણાદિક હું ખોલ્યો જ્યાકુલ છે. વળી સ્વર્ગલોકમાં ફર્ગંધ  
 વિગેરનું કોઈપણ પ્રકારે હું ખ નથી. અને તે બહુ સુંદર છે. માટે હે  
 નાથ ! જો મહારી સાથે આપને કામ હોય તો જલદી તમ્હારે  
 અહીં આવવું. રાજ બોલ્યો, હે સુલગ ! તું સ્વર્ગનો માર્ગ મહુને  
 બતાવ. નંથી મહારી પ્રાણુપ્રિયાનું સુંદર સુખકમળાંનોઈ હું કૃતાર્થ  
 થાઉં. પુરુષ બોલ્યો, હે નરેંદ્ર ! એકદમ આપણે ત્યાં જવું ઠીક નહીં.  
 હાલમાં તો આપ સ્નાન કરી લોજન કરેલા, ઉત્તમ પોષાક પહેરો,  
 રાજ્ય, દેશ અને કોશ વિગેરની સંભાળ કરેલા, તેમ ધર્મસેવન  
 કરી આનંદરસ લોગવો, તેટલામાં હું રાણી પાસે જઈ તમ્હારા  
 આગમનની વાર્તા સંભળાવું એમ કણી તે વિદ્યાય થયો. ત્યાર-  
 બાદ તે પુરુષના વચન પર વિશ્વાસ રાખી રાજ લોજનાદિક સર્વ-  
 કાર્ય કરે છે. અહીંઓ આક્ર્યા માત્ર એટલુંજ છે કે બહુ વૈસવ-  
 વાળો, યુદ્ધિમાન્, દક્ષ તેમજ પૃથ્વીનો પતિ એવો પણ આ  
 રાજ અત્યંત રાગડ્યો થહુવડે ઘેરાયેલો હોવાથી અસત્યને પણ  
 સત્ય તરીકે જાણે છે. ત્યારબાદ ખીના વિરહુથી આકાંત થઈ  
 હૃમેશાં તે પુરુષને આવવાની વાટ જેયા કરે છે. પણી તે પુરુષ  
 પણ ધણ્ણો સમય વ્યતીત કરી દૂરીથી રાજ પાસે આવ્યો. અને  
 કદ્વયુક્ષના કુણો સમાન સ્વાહિત નારંઝી કુણોની લેટ મૂકી  
 નમસ્કાર કરી બોલ્યો, હે નરેંદ્ર ! સ્વર્ગમાંથી દેવીએ આપના માટે  
 આ કુળ મોકલ્યાં છે અને વિશેષમાં એક સંહેશો કણો છે કે રાજ

( २५४ )

श्रीमुपार्थनाथचरित्र.

पासेथी भहारा भाटे एक सुंदर अलंकार लावने. जेथी हुं सर्व देवांगनाओमां अधिक अलंकारवाली शोभा पात्र गण्याउं.

राजन्ये तत्काल मंत्रीओने बोलावी हुकम कर्यो के, राणीना कद्या प्रभाषे आ सहेशहारक पुरुषने जल-राजनो हुकम. ही आलूषण आपो ! मंत्रीओये विचार करी राजना हेखतां सुंदर अलंकार आपी त्यांथी तेने विद्याय कर्यो. त्यारभाद तेने पकडीने केटलाक हिवस सुधी मंत्रीओये पोताना भांडारमां गुम राख्यो. इरीथी पण तेवीज रीते ते पुरुष कँड़ीक आलरण्याहिक लध जय छे अने पाणे आवे छे एम राजनो वधत गुमावे छे. हवे आ वृत्तांत कँड़ीक धुर्तना जाणुवामां आ०युं अने तेणु जाण्युं के धन भेण-वावानो आ उपाय बहु सारो छे. आवो धाट इरीथी मण्डो हुर्क्ष छे. एम समल लोकपत्रना आकारे एक सोनातुं पत्रुं बनावरा०युं, तेमां अक्षर तेतरीने सुगंधभय कस्तूरीना रसथी तेओ भरी काढ्या. पधी लेखनी माझक गुम लपेटी राज पासे जधने तेणु क्षुं के, हुं लेखवाहक छुं अने स्वर्गमांथी लक्ष्मी राणीये भुजे माकड्यो छे. ते सांकणी राज बहु भुशी थयो, अने ते लेख पोताना हाथमां लध विचार करवा लाग्यो. जइर आ स्वर्गनुं लोकपत्र छे. वणी शाही पणु मत्त्यलेकनी नथी. एम नझी करी ते ओह्यो, भहारी प्राणुप्रिया सुधी छे ? लेख-वाहक ऐाव्यो, हे नरेश्वर ! स्वर्गलेकमां हेवीने आनंद होय एमां शुं आश्र्य ? त्यारभाद राजन्ये लेखने भुव्लो कर्यो अने वांचवानो ग्रांथ कर्यो....स्वस्ति श्री पुरिमताल नगरमां भहाराजन्यधिराज श्री विजयपाल नरेंद्रना यरण्यारविंदमां प्रणाम देवा स्वर्गमांथी लक्ष्मी नामे भहाराणी स्नेहपूर्वक जाणुवे छे के, अहों कुशल छे. आपतुं कुशल ईच्छीये छीये. वणी विशेष

પદ્મવિષુવૂનીકથા.

( ૨૫૫ )

કારણું એ છે કે હે નાથ ! આપ નિરંતર મહારા હૃદયમાં વાસ કરી રહ્યા છો. માટે તેના ભારને લીધે જણે ભરાઈ ગયેલી હેડં તેવી સ્થિતિમાં હું રહી છું. પરંતુ આપના સમાગમની ઘણ્ણી ઉત્કંઠા છે પણ હું હેઠાવાને લીધે આવવા માટે અથક્ત છું. માટે કૃપા કરી આપના દેહવડે પવિત્ર થયેલા સર્વ અલંકારો મહારા માટે મોકલી દેશો. આપના પ્રસાદ વિના દેવાંગનાચો-માં રહુને બહુ લંજળ આવે છે. તેમજ અલંકારના અભાવથી મહારી અવગણુના થાય છે. માટે મહીને અથવા પંદર દિવસે જેવા તેવા પણ વસ્ત્રાદિક અલંકારો મોકલતા રહેલું. આ વૃદ્ધ પુરુષ બહુ લાયક છે માટે તેની સાથે ખાનગી કુશળ વાર્તા પણ મોકલવા કૃપા કરશો.

રાજાએ તરસ્તજ મંત્રીવર્ગનિં બોલાવીને આજા કરી કે, આ

પુરુષની સાથે રહારાં ઉત્તમ વખ, આભૂતષણ

**પદ્મવિષુવૂ.**

અને કુંકુમાદિક દરેક સાર વસ્તુઓ રાણી માટે સ્વર્ગમાં મોકલી આપો. કારણુંકે

દેખહારકનું લક્ષમૂલ્ય, દેખનું કોટીધન અને દ્રષ્ટિનું સે કોરી મૂલ્ય થાય છે, પણ પ્રિયનાં વચન તો અમૂલ્ય છે. આ પ્રમાણે રાજાનું વચન સ્વીકારી મંત્રીએ વિચાર કરવા લાગ્યા કે, આ કાર્ય અગડી ગયું. હવે આપણા હાથમાં રહ્યું નહીં. પછી તે-એએ વિચાર કરી રાજાને જણાંયું કે, આ પુરુષ સ્વર્ગમાં કેવી રીતે જશે ? રાજ બોલ્યો, જેવી રીતે આવ્યો હતો તેવી રીતે જશે. મંત્રીએ બોલ્યા, અહોં તો દેવીના પ્રભાવથી તે આવ્યો હતો. ફરીથી રાજ બોલ્યો, જેમ પ્રથમ આવેલો પુરુષ ગયો હતો તેજ પ્રમાણે આ પણ જશે. એમાં વધારે વિચારનું કંઈ પ્રયોગન નથી. મંત્રીએ બોલ્યા, મહારાજ ! પ્રથમ પુરુષ તો અભિમાં અળીને સ્વર્ગ ગયો હતો. રાજ બોલ્યો, એને પણ તેવી રીતે

( २५६ )

શ્રીસુપાર્થનાથવરિત

મોકદો. પછી મંત્રી લોકો કાણની ચિતા સળગાવી તે વૃદ્ધને  
પકડી ચિતા તરફ લઈ જતા હતા તેવામાં ત્યાં ખાર વતખારી  
અને બહુ વાચાલ એવો પદ નામે એક વલિંગ રહેતો હતો તેણે  
રાજ પાસે જઈને કલ્યાં કે, હે નરાધીશ ! આ બહુ વૃદ્ધ છે, તેમજ  
બહુ સંદેશાઓથી ખારે થઈ ગયો છે. માટે ઘરડો માણુસ સ્વર્ગે  
નહીં જઈ શકે, તેથી કોઈક ચુવાન પુરુષને મોકદો તો બહુ સાર્દાં.  
મંત્રીએ બોલ્યા, હે દેવ ! આ પુરુષજ મોકદો વાલાયક છે. કારણુંકે  
ઉત્તર આપવામાં બહુ કુશળ છે. તેમજ તરફણું હોવાથી ચાલવામાં  
ઉતાવળો અને બોલવામાં વાચાળ પણ ઢીક છે. એના જેવો બીજો  
મળવો મુશ્કેલ છે. માટે દેવી પાસે એનેજ મોકદો. રાજએ  
કલ્યાં ઢીક, ત્યારે એમ કરો. ત્યારબાદ મંત્રીએ તેને બાધીને  
બહાર લઈ જતા હતા તેવામાં તેનો વિલાપ સાંલગી તહેના  
કુદુંભિએ ત્યાં આવ્યા અને પૂછવા લાગ્યા કે ભાઈએ ! શામાટે  
એને બાંધ્યો છે ? શું કંઈ અપરાધ કર્યો છે ? તેએ બોલ્યા  
પોતાના વાચાલતાના દોષથી એની આ દશા આવી છે. બીજો  
કોઈ પણ અપરાધ નથી. તમ્હારે પણ પોતાના મુખનું રક્ષણું  
કરવા સાવધાન રહેવું. કારણું કે વાચાલતાને દીધે અનર્થદંડના  
પાત્ર ન થવું પડે. પછી તેના કુદુંભિએ મંત્રીએની પાસે  
ઘણી આળજી કરી બહુ મહેનતે પદને છોડાવ્યો. મંત્રીએએ  
પણ દયા લાવીને તેને મુક્તા કર્યો. તેમજ પ્રથમ પુરુષને પણ  
શિક્ષા આપી કે ફરીથી આ કાર્ય ત્હારે કરવું નહીં.

એક દિવસ રાજએ મંત્રીએને કલ્યાં કે, કોઈ પણ પ્રકારે  
સ્વર્ગમાંથી દેવીને અહીં લાવો તો ઢીક.  
**કુત્રિમહેવીનો**      કારણું કે તેના વિરહથી હું બહુ હુંખી  
**સમાગમ.**      થાઉં છું. મંત્રીલોકાએ વિચાર ગોડવીને  
                          કમતશી નામે સુંદર રૂપવતી અને તરફણું

પદ્મનાભિહનીકથા.

( ૨૫૭ )

વધની એક સ્વીને બોલાવી. રાજના અલંકાર પહેરાવ્યા તેમજ ચુક્કિત્પર્વક શિખામણુ આપીને તેને નગરની બહાર ઉધાનમાં રાખી. ત્યારબાદ રાજને સમાચાર આપ્યા કે આજે હેવીને બોલાવવા માટે છંદ્ર પાસે એક પુરુષ મોકલ્યો છે તે કાલે આવશે. બીજે દિવસે તે પુરુષ રાજ પાસે જઈને બોલ્યો હે રાજન્ ! આપને વધામણી આપું છું કે મહારાણી ઉધાનમાં પધાર્યાં છે. તે સાંસારી રાજ બહુ ઝુશી થયો અને પોતાના શરીરે ધારણુ કરેલાં આભૂષણો. વર્ધાપકને આપી દીધાં. પણી મહોટા આડંબર સાથે પરિજન સહિત રાજ તેના સહામે ગયો. હેવીને જેઈ રાજનું હૃદય હર્ષથી ભરાઈ ગયું. અને બોલ્યો હે મંત્રી ! અહિસુત રૂપની શોભાવડે હેવીના સ્વર્ગવાસ સત્ય થયો. પ્રથમ તો હેવીની આકૃતિ શ્યામ હતી, તેમજ કાન વિકરાલ, દાંત લાંબા અને વિષમ હુતા, વળી મહોટા એઠ અને નાક ચીપદું હતું. પરંતુ હાતમાં તો સુંદર રૂપવતી હેખાય છે. મંત્રીએ બોલ્યા, રાજાધિરાજ ? આમાં કોઈ પ્રકારની આંતિકરણી નહીં. સ્વર્ગમાં હુમેશાં અમૃત રસનું લોજન કરવાથી આ હેવી આવા રૂપવાળી થઈ છે. તેમજ પ્રસન્ન થયેલા સુરાધિયે હેવીનાં દરેક અંગ પણ સુંદર બનાવ્યાં છે. હે મહારાજ ? વળી આપના આથહુને લીધે હેવીને અહીં મોકલી છે. ત્યારબાદ રાજ પ્રસન્ન થઈ પોતાના ગંગાંદ્રના અર્ધસન ઉપર તે હેવીને એસારી ભારે ઢાડથી પોતાના મંહિરમાં આવ્યો. અને તે કમળશ્રી સાથે બહુ પ્રેમને લીધે સહેદિત વિષય લોગ લોગવે છે. તેમજ સ્વર્ગ સંખ્યે વાર્તાએ તેને પુછે છે. કમળશ્રી પણ મંત્રીના શિક્ષણુ પ્રમાણે પ્રત્યુત્તર સારી રીતે આપે છે. અને સમય વ્યતીત કરે છે. માટે, હે અન્ય પ્રાણીએ ? વિષય રાગનો સર્વથા ત્યાગ કરે.

( २५८ )

श्रीसुपार्च्छनाथयरिति.

કરણુ કે જે રાગને લીધે મહિરાપાનથી ભત થયેલા મનુષ્યની માઝક કાર્ય અને અકાર્યનું કંઈ પણ ભાન રહેતું નથી. એમ જાણી શ્રાવક જનોએ પ્રયત્ન પૂર્વક અસત્ય વચ્ચાનનો પણ ત્યાં કરવો. અને વાચાળપણાથી અચોગ્ય ભાપણ પણ કરવું નહીં. વળી વિવેકરહિત વચ્ચાન એલાલવાથી પદ્ધાની માઝક આ લોકમાં પણ બહુ હુંઘી થવાય છે. તેમજ તેઓ પરલોકમાં જરૂર નરક ગતિ પામે છે. માટે વાચાળતાનો ત્યાગ કરી હુંમેશાં મધુર અને ચુંદિત પૂર્વક નિરવધ ભાષા એલવી. જેથી સંસાર સસુદ્ર સુખેથી તરી શકાય.

॥ ઇતિ તૃતીયગુણવતે મૌખર્યાતિચારવિપાકેપત્રકથાનકંસપાતમ્ ॥

— • —

## દુર્લભવણિકનીકથા.

— • —

### અતુર્થાધિકરણાતિચાર.

દાનવીર્ય રાજાએ દ્રીથી પ્રશ્ન કર્યો. પરમ ઉપકારી એવા હે ભગવાન् ? હવે ત્રીજા શુણુત્રતમાં ચાંચો. અતિચાર ડેવી રીતે સમજવો ? તેનું લક્ષણ દિશાંત સહિત કહો. શ્રી સુપાર્ચ્છ પ્રલુબ એલયા. હે ધરાધીશ ? જે ગ્રાણી ધંટી, ખાણીએ, સાંભેલું વિગેરે દૂષિત સાધનો જથાબંધ લેળાં કરી રાખે છે તે હુલ્લાં વણુકની ઘેડે નરકાદિ હુંઘ લોાગવે છે.

મુનિએ અને લુનેંદ્રભગવાનની મૂર્તિએવડે બહુ પવિત્ર, નિરંતર ઝોટા ઉત્સવોવડે વ્યાકુલ અને દુલ્લેખવણુક. પરચકના ઉપક્રમથી રહિત, પાઠકીપુર નામે નગર છે. તેમાં છજીવકાયની રક્ષા કરવામાં તરપર એવો વિજય નામે એકી છે. તેમજ લોકોના નેત્રકમલને

હુર્લાભનીકથા.

( ૨૫૬ )

પ્રકુલ્પ કરનાર લક્ષમી સમાન પદ્મશ્રી નામે તેની ઋ છે. હુર્લાભ નામે તેમને એક પુત્ર છે. વળી નામ પ્રમાણે તેનામાં ગુણું છે. તેથી તેને સુશુરનો સમાગમ બહુજ હુર્લાભ થયો. અનુક્રમે તે યોવન અવસ્થા પાંચ્યો. એક હિવસ એચ, નાક અને કાન જેના આપેલા હતા તેવા એક જુગારીની સાથે તે જુગાર રમવા ગયો. ત્યાં જુગારની અંદર હુર્લાલે પાંચસો સોનૈયાની જીત મેળવી. તેથી તે જુગારીએ સ્મશાનમાં જઈ પાંચસો સોનૈયા લાવી હુર્લાભને આખ્યા, એટલે તેણે જુગારીને પૂછ્યું. આ ધન તું કેની પાસેથી લાવ્યો છે ? શું સ્મશાનમાંથી લાવ્યો છે ? જુગારી બોલ્યો. તહારે તેનું શું કામ છે ? તું તહારું દ્વય ગણી લે. હુર્લાલે વિચાર કર્યો કે જરૂર કોઈ ભૂત, પ્રેત કે સિદ્ધ પુરુષે પ્રસન્ન થઈ આ ધન એને આપેલું છે. એમ જાણ્યી હુર્લાલે તેને કહ્યું. આ દ્વય તુંજ લઈ લે, પરંતુ આ દ્વયનો આપનાર કોણું છે તે તું ઝુને રૂપી રીતે જણાવ. જુગારી બોલ્યો હાતમાં તો તે ધ્યાનમાં એઠા છે. લલે ધ્યાનમાં એઠા હોય પરંતુ ઝુને બતાવ. એમ હુર્લાભના બહુ આશ્રમથી જુગારી તેને સાથે લઈ સ્મશાનમાં ગયો. અને ત્યાં ધ્યાનમાં એઠેલા એવા એક સુનિ ભહાતમા બતાવ્યા, પછી હુર્લાભ અને જુગારીએ નમસ્કાર કર્યો. ત્યારબાદ સુનીદ ધ્યાનમાં હોવાથી અન્ને જણું પોત પોતાના ઘેર ગયા.

હવે તૃણુને લીધે દરરોજ હુર્લાભ તે સુનિને નમસ્કાર કરવા જાય છે. અને એ પ્રહુર સુધી ત્યાં એસીને સુનિનો ઉપદેશ. તેમની બેદા જુઓ છે. પછી એક હિવસ સુનિ બોલ્યા હે સૌભ્ય ? શક્કાપૂર્વક ધર્મની આરાધના કર. હુર્લાભ બોલ્યો હે સુનીન્દ્ર ? આપના ચરણું કમલાની સેવાથી અધિક ઉત્તમ બીજો કર્યો ધર્મ છે ? પરંતુ કૃપા કરી છિન્ન અંગવાળા જુગારીની માઝુક ભહાતરી ઉપર પ્રસન્ન થાઓ. ત્યાર

( २६० )

श्रीसुपार्वनाथअवित्र.

आह मुनि आव्या. हे महालाग ? ते ज्ञानारीचे तने छेतर्यो छे. म्हें त्हेने कंदू पण आऱ्युं नाथी. परंतु महारा यादित्रवततुं ते कारणु थयो. छे. हुर्क्ष आव्यो. हे मुनींद ? आपना व्रत अहंकारां ते डेवी रीते कारणु भूत थयो ? ते कृपा करी म्हणे कडो.

मुनींद आव्या हे हुर्क्ष ? आ नगरनी अंदर सागरहते नामे अहु धनवान् श्रेष्ठी छे. वणी हुभेशां सागरहत्तश्रेष्ठी. दृव्यतुं रक्षणु तथा संपादन करवामां ते धण्णु दक्ष छे. तेने शोभट नामे एक पुत्र छे. एक दिवस श्रेष्ठी पोताना पुत्र साथे विचार करवा लाग्यो, हे वत्स ? आ लक्ष्मी म्हें अहु कृष्णी भेणवी छे. ते वात तुं पण जाणु छे. माटे धरथी अहार दूर रथये डोळ्य पण ठेकाणे पृथ्वीमां हाटीने आ लक्ष्मीनुं आपणे अरोभर संरक्षणु करवुं जेऽयचे. जे तेने धरमां राखीशुं तो सर्व लोकाने स्वाधीन थर्द विघराई जाये. तेथी स्मशान लूभिमां जै डोळ्य पण एकांत स्थलमां तेने हाटी हर्दचे. जेथी आपत् कालमां आपणुने आ लक्ष्मी सहायकारक थाय. एम गुप्तविचार करी पुत्रने लै द्वारा सागरहत्त स्मशानलूभिमां गये. पछी डोळ्य न हेचे तेवी रीते एकांतमां उडा आडा ज्ञानी दृ-प्यथी भरेला कलश ते आडानी अंदर हाटी हीधा. अने उपर माटी पूरी डोळ्य न जाणु तेवी रीते सरखुं करी हीधुं. त्यारभाद सागरहत्त आव्यो. हे पुत्र ? सर्व दिशाओमां अरोभर तपास कर. डोळ्यचे आ कार्य ज्ञेयुं तो नाथी ? पुत्र आव्यो हे तात ? आप डाढ्या थर्द आम उम आलो छो ? अति सयं कर स्मशानलूभिमां अहीं रात्रिचे डोळ्य आवे ? सागरहत्त आव्यो हे पुत्र ? परंतु योक्षस तपास करवामां शी हुरक्त छे ? त्यारभाद शोभटे त्यांथी नीकणीने तपास कर्यो तो मुडानी माझक अयेतन थर्द मार्गमां पडेवो. एक कार्पटिक तेना जेवामां आव्यो. अने ते धूर्त श्यास रोधीने

હુર્બની કથા.

( ૨૬૧ )

તે દ્રવ્યરસ્થાન જોતો હતો. તેથી તેણે પિતા પાસે જઈ કહ્યું કે કોઈક કાર્યાંતર મદદાની માફક ત્યાં પડેલો છે. એક્ષી બાબ્યો દ્રવ્યના લોભથી ખાસ રોકીને મદદાની માફ તે પદ્ધો હશે, માટે એનું કોઈ પણ અંગ છરીથી તું કાપી લાવ. એ પ્રમાણે પિતાની આજા લઈ શોલટ કાર્યાંતરની પાસે ગયો અને તેનો કાન કાપી લાવીને પિતાને બતાવ્યો. છરીથી પિતાએ કહ્યું કે તેનો ખીંચો કાન કાપી લાવ, કારણું કે ધૂર્ત માણસ હું અથી ડરતા નથી. પછી તે ખીંચો કાન કાપી લાવ્યો, તો પણ તે મદદાની સ્થિતિમાં પદ્ધો રહ્યો. પછી તેના પિતાએ કહ્યું કે બરેાબર પરીક્ષા માટે તેનાં ખીંચાં પણ અંગ કાપવાં જોઈએ. ત્યારથાં શોલટ ત્યાં ગયો અને એષા સહિત તેનું નાક પણ કાપી લીધું; પરંતુ દ્રવ્યના લોભથી તેણે તે સર્વ હુંઘ સહન કર્યું. અહો? દ્રવ્ય માટે પ્રાણીએ. કેવાં હુંઘ સહન કરે છે. હુનીયામાં કોઈ પણ એવું હુંઘ નહીં હોય કે જે ધન માટે સહન નહીં કરતું હોય. વળી દ્રવ્યના લોભથી મૂઢ પુરુષો પોતાનું જીવિત પણ ગણુત્તા નથી. તો અંગ છેદનની તો શી ગણુતરો? ત્યાર પછી કાર્યાંતરને મરેલો સમજી સાગરદત્ત એક્ષી પુત્ર સહિત પોતાને ઘેર ગયો.

પછી કાર્યાંતર અટ ઉલ્લો થઈને તે દાટેલું ધન ત્યાંથી કાઢી લઈ ખીંચો ડેકાણે ગોપવી હીધું. કાર્યાંતરનું કંપણ. વળી તેમાંથી કેટલુંકં દ્રવ્ય પોતાને વાપરવા માટે સાથે લઈ નગરમાં ગયો. અને ખાસ પોતાને માટે વખ, પાત્ર, ધૂપ, કપુર અને સુખવાસાદિક જે જોઈએ તે લીધું. વળી સૂક્ષ્મ વખવડે લપેટીને એષા, નાક, અને કાનનો હેખાવ સાબલની માફક કરીને વેશ્યાએને ત્યાં વિલાસ કરવા લાગ્યો. એમ કરતાં એક દિવસ તે કાર્યાંતર મીજાબાની કરવા માટે દ્રાગ, મિધાજ, વેખર, પુરી, વડાં અને ખાંનાં

( २६२ )

श्रीसुपार्थनाथविद्वा

विजेरे उत्तम पदार्थो लह उद्यानमां गये। तेमज चोतानी साथे नगरना सर्व गायडोने पथु ऐलावी गये, त्यां जह खु आनंद पूर्वक उत्तम वख, लोकनाहिक वडे सर्व लोकोने संतुष्ट कर्या याचक, अनाथाहिकने पथु ईच्छा प्रभाषे झुशी कर्या। तेथी तेच्यो पथु प्रसन्न थर्ड कर्ष्ण राजा समान हानी तरीके तेनुं वर्षन करवा लाग्या.

**त्यारभाऊ ते कार्पटिकनी लोकमां खु असिद्धि थध.** ते वात सागरदत्तना जाणुवामां आवी. के तरतज सागरदत्तनो तेने संदेह थयो के मात्र धन तो ते स्थानमांथी अणु नहीं लीधुं होय ? वणी तेम पथु अनवा जेवा संबंध छे. कारणुके वर्षते ते कार्पटिक शास रोकीने पडयो हुतो। अम विचार करतो सागरदत्त ते धूर्तने जेवा भाटे त्यां गये। कुंकुम चंहनना लेपथी पिंजरवर्णवाणो, वेश्याओना समागममां पडेलो, अने नाक, कान तथा ओष्ठने वस्त्रवडे जेणु गुप राखेला छे ओवा ते कार्पटिकने जेइ चोते चिंतवा लाग्ये। के, जे धन हुःअथी भेगववामां आवे छे, ते हुःअथीज लोगवाय छे। अने ते चार चरटाओने लोग्य थर्ड पडे छे। अम विचार करी श्रेष्ठी समशानमां गये। अने दृव्य रहित खाडाओ जेइ खु विलाप करवा लाग्ये। हा ! हैव ! अहं केई हिवस हुराचार सेव्यो नथी, छतां मंद पुन्यवाणा अहारा धननो नाश शाथो थयो ? वणी जे धर्म भार्गमां आ दृव्य वापर्युं डात तो आ स्थिति आवत नहीं। तेज प्रभाषे शास्त्रमां पथु कहुं छे के—

दानं भोगोनाश—स्तिसोगतयो भवन्ति वित्तस्य ।

यो न ददाति न भुड्क्ते. तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥

**अर्थ—“** दान, लोग अने नाश अम दृव्यनी वथु प्रकारनी

દુલ્ખભાગી કથા.

( ૨૬૩ )

ગતિ હોય છે.” તેમાં જે દાન આપતો નથી, તેમજ પોતે ઉપલોગ કરતો નથી તેના દ્વયની ત્રીજી ગતિ એટલે નાશ થાય છે. માટે મહેં દાનમાર્ગે કંઈપણ વાપર્યું નહીં, તેમજ પોતેપણ લોગ વિલાસ કર્યો નહીં, તેથી છેવટે મહારી સર્વ લક્ષ્મીને વિનાશ થઇ ગયો, હવે રાજસ્થામાં જઈ રાજને સાંભળાતું અને જો તે ધૂર્તાના પાસેથી મહારી લક્ષ્મી પાછી અપાવે તો હીક.

એ પ્રમાણે વિચાર કરી શેષી ન્યાયમંહિરમાં ગયો અને વિનિતિપૂર્વક કંદું કે હે રાજધિરાજ ! આપના દ્વયની ફરીયાદ. નગરના ઉદ્ઘાનમાં જે પુરુષ અનેક પ્રકારના વિલાસ લોગવે છે તે નક્કી ચોર છે. કારણું કે પ્રથમ મહેં સમશાનમાં પુષ્કળ ધન દાટયું હતું, તે કાઢી લઈને સમસ્ત વૈશવરકે તે ધૂર્તા આનંદ કરે છે. તે વાત સત્ય છે. એ પ્રમાણે શેષીનું વચન સાંભળી રાજને તરતજ કોટવાળને હુકમ કર્યો કે જલહી તે ધૂર્તને બાંધી મહારી આગળ હાજર કરો. તે સાંભળી તરતજ સુલટો સાથે કોટવાળ નગર બહાર નીકળી પડ્યો. અને તપાસ કરી તેને બાંધીને રાજની આગળ હાજર કર્યો. ચોર બોલ્યો, હે રાજન ! મહારે શો અપરાધ છે ? રાજ બોલ્યો, આ સાગરદત્તનો નિધાન ત્થે ચોરી લીધેા છે. ચોર બોલ્યો, હે નરાધીશ ! એણે મહારી પાસેથી કંઈપણ વસ્તુ લીધેલી છે તે જે મહુને પાછી આપે તો હું તેનું સર્વ ધન પાછું આપવા તૈયાર છું. રાજને શોઠ તરફ દાખિ કરી કે તરતજ તે બોલ્યો, હે રાજન ! મહેં તેની પાસેથી કંઈપણ લીધું નથી. વળી ચોરની પાસે લેવા જેવું પણ શું હોય ? તે સાંભળી ચોર બોલ્યો, હે રાજન ! બહુ પરિશ્રમને લીધે થાડીને સમશાનની પાસે ભરનિદ્રામાં હું સુધ રહ્યો હતો. તેવામાં ત્યાં આવી એણે મહારા કાન, નાક અને એષ કાપી લીધા છે. તે મહુને પાછી આપીને

( २६४ )

श्रीसुपाक्षेनाथयरित्रः

भुशीथी तेनुं द्रव्यं लक्ष्य ज्ञाय. आ प्रभाणु चेतनुं वचन सांखणी  
सागरदत्त गजराधि गयो. राज्ञे चुकाहो आप्यो के हे श्रेष्ठी !  
ज्ञायारे अनां श्रवणादिक अंगं पाणां आपशो. त्यारे तमने तमाङ्  
द्रव्यं मणशो. एम समलवी जन्ननेन विद्याय कुर्या.

सागरदत्त श्रेष्ठी घेर गयो अने पौताने वैराग्य भावना  
प्रगट थवाथी पौताना पुत्रने उपदेश आप-  
वैराग्यभावना. वा मांडयो के, हे वत्स ! जेम आ लक्ष्मी  
क्षणुभावमां चाली गह, तेमज आ ज्ञवित  
पणु चाल्युं जशे. वणी लैकमां जेनो जन्म तेने जरा अवस्था  
छाडती नथी. जरा साथे प्राणीभावने मृत्यु पणु अवश्य प्राप्त  
थाय छे. वणी मृत्युना मुखमां रहेला सर्व प्राणीयो थेडा  
हिवस जुवे छे. माटे जे भव्यात्माया धर्म इपी पाथेय ( आतु )  
साथे लक्ष्य परदेकमां प्रयाणु करे तो. जरूर त्यां उत्तम दशा  
लोगवे अने बहु मुझी थाय. तेमज कहुं छे हे—

पिपतिषुरद्य श्वो वा, जराधुणोत्कीर्णदेहसारोऽपि ।

धर्मं प्रतिनोद्यच्छति, वृद्धपशुः पश्यत निराशः ॥ १ ॥

बाल्येऽस्ति यौवनाशा, स्पृह्यति च यौवनेपीह वृद्धत्वम् ।

मृत्युत्सङ्गतोऽयं, वृद्धः किमपेक्ष्य निर्धर्मा ? ॥२॥

अथ—“आज के काल पडवानी धृच्छावाणो अने जराङ्गी  
धुणु ( डीडाए ) केतरी आध्यो छे हेहिपी सार केनो एवो  
वृद्धपशु जुओ तो खरा ? निराश अनी धर्मथी विमुख थाय  
छे. वणी बाल्यअवस्थामां यौवनना आशा राखे छे अने  
यौवनमां पणु वृद्ध पण्डुनी धृच्छा करे छे, तेमज मृत्युना  
ऐणामां रहेलो आ वृद्ध पुरुष कुछ अपेक्षाए धर्मनो उद्यम  
नथी करतो ? ” ते माटे हे पुत्र ! हवे झारो एवो निश्चय छे के

હુર્લબનીક્યા.

( ૨૬૫ )

હું ખના સથાનભૂત આ વૃહસ્થાશ્રમનો ત્યાગ કરી કોછપિણું  
વિશેષ પ્રતનો સ્વીકાર કરવો. અને હવેથી રહારી માતા વિગેરે  
સ્વજન વર્ગનું પાલન પોખણું રહારે કરવું. વળી દીનજનો ઉપર  
ઇયા રાખવી, જેથી રહારે દ્વયનો ટેટો રહેશે નહીં. પુત્ર બોલ્યો,  
હે તાત ! આપ કોની પાસે પ્રત અહુણું કરવા ધારો છો ? પિતા  
બોલ્યો, વેરથી નીકળ્યા બાદ જેચો મળશે તેમની પાસે લઈશું.  
એમ કેટલીક વાતચીત કરી પુત્ર સાથે શ્રેષ્ઠી નગરની બહાર  
ગયો. તેટલામાં ત્યાં મહાજાની સુસ્થિત આચાર્ય સન્મુખ  
આવતા હતા. તેમની આગળ જઈ શ્રેષ્ઠી વંદન કરી બોલ્યો,  
હે ભગવાન ! કૃપા કરી મુને જૈન દીક્ષા આપો, ત્યારખાં આ-  
ચાર્ય મહારાજ ત્યાંથી જૈનમહિરમાં ગયા. અને પ્રભાવના પૂર્વક  
વિધિ સહિત શ્રેષ્ઠીને દીક્ષા આપી. પછી નવિન દિક્ષીત થયેલા  
સાગરદન મુનિએ વિધિ પ્રમાણે બન્ને પ્રકારની શિક્ષા-સમા-  
ચારી શુરુમુખથી અહુણું કરી. ત્યારપછી ચોખ્ય સમયે અપૂર્વ  
એવી એકાકી વિહાર પ્રતિમાનો સ્વીકાર કરી હું ભવ્ય જીવોને  
પ્રતિઓધ આપું છું; હે સુભગ ! તે ચોરે સુવર્ણ આપનાર જે  
મુનિ કદ્દા હતા તેજ હું પોતે છું.

આ પ્રમાણે મુનિનું ચરિત્ર સાંલગી હુર્લબને વૈરાગ્ય ભાવના  
પ્રગટ થઈ અને તે બોલ્યો, હે ભગવાન !

**હુર્લબને પ્રમાદ.** શ્રાવકધર્મનો ઉપદેશ આપી સાંસાર સાગરમાં-  
થી મુદ્દારો આપ ઉદ્ધાર કરો. ત્યારખાં મુનિએ  
ભારપ્રકારના શ્રાવક ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. જેથી હુર્લબે વિધિ-  
પૂર્વક તેનો સ્વીકાર કર્યો. અને પોતાને વેર ગયો. જીજે દિવસે પો-  
તાના પિતાને પણ શુરૂ પાસે લઈ ગયો. અને તેમને પણ શ્રાવકધર્મ  
આપાવ્યો. ત્યારખાં પિતા પુત્ર બન્ને જણું ઉપયોગ સહિત પ્રયત્ન  
પૂર્વક ધર્મપાલન કરે છે. પછી કેટલોક સમય વ્યતીત થતાં

( २६६ )

श्रीसुपार्थनाथचरित्र.

हुर्वंभ त्रीज शुणुवतमां प्रभाही थयो। अने हिवसे हिवसे अहु  
हिं सानां उपकरण वधारवा लाग्यो। अङ्गु, दूरशी, आला, कटार,  
बाल विगोरे शाओ तैयार करी सन्मुख भीतमां भरावी राखे छे।  
तेमज द्वार आगण आंगणामां हडेक जलनां वाहनो तैयार राखे  
छे। वणी अहु अभिमानी थई ते खांडणीयो, सांभेलु, हुल,  
दंताली, कुहाडा विगोरे अनेक साधनो तैयार करवा लाग्यो; कारण  
के जेना घेर आवा साधनो न ढाय ते शुं गुहस्थाश्रम गण्याय ?  
अम हमेशां उद्धतपछु लोडेनी आगण ते योदे छे। त्हेने अहु  
अभिमानी समलु कोई शिखामणु पछु आपता नथी।

ओवामां ओक तेनो बालभित्र त्हेने त्यां आ०यो। अने हुर्वं-  
भना नामवाणो अङ्गु भीतमां लटकवेलो।  
**नामांकितअङ्गु.** तेना जेवामां आ०यो। अङ्गुनी आकृति अहु  
सुंदर हुती तेथी तेषु हुर्वंभने पूछ्या  
शिवाय ते उपादी लीधे। अने चेताने गाम जवा नीकज्यो।  
भार्गमां जतां ते अङ्गु गाडामांथी अशीने नीचे पडी गयो। ते  
तेना जाणुवामां आ०युं नहीं। ओवामां तेज भार्गु कोईक झाल-  
वटीयो। तेनी पाण्डा जतो हुयो तेना छाथमां ते अङ्गु आ०यो।  
ओटले तरतज ते पाटलीपुर नगरमां राज्ञने मारवा माटे तेज  
अङ्गु लाईने आ०यो। अने राज्ञना सुक्षेने युद्ध माटे चोकार पडावे  
छे, तेवामां राज्ञ राज्वाटिकामां द्वारवा नीकज्यो। हुतो, त्यां तेनो  
चोकार सांक्षणी राज्ञचे झालावटीयाने योवान्यो। पधी ते कुंधक  
तेने पूछ्याने। विचार करतो हुतो तेटलामां तेषु अङ्गु ओंचीने  
राज्ञ उपर भार्या के तरतज अंगरक्षके राज्ञने बचावी अङ्गुने  
अटकावी दीधे। तेमज भीज सेवके ते भरणीयानुं अङ्गु खुंची  
लाई तेने बांधीने भारी नाख्यो। पधी ते अङ्गु लाई राज्ञने आ०यो।  
राज्ञचे अङ्गु तरक्क दृष्टि करी जेयुं तो। तेनी उपर हुर्वंभनुं नाम

હુર્લબની કથા.

( ૨૬૭ )

નેથું : તેથી તરતજ રાજનાં નેત્ર લાલ થઈ ગયાં. અને મંત્રીને પૂછ્યું કે હુર્લબ કેનું નામ છે ? તેનો તપાસ કરી જલદી મુને ખબર આપો. મંત્રીએ શાખ અનાવનાર કારીગરોને તે ખર્ઝું બતાવ્યો. એટલે જે એ ખર્ઝુંનો ઘડનાર હતો તે ઓછાંચો આ ખર્ઝું વિજયશ્રેષ્ઠીના પુત્ર હુર્લબને મહેં ધરી આવ્યો છે, તે વાત હું જાણું છું એનું કંઈ જાણુંતો નથો. મંત્રીએ તે વાત રાજને કહી. રાજ ઓછાંચો હે મંત્રી ? આ વાત સંભવે છે, કારણું કે હુર્લબ બહુ અભિમાની દેખાય છે. એમ કહી રાજએ અંગરક્ષકોને મોકલી તેના વેર તથા હુકાને સુદ્રા કરાવી અને હુર્લબને પણ બાંધી પોતાની પાસે મંગાવ્યો.

**હુર્લબની પાછળ વિજયશ્રેષ્ઠી સ્વર્જન સહિત પોતે રાજ પાસે આવ્યો.** અને લોટ મૂર્ખી નમસ્કાર કર્યા બાદ

**હુર્લબને શિક્ષા.** વિનતિ કરવા લાગ્યો. હે નરેશ્વર ? મહારા પુત્રને ચોરની માફક બાંધીને અહીં લાવ-વાનું શું કારણ ? બ્રહ્મકૃતી ચઢાવી રાજ ઓછાંચો દે શ્રેષ્ઠી ? મુને શું કહેવા માગો છે ? વણિક જાતિ છતાં પણ તમહારો પુત્ર રાજયના લોકથી ખર્ઝું લઈ મુને મારવા માટે ફરે છે. એ વાત નક્કી છે. તે સાંભળી શ્રેષ્ઠી રાજના પગમાં પડી ઓછાંચો હે હેવ ? આ વાત કોઈ રીતે પણ સંભવતી નથી. ત્યારબાદ રાજએ તે ખર્ઝું કાઢીને શ્રેષ્ઠીની આગળ મૂક્યો. ખર્ઝું ઉપર હુર્લબનું નામ જોઈ શ્રેષ્ઠી એકદમ ગલરાધ ગયો. અને રાજને પ્રાર્થના કરી કહ્યું કે હે રાજન ? બાંધનથી સુક્ત કરી હુર્લબને અહીં ઓલાવો. જેથી તે પોતે આ ખર્ઝું વૃત્તાંત યથાર્થ રીતે કહેશે. રાજની આજાથી હુર્લબ ત્યાં આવી પ્રણામ કરી રાજની આગળ ઉલ્લો રહ્યો. રાજએ પૂછ્યું હુર્લબ ? આ ખર્ઝું તહારો છે ? હુર્લબ ઓછાંચો હે નરહેવ ? આ ખર્ઝું તો અહારો છે. પરંતુ અન્ય ગામનો

( २६८ )

श्रीमुपार्क्षनाथचरित्र.

રહीશ એક અહારો ભિત્ર આ ખરું અહારા ઘેરથી લઈ ગયો હતો. તે વાત પણીથી અહારા જાણવામાં આવી. તે સાંભળી રાજાએ તેજ વખતે પોતાના સુલટને મોકલી તેના ભિત્રને પણું ત્યાં બોલાવ્યો અને રાજાએ તેને પૂછ્યું કે હુલ્લાબનો જે ખરું તું લઈ ગયો હતો તે ક્યાં છે ? ભિત્ર બોલ્યો હે નરાધીશ ? હું અહારા ગામ જતો હતો તેવામાં રસ્તે ચાલતાં ડેખ પણ ઠેકાણું તે ખરું અહારી પાસેથી પડી ગયો, પણ તે કોણા હાથમાં આવ્યો હતો તે હું જાણતો નથી. રાજાએ તે ખરું તેના હાથમાં આપીને કહ્યું, કેમ આ કે બીજું ? મિત્ર બોલ્યો જે મહેં લીધું હતું તેજ આ છે. એમાં કંઈ સંશય નથી. પણી મંત્રી બોલ્યો હે રાજાધિરાજ ? કોઈ કાળે પણું આ કાર્ય એઓનું સંભવતું નથી. માટે આ શ્રેષ્ઠોના કુદુંબ ઉપર મહેરભાની કરી આપ સ્વર્ણાનમાં પધારો. ત્યાર ખાદ રાજાએ હુલ્લાબને કહ્યું. તું વાણીયાનો પુત્ર છે. તહારે આ ખરુંનું શું કામ છે ? એમ બહુ ઠપકો આપી રાજાએ તેના ઘરમાંથી સર્વ શસ્ત્રો મંગાવી પોતાના સ્થાનમાં રાહયાં. અને હુલ્લાબ પણ કુદુંબ સહિત પોતે ઘેર ગયો. પરંતુ દ્રબ્ધાંધનની પીડાને લીધે શરીરમાં ઝડિસ ભરાઈ જવાથી સાતમા દિવસે આદોચના કયો શિવાય હુલ્લાબ મરણુને વશ થયો. અને સંસાર ભ્રમણુમાં અનેક હુંઝો સહન કરશે. તેમજ વિજય દ્રેપી સમ્યકત્વાદિ શ્રાવકુદ્યમંની આરાધના કરો સૌધર્મ દેવલોકમાં ઉત્પત્ત થયો. અને આ ભૂલોકમાં તીજે લવે મોકષપદ પામશે.

इति तृतीयगुणवते चतुर्थाऽतिचारविपाके दुर्लभकथानकं  
समाप्तम् ॥

— \*—

મૂળદેવવરણિકની કથા.

( ૨૬૬ )

## મૂળદેવવરણિકની કથા.

—○○○—

### પંચમભોગાંગાતિરેકાતિયાર.

દાનવીર્ય રાજા બોલ્યો હે જગફનુરુ ? આપ દ્વારું છો ? આપ જાનરૂપી સૂર્યવડે આ જગતરૂપી કમલવનને પ્રકૃષ્ટ કરેં છો; તેમજ આપ જાયાતમાઓના ઉદ્ધારક છો માટે કૃપા કરી ત્રીજા ગુણુત્તમાં પાંચમા અતિયારનું લક્ષણું દાખાંત સહિત સંભળાવીને કૃતાર્થ કરેં. શ્રી સુપાર્વ્યપ્રભુ બોલ્યા હે ભૂમિપાલ ? ત્રીજા ગુણુત્તમને ધારણું કરી ને પ્રાણી અતિશય લોગ સાધનોનું સેવન કરે છો, તે મૂળદેવવરણિકની માફક આ લોકમાં પણ બહુ દુઃખી થાય છો. નેમને —

આ ભરતક્ષેત્રમાં આ ( ખ્યા ) તિક ( ખાઈ-પ્રસિદ્ધિ ) વડે સહિત, વળી શત્રુઓના ઉપદ્રવનું રક્ષણ મૂળદેવદાખાંત. કરનાર અને બહુ ઉજ્જ્વલ એવા સત્પુરુષ સમાન કિલ્લાવડે વિભૂષિત કાંચી નામે નગરી છે. તેમાં સ્વાભાવિક ઉદાર, સર્વથા વ્યસન રહિત અને વિભૂતિવડે સુશોભિત નામ પ્રમાણે ગુણવાન् રજીશોખર નામે રાજા છે. તેમજ તે નગરીમાં વિશેષ વૈલાવવડે વિરાળુત વૈશ્રમણું નામે શ્રેષ્ઠી રહેં છે. અને મૂળદેવ નામે એક તેનો પુત્ર છે. વળી તે યૌવનાર્દ્દથ્યો, તેવામાં તહેને ડોઈક પુરુષ સુનિ પાસે દર્શન કરવા માટે લઈ ગયો. વિસ્મત થયેલા મૂલદેવે પરમભક્તિવડે સુનિને નમસ્કાર કર્યો. સુનિએ પણ મેધ સમાન ગંભીર વાણીવડે તેને ધર્મ લાલ આપ્યો. પછી મૂલદેવ પણ પૃથ્વીપર નીચે એઠો. સુનિએ દેશનાનો પ્રારંભ કર્યો. પ્રસંગ મળવાથી મૂલદેવે પ્રશ્ન કર્યો. હે લગ્ન ? આપને વૈરાગ્ય થવાનું મુખ્ય શું કારણું ? નેથી પોતાના

( २७० )

श्रीसुपार्थनाथचरित्र.

हेहनी पछु अपेक्षा छोडी हध आवी हुअ्यर तपश्चर्यां करे। छे ? मुनींद्र जोहया अनेक हुःअना निधानभूत आ संसारमां वैराग्यतुं कारणु न डोय तेवी डोँध पछु वस्तु नथी. वणी तुं पोतेज विचार कर. राणी पुढेने जे जे रागजनक हेखाय छे ते हरेक पहार्थ विवेकी पुढेने वैराग्य जनक हेखाय छे. जेम पोतानुं शरीर डेवल अशुचिथी भरेलुं छे छतां पछु भूढ पुढेपा भोळ युद्धिवडे तेने सुंदर जाण्ये छे. तेमज हरेक वस्तुने पछु सुंदरपछु जुचे छे. परंतु वस्तुतः सुभरहित अने पोतानी युद्धिवडे कवित सुभमय ओवा आ संसार उपर अरा पांडितोनी अइयि छोय छे. वणी ते वैराग्य भावना कारणु शिवाय उत्पन्न थती नथी. माटे हे श्रद्धालु ! अहारा वैराग्यतुं निमित्त कारणु तुं सांबण.

अवंतीदेशमां उज्जयनी नामे बहु सुंदर नगरी छे. तेमां  
मनोहर लावळयतुं सुभय स्थान अने  
वैराग्यकारणु. उत्तम यौवनने लीघे सुंदर रूपवडे अहभूत  
विलासवाणी विलासवती नामे वेश्या छे.  
रतिना नेत्रांजननी सणी छोयने शुं ? एम जेनी वेणी रूपी लता  
नवीन अंजनना पुंज समान सुंदर शोखो छे. वणी निरंतर  
धनुष ऐंचवाथी बहु थाडी गचेला कामहेवने जगतनो. विजय  
करवा माटे सजेली ते वेश्याने हस्तभवली समान हुं मानुं छुं.  
तेमज ते नगरीमां हुःमेशां लोणी, त्याणी, विद्वान् अने बहु  
धनवान् वीरविलास नामे श्रेष्ठी रहे छे. हवे एक हिवस बहु  
परिज्ञन सहित रथमां येसी अज्ञानमां जटी ते विलासवती वेश्या  
वीरविलासना जोवामां आवी. तेथी तेनुं चित्त विलासवती तरह  
दोरायुं. पधी तेणु एक रात्रीना समागम माटे सो सोनैया आपी  
पोताना. माणुसने तेनी पासे भोळ्यो. विलासवतीचे कल्पुं के  
एक रात्री माटे झुने महोन्मत्त हस्ती आपवे छोय तो हुं त्यां

भूगेवनीकथा.

( २७१ )

આવીશ. એમ તહારા સ્વામીને કહેવું. સેવકે આવીને પોતાના શેડને સર્વ હુકીકત કહી, તે પ્રમાણે સાંખળી તેણે જાણું કે હાથી આપ્યા શિવાય તેનો સમાગમ થવાનો નથી એમ નક્કી કરી તેની ઉપર બહુ આસક્તિને લીધે વીરવિલાસ તત્કાળ હુસ્તીઓની શોધ માટે વિધ્યાટવીમાં ગયો. “ અહો ? રાગાંધ પુરુષો સ્ત્રીઓ માટે શું નથી કરતા ? ” તેમજ શાસ્ત્રમાં પણ કહું છે કે—

યદ્યાયન્તિ ચ વાદયન્તિ ચ નુણાં નૃત્યંતિ ચાગ્રે સદા,  
નીચાનામપિ ચિત્રચાદુરચનાસ્તોત્રાણિ કુર્વન્તિ ચ ॥  
આરોહન્તિ ચ રોહણાદ્રિશિકરં ક્રામન્તિ ચામ્ભોનિર્ધિ,  
મર્ત્યાસ્તત્ર નિમિત્તમુત્તમતમા મતેમકુમ્ભમસ્તની ॥ ૧ ॥  
અપહૃતહૃદયાનાં કામિનાં કામિનીભિ:,  
કિમિહ ભવતિ કામં દુષ્કરં હીકરઞ્ચ ॥  
વહતિ શિરસિ ગજ્જાં શઙ્કરો દાનવારિ:,  
પુનરૂરસિ સલીલાં લોલનીલોત્પલાક્ષીમ ॥ ૨ ॥

અર્થ—“ મનુષ્યો જે લોકોની આગળ હુમ્મેશાં નૃત્ય, ગીત અને વાદ્ય વગાડે છે, નીચ પુરુષોની પણ મધુર વચ્ચેનોવડે સ્તુતિ કરે છે, રોહણાયલના શિખર ઉપર આરૂઢ થાય છે. અને સમુદ્ર ગમન પણ કરે છે તેમાં મુખ્ય કારણ સ્ત્રી ગણ્યાય છે. ”

“ યુવતિઓએ હરણુ કર્યું છે હૃદય જેમનું એવા કામિ પુરુષોને આ જગતમાં અત્યંત હુક્કર અને લજલકારક શું છે ? અર્થાત કંઈ નથી. કારણુ કે શંકર ગંગાને મહ્સુતકમાં ધારણુ કરે છે, વળી કુણ્ણ વિલાસવતી લક્ષ્મીને વક્ષ સ્થળમાં વહન કરે છે. ”

વીરવિલાસ શ્રેષ્ઠી અનુક્રમે વિધ્યાચળમાં જઈ પણેંચયો. અને  
પશ્ચાત્તાપ પૂર્વક શોધ કરતાં બહુ વર્ષે ઉત્તમ હુસ્તીઓ મેળા-  
વ્યા. પછી ત્યાંથી હુસ્તીઓને લઈ પોતાની  
નગરીમાં પ્રવેશ કર્યો અને પોતાને ઘેર ગયો.

( २७२ )

श्रीसुपार्थनाथवस्त्र

प्रभातमां विरपुड़बोने बोलावी विलासवती वारांगनाना समाचार  
 पूछया, एटके तेओचो जवाबमां जण्णांयुं के हालमां ते नामनी  
 वेश्या अहीं छे नहीं. त्यारभाद तेनी शोध माटे वीरविलास पोते  
 जे ते वेश्याच्योना पाडामां गयो. अने तेओने पूछवा लाग्यो के  
 विलासवती क्यां गाई? प्रथम आ धरमां ते रहेती हुती एम नि-  
 शाना पूर्वक कही तेणु ते धरमां प्रवेश कर्यो अने अंदर जेयुं तो  
 जेहीनुं भस्तक नभी गयेलुं छे, हाथमां लाकडीनो टेको दैर्घ उली  
 रहेली, सेंकडो वलीयां (करोचलीओ) थी शरीर पूराई गयेलुं, च-  
 द्रन, डिरण समान वेत तेशने धारणु करती, शरीरे देशमात्र पछ  
 लावण्य तो हतुंज नहीं, सुखमांथी लाग नीतरती हुती, तेम सुख-  
 नी अंदर दांत तो हेखाता नहेता, जेना स्तन लथडता होवाथी  
 छातीने लजवता हुता, जेनां नेत्र भणथी फूषित थवाथी विलक्षण  
 लागतां हुतां एवी एक वृद्ध ओ तेनी नजरे पडी. तेने विलास-  
 वतीना समाचार पूछया. वृद्ध खी बोली आहु? तहारे तेतुं शुं  
 काम छे? वीरविलासे पोतानुं सत्य वृत्तांत जण्णांयुं एटके ते  
 बोली, तुं जेनी इच्छा करे छे तेज हुं पोते छुं. हवे तो हाडङ्गना  
 उकडा समान हुं थर्ड गाई छुं. एम वज्रपात समान तेतुं वचन  
 सांलणी वीरविलास हृदयमां चिंतववा लाग्यो, अदे? रहारा सर्व  
 विलास नष्ट थया. अंडो? हैवगति अणवान् छे. करेलो प्रयास  
 व्यर्थ थयो, पोतानुं चिंतवेलुं सिन्दू थतुं नथी, कोर्डपछु कर्मना  
 उहयने लीघे आ स्थितिमां हुं आवा पञ्चो, एम विचार करतां  
 तेना हृदयमां अत्यंत वैराग्यभाव प्रगट थयो. इरीयी ते चिंत-  
 ववा लाग्यो के स्वाभाविक चंचग एवा आ यैवनने धिक्कार छे:  
 कारणु के जेने जेई हुं रागी थयो हुतो तेनी आजे आ स्थिति  
 आवी पडी छे. वणी जेना सरल, चंचग अने उज्ज्वल एवा जे  
 कटाक्ष विक्षेप तडणु जनोना हृदयने चोरता हुता तेओ नेत्र

મૂળહેવની કથા.

( ૨૭૩ )

સહિત નષ્ટ થયા, તેમજ બ્રમર અને કાજલ સમાન શ્યામ જેનો ડેશપાશ દીપતો હતો તે આજે ચામરી ગાયના વૈત પુછની કાંતિને અનુસરે છે. મોગરણી પાંખડી સમાન જેની દંતપદ્ધિત પ્રથમ શોભતી હતી તે હાલમાં જરાડૂપી રાક્ષસણીના ભયથી દૂર નાશી ગઈ છે. એ પ્રમાણે કાવના કાવતો તે શેષી પોતાને વેર ગયો. અને તરત જ કુદુંખની રણ લઈ યાચકજનોને બહુ હાન આપી ઉનમાંદિરામાં મહોત્સવ કરાવ્યા તેમજ વિધિપૂર્વક દીક્ષા અહંક કરી. તેજ હું પોતે. તે સાંસળી મૂળહેવ બોલ્યો, આ સંસાર માર્ગમાં ભંય પ્રાણીઓને અનેક પ્રકારનાં વેરાય કારણ આવો મળે છે. પરંતુ આ પ્રમાણે તો તમે જ કરો શક્યા. હે સ્વામિનુ? આ પ્રમાણે વેરાયનાં કારણ અહને પણ આવી મળે છે, પરંતુ લોગ તૃણામાં હું આસક્ત છું તેથી અહને વેરાય થતો નથી, માટે અહને વૃહીધર્મનો ઉપદેશ આપો. ત્યારબાદ મુનિએ આર પ્રકારનો શ્રાવક ધર્મ કહ્યો. મૂળહેવે પણ વિધિપૂર્વક તેનો સ્વીકાર કર્યો અને મુનિને નમસ્કાર કરી પોતાને વેર ગયો. ડેલોક સમય ધર્મ પાતન કર્યું. પશ્ચાત્ લોગ તૃણામાં બહુ લુણ્ય થઈ લક્ષ્મીના મદથી પ્રમાદમાં પણ્યો. તેથી ધીમે ધીમે ધર્મ માર્ગ ભૂલીને અવળે રસ્તે ચડી ગયો. પણી લોગ સાધનોમાં નિરંતર મૂર્છિત થઈ લાત, દાળ અને શાકાહિ પદાર્થને બહુ તૈયાર કરાવવા લાગ્યો. તેમજ તૈલ, મહા તૈલ અને ખલી, તથા જલાહિક લોગો-પદોણી પદાર્થને બહુ એકઢા કરવા લાગ્યો. વળી લોકમાં જણાવતો હતો કે, જને ત્યાં શરીર નિમિત્ત ઉપયોગી લોગસાધન ન હોય તે લોણી કેવી રીતે ગણ્યાય? જન્યાં આગળ સેવક લોકો ઈચ્છા પ્રમાણે વિલાસ કરે છે તેજ લોણી કંઈ શકાય.

મૂળહેવને એક નાની જહેન હતી, તે વૃહીધર્મમાં બહુ રાગ-

( २७४ )

श्रीसुपार्थनाथचरित्र.

वाणी हुती, आ वात तेषीना ज्ञानवामां  
अहेनगोउपदेश. आवी एटदे तेषीमे भूलहेवने क्लुं के  
 हे बंधु ! आ अनुयित कार्य तुने घट्टुं  
 नथी, वणी धननी पायमाली थाय छे ते तो त्हारा हिसाबमां  
 नथी, परंतु पापथी केम डरतो नथी ? तेमज क्लुं छे के—

अहाए तं न बंधइ, नमणडाए अ बंधए जीवो ।

अहु कालाईया, नियामया न उ अणडाए ॥

**अर्थ—**—आ संभारमां प्राणी अनर्थ भाटे जेट्हुं कर्म आधि  
 छे, तेट्हुं अर्थ भाटे बांधतो नथी, कारण्य के अर्थमां कालाहिक  
 कारणो। नियामक थाय छे अने अनर्थमां तेच्चो। नियामक थता  
 नथी। भूलहेव योह्यो, अहेन ! दरेक पोतपोतानी स्थिति ज्ञाने  
 ए वात सत्य छे। कृपण शिरोभाणी एवा अहारा अन्हेवीने  
 त्यां कोई हिवस कागडो पणु उडतो नथी, तेवी रीते अहारे घेर  
 नहीं थाय। वणी अहारे त्यां तुच्छ लोज्जनाहिक व्यवहार पणु  
 कोई हिवस चालशे नहीं। त्हारा पतिने घेर लोक लुणे भरे छे।  
 तेमज धरनां भाणुसो पणु वर्खतसर धान लेगां थतां नथी। तो  
 वासी लात विगेवे पडी रहेवानी तो वातज शी ? आ प्रभाणे  
 सांकणी सेवक लोको। तेनी इबड लोको आगण क्लुं छे के, अभारो  
 स्वामी मुलहेव तो लोज्जननो समुद्र छे, एमना जेवो उहार अमे  
 कोईने हेमता नथी। कारण्य के अन्य लोकोने पोतानुं उहर पीष्य  
 कर्वुं पणु मुश्केल थर्ध पडे छे। ए प्रभाणे पोताना सेवकोनां  
 वर्चन सांकणी अहु अुशी थर्ध भूलहेव योह्यो, अहेन ! हवे  
 कोई हिवस पणु अहने त्हारे आवी शिरोभाणु आपवी नहीं।  
 वणी हमेशा अहु छुटथी आप-ले करतां अहारा हिवसो आनं-  
 द्धमां चाह्या जाय छे। क्षणु मात्रमां हृष्ट अने नष्ट एवा वैष्णवतुं  
 इत्त भान एट्हुंज छे के, स्वज्ञन पारेवारतुं सहैव पोषणु करवामां  
 आवे, एम सांकणी तेनी अहेन मैन करी ऐसी रही।

મૂલહેવની ધ્યા.

( ૨૭૫ )

**શનિવારના દિવસે તૈલ તથા આમળાં વિગેરે સ્નાનની સામગ્રી લઈ મૂલહેવ પોતાના પરિવાર સાથે સ્નાન કરવા નહીં ઉપર ગયો. ત્યારણાં સેવક લોકો શરીરે તૈલ મર્દિન કરતા હતા તેવામાં ત્યાં પથિક લોકોનો સસુધાય આવ્યો,**

**મૂલહેવની ઉદારતા-** તેમાંથી એક જણે તૈલ, અતિર વિગેરે સ્નાનની સામગ્રી પુષ્કલ પડેલી નેઈ મૂલહેવના એક માણુસને પૂછ્યું તંદુરાદે સ્વામી જો અમને તૈલાદિક આપે તો અમે પણ સ્નાન કરીએ. તે જાંબળી મૂલહેવ બોલ્યો, આ લોકોને ઉત્તમ તૈલ, અતિર વિગેરે જે નેઈએ તે આપો. પછી તે સુસાક્રોચે પોતાની ઈચ્છા પ્રમાણે તૈલાદિકનો ઉપયોગ કર્યો. પોતાના ઘેરથી બીજું મંગાવીને પણ ઝરીથી તેઓની ઈચ્છા પ્રમાણે આપ્યું. તેથી તેઓ પણ સંતુષ્ટ થઈ સુક્રાકંઈ બહુ સ્તુતિ કરવા લાગ્યા. ત્યારણાં પોતાના ઘેરથા મોદક, ઘેખર, ખાળાં; વિગેરે મંગાવી તેઓને સારી રીતે લોજન કરાયું.

**એ પ્રમાણે નહીં ઉપર આનંદ ચાલી રહ્યો હતો તેટલામાં તે પથિક લોકોના વૈરિએ મારે, મારે,**

**શરૂઆતની ધાડ-** મારે, એમ બોલતા ત્યાં આવી પહોંચ્યા અને તેઓના ઉપર એકદમ પ્રહાર કરવા લાગ્યા. તે પ્રસંગે કેટલાક પથિક લોકો સ્નાન કરતા હતા અને કેટલાક જમતા હતા. તેથી કોઈ પણ શાખ લઈ તેઓના સહામાન થઈ શક્યા. ત્યારે મૂલહેવ હાથમાં ખર્જ લઈ ઉલ્લો થયો અને ઓલ્યો કે, આ લોકો રહારા પાસે આવેલા છે માટે તેમની ઉપર પ્રહાર કરશો નહીં. તેઓ બોલ્યા, હે ભાદ્ર ! તું હર ચાલ્યો જા, અહીં રહેવાનું હારે કંઈ પણ કારણ નથી. અને અમે આ લોકોને છોડવાના નથી. કારણ કે આ લોકોએ અમારા ધર્માં બંધુઓનાં મસ્તક રજળાયાં છે. તેથી અમે વેર લીધા વિના શાંત થવાના

( २७६ )

श्रीसुपात्र नाथचरित्र.

नथी. एम सांक्षणी भूलदेव आव्यो, आ दोडे। पेतानां शस्त्र  
धारण्यु करे तेटलीवार तमे शांत थाए। एम कहुं तो पण् तेए  
अपाटाखंध प्रहार करवा भंडी पडया। पछी तेएमामांथी पछु  
जेए। समर्थ हृता तेए। वैरिएना सहामा थई गया। आ प्रभाणू  
अज्ञेतुं परस्पर शुद्ध चालयुं। एटले भूलदेवना सेवकोंचे कहुं के,  
हे स्वाभिन् । वेलासर तमे घेर चाल्या जाए। अहो रहेवातुं  
कंध कारण्यु नथी। तो पण् भूलदेवने जेवानो बहु रस लाग्यो।  
तेथी त्यां उलो। रहीने जेतो हुतो तेवामां कोळच्ये वैदी उपर अहु  
जेसथी मारेलो बाणु भूलदेवना शरीरे चेंटवाथी तत्काल ते  
भरण्य पाअयो। अने त्रीजुं शुणुवत कलांकित करवाथी पांचमा  
अतिचार वडे भयंकर भव भ्रमणु करी अन्य भवमां भोक्षपद  
पामयो। माटे हे ल०५ प्राणीयो ! जेए। अनर्थ हंडो त्याग  
करी सदाकाल धर्मसेवन करे छे तेएने धन्य छे। वणी तेएने  
वारंवार नमस्कार, अने तेएनोऽ मनुष्य भव सङ्कल छे। तेमन  
समव्र अनर्थं भूल कारण्यु, शुद्ध धर्मनो कहो हृशमन अने  
महा हंड ३५ अवे। अनर्थ हंड क्षणु मात्र पण् सेवयो। नहीं  
इतिवृतीयगुणवते पञ्चमातिचारविपाके भूलदेवकथानकं समाप्तम्।  
तत्समाप्तौ श्रीमद्भूक्षमणगणिविरचितप्राकृतपदबन्धश्रीसुपार्घनाथजिन-  
चरित्रस्य श्रीसकलसूरिपुरन्दरायमाणपरमगुरुतपागच्छाधिराजशा-  
स्त्रविशारदजैनाचार्ययोगनिष्ठाध्यात्मज्ञानदिवाकरश्रीमद्भुद्धि-

सागरसूरिशिष्यप्रसिद्धवक्तेति लब्धव्याति, व्याख्यान-  
कोविद जैनाचार्य श्रीमद् अनितसागरसूरिकृतगुर्जर-  
भाषानुवादे प्रभुदेशनाप्रबन्धे सद्व्यान्तातिचारव्या-  
स्योपेतं अनर्थदंडनामतृतीयगुणवतं समाप्तम् ॥

— → \* ◊ ◊ \* ← —

नागहत्तीकथा.

( २७७ )

## नागदत्तकुमारनी कथा.

### सामायिकत्रता.

दानवीर राज ऐल्यो,-कुपासागर ! गुणुत्तमनो अधिकार सांकणी मने बहु आनंद थयो. हવे सामायिक त्रतनो अधिकार सांकणवानी છબ્ધા છે. શ્રી સુપार्खप્રલુ ઐल्यो,-હे રાજન ! સાવધ ચોગનો પ્રતિપક્ષી એવા સામાયિક ત્રતને જે પુરુષ ધારણ કરે છે તે નાગહત્ત કુમારની પેડે પશ્મ સુખ મેળવે છે.

બહુ ઉત્ત્રત લુન મંહિરોના શિખરોને લીધે સૂર્યના રથના ધોડાઓની ગતિ જેમાં અટકી પડી છે, એવું

**नાગહત્ત-** સિંહપુર નામે નગર આ ભરત ક્ષેત્રમાં પ્રસિદ્ધ છે. તેમાં મહોટા મહોટાને જીતવામાં

બહુ દક્ષ રિપુમદ્દન નામે રાજ છે. વળી પ્રેમ સંપત્તિનું મુખ્ય મંહિર વસુમતિ નામે તેની સ્વી છે. એક હિવસ તે સુખ શય્યામાં નિંદ્રાવશ થઈ હતી; તેવામાં પરોદીએ સ્વાનમાં દેહિયમાન મણ્ય રતનોની વિકસવર કાંતિથી મનોહર, એવી ઝણુઓ વડે સુશોભિત સર્ફને જેઠ તત્કાલ તે જાથ્તુ થઈ, અને પોતાના સ્વામિને સ્વાન વૃત્તાંત નિવેદન કર્યું. રાજ ઐલ્યો-હે પ્રિય પતિ ! જરૂર હને સતુ પુત્રનો લાલ થશો, એવો આ સ્વાનનો પ્રભાવ છે. વળી તે પુત્ર એક છત્રધર થઈ અભિલ ભૂમંડલનું રાજ્ય કરશો. રાણી ઐલી હે સ્વામિન, જ્ઞાપનું વચન સત્ય થાઓ ! તેજ હિવસે દેવીને ગર્ભ રદ્ધો. અને પૂર્ણ સમર્પે શુભ લગ્નમાં પુત્ર જન્મ્યો. સ્વાનના અનુસારે મહોત્સવ પૂર્વક નાગહત્ત એ પ્રમાણે ગુરુ જનોએ તેનું નામ પાડ્યું. ત્યાર ખાફ અનુકમે પ્રતિ હિવસ વૃદ્ધિ પામતા નાગહત્તે કલાચાર્યની પાસે સમગ્ર કલાઓનો.

( २७८ )

श्रीसुपात्रं नाथयरित्रं

अव्यास कर्त्ते; हવे पञ्च ( पञ्चा ) लक्ष्मीना कोशने वधारवामां सूर्य समान, अमर शुद्ध मंत्रिनो पुत्र नयचंद्र तेनो भाव भिन्न हुतो. इप सौंहर्यमां ते पोताना समानज हुतो. वणी ते चार प्रकारनी खुद्धिवडे समृद्ध अने श्रेष्ठ गुणोवडे स्तिंगध एवेते नयचंद्र सर्वत्र विख्यात हुतो.

ऐक हिवस नयचंद्र राजकुमारनी पासे सुतो हुतो. अधौ रात्रीना सभये ते जापत थयो तो कुमारने युवतिनो शयनमां हीठो नहीं. तेथी ते ऐकहम समागम संभात थर्द चारे तरफ कुमारने शोधवा लाग्यो. तेवामां भेलना उपरना माणमां ऐकांतमां ऐक युवति साथे विचार करतो. कुमार तेनी दहिगोचर थयो. पछी युवति तरफ दृष्टि करी, आभरण्यानी कांति वडे हिंगंग नाना सुखने गोर करती अने चंद्र समान सुखाकृति छे केनी, ऐवी आ, रति, रंभा के, लक्ष्मीहेवी छे ? ऐम चिंतवतो हुतो, तेटलामां ते ओ योली,-हे मंत्री पुत्र ! अहीं कुमार पासे आववामां तमने कंड्यपण्डु हरकत नथी. बन्नेनी ऐकांतमां त्रीजे ज्ञाय तो भूर्भु गण्याय. ऐ नीति वाप्त्यनु स्मरणु करवुं सर्वथा तुमने अनुचित छे. कारणुडे, तमे अज्ञे भाव देहथा ज किन्न छे. परंतु हृदयथी अकिन्न छे. माटे तुमे अहीं आवेत. त्यारभाद कुमार पण्डु योहयो हे भिन्न ! तुं शामाटे द्वार उलो रथो छे ? अहीं आव. नयचंद्र तरतज तेमनी पासे गयो. तेटलामां कुयांकथी अचिंत्य थीलु ऐक भालिका आवी. अने नमस्कार करी ते योली हे स्वाभिनि ! कार्य सिद्ध थयुं के नहीं ? स्वाभिनी योली, हजुसुधी गहे कंड्यपण्डु प्रयोजन जण्यावयुं नथी. अहुने कहेतां लज्जा आवे छे माटे हवे तुं ज निवेदन कर. भालिका योली, हे कुमार ! क्षणुभाव सावधान थर्द तमे अभाइँ कार्य आंभणो. ऐम कहीं कंड्यक कहेवानो प्रारंभ करती हुती. तेटलामां

नागदत्तनी कथा.

( २७६ )

विकस्वर नील कमणी कांति समान सुखाकृतिने धारण्य करती, अन्य डेईक खी शुभरव करता भ्रमरायेना नाहथी शण्दायमान, सुंदर पुण्यमाला लઈ ते युवतिनी सन्सुख आवीने योली, आ वरमालाने आप अहंयु करे. अने कुमारना कंठमां पहेरावे. पछी ते योली हु सभि ! शांत था ! उतावળ करीश नहीं. त्यारबाट नयचंद्र मंत्री योहयो, भरोअर हुं तम्हारी वात समल्ल गये. हुवे वधारे परिश्रम करवानी ज़दर नथी. वणी त्हारा उत्सुकपश्चात्तु झारण्य तुं जण्णाव. त्यारे भील बालिका योली, रत्नाकर नगरमांथी मलयडेतु राजानी चार कन्याओ. कुमारना स्वयंवर माटे अहो आववानी छे. ये वात अमारी स्वामिनीना जण्णावामां आवी छे तेथी ते अहु हुःभी थई कहे छे के, आज सुधी म्हारी एवी आशा हुती के, हुं कुमारनी प्रथम खी थईश. परंतु हालमां ते आशा विपरीत थई गई. एम तेनो अलिप्राय जण्णी भेडे अने कल्पुं के हु सभि ! ऐह करीश नहीं. धैर्यतुं अवलंभन कर ! हजुपशु कंध अगडयुं नथी. तेओनी पहेलां तुं कुमारने वरमाणा पहेरावीश. अने दाक्षण्यने निधि एवो ते कुमार त्हारे भनोरथ सइल करयो. वणी हे मंत्री ! वैताव्य पर्वतमां उत्तर श्रेष्ठीने अधिपति अनंग नामे विद्याधर छे, तेनी आ वेगवती नामे कुमारी आ कुमारना शुण्य सांलगी तेनी उपर अहु आसडा थयेली छे. आ प्रभाणे उत्सुकतानुं झारण्य भेडे निवेहन कर्युं. वणी शरण्यागत जनोनी प्रार्थनानो लंग करवामां सत्पुरुषो अहु लीऱ डेअ छे. माटे कुपा करी तमे तम्हारा स्वामिने आ वात मान्य करायो. ते सांलगी नयचंद्र योहयो, त्हाडे कहेवुं येअय छे. परंतु हजु कुमारनां मातापिता विद्यमान छे. माटे तेओने आ वात जण्णाववी जेहुओ. तेथी हाल स्थिरता करे. वेगवती योली, हे मळाशय ! हजु त्हारा माथे हुःअ आँयुं नथी. तेथी तुं परहुःअ

( २८० )

श्रीसुपार्थनाथचरित्र.

બાધુતો નથી. એમ કહી વેગવતીએ કુમારના કંઠમાં વરમાલા પહેરાવી. બળો તે યોદ્ધી, આપના પ્રસાદથી હવે હું કૃતાર્થ ગઈ. પછી તો આપને જેમ યોગ્ય લાગે તેમ કર્યું. ભૂારા પિતા ઝૂને અન્ય સાથે પરથ્યાવવા છચ્છતા હતા, તેથી આ કાર્ય ભૂારે પ્રથમ કર્યું પડયું, એમ કહી વેગવતી પોતાની સખીએ સહિત તત્કાત પોતાના સ્થાનમાં ગઈ.

ત્યારખાદ ભિત્ર સહિત કુમારેખણું પોતાનાં ભાતપિતાની પાસે ગઈ સમસ્ત રાત્રી વૃત્તાંત નિવેદન શકુનવિદ્યાર. કર્યું. તેઓએ ખણું તે વાત માન્ય કરી. પછી એક દિવસ કુમાર પોતાના ભિત્રસાથે હાથીની સ્વારી કરી બહૂર જરો હતો, તેવામાં દરેક ડેકાણું તેને શુભ શકુન થવા લાગ્યા. તેથી કુમારે નથચંદ્રને પૂછ્યું. આ શકુનનું ક્રિલ તું જાણું છે ? નથચંદ્ર બોલ્યો, હે કુમારેં ! હા હું જાણું છું. આ શકુન તો બહુ લાભદાયક છે. બળી શકુન શાખમાં કહ્યું છે કે—

ઉच્ચ દેશં નીચા—દારોહનિસિંઘશાર્વલં હરિણः ।

કથયત્વાયતિ યુક્તાં, લક્ષ્મીં સત્સંગમજ્ઞ તથા ॥

હૃષ્ટાઃ સુરતાસક્તા—દૃશ્યન્તે યદિ મૃગાઃ પથિ તદાનીમ् ।

અચિરેણ ભવતિ લાભઃ, સંદેહો નાત્ર કર્ત્તવ્યઃ ॥

શુભમાવહતિ વરાહઃ, સંકીર્તનતો ધ્રુવં પ્રયાણાદૌ ।

પઙ્કોત્થિતસ્તુ સદ્યઃ, સિદ્ધિ સ્તુષ્ટોપ્યસૌ કુરુતે ॥

દક્ષિણભાગાદ્વામં, પ્રયાતિ યદિ જમ્બુકસ્તદ યાતુઃ ।

સકલમપિ યાતિ સિદ્ધિ, વિચિન્તિતઃ કિમપિ યન્મનસા ॥

યાત્રાયાં દક્ષિણત—સ્તિત્તિરિરાલોકિતો ભવેત્સિદ્ધયૈ ।

કિપ્પુ ઇતિ ત્રિર્વિહિતો—દ્વાવસ્વર: શસ્યતે તસ્ય ॥

नागदत्तनी कथा।

( २८१ )

अर्थ—“ नीया भागभांथी दिनंध अने लीला धासवाणा  
हुया प्रहेशमां भुगलो जाय तो, अविष्टमां उत्तम लक्ष्मी तथा  
सत्त्वमाण थाय एम सूचवे छे. वणी हुष्ट थृष्ट मैथुनमां आसक्ता  
थयेला भुगलाओ. मार्गभां दृष्टिगोचर थाय तो, अल्प समयमां  
क्षाल थाय एमां संदेह नहीं. संकीर्तन मात्रथी ‘ हुङ्कर ’  
प्रयाण्डुहिकमां शुभहायक थाय छे. अने कादवभांथी नीकणी  
तुष्ट थयेको ने ते नजरे पडे तो तत्काल सिद्धिहायक थाय छे.  
प्रयाण्डु कर्तानी दक्षिण्डु खानुभांथी वाम भागमां ने शियाण  
नीकणे तो तेना दरेक धारेला विचारो सिद्ध थाय छे. तेमज  
प्रयाण्डु समये दक्षिण्डु भागमां ने तेतर पक्षी नेवामां आवे  
तो ते सिद्धिजनक थाय छे, अने किंचु एम भधुर स्वरे त्रणुवार  
ने योखे तो बहु श्रेष्ठ गण्डुय थे. ”

आ प्रभाण्डु उत्तम शकुनोवडे बहु भुशी थृष्ट नयचंद  
सहित कुमार आगण चाहयो जाय छे, तेटलामां हाथी पोतानी  
भर्याढा छोडी उद्घतपणे चालवा! लाजयो. तीक्ष्ण एवा अंकुशने  
पण्डु गण्डुतो नथी. तेमज अन्य प्रहारो पण्डु तेने रौकवा समर्थ  
थया नहीं. अने स्वेच्छा प्रभाण्डु पक्षायन थयो. छेवटे परिक्षन पण्डु  
थाकीने उलो रह्यो. हुस्ती मध्य जंगलमां नीकणी गयो. एवामां  
एक झेडो वड आँयो. तेनी सुंदर छायामां बहु परिश्रमने लीघे  
ते हुस्ती उलो रह्यो. त्यां भंत्री सहित कुमारे विकाप करती कैछक  
खीनो कड्ढु शब्द सांझायो. पछी तरतज ते बन्ने हाथी उपर-  
थी नीये उतरी ते खीनी शोध माटे योडाक मार्ग गया, तेटलामां  
एक खीनी आगण तीव्र खड़ु उगाभीने उलेलो. एक ऐचर  
तेमना नेवामां आँयो. अने ते ऐचर खीनी आगण धमकी  
आपी कड्हेतो हुतो के, झारी साथे तुं लग्न कर! अथवा ईष्टदेव-  
सुं स्मरणु कर. त्यारे ते खी योली, रे हु०४! तारा जायने लीघे

( २८२ )

श्री सुपार्खनाथ चरित्र.

प्रथमज रहें जेना कंठमां वरमाणा घेरावी छे, ते नागदत्त कुमार झारूँ शरण छे. वणी हालमां झारा प्राण्यु पाण्यु तेमना आधीन छे. एम तेनुं वयन सांखणी ते हुष्ट ऐचर ते अो उपर प्रहार करतो हुतो, तेटलामां जेना हाथमां भयंकर तरवार हीपी रही छे, अने नययंद मंत्री पाण्यु जेनी साथमां रहेला छे, तेमज निषेध करतो एवो. ते नागदत्त कुमार त्यां जर्ह पहेंचयो, अने ऐचरने अविनय जोई ते योव्यो, रे निर्द्य ! अी वधना कलं-कथी भवीन एवो तुं विकारने लायक थयो. वणी उगामेला अज्ञनी प्रसरती कांतिने लीघे त्हारां सर्व अंग श्याम वर्षुवाणां देखाय छे. वणी हे अधम ! रोपथी बहु लाल थयेला त्हारा नेत्राभिना स्कुलिंगोने, मालतीना पुष्प समान सुकेमणा आ प्रभ-दाना शरीर उपर केम वर्षावी रह्यो छे ? हुवे शांत था ! शांत था ! वणी ऐचर वंशमां चुडामणि समान एवा तम्हारे तो नहीं प्र-हारे करता पुरुष उपर प्रहार करयो अयोग्य छे, तो अभलानी तो वातज शी ? ईत्यादि कुमारना वयनामृतथी बहुराग्रपी विवथी पीडित हुतो तो पाण्यु, ते ऐचर शांत थर्ह गयो अने योव्यो के, हे कुमार ! झारौ गुरु अने भंधु पाण्यु तुंज छे. कारणुके राग समुद्र-मांथी डेला मात्रमां त्हें झारौ उद्धार कयो. वणी आ खी झारी झेन छे. एम विवेकी अनी गयो.

हुवे ते प्रभाचे पाण्यु नययंदने पूछयु. निष्कारण द्या रसना सागर समान अभाविक आ कैाण्यु छे ? ते

**सुनिदर्शन.** कुपा करी झेने कडा. नययंद योव्यो, ते वधत रात्रीचे त्हें जेना कंठमां वरमाणा घेरावी हुती, ते आ नागदत्त कुमार छे. ते सांखणी आला लज्जित थर्ह कंधक योलवानो विचार करती हुती, तेटलामां कुमारनुं सैन्य त्यां आवी पहेंचयु. तेमज ते आलानी शोध-

नगदती कथा.

( २८३ )

કરતો તેનો પિતા પણ ત્યાં આવી મળ્યો. પછી પરસ્પર ગમના-ગમનાહિકની વાતચિત થયા ભાઈ, તેના પિતાએ વેગવતીને કુમાર સાથે પરણુલી હીથી. પછી ત્યાંથી સર્વે વિદ્ધાય થયા. હવે કુમાર પણ કેટલાક દિવસે પોતાના નગર સમીપ જઈ પહોંચ્યો. તેટલામાં ત્યાં માર્ગમાં સન્મુખ આવતું એક સુનિમંડલ તેના જેવામાં આવ્યું. કુમાર બોલ્યો, હે નયચંદ ! એમનું દર્શન શુશે કે અશુશે ! નયચંદ બોલ્યો, હરેક શકુનોમાં આ શકુન ઉત્તમ છે. કારણુકે જગતમાં શિરોમણિ સમાન આ સુનિઓનાં દર્શન મહા પુષ્ટ યોગે પ્રાત થાય છે. માટે હસ્તી ઉપરથી નીચે ઉત્તરો તેમના ચરણુમાં વંદન કરો, મંત્રી સહિત કુમારે પોતાની ખુદ્દિથી ઓળખીને પ્રથમજ સૂરિને નમસ્કાર કર્યો, ત્યારથાં શૈખ સુનિઓને નમસ્કાર કર્યો. માર્ગમાં થાકી ગચેલા સુનિઓને જેદી મિત્ર સહિત કુમારે આચાર્યને વિનિતિ કરી, પ્રસો ! કૃપા કરી અહોં નશુકમાં રહેલા, લવલીલતાઓથી આછાહિત, ધ્રુલાય-ચીનું વન અને દ્રાક્ષા મંડપથી વિલુભિત ઓવા, રાજ ઉદ્ઘાનમાં કણુ-માત્ર આપ વિશ્રાંત થાયો. આ પ્રમાણે કુમારનું વચ્ચન માન્ય કરી સૂરિ મહારાજ કુમારની સાથે ઉદ્ઘાનમાં ગયા. અને સુનિઓને ઉચ્ચિત એવા સ્થાનમાં પરિવાર સહિત પોતે બેઠા. ત્યારપછી કુમાર પણ પોતાના પરિવાર સાથે શુદ્ધ ભૂમિ ઉપર બેઠા. પછી સૂરિએ ધર્મ હેશનાનો પ્રારંભ કર્યો.

### દેશનાનો પ્રારંભ.

નીવિતં યૌવનं લક્ષ્મી-ર્લવણ્ય પ્રિયસંગમः ।

નૈનધર્માદ્યતે સર્વ-મનિત્ય દેહીનાં ભવે ॥

ધર્માર્થકામમોક્ષાલ્ય-પુરુષાર્થપ્રસાધકમ् ।

આયુરાખવણદલોદણ-કોદણચટુલં નૃણામ् ॥

( २८४ )

श्रीसुपार्खनाथ चरित्रः

कामं कामक्षमं काम्यं, कामिनीजनवल्लभम् ।  
तारुण्यं तरुणीतार—तारिकेवाऽति चञ्चलम् ॥

अर्थ—“ संसारमां प्राणीच्छाने लैनधर्मनी प्राप्ति थया विना शृणित, चैवन, लक्ष्मी, लावण्य अने प्रिय वस्तुनो समागम ए सूर्वा अनित्य उद्धो छे. धर्म, अर्थ, काम अने भोक्षणपुरुषार्थीनु परम साधनभूत, प्राणीच्छानु आयुष ईदू धनुषनो भाइठ अति चंचल छे. वर्णी अत्यंत कामलोगनु सुख्य साधन अहु मुँदर अने खी जनने अहु प्रिय एवी तरुण अवस्था प्रभाना चंचल नेत्र समान अहु अस्थिर छे. ” तेभज—

लक्ष्मशो लक्ष्यमाणाऽपि, क्षयं लक्ष्मीः क्षणादपि ।  
याति चण्डाऽनिलोद्भूता, जीमूतस्येव पद्धतिः ॥  
यत्प्रभावाज्ञनोऽत्यर्थ, जायते दृष्टिहारकः ।  
तद्वावण्यं गिरिस्त्रस्त, सरिद्वेगोपमं जनाः ? ॥  
अभीष्टजनसङ्गोऽपि, विप्रयोगसमन्वितः ।  
योगप्रदेशवत्तम्मा—द्वर्मे चैव मनः कृथाः ॥  
जिनविवाचनं सेवा, गुरुणां प्राणिनां दया ।  
शमो दानं तपः शील—मेषधर्मो जिनोदितः ॥  
हितकृच्छाश्वतोऽभीष्टो—रूपलावण्यकारकः ।  
स्वर्गापवर्गसंसर्गं, दत्ते किं बहुनाऽथवा ॥  
श्रुत्वैवमादिकं धर्मं, नागदत्तः क्षितीशजः ।  
मंत्रिपुत्रेण संयुक्तः, प्रबुद्धो जिनशासने ॥

अर्थ—“ उद्धत पवनना वेगवडे वादणनी पंडितानी भाइठ,  
द्वाघोवार दृष्टिगोचर थती लक्ष्मी पणु क्षषुभात्रमां क्षय पामे छे.  
डे लाय प्राणीच्छा ! जेना प्रभावथी लोडेनी दृष्टि अत्यंत

नागदत्ती कथा.

( २८५ )

ऐं याय छे, एवुं शरीरनुं लावण्य पर्वतमांथी नीकण्ठी नहीना वेग समान चावयुं जय छे. वणी इष्ट जननो संयोग पछु योग प्रदेशनी माझेक क्षणिक छे, भाटे धर्मने विषे भनोवृत्ति करती, तेमज उन प्रतिमानी पूजा, सहशुद्धयोनी सेवा, प्राणी उपर हया, थम, हम, हान, शील अने तपश्चर्या ऐने उनेक्षर भगवाने धर्म कहो छे. आ प्रभाणे उनेक्षर भगवाने कहेलो धर्म निरंतर हितदायी छे, तेमज अलीष्ट्रप तथा लावण्यने आपनार छे, एटखुंज नहीं; परंतु स्वर्ग अने भोक्ष सुख पछु आपे छे. नयचांद सहित नागदत्त कुमार आ प्रभाणे धर्म सांलग्नी उन शासनमां प्रवीण थयो ” अने विशेष प्रकारे श्रावकधर्मनुं स्वरूप पूछयुं. त्यारभाद शुद्धये विस्तारपूर्वक वृही धर्मनो उपदेश आयेयो.

**मंत्री सहित कुमारे भार प्रकारनो गृहिधर्म स्वीकार्यो.**

**गृहीधर्मनो** पछी सूरींदने वंदन करी कुमार पोताना नगर तरह चावयो. मार्गमां चालता कुमारे **स्वीकार.** मित्रने क्षुं उं तहारा कष्टा प्रभाणे शकुनतुं

इल बराखर ग्रास थयुं. कारणुके आने आपणुने अपूर्व जीनधर्म मज्यो. एम योलतो आनंदपूर्वक कुमार पोताना स्थानमां गयो. त्यारभाद उनप्रतिमानुं पूजन करी विधिपूर्वक वंदन कर्याभाद मित्र साथे लोगन करवा ऐठो. मुखवास जम्या पछी जन्ने जछु सम्यक्त्वादि गृहिधर्मनो परस्पर विचार करता हुता परंतु तेमां सामायिक व्रत बरोधर समज शक्या नहीं. तेथी भीजे दिवसे प्रलातमां उनपूजा तथा वंदनादिक करी ते जन्ने जछु सूरि पासे गया. अने अक्षिवडे विधिपूर्वक वंदन करी सामायिकतुं स्वरूप पूछयुं.

**बव्य प्राणियोना** हित भाटे सूरि महाराज योल्या, १२

( २८६ )

श्रीसुधार्थनाथयनिः.

**सामायिकनुं  
लक्षणु.**

व्रतमां रहेला भव्यात्माएोनी शत्रु, भित्र,  
रुष, मणि अने सुवर्णभां समान धुद्धि  
थाय, ते सामायिक नामे प्रथम शिक्षाक्रत  
कहेवाय. वणी के सामायिक व्रतमां धनाद्धि

परिग्रह, धर, अने स्त्री सहित होय, तेमज देशविरत होय, तो  
परु ते भनुष्य मुनिनी उपमाने धारणु करे छे. तेमां विशेष अमे  
शुं कहीए ? सामायिकमां रहेला प्राणीएोना जेम जेम विशुद्ध  
परिषुप्त थाय छे, तेम तेम अनेक भवमां उपार्जन करेलां कर्म  
क्षीणु थाय छे. वणी मानसरोवर स्वाभाविक जेम विशुद्ध होय छे,  
परंतु भिष्ठादि ( पाणीएो ) वडे ते जेम डागाई जाय छे, तेम  
सामायिक व्रत परु अतिचारोवडे फूषित थाय छे. नागहट आव्यो  
हे भगवन् ! ते अतिचारोनुं स्वदृप अमने संलग्नवो. शुद्ध महाराज आव्या,  
मन, वचन, अने कायानु अनवस्थितपरु, हुक्यान,  
तेमज सामायिक कुर्यां के नथी कुर्यां ए प्रभाषु संशय करवो ते  
पांच अतिचार कहा छे. आ प्रभाषु सामायिकनुं यथार्थ स्वदृप  
समझ कुमार सूरि समक्ष अष्टमी चतुर्दशीना हिवसे जड़र मुहारे  
सामायिक लेवुं एम प्रतिज्ञा करी शुद्ध महाराजने वंदन करी  
पोताने घेर गयो. अने लैन धर्मभां निमग्न थर्ड भित्र साथे  
समय व्यतीत करे छे.

**अन्यदा भलयकेतु राजनी चार कन्याएो त्यां आवी,**  
**उत्तम मुहूर्तभां कुमारे तेच्चानी साथे लग्न**  
**भलयकेतुनी कुर्यां. पठी ते नागहट पांच स्त्रीएो साथे**  
**पांच प्रकारना लोग अनुबवतो होतो, तेना**  
**पिताए पोताने। भरण समय नलुक जाणी**  
**पोताना स्थाने कुमारने ; स्थापन कर्यो। हवे भित्र सहित कुमार**  
**धर्मभां प्रवृत्त थर्ड सर्वत्र देशमां लुन भाविरो खंधावे छे.**

नागदत्तनी कथा.

( २८७ )

तेमજ रथ यात्राच्या प्रवत्तीवे छे. अने साधिर्भिकु वात्सल्य करे छे, ए ग्रमाणे धर्मप्रवृत्तिमां उंटलोड समय गेयो, कुहाचित् कुमार डेईक विरेधि राजने लुतवा माटे यढाई करी ज्वो हुतो, तेवामां रस्ते चालतां डेईक यशे उलजड कुरेलुं एक झेंडुं नगर आ०युं. त्यां तेणे सुकाम कर्यो. त्यारे डेईक पुढे त्यां आवी कुमारने विनति करी कुलुं के, हे राजन! अहों तम्हारे रहेवा जेवुं नथी. माटे वेळासर अहोंथी भीजे डेकाणे चाल्या नायो! कारणुके अहों डेई रात्रीचे रही शक्तुं नथी. राज योाव्यो, आजे चैदश छे माटे अहोंज महारे रहेवुं पडशे. भीजे जर्द शकाय तेम नथी. एम कुही राज यक्षना मंहिरमां सामायिक लङ्घ मंहिरनां द्वार खंध करी स्वाध्याय करवा लाग्यो.

**तेज यक्षना मंहिरमां सुंदर शाखुभारोथी विभूषित वेगवती राणी तेनी दृष्टिगोचर थऱ्य अने ते कडेवा नगरवासीयक्षा.** लाणी के हे स्वामिन्! झुने हुःभी भूझीने आप अहों अरण्यमां डेम नारी आव्या

छे? आपना विरहथी झाडं हुद्य तडूतडू फाटी भय छे ते आप जाखुता नथी? ते सांखणी राज विशेष प्रकारे वैराग्य जनक कुलक गण्यवा लाग्यो. त्यारभाद वेगवती योाली, हा! दृष्टित! हाल झुने प्रत्युत्तर आपेहा. समस्त अंगोपांगमां व्यापी रहेलो अपूर्व र्नेह आपना हुद्यमांथी क्षषुभागमां डेम नष्ट थयो? वणी आपनो विरह झाडा हुद्यने बहु पीडे छे, शरीरने बाणी नापे छे, तेमज सर्वांगे राखुराखाट उत्पन्न करे छे. माटे हे स्वामिन्! हवे आ आडंबर छोडी हेहा. जेथी आ झाडं हुःभी पवायन थाय. तेवो डेई पञ्च उपाय करो. महा पुढे हुःभी ज्ञेना उपर हथालु ठाय छे. राज विचार करवा लाग्यो. डेई पञ्च उत्पन्न थंगेवो आ अचिंत्य भय अक्षयनिधि

( ૨૮૮ )

શ્રીસુધાર્થનાભવિજન

કાઠનારને શું કરી શકે તેમ છે ? એટલામાં તેજ મંહિરનો યષ્ઠ  
અતિ ભયંકર દૃપ ધરી ગડગડ શણું કરતો રાજની પાસે  
આવ્યો. અને ઉદ્ઘત શણદોથી બોલવા લાગ્યો, રે મૂઢ ! પોતાના  
પરાક્રમથી સમસ્ત ભુવનને પણ તૃણું સમાન ગણ્યું છે, “ વળી  
તું કંઈશ કે અહુને કંબું નહોતું.” હવે હું હુંને લુખતો મૂડીશું  
નહીં. માટે તહારા ધ્યાન દેવનું સમરણું કરી લે. અથવા અહારી  
સેવામાં હાજર થા. એમ કંઈશ રાજની ઉપર મુહગર ઊગાની ફરીથી  
તે આવ્યો, જલદી આ નગર છોડી તું ચાવ્યો ન ! અથવા તહારું  
પરાક્રમ બતાવ ? કિંવા મસ્તકડ્રપી કમલ નમાવીને અહારા ચર-  
છુની પૂજા કર ? એ પ્રમાણે યક્ષનું વચ્ચન સાંસારણી રાજ વિશેષ-  
પણ્યું સ્વાધ્યાય કરવા લાગ્યો. તેટલામાં અંગરક્ષક દેવતાઓ  
જેની સાથમાં રહેલા છે અને પોતે પણ યુદ્ધમાં દક્ષ એવો કપદીં  
યક્ષ રાજની રક્ષા માટે એકદમ ત્યાં આવ્યો. અને તેને જોઈ તે  
નગરયક્ષ ભયને લીધે લુખ લઈ ત્યાંથી નાશી ગયો. “ અહો !  
ભુવનની આચા દરેક પ્રાણીને બહુ પ્રિય હોય છે.”

**સમય પૂર્ણ થવાથી રાજને વિધિપૂર્વક સામાયિક પૂર્ણ કરીને  
કપદીં યક્ષ સાથે ડેટલીક વાતચીત કરી કંબું  
કપદીયક્ષ.** કે, તહારા ભયથી તે નગરયક્ષ નાશી ગયો છે.  
પણ તુંને અહીં બોલાવી લાખ. હું તેને  
પ્રતિબોધ આપું. કારણું આ નગરના લોકો એના હુઃખથી નાશી  
ગયા છે, તેથી આ નગર ઉજ્જવલ થઈ ગયું છે. તત્કાલ કપદીએ  
પોતાના દેવો પાસે તેને ત્યાં બોલાવ્યો. એટલે તરતાજ તે નગર  
યક્ષ ત્યાં આવી રાજને તથા કપદીને નમસ્કાર કરી વિનયપૂર્વક  
બોલ્યો હે રાજન ! આ જગતુમાં ધૈર્યવાન પુરુષ તું જ છે. કારણું  
અહારા આવા ઉપસર્ગોવડે પવનથી, પર્વતની માઝક તું કુલિત  
થયો નહીં. વળી સ્વસ્થ દશામાં દરેક લોકો પોતાનું કાર્ય સાધી

नागदत्तनीकथा.

( २५ )

शકे छे, परंतु विषम दशामां जेओ धर्मश्री चलायमान थता नथी तेवा पुरुषो तो हुर्दभज छाय छे. माटे हेनरेखर! हुं भाइं धैर्य जेहने तुष्ट थयो छुं. माटे कुपा करी कंध पछु कार्य तुं भहने अताव. त्यारभाइ कपहीं यक्ष योव्यो, हजु पछु आ वात तुं शुं पुछे छे? पोताना ज्ञानथी एतुं धृतिहित सर्व तुं जाणी शके तेम छे. माटे पोतेज विचार कर. पधी ते यक्ष ज्ञाननो उपयोग करी योव्यो. के, हे नरेंद्र! त्हारा प्रसादवडे आ नगरना सर्व वोडे. पोतानी इद्धि सहित सुखेथी अहीं निवास करे. अने कपहीं यक्षनी सहायताथी तुं आ नगरनो अधिपति था.

त्यारभाइ कपहीं यक्षे पोताना हेवोने भोक्ली नगरवासी लोडेने त्यां योवावी मंगाव्या अने तेमने राज्याभिषेक. क्षुं के, आ नागदत्त राजने नमस्कार करी पोतपोताना गृहाधार संभाणी व्यो, अने आ तम्हारो राज छे. पधी लोडेओ ते ग्रमाणु कपहींतुं वयन मान्य करी सर्व व्यवस्था संभाणी लीधी. त्यारपछी नगर यक्ष योव्यो, हे नरेंद्र! आ नगरना राजेये भाइं एतुं अनिष्ट कुर्यां छे के, जे मुख्यी पछु कही शकाय तेम नथी. नागदत्त राज योव्यो-आये निरपराधी लोडेना अनिष्टपछुमां भूर्ध, देखी के नीच भाणुसेज उभा रहे छे. परंतु महात्माओ तो आ हुनीयामां भहान् अपराधी होय छतां पछु तेनी उपर हया करे छे. वणी तेवा हयाणु सत्पुरुषोने लीधेज आ पूर्खी रत्नवती कहेवाय छे, अम समल आ नागरिक लोडे. उपर तेमज नगराधिप उपर हुवेत्हारे क्षमा राखवी. यक्ष योव्यो परोपकारी ज्ञेमां शिरोभिष्ठ समान हे नरपति! आ नगरना राजने तो प्रथमज भें स्वर्गवासी कर्यो छे. राज योव्यो, तेना पुत्रने

( २६० )

श्रीमुखार्थनाथवरिभू

લાવીને રાજ્યાભિષેક કરો. ત્યારથાં યક્ષે પણ નાગદત્તના કલ્પા  
પ્રમાણે સર્વ કાર્ય પૂર્ણ કર્યું.

**રાજ્યાભિષેક થયા બાદ નાગદત્ત રાજાએ સક્ષેપન સમક્ષ  
નવીન રાજને શિખામણ આપી કે, નીતિ-  
રાજને ઉપદેશ.** પરાયણ થઈ જે સજજનોનું પાલન, હૃદોનો  
નિશ્ચહ, તેમજ દીન, અનાથ, સાધુ અને  
સજજન વર્ગનું પોષણ કરે છે તે આ લોકમાં યથાર્થ રાજ ગણ્ય  
છે. વળી રાજાએ પોતાના એશાભારામથી સંતુષ્ટ ન થશું  
નોઈએ, તેમજ પ્રમાદ પણ સેવવો નહીં, વળી જે રાજાએની  
દદ્ધિ સમક્ષ લોકો હુંઘી થાય છે તેઓના જીવિત, લક્ષ્મી કે  
રાજ્યવડે શું? અર્થાત નિષ્ક્રિલ છે. એ પ્રમાણે નવીન રાજને  
ઉપદેશ આપી નગરયક્ષને નાગદત્તો કલ્યું હવે તું જૈન ધર્મનું  
આરાધન કર, યક્ષ બોલ્યો હે રાજન! કૃપા કરી મુહુને તે ધર્મનો  
ઉપદેશ આપો. રાજ બોલ્યો, દરેક પ્રાણીઓએ જીવ માત્રને  
આત્મ સમાન માનવા. તેમાં પણ હુંઘી પ્રાણીઓને વિશેષ  
કરી સંભાળવા. વળી વિવેકી પુરુષે આ આખત વિશેષ જાણુંની  
નોઈએ. ત્યારથાં રાજાએ તેને દેવ, ધર્મ અને તત્ત્વ સંખ્યાંધી ઉપદેશ  
ખહુ વિસ્તાર પૂર્વોક આપ્યો. સર્વ ઉપદેશનો સ્વીકાર કરી યક્ષ  
બોલ્યો, હે રાજન! પુરુષીમાં ભુષણ સમાન આપના સરણા મહાય-  
ભાવિક પવિત્ર પુરુષોનું માત્ર હર્થન પણ શુભદાયક થાય છે. તેમજ  
સતપુરુષોનો સમાગમ અને સંભાષણ તો વિશેષ પ્રકારે સુધ-  
દાયક થાય તેમાં શું આક્ષર્ય છે? પછી નાગદત્ત રાજાએ  
નાગરિક લોકાને સ્થિર કરી કપદી યક્ષ વિગેરને વિદ્યાય કર્યો  
અને પોતે પોતાના કાર્ય માટે આગળ ચાલવાની તૈયારી કરી  
ત્યારે નગરયક્ષ બોલ્યો, હે સ્વામિન! જેની ઉપર આપની ચઢાઈ  
છે તે રાજને હું પોતે જ બાંધી અહીં લાંબું છું. માટે આપને

માનવશુદ્ગતીકથા.

( ૨૬૧ )

ત્યાં જવાની કંઈ જરૂર નથી. બાદ રાજાએ આજ્ઞા આપી કે તરતજ યક્ષ ત્યાં ગયો અને તે રાજાને લઈ આબી નાગદત્તાની આગળ ઉલો કર્યો. પછી નાગદત્તે પોતાની આજ્ઞા મનાવી રહેને સુકૃત કર્યો. ત્યારખાદ નાગદત્ત રાજ ત્યાંથી પોતાના નગરમાં ગયો. બાદ વેગવતીના પુત્રને પોતાના રાજયમાં સ્થાપન કરી આચુષ પૂર્ણ કરી અંતે સામાયિક પૂર્વક ભરણું પામ્યો અને તે આ લોકમાં ત્રીજે લવે સિદ્ધિપદ પામયો. માટે હે ભાવ્યાત્માએ ! આ પ્રમાણે સામાયિક વ્રતમાં ભાવ રાખવાથી નાગદત્ત રાજ આ લોકમાં પણ વિશેષ પુજનીય થયો. તેથી આ સામાયિક વ્રત અવશ્ય કરવું જોઈએ. વળી જેનું ચિત્ત સામાયિકમાં સ્થિર હોય છે, તે પુરુષની સેવામાં હેવ અને હાનવ પણ હોજર રહે છે. તેમજ તે પ્રાણી અદ્વય સમયમાં બહુ પ્રાચીન કર્માથી સુકૃત થાય છે.

॥ ઇતિસામાયિકદૃષ્ટાન્તે નાગદત્તકથાનકં સમાપ્તમ् ॥

—→॥॥←—

**માનવશિકની કથા.**

—•—  
**મનોદુષ્પ્રણિધાનાતિચાર.**

સામાયિક વ્રત સંભંધી ઉપરેશ સંભળને હાનવિર્ય રાજાએ પ્રશ્ન કર્યો કે, હે મુસુક્ષુ જનવદ્ધા ! હે જગત્પતિ ! હુએ સામાયિકમાં ગ્રથમ અતિચારનું સ્વરૂપ સંભળવાની અમને બહુ લુજાસા છે. માટે કૃપા કરી તે સંભળાવો. શ્રીસુપાર્થ પ્રભુ એદ્વયા, મનુજેંક ! જે જન સામાયિક અહણું કરી મનમાં હુષ્ટીન કરે છે તે પુરુષ માનવશિકની માઝેક પ્રમત્ત થઈ પોતાની સદગતિનો દૈધ કરનાર થાય છે.

( ૨૬૨ )

શ્રીસુપાર્વતાયારિત્રિ.

હું એમ માનું છું કે, જેને જોવા માટે ઈદ્રે હળવર નેત્રો ધારણું કર્યાં છે એવું જગદવિખ્યાત રત્નપુર માનવણિકુ. નામે નગર છે. તેમાં ધનાદ્વય ગંગાદત્ત નામે એક્ષી રહે છે. ગુણુમતી નામે તેની સ્ત્રી છે. માન નામે તેને એક પુત્ર છે. તે કલાઓમાં કંઈક પ્રવીણુ થર્ડ ઉદ્ઘાન વિગેરે સ્થળોમાં સ્વેચ્છા પ્રમાણે હર્મેશાં ક્રવા લાગ્યો. તેવામાં એક દિવસ હુર્લંબ નામે પોતાના ભિત્ર સાથે તે જીન-મંદિરમાં ગયો. ત્યાં સ્તુરિ મહારાજની પાસે લક્ષ્મિમાન એવા ધણું દોડે. એકાથ મનથી સમ્યક્તવાદિક વૃહી ધર્મ સાંભળતા હતા. તે જેઠ માનવણિકુ પણ સલાની એક બાળુંએ ઉલ્લો રહી ઉપરેશ સાંભળવા લાગ્યો. એવામાં એક શ્રાવકે તેને એણાયો, પછી તેણું પોતાની પાસે જોલાવી તેને કહ્યું કે અહીં એસ, એમ કહી સ્તુરીદ્રિને કહ્યું કે આ ગંગાદત્તનો પુત્ર આપને વંદન કરે છે. સ્તુરીએ તહેને વિશેષ અસર કરનારી દેશનાની શરૂઆત કરી. ભર્ક ભાવથી માન પણ સાવધપણે સાંભળે છે.

અગ્રાધાર નામે બહુ સમૃદ્ધિવાળું એક નગર છે. તેમાં નિષ્પુણ્યક નામે બહુ વ્યવસાયી એક કુલ ખાલક શિક્ષોપયોગી રહે છે. બળી તે એવો નિર્બાંગી છે, કે જે દેશના. કોઈ ઉદ્ઘોગ કરે છે તેમાંથી માત્ર તેને અનર્થજ પ્રામ થાય છે. પરતુ કોડી માત્ર પણ લાભ મળતો નથી. અન્યદી તેની હુર્દશા જેઠ એક કુટુંબીએ કહ્યું કે, ચોમાસામાં રહારા એ અળદ લઈ તું હળ એડવાનું કામ કર. જેથી તું સુખી થઈશ. પરતુ હર્મેશાં સંચ્યાસમય થાય ત્યારે રહુને અળદ અતાવીને રહારા વાડાની અંદર તહારે ખાંધી જવા, અને પ્રલાતમાં લઈ જવા. નિષ્પુણ્યકે પણ તે પ્રમાણે કણુલ કયું. ત્યારપછી હર્મેશાં હળ લઈ એતરમાં

માનવચ્છિકુનીકથા.

( ૨૬૩ )

એડ કરી બળદ તહેને ત્યાં વાડામાં મૂકી આવતો હતો. પ્રથમની મોસમમાં તેણે મગ, અડદ, બાજરી અને ચોઆ વિગેરેની વાવણી કરી, પરંતુ ઉગતા અંકુરાયોને કાતરા ખાઈ ગયા. પછી તેમાં બીજુવાર બીજું બીજ અરીદીને વાંચ્યું. વળી પોતાની પાસે આજુવિકાનું સાધન નહીં હોવાથી પોતાની જીની જ્હેનપણી પાસેથી કંઈક દાખ્યા વિગેરે પરચુરણ લાવીને વૃત્તિ ચલાવતાં, એવાં તે અન્ને સ્વી પુરુષ ક્ષેત્રનું કામ કરતાં હતાં. તેવામાં એકદમ ટીડ પણ્યાં, જેથી સર્વ પાક ખાઈ ગયાં. ત્યારપછી બહુ નિરાશ થઈ ફરીથી નવેસર તેણે વાવણીનું કામ શરૂ કર્યું. અને હુમેશાં તેઓ પ્રથમની માદ્ક કામ કરતાં હતાં. એક દિવસ ઉતાવળને લીધે કૌદુર્યિકને દેખતાં બળદોને બહાર મૂકી તહેને કલ્યા વિના નિષ્પુરુષ્યક પોતાને ઘેર ગયો. તેથી તે અન્ને બળદ બહાર કયાંચ પણ ચાલ્યા ગયા, તેની ખખર પડી નહીં. કૌદુર્યિક નિષ્પુરુષ્યકને ઘેર જઈ પુછવા લાગ્યો. કે આજે બળદ કયાં ગયા ? નિષ્પુરુષ્યક બોલ્યો, સંધ્યાકાળે તમને દેખાડીને વાડામાં મૂક્યા છે. કૌદુર્યિક બોલ્યો કે, મહેં જેયા હતા અરા પરંતુ તે સમયે હું બીજ કામમાં ચુંથાયેલો હતો. વળી તહેં એમ નહોનું કહ્યું કે આ બળદ તમહને સોણું છું, તેથી આ તહારી જ ભુલ ગણ્યાય, માટે મુહારા બળદ લાવ. નિષ્પુરુષ્યક બોલ્યો, મહેં તો તમને આપ્યા છે, હવે મહને કંઈ પણ તમહારે પુછવું નહીં. એમ અન્નેનો વિવાદ બહુ વધી પડ્યો, છેવટે અને જણું કલેશ કરતા છતા મંત્રી પાસે જતા હતા તેવામાં તે રસ્તે કોઈક સ્વાર ઘોડાની પાછળ હોડતો આવતો હતો, તેણે નિષ્પુરુષ્યકને સહામો આવતો જોઈ કહ્યું કે, રે પથિક ! આ ઘોડાને પાછો વાળ. નિષ્પુરુષ્યકે તેને રોકવા માટે લાકડીનો પ્રહાર કર્યો કે, તરતજ મર્મસ્થળમાં વાગવાથી તે ઘોડા પૃથ્વી પર પડીને

( २६४ )

श्रीमुपार्खनाथवरित्र.

મરી ગયો. તે જેધી સ્વાર બોલ્યો, તહેં આ ઘોડા શા માટે માર્યો ? નિષ્પુણ્યક બોલ્યો, તહારા કહેવાથી મહેં તો પાછા વાળ્યો હતો. પરંતુ મહેં માર્યો નથી. તે સાંભળી સ્વાર પણ અગડાની જુદ્ધિથી તેની પાછળ ચાલ્યો. પછી તે નણે જણ નગરની નલુકમાં ગયા. એટલામાં સૂર્યાસ્ત થઈ ગયો. તેથી ત્યાં આગળ એક મહેઠો વડ હતો. તેની ઉપર વ્યાઘાદિકના ભયથી તેઓ અહીને સુઈ ગયા. ત્યારપછી ત્યાં નટ લોકોનું એક ટેળું આવ્યું. તે પણ તેજ વડની નીચે સુઈ ગયું.

**હવે નિષ્પુણ્યકને ચિંતાને લીધે નિદ્રા આવી નહીં. તેથી તે વિચાર કરવા લાગ્યો. અરે ! આ બજે નિષ્પુણ્યકનો જણ રહારી પાછળ લાગ્યા છે. આ લોકો-પક્ષાત્તાપ. માંથી હું લુંતો કેવી રીતે છુટીશ ? માટે કંઠે યાશ નાંખી મરવું એજ ઉત્તમ છે.**

એમ નિશ્ચય કરી પોતાના એઠલાના વસ્તુનો પાશ કરી વડના ડાળાએ પોતાનો હેઢ લટકતો મૂક્યો. પરંતુ વસ્તુ જરૂર અને શરીર ભારે તેથી વસ્તુ ના હધને તુટી ગયું, તેથી તેની નીચે નટના ટેળાના અધિપતિની સ્ત્રી સુઈ રહી હતી તેની ઉપર તે પડ્યો. તહેંના ભારથી દબાઈને તત્કાળ તે નટી મરી ગઈ. પરંતુ નિષ્પુણ્યકને કિંચિત્ માત્ર પણ અદ્યાણુ આવી નહીં. પછી નટીનો પતિ નિષ્પુણ્યકને કહેવા લાગ્યો. રે હુણ ! પાપી ! રહારી ખીને તહેં શા માટે મારી ? નિષ્પુણ્યક બોલ્યો, તહારી ખીને મારવા માટે આ મહારાં કર્તાવ્ય નહોનું. પરંતુ આ બજેના ભયને લીધે રહારા મરણું માટે મહેં આ સાહસ કર્યું હતું. વળી અળદ અને અશ્વ માટે આ બજે રહારી પાછળ લાગ્યા છે. તેવી રીતે તું પણ ન્રીજો ચાલ, પ્રભાતમાં મંત્રી પાસે જે ન્યાય થશે તે પ્રમાણે તહારાં પણ સમાધાન થશે.

માનવશિકૃતીકથા.

( ૨૬૫ )

પ્રલાતમાં પોતાના કામ ઉપર મંત્રી આવી તૈયાર થયો. એટલે વાહી પ્રતિવાહીએચે પોત પોતાનો ન્યાય સ્વરૂપ. વૃત્તાંત જણેર કર્યો. મંત્રી એલયો, હે કોદુંબિક ? આ નિષ્પુણ્યક બળદ મૂકી ગયો ત્યારે તહેં જોયા હતા ? કોદુંબિક એલયો, હે મંત્રીશ્વર ! ભેં જોયા હતા ખરા, પરંતુ આ તમ્હારા બળદ મૂક્યા છે, જોઈ દ્યો. હું મહારા ધેર જાઉ છું, એમ તેણે કલ્યાં નહોતું અને અમહારે પ્રથમ આ પ્રમાણે કહેવાનો કરાર કરેલો છે. ત્યારખાદ સ્વારને પૂછ્યું, એટલે તે એલયો મહારો ધોડા પાછો વાગ એમ તહેં કલ્યાં હતું ? હા, એ પ્રમાણે ભેં કલ્યાં હતું. એમ કણી સ્વાર મૈન રહ્યો. ત્યારખાદ મંત્રી એલયો, દે નિષ્પુણ્યક ? તહારે ગળે પાશ નાંખવાનું શું કારણ હતું ? તે એલયો, આ બજેના ભયને લીધે મહારે તે કામ કરલું પડ્યું. તેમજ રાજને કર આપવાનો છે, વળી ઉધારે લાવીને દાણા આધા છે તહેનો. પણ મહેઠો ભય છે. કારણું કે એતીમાંથી બીજ માત્ર પણ બળે તેમ નથી. એમ અનેક હુંખથી છુટવા માટે ભેં આ ઉપાય કર્યો હતો. પરંતુ મહારા મંદ ભાગ્યને લીધે મરણ ન થયું અને ઉલ્લિં આપત્તિ આવી પડી. એમ શોક કરતાં તેના શુલ કર્મનો ઉદ્ઘય થયો. તેથી મંત્રીને તેની ઉપર ખડુ હયા આવી. પછી તેણે અથમ કોદુંબિકને કલ્યાં કે, તું તહારાં બજે નેત્ર તેને આપીને તહારા બળદ લઈ દે. તે શિવાય તને બળદ મળવાના નથી. કારણું કે આ તહારા નેત્રનો દોષ છે. ત્યારપછી સ્વારને કલ્યાં કે, તું તહારી જી આપીને તહારો અશ્વ લઈ દે. કારણું કે આકામમાં તહારી જીલનો અપરાધ છે. પછી નટને કલ્યાં કે તહારી ઊની જગોએ નિષ્પુણ્યક સુર્જ રહે અને તું તેની માઝક ગળે પાશ નાંખી તેની ઉપર પડ. એ પ્રમાણે ન્યાય સાંભળી બજે જણું વિચાર કરવા લાગ્યા કે, નેત્ર

( २६६ )

श्रीसुपार्श्वनाथ चरित्र.

अने जुब हुशे तो अीजा अणह तथा अश्व मणी आवशे. तेमज  
नट पछु समनयो के, खी तो भरी गई अने झुने पछु मार-  
वानो आ. उपाय छे. कारणु के एनुं वख तो बुनुं हुतुं. तेथी  
अनो पाश तुटी गयो. परंतु झारो पाश एवी रीते नहीं  
तूटे कारणु के झुड़ाइं वख बहुं जाडुं छे. वणी कदाचित् पाश  
तुटी जाय अने हुं नीचे पडुं तो पछु तहेना प्राणु जवाना नथी.  
केमहे हुं तेना जेटलो. आरे नथी माटे आ सर्व झुनेज तुक-  
शानी छे. एम जाणी ग्रेणु जाणु तेने छेडी दीधो. त्यारणाह  
दरिद्री एवो. ते निष्पुण्यक पोताने घेर गयो. अने भंत्रीचे तेनो  
कर माझु कर्यो एटलुंज नहीं, परंतु आवा माटे अनाज पछु  
पुरतुं आप्यु.

ऐ प्रभाणु सूरीखरनां वयन सांभणी मानवणिक हुमेशां  
पोतानो वेपार छेडी हृषि सूरिना व्याख्या-  
**उच्चस्थिति.** नमां जतो हुतो. सूरिए तेनी योग्यता  
जाणी गृहस्थाने लायक एवो. सभ्यकृत्वादि

आर प्रकारनो श्रावकधर्म वस्तारपूर्वक समनायो. तेणु पछु  
विधिपूर्वक ते अंगीकार कर्यो. अने प्रति हिवसे पोताना पितानी  
साथे हेव तथा गुडओने वंदन करवा जाय छे. तेमज ते सामायि-  
कमां सांज सवार अन्ने वर्षत विशेष प्रकारे उधुक्त थयो. वणी  
पोतानी हुकानमां वेपार पछु बहु नीतिपूर्वक यत्वपतो. हुतो.  
अने धर्मना प्रभावथी आल लीला छेडी हृषि ते उत्तम स्थितिमां  
गणुवा लाग्यो. तेमज हरेक लोको प्राये: माननी हुकानेथीज  
अरीद करे छे. केटलाक आहुक लोको उधारे पछु लैह जाय छे.  
अने विना उधराणीचे पोतानी अनुकूलता प्रभाणु तेच्यो पैसा  
आपी हे छे.

एम केटलोक सभ्य व्यतीत थयो. एवामां एक ऐकुत

માનવણીકથા.

( ૨૬૭ )

હૃદ્યાંન.

તેની હુકાનેથી કેટલુંક અનાજ ઉધારે લઈ ગયો. પછી પોતાની પાસમાં અનાજ આવ્યું તો પણ તેણે માનની હુકાને પૈસા ભર્યા નહીં.

તેથી માન તેને ઘેર ગયો અને ઉઘરાણી કરી. પરંતુ તેણે કંઈ પણ ધાન્ય આપ્યું નહીં. અને સિદ્ધો જવાબ આપ્યો નહીં. તેમજ કેાઈએ અધું અને કેાઈએ ચતુર્થાંશ પણ આપ્યું. એમ એકંદર હિસાબ કરતાં માનને દશ હળર રૂપીઆનો ટોટો આવ્યો. તેથી તેને બહુ ઉદ્દેગ થયો. પરંતુ સામાયિકનો તેનો નિયમ તેણે છોડ્યો નહીં. અને સામાયિકમાં એસીને પણ ચિત્તવા લાગ્યો. કે, આ હુષ્ટ લોકોએ હાલમાં મુહાર્દ ખોરાકીમાં બહુરૂંય પોડું કર્યું, પરંતુ જ્યારે ફરીથી તેઓ લેવા આવશે ત્યારે તેઓને થોડું ધણ્ય કંઈક ધીરીને સર્વ દ્રવ્ય વસુલ કરી જ્યાજ સુદ્ધાં પણ છોડવાનો નથી. તેઓની સાથે વિચાર કરવાનું કંઈ પણ કામ નથી. તેમજ અનુકૂમે તેઓને બધનમાં લઈ ધીરધારનો ધંધો કરવાનો છે. એ પ્રમાણે હૃદ્યાંન કરતો હતો તે વાત જાનવડે સૂરિના જાણવામાં આવી. તેથી તત્કાળ સૂરિ માનની યાસે આવી કહેવા લાગ્યા અરે માન ? સામાયિકમાં આ હૃદ્યાંન અનર્થદાયક થાય છે. માટે તેનો તું ત્યાગ કર. કારણ કે જે શ્રાવક સામાયિકમાં એસી આર્ત ધ્યાન પૂર્વક ધર કાર્યની ચિંતા કરે છે તેનું સામાયિક નિરર્થક થાય છે. તે સાંભળી માન યોદ્યો, અગવન્ ? ખર્મ પણ ધન વિના થતો નથી. અને આ વખતે વેપારમાં મુહારે ધનનો બહુ ટોટો આવ્યો. છે. માટે હું નિર્ધિત થવાનો નથી. સુનીદ યોદ્યા. આ પ્રમાણે યોદ્યાવું રહ્યે ઉચ્ચિત નથી. પરંતુ આવ પૂર્વક મિશ્યાહુંકૃત આપ. પછી માને કંઈ પણ ઉત્તર આપ્યો નહીં. અને તેવીજ રીતે હુમેશાં પોતાના ધરમાં એસી કેવલ અભિશ્રહ સહિત સામાયિક કરે છે. આ પ્રમાણે માનસિક

( २६८ )

श्रीसुपार्थनाथवरित्र.

आर्तध्यान करवाथी तेणु खडु कर्म उपार्जन कुर्यां. त्यारपछी कुण्ठु पक्षनी चैदशना दिवसे ते पोताने घेर सामायिकमां ऐडो हुतो, तेवामां एक क्षुद्र देवी आवो अने तेणुचे छण करी मानने मृत्यु वश कर्या. तेथी ते संसारभ्रमण्यमां पड्यो. वणी गंगहता ऐक्षी पणु निष्कलंड वृहिधर्म पाणीने ईश्वान देव-लोकमां उमज थयो. अने नीजे भवे सिद्ध थशे.

इति समायिकप्रथमातिचारविपाके मानस्य द्रष्टव्यः ॥

—५४५—

### विसद्वश्रेष्ठीनी कथा.

—०००—

### द्वितीयवचनहु प्रणिधानातिचार.

हानविर्य राज्ञे इरीथी प्रश्न कर्या, हे ह्यालु भगवन्! हवे सामायिकप्रतमां द्वितीय अतिचारनुं स्वरूप कर्हो. श्री सुपार्थ प्रबु ऐत्या, हे धराधीश! जे श्रावक सामायिक व्रहण्यु करी अयोग्य वचन घोले छे ते कुगतिमां गचेला विसठनी माझक गोताना दोषनो पञ्चात्ताप करे छे.

आ भरतक्षेत्रमां आश्र्यन्तुं कुलमंहिर, लक्ष्मीनुं निवास स्थान अने विद्यायोनो निधान होयने शुं? विष्ठुक्तावके. एवुं साडेत (अयोध्या) नामे नगर छे. तेमां भुह अने भवुरभाषी, शिष्ट जनेमां शिरोभण्डी समान आशाधर नामे ऐक्षी हुतो. वसुधारा नामे तेनी ओ छती. आठ मद स्थानेथी विभूठ अनेको, अधर्मनी श्रद्धावणो अने हुम्मेशां कौतुकनो विलासी एवो विसठ नामे तेओने एक पुत्र हुतो. वणी निष्ठ नामे तेनो भित्र हुतो. ते धर्ममां खडु हुठ अने स्व-भावथी सरल हुतो. तेमज विसठ उल्लंठनी माझक लोकोने खडु

વિસદ્ધબિશુરીકથા.

( ૨૬૮ )

સંતાપતો હતો. વળી ફરેક દેશની અંહર વેપાર માટે તેઓ બન્ને  
સાથે જતા હતા.

અન્યદી બન્ને જણુ કૂરવા નીકળ્યા હશે. તેવામાં ભૂલા  
પડેલા એ સુનિયો ત્યાં વૃક્ષની છાયામાં  
મુનિ દર્શાન. એડેલા તેઓના જેવામાં આવ્યા, એટલે  
વિસદ્ધ યોદ્યો હે નિષદ ? આ સુનિયોને  
સર્વ પ્રકારનું જ્ઞાન હોય છે. માટે ચાલ આપણે એમને કંધુક લા-  
ભાદ્રિકનું કારણું પૂછી જોઈએ. એમ વિચાર કરી તેઓ મુનિયો  
પાસે ગયા, અને નમસ્કાર કરી યોગ્યસ્થાને એઠા. પછી મહાઠા  
મુનિયો તેમને કેદુપણું નગરનો માગ પૂછ્યો. તેથી તેઓએ  
પરસ્પર હસીને માર્ગ બતાવ્યો. પછી મુનીંડ યોદ્યા, લાઈએ ?  
તમે કેમ હસ્યા ? વિસદ્ધ પોતાના હાસ્યનું કારણું જણાયું કે  
અમે અમૃતારા લાભદિકનું કારણું તમને પૂછવાના હતા. પરંતુ  
તમે તરફારા માર્ગને પણ જાણુતા નથી તો પછી અમૃતારે પૂછ-  
વાની વાત હું ક્યાં રહી ? ! એમ જાણી અમને હાસ્ય  
આયું. મુનિ યોદ્યા, વત્સ ! રહારં કહેવું સત્ય છે, પરંતુ  
દ્રવ્યમાર્ગમાં ભૂલા પડેલા પુરુષો કેદુપણું પ્રકારે માર્ગ ચઢી  
શકે છે. અને ભાવમાર્ગથી પતિત થયેલા પુરુષો તો મહા કષ્ટથી  
પણ માર્ગાભિસુખ થવા સુશકેલ છે. જે મકે તમે બન્ને અત્યંત  
અજ્ઞાનવડે બ્રહ્મ થઈ સંસારમાં રખડા છો. ત્યારણાં વિસદ્ધ યોદ્યો,  
અમે તો ઇક્તા નગર કે આમાદિકનો એક જ માર્ગ જાણીએ  
છીએ, પણ અન્ય માર્ગ જાણુતા નથી.

મુનિ યોદ્યા, આમ નગરાહિકનો જે માર્ગ પ્રથમ તે દ્રવ્યમાર્ગ  
ગણ્ય છે અને જ્ઞાનાહિકનો જીને ભાવમાર્ગ  
દ્રવ્ય અને  
ભાવમાર્ગ  
કહેવાય છે. વળી જેનાથી જીવાદિક પદા-  
થીનું સ્વરૂપ જાણી શકાય તે જ્ઞાન કહે-  
વાય. તે જ્ઞાન ભતિજ્ઞાનાહિકના લેદ વડે

( ૩૦૦ )

શ્રીસુપાથનાયચરિત.

ધાર્ય પ્રકારનું છે. વળી જીવાદિક સર્વ પહાર્યેનું જે શ્રદ્ધાન કરવું તે સમ્યક્તવ કહેવાય. તેમજ અહોતહેવ અને ઉત્તમ સાધુઓને જ શુરૂ જાણવા. વળી તે સમ્યક્તવ ક્ષાયિક, ક્ષાયોપશમિક અને ઔપષભિક અને પ્રકારે કહ્યું છે. અથવા કારક, રૈચક અને દીપક અને તે ગ્રણું પ્રકારનું છે. વળી સામાયિકાદિ લેદાવદે ચાચિત્ર પણ ધાર્ય પ્રકારનું કહ્યું છે. આ પ્રમાણે કિંચિત્ વિસ્તાર પૂર્વક ભાવ માર્ગપણું કહ્યો છે. જેવી રીતે અમને તમે સિદ્ધો દ્રવ્યમાર્ગ બતાવ્યો તે પ્રમાણે અમોએ પણ તરહુને ભાવ માર્ગ બતાવ્યો. હવે તમહારા બતાવેલા માર્ગ અમે તો જધશું પરંતુ જે તમારી ઈચ્છા હોય તો તમે પણ અમહારા કહેલા ભાવમાર્ગ પ્રવૃત્તિ કરવા પ્રયત્ન કરજો. પછી વિસઠ ઓદયો, હે સુનીદ! સંપૂર્ણ ભાવ માર્ગ ચાલવા અમે અશક્ત છીએ એ માટે કૃપા કરી દેશથકી પણ ભાવમાર્ગનું સ્વરૂપ બતાવો. મુનિઓ સમ્યક્તવ તેમજ સ્થૂલપ્રાણુતિપાત વિરતિ વિગેરે ભાર પ્રકારે ગૃહીધર્મનું સ્વરૂપ સ્વિસ્તર કહ્યું. વિસઠ અને નિષઠ બન્ને જણે ખુદ્ધિપૂર્વક સમજીને વિધિપૂર્વક શ્રાવક ધર્મનો સ્વીકાર કર્યો. ત્યારબાદ બન્ને મુનિવરો તેમના બતાવેલા માર્ગ ચાલતા થયા. અને વિસઠ તથા નિષઠ પણ મુનિઓને નમસ્કાર કરી જયાં પોતાને જવાનું હતું ત્યાં ગયા. પછી કેટલાક દિવસ ત્યાં રહી ઈચ્છા મુજબ લાભ મેળવીને પોતાના નગરમાં તે બન્ને જણું પાછા આવ્યા અને વિધિપૂર્વક સમ્યક્તવાદિ ગૃહીધર્મની સમ્યક્ત પ્રકારે આરાધના કરવા લાગ્યા.

સામાયિક વ્રતમાં બેઠેલો શ્રાવક પણ મુનિ સમાન ગણ્યાય છે. એમ સાંલળાને તેઓ સામાયિકમાં વિશેષ ઉદ્ઘાત કરવા લાગ્યા. સામાયિક ધારક પુરુષોના જેમ જેમ શુદ્ધ પરિણામ થાય તેમ તેમ અનેક લવનાં સંચિત કર્મ

**સામાયિકમાં શીથિલતા.**

વિસદ્ધાયિકનીકથા.

( ૩૦૧ )

નિર્મૂલ થાય છે. એમ જાણું હરેક સમયે તેઓ સામાયિક કરવા લાગ્યા. એમ કરતાં તેમનો કેટલોક સમય વ્યતીત થયો. તેમાંથી વિસદ્ધ સામાયિકમાં રહીને પણ પ્રમાણી થઈ રાજકથાદિ પણ કરવા લાગ્યો. તેમજ હાસ્યાદિ કીડા વિલાસથી પણ શાંત થતો નથી. નિષ્ઠે બહુ વારો તો પણ ચોતાની પ્રકૃતિને તે છાડતો નથી. તે વાત અન્ય શ્રાવકોના જાણવામાં આવી એટલે તેઓએ પણ કણું કે, સામાયિક લીધા પછી હ્લાસ કીડાદિકનો સર્વથા ત્યાગ કરવો જોઈએ. વળી સામાયિકધારી પુરુષોએ પ્રથમ બુદ્ધિપૂર્વક વિચાર કરી નિરંતર પાપ વિનાનું વચ્ચન બોલવું. અન્યથા સામાયિક ગણ્યાય નહીં. તે સાંભળી વિસદ્ધ બોલ્યો, હું શું કરું? મહારી આવી પ્રકૃતિ છે એમ લોકોને જવાબ આપે છે, વળી ધાર્મિક લોકો જેમ જેમ મહુને વારે છે તેમ તેમ હું અધિક અનાચાર સેવું છું. જેમ મહારો પાડાશી પુત્રાદિકનો તિરસ્કાર કરી બહુ નિષ્ઠુર ભાષી થયો છે તેમ હું પણ અધમી થયો છું. તે સાંભળી ધાર્મિક જનો બોલ્યા, તહારો પાડાશી કોણું છે? વિસદ્ધ બોલ્યો, શાંત નામે બહુ વૃદ્ધ શ્રેષ્ઠી હતો, તે બહુ વૈલબ્ધાળો. અને પુત્ર પૌત્રાદિક પરિવાર પણ તેને ધર્ષો હતો, તેમજ બોલવામાં ધર્ષો નિષ્ઠુર હતો.

એક દિવસ તેના પુત્રની હીકરીનો વિવાહ મહોત્સવ તેને  
ત્યાં પ્રવૃત્ત થયો, લગ્નનો દિવસ નજીકમાં  
શાંતશ્રેષ્ઠીની આવ્યો. ત્યારે તેનો પુત્ર બોલ્યો, પિતાજી!  
નિષ્ઠુરતા. હવે આજથી તમહારે અપશંદ બોલવો  
તો તે પણ અમંગલિક ગણ્યાય, માટે કોઈએ નીંઘ વચ્ચન બોલવું  
નહીં. અને કદાચિત્ કોઈ તેવું બોલે તો તહેને બીજાઓએ વારવું.  
કારણ કે હવે લગ્ન સમય નજીક આવ્યો છે. શાંતશ્રેષ્ઠી બોલ્યો,

( ૩૦૨ )

શ્રીસુપાર્કિનાથચરિત્ર.

ભલેને લગ્નો કે મરણુનો સમય આવે, પરંતુ મડદાની માફ્ક હું કંઈપણ બોલીશ નહીં અને સુંગાની માફ્ક બેસી રહીશ. ત્યારખાં અર્ધરાત્રીનો સમય થયો એટલે શાંતશ્રેષ્ઠી ઉઠ્યો. અને અહુમંડળ જેઠ તે ઉપરથી લગ્નો સમય થયો. છે એમ જાણી પોતાના પુત્રને બોલાવીને કહ્યું કે લગ્નો સમય થયો. છે માટે ગોકૃત નામના આ ભઙ્ને ઉઠાડ. જે તે જીવતો હોય તો અહીં આવીને લગ્નની તૈયારી કરે, પુત્ર બોલ્યો હે તાત? આવું અમંગત વચ્ચન ન બોલો? ન બોલો?? આ સમયે માંગલિક વચ્ચન બોલવાં જોઈએ. કારણું હવે કન્યાને વિવાહ મંડપમાં પધરાવવાનો સમય થયો. છે. પિતા બોલ્યો, વિવાહ મંડપમાં પધરાવો કે શૂળી ઉપર પધરાવો. પરંતુ હવે હું કંઈ બોલીશ નહીં. એમ કહી ક્રીષ્ણી તે બોલ્યો, હજુએ આ રંડા મારા ઘરમાંથી નીકળતી નથી. તે સાંભળી પુત્રો બોલ્યા, તાત? શકુનમાં પ્રથમ જ તમે રંડા એમ ન બોલો. શ્રેષ્ઠી બોલ્યો, તમહારી માને હર્મેશાં હું રંડ કહું છું, તોપણ તે તો કંઈ રંડાણી નથી. રે! સેંકડો મંગળાચારવડે શું દ્વાધ જેવું બહુ ઉજળું થતું હશે? એ પ્રમાણે શાંત શ્રેષ્ઠીનાં વચ્ચન અસંખ્ય છે. તેવીજ રીતે કર્મની વિમૂઢતાને લીધે મહારે. પણ ઉપહાસ કરવાનો સ્વભાવ પડ્યો છે. એમ કહી છેવટમાં વિસદ બોલ્યો કે, હવે હું સાવધાન રહીશ અને સામાયિક છોડીશ નહીં.

તેમજ નિષઠ બહુ શ્રદ્ધાપૂર્વક સામાયિક અહુણુ કરીને પાણે છે. અને અતિચારરૂપ ડાદવથી વિસુક્તા સદાચારીનિષઠ થઈ શાવક ધર્મ પણ સારી રીતે પાણે છે. હવે પ્રકૃતિશી શઠ ખુદ્ધિવાળો વિસદ સામાયિક લઇને પણ હુદ્ધાનમાં દોરાધ વાળીવડે તેને મલીન કરે છે. વળી હર્મેશાં નિષઠ તહેને બહુ ઠપકો આપે છે. તેથી

विसद्विषुइनीकथा.

( ३०३ )

तेनी उपर कोध करी विसद ऐवयो, तुं धर्मना प्रभावथी मह-  
र्जिंक हेवेंद्र था ? अने हुं त्हारै मृदंग वगाडनार सेवक थर्षश.  
आ प्रभाणे ते ज्वाभ आ पतो हुतो. त्यारभाद आयुष पूर्णु करी  
विसद अने निषद बन्ने सामाधि पूर्वक भरणु पाभीने सै-  
धर्महेवलेकमां उत्पन्न थया. तेमांथी निषद महर्जिंक हेव थयो  
अने विसद तेना सेवकोनी अंदर अहंप इद्धिकहेव थयो, त्यार-  
भाद निषदनी बहु सभृद्धि नेई विसद पोतानो पूर्वजन्म  
संबारी बहु ऐह करवा लाग्यो के अमे बन्ने जणु साथे गृहस्थ  
धर्म पाणता हुता तेमां आ शुद्ध अध्यवसायथी अधिपति थयो  
अने हुं हुक्यान वडे त्हेनो चाकर थयो. हा ? भूठ एवा अहने  
धिक्कार छे के, अहुं धर्म विद्धु आयरणु कर्तु. हास्यरसमां  
दुष्पथ थहने हुं मनुष्य जन्म हारी गयो. वणी अहारा ज्वेवा  
अधम बीजे काणु हेय ? के जे हुं सामायिकमां रह्यो त्यां सुधी  
पणु वाणीद्गी वाघेणुने कर्यने करवा समर्थ न थर्ष शक्यो.  
अहा ! मेह राजनुं खल डेवुं छे ? वणी अहारा निषद अंधुच्चे  
अहुवार अहने वार्यो हुतो तोपणु अहुं एम कहुं के तुं मह-  
र्जिंक हेव थर्षश अने हुं त्हारै मृदंगवाहक सेवक थर्षश. „ते  
वयन सत्य थयुं. निषद जे के पूर्व लवना स्नेहथी बहु स-  
त्कारपूर्वक अहने ज्ञुवे छे तोपणु तेनी आगण नुत्य समये अहारे  
कंठमां अहोटो. मृदंग बांधवो पडे छे अने तेथी जे कंध हुःअ  
थाय छे ते केवली भगवान् जाणु छे. एप्रभाणे विसदने पश्चात्ताप  
करवो पछ्यो. पछी त्यांथी ते बन्ने यवीने महाविद्धमां उत्पन्न  
थर्ष संयमनी आराधना करी केवलज्ञान पाभीने मोक्षपद पाभशे.

इति सामायिकद्वितीयातिचारविषाके विसदनिषद  
कथानकं समाप्तम् ॥

( ३०४ )

श्रीसुपार्क्षनाथअविना

## श्यामलवणिक् कथा.

---

### तृतीय कायद्विषयानातिचार.

हानविर्द्ध राजा बोल्यो, कृपासिंहु एवा हे भगवन् ! सामायिक प्रतमां त्रीजा अतिचारनुं लक्षण्य दृष्टांत सहित कडो. श्री सुपार्क्ष प्रभु बोल्या, हे राजन ! सामायिकमां रहेलो मनुष्य उपर्योगशून्य थर्धने अप्रभार्त्ति स्थानमां आसनादिक करे छे ते प्राणी कुगतिमां गयेला श्यामतनी पेठे शोकने पात्र थाय छे.

चंपड समान (३५) छे जंघाच्यो जेनी, कमल समान (३५) छे मुख जेनुं, उज्जत पर्योधर (स्तन-मेघ)

**श्यामलद्रष्टांत.** छे जेना अने अशोकवृक्षना पहिव समान (३५) कर छे जेना एवी प्रमदा समान विलासवाणी मलयपुरी नामे नगरी छे. तेमां आचारमां शुद्ध अने हयादिक शुण्यामां प्रवीणु नयसार नामे राज छे. तेमज संसुद्ध पर्यांत पृथ्वीझीपी खीना वक्षःस्थलमां रहेला हारनी भाइक ते आनंदथी वर्ते छे. वर्णी तेज नगरमां अहुधनवान कुलधर अने श्यामल नामे ऐ वाणीच्यो रहे छे. अन्ने पोताना अनुचरे. साथे हुम्भेशां साथे ज इरे छे, केंद्रपद्म समये वियुक्त रहेता नथी.

अन्यदा शांत पुढेने पद्म अशांत अनावनार वसंतद्वतु आदी. तेथी कुलधर अने श्यामल अन्ने

**वसंतद्वतु.** पोताना परिवार सहित वसंत ऐलवा रतिसुंदर नामे उद्यानमां गया. अने पोताना भित्रेनी खीच्यो साथे विविध कीडाच्यो करवा लाग्या. तेटलामां एकदम पुर्व दिशा तरक अहु जेसर्थी पोकार थवा लाग्या,

સમાધનીકથા.

( ૩૦૫ )

તે સાંસળી આ શું ? આ શું ? એમ બોલતા અજે જણુ અડપથી તે તરફ જતા હતા, તેવામાં ત્યાં બહુ એકઠા થયેલા માણુસો તેઓના જોવામાં આવ્યા. તેઓમાંથી કેટલાક અંષઠ્યો મંગાવતા હતા, કેટલાક આચ્યાસન કરતા હતા, વળી કેટલાક મોટા પોકાર મૂડી રૂધન કરતા હતા, અને કેટલાક છાતી કૂટવામાં રોકાયા હતા. આવો ભાયંકર હેખાવ જોઈ કુલધર વણિકે કોઈક પુરુષને પુછ્યું કે, બાઈ ! આ સર્વ લોકોને શોક કરવાનું શું કારણું આવી પડ્યું છે ? ત્યારે તે બોલ્યો, હમણાંજ ધનેશ વણિકનો પુત્ર મહાચંદ અહીં છીડા કરવા આવ્યો હતો અને અસ્સરાઓ સાથે જેમ ઈદ તેમ તે પોતાની સ્ત્રીઓ સાથે રમતો હતો. તેવામાં તેણે કાળો નાગ કરડ્યો છે, જેથી આ સર્વ લોકો વિલાપ કરે છે.

એવામાં ઉપકારનું કારણું જાણી અનેક વિદ્યાધરો સાથે એક ચારણું શ્રમણ ત્યાં આવ્યા, એટલે કુલચારણસુનિનું ધર તથા શ્વામલે તેમનાં દર્શન કર્યાં પણી આગમન. તેઓએ ધનેશ શ્રેષ્ઠીને કહ્યું કે આ સુનિવર સર્વ વિદ્યામાં કુશલ છે. તેમજ તે સર્વ જાણે છે. અને પોતાની ધરણી પ્રમાણે આકાશમાં પણ ગમન કરે છે. માટે એમની પ્રાર્થના કરો તો તમહારા પુત્રને તે જલદી જીવિતદાન આપશો. તે સાંસળી શ્રેષ્ઠીએ પણ જલદી ત્યાં જઈ વિનતિ કરી જણ્યાંયું કે, હે સુનીદ ! યમ સમાન ભાયંકર સર્પે ઝારા પુત્રને દંશ કર્યો છે. માટે કૃપા કરો હાલમાં ઝુને પુત્ર જિક્ષા આપો. અને સોળ સ્ત્રીઓ સહિત એને જીવાડો. સુનીદ પોતાના આચારની અપેક્ષાએ કંઈપણ બોલ્યા નહીં. ત્યારે એક વિદ્યાધરે કહ્યું કે, હે શ્રેષ્ઠી ! આ સુનીદો મંત્ર તંત્રાથી વિરક્ત હોય છે. પરંતુ દ્વારા જાણી હું તને ઉપદેશ આપું છું કે, રહારા

( ३०६ )

શાસુખાર્થનાથમારત્ર.

પુત્રને મુનિના ચરણુ ક્રમલ પાસે લાવીને ભૂમિ ઉપર મૂક, જેથી તેમના ચરણ રજના સ્પર્શથી તેનું વિષ ઉતરી જશે. એછોએ તે પ્રમાણે કર્યું, એટલે સુનીદ્રના પ્રલાવથી તેમજ વિદ્યાધરે ગુસ સ્મરણુ કરેલા વિષધાતિ મંત્રના પ્રલાવથી સૂર્યના કિરણોથી તપેલા હિમની માઝક તે વિષ વિલય પામ્યું. ત્યારબાદ નિદ્રામાંથી જાગ્રત્તની માઝક ઘેડો થઈ મલયચંદ્ર ઘોલ્યો, તાત ! આ બધા મનુષ્યો કેમ અહીંયાં એકઠા થયા છે ? વળી આ સુનીદ્ર કોણું છે ? તે સાંભળી તેના પિતાએ સર્વ વૃત્તાંત વિસ્તારપૂર્વક તેને કહી સંભળાંયું. એટલે મલયચંદ્ર ઉલો થઈ સુનીદ્રના ચરણમાં નમસ્કાર કરી ઘોલ્યો, હે સ્વામિન ? હું વિષધર નાગના દંશથી ઘેરાયેલો હતો, છતાં રહુને આપે જીવિતહાન આપ્યું.

**સુનીદ્ર ઘોલ્યા, અરે ! ધર્મવિમૂર્ત ! તહારા એક સર્પનું વિષ નષ્ટ થયું. પરંતુ આડ મહ સ્થાનરૂપી છે ક્રાણુઓ જેની, રતિ અને અરતિરૂપી મહાલયં-  
ચારણુમુનિનો ઉપદેશ.** કર છે લુહાઓ જેની, હાસ તથા ભયરૂપી જેની અતિ ભયંકર દંધ્રાઓ છે, અને જેના દંશથી આ જગતના જીવો અજ્ઞાનરૂપી વિષવડે મૂર્છિત થયા છતા પોતાનું પરમાર્થ કાર્ય કંઇ પણ જાહી શકતા નથી, એના પ્રચંડ મોહરૂપી મહા સર્પના વિષથી હંબુ તું ઘેરાયેલો છે. હવે જે પુરુષને મોહરૂપી સર્પે દંશ દીઘેલો હોય તેને કોઈ પણ પ્રકારે જો શુદ્રરાજનો યોગ મળી આવે અને તેઓ ધર્મદેશનારૂપી અમૃતની ધારાઓ તેના પર સિંચન કરે તો પણ તે અરોબર સચેતન થતો નથી. વળી જો ઉપદેશરૂપી મંત્ર દાનતેના કાનમાં આપે તો તે મસ્તક ધૂષાવે છે. પરંતુ તે સારી રીતે સંભળતો નથી, તેમજ ભવિત્વતાના યોગે ઉત્કૃષ્ટ પુષ્યના પ્રલાવથીજ સફાગુર્દ રૂપ ગાડડિકે આપેલો મંત્ર કોઈક ભાવ્ય પ્રાણીના મોહરૂપી વિષને છડાવે છે.

શ્વામલનીકથા.

( ૩૦૭ )

માટે હે મલયચંદ ! હજુ પણ મોહરપી મહા સર્વના વિષ વેગો તહારા દેહમાં બહુ રકુરી રહ્યા છે. તેથી હે ભદ્ર ? તેઓને ઉતારવા માટે તું યત્ન કર. ત્યારખાદ મલયચંદ એલ્યો, હે મુનિંદ્ર ? આપની કૃપાથી તે વિષ વેગો પણ સ્વર્યના પ્રલાવથી અંધકારની માઝુક બહુ દૂર ચાલ્યા જશે, કારણું કે મોહરવિષને ઉતારવામાં પણ આપ બહુ સમર્થ છો. માટે આપ કૃપા કરી લેનો ઉપાય બતાવો જેથી મહને તે મોહરવિષ પીડે નહોં. શુરુ એલ્યા, પ્રથમ સારી રીતે સંભ્યક્તવર્દ્ધી મંડળ રચીને શિક્ષાબંધ કરવામાં આવશે. ત્યારખાદ મુનિ ધર્મરૂપી મહામંત્ર આપવામાં આવશે. પછી તેની વિધિ પુર્વક આરાધના કરવી. જેથી તે તહારા સમય મોહરવિષનો ઉંઘેહ કરશે. એ પ્રમાણે જાય દેશના આપીને પોતેજ સ્વીચ્છા. સહિત મલયચંદને દીક્ષા આપી. પછી કુલધર અને શ્વામલ વણિકે પણ સંભ્યક્તવ સહિત દેશ ચારિત્ર લીધું. બીજા લોકોને પણ સંભ્યક્તવ અને બીજાં વત પણ લીધાં. તેમજ ધનેશશ્રેષ્ઠોને પણ અખાંડિત દેશવિરતિ લીધી. હવે મલયચંદ મુનિ સહિત શુરુ મહારાજે અન્યત્ર વિહાર કર્યો. ત્યારખાદ કુલધર અને શ્વામલ અને જાણું મલયચંદ મુનિની પ્રથાંસા કરતા પોતપોતાને વેર ગયા. અને વિધિ પ્રમાણે ગૃહીધર્મ પાળવા લાગ્યા. વળી સામાયિકમાં વિશેષ પ્રયત્ન કરવા લાગ્યા. તેમજ સિદ્ધાંત શ્રવણમાં પણ હુન્મેશાં તત્પર રહે છે. વળી ગીતાર્થ શુરૂના સુખથી સામાયિકના શુણો સાંભળ્યા કે જેમ મુનિઓ સમલાવમાં રહી સાવધ કાર્યનો ત્યાગ કરે છે અને નિરખધ કાર્યનો સ્વીકાર કરે છે તેમ શ્રાવક પણ સામાયિકમાં સંભ્યક્ત પ્રકારે રાગ-દ્રેષ્ણનો પરિહાર કરવાથી મુનિની માઝુક કર્મની નિર્જરા કરે છે. અને અદ્વય કર્મ બાંધે છે. તેમજ ધર્યો સમિતિ વિગેરે શુણ્ણાવડે ચુક્ત થયો છતો. પરિમિત કાલ-નિર્ગમન કરે છે. ત્યારખાદ તેના અક્યાસ્થી ચારિત્ર મોહરનીય

( ३०८ )

श्रीसुपार्थनाथ चरित्र.

કર्मने पણ ખપાવીને થાડા વળતમાંજ પ્રાચે સર્વ ચારિત્ર પણ  
મેળવે છે. એ કારણથી આવકોએ નિરંતર સામાયિક કરવું. એ  
પ્રમાણે શુરૂ સુખથી ઉપદેશ સાંભળી તેઓ બન્ને જણું પ્રતિ  
દિવક વિશેષ પ્રકારે સામાયિકમાં જોડાયા.

**અમ કેટલોક સમય જ્યતીત થયા બાદ કર્મવશથી ક્ષયા-  
મલ સામાયિકમાં પ્રમાણી થયો. તેથી અપ-  
રામલનો સ્થાનમાં પણ બેસવા લાગ્યો. વળી કાયિકા-  
દિકને વોસશાવે છે અને અપ્રમાર્જિત સ્થં-**

ડિલ ભૂમિમાં કાચોટસર્જે ઉલો રહે છે. તેમજ પ્રમાર્જિન કર્યો  
સિવાય શરીરે ખણું છે. તે જેઠ કુલધરે તેણે બહુ ઠપકો આપી  
કણું કે આવી ફુલિત કિયાને તું ત્યાગ કર. કારણ કે એમ કર-  
વાથી સામાયિકમાં અતિયાર લાગે છે. અપ્રમાર્જિત અને અનિ-  
રિક્ષિત ભૂમિમાં સ્થાનાદિક કરવાથી જોકે હિંસાનો અભાવ હોય  
તો પણ પ્રમાદને લીધે તે શુદ્ધ સામાયિક કરનાર ગણ્યાય નહિં.  
સ્થામલ બોલ્યો, તે સમયે મુને પ્રતિલેખનાદિકનું કંઈ પણ  
સ્મરણ રહેતું નથી. તેમાં હું શું કરું ? પણ બાંધવ ! તું મણારાં  
છિદ્ર નુંએ છે ? ત્યાર પણી કુલધરે તેણી ઉપેક્ષા કરી. પરંતુ  
સ્થામલે સામાયિકનું ઇલ જાણી તેણેનું ત્યાગ કર્યો નહીં અને તેણે  
હુંશ્વિષિત કાચાથી સામાયિક આચર્યું તેથી સાતિયાર સામાયિક  
કરી શ્યામલ મરણ પાણી અદ્યપ ઇદ્ધિક દેવ થયો. વળી કુલધર  
વણીદ નિરતિયાર સામાયિક પાણી પર્યાતમાં અનરશન વિધિ વડે  
કાળ કરી સૌધર્મ દેવલોકમાં દ્રંદ્રનો સામાનિક દેવ થયો. પણી  
પોતાના મિત્રનું સ્મરણ કરી તે તેણી પાસે ગયો. શ્યામલ દેવ  
તેણે જેઠ પૂછવા લાગ્યો, તું કેણું છે ? હરિ સામાનિક દેવ બોલ્યો,  
હું રહારો કુલધર નામે મિત્ર છું. તે સાંભળી શ્યામલે અવધિ-

વડણીકથા.

( ૩૦૬ )

જ્ઞાનનો ઉપયોગ કર્યો જેથી પોતાના પુર્વભવતું વૃત્તાંત જાણ્યું  
તેમજ કુલધરની ખેડાટી રંધ્રી જેઠ પોતે ખેડ કરવા લાગ્યો. હું !  
ધિક્કાર છે. મહુને મહારા આ પ્રમાણતું ઇલ મળ્યું. અને એને  
અપ્રમાણતું ક્રણ મળ્યું. અમે બન્ને જણ્યું એક ગુરુ પાસે સમ્બક્તવ  
અને દેશ વિરતિ પ્રતિ સાથે લીધું હતું છતાં આટલું અંતર થઈ  
ગયું. એમ બહુ જિજ્ઞ થઈ એલ્યો, ખાંધવ ! તે સમયે મૂઢતાને  
લીધે ખેડ તહારો ઉપદેશ માન્યો. નહીં તેનું આ ઇલ મહારે  
લોગવવું પડ્યું. ત્યારથાદ તે બન્ને જણ્યા લાંથી ચલી મહાવિ-  
દેહમાં ઉત્પજ્ઞ થઈ સંયમ પાળીને ઉત્તમ જ્ઞાન મેળવીને ત્રીજે  
બબે મોક્ષ પહું પામશે.

**ઇતિ સામાયિકવ્રતે તૃતીયાતિચારવિપાકેશ્યામલકથાનકં  
સમાપ્તમ्.**

### વરુણશ્રેષ્ઠીની કથા.

#### ચતુર્થાનવસ્થાનાતિચાર.

દાનવિર્ય રાજ એલ્યો, હે જગઙુરુ ! સામાયિક પ્રતમાં  
આચા અતિચારતું સ્વરૂપ દ્યાંત સહિત કહેવાને માટે આપ કૃપા  
કરો. શ્રી સુપાર્થ પ્રલુ એલ્યા, હે ભૂમિપાલ ? ને મનુષ્ય સામા-  
યિક અહુષુ કરીને તને મર્યાદા ચુકત સમયપુર્ણ કરતો નથી અ-  
થવા તે સામાયિક પ્રતમાં સ્વેચ્છા પ્રમાણું પ્રવૃત્તિ કરે છે તે પ્રાણી  
વડણી પેઠે નરકાદિક ગતિઓમાં અનેક પ્રકારનાં હું:એ લોગવે છે.

જેની અંદર વિલાસ કરતી ચુવતિએના હૃસ્ત તથા ચર-

( ३१० )

श्रीसुपार्थनाथयरित्

**वद्युद्युहृष्टांत**

थुमां सुशोभित कंकण अने अंजरोना मधुर  
शफ्टोवडे प्राकातिक वालुं त्रोना ईवनिसभ-  
लित थाय छे. ऐवुं नंदिवर्धन नामे नगर  
छे. तेमां सूर्य समान प्रतापी सूर नामे राजा छे. वजी तेणु वैरीङ्गी  
अंधकारने. भूतमांथी नाश कर्यो छे तो पछु ते प्रज्ञने ग्रासहायक  
नथी तेमज ते नगरमां नगरशेड तरीके सुंहर नामे श्रेष्ठी छे तेने  
वद्यु अने धरणु नामे ए पुत्र छे तेच्यो नीतिमां खडु दक्ष छे.

एक दिवस ते बन्ने आईच्यो नदी झीनारे डीडा करता

**चारणुसुनिनो** हता, तेटलामां त्यां एकाएक चारणुसुनि  
**उपहेश** पधार्या. बन्ने जणु तेमने प्रणाम कर्यो.  
पडी मुनिए धर्मलाल पुर्वक मधुरवाणी  
वडे सम्यक्तवाहि यतिधर्म अने गृहिधर्मनो

विस्तार पुर्वक उपहेश आयेयो. यतिधर्ममां अशक्त डावाथी ते  
बन्ने जणु श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो. अने थाडा समयमां  
यथार्थ ज्ञान भेणवी अद्वापुर्वक धर्माराधन करवा लाग्या, तेमज  
हुमेशां सामायिकनो. नियमलक्ष्य तेबन्ने जणु विधि सहित सामा-  
यिक देता हुता, तेमांथी वद्यु सामायिकनो. समय अदोभर पुर्ण  
हुतो. अटकी गयो. कंध कार्य प्रसंग आवे त्यारे पुर्णता  
नी माझक सामायिक पाणीने उठी जतो. ते ज्ञेष्ठ धरणु तेने  
शिक्षा आपी कळुं के आ प्रभाणु करवुं त्हने उचित नथी. कार-  
णुके सामायिकनो. समय ए धडीनो छे अने आपणु भाव पूर्वक  
ते शुद्ध समक्ष अहंषु करेलुं छे. छतां तुं प्रभाही थर्जनि ते अदोभर  
पाणतो. नथी माटे त्हने ते खडु हुःभद्रायक थशे. तेमज अन्यत्र  
पणु कळुं छे के—

विधाय नियमं यो वै, न पालयति संप्रमात् ।

स नरो दुःखमाप्नोति, प्रतिज्ञा तद्व निष्फलम् ॥

વરણીકથા.

( ૩૧૧ )

**આર્થ્**—“ જે પુરુષ નિયમ લઈને વ્યાતરાને લીધે સમ્યકું પ્રકારે તેને પાળતો નથી તે બહુ ફાખી થાય છે જેથી તેણે લીધેલા નિયમનું કંઈપણ ફ્રલ મલતું નથી.” વળી અનવસ્થા ચિત્તે સામાચિક અહંકૃતી કરી જે પુરુષ તેનો સમય પૂરો થયા વિના સમાસ કરે છે અથવા ઈચ્છા પ્રમાણે તેમાં અનાદરથી પ્રવૃત્તિ કરે છે તેનું સામાચિક અશુદ્ધ ગણ્યાય છે. કારણુકે ચિત્તની અનવસ્થાને લીધે આ લોકનું કાર્ય પણ સિદ્ધ થતું નથી. તે ઉપર ચાર ભટ નામે ક્ષત્રિયનું દૃષ્ટાંત છે.

**શાલિશામ નામે ગામમાં નામ પ્રમાણે ગુણવાન શૂરનામે એક ક્ષત્રિય રહે છે. શ્રીમતી નામે યથાર્થ નામ ચારભટક્ષત્રિય. ધારક તેની સ્વી છે. અને ચાર ભટ નામે તેને એક પુત્ર છે. હવે તે યૌવન વયમાં આવ્યો. એટલે ભીમરાજની નોકરીમાં રહ્યો. વળી ચાર ભટને એક મોહન નામે ભિત્ર છે, તે પણ તેજ રાજની સેવામાં રહ્યો અને લોજનની પણ હરકાર કર્યા વગર રાજસેવામાં તત્પર થયો. હુમેશાં સવારમાં ઉડી તે બન્ને ભિત્ર રાજ પાસે હાજર થતા, તેમાં ચાર ભટને એવી ટેવ હતી કે ઘડીભર એસી નમસ્કાર કરી ચાલ્યો જતો, અને મોહન તો જ્યાંસુધી રાજ લોજન કરી શયન ગૃહમાં જાય ત્યાં સુધી તે રાજની પાસે એસતો, પછી ત્યાંથી ઉડીને બહાર જઈ લોજન કરીને કુરીથી પણ સમય પ્રમાણે રાજ પાસે હાજર થતો, આથી રાજ મોહનને તો પોતાની પાસે જ જોયા કરતો અને ચાર ભટ તો નિયમસર હાજર પણ થઈ શકતો નહોતો. તેમજ કોઈ કાર્ય પ્રસંગે ચાલ્યો જાય અને વળી કુરીથી પાછેં આવી જાય, એમ ગમના ગમનમાં દિવસ પૂરો કરતો હતો. એ પ્રમાણે તે બન્ને સેવકોનો તક્ષાવત રાજના જાણવામાં આવી ગયો.**

( ३१२ )

श्रीसुपार्थनाथगतिः.

એક હિવસ કોજન કરી રાજ પલંગપર એડો હતો. તેવામાં અકુસ્માતું નગરની અંદર લોકોને ફોલાફુલ મોહનનું પરા-  
કમ. પણ મોહન પાસે એડો હતો. તેને રાજને આજા કરી કે નગરમાં તપાસ કર. લોકો શાથી ખૂબો પાડે છે. તત્કાલ મોહન ત્યાં ગયો. તો ઘર તથા ફુલાને ભાંગી નાંખતો અને ભાવત વિનાને. નિરંકુશ એવો એક હુસ્તી તેના જોવામાં આવ્યો કે, તરત જ તેણે હુસ્તીનું કરી તે હુસ્તીને અટકાવ્યો. પછી તેના સન્કુષ ફોલ મારો તેના મસ્તક ઉપર તે ચઢી ગયો, અને ગજશિક્ષણમાં બહુ કુશલ હેઠાથી તેણે ક્ષમાત્રમાં તેને કબજે કર્યો. તેટલામાં પ્રતીહારે રાજને ત્યાં જઈ સર્વ વૃત્તાંત નિવેદન કર્યું. તેથી રાજ આશ્ર્ય પામી હુસ્તી પાસે આવ્યો. અને હસ્તિના કંઈ ઉપર એડેલા મોહનને જોઈ રાજ વિચાર કરવા જાગ્યો કે મહેં એને ખુમરાખુની ખખર જોવા મોકલ્યો. હતો. પરંતુ આ કાર્ય માટે કંઈ મોકલ્યો નહોતો. છતાં એળુ મોટો ઉપકાર કર્યો. એમ જાણી રાજ તેના ઉપર બહુ પ્રસન્ન થયો. અને તે હુસ્તી મોહનને ધીનામ તરીકે આપી દીધો. તેમ દેશ તથા રાજમહેલ સાથે તહેને મંડલિકપદે સ્થાપન કર્યો.

હવે ચારભટને ચિંતા થઈ કે અમે બન્ને જણું રાજસેવામાં સાથે રહ્યા છીએ છતાં રાજ એના ઉપર ચારભટની વ્ય-  
પ્રતા. નથી. એમ જાણી તેનું મન બહુ વ્યચ થઈ ગયું તો પણ પુર્વની માઝુક અનવસ્થપણે તે સેવામાં વળગી રહો. પછી એક હિવસ મધ્યાન્હ સમયે રાજને વિચાર થયો. કે આ ચારભટને પણ કંઈક આમાદિક યાસ આપવો જોઇએ એમ જાણી દ્વારાલાને આજા કરી કે ચારભટને અહીં

વરણીક્ષા.

( ૩૧૩ )

બોલાવી લાવ, દ્વારપાલે તપાસ કરી જવાબ આપ્યો કે હું ! તે હાતમાં ત્યાં નથી. તેમજ તેના ચિત્તનું પણ ઠેકાણું નથી. તેથી તે પ્રસાહને કાયક નથી. રાજએ કલ્યાં તહારું કહેવું સત્ય છે, કારણુંકે કાણ માત્ર પણ તે ટકીને ખેસતો નથી. ત્યારખાદ ડેઢાંગે તહેને સમાચાર આપ્યો કે આજે રાજ તહેને બોલાવતા હુતા. ચારભાઈ બોલ્યો ભાઈ ! હું એક અગત્યના કાર્ય માટે ગચ્છે હતો. એમ કહી પછી એ ત્રણ હિવસ સુધી તે સદોદિત રાજ પાસે બેસી રહ્યો, પણ તેનું ક્રિલ કંઈ તેના જોવામાં આંદ્રું નહીં. તેથી તે પાછો પ્રથમની માર્ક ગમનાગમન કરવા લાગ્યો.

એક હિવસ ચારભાઈને મોહને કલ્યાં કે ખાંધવ ! રાજસેવામાં તું નિયમસર રહેતો નથી હવે જે તું સ્થિર ચિત્ત નિરતર બાળ્યો રહીશ તો તહેને સેવાનું અક્ષિસ. ક્રિલ મળશો. ચારભાઈ બોલ્યો, આપણો સનેહ અસાધારણ છે. તેનો તું વિચાર કર. અને

રાજને કંઈક સમજાવ, જેથી રહારી ઉપર પ્રસન થાય. તહારા કહેવાથી જરૂર રહારું કામ થશે. ત્યારખાદ મોહને રાજને જાણ્યાંયું, પ્રલો ! ચારભાઈ ઘણાદિવસથી આપની સેવા કરે છે, માટે તેની ઉપર કંઈક પણ દ્વારા કરવી જોઈએ. કારણુંકે તે બહુ હુઃએ છે અને આપ દ્વારા નહીં કરેં તો તે બીજા કેને ત્યાં જશો ? આ પ્રમાણે મોહનના આગ્રહથી ચારભાઈને પણ એક ગામ આપ્યું. માટે આ પ્રમાણે સમજાને હે વરણું ? તું પણ સામાચિકમાં સ્થિર ચિત્ત ખ્યાન કર અને સામાચિક પાળવામાં અપ્રમાણી થઈશ તો સ્વર્ગ અને મોક્ષનું સુખ પણ તને સુલભ થશે. એમ કહી ધરણ મૌન રહ્યો. પછી વરણું બોલ્યો. તહારું કહેવું સત્ય છે. પરંતુ કર્મવિશને લીધે હું સામાચિકમાં સ્થિર રહી શકતો નથી. તો હવે રહારે શું કરવું ? તેમાં રહારો કોઈ ઉપાય ચાલતો નથી. તેમજ સામાચિકનો

( ३१४ )

श्रीसुपार्थनाथगणित

त्याग करवो ते पण महादं भन कछुल करतुं नथी. अमे तेम करीने पछु सामायिक लीधा विना तो नहीं रहुं. माटे त्हारी शिखामण्डु अहने लागवानी नथी. एम कही इरीथी पछु ते पोतानो नियम चलावतो हुतो. तेवामां आयुष पुर्व थवाथी काण करी ज्यैतिषिठ देवोमां उत्पन्न थयो. अने त्यांथी अयनी बहु काल संसार भ्रमणु करशे. हुवे धरण्यु श्रावके बहु समय निरतिचार सामायिक पाणीने विधि पुर्वक देहनेः त्याग करी धर्शान देवदेवाकमां सुरेंद्र थयो. त्यांथी अयनीने महाविदेह क्षेत्रमां चारित्र पाणी सिद्ध थशे. माटे हे अव्य प्राणीओ ! सामायिक व्रत पाणवामां निरंतर तमारे यत्न करवो.

इति चतुर्थातिचारविपाके वरुणकथानकं समाप्तम् ॥

— → \* \* ← —  
सोमवण्णिकनी कथा.  
— • —

पंचमसमृतिविहीनतातिचार.

दानविर्यं राजा बहु लजासु छेवाथी इरीथी अश्व कर्यो, हे जगत्पालक ! आप सचराचर प्राणीओना उद्धारक छो माटे कपा करी हुवे पांचमा अतिचारतुं लक्षण्यु दृष्टांत सहित कहो. श्री सुपार्थ प्रभु ऐव्या, हे भूपति ! ने अव्यातमा चितानी शून्यताने लीघे अहणु करेलुं सामायिक शून्यचित्ते पाणे छे ते शून्यहशामां रहेता सोम वण्णिकनी माझक अव्य कूળ मेजावे छे. जे भडे-आ अरत क्षेत्रमां शुद् (सहशुद्) अुध, (पंडित) शुक (कविओ) अने चंद्र (आळण्यु क्षत्रिय अने वैश्य) वडे विरल्लत आडाशनी माझक सुशोभित कांपित्य नामे नगर छे. पोताना पराकम वडे सर्व देवाकमां प्रसिद्ध धामेदो अयपाल नामे राजा तेमां राज्य करे छे. अहु

સોમવારિકણીકથા.

( ૩૧૫ )

ગુણવાન् પ્રિયકાંતા નામે તેની સ્ત્રી છે. તેમજ તે નગરમાં વખ્ચિક જનોમાં સુખ્ય સુમતિ નામે શ્રેષ્ઠી છે. સુલસા નામે તેની સ્ત્રી છે. બંધુ રૂપ કુમુદ વનમાં ચંદ્ર સમાન સોમ નામે તેમને એક પુત્ર છે. વળી કુમત રૂપી વનમાં નિત્ય ભ્રમણ કરતો એવો તે સોમ એક હિવસ સમંતલાદ લાદુને ત્યાં ગયો. અને લાદુના ચરણમાં પ્રણામ કરી તે એલયો, શુરૂ ! કંઈક નવીન કથા વાર્તા આજે મહુને સંભગાવો તો બહુ સારું.

ઉચ્ચિત ધર્માનુયાથી તે આદ્ધારુણે કથાનો પ્રારંભ કર્યો. ગિરિ-  
હર્ઝ નામે નગરમાં એક આદ્ધારુણ રહેતો હતો,  
**એકનવીનકથા.** તે વિષયલોાગથી પરાજમુખ થઈ તીર્થ-  
યાત્રાએ કરતો હતો. તેવામાં ડેઈક હિવસે  
ફરતો ફરતો સુકોમલ પદ્મવોથી ઢંકાઈ ગયા છે સર્વ ભૂમિ  
ભાગ જેના એવા એક વનની કુંજમાં તે જઈ પહોંચ્યો. તેનું  
લામાં તૈને બહુ જ તૃપા લાગી. જેથી કંડ તથા એઠ સુકાર્મ  
ગયા. તેથી તે પાણી માટે આમતેમ ક્રાંકાં મારવા મંડી ગયો.  
એવામાં બહુ વેલીએથી આધારિત એક અંધ કૂવો તેની નજરે  
પડ્યો. પછી જગની આશાથી તેના કંડા ઉપર તે ગયો. અને  
લાંઘી વેલીએની હોરી બનાવી પોતાની તુંબડી બાંધીને કુવામાં  
પાશી. એટલે અંદર રહેલો એક નાનો બાળક હોરીને વળગી  
પડ્યો. પછી આદ્ધારુણે તેને બહાર કાઢ્યો. તે બાલકે પોતાનો ઉપ-  
કારી જાણી આદ્ધારુણે નમસ્કાર કર્યો. પછી વિપ્ર એલયો, તું કોણ  
છે ? અને આ કુવામાં શામાટે પણ્યો હતો ? ત્યારખાદ તે  
બાળક એલયો, મથુરા નગરીના માણીનો હું પુત્ર છું અને રાજ-  
ઉદ્ધાનમાં હું રમતો હતો, ત્યાંથી એક ચાર મહુને ઉપાડીને  
અહીં લાગ્યો. પછી વાધના ભયથી અમે બન્ને જણું આ કુવામાં  
પડ્યા. તેમજ તૃપાથી પીડાયેલો એક સોાની અને ગાડિક પણ

( ३१६ )

ओमपाश्चनाथवित्र.

આ કુવામાં પહ્યા છે. તેઓ પણ હજુ અંદર છે. માત્ર અહારો આપે ઉદ્ઘાર કર્યો. તે સાંભળી પરૈપકાર સમજુ આદ્ધારો કરીથી દોરી પાસી એટલે ગાડુંડિક પણ નીકદ્યો. એમ અનુકે સર્વને બહાર કાઢ્યા. પછી તેઓ આદ્ધારુને નમસ્કાર કરી જોવ્યા, અમારા પિતા અને શુરૂ પણ તમેજ છે. કારણકે અમને જીવિતદાન આપે આપ્યું છે. વળી હે વિદ્ધન? એમે સર્વ મયુશના રહીશ છીએ અને અમારા નામ પણ પ્રસિદ્ધ છે. તેથી તીર્થયાત્રા માટે તમ્હારે જરૂર ત્યાં આવવું. જેથી તમ્હારો કંઈ પણ ઉપકાર કરી એમે આપના દેવામાંથી છુટીએ. પરંતુ પ્રાણુદાતાઓનો ઉપકાર કરવો બહુ હુંકર છે. ત્યારખાફ વિપ્ર જોવ્યો, હે ચોર! આ બાળકને પોતાના માબાપનો જલદી મેળાપ થાય તેવી ગોઠવણી રહારે કરવી. જરૂર હું પહેંચાડી દ્ધિશ એમ કણી ચોર ત્યાંથી વિદ્ધાય થયો. તેમજ સૌની વિગેરે પણ પોતપોતાના સ્થાનમાં ગયા.

**કેટલોક સમય વ્યતીત થયા બાદ તે વિપ્ર મથુરામાં ગયો.**

**અનેક પ્રકારના મનોહર ક્લિન, પુષ્પોના બાળકે કરેલો** ભારથી નની ગયેલાં સુંદર વૃક્ષો જેમાં **ઉપકાર.** રહેલાં છે એવા ઉધાનની છાયામાં વિશ્રાંતિ માટે તે બેઠો હતો. તેવામાં તેજ માળીનો પુત્ર ત્યાં આવ્યો. અને તે આદ્ધારુને જેઈ બહુ જ ઝુશી થયો. પછી નમસ્કાર કરી નારંગી, કેળાં, દ્રાક્ષ, અને દાડિમ વિગેરે લાવીને તેને ક્લાહાર કરાયું, પછી ઉધાનની અંદર પોતાના સ્થાનમાં તેને લઈ ગયો. ત્યારખાફ તેણે ચોરને ત્યાં આદ્ધારુના આગમનના સમાચાર મોકલાયા. સમાચાર મળતાની સાથે ચોર પણ વિપ્ર પાસે આવ્યો અને પ્રણામ કરી તેણે એકાંતમાં લઈ ગયો. પછી રાજનાં બહુ કિંમતી આભરણો ચોરીમાં

સોમવિષુરનીકથા.

( ૩૧૭ )

કાવેદો હતો તે સર્વ પ્રાક્ષણુને આખ્યાં. ત્યારખાદ તે વિપ્ર સોનીનું ઘર પૂછી તેના ઘેર ગયો. તો સોની પોતે હુકાનમાં ઘડતો હતો. તેની પાસે જઈ વિપ્ર બોલ્યો, લાઇ ! કેમ તમે મહુને એગાયો છો ? સોની બોલ્યો બરોઅર મહુને સમૃતિ નથી. તમને ઝૂવામાંથી જેણે બાહુર કાઢ્યા તેજ હું પોતે. પછી તે ઉલ્લો થંડું સંભ્રમ પૂર્વક ચોતાનું આસન આપી મધુર વચન બોલવા લાગ્યો. ત્યારખાદ પ્રાક્ષણું એકાંતમાં જઈ સોનીને આભરણ બતાવ્યાં. અને કલ્યાં કે આ વેચવાનાં છે. માટે જે કિંમત આવે તે મહુને આપો અને તમે પણ તમારી મહેનત જેટલું કંઈક લ્યો.

હવે સોની સર્વ ઘરેખૂં લઈ બળર તરફ નીકળ્યો. અને પ્રાક્ષણું પણ સ્નાન માટે યમુના ઉપર કૃતદ્ધન સોની. ગયો. સોની જેટલામાં જવેરીની હુકાને જતો હતો તેટલામાં ત્યાં પટહુંદોષણું.

સાંભળી કે રાજકુમારને મારી નાંખી તેનાં આભરણ ચોરી લેનાર ચોરને જે કોઈ રાજાની આગળ જાહેર કરશે તેને રાજ તરફથી લાખ સોનૈયા આપવામાં આવશે. એમ સાંભળી સોની વિચાર કરવા લાગ્યો. આ અલંકાર રાજકુમારના છે અને આ મહારાજ ઘડેલા છે માટે આ અલંકાર રાજને આપી લક્ષ સોનૈયા લેવા ઠીક છે. પરંતુ હવે આ પ્રાક્ષણુનો મહુરે શો અપ છે ? એમ નિશ્ચય કરી તે રાજ પાસે ગયો. અને સર્વ વૃત્તાંત કલ્યાં. રાજએ પૂછ્યું, તે વિપ્ર કયાં છે ? સોની બોલ્યો, તે તો યમુનાની ઉપર સ્નાન કરવા ગયો છે. રાજ બોલ્યો, આ સીપાઠુંઓને લધું હું ત્યાં જ અને એને બતાવ. સોની પણ હૂર ઉલ્લો રહીને યમુનાના પ્રવાહમાં વેદાધ્યયન કરતા તે વિપ્રને બતાવી પોતે રસ્તે પડ્યો. પછી સીપાઠુંઓએ તેને અવળા હાથ બાંધીને રાજની

( ३१८ )

શ્રીસૂપાર્થનાથચરિત.

આગળ હાજર કર્યો. ત્યારખાદ રાજાએ સોનીને 'પૃથ્વી' મહારા કુમારને ભારનાર આ માણુસ છે ? અને એનાં આભરણું પણ એણે રહુને આપેલાં છે ? સોની બોલ્યો, હે રાજન ! હા એણે જ રહુને આપ્યાં છે એ વાત સત્ય છે. પછી રાણીએ પ્રાણીએને જોઈ હુંઘથી ખડું વિલાપ કરવા લાગી. રાજા પણ તેઓના વિલાપથી ખડું હુંઘી થઈ ગયો. છેવટે પોતે ધૈર્ય રાણી રાણીએને શાંત કરી ત્યારખાદ રાજાએ પાંડિત પ્રાણીએને બોલાવીને કહ્યું કે આ પ્રાણીએને કંદિક ચેાય હંડ ખતાવો. પાંડિતો બોલ્યા, હે નરાધીશ ! ને કે કુમારનો ધાત કરનાર અને સોનાની ચોરી કરનાર આ પ્રાણીએનાં આભાસ માત્ર વિપ્રપણું હેખાય છે તો પણ તેનો વધ કરવો જરૂર છે, તે સાંસળી રાજાએ પ્રાણીએને વર્ધસ્થાને લઈ જવાની આજા આપી.

ત્યારખાદ પ્રાણીએના કંઠમાં લાલ પુષ્પોની માળા પહે-  
રાવી તેને ગધેડા ઉપર બેસાર્યો. અને અન્ન-  
ગાડુડિકનો રમાં વાળુંતેના અહોટા નાદ સાથે તેને  
પ્રત્યુપકાર. ફેરવવા કાઢ્યો તે વખતે તે પ્રાણીએ એક  
ગાથા પોતાના સુખે બોલતો હતો કે—

નશનિત ગુણશતાન્યપિ, પુરુષાણમગુણવત્સુ પુરુષેપુ ।  
અઞ્જનગિરિશિસ્વરેષ્વિવ, નિશાસુ ચન્દ્રાંશવઃ પતિતા: ॥

અર્થ—“ અંજનગિરિના શિખરે ઉપર પડેલા અંદના કિરણોની માઝું ગુણ રહીત પુરુષોને વિષે સત્પુરુષોના સેંકડોગુણું પણ વિનિષ્ટ થાય છે. ” હુંએ આવી અવસ્થામાં પડેલો તે પ્રાણીએ ગાડુડિકના જોવામાં આવ્યો. અહો ! આ પ્રાણીએ રહારો પરમ ઉપકારી છે, માટે જરૂર અહારે પ્રત્યુપકાર કરવો જોઈએ. એમ જાળી સિદ્ધ વિદ્યાવાળા તે ગાડુડિકે અકર્માતું રાજકુમારીને સર્પ

सोभवचित्तीकथा.

( ३१६ )

करडावये। अने तरतज ते भूर्छित थई भूमि उपर पडी. ते जेई दोकेमां हाहाकार थई गये। के राजनी पुत्रीने सर्व करडये। ते वात सांखणीने राज पछु त्यां आवये। अने एक श्वेष केवल्ये। के-

एकस्य दुःखस्य नयावदन्तं, गच्छाम्यहं पारमिवार्णवस्य ।

तावद् द्वितीयं समुपस्थितं मे, छिद्रेवनथो बहुलीभवन्ति ॥

अर्थ—“ समुद्रना अंतनी भाईक छन्दु एक फुःभने। अंत हुँ पावये। नथी तेटलामां आ भीजुँ फुःभ आवी पड़युँ। अहो दैवनी विचित्र गति छे के छिद्रोभां [ फुःभना समयमां ] अनेक अनर्थी आवी पडे छे। ” एम विचार करी राजन्ये नगरमां पटह वगडावीने सर्व गाढ़िडेने बोलाव्या, अने जाहेर कर्त्तु ते, जे राजकुमारीने सलुवन करशे त्हेने लक्ष सोनैया आपवामां आवशे। ए प्रभाषे पटहनाई सांखणी ऐदो गाढ़िडक नगारानो स्पर्श करी अहु भुशी थई राज पासे गये। अने तेषु कहुँ ते, हे नरेंद्र ! आपनी पुत्रीने हुँ सलुवन करीश एमां कंध पछु संशय नथी। परंतु जे आक्षण्यने गधेडा उपर बेसारी वध्यस्थानमां लध जवाय छे ते आक्षण्य शुद्ध छे माटे तेने मुक्त करावे। राजन्ये तरकाल आक्षण्यने पोतानी पासे बोलाव्ये। अने तेषु पछु भूणथी आरंभी सर्व हुकीकत राजनी आगण निवेदन करी।

त्यारभाई गाढ़िडे पछु क्षमार्धमां मंत्रना प्रभावथी कुमारीने सलुवन करी पधी राज पछु अहु दृष्ट्याणु आक्षण्य। संतुष्ट थये। अने सोनीनुँ वृत्तांत जाणी ऐव्ये। के—

उपकारिणि विश्रब्धे, आर्यजने यः समाचरति पापम् ।

तं जनमसत्यसंधं, भगवति ? वसुधे ? कथं वहसि ॥

अर्थ—“ उपकारी अने विश्वासी एवा सञ्जन उपर ने

( ३२० )

श्रीसूपार्थनाथभरित्र.

પુરુષ પાપ આચરણ કરે છે તેવા અધમ પુરુષને પૂજય એવી હે  
પૃથ્વી હેવી ! તું શામાટે ધારણ કરે છે ? ” એમ વિચાર કરી  
રાજને તત્કાલ સોનીને પોતાની પાસે પડકાવી મંગાવ્યો અને  
કબજે કર્યો. પછી ગાડિકને લાખ સોનીના આપી વિદાય કર્યો.  
આદ્ધારને પણ ક્ષમાપૂર્વક બહુ દ્રોઘથી સત્કાર કરી રાજને કહ્યું  
કે, “અન્ય કંઈ પણ મારા લાયક કાર્ય હોય તો કહેલું. આદ્ધાર  
યોદ્યો, હે રાજન ! ખરં કાર્ય મારે એટલું છે કે આ સોનીને છોડી  
મૂકેા. કારણકે એ મારો મોટો ઉપકારી છે. એણે જો આ પ્રમાણે  
ન કર્યું હોત તો આપનું દર્શન મને કયાંથી થાત ? તે સાંભળી  
રાજને સુલાખિત વચન કહ્યાં કે—

ઉપકારિણ વીતમત્તસરે વા, સદ્યત્વં યદિ તત્ત્વ કોડતિરેકઃ ।

અહિતે સહસાડપરાધલઘે, સઘૃણં યસ્ય મનઃ સતાં સ ધુર્યઃ ॥

અર્થ—“ઉપકારી અથવા ભાત્સર્ય રહિત પુરુષ ઉપર ને દ્યા  
કરવી તેમાં શી વડાઈ ! પરંતુ અકસ્માત् અપરાધકારી શત્રુ  
ઉપર જેના હૃદયમાં દ્યા ઉત્પત્ત થાય તે પુરુષ સજજનોમાં અ-  
શાણી ગણ્યાય છે.” તેમજ વળી કહ્યું છે કે

પ્રત્યુપકુર્વનું પૂર્વે, કૃતોપકારોડપિ લજયતિ ચેતઃ ।

યસ્તુ વિહિતાપકારા—દુપકારઃ સોડધિકો મૃત્યો: ॥

અર્થ—“ પ્રથમ ઉપકાર કર્યો હોય છિતાં પણ ને પ્રત્યુપ-  
કાર કરતાં હૃદયમાં લનજન ઉત્પત્ત કરે છે તે ઉપકાર અપકાર કર-  
નાર ભૃત્યથી પણ અધિક ગણ્યાય છે.” એમ વિગ્રહની બહુ પ્રશંસા  
કરી રાજને સોનીને જીવિતદાન આપી છોડી દીધેા. પરંતુ એની  
પાસેથી સર્વ દ્રોઘ લુંટી લઈ તેને પોતાના દેશમાંથી કાઢી મૂક્યો.  
વળી ગાડિકે સુવાર્ણાહિક ને લક્ષમી રાજ પાસેથી મેળવી હતી  
તે સર્વ પરોપકારી જાણી આદ્ધારને અર્પણું કરી અને તેણે કહ્યુંકે-

सोभवथिकनीकथा.

( ३२१ )

प्रत्युपकुर्वन्बह्यपि, न भवति पूर्वोपकारिणा तुल्यः ।

एकोऽनुकरोति कृतं, निष्कारणमेव कुरुतेऽन्यः ॥

**अर्थ—**“ प्रत्युपकारने करतो छतो पण्यु पुरुष प्रथम उपकार करनार पुरुषनी तुलनाने पामतो नथी. कारणुके प्रत्युपकारो उपकार कर्या आह तेनुं अनुकरणु करे छे, अने उपकारी तो कारणु सिवाय प्रवृत्त थाय छे. ” माटे तमे मारा निष्कारणु मोटा उपकारी छे. अने मारी पासे तेवी कोळपण्यु वस्तु नथी कु जेथी हुं आपनी सेवा करी इण्युसुक्ता थाउं. शास्त्रमां पण्यु ते अभाण्यु क्षम्यु छे के प्राणुदाताच्योनुं इण्यु वाग्नुं बहु दुःकर छे. एम डेटलाक द्विप्स राखीने पधी विद्याय कर्यो. तेज पोते १५८० अर लिक्षुक३पे हाल अही आव्या छे अने आजे झें तेमने उद्यानमां जेथा छे. वणी तेमणे पोतानुं चरित्र त्यांना रहिश लेडोनी आगांग जाहेर क्षम्यु छे. सोम योद्यो, हे भिन्न ! शा कारणुथी त्हेने ज्ञेनदीक्षा लेवी पडी ! समंतबद्र योद्यो, ए संभंधी झें कंधपण्यु पूछयुं नथी. याल ! तुं आवे छे ! आपणे बन्ने त्यां जधते कारणु पण्यु पूछी जेईचे. एम विचार करी बन्ने जणु उद्यानमां मुनीद्र पासे गया. नमस्कार करी सोम योद्यो, हे मुनीद्र ! आपने दीक्षा अहुणु करवामां मुख्य शुं कारणु ?

**मुनि योद्या,** हे सोम ! भथुरानो रहीश एक सोनी रहारा व्रत अहुणुमां निभित कारणु छे. एम कही  
**मुनिचरित्र.** तेमणे करीथी प्रथमनी माझक ते सोनीनुं चरित्र क्षम्युं अने विशेषमां मुनिचे क्षम्युं के ते सोनीने राज्ये देशनीकालनी आज्ञा करी हुती. त्यारभाद ते सोनी क्रतो कोळक नगरनी पासमां गयो, त्यां ध्यानमां

( ३२२ )

श्रीसुपार्थिनाथचरित्र.

બેઠેલા એક મુનીદ્ર તેના જેવામાં આવ્યા. પછી તે સુનિને નમસ્કાર કરી નીચે બેઠો. સુનિને પોતાનું ધ્યાન સમાપ્ત કરી તેને જૈનધર્મનો ઉપહેશ આપ્યો. તેથી વિશુદ્ધ પરિણામને લીધી પ્રખુદ્ધ થઈ તે સોનીએ જૈન દીક્ષા લીધી. ત્યારબાદ પોતાના શુરૂ પાસેથી બન્ને પ્રકારની શિક્ષા અહૃણુ કરી, એકાડી વિહાર પ્રતિમાનો સ્વીકાર કરી વિચરતા એવા તે સુનિને મથુરામાંથી પાછે વળતાં ભણે જેયો. હવે તે સોનિ સુનિને, પ્રત્યુપકારની બુદ્ધિએ પ્રથમ કરેલા હુંકૃતની શાંતિ માટે ભણે દીક્ષા આપી. તેમજ પ્રતિષેધ આપી બન્ને પ્રકારની શિક્ષામાં મને બહુ કુશળ કર્યો. પછી એકાડી વિહાર પ્રતિમાનો સ્વીકાર કરી વિહાર કરતો હું અહીં આવ્યો. છું, આ પ્રમાણે મહારં ચરિત્ર ભેં તમને સંભળાયું. માટે હે મહાનુલાલો ! લૌકિક તીર્થીમાં ભ્રમણ કરતા ભેં બહુ પુણ્યથી પરમ પવિત્ર એવું આ ઉત્તમ સુનિતીર્થ પ્રાપ્ત કર્યું છે. અને તેના પ્રલાવથી હું ઘોર સંસારસાગર તરી ગયો છું. માટે તમારે પણ જૈન ધર્મમાં આપ્ત ઉદ્ધમ કરવો. તેમજ જુનેંદ્ર લગ્નાની ભક્તિ, સમય જીવો ઉપર મૈત્રી ભાવ, શુરૂ ઉપહેશગાં શ્રદ્ધા, શીલવંત જનો ઉપર પ્રેમલાવ, ધર્મ શ્રવણ કરવામાં બુદ્ધિ, પરોપકારમાં લક્ષ્મી, પરલોકનાં કાર્યસાધનમાં હૃદયભાવના અને ધર્મને માટે જ જન્મ કોઈ મહા પુણ્યવંતને જ પ્રાપ્ત થાય છે. વળી હે ભગ્યાત્માઓ ! હુલ્લાલ એવો આ મનુષ્ય ભવ પામીને પણ ધર્મ સંબંધિ નાના પ્રકારના શુણુ વિનાના જે મનુષ્યોના દિવસો જાય છે તે તેઓને। સમય નિષ્ફલજ જાણુલો. તેમજ તેઓની ઉત્પત્તિ જ ન થાય તે ઉત્તમ ગણ્યાય. ધર્મ શુણુ રહિત થઈ જેઓ પોતાનો જન્મ નિષ્ફલ ગણ્યાલે છે તેઓ કરતાં અરણ્યવાસી પણ્યો. ઉત્તમ ગણ્યાય છે. વળી જે મહાનુલાલ પુરુષોનું ભાવિ કર્યાણું નાનુકમાં હોય છે તેઓના દિવસો ધર્મ પ્રવૃત્તિમાંજ ચાચ્યા જાય છે. અને તેઓજ

સોમવિષ્ણુકનીકથા.

( ૩૨૩ )

ધન્યવાદને લાયક થાય છે તથા પુન્યના પાત્ર પણ તેઓજ ગણ્યાય છે. વળી ધર્માકાર્યમાં ઉદ્ઘૂકત થયેલા જેઓની બુદ્ધિ પાપકાર્યમાં પ્રવૃત્ત થતી નથી તે પુષ્ટયશાલી જનોતું જીવિત સંક્રાંત ગણ્યાય છે. તે સાંકળી સોમ બોલ્યો, હે મુનીદ ! જૈન ધર્મના કેટલા લેદ છે ? સુનિ બોલ્યા, યતિ અને બુદ્ધિ ધર્મના લેદથી તે એ પ્રકારે ગણ્યાય છે. એમ કહી સુનિએ તે બન્ને ધર્મતું સ્વરૂપ વિસ્તાર પુર્વક કણું. ત્યારબાદ સંમતલદ્વાર સહિત સોમશ્રેષ્ઠીએ સમ્યક્તવ સહિત શ્રાવક ધર્મનો સ્વીકાર કર્યો. તેમજ તે બન્ને જણે હુમેશાં સામાયિકનો અભિયાસ લીધો. તેજ પ્રમાણે નિરંતર સામાયિક કરવા લાગ્યા અને શ્રાવક ધર્મમાં ખડુ રાગી થયા.

ત્યારબાદ સોમશ્રેષ્ઠીએ વેપારમાં લોકોને ઉધારે બહુ દ્વંદ્વ

ધીર્યું પણી લોકો તે ધન લઈને અન્ય

**સોમશ્રેષ્ઠીનો** દેશમાં ચાલ્યા ગયા. તેથી સોમ વણ્ણિકું

**પ્રમાદ.** ખડુ ચિંતાતુર થઈ ગયો. તેમ છતાં તે હુમેશાં જુન મંહિરમાં દર્શન કરવા જાય

છે. સામાયિક પણું નિરંતર કરે છે. પરંતુ ઐભાનપણુંને લીધે આજે મહેં સામાયિક લીધું કે નહીં ? અથવા સામાયિક ક્યારે કરવું ? તે પણ બરોબર જાણુતો નથી. આ પ્રમાણે તહેની સ્થિતિ જોઈ સંમતલદ્વાર વિપ્ર બોલ્યો, હે સોમ ! આ પ્રમાણે સામાયિકમાં ઐભાનપણું રાખવું તહેને ઉચિત નથી. તેજ પ્રમાણે આગમાં પણ કણું છે કે સામાયિક ક્યારે કરવું ? અથવા કર્યું કે નહીં તેવી સમૃતિ જે પુરુષને ન રહેતી હોય તેનું લીધેલું પણ સામાયિક નિષ્ક્રિય જાણુવું. સોમ બોલ્યો, હે બંધુ ! જ્યારથી રહારી લક્ષ્મીનો નાશ થયો છે તે દ્વિવસથી હું શર્ન્ય થઈ ગયો છું. એ મહા ઐદની વાત છે. હવે હું શું કર્દે ? કારણું ધનરહિત પુરુષ ક્ષણ્યમાત્રમાં અપશંદોતું પાત્ર બને છે. તેમજ કૂટકવિચોના

( ३२४ )

श्रीसुपार्खनाथयश्चित्.

प्रभं धनी माझक तेनी उपर अनेक प्रकारना उपसर्गी आवी पडे  
छे. वणी केटलाक महा सत्पद्धारी पुढ़ों सुरेंद्रनी लक्ष्मीने पण  
योताने स्वाधीन करवा ठँब्हे छे अने केटलाक तो। पित्रोपार्णीत  
लक्ष्मीनुं पण रक्षणु करवा अशक्त होय छे. समंत भद्रक ऐव्यो,  
हे सोम ! आ प्रभाणु त्हारे ऐह करवानुं कंधपणु कारणु नथी. अहो ?  
आ संसारमां हरैक वस्तु क्षणुमात्रमां हृष्ट अने विनष्ट थाय छे.  
ते प्रत्यक्षपणु हेखवामां आवे छे. ते भाटे कल्युं छे के—

**पटुतरपवनवशाकुलित—कुवलयदलतरलानि ।**

**जीवितयौवनयुवति—जनधनलवलाभसुखानि ॥**

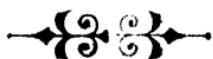
अर्थ—“ प्रयंड पवनना वेगथी कंपायमान कमलपत्रनी  
माझक अति चंचल लुवित, यौवन, खी अने लक्ष्मीना देश  
भान लाल संभंधी सुखो, अस्थिर जाणुवां ” एम समलु हे  
धीर पुढ़प ! तुं धैर्यनुं अवलंगन कर. विशेष प्रकारे धर्ममां  
बिद्युक्ता था. तेमज सामायिकत्रतमां भनने सारी रीते स्थिर कर.  
वणी लक्ष्मीनो नाश थवाथी अधम पुढ़ो. गिन्न थधृ ढूळन करे  
छे. तेमज वारंवार तेतुं स्मरणु करी विलाप करे छे. अने बहु  
विवाद पण पामे छे. परंतु क्षणुमां नाश पामे तेवा धन भाटे  
आरित्रधारी सत्पुढो. तेम करता नथी. पवनथी होलायमान  
कमलपत्रनी माझक लक्ष्मी विलास बहु चंचल छे एम जाणु  
सत्पुढो क्षणुमात्रमां लक्ष्मीने सत्पात्रोने स्वाधीन करे छे.  
विगोरे उपदेशाभृतथी बहु सिंचन कर्युं तोपणु ते महा पुढ़प  
शून्य चित्ते सामायिक विगोरे धर्मानुष्ठान करे छे. अनुकर्मे कर्म-  
वश थयो. छतो पर्यंतमां भरणु पामी नयैतिविकमां उमन्न थयो.  
अने बहु अद्य सुण पाम्यो. वणी समंतभद्र विप्र विधि प्रभाणु  
आवकुर्धमनी आराधना करी सामायिकत्रतना प्रलावथी समाधि-

सोभवशुद्धिनीकथा.

( ३२५ )

पूर्वक भरणु साधी सौधर्म देवदेवाकमां उमन्न थयो। पछी त्यांथी  
नीकणी आ लरतक्षेत्रमां कुसुमपुर नगरमां हीक्षा व्रत अहंकृ  
उरी सर्व कर्मनो द्वय उरी सिद्धपद पामरी। भाटे हे भ०य-  
प्राणीच्च ! विशेष प्रकारे सामायिकतमां तमे उद्युक्त थाच्चे।  
वणी पांच दोष रहित स्थिर चिन्ते जे सामायिक करे छे ते पुळप  
देवताच्चाने पणु निरंतर वंदनीय थाय छे। वणो शांत थयां छे  
पाप जे मनां, तेमज उत्तम स्वक्षाववाणा अने शुक्षावथी  
उद्वास पामता ऐवा सामायिकधारी आवडे। पणु मुनिच्चानी  
माझे पूजनीय थाय छे।

इति सामायिकते पञ्चमातिचारविपाके सोमकथानकं समाप्तम् ।  
तत्समाप्तौ श्रीमल्लक्ष्मणगणिविरचितप्राकृतपद्यबन्धश्रीसुपार्ब्धनाथजिन-  
चरित्रस्य श्रीसकलसूरिपुरन्दरायमाणपरमगुरुतपागच्छाधिराजशा-  
खविशारदजैनाचार्ययोगनिष्ठाध्यात्मज्ञानदिवाकरश्रीमद्बुद्धि-  
सागरसूरिशिष्यप्रसिद्धवक्तेति लब्धव्याति, व्याख्यान-  
कोविद जैनाचार्य श्रीमद् अजितसागरसूरिकृतगुर्जर-  
भाषानुवादे प्रभुदेशनाप्रबन्धे सदृष्टान्तातिचारव्या-  
ख्योपेतं सामायिकनामप्रथमशिक्षाव्रतं समाप्तम् ॥



( ३२६ )

श्रीसुपार्थनाथचरित्र.

## શંखકુમારની કથા.

### દેશાવકાશિકત્રત.

દાન વિર્ય રાજ સંતુષ્ટ થઈ એલ્યો, હે જગદુરુ ! હવે દેશાવકાશિક મતનો મહિમા તથા તેનું સ્વરૂપ દ્ધાંત સહિત અમને સંભળાવો. શ્રી સુપાર્થ પ્રલુ એલ્યા, હે ભૂપાલ ! વિસ્તાર સહિત એવાં પણ દરેક મતોના અહણુ કરેલા નિયમનો પ્રાયે ને સંક્ષેપ કરવામાં આવે તેને દેશાવકાશિકત ઠણું છે. હવે દરેક ક્ષણે સાવધાન થઈ શુદ્ધતાપૂર્વક જે દેશાવકાશિક મત પાળે છે તે મનુષ્ય શાંખની ચેહે સુર, અસુર અને મનુષ્યોને પૂજનીય થાય છે.

**બહુદલ ( સ્થ્યલતા-વિલાગો )** વડે મનોહર, તેમજ સુંદર આકૃતિમાં ગોળાકાર, સુરાત્યની સંપત્તિને શાંખદધાંત. અનુસરતી અને મધુર છે નાદ જેનો ( જેને વિષે ) એવી વિજયધંતા સમાન વિજયપુરી નામે નગરી છે. તેમાં મહોન્મત ગજેદ્રોના દંતાથવડે ચાર સમુદ્રના તટ રૂપી કિલ્લાને ખંડિત કરતો અને સમબ્રહૈરીએ જેના ચરણુમાં લોટે છે એવો વિકલ નામે રાજ છે. મહાદેવના ત્રીજા નેત્રમાંથી પ્રગટ થયેલા અભિવડે દગ્ધ થયેલા કામદેવરૂપી વૃક્ષની મંજરી સમાન, અને નમ્ર જેનોને વિષે બહુ દ્વારા મલયમંજરી નામે તેની સી છે. એક બીજા સાથે ગાઢ પ્રીતિવાળાં અને પુત્રની લાલસામાં શુંઘવાયેલાં તેઓને સેંકડો માનતાએવડે મહા કષે એક પુત્ર થયો. મહેતસ્વ પૂર્વક તેનું શાંખ એવું નામ પાડ્યું. અનુક્રમે શુક્લ પક્ષના ચંદ્ર સમાન તે વૃદ્ધ પામવા લાગ્યો. ગોય વયમાં ઘુંધિના પ્રકાવથી સાંખ્યાદિ સર્વ શાસ્ત્રોમાં

શાંખુમારનીકથા

( ૩૨૭ )

પારંગત થયો, તેમજ પ્રચંડ વૈરીઓનો વિશેષ કરવામાં મહા પરાકર્મી અને બહુ શુણુવાન તે થયો.

એક દિવસ અનેક મંત્રી, સામંત અને કેટિ સુભાઈ સહિત  
વિક્રમરાજ સભામાં એડો હતો. શાંખુમાર  
વિક્રમરાજ પણ ત્યાં જરૂર પિતાને ગ્રણ્યામ કરી પો-

તાના આસને એસી વિનય પૂર્વક પિતાના ચરણની સેવા કરતો હતો. તેવામાં ત્યાં અકૃતમાતૃ અતિશ્યામ એવા આકાશમાંથી ઉત્તરતો એક સુભાઈ હેખાયો, એટલે વિસ્તિત થર્થ સર્વ સામંતાદિક સક્ષ્યજનો ઉંચાં મુખ કરી જોવા લાગ્યા. જેના ડાખા હાથમાં રહેલા ઢાલ તરવારના આડંખરથી કેટલાક સુલટોનાં હુદય શિથિલ થર્થ ગયાં. તેમજ ઉત્તમ સુલટોની પ્રચંડ ચાઢાવેલી ખાંકડી રૂપ તઠને લેદવામાં વિષમ આકૃતિવાળો, તેજસ્વી ખર્જાથ્રમાં સુલટોના પ્રતિભિંબને અછણુ કરતો, વળી તે પ્રતિ જિંયોને વિદારવા માટે પોતાના બુજ્ઝદંડને વિસ્તારતો, વળી તે બુંજદંડમાં વીરવલય જેણે ખેરેલું છે અને સમસ્ત લુધ-નમાં અદ્વિતીય પરાકર્મને જહેર કરતો, તેમજ બહુ દક્ષ એવા સુ-ભાઈને લેદવામાં લંપટ એવા તે સુભાઈને જોઇ અત્યંત ભયરસથી બ્યાસ થયેલા સર્વ રાજસુલટો પરસ્પર એક ભીજાનાં મુખ જોવા લાગ્યા. તેટલામાં તે સુભાઈ નજીકમાં આવી પહોંચ્યો. એટલે રાજએ પોતાના સુલટો તરફ દૃષ્ટિ કરી. સુલટો પણ પોતાના ખર્જાદિક શસ્ત્રો તરફ જોવા લાગ્યા. વળી તેમાં કેટલાક સુલટો ચરમરાજની જીહ્વા સમાન ચંચલ, આકૃતિમાં વિકરાલ, અને સા-ધામમાં રસિક બનેલા સુલટોના માંસમાં અતિલુણ્ધ એવા ખર્જને હુસ્તમાં અછણુ કરી અડલાડાઈ કરવા લાગ્યા. તેમજ કેટલાક બુજ્ઝદંડ વગાડે છે જેના પ્રતિષ્વનિથી સમસ્ત ખજાંડને પણ અધિર કરી મૂક્યું. કેટલાક તો પોતાનું સુભાઈપણું પ્રગટ કરતા

( ३२८ )

श्रीसुधार्थनाथवरित्र.

बज्जतर पड़ेरे छे. अने केंद्रिक तो बहु तीक्ष्ण मेंटा आलाओ-  
भतावे छे. वणी तेओ यावे छे के हे पृथ्वीनाथ ! अमने आज्ञा-  
आपो, नेथी क्षणुमात्रमां अमे अने यमराजनेा अतिथि  
करीये.

आ प्रभाणु पराक्रम भतावता एवा सुभटोना परस्पर आ-  
लाप थैर रह्या छे. तेट्लामां कंद्रिक हस्ते मुण्डे  
आकाशचारी ते सुभट पछु त्यां आवी पडेंयो. अने  
सुभट योव्यो के, हे सुभटो ! आ सलास्थानमां तमे  
पोतानां आयुध लाई शा माटे उभा रह्या छे ?  
सुभट योव्या. हे रे भूढ ? अमे अमारा स्वामीनो सेवामां उभा  
छीये, तो तेमां ल्हारे पूछवानुं शुं प्रयोग्यन ! वणी ल्हारे आज्ञा  
विना अहो आवनानुं शुं कारणु ? माटे वेलासर अमारा स्वामीना  
स्थानमांथी जलही तुं चाव्यो जा. आ प्रभाणु पोतानुं अपमान  
समलु सुभट योव्यो, शुं आ हुनीयामां भुहारा विना भीज्ञे केंद्रि  
स्वामी छे खरो ? एम तमारे नक्की समजवुं के ग्रणु लुवनमां  
पछु रुहारा शिवाय अन्य केंद्रिनी आज्ञा मनाती नथी. माटे  
जायो, तम्हारा स्वामीने आ प्रभाणु सूचना आपो के, जे लु-  
ववानी धृच्छा छाय तो पोतानुं राज्य अमने सोंपी हो. वणी  
जे तम्हारा स्वामीना हुद्यमां एवो अक्षिमान छाय के वंश  
परंपराथी आवेलुं आ राज्य हुं केम आपुं ? तो ते पछु त्हेतुं  
मानवुं अयोग्य छे. शुं केंद्रिये केंद्रिने आ पृथ्वी लागी आपी  
छे ? अथवा वंश परंपराथी आवेली छे, ए वात पछु असत्य  
छे. कारणुके ते तो अज्ञ मात्रना बणाथी ४ अहंषु करी शक्य छे.  
जे तम्हारा स्वामीमां के, तम्हारामां अज्ञ अण छाय तो तम्हारा  
स्वामी अने तम्हारी साथे युद्ध करवा हुं तैयार छुं.

आ प्रभाणु उद्धताईथी भरेलुं त्हेतुं वयन सांभणी बहु

જાંખુમારનીકથા.

( ૩૨૬ )

રોધથી ખસી ગયેલી ભકૃટીને લીધે ભયંકર બન્ને સુભટોનો ભાલસ્થાનને ધારણું કરતા અને ચુંદ્રમાં ૨-પરસ્પર વવાદ. સિક એવા તે સુભટના વચનથી રોમાંચદ્વપી કંચુકને ધારણું કરતા તે સુભટો પણ બોલ્યા. હું ! હું ! નીચુંસુભટોમાં અધમ ! આ પ્રમાણે તહારી વાચાલતાને લીધે અમે જણીએ છીએ કે જરૂર તું યમભંહિરમાં જવાનો છે, તું જીજ સંભાળીને બોલ. તમે અને તમ્હારો સ્વામી બન્ને જણું મ્હારી સાથે ચુંદ્ર કરે. એમ તહારાથી બોલી શકાય અર્દું ! વળી ઉદ્ઘત વૈરીરૂપ મહોન્મત હસ્તીના કુંભસ્થળને વિદારવામાં સિંહ સમાન પરાડની, એવા અમારા એક પણ સુભટ સાથે ચુંદ્ર ડરવાની તહારામાં શક્તિ છે ? કે જેથી શરદ રત્નમાં મેધના ગર્જારવની માઝું અમને અને અમારા સ્વામીને નિષ્ઠળ હૃદ વચન બોલી તું આશ્રેપ આપે છે. સુભટ બોલ્યો, હું એકાંકી છું, છતાં તમ્હારા સ્વામી સહિત તમે સર્વે પ્રથમ મ્હારી ઉપર પ્રહાર કરો. પછીથી હું તમ્હારી ચુંદ્ર અરજને ફર કરીશ. એમ તેનું બોલવું સાંભળી રાજસુભટો ભાલા, ખરૂગ, ધતુપ અને બાણુ વિગેરે શર્કો પોતાના હુથમાં લઈ બોલ્યા તું એકલો છે એમ જણીને અમારા સુભટોએ તહેને જીવતો મૂક્યો છે. માટે હાલમાં તું પલાયન થઈ જા. અથવા ધીષ્ઠેવનું સમરણું કરી લે, જેથો મરણાંત પછી પણ તહેને શુભ સ્થાન મળે. સુભટ બોલ્યો, તમ્હારા માટે દરે હિશાઓ ખુલ્લી છે. માટે આ શૈર્યાનો આડંબર પડતો મૂકી તમેજ વેલાસર ચાલ્યા જાઓ. કારણું તમે સર્વ સુભટો મ્હારા ચુંદ્રદ્વપી બૈરવના મુખમાં પડીને મરણું ન પામો. વળી એક પણ મુગેંદ્ર અનેક હસ્તીઓને લેહવામાં પ્રચંડ થઈ પડે છે તેમ તમ્હારે મહેને પણ જાણ્યાંબો. વળી તમે સર્વે એક સાથે મ્હારી ઉપર છંચા પ્રમાણે પ્રહાર કરો.

( ३३० )

श्रीसुपार्थनाथचरित्र.

त्यारभाव राजसुखटो एक साथे तेनी उपर प्रहार करवा  
मंडी पड़या. परंतु अक्षमात तेओनो ऐवी  
रणुसंग्राम. दृशा थैर पडी के भूर्धितनी माझ्क, चित्रमां  
लभेला, पापाण्युमां केतरेला, काष साथे ध-  
उला अने भडहानी माझ्क तेओ धसीने पृथ्वी पर पडी गया.  
आ प्रभाणे पोताना सुखटोनी स्थिति ज्ञैर राजनां नेत्र लाल  
थैर गयां अने हाथमां तलवार लध तैयार थैर गये. तेमज अहु  
केपायमान थैर सुखटनी सहामे अदूग ऐंची भारवानी तैयारी  
करे छे तेटलामां शंभुकुमार योव्यो, हे तात! कृपा करी युद्धने  
माटे अहुने आज्ञा आपो. अहीं आपनी जरूर पडे तेम नथी,  
झारी आगण एनो शो हिसाब छे? आपना प्रसादथी ते कार्य  
हुं सुझेक्ल धारतो नथी. माटे आप अहुंज रहो अने ए हुष्टने  
हुं पोतेज मारीश. प्रहार करवामां दक्ष ऐवा अदूग सज्जित भारारा  
हस्ततुं लाघवपणुं आप जुओ. ए प्रभाणे योलता कुमारने  
राजन्ये वारंवार अहु वार्यी, तोपथु पोते अदूग ऐंची युद्धमां  
उतरी पडये. पछी समरांगण्युमां एक साथे परस्पर अदूगनी  
तुलना करता अन्ने ज्यु ज्यु तेओना भांसमां लुण्ठ थयेली  
अयंकर यमलुहा सज्जित होय ने शुं? एम तेओ हीपवा लाभ्या.  
शंभुकुमार योव्यो, हे सुखट! तुं प्रथम प्रहार कर. त्यारे  
सुखट योव्यो, हे शंभ! प्रथम प्रहार त्हारे  
शंभ अने सुखट. करवो उचित छे. ते सांखणी कुमारे  
तरत ज अहु प्रहार कर्यो. पणु सुखट युक्ति  
पूर्वक प्रहारनो भयाव करी नगरनी भहार नाठो. शंभ पणु  
तेनी पाछण होऊयो. पछी एक उधाननी अंदर सूरि भहाराजना  
चरणु कमण्ठुं शरणु लध ऐठेला ते सुखटने ज्ञैर कुमार पणु  
अहुने भीयानमां करी सूरिने नमस्कार करी योव्यो, हे भद्र?

જાંખુમારનીકથા.

( ૩૩૧ )

તહેં સૂરિશરનું શરણ લીધું છે તેથી હું તહેં અલયદાન આપું છું. માટે હવે તું ઈચ્છા પ્રમાણે ચાલ્યો બન. ત્યારખાદ જાની શુરૂ પોતાના જ્ઞાનવડે એલયા, હે કુમાર ? પ્રથમ દેવ ભવમાં આ તહારે પરમ સ્નેહી મિત્ર હતો. એમ સાંભળી સુભટે પોતાનું દેવ સ્વરૂપ પ્રગટ કર્યું. પછી કુમાર પણ વિચાર કરવા લાગ્યો કે, પૂર્વ ભવમાં મહેં એને જેણેલો છે એમ ઉહ્ધાપોહ કરતાં કુમારને જાતિ સમરણુ જ્ઞાન પ્રગટ થયું. તેથી તેને પોતાનો દેવભવ પ્રત્યક્ષ થયો. તેમજ દેવભવમાં મરણુ સમયે કરેલો સંકેત અને સૌધર્મ દેવલેલાં પ્રથમ ગ્રીતિપૂર્વક કરેલો. વિલાસ વિગેર સર્વ પ્રત્યક્ષ-પણુ જેયું. ત્યારખાદ બન્ને જણ બહુ ખુશી થઈ સૂરીંદ્રની સમક્ષમાં પરસ્પર ગાઠ આદિંગન કરવા લાગ્યા. કુમાર એલયો, હે મિત્ર ! આ આનંદનો પ્રસંગ તું લાગ્યો તે બહુ સારું કર્યું. કારણુ કે પોતાની કરેલી પ્રતિજ્ઞા પાળવી તે ધીર પુરુષોનું મહોદું પ્રત કહેવાય છે.

ત્યારખાદ દેવ એલયો, હે મહારાજ ? મહારાથી જે કંઈ અપ-  
રાધ થયો હોય તેની હું ક્ષમા માણું છું.  
દેવનો ઉપદેશ. વળી ધર્મ કાર્યમાં પ્રમાદ વશ થયેલો તહેં  
જાણું મહેં આ કાર્ય કર્યું છે. તે સાંભળી  
શાંખકુમાર બહુ ખુશી થયો અને એલયો કે, હે બાંધવ ? કાર્ય  
અને અકાર્યનો મહુને ઉપદેશ આપો. દેવ એલયો, કુમારેંદ્ર ?  
શુરૂ મહારાજ જે કાર્યનો ઉપદેશ આપે તે પ્રમાણે તહારે ઉદ્ઘોગ  
કરવો. ભર ! જલબિંદુ સમાન ચંચલ એવા આ જીવિતમાં  
પ્રમાદ કરવો નહીં. ત્યારખાદ કેવલી લગવાને મુનિધર્મનું સ્વ-  
રૂપ સંવિસ્તર વર્ણુંયું. પછી કુમાર એલયો, લગવન્ ? સર્વ  
વિરતિ પાળવાના હાલ મહારી શક્તિ નથી. એમ વિનંતિ કરતાં  
હતો તેટલામાં કુમારની શોધ કરતો વિકભ રાજ ચતુરંગ સેના

( ३२ )

श्रीसुपार्श्वनाथचरित्र.

सहित त्यां आव्यो. अने मारै, मारै, मारै, एम बहु राष्ट्री  
आलता हाथी, घोडा अने रथेमां ऐठेला केटि सुभटोअे चारे  
तरङ्गथी उद्यानने घेरी लीधे. वणी खक्कर पहिरी सज्ज थयेला  
विक्रम राजा डेटलाक सुभटोने साथे लध उद्याननी वच्ये गये।  
कुमार अने हेवाहिकथी परिवारित डेवली लगवानने जेझ राजा  
आव्यो, हे वत्स ? ते फुराचारी सुभट क्यां गये ? एम छोधाय-  
मान थई राजा आव्यो। तेटलामां कुमार योली उक्यो, अनेमा  
तिरस्कार करशो नहीं कारबुके फूर्वचन आलनार ते सुभटहेव  
म्हारा परम उपकारी थयो छे. एम ठही कुमारे पोतानो पूर्वलव  
उक्यो. ते सांखणी राजा बहु अुर्धी थयो। अने सूर्यने वंदन कर्या  
आद हेवनी क्षमा माणी। त्यारभाद विक्रम राजा सम्यक्त्वादि उ-  
नेंद्र धर्म सांखणवा ऐठो। पछी श्रद्धावडे विशुद्धे हृष्टय नेतुं एवा  
विक्रम राज्ये शंखकुमार साथे पापना भयथी भय पाभीने  
आर प्रकारनो गृहीधर्म अंगीकार कर्यो पछी हेव पणु राजा अने  
कुमारनो क्षमा माणी मुनींद्रने वंदन करी पोताना स्थानमां गयो।  
राजा अने कुमार पणु डेवली लगवानने प्रश्नाम करी पोताने घेर  
गया। बजे जणु विधि प्रभाणे निरंतर धर्म सेवन करे छे. वणी  
शंखकुमार हेशावकाशिक व्रतमां विशेष प्रकारे उधुक्ता थयो।

एक हिवस कुमारे अर्धरात्रीना समये बहु संकुचित दिग्-

व्रत व्रहणु कर्युं के, हवेथी सूर्योदय सुधी

**हेशावकाशिक** रहारे वासलवनमाथी बहार नीकणवुं

व्रत.

नहीं तेमज चार प्रकारना आहारनो त्याग

अने जी शथानो सपरि पणु हुं करीश

नहीं। ए प्रभाणे तेणु नियम कर्यो। हवे हेवस्तमामां ईर महा-

राजे प्रशंसा करी के हेशावकाशिकव्रतथी शंखकुमारने चलाय-

मान करवा माटे हेवतान्मो पणु समर्थ नथी। ए प्रभाणे सुरैन्द्रतुं

વચન સાંભળી કોઈક દેવ તેની પરીક્ષા કરવા માટે કુમારના ક્ષારમાં આવ્યો અને મહોટા શાળહોથી રૂધન કસ્તી કુમારની ઓનોને અપ્હાર કરી ત્યાંથી ચાલતો થયો. હે સ્વામિન् ! કોઈક અધર્મી મહુંસે ઉપાડીને ચાલ્યો જાય છે. માટે મહારં રક્ષણુ કરો ! રક્ષણુ કરો ! એમ પોતાની સ્વીતુ રૂધન સાંભળી કુમાર વિચાર કરવા લાગ્યો. આ સ્વી કોની ? પુત્ર કે બંધુઓ કોના ? વિગેરે ભાવના વડે પોતે આત્મ ભાવના કરવા લાગ્યો કે આ સંસારમાં કેવળ જીનેં કથિત ધર્મજ સર્વ અનિષ્ટ કાર્યનો નિર્વર્તક છે. અને જાવ્યાત્માઓનો નો રક્ષક પણ ધર્મજ છે. એમ સત્ય ભાવના ભાવતો હતો તેટાં લામાં મારો, મારો, મારો એ પ્રમાણે બહુ બલવાન શત્રુઓનો મહોટો કોલાહલ બહાર વ્યાપી ગયો અને તે કરતાં પણ અધિક પરિજનના રૂધનનો શાખ સાંભળી સમભાવમાં રહેલો કુમાર સંસારના ભયથી લીરુ અની મુનિની માઝક ભાવના ભાવવા લાગ્યો. કે, હું એમનો સ્વામી અને તેઓ મહારા સેવક એ પ્રકારની ખુદ્દિ માત્ર અલિમાનથી ઉત્પત્ત થએલી છે. અને તેથી આ લોકમાં બહુ કલેશ થાય છે. અમૃક મહારા સ્વજન અને અમૃક મહારા શત્રુઓ એ પણ કુદુર્દિ છે. વળી સ્વજન કે અન્યજન કોઈપણ સુગતિના સાધક થતા નથી, પરંતુ કેવળ જીનોકાત ધર્મજ સ્વર્ગ અને મોક્ષ સિદ્ધિનો સાધક થાય છે, એમ સમજી જૈન ધર્મમાંજ પ્રયત્ન કરવો જરૂરિયત છે. પણ અન્ય વિકલ્પ કરવો નિર્થક છે. એમ નિશ્ચય કરી શંખકુમાર નિશ્ચલ સમાધિમાં રહ્યો અને સ્વી તરફ તેનું ચિત્ત ધીલકુલ એંચાયું નહીં.

આ પ્રમાણે શંખકુમારનો નિશ્ચળ ભાવ જાહી દેવ પોતે  
પ્રત્યક્ષ થઈ ગોલ્યો, મહાશય ! આ હની-  
દેવનીપ્રસંગતા. યામાં ધન્યવાદને લાયક તુંજ છે. વળી દેવ-  
તાઓ પણ જેની પ્રતિજ્ઞાનો લાંગ કરી.

( ૩૩૪ )

શ્રીસુપાર્થનાથચરિત્ર.

શક્તા નથી એવો તુંજ આ જગતમાં ધીર પુરુષોમાં ચૂડામણિ સમાન છે. ઈદ્રાણી સહિત સુરેંદ્ર પણ તહારા ગુણોના સમરણ વડે પોતાને કૃતાર્થ માને છે. વળી હું એમ માતું છું કે ત્રણ લુચનમાં પણ ધૈર્યવાન् તુંજ છે. તેમજ શુદ્ધ ધર્મમાં તત્પર એવો તું આ લુચનમાં ચિંતામણિ સમાન છે. માટે હે કુમાર ! તહારા ગુણો-વડે હું પ્રસન્ન થયો છું જેથી કંઈપણ વરદાન માગ. શાખકુમાર આવ્યો, હવે અન્ય વરદાનનું મહારે શું પ્રયોજન છે ? તમ્હારું દર્શન એજ ઉત્તમ વરદાન છે, તે સાંભળી હેવ બહુ પ્રસન્ન થયો અને ફરીથી આવ્યો, મહાશય ? જો કે તહારું માનવું સત્ય છે પરંતુ દેવદર્શન નિષ્ઠળેતું નથી. માટે હું તહેને વરદાન આપું છું કે કરુણ દૃષ્ટિઓ તું જેને જોઈશ તે પ્રાણી ક્ષણુમાત્રમાં રોગ રહિત થઈ જશે. એમ કહી હેવ પોતાના સ્થાનમાં ગયો. હવે સૂર્યોદય થયો. એટલે પોતાનો નિયમ પૂર્ણ કરી વિધિ પૂર્વક શબ્દાનો ત્યાગ કરી શાખકુમાર બહાર આવ્યો. અને પોતાનું નિયમ ક્ષાર્ય પરવારી નિરવધ ક્રિયાના સાધક એવા મુનિઓને વાંદવા માટે નીકળ્યો. બહુ વિનયપૂર્વક વંદન કરી ગુરુ સુખથી સિદ્ધાંતનું શ્રવણ કરે છે અને યથાશક્તિ ધર્મારાધન કરે છે.

**એક દિવસ કુમારના પિતા વિહુમરાણ અકુમાત્ર શુળની વે-  
દનાથી ભારે માંદળીમાં આવી પડ્યા. વૈધ-  
અકુમાત્રશુલ દોકોએ ઘણું ઉપચાર કર્યા પરંતુ કિંચિત  
વેદના. માત્ર પણ શાંતિ થઈ નહીં. તેથી રાણએ  
કુમારને યોલાવી કહ્યું કે, વત્સ ? હાલમાં  
મહારે ભરણું સમય નાલુક આવ્યો છે માટે હવેથી આ પ્રણાનો  
અધિપતિ તું છે. તે સાંભળી કુમારે હેવે આપેલા વરદાનનું સમરણ  
કર્યું અને કરુણ દૃષ્ટિ પિતાના હેઠ તરફ કરી કે તરતજ સ્વર્ણના  
પ્રચંડ પ્રતાપથી હિમની માદ્રક શુળની પીડા શાંત થઈ ગઈ. પછી**

શાંખુમારની કથા.

( ૩૩૫ )

રાજ બેદયો, હે વત્સ ? તહારી દિલ્લિના પ્રભાવથી હું નિરોગી થયો છું. નહોં તો મુનિ ધર્મ રહિત એમને એમજ હું મરણુવશ થઈ જત. હવે તહારી સહાયતા વડે હું મહારં ધર્મકાર્ય સાધું. આ રાજ્યભારથી મહને સુકૃત કર, જેથી હું ઉદારચિત્તે સફળતાની પાસે સંયમપ્રત અહણ કરું. અને તું હવે આ રાજ્યભારને ધારથ કર. કુમાર કંઈપણ પ્રત્યુત્તર આપવાનો વિચાર કરતો હતો તેટામાં રાજાએ કુમારના જે હાથ પકડી સિંહાસન ઉપર બેસારી હીધો. અને બહુ નામ એવા સામંતાદિક લોકોને કલ્યાંદે, આ શાંખરાજને નમસ્કાર કરો. કારણુકે હવે તમહારો સ્વામી આ શાંખરાજ છે. તેઓએ પણ તે પ્રમાણે રાજની આત્મા મસ્તકે અઠાવી. ત્યારણાં હુસ્તીઓના મંડલો ઉપર સિંહની માઝુક ઘરદૂપી શુદ્ધમાંથી મહોટી રૂદ્ધિ સાથે વિકભરાજ બહાર નીકળ્યો. અને કોશાંબવન નામે ઉદાનમાં શ્રી વિજયસૂરિ પાસે જઈ વિધિ સહિત દીક્ષા લીધી. ત્યારણાં અને પ્રકારની શિક્ષા અહણ કરી ધૈર્યશીલ એવા તે વિકભ મુનિ શુરૂ સેવામાં તત્પર થયા.

શ્રી શાંખરાજ પણ પિતા નિમિત્તે અષ્ટાલ્લિકાદિક ધર્મ કાર્ય સમાપ્ત કરી વિધિપૂર્વક શ્રાવક ધર્મમાં શાંખરાજનો હૃદ થયો. અને લોકમાં પોતાનો પ્રતાપ દેલા-પ્રભાવ. વતો પ્રયત્નપૂર્વક પ્રભાજ પાલન કરે છે. તેવામાં કેદીએક દિવસ રાજદ્વારમાં મહોટા વ્યાધિઓથી પીડાતા અનેક પ્રાણીઓનો કરુણામય ભારે કલકલાટ સાંભળી શાંખરાજએ પ્રતીહારને પુછ્યું કે, આ ખૂમરાણું શાની છે ? પ્રતીહારે તપાસ કરી કલ્યાંદે, હે દેવ ? હરંત પાયોથી પીડાએલા અંગવાળા જવદિત, કુષી, ક્ષય, ઉદ્ધરસ અને શ્વેષમ રોગી એમ અનેક રોગવાળા દેશાંતરમાંથી આવેલા રોગીઓ દ્વારમાં બેઠેલા છે, તેઓનો આ ધ્વનિ સંભગાય છે. વળી આપ

( ૩૩૬ )

શ્રીસુપાર્થનાથચરિત્ર.

કરુણ દૃષ્ટિએ જેને જેને જુઓ છો તે મહારોગી હોય છે તો પણ  
 નિરોગી થાય છે. એ પ્રમાણે આપની કીર્તિ સાંભળી તેઓ અહીં  
 આવ્યા છે. રાજાએ પ્રતીહારને કલ્યાં કે દરેક રોગીએના જુદા  
 જુદા વર્ગ જોડવો પછી મહારી પાસે લાવો, એમ રાજાની  
 આજ્ઞા માન્ય કરી પ્રથમ કુષી વર્ગ પછી જીવરિત એમ અનુકૂળે  
 દરેકના વર્ગ પાડી રાજાની પાસે લાવ્યા. પછી રાજાએ પ્રથમ  
 વર્ગને કલ્યાં કે, હે કુષીએ ! લુંબા ત્યાંસુધી તમહારે દાડ, મધ્ય  
 અને માંસાહિક સાવદ્ય પહોંચેનો ત્યાગ કરવો. તેમજ કેટલાકને  
 સમ્યક્તત્વ, વળી કેટલાકને પ્રથમ વ્રત અને કેટલાકને  
 દ્વિતીય વ્રતાહિકના નિયમો આવ્યા. પછી દ્વારસની દૃષ્ટિએ  
 સર્વને જેયા એટલે તત્કાલ તેઓ અયંકર એવા સર્વ રોગોથી  
 વિમુક્ત થઈ ગયા અને નિકાચિત કર્મનો ત્યાગ થવાથી તેઓની  
 વેદના પણ ક્ષીણું થઈ ગઈ. આવા પરોપકારને લીધે રાજાની  
 થોડા સમયમાં પ્રસિદ્ધ ખૂબ વધી ગઈ. ત્યારથાદ પોતાના પાટવી  
 કુમારને રાજ્ય આપી શાંખ રાજાએ જુનશાસનની પ્રકાબના  
 પૂર્વક જુન દીક્ષા અહુણું કરી, અનુકૂળે ડેવળજ્ઞાન પામી મોક્ષ  
 સુખ પામ્યા. માટે હે લભ્ય પ્રાણીએ ! જેવી રીતે વ્રતના પસિ-  
 શ્યામ વૃદ્ધિ પામે. તેમજ અતિચારેનો પ્રાહુર્લાંબ ન થાય અને  
 વિશુદ્ધિનો ઉદ્ય થાય તેવી રીતે વિરતિ પાળવામાં વિશેષ  
 યત્ન કરવો.

ઇતિ દેશાવકાશિકનિશ્ચલતાયાં શંखકુમારકથાનકં સમાપ્તમ् ॥



વિધ્યનીકથા.

( ૩૩૭ )

## વિધ્યવણિકનીકથા.

### પ્રથમ આનાયનાતિચાર.

દાનવિર્ય રાજ બોલ્યો, હે લગવન! હવે ખીજ શિક્ષા પ્રતમાં  
 પ્રથમ અતિચારનું સ્વરૂપ દૃષ્ટાંત સહિત કૃપા કરી અમને કહો.  
 શ્રી સુપાર્શ્વ પ્રબુ બોલ્યા, હે રાજન! અહણુ કરેલા અવધિની  
 ભહારથી, ગામ તથા ગૃહાદિકમાં રહેલી વસ્તુઓને જે ખીજની  
 પાસે મંગાવે છે, તે પુરૂષ વિધ્યવણિકની માફક બહુ ફંઝી થાય  
 છે. જેમકે-ઉત્તમ પ્રકારના ગજગત ( ગતગદ ) હસ્તીઓથી  
 વ્યાપ ( રોગરહિત ) વિષુધમત ( મય ) દેવતાઓને માનવા  
 લાયક ( પંડિતમય ) અમૃતની માફક અમૃત કુંડ નામે નગર  
 છે. તેમાં વિધ્ય નામે શ્રેષ્ઠી છે. અને રતિસુંદરી નામે તેની લાર્યા  
 છે. હવે મનોવાંચિત સુખ વૈલબમાં તેઓને બહુ સમય વ્યતીત  
 થયો. પરંતુ સંતાનનું સુખ તેમને મળ્યું નહોં. તેથી તેઓનું મન  
 ઉદ્દ્રિણ થવા લાગ્યું. પછી કેટલીક માનતાઓ માનવાથી મધ્યમ  
 વયમાં નેઓને એક પુત્ર થયો. ત્યારથાદ લગલગ અર્ધ રાત્રીના  
 સમયે શેઠ પોતે સુર્ખ રદ્દા હતા, તેવામાં તેમના ઘરમાં પરસ્પર  
 વાતચિત કરતા એ વ્યાંતર દેવ આવ્યા અને તેમાંથી એક બોલ્યો  
 કે, આ શેઠને ત્યાં એક પુત્ર જન્મયો છે, તે શું તું જાણ્યો છે? ખીજો  
 બોલ્યો, હું અરોધાર જાણતો નથી કે તે કેણું છે? તે સંબંધી  
 મહને સ્વપ્ન રીતે તું સમજાવ. પ્રથમ વ્યાંતર બોલ્યો, આ પુત્ર  
 પૂર્વલબ્ધમાં શેઠને લેખુદાર હતો. એના એક લાખ રૂપીઓ શેઠ  
 પાસે માગણું છે, ને કેવા માટે પુત્રના જાનાથી આ શેઠને ત્યાં  
 તેણું જન્મ લીધો છે. તે ચોતાનું માગણું લઈ ચાલતો થશે. તે

( ३८ )

श्रीसूभार्थनाथयरितं

सांखणी शेठ उद्दिग्न मनथी विचार करवा लाभ्या. शुं आ हेव-  
पत्तन सत्य थशो ! महा ऐहनी वात थर्छ. जे आ वात सत्य  
आय तो आ पुत्रथी शुं वगनानुं ? माटे उत्सव तथा वधाम-  
धीओ विगोरेमां खडु द०य वापरवुं ते निरर्थक छे.

पुत्रनो अन्म सांखणी प्रभातमां गायक लोडो. तेमज्ज सर्व  
स्वज्जन वर्ग अने नगरना मुख्य आगेवाने  
**विंध्यनो** अक्षत तथा वस्त्राहिक लधने पुत्र वधाई  
**महोत्सव.** माटे शेठने त्यां आव्या. शेठनुं मन उदास  
हतुं, परंतु व्यवहार साचववे. पडे एम  
जाणी वधामणी माटे अक्षत, वस्त्राहिक लध श्रेष्ठी ए व्यवहा-  
रमां ओटुं न हेखाय तेवी रीते सर्वनो. सत्कार करी, पोत-  
पोताने घेर विहाय कर्या. पछी सूतिकर्म डरनारी स्त्रीओने  
पण संतुष्ट करी, एकंदर जे अरच थयुं ते सर्व पोताना  
योपठामां लभी वाज्युं. त्यारबाट छहा हिवसे धष्टी जागरण  
कराऊयुं. बारभा हिवसे विंध्य ए प्रभाण्य तेनुं नाम पाठ्युं. अने  
अनुक्तमे उभमर लायक थयो. एटले अक्षयास माटे तेने देखशा-  
लामां मूळयो. त्यारपछी लग्न पणु कर्युं. तेमज्ज वस, लोअन,  
पान, सोपानी विगोरेमां ज्ञेटलुं धन वापर्युं ते सर्वनो हिसाब  
गण्यी पोताना योपठामां ज्ञमे कर्युं. कारणुके लाख इपीआ त्हेने  
आपवानां छे. हवे विंध्य पणु उदानाहिक दरेक स्थानोमां झरे छे  
अने आनंदपूर्वक हिवसे निर्गमन करे छे. तेवामां एक हिवस  
विंध्य पोते एकाकी झरवा नीकज्यो, आगण चालतां युरम्य वनमां  
सूरि महाराजनां त्हेने दर्शन थयां. वहन करी तेमनी आगण  
ऐठो. अने ते ऐद्यो, प्रलु ! धर्म तत्त्वनो. झुने उपदेश आपो,  
सून्निए थति अने शुही एम अन्ने प्रकारे धर्म देशना आपी.  
सरल परिणामने लीघे विंध्ये सम्यक्त्वाहि बार प्रकाशना श्रावक

વિષ્ણુનીકથા.

( ૩૩૬ )

ધર્મનો સ્વીકાર કર્યો. ત્યારખાદ પોતાની શક્તિ પ્રમાણે ધર્મ સેવનમાં દિવસો નિર્જામન કરતો હતો.

એક દિવસ વિષ્ણુ બહુ માંદગીમાં આવી પડ્યો. તેથી તેણા કુદુંબીએએ શોઠને કહું કે, કોઈપણ ઉપ-વિષ્ણની માંદગી. ચાર કર્યા વિના આ રોગ મટે તેવો નથી, માટે, કોઈ વૈધને એલાવો. એકો એલાવો, એમાં વૈધની કંઈપણ જરૂર નથી. ભારા પુત્રને શોડા દિવસમાં ચાંતિ થઈ જશો, કંઈપણ તમછારે હરકત રાખવી નહીં. ત્યારખાદ શોઠના કદ્વા પ્રમાણે વિષ્ણને આરામ થઈ ગયો. તેથી શોઠની કીર્તિ સર્વ ડેકાણે એવી પ્રસરી ગઈ કે વિષ્ણ શોઠ સર્વ જાણે છે. તેમજ નિમિત્તશાસ્કમાં પણ સારી રીતે જાણે છે. તેવામાં રાજની મુખ્ય રાણી બહુ વ્યાધિથી ઘેરાઈ ગઈ તેથી રાજ્યમાં દીલગીરી ફેલાઈ ગઈ. ત્યારે રાજને કોઈએ કહું કે, વિષ્ણ શોઠ ઔષધાદિક સર્વ ઉપયાર જાણે છે. રાજને તરતજ શોઠને એલાવ્યા, શોઠ પણ રાજની પાસે ગયા અને લેટ મૂકી નમસ્કાર કરી એલાવ્યા કે, હે રાજન! શી આજા છે? રાજ એલાવ્યો, અંતઃપુરમાં જાઓ, ત્યાં રાણી બહુ હુંઘી છે. માટે ઔષધાદિક ઉપયાર કરી જલદી તેને આરામ થાય તેમ કરો. એકો એલાવ્યો, સ્વામિન! હું વૈધ નથી, તેમજ મંત્ર, તંત્રમાં પણ કંઈ જાણુતો નથી. છતાં આપ રહુને કેમ આ પ્રમાણે દૂરમાવો છો? રાજ એલાવ્યો, મહારાજથી બુઝો પાડતા પોતાના પુત્રને કોઈપણ ઉપયાર અથવા મંત્ર, તંત્રથી તેં સાંજે કર્યો હતો અને કોઈ વૈધને પણ એલાવ્યો નહોતો, છતાં આ વખત ના પાડે છે તેનું શું કારણ? તે સાંભળી એકી હાસ્યપૂર્વક એલાવ્યો, આપની સાથે મહારે એકાંતમાં કંઈક વાત કરવાની છે, માટે મહેરખાની કરો. રાજને બ્રહ્માણીના છસારે લોકોને ફૂર કર્યા, એટલે એકોએ પોતાના પુત્ર સંબંધી વ્યાંતરે કહેલી

( ३४० )

श्रीसुपार्थनाथअवित्र.

सर्व वार्ता राजने निवेदन करी, पछी राजने पूछयुं, हुवे त्हेने आपवानुं केटलुं दृष्य भाकी रह्युं छे ? श्रेष्ठी ओळ्यो, हुवे पच्यास हजार भाकी रह्या छे. अम केटलीक वात करी राजनी आज्ञा लाई श्रेष्ठी पोताने घेर गयो. हुवे विंध्य पणु पोताने त्यां विधिसंहित वृद्धिधर्म पाणे छे. परंतु देशावकाशिक त्रत उपर तेनुं विशेष ध्यान घेंचाय छे. तेथी ते हुभेशां पोतानो नियम चुक्तो नाथी.

**एक हिवस विंध्य अहार उद्यानमां करवा जतो हुतो, ते वर्खते तेज भार्ग चंडसिंह नामे राजनो विंध्यनी क्षारपाल पवनवेगी सांढणी उपर ऐसी शिथिलता. जतो हुतो, ते तेना जेवामां आयो. अने ते क्षारपाल आस पोतानो भित्र हेवाथी चेष्य मत्कार पूर्वक संभाषणु करी तेणु तेने पूछयुं के, हे भित्र ! आने कृष्ट तरक्क स्वारी करी छे ? चंडसिंह ओळ्यो, हे बांधव ! राजना हुक्मथी द्रविड नरेशनी पासे हुं जाउं छुं. कारणुके तेनी साथे हालमां चुद्धनो प्रसंग आवी पड्यो छे. परंतु तेम नहीं करतां सलाहशांति करवानो विचार छे. विंध्य ओळ्यो, हे भित्र ! त्यां एक अमुक राजमंत्री छे. त्हेने आटला भारा समाचार आपने के, ते भारुं धन जलही भेकली हे, तेमज भारा पत्रनो जलही प्रत्युत्तर अहीं भारी उपर भेकली हे. आ कार्य भारे पोते त्यां जधने करवा जेवुं छे, परंतु त्हारी पासे कडेवडाववानुं कारणु तो. एटलुं ज छे के, छ मास सुधी वीश गाउथी वधारे प्रयाणु करवानो भारे नियम छे. छ मास पछी भाराथी चारे दिशाओमां होडसो योजन जवानी छुट छे. परंतु हालमां जध शकाय तेम नाथी. वणी तुं राजकार्य भारे त्यां जाय छे, अने अचानक त्हारो भेणाप थयो छे, तेथी तेनुं पणु आ सांकेतिक कार्य त्हाराथी सिद्ध थशो. वणी आ समाचार त्हारे तेने**

વિધ્યતીક્યા.

( ૩૪૧ )

એકાંતમાં કહેવા. તે સાંસળી ચંડસિંહ દ્રવિડ દેશમાં રાજાની પાસે ગયો.

હવે આ બજે જણુ એકાંતમાં આ વાત કરતા હતા તેવામાં ત્યાં કોઈક માણુસ આવ્યો હશે, તેણે આ વિધ્યને શિક્ષા. વાત સાંસળી. તેથી તેણે પોતાના રાજને વિધ્યની સર્વ વાત કહી. રાજાએ તરતજ હુકમુ કર્યો કે, વિધ્ય શેઠના પુત્રને બાંધીને અહીં લાવો. કારણુંકે તે હૃદ મહા પાપી છે. અને રહારા વૈરીના મંત્રી સાથે તેનો મેળાપ છે, તેમજ તેની સાથે આપ દેનો વ્યવહાર પણ કરે છે. માટે તે સારું નહીં. કોઈ વખત તેમાંથી અનર્થ ઉત્પન્ન થાય. તેથી એવા અધમીનો ખાસ નિયમ કરવો જોઈએ. પ્રધાને તરતજ આરક્ષકને આજા કરી. આરક્ષક પાયદળ સાથે તેને ત્યાં જઈ વિધ્યને પકડી બાંધીને રાજાની આગળ લાવી ઉલ્લો કર્યો. આ વાત વિધ્ય શેઠના જણુવામાં આવી કે તરતજ તે પણ રાજ પાસે ગયા. પોતાના સ્વજન વર્ગની પ્રેરણુથી શ્રેષ્ઠીએ પ્રાર્થના કરી કહ્યું કે, હેવ ! રહારા પુત્રે આપનો શો અપરાધ કર્યો છે ? જેથી એને ચારની માદ્ક બાંધીને અહીં લાવ્યા ? રાજ બોલ્યો, આ હાર્દિક પુત્ર બહુ બહમાસ છે. તેથી તેને ઝાંસીએ લટકાવવાનો છે. કારણુંકે મારા શત્રુ સાથે તે મસલત કરે છે. શ્રેષ્ઠી બોલ્યો, રાજધિરાજ ! આપની ધર્ભછા પ્રમાણે હંડ લઈને એકવાર તેને સુક્ત કરો. નહીં તો રહારા સ્વજન વર્ગનો રહુને અપવાદ લાગશે. આ પ્રમાણે લોકાપવાદ ટાળવા માટે શ્રેષ્ઠીના ધણ્ણા આગ્રહથી રાજએ પચાશ હજાર રૂપીઆ હંડ કરી વિધ્યને મહા કષે છોડી મૂક્યો. પછી શેઠ પોતાના પુત્રને વેર લઈ ગયા. પણ ગાઢ બંધનોની પીડાથી તેને હાહજવર આવી ગયો. શ્રેષ્ઠીએ જણુંકે, જરૂર હવે આ જીવવાનો નથી. કારણુંકે એના લાખ રૂપીઆ પૂરા થઈ રહ્યાં

( ३४२ )

श्रीसुपार्खनाथयरिति.

છે, એમ વિચાર કરી શ્રેષ્ઠીએ કહ્યું કે, હે વત્સ ! હવે ધર્મ ધ્યાનમાં સાવધાન થા ! ગૃહાહિકનો પ્રતિબંધ છાડી હૈ. પુત્ર એલાયો, હે તાત ! લોલના વશ થઈ બહુ વરતુંઓનો મહેં સંબંધ કર્યો. તેથો બીજા શિક્ષા વ્રતમાં મહુને અતિચાર લાગ્યો. અને તેતું ફ્રલ આ લોકમાં પણ મહારે લોગવવું પડયું. અહો ! મહારા જેવો નિર્ભાગી બીજો કોણ હોય ? તેમજ પરલોકમાં પણ મહુને આથી અધિક હુઃઅ લોગવવું પડશે. માટે હે તાત ! ચિંતામણીનો પણ તિરસ્કાર કરનાર એવા મહોટા ત્યાગી અને ગુણવાન કોઈપણ શુરૂ મહારાજને અહો બોલાવો. જેથી હું પર્યાલોચન કરી આત્મશુદ્ધિ કરેં. તે સાંભળી શ્રેષ્ઠી પોતે જ શુરૂ પાસે જતો હતો. તેવામાં તે વિધ્ય તેવા પ્રકારના શુદ્ધ ભાવથી પ્રાણુ વિમુક્ત થઈ ગયો. અને સૈધર્મ દેવલોકમાં ઉત્પજ્ઞ થયો, ત્યાંથી ચવી નીજે જવે સિદ્ધ થશે. માટે હે ભાવ્ય પ્રાણીએ ! પોતે શહણુ કરેવા નિયમને લેશમાત્ર પણ ડલંકિત કરવો નહીં.

ઇતિ દ્વિતીયશિક્ષાવ્રતપ્રથમાતિચારે વિનધ્યકથાનકં સમાપ્તમ् ॥

—→॥ત્રણ॥←—

સદ્ગુણેષ્ઠીની કથા.

—•—

**દ્વિતીયપ્રેષણાતિચાર.**

દાનવિર્ય રાજ એલાયો, હે કૃપાસિંહુ ! હવે બીજા શિક્ષા વ્રતની અંદર બીજા અતિચારનું વૃત્તાંત દૃઢાંત સહિત અમને સંભળાવો ? જેથી આ લોકનો ઉદ્ઘાર થાય. શ્રીસુપાર્ખ પ્રલુ એલાયા, હે રાજન ! જે આવક દ્વિગવકાશનો નિયમ લાઇ પોતે ન જય પરંતુ બીજાને મોકદે તે મૂઢ બુદ્ધિવાળા સદ્ગુણી માઝક બહુ હુઃખી થાય છે.

સહૃદીકથા.

( ૩૪૩ )

આ ભરતક્ષેત્રમાં સ્થાવર નામે એક નગર છે. જેમાં નૈત  
મતનો જાણુકાર સુંદર નામે રાજ રાજ્ય  
સહૃદ્રષ્ટાંત. કરે છે. તેમજ તેમાં સ્થિર નામે સમ્યગુ  
દૃષ્ટિ એક શેડ રહે છે. સહદેવી નામે તેની  
ભાર્યા છે, વળી સહૃ નામે તેમને એક પુત્ર છે. પરંતુ તે ધર્મમાં  
કંઈપણ જાણુતો નથી, તેમજ કંઈક ધનવાન અને ખુદ્દિમાં જડ  
છે. અનુકૂમે ઉમ્મર લાયક જાણી માતપિતાએ તહેને બહુ ઝ્રિપ-  
વંતી ઝ્રિપણી નામે એક કન્યા પરણ્યાવી. પછી એક દ્વિવસ કોઈ  
પુષ્ટયના ઉદ્યો સહૃ પોતે સુનાંદ્ર પાસે ગયો. ત્યાં વ્યાખ્યાતમાં  
વિનય ધર્મની અરૂપણા ચાલતી હતી. તેમાં બહુ રસ પડવાથી  
આદરપૂર્વક તે સાંભળવા માટે એઠો. દરેક ધર્મમાં વિનય  
ધર્મ સુખય છે. વળી સમ્યકત્વાદિ સર્વ નૈત ધર્મ પણ વિનય  
ધર્મથીજ સિદ્ધ થાય છે. તેમજ વિનીત પુરુષને લક્ષ્મી પોતાની  
મેળેજ પ્રાસ થાય છે. યશ અને કીર્તિ પણ વિનીતને વળળી  
રહે છે. વળી કોઈપણ સમયે હુર્વિનીત પુરુષ પોતાની કાર્ય સિદ્ધ  
કરી શકતો નથી. વિગેરે વિનયના બહુ ગુણો સાંભળી તેણે  
સૂરિના ચરણુકમલમાં શ્રાવકધર્મનો સ્વીકાર કર્યો, પછી વંદન  
કરી સહૃ શ્રાવક પોતાને વેર ગયો.

કેટલોક સમય વ્યતીત થયા બાદ સ્થિરહેવ શ્રેષ્ઠી દેવલોક  
પાણ્યો. પછી સહૃ શ્રેષ્ઠી ઘરનો અધિપતિ  
સહૃની ફુર્દ્શા. થયો. પરંતુ દૈવયોગને લીધે અનુકૂમે  
ઘરનો વૈભવ નષ્ટ થવા લાગ્યો. જેથી ફુર્જન  
લોકો તેનો પરાલબ કરવા લાગ્યા. આ અસહ્ય ફુર્જ નહીં  
સહન થવાથી સહૃ પોતાના મનમાં વિચાર કરવા લાગ્યો કે,  
આ ફુર્જન લોકોમાં તિરસ્કાર સહન કરી પડી રહેલું ઠીક નહીં.  
કારણ કે કોઈક વિદ્ધાને કહું છે કે, હે માની પુરુષ ! જો તું

( ३४४ )

श्रीसुपार्थनाथवरित्र.

જીવતો હાય તો, હુર્જનેાની આંગળીઓનો પરાજય નહીં સહન કરતાં હારે વિદેશમાં ચાલ્યું જવું. એમ નિશ્ચય કરી પોતાની સ્વીને તેણે કહ્યું કે, વેપાર માટે કોઈપણ દેશાંતરમાં હું જવાનો છું માટે ભાતું તૈયાર કર. ઓએ પણ તે પ્રમાણે જલદી તૈયાર કર્યું. પછી ગૃહ સંબંધી કાર્ય સીને સેંપી સારા સુહૂર્તે ભાતું આંધી જમીને સહુ પોતાના ઘેરથી નીકળ્યો.

મહધાન્હ કાગ થયો એટલે નગરની પાસમાં આમલીઓનું એક વન આવ્યું. પરિશ્રમને લીધે થાકી જવાથી ભુનિદર્શન. ભાતાનું પોટલું પોતાના માથા તળે મૂડી આમલીની છાયામાં તે સુઈ ગયો. અને પોતે

વિચાર કરવા લાગ્યો કે નિલ્લાળી એવો હું, અહીં કયાં આવ્યો? અત્યારે બંધુ, સવજન કે ભિત્રવર્ગી પણ માટે કોઈ નથી. નિર્ધાર પ્રાણીઓને સર્વ હિશાઓ શૂન્ય ભાસે છે. વળી ભિત્રોથી ભરેલું આ ભૂમંડલ છે, છતાં પણ તું છાશ પી. એમ કોઈપણ અત્યારે મણે કહેતું નથી. આ સર્વ લક્ષ્મીહેવીનો જ ચમત્કાર છે. એમ ચિંતબન કરતો હતો, તેવામાં તહેને બગાસું આવ્યું. જેથી તત્કાળ તેના સુખમાં આમલીનું ફળ પડ્યું, તેથી તે બહુ ખુશી થયેં. અને સમજયો કે આ પણ એક શકુન છે. નહીં તો સુખની અંદર ફૂલ કયાંથી પડે? માટે જરૂર કોઈપણ અચિંત્ય લાલ મણે પ્રાસ થશે. એ પ્રમાણે વિચાર કરતો હતો તેટલામાં, તેણે ઉત્તર દિશા તરફથી ક્રૈત વખધારી સુનીદને આવતા જોયા. જેમના હાથ ઢીંચણું સુધી લાંબા હતા, પગમાં સોનાની પાડકાઓ રહેરેલી હતી. જેમના નેત્રોની શોલા પ્રકૃષ્ટ કમલ પત્રને અનુસરતી હતી, અને નાસિકાના અથ ભાગ ઉપર દાઢિ રાખી જેએ ક્યાન કરતા હતા એવા સુનિવરને જોઇ તે વિચાર કરવા લાગ્યો કે, જરૂર આ મહાત્મા વિનય શુણુને લાયક છે “વિનય-

સફુનીક્ષા.

( ૩૪૫ )

શુણ લક્ષમીને બોલાવી સ્વાધીન કરે છે ” એ પ્રમાણે મુનોદ્રના વાક્યનું સમરણ કરી તે એકદમ ઉલો થયો અને ઉતાવળથી ગ્રેમપૂર્વક સ્વાગત બોલતો, ઘણ્યા કાળે આવેલા મિત્રની માદ્રક તેમના સન્મુખ ગયો. પછી મુનિને નમસ્કાર કરી, વખતના છેડાવડે મુનિના ચરણોને સ્વચ્છ કરી, બહુ સન્માન પૂર્વક આમલીની છાયામાં આસન ઉપર બેસાર્યા અને પોતે ચરણુકમલની સેવા સાથે આધ્યાસન કરવા લાગ્યા.

**મુનિ બોલ્યા,** તું કેણું છે ? કયાંથી આવ્યો ? કયાં જય છે ?  
અને જવાનું શું પ્રયોજન છે ? સફુ બોલ્યો,

**મુનિનો પ્રશ્ન**      હું અહો સમીપમાં રહેલા નગર શેડનો  
પુત્ર છું. શ્રાવક કુળમાં મહારા જન્મ છે.

પરંતુ વૈભવહીન થધ ગયો છું. તેથી મહારા પિતાના મરણ પછી શોઠ પદવી પણ મહારી ચાલી ગઈ છે. સ્વજન લોકોએ પણ મહારાનું અપમાન કર્યું, તેથી હું અનો માર્ગો હું દ્રવ્ય મેળ-ગવા નીકળેલો છું. મહારા નગરથી થાડાજ ચાલ્યો છું. એટલામાં બહુ પરિશ્રમ લાગવાથી થાકીને અહો એડો. તેટલામાં આપનાં દર્શન થયાં. મુનિ બોલ્યા, ભદ્ર ! મહારા દર્શનથી હવે તહારાં નિર્ધારણાનું રહેવાનું નથી, માટે મહારી સાથે તું ચાલ. નજીક-માંજ લુને મહાટો નિધાન બતાવું. સફુ તેમની સાથે ઉત્તર દિશા તરફ ચાલ્યો. જન્યાં પ્રથમ તેણે મુનોદ્રને પ્રણામ કર્યો હતો, તેજ ડેકાણે મુનિએ તહેને ચાર આગ્રવિક્ષ બતાવીને તેઓની નીચે ચાર દ્રવ્યથી ભરેલા કલશ બતાવ્યા, અને કહ્યું કે, આ નિધાનની નિશાની માટે દરેક વૃક્ષની શાખાઓમાં કંઈક નિશાની કરી લે. પછી સફુ ગ્રેટીએ પોતાના વખતનો છેડો ક્રાડી ચારે શાખાઓમાં ચીથરા ખાંધીને કલશની નિશાની કરી લીધી.

ત્યારખાદ તેઓ જન્મે જણું કરીથી તે આમલીની છાયામાં

( ३४६ )

भीसुपार्ख नाथयतिनि.

आवीने ऐठा. पछी सँकु योहयो, हे महा  
मुनिनुं चरित्र. पुरुष ! आपनो जन्म मહेत्सव क्या नग-  
 रमां थयो छे ? अने हालमां पोताना  
 चरण्युवडे क्युं नगर पवित्र करवा धारो छो ? सिद्ध पुरुषे क्षुं,  
 महाभाग ! उत्तरदिशाइपी खीना भालस्थलमां तिळक समान  
 क्षन्कपुर नामे नगर छे. तेमां हुं जन्मयो छुं, हालमां खमेतगिरिनो  
 यात्रा माटे जवुं छे, अने आयुष पूर्ण थवाथी त्यांज महारे  
 काण करवानो छे. माटे हाल तुं त्हारे घेर यावयो ज. त्यारभाद  
 राजनी आज्ञा लक्ष्य महारा बतावेला निधान त्हारे काढी लेवा अने  
 प्रथुतज्जनोनां भनोपांचितमुख पूर्ण करवां. वणी तारा निधानोत्तु  
 वृत्तांत राजा जाणुशे परंतु महारा मंत्रना प्रकावथी त्हारे क्षेत्रनो  
 पथु भय राखवो नहीं. अने त्हारी छुच्छा प्रमाणे वैक्षववडे  
 विलास करवा, एम क्षी सिद्धपुरुष यालतो थयो. पछी सँकु पथु  
 पाछो. वणीने संध्या समये पोताने घेर आवयो. एटले तेनी खी  
 योही, स्वाभिन ! अपशकुन थया के शुं ? पाछा केम आव्या ?  
 सँकु योहयो, प्रिये ! शकुन बहु सारा थया छे. प्रकातमां तेतुं  
 स्पष्ट इल जण्याशो. परंतु हाल उनपूळ माटे सामग्री तैयार  
 कर. खीमे पथु तेज प्रमाणे पूळ सामग्री येकडी करी. सँकु श्रेष्ठी  
 भावपूर्वक उन प्रतिभानी पूळ करी सुई गयो. प्रातःकालमां  
 उन वंदन करी कंधपथु लेट लक्ष ते राजा पासे गयो अने लेट  
 भूझी नमस्कार करी निधान संबंधी सर्व वार्ता राजने जण्यावी  
 एटले राजमे पथु दृश्य लाववानी परवानगी आपी, पछी ते  
 पोताना घेर आवी योहवानां साधनो लक्ष निधान स्थानमां गयो.  
 अने युक्तिपूर्वक चारे कलश काढी लक्ष पोताना घेर यावयो  
 आवयो.

निधाननी वात सांखणी नगरलेडो भंगलिक माटे अक्षत-

संकुलीकृथा.

( ३४७ )

पात्र अने वस्त्र लाई संकुश्रेष्ठीनी सुलाइत  
**धननो प्रभाव.** माटे आववा लाग्या. तेमज अहु गायक  
 लोडे वधाइने माटे आ०या करे छे, वणी  
 स्वर्जन वर्गिनो त्यांनो त्यांज ऐसी रहे छे. शास्त्रमां कहुँ छे उे—  
 संपदि संपदि घटन्ते, कुतोऽपि संपत्ति सह भुवो लोकाः ।  
 वर्षाभूनिवहा इव, काले कोलाहलं कृत्वा ॥

**अर्थ—** “ वर्षीकालमां हेडकाओना समूहनी भाइक संप-  
 तिना समयमां लक्ष्मीना संभंधवाणा लोडे एकदम डोलाहल  
 करीने कुयांयथी पथु एकठा थर्ह जाय छे. ” आ प्रभाषु लक्ष्मीनो  
 भहिमा ज्ञेषु सहु अहु खुशी थर्ह गायकजन साथे जिनमं-  
 हिरमां गयो. पछी विधिसहित स्नात्र पूजा कर्या आह धर्म  
 निमिते अहु द०व्यनो व्यय करी स्वर्जन सहित युनः पोताने घेर  
 आ०यो. पश्चात साधु वर्गिनो संविकाग करीने पोते लोजन कर्या.  
 ए प्रभाषु हमेशां धर्मकिया करे छे. त्यारभाद तेणे हूर देशांत-  
 रमां वेपार चलाव्यो अने धर्ममां पथु विशेष उद्यम करवा लाग्यो.

कदाचित तेणे संक्षेपथी हिंगूत अहुषु कहुँ उे, मन, वचन  
 अने कायाथी बन्ने प्रकारे आजथी एक  
**हिंगूतनो संक्षेप** भहिना सुधीकोऽपथु कार्य प्रसंगे पर्यीश  
 योजनथी वधारे अहारे गमन करवुँ नहीं.  
 वणी प्रथम तेणे चारे हिंशाओमां मणीने होइसो योजननी छुट  
 राखेली हुती. हुवे डेखक पुढेते ने समाचार आ॒या उे, स्थावर  
 नगरना राजनुँ लक्ष्मी श्रीनगर प्रत्ये जवानुँ छे. त्यारभाद सहु  
 श्रेष्ठोमे पोताने हिंगूत डोलाथी एक पत्र लाखी पोताना नेकर  
 साथे त्यां रहेला पोताना भाषुसो उपर भोक्लाव्यो अने पत्रमां  
 लाखुँ हुतुँ उे, अहीथी सर्व सैन्य सहित स्थावर नगरनो राजा

( ३४८ )

આસુપાર્વનાથચરિત્ર

શ્રીનગર પ્રત્યે ચઢાઈ કરી આવે છે. માટે સર્વ કરીયાણું તૈયાર રાખવું. અને એટલોક સમય તમ્હારે ગિરિહુર્ગમાં રહેવું, વળી રહારો લેખ વાંચી ધૂનઃ પત્ર વ્યવહાર રાખવો. અને રહારા પત્ર પ્રમાણે તમ્હારે વેપારનો ઉદ્યોગ કરવો.

**લેખવાહક પુરુષ લેખ લઈ અથે માર્ગ ગયો** એવામાં સ્થાવર નરેંદ્રના ચાર પુરુષો તહેને મખ્યા તેઓ  
**લેખવાહક જોદ્વાયા, તું કોણ છે ? અને ક્યાં જાય છે ?**  
એમ પુછતાંજ તે તરત ગલરાઈ ગયો. એટલે

તેઓએ લેખ સહિત તે પુરુષને પકડી લઈ રાજ આગળ રણું કર્યો, રાજએ તે લેખ લઈ વાંચી જોયો. અને એકદમ કુપિત થઈ તે લેખ મંત્રીને આપ્યો. મંત્રીએ પણ તે વાંચી જોઈ રાજની આજાથી સફુ પાસે પોતાના અંગરક્ષકો મોકલ્યા અને કલ્યું કે, તહેને બાંધીને જલહી અહીં લાવો. સુભાટોએ પણ તેજ પ્રમાણે અવળા હાથે બાંધી સફુને નરેંદ્રની આગળ ઉલ્લો કર્યો. રાજ જોદ્વાયો, રે ! રે ! પાપિષ ! અધમ ! પ્રત્યક્ષ શત્રુ ? હેરિક ! રહારો નગરશોઠ થઈને પણ તું રહારી શુસ વાર્તાએં લેખ મારકૃત રહારા શત્રુઓને ત્યાં જણ્ણાવે છે. માટે તું હંડને પાત્ર છે. પરંતુ સાધમિંક છે એમ જાણી તહેને એકવાર સુકૃત કરું છું. ફરીથી આ પ્રમાણે કરીશ નહીં. પ્રથમ કષાય ( કોધ )ને લીધે જે તહારો આ કદર્થના કરી છે તે પણ તહારે ક્ષમા કરવી એમ કહી રાજએ તહેને વિદ્યાય કર્યો.

સફુ શ્રેષ્ઠી વિલક્ષ થઈ પોતાને ઘેર ગયો. પરંતુ બંધનોની પીડાને લીધે બહુ હુઃખી થયો. અને વિચાર સફુનો પશ્ચાતાપ. કરવા લાગ્યો કે, રે જીવ ! હે હતાશ ! જી પુત્રાદિકને માટે અતિ લોલદ્રપી અહુથી ઘ-

मतिसागरमंत्रीनीकथा.

( ३४६ )

साईने तुं नियम लागवा तैयार थयो परंतु ते पुत्राहिक परिवार हँडर रहेशो अने ठाराहः खमां अंश मात्र पणु भाग ते देवानेन नथी. हा ! अहुने धिक्कार छे के, हुं एकलो हुः अनुं पात्र थयो. रे लुव ? भेटा नियमना लंगड़पी वृक्षना पुण्य समान अंधनाहिक हुः ख आ लोकमां तडे अनुलब्धु. अने सुख्य झण तो कुगतिमां आगण उपर त्हारे लोगववुंज पडशे एम चिंतवन करतो सकु श्रावक आयुष पुर्णु करी नागकुमार हेवोमां उत्पन्न थयो. त्यांथी अथवी अहु हुः ख अनुलवी अनुकमे कर्मनो क्षय करी सिद्धपद पामशो. माटे हे लब्ध ग्राण्डीओ ! अद्यमात्र पणु नियमनो अंग करयो. नहीं. कारणुके क्षरीथी ऐधिज्ञान तथा सज्जर्मनी प्राप्ति अहु हुर्लभ छे.

इति द्वितियशिक्षावतेद्वितीयातिचारविषाके सद्वकथानकं  
समाप्तम् ।

—५५—

**मतिसागरमंत्रीनी कथा.**

**तृतीय शण्हातिचार.**

हानवीर्य राजा योद्यो, हे जगह उद्धारक ! हुमेशां शुश्रेष्ठानो हृषि शिष्य तरक्क डेमण होय छे, माटे कृपा करी यीज्ञ शिक्षाव-  
तमां त्रीज्ञ अतिचारनुं लक्षण्यु कडो. श्री सुपार्थप्रभु योद्यो, हे  
राजन ! जे पुरुष हेशावकाशिक मत लभने कासाहिक (युंभाराहिक)  
ना निभित्ते शण्ह करे छे ते मतिसागरनी माइक आ लोकमां  
पणु अहु हुः ख लोगवे छे.

आ भरतक्षेत्रमां पृथ्वीउपी प्रभदाना भाव स्थलमां तिलक

( ३५० )

श्रीसुपार्थनाथ चरित्र.

समान रथवृत नामे नगर छे. समरांगणुमां  
**भतिसागर** हृष्टांत अतिशय ईर्ति पामेवो। रिपुविक्षम नामे  
 राजा तेमां राज्य करे छे. वजी ते राजा  
 राज्यना लोकथी पोताने जेटला पुव जन्मे छे तेजोना नाक.  
 कान, ओष्ठ विगेरे अंगो कापी नाखे छे, एटलुंज नहीं, पण  
 तेजो राज्यने लायक न थाय तेवो रोते करे छे. आ प्रभाणु  
 पोताना पतिनो भगात्कार जोड महनश्री राणी खहु चिंतातुर थध  
 गई. हुवे अविरत सम्यगद्विष्ट भतिसागर नामे ते राजनो एक  
 भंत्री छे, तेने महनश्री राणीचे शुभ समाचार क्षेवराव्या के,  
 दैक पुत्रोने राजा पोतेज राज्यने अहलु करवा नालायक करे छे,  
 भाटे कृपा करी पोतानी खुद्धिवडे तमे भारा गर्भानुं रक्षणु करे। भ-  
 तिसागर भंत्रीचे पण राणीनुं वयन अंगीकार कर्युं अने राणीनी  
 साथेज सगर्भा थयेली पोतानी एक दासीने एकांतमां उपदेश  
 आपी खानगी रीते राणी पासेमोकली. अनुक्तमे गर्भानो समय  
 पूर्ण थयो। एटले खहु युक्तिपूर्वक भंत्रीचे बन्नोने  
 साथे प्रसव कराव्यो। तेमां राणीने पुत्र अने दासीने पुत्री जन्मी।  
 भंत्रीना कहा प्रभाणु तरतेज दासीचे पोतानी पुत्रीने  
 राणीनी शथ्यामां भूझी, अने पुत्रने पोते लध ते दासी भंत्रीना  
 घेर आवी। त्यारथाह वुङ्ग हासीचे राजने जखुऱ्युं के, देवीने  
 पुत्री जन्मी। ए वात सांकणी राजा भैन थध गयो। पछी  
 भंत्रीचे ते पुत्रनुं नाम हुरिविक्षम पाडयुं शुक्लपक्षना चंद्रनी  
 माझक दरेक कणाच्यो साथे ते पुत्र हिनहिन प्रत्ये वधवा लाग्यो।

**हुवे रिपुविक्षम** राजा कागधमो पाभ्यो। तेथी भतिसागर  
 भंत्रीचे हुरिविक्षमने राज्यासन उपर  
**भतिसागरभंत्री.** स्थापन कर्यो। पछी ते स्वेच्छा प्रभाणु  
 विलास करवा लाग्यो, अने राज्य कारभार

મતિસાગરમંત્રીનીકથા.

( ૩૫૧ )

મંત્રી ચલાવે છે. તેવામાં એક દિવસ હરિવિઠુમ રાજને ડોઈઓ કહ્યું કે, તું તો નામ ભાત્ર રાજ છે. ખરો રાજ તો મંત્રી છે. કારણુંકે તે પોતાની મરળ સુના દરેક વ્યવહાર ચલાવે છે. અને સ્વેચ્છા પ્રમાણે વિલાસ સુખ લોગવે છે. વળી સામંતાદિકને પણ પોતાના તાખામાં રાખે છે અને પોતાનો ખણ્ણ પણ હુમેશાં ભરેલો રાખે છે. તે સાંભળી રાજ વિચાર કરવા લાગ્યો કે, એનું કહેવું સત્ય છે. કારણુંકે વિષયમાં આસક્ત થઈને મહેં રાજયની પણ દરકાર રાખો નહીં. માટે ડોઈપણ તેવો તુંચ આદેશ આપું કે, જેથી તે નહીં કરી શકે એટલે ત્થેનો સર્વસ્વ હંડ હું કરીશ. એમ વિચાર કરી રાજને મંત્રીને કહ્યું કે, કૃતરા, કૃતદન, શાની અને મૂર્ખ એવા ચાર પુરુષો તું મને બતાવ. નહીં તો જરૂર તું મરણ વશ થઈશ. તે સાંભળી હૃદયમાં બહુ બ્યાકુલ થઈ મંત્રી પોતાને ઘેર ગયો. હું મંત્રીની પુની સુયશા બહુ બુદ્ધિશાળી છે તેથી તેણું એકાંતમાં પોતાના પિતાને પૂછ્યું કે, હે તાત ! આજે આપ ચિંતાતુર કેમ હેખાએ છો ? મંત્રીએ રાજને હુકમ કલ્યો, એટલે પુની એલો. હે તાત ! આ કાર્ય એટલું બધુ મહત્ત્વ ભરેલું નથી માટે એમાં તમહારે કંઈપણ ચિંતા કરવી નહીં. આ હુષ્ટ પ્રશ્નનો જવાબ હું તેને આપીશ, પરંતુ તમહારે આ સંબંધી કંઈપણ આલવું નહીં.

ત્યારથાં સુયશા પોતાની સાથે એક કૃતરા અને ઘોણીને લઈ  
મંત્રી સહિત રાજ પાસે ગઈ. પછી રાજ  
સુયશાએ આપેદો બોલ્યો, હંડ મંત્રી ! મહારા કહેવા પ્રમાણે  
ઉત્તર. ચાર પુરુષને તું લાગ્યો ! મંત્રી બોલ્યો  
હે દેવ ! આ મહારી દીકરી તેઓને લાની છે.  
રાજના પૂછવાથી સુયશાએ પ્રથમ કૃતરાને બતાવી કહ્યું કે,  
હે રાજન ! આ કૃતરી ભાત્ર આહ.ર આપવાથી પ્રાચે ચાંડાલનું  
પણ હથયાણ ધર્યે છે. માટે એને કૃતરા જણુંલો. વળી કૃતદનનો

( ३५२ )

श्रीसुपार्थनाथचरित्र.

शिरोभवि तुं पीतेज छे. कारणुके ने मंत्रीचे जन्मथी आरंभी  
तहने झेठोटा कर्यो अने राज्य गाहीचे बेसार्यो, तेनेज तुं भास्वा  
तैयार थयो छे. योल ! झारा कल्पा प्रभाषे शुं तुं कृतद्वन नथी ?  
तेमज आ धेअभी बहु ज्ञानी छे. कारणुके रात्रीचे पणु द्वैकनां  
वस्त्र ते ओणभी शडे छे. अने आ झारारा पिता ते अज्ञानी छे.  
कारणुके ते एटलुं पणु जाण्यी शकतो नथी के, राजा अविवेकी  
अने काननेा काच्यो छे. तेम छतां तझारी सेवा करी वैखवनी  
वांछा राखे छे. ते प्रभाषे कल्पुं छे के—

अविवेकिनि यो भूपे, कुर्यादगृह्णि समृद्धये ।

गच्छेदिगन्तरं मन्ये, स्वमारुद्य समृद्धये ॥

घटवत्परिपूर्णोऽपि, विदग्धो रागवानपि ।

ग्रहीतुं शक्यते केन, पार्थिवः कर्णदुर्वलः ॥

अर्थ—“ ने पुढ़ अविवेकी राजा तरङ्गथी सभृद्धिनी  
धृच्छा राखे छे, ते वैखव भाटे आकाश भार्गे यढी द्विगंतरमां  
चाढ्यो. जय एम हुं भानुं छुं, वणी घटनी भाइक परिपूर्णु,  
तेमज डाळ्हो अने रागी एवो. पणु राजा ने काननेा काच्यो. छोय  
तो कोइथी पणु व्यहुणु करी शकतो नथी. ” एम उटलांक सुय-  
शानां सुखापित वयनेा सांखणीने विलक्ष थर्ध राजा योद्यो, हे  
मंत्री ! ने कंध झाराराथी त्हारे. अपराध करायो छोय तेनी छाल  
हुं क्षमा भानु छुं. ते सांखणी मंत्री योद्यो—

पाषाणजालकठिनोऽपि गिरिर्विशालः,

संमिद्यने प्रतिदिनं वहता जलेन ॥

कर्णोप जापपिशुनैः परिघृष्यमाणः,

को वा न याति विरुति दृढसौहृदोऽपि ॥

મર્તિસાગરમંત્રીતાકથા.

( ૩૫૩ )

અર્થ—“અનેક પાણીઓનાવડે કઠિન અને વિશાળ એવો પર્વત પણ નિરંતર વહેતા જલવડે લેહાઈ જય છે તો પછી, કર્ષુસ્યક-પિશુનોથી ધસાતો અને દઢ સ્નેહવાળો એવો પણ કર્યો પુરુષ વિકારને ન પામે ? ” માટે એમાં આપનો કંઈ હોથ નથી. એણી હે રાજધિરાજ ! ગૃહારાથી પણ જે કંઈ આપનો અપરાધ કરવામાં આવ્યો હોથ તેની પણ આપની પાસે હું ક્ષમા માણું હું અને વિશેષમાં એટલી ગૃહારી વિનતિ છેડે, હવે ગૃહારા ધરની હોલતા સહિત આપની મંત્રીમુદ્રા આપ લઈ દો. રાજ એલયો, હે મંત્રી ! મુદ્રા મૂકવાનું તહારે કંઈ પણ કારણ નથી. આ રાજ્ય પણ તહારે આધીન છે. ત્યારખાન મંત્રી ઉલો થઈ રાજને પગે લાગી એલયો, હે નરેશ્વર ! આજથી આ દેહપર્યંત ગૃહારે મંત્રી મુદ્રાનો નિયમ છે. માટે હે સ્વામિન ! આ કાર્યમાંથી ગૃહને સુકૃત કરો. અને આપની આજાથી હું મુનિ દીક્ષા અહુણું કરીશ. રાજ એલયો, કોઈપણ રીતે હું તહેને રજ આપવાનો નથી. કારણું તું ગૃહારા સ્વાધીન છે. અને તહારા વિના ગૃહારે પલભર પણ ચાલે તેમ નથી. માટે ગૃહારાકર્યમાં અવશ્યતહારે રહેવું પડશો. મંત્રી એલયો, પ્રભુ ! આપનું કહેવું હીક છે. પરંતુ હું આ કઠોર એવા રાજકાર્ય કરવા માટે હવે છાચિતો નથી, માટે આ સંબંધમાં હવે ગૃહને ધણો. આશ્રમ કરવાની જરૂર નથી. આ પ્રમાણે મંત્રીનો ૬૬ નિશ્ચય જાણી રાજ એલયો, મંત્રી ! ગૃહસ્થાશ્રમમાં રહી શ્રાવક ધર્મની આરાધના કરવી બહુ ઉત્તમ છે. ચૂં દીક્ષા વિના ધર્મ સાધન નહીં થતું હોથ ? શ્રાવક ધર્મ પણ સુગતિદ્વારા થાય છે. એ પ્રમાણે રાજનું વચ્ચેન માન્ય કરી મંત્રી પોતાની પુત્રી સહિત ચોતાને ઘેર ગયો.

પછી મંત્રીએ ગીતાર્થ એવા સફગુરુ પાસે જઈ આણવતા-  
૨૩

( ३५४ )

ओमपार्वतीनाथचरित्र.

**आवकधर्म.** दिक भार प्रकारनो आवक धर्म अंगीकार कर्या. अने ते प्रभाणु निरंतर पोते पाणवा लांयो. तेमજ भीज शिक्षावतमां विशेषे अरी देशावकाशिकनो नियम लीधो. एक दिवस तेणु एवो नियम लीधो. ते, आजे काई पणु कार्य माटे नहारे दिवसनो अंदर पोताना धरमांथी बहार जवुँ नहीं. तेवामां राज्ये मंत्रीनी पासे चेतानो प्रतीहार मोक्ष्यो. ते प्रसंगे मंत्री पोताना राजना शत्रुना प्रधान पुढ़वने खुंभारे करीने योलावी, तेनी साथे एकांतमां ऐसी कंडक वातनित करतो हुतो, ते आबत मंत्रीना घेर जतां प्रतीहारना जेवामां आवी, एटले तरतज ते शंकित थर्ड राजनी पासे आव्यो. अने अन्नेनी मसलत तेने कही हीधी. ते सांलणी राज खु कोधातुर थृष्ठ गयो अने प्रतीहारने हुक्म कर्यो के, मंत्रीने अवगा हाथे बांधीने जलही भारी पासे लावो. तत्काल तेओचे पणु हुक्म प्रभाणु मंत्रीने हाखल कर्यो.

राज योह्यो, मंत्री ! हनु पणु तुं देष युद्धिनेछेऽउतो नथी ?  
 भारा शत्रुने तुं शा माटे मान आपे छे ?  
**मंत्रीनी कृदर्थना.** भें क्षमा माणीने त्हारे सत्तार कर्यो तेम छतां पणु तुं तो अकृत्यमां पठ्यो. अने पोतानी कृच्छा प्रभाणु तुं वर्ते छे. माटे हवे त्हने डेवी रीते राखवो ? वणी त्हने साधर्मिक लाणी हुं त्हारा प्राणु तो नथी लेतो. परंतु भात्र त्हारा हेशनो त्याग करी तुं चाह्यो जा. कारणु के द्वामी विद्धु कार्य करवाथी त्हारा प्राणु. पोतानी भेणेज चाल्या जशे. आ प्रभाणु योलवाथी नरेंद्रनी माता महनकी पणु मंत्री-तुं बांधनाहिक हुंभ सांलणी रहन करती त्यां आवी अने योह्यो के, हे वत्स ! सदाकाल परम उपकारी एवा आ मंत्रीनी कृदर्थना हुज्जनेना कर्हवाथी तुं शा माटे करे छे ? वणी हालमां आ

મતિસાગરમંત્રીનીકથા.

( ૩૫૫ )

મંત્રી વિશેષ પ્રકારે ધર્મમાં રક્ત થઈ શુભ કાર્ય કરે છે અને અનિષ્ટ કાર્ય સ્વરૂપમાં પણ તે ચિંતવતો નથી. તેમજ પ્રજા વર્ગને પણ સમાન બુદ્ધિથી જુઓ છે. “ મહાત્માએ શુલ વા અશુલ કેણે પણ કાર્ય વિચાર્ય વિના કરતા નથી. ” માટે એક દમ મંત્રીને બંધનમાં નાખ્યો. અને આ પીડા આપી તે ખહુજ તહેં પોઢું કર્યું છે. વળી મંત્રીની પુત્રીએ તેજ વખતે લુને જે કૃતદ્વારિએ માણ્યી કદ્યો હતો તે વાત આ પ્રમાણે અકૃત્ય કરવાથી તહેં પોતેજ સત્ય કરી. એમ કહી રાણીએ છરીથી બંધન કાપીને મંત્રીને છુટો કર્યો અને તેની ક્ષમા માણી. ત્યારબાદ મંત્રી બોલ્યો, આ કાર્યમાં આસ મહારોજ દોષ છે. કારણ કે આજે ધરમાંથી બહાર ન નીકળવું એવો મહેં નિયમ લીધો હતો. છતાં હે દેવિ ! પ્રથમના પરિચયને લીધે ખુંઝારો કરી શત્રુના પ્રધાનને મહેં બોલાવ્યો. તેથી મહુને દેશાવકાશિક વ્રતમાં અતિચાર લાગ્યો. તેથી તેનું ફ્રલ મહેં પોતેજ લોગ્યું એમાં રાજનો કંઈપણ દોષ નથી. તે સાંભળી રાજનો કોધ પણ શાંત થઈ ગયો. પછી રાજને પણ વિનયનાં વચ્ચે આવી મંત્રીની ક્ષમા માણી. મંત્રી પણ સુખાસનમાં એસી રાજની આજા લઈ પોતાને ઘેર ગયો. અને દશ બંધનોની પીડાને લીધે મંત્રીના શરીરે કાલજવર ભરાઈ ગયો. જેથી ત્રીજે દ્વિવસે અકસ્માત્ પ્રાણું સુક્ત થઈ ગયો. અને કર્મના અનુસારે સૌધર્મ દેવલોકમાં અદ્વય ઇદ્ધિવાળો દેવ થયો. ત્યારપછી ત્યાંથી વ્યવીને મહાવિદેહમાં ઉત્પજ્ઞ થઈ ત્રીજે ભાવે મોક્ષ સુખ પામયો.

ઇતિ દ્વિતીયશિક્ષાવ્રતે તૃતીયાતિવારવિપાકે મતિજલધિમંત્રિ-  
કથાનકં સમાપ્તમ् ॥

—૪૮૬૩—

( ३५६ )

श्रीसुपार्थ्यनाथयशित्र.

## कृष्णनी कथा.

### अतुर्थस्वरूपमहर्शनातिचार.

हानवीर्य राज ऐल्यो, हे जगत्पातक ! आपनी पवित्र देशनावडे सर्व जगत्ना ल्यो. पवित्र थाय छे भाटे, हे भगवन् ! आप महान् परोपकारी छे. तेथी कृपा करी हुवे भीज शिक्षाप्रतमां योथा अतिचारनुं स्वरूप दृष्टांत साथे अमने समज्जवे. श्री सुपार्थ्यप्रभु ऐल्या, देशावकाशिक प्रत श्रहणु करीने जे पुरुष कोळ कार्यने लीघे झर रहेला पुरुषने पोताना स्वरूपनुं भान करावे छे, ते कृष्णनी माझेक खडु हःभी थाय छे.

धूर्मंडल्भुमिमां उत्तम शोलाने धारणु करतुं मानेट नामे नगर छे. तेमां समस्त शत्रुओनो पराजय कृष्णहृष्टांत. करनार अने समव्र कलाओनो पारगामी

विकमाहित्य नामे राज्ञ छे. पद्मा नामे तेनी पटराणी छे. विनयादिक सहशुण्णुनुं भांहिर विकमसेन नामे तेने पुत्र छे अने कृष्ण नामे तेनो भित्र छे. हुवे एक हिवस विकमसेन कुमार पोताना भित्र सहित हस्ती उपर ऐसी हृष्यने आनंद दायक अने भनोहर अवा नंदनवन नामे उद्घानमां गये. त्यां आगण एक पुरुष मज्जे. तेणु प्रार्थना करी कल्युं के, हे कुमार ! रत्नमाला नामे झारी भार्या साथे हुं आ कठलीचृहमां रात्रीचे सुतो हुतो तेटलामां अशोकवृक्ष उपरथी नीचे उतरी एक मयूर (भोर) झारी खोनी डोकमांथी रत्नावणी हारनुं हरणु करी झारा देखतां ते पाणे तेज वृक्ष उपर गये. त्यारपछी झें त्हेने आणु भार्युं. ते पणु त्हेने नहीं लागतां पाणु आवीने झाराज शरीरे लाण्युं. वणी ते ऐर कला चढावी आनंदपूर्वक

કૃષ્ણનીકથા.

( ૩૫૭ )

નૃત્ય કરે છે. પરંતુ કોઈપણ પ્રકારે તેનો પરાજય થતો નથી, અને કોઈથી તે ડરતો પણ નથી. માટે આપ કૃપા કરી ક્ષાણુમાત્ર ત્યાં પદ્ધારો અને તે પક્ષીને જુદ્યો. કુમાર પોતે ત્યાં ગચ્છો અને મોરને નોઈ વિસ્તિત થઈ તે બોલ્યો, હે મધ્યુર ! તહારે નૃત્ય કરવાનું શું કારણું ? મોર બોલ્યો, હે કુમારેં ! કૃપા કરી ક્ષાણુ માત્ર સાવધાન થઈ તું રહાડું ચરિત્ર સાંભળ.

**શીલરૂપી અલાંકારથી ભણ થયેલ રાષ્ટ્રકૂટ નામે પૂર્વભવમ**  
**હું રાજ્યપુત્ર હતો.** એક દિવસ બહુ રૂપવંતી  
**મોરનું ચરિત્ર.** નગરશોઠની પુત્રી રહુને મળી. તહેને લઈ  
કોઈક સાર્થવાહની સાથે હું સિંહુ દેશમાં  
જતો હતો. વળી તે શોઠની પુત્રી ચાલવામાં બહુ ધીમી હતી  
અને સાર્થવાહના લોકો બહુ અડપથી ચાલતા હતા. તેથી અમારે  
અને સાર્થને ઘણું અંતર પડી ગયું. પછી અમે બન્ને જણું  
માર્ગના શ્રમથી બહુ ચાડી ગયા તેથી માર્ગ છોડી એકાંતમાં  
નિર્દ્દિશપણે અમે સુકામ કર્યો. રાત્રીના પ્રથમ પ્રહર સુધી કીડા  
કરીને સુર્જ રદ્ધાં પછી રાત્રીના છેલ્લા પ્રહરે હું જાગી ઉઠ્યો. તો  
રહારી ખી ત્યાં નહોંતી તેથી રહેં ચારે બાળું એ તપાસ કર્યો  
પણ તેનો પત્તો લાગ્યો નહીં. પછી રહેં વિચાર કર્યો કે પોતાનાં  
માબાપને સંભારી કહાયિતું તે પાછી વળી હશે પણ તે તેની  
અહોટી બૂલ ગણ્યાય, કારણું કે માર્ગમાં હુષ પ્રાણીએ એને મારી  
નાખશો. એમ હું વિચાર કરતો હતો તેટલામાં સૂર્યોદય થયો. એટલે  
તેનાં પગલાં જોતો જોતો હું જતો હતો તેવામાં બહુ વેગથી દોડેલા  
વાધનાં પગલાં રહારા જોવામાં આવ્યાં તે ઉપરથી રહુને નિર્દ્દિશ  
થયો. કે, આ નિર્દ્દિશ વાંદે રહારી ખીને મારી નાખી છે. પછી  
ત્યાંથી હું સાર્થ પાસે જઈ પહેંચ્યો, સાર્થાધિપને આ સર્વ વૃત્તાંત  
જણ્યાવીને રહેં કહું કે, જ્યાંસુધી હું રહારી ખીની ખણર લઈ

( ३५८ )

श्रीसुपार्थनाथवरित्र.

अहों आवुं त्यांसुधी तम्हारे अहों शोकावुं. पधी सार्थवाहे  
पथु म्हारा वयननो स्वीकार करी म्हारी सहाय माटे पोताना  
केटलाक सुबटो मोक्ष्या.

**पधी हुं त्यांथी सुबटो सहित नीकणीने खीनी शोधमां**  
**इरतो हुतो तेवामां एक वाघ म्हारा जेवा-**  
**खीनी शोध.** मां आव्यो अने ते सुध गयो हुतो. तेमज  
तेनी पासमां उत्तम वीरीओ, कडां, बाजु-  
बंध अने सुवर्णुना कंकणोथी विभूषित ते भालाना अन्ने हाथ,  
अने खडु सुंदर सोनानी सांकण सहित अन्ने अंजर तेमज आ  
रत्नावली छार विगोरे सर्व आलूषणो, पडेलां जेयां. पधी ते  
भालाना मांसथी तृप्त थृष्ठ सुतेला ते वाघने झें भेलाव्यो.  
ऐ लंपट ! निरपरागी भागाने भारी हुञ्जु पथु निर्भय थृष्ठ सुध  
रख्यो छे ? परंतु त्हारा पेटमांथी ते भालाने ज़्जर हुं ऐंची  
देवानो छुं. ए अगाणे म्हारां असद्य वयन सांलगी वाघ एक-  
दम जायत् थृष्ठ उलो थयो, अने पोताना गर्जारवथी छक्षांड रूपी  
मंडपने विघेरतो छायने शुं ? वणी लारे पुंछडाना आडंबर  
वडे भूतलने कंपावतो छायने शुं ? एम अनुकमे यम समान  
अत्यंत गर्वने वहन करतो ते म्हारी उपर धसी आव्यो. झें पथु  
वज्ञ समान ऐंरना घीतावडे डाभा हाथे तेनी लुल अने ओढ  
वीधी लीधा. तेमज जमणा हाथमां धारणु करेली छरीवडे तेनुं  
हिंदर चीरी नाख्युं. तेथी ते तत्काल प्राणु मुक्ता थृष्ठ गयो, पधी ते  
भालाना शरीरना सर्व अवयव तेमज तेनां कडां, कुंडल विगोरे  
सर्व आकरणु लध्यने इरसी उपर वाघनुं कलेवर भरवी हुं  
सार्थवाहुनी पासे गयो, अने तेने क्षुंडे रत्नपुर नगरमां  
रत्नसंचय नामे शेठ छे. हेवशी नामे तेनी भार्या छे, तेच्यो आ-  
भागानां माआप थाय छे, तेमने आ आकरणो. तमे जाते

કૃષ્ણનીકયા.

( ૩૪૬ )

જઈને જરૂર આપને અને આ સર્વ વૃત્તાંત તમહારા જાણવામાં છે તે પ્રમાણે કહેનો. કુપા કરી આટલું મહારું કામ અવશ્ય કરવું. ભૂલશો નહીં. હવે હું આ સ્વીનાં અગો સાથે જ ખગતી ચિત્તામાં પ્રવેશ કરી મહારી સીના માર્ગને અનુસરીશ. મહારાથી કોણ પણ થયેલો અપરાધ આપે ક્ષમા કરવો. અને મહારા સ્વર્ગન વર્ગને મહારી ક્ષમાપના સાથે આ સર્વ વૃત્તાંત નિવેદન કરશો.

**સાર્થકતિ એદ્યો,** રે યાંથ ! તું સ્વી સાથે જે અભિનમાં  
પ્રવેશ કરે છે તે લોાક વ્યવહાર તથા ધર્મથી  
**સાર્થવાહનો** પણ વિરુદ્ધ છે. કારણુંકે ડેટલીક સ્વીએ  
**ઉપદેશ.** પોતાના પતિ સાથે અભિનમાં પ્રવેશ કરે છે  
એ વાત તો લોાકમાં પ્રસિદ્ધ છે. ત્યારણાં

મહેં પણ કહું કે, પ્રાચે પુરુષોનો સ્નેહ તેવો હોતો નથી. કારણુંકે,  
ભૂખ્યા માણુસોને લોજનની માઝક પુરુષોનો સ્વીએ. ઉપર રાગ  
હોય છે. વળી જે સ્નેહ મરણુંતે પણ નાશ પામતો નથી તેવા  
પુરુષો તો વિરલાજ હોય છે. તૃપાતુર ચાષ પક્ષિએ. પણ વાર-  
વાર પ્રિય વચન યોલે છે. એમ ગ્રલાપ કરી તૈયાર રહેલી  
ચિત્તામાં સ્વીના અવયવો સાથે મહેં પ્રવેશ કર્યો. અને કર્મચોગને  
લીધી મરીને હું વ્યંતર થયો છું. પછી અનુકૂમે કીડા કરતો સ્વી  
સહિત તે સાર્થવાહ પણ અહીં આંધો. અને તે સ્વીના વક્ષ-  
સ્થલમાં મહારો રત્નાવલી હાર મહેં જેયો. જેથી જ્ઞાનના ઉપયોગ  
વડે પુરોક્ત સર્વ વૃત્તાંત મહેં જાણ્યું, તેથી મોરનું સ્વરૂપ ધારણ  
કરી હું મહારો રત્નાવળી હાર લઈ બહુ ખુશી થયો. હે કુમાર !  
તમને જો આ વાતની પ્રતીતિ ન થતી હોય તો આ ઉધાનની  
અંદર આમ્રવૃક્ષની નીચે કેવલી ભગવાન બેઠા છે તેમને મહારું  
ચરિત્ર પુણી જુએ.

( ३६० )

श्रीमुपार्थनाथवरित्र.

हुवे भिन्न सहित कुमार तथा औ सहित ते पुरुष मौरने  
साथे लड़ ते सर्वे डेवणी पासे गया. अने  
**डेवलीभगवान्.** वंदन करी उन्नित स्थाने ऐडा. योग्य अव-  
सर जाण्ही कुमार योाव्यो, भगवन् ! आ  
मौर पुर्वक्षमां डेखु हुतो अने क्या स्थानमां हुतो, वणी अेष्ट  
शुं शुभाशुभ कार्य क्युं छे ? ते कृपा करी आप निवेदन करो.  
डेवली योाव्या, आ मौरे के तमने क्युं छे ते सत्य छे. वणी  
कुमारना प्रतिभेदने माटे विशेषमां ज्ञानयुं के, विषय सुखनुं  
ध्यान करती ते भाला भर निद्रामां सुती हुती, तेवामां वाचे  
तेने मारी नाई तेथी ते तिर्थि ज्ञातिभां उत्पन्न थाई छे.  
कुमार योाव्यो, सुनीद ! शुं रजिसुखनो अध्यवसाय आवुं इत  
आपे छे ? डेवली योाव्या, रजिसुखनुं ध्यान करतो डेई मनुष्य  
निद्रामां ज्ञे भरणु पासे तो ते लुव अहु शुणुवान् छाय तोपछु  
विषम फुर्गतिभां उत्पन्न थाय छे. एम विस्तारपुर्वक देशना सांबणी  
पोताना भिन्न सहित कुमारे द्वादश प्रकारनो गुहीधर्म स्वीकारो.  
मौरे पछु व्यंतरनुं स्वदृप्र अगट क्युं अने सम्प्रकृत्व अहुषु करी  
कुमारना कंठमां रत्नभाला पहेरावी पछी मुनिने नमस्कार करी  
ते पोताना स्थानमां गयो. त्यारबाट कुमारादिक पछु डेवली  
भगवानने वंदन करी पोतपोताना स्थानमां गया.

**हुवे कृष्ण सहित कुमार निरंतर उपयोगपुर्वक धर्मकार्य**  
करे छे. पछी एक हिवस कृष्णे देशावकाशिक  
**कृष्णनी** व्रतमां विशेष नियम लीधो. के आने सूर्यां-  
**शिथिलता.** स्त सुधी अहारे पौष्ठधशालानी अहार न  
ज्ञु. तेमज पौष्ठधशालानुं द्वार बंध करी  
चाते अंदर ऐडो हुतो तेवामां कुमारनो मौकलेलो. डेईक पुरुष  
कृष्णनी पासे आव्यो. द्वार बंध छावाथी, कृष्ण ! कृष्ण ! एम  
गहाटा शण्ड ते करवा लाव्यो. ते सांबणी कृष्ण चाते मौनधारी

કૃષ્ણનીકથા.

( ૩૬૧ )

હતો છતાં પણ તે ઉચ્ચા સ્થાને ઉસો રહી આવેલા પુરુષની દણિ-ગોચર થયો. એટલે તે પુરુષ કુમાર ઉધારી અંદર ગયો અને કુમારનો સંદેશો તેને કહેતો હતો તેટલામાં કયાંયથી ફરતો ફરતો કોઈક સાહુસેક શરેખામણું બંહિવાન દ્વાર ઉઘાડું હોવાથી કૃષ્ણની પાસે ગયો. અને તેના એ હાથ પદ્ધતિ તરવાર બતાવી બંધીવાન બોલ્યો, હું બહુ ભૂષયો થયેલો ખું માટે દશ હજાર સોનૈયા રહુને આપ. પછી કુમારનો પુરુષ પૌષ્ઠશાળાની બહૂદર નીકળી બુમ પાડવા લાગ્યો. તે સાંભળી નગરના લોકો એકઠા થઈ ગયા અને કુમાર પણ ત્યાં આવ્યો. એટલામાં બંધીએ સ્તરંભ સાથે કૃષ્ણને જેંચી બાંધ્યો. અને બંધુ જેંચી ત્યાં ઉસો રહ્યો હતો. તે જેંદ્ર કુમાર બોલ્યો, બંધી ! આ રહારો મિત્ર છે માટે અને તું છોડી હો. અને જે તું માગીશ તે તહેને હું આપીશ. બંધી લયભીત થઈ ગયો તેથી અભયદાન સાથે તેણે દશ હજાર સોનૈયા માગ્યા. પછી કુમારે તે પ્રમાણે ગળી આપ્યા. ત્યારબાદ બંધી કુમારનો હાથ પદ્ધતિ નગરની બહૂદર ગયો. અને કુમારને નમસ્કાર કરી વળી વળીને પાછું જોતો તે વિહાય થયો.

હવે ગાઢ બંધનોની પીડાને લીધે દ્વિધિર ભરાઈ જવાથી કૃષ્ણ અતિચારની વેદના. પૌષ્ઠશાલામાંજ પડી રહ્યો. અને સંસાર સ્વરૂપની વિચારણા કરવા લાગ્યો કે-

જન્મમરણાય નિયતં, બન્ધુર્દુઃખાય ધનમનિરૂત્તયે ।

તત્ત્વાસ્તિ યત્ત વિપદે, તથાડપિ લોકો નિરાલોક : ||

ધનાપાય : કાય : , પ્રકૃતિચપલા શ્રીરપિ ખલા ।

મહાભોગ રોગા : , કુવલયદૃશા : સર્પસદૃશા : ||

ગૃહાવેશ : કલેશ : , પ્રણવિષ સુસું સ્ત્રોર્વિમુખમ ।

યમ : સ્વैરી વૈરી, તડપિ ન હિતં કર્મવિહિતમ ॥

( ३६२ )

श्रीसुपार्श्वनाथवरित्र,

अर्थ—“ प्राणी मात्रनो जन्म जड़ेर मरणु माटेज थाय  
 छे, तेमज अंधु वर्ग हुःभने माटे अने धन संपत्ति असंतोषने  
 माटे थाय छे. वणी आ हुनीयामां कोई पछु एवें पदार्थ नथी  
 के जे हुःभद्रायक न होय ! एम जाणुतां छतां पछु लोको अजा-  
 नताथी तेने छोडता नथी. तेमज आ देह अहु विध्नोथी घेरयेदो  
 छे. वणी स्वाभाविक चंचल एवी लक्ष्मी पछु कुटिल छे, महान  
 विषयलोगो दोगमय होयाय छे, स्त्रीओ नागिणी समान हुःभ-  
 दायक छे, तेमज शुद्धकार्य अहु क्लेशदायक छे. स्नेही वर्गनुं  
 सुख पछु अहु अस्थिर छे. अने स्वच्छंहयादी यमदीपी झोटो  
 वैरी अुक्ती रह्यो छे छतां पछु आत्महित कार्य न कर्युः.” कारणुके  
 हिंगवतना क्लंकदीपी वृक्षनुं पुण्ड्रपूर्णी हुःभ अहोऽम भुने ग्राम  
 थयुः. वणी जन्मांतरमां कुगति पाभीने अनेक हुःभद्रपी अति-  
 चारनुं इल अहारे लोगवपुं पडशे. धत्याहिक भावनामां हिवस  
 व्यतीत करी रात्री ते कृष्ण पेताने घेर गयो. परंतु हाङ्गजवर  
 भराइ जवाथी त्रीजे हिवसे मरणु पाभी ल्यौतिषिक देवमां  
 उत्पन्न थयो, त्याथी अवाने त्रीजे लवे सर्व कर्मनो क्षय करी  
 मोक्ष सुख पाभशे. विक्रमसेन कुमार पछु अनुकूले निर्मल चारित्र  
 पाणी डेवणज्ञान उत्पन्न करी विशुद्ध थर्द सिद्ध पद पाभये.

इति द्वितीयशिक्षाव्रतचतुर्थातिचारविपाके कृष्णकथानकं  
 समाप्तम् ।

### सोमश्रेष्ठीनी कथा.

पंचमपुह्यगलक्षेपातिचार.

दानवीर्य राजा भोव्यो, हे भगवन् ! हवे धीज शिक्षाव्रतमां  
 पांचमा अतिचारनुं लक्षण दृष्टांत सहित अमने समजवे. श्री

सोभेष्ठीनीकथा.

( ३६३ )

मुपार्च प्रबु ऐत्या, हे राजन् ! जे पुरुष देशावकाशिक व्रत थहणु करीने कांकरा विगोरे वस्तुओना प्रक्षेपवठे पोताने जडेर करे छे ते सोभेष्ठीनी माझक अहु हुःअ पामे छे.

अहु विवृधि ( ओर=धर्म ) नुँ स्थान, तेमज निर्मल भविष्योना कांतिशी विभूषिता शेषनागना शरीर समान लेण्डुपुर नामे नगर छे. ते बन्नेमां लेह मात्र एटलोज छे के, नागने ऐ लहाओ रहेकी छे अने आ नगरनी अंदर कोईपछु ऐलहावाणो ( यादीओ ) रहेतो नथी. एवा ते नगरनी अंदर स्वर्जन-इपी कुमह वनने प्रकुद्दल करवामां चंद्र समान सोम नामे श्रेष्ठी छे. कामदेवनी की समान अहु सुंदर आकृतिवाणी अनंगसेना नामे तेनी लार्या छे. परस्पर गाढ प्रीतिने लीधे विषय सुणमां आसक्त अने हुमेशां आनंदभय हौगुंहक देवनी माझक तेओनो डेटलोऽ सभय व्यतीत थयो. एम करतां कोईक सभये अनंग-सेनाने एक पुत्री जन्मी. योग्य सभये अनंगसुंदरी एतु तेनुँ नाम पाइयुँ. वणी ते अनंगसुंदरी इप वैलवमां अद्वितीय हुती. पोतानी अति सौंदर्यताने लीधे रतिना गर्वनो. पणु ते अपहार करती हुती. वणी हुँ एम मानुँ छुँ के, तेनी रचनामां विधिने अहु प्रयास वेठवो. पक्ष्यो हुशे. परंतु ते अहु हुर्भागी हुती. तेथी कोईपछु पुरुष तेनी तरइ दृष्टि पणु करतो नहोतो. हवे पुत्रीनी योग्य उभर लेध तेना भातापिताए विवाह भाटे अहु प्रयास कर्यो पणु ते वराङ्गीने कोई स्वीकारतुँ नथी ! वणी ते अनंग सुंदरी कामागिनी पीडाने नही. सहन करती हुमेशां परपुरुषोनी प्रार्थना करती हुती अने लोको. पणु आ प्रभाष्ये तेनो हुराचार लेई आ कुलटा छे एम ऐलवा लाग्या. ते अपवाह सांखणी पोते अहु हुःअी थवा लागी. तेमज तेनी सभीओ पणु हुसे छे. तेथी ते अहु लज्जा पामवा लागी.

( ३६४ )

श्रीमुपाध्यनाथचरित्र.

त्यारभाद सौभाग्यनी वांच्छा करती एवी ते अनंगसुंदरी  
शंकर अने पार्वतीनुं पूजन करवा लागी.  
सौभाग्यनो उपाथ, वणी नेत्रमां सौभाग्य अंजन आंजे छे.  
तेमज भालाहिकमां सौभाग्य तिलक विगेरेनां  
चिन्हो पथु करे छे. अहु मनोहर धूपोवडे पोतानो देह सुगंधित  
करे छे. वणी कामहेवना मंत्रनुं पथु ध्यान करे छे. त्रषु काणमां  
त्रिपुराहिक विधायोनो जप करे छे. तेम छतां पथु पुढेने ते  
इचिकारक थती नथी. तेथी तेनां भातापिता अहु हःओ थधु  
निभितवेदी-हैवज्ञने ऐआवीने पुछे छे. तेमज मंत्रवाही लोडेने  
ऐआवी अनंगसुंदरोने खतावे छे. कुलहेवतायोनी पूजा अने  
अनेक मानताच्यो राखे छे. देव स्नपनाहिकना जलथी स्नान  
करावे छे. तेमज अनेक औषधियोथी पथु नवरावे छे, एट्टुलुंज  
नहीं पथु जे कोई कडे छे ते सर्व उपचारोमां तथा मंत्र, तंत्रा-  
हिकमां तेना भातापिता अहु दृव्य अरवे छे. परंतु अत्यंत  
मुष्पनी इद्धिवाणा खाखराना वृक्ष तरह भ्रमरायोनी माझक  
युवान पुढेनी फृष्टि तेना शरीर तरह किंचित् मात्र पथु  
ऐच्याती नथी.

अन्यहा ते लोगपुर नगरमां चार ज्ञानना धारक शुद्धमहा-  
राज पधार्या. सोभयंद्र श्रेष्ठो पोतानी पुत्री  
शुद्धमहाराज. सहित शुद्धने वंहन करवा गये. अहु  
भक्तिपूर्वक सूरीश्वरना यरषुङ्मलमां नम-  
स्कार करी घेठो. त्यारभार उचित समये तेषु प्रक्ष कर्यो. लग-  
वन्! अहारी पुत्रीने परषुवा भाटे कोईपथु पुढेषु धृच्छा करतो  
नथी तेनुं शुं कारषु? शुद्ध ऐआव्या, एतुं पूर्वनुं कर्म हालमां  
विहित थयुं छे. श्रेष्ठी ऐआव्यो, केवी रीते उद्यमां आव्युं छे ते कृपा  
हरी संबोगावो. सूरीश्वरे प्रारंभ कर्यो के पृथ्वी स्थान नामे

सोभानेष्ठीनीकथा.

( ३६५ )

नगर છે. તેમાં ધનંજય નામે રાજ રાજ્ય કરે છે. વળી તેમાં વિમલ નામે સુપ્રસિદ્ધ શ્રેষ્ઠી છે. વળી સુંદર આકૃતિવાળી, શીલ-વતી ખીએમાં શિરોમણિ સમાન, ઉત્તમ કુલમાં જન્મેલી, વિનય શુષ્ણુતું મુખ્ય સ્થાન, લાજાગુણ જેમાં મુખ્યતાએ રહેલો છે, મૃદુ અને સ્વભાવ છે સ્વર જેનો તેમજ સ્વભાવમાં બહુ સરલ એવી ધનશ્રી નામે તેની ખી હતી. વિમલ શ્રેષ્ઠી તેની સાથે બહુ પ્રેમપૂર્વક પાંચ પ્રકારના વિષયલોગ અનુભવતો હતો. પરંતુ પુત્ર નહીં હોવાથી બન્નેનાં હૃદય બહુ હંઘી હતાં. એક દિવસ વિમલે કહ્યું કે, જે ખીએ પુત્રનું સુખ નથી જાણું તેઓના ગુણ તથા સૌભાગ્યનો અભિમાન, તેમજ સુખ શયનાહિક ‘મેના’ વિગેરે વૈભવ શા કામનો! ધનશ્રી યોલી, પ્રાણુંગ્રિય! કોઈપણ સારી કુલીન ખી સાથે તમે બીજું લગ્ન કરો અને જો પુણ્ય યોગે તેનાથી પણ પુત્ર થાય તો બહુ સાર્દાં. વિમલ યોદ્યો, હે સુંદરિ! તહારા ઉદ્દર્ઢપી સરોવરમાં કિડા કરવા માટે હંસ સમાન પુત્રનો જો જન્મ થાય તો તે શિવાય બીજા પુત્રનું મહારે કંઈ પણ પ્રયોજન નથી. ધનશ્રી યોલી, પ્રાણુંવલલબ! ઇરીથી આ પ્રમાણે વચ્ચન તમારે યોલથું નહીં. કારણકે પુત્ર વિના દ્વારાં રક્ષણ કોણ કરશે? ત્યારબાદ ખીના બહુ આથહને લીધે વિમલ શ્રેષ્ઠીએ શ્રીપ્રભા નામે કુલીન કન્યા સાથે બીજું લચ કર્યું. ધનશ્રી પોતાની પુત્રી સમાન માનીને તે શ્રીપ્રભા કન્યાનું પાલન કરે છે.

અનુકૂમે શ્રીપ્રભા યૌવન વયમાં આવી ગઈ, બાદ એક દિવસ તે કંઈક કાર્ય કરતી હશે તેવામાં ધનશ્રીઉપરદ્રોપ. ધનશ્રીએ શુદ્ધ લાખથી તે કાર્ય કરવાની તને ના પાડી તેથી એકહમ કોપાયમાન થઈ શ્રીપ્રભા યોલી, શું તમે એકલાંજ દરેક કામ જાણુતાં હશો? બીજું કોઈ સમજતુંજ નહીં હોય! આ હુનીયામાં તમેજ એકલાં

( ૩૬૬ )

શ્રીસુપાર્થનાથચરિત્ર.

હાણાં ! હવે દરેક વરનાં કાર્ય તમેજ કરો. હું તો ધરમાં દાચી છું, માટે કોઈ પર્વના દિવસે પણ રહેને કંઈ અતાવશો નહીં. એમ હુમેશાં ધનશ્રી ઉપર તે દ્રેષ કરવા લાગી. આ વાત વિમલના જાણવામાં આવી તેથી તેણે પણ શ્રીપ્રભાને બહુ વારી પરંતુ તે દ્રેષભાવ છોડતી નથી. પછી વિમલ શ્રેષ્ઠીએ બહુ કલેશને લીધે શ્રીપ્રભાને જુદા ધરમાં રાખી તોપણું તે નિરંતર ધૃથ્યામાંજ રમ્યા કરે છે. કદાચિત્ ખનને સ્વીએ લડતી હોય અને તે સમયે વિમલશ્રેષ્ઠી આવે તો તે પણ ધનશ્રીને વારે છે.

અન્યથા શ્રીપ્રભાને ત્યાં એક પરિવાળુકા આવી. શ્રીપ્રભાએ ફ્રલ, પુણ્ય અને વખાદિકથી તેની પૂજા કરી. એકપરિવાળુકા. પરિવાળુકા બહુ ખુશી થઈને બોલી,  
 પુત્રી ! હઃસાધ્ય એવું કોઈ પણ કાર્ય રહારી ધ્યાચા પ્રમાણે અતાવ. હવે કંઈપણ ચિંતા રહારે કરવી નહીં. સ્તંભન, મોહન, ઉચ્ચાટન અને મારણ વિગેરે સર્વે  
 ઉપાય રહારા હાથમાં છે. શ્રીપ્રભા બોલી, બુવનેશ્વરી ! આ જગતમાં રહારા વિના ગરીબ જનોનું પાલન કરનાર તથા કાળને  
 પણ છેતરનાર ધીનું કોઈપણ સમર્થ નથી. માટે રહારી ઉપર  
 દ્વાય કરી રહારી શોકનું હઃખ નિવૃત્ત કરો. પરિવાળુકા બોલી,  
 વત્સ ! રહારું કાર્ય જરૂર હું સિદ્ધ કરીશ. પરંતુ સહાય વિના  
 કંઈપણ સિદ્ધ થતું નથી. માટે કેટલુંક દ્રવ્ય જોઈએ તે રહારે  
 આપવું પડશે. શ્રીપ્રભાએ જોઈએ તેટલું દ્રવ્ય પણ તેને આપણું  
 અને કહ્યું કે, રહારું કામ સિદ્ધ થવાથી તરહારે પૂજનાહિક  
 સત્કાર કરીશ. પછી પરિવાળુકા ત્યાંથી નીકળી વેશયાને ત્યાં  
 જઈ તેની સાથે પ્રસ્તુત કાર્યનો વિચાર કરતી હતી તેવામાં ત્યાં  
 આગળ થઈ વિમલ શ્રેષ્ઠી જતો. હતો. હવે તે વિમલ સાંભળે  
 તેવી રીતે વેશયા પરિવાળિકાને પૂછવા લાગી કે, તમે કયાં જાઓ

સોમશ્રેષ્ઠીનીકથા.

( ૩૬૭ )

છે ? તે બોલી, ધનશ્રીએ મહને મોકલી છે. અને ધનશ્રેષ્ઠીને ત્યાં તહેને બોલાવવા માટે હું જઉ છું, કારણું પોતે કરેલા સર્કેતનો જાંગ થવાથી કોથને લીધે તે આજે આવ્યો નથી માટે મહારાથી અત્યારે વિલંબ થાય તેમ નથી. કેમકે ધનશ્રીનો લર્તી વિમલ શ્રેષ્ઠી પોતાને ઘેર ન આવે તેટલામાં આ કાર્ય મહારે કરવાનું છે એમ કહી તેણીએ કહ્યું કે, આ વાત કોઈની આગળ કરશો નહીં. આ સર્વ હકિકત ત્યાં ઉલા રહેલા વિમલે સંભળી અને તે વિચારમાં પડ્યો કે, ધનશ્રી અને વિમલનું નામ આંદ્યું તેથી જરૂર મહારી સ્ત્રી સંબંધી આ બન્ને જણું વાત કરે છે. એમ જાણી તે અસહ વિચારમાં પડી ગયો.

અરે ! શું ચંદ્રના ણિંબમાંથી કદાચિત્ અંગાર વૃષ્ટિ થાય ખરી ? કિંવા દ્રાક્ષની વેલીમાંથી લીંબડાના વીમલનો અસ- ઝોણી ઉત્પત્તિ સંભવે ખરી ? અથવા ત્ય વિચાર. કામનો સ્વલાપ ણાંડુ વિષમ હોય છે. તેમજ વિષમ સ્વલાપવાળી સ્ત્રીએ પણ રાગાંધ થઈ કર્યું અકાર્ય નથી કરતી ? વળી ખરા અનુરાગીને છેડી ટે છે અને કૃત્રિમ સ્નેહીએ ને પણ છે. કામશ્રહથી મૂઢ થયેલી પ્રમાણાએ ગુણુને પણ હોષ તરીકે જુએ છે. વળી તેઓને ઝૂપ, કુલ, કલા, પરાકમ અને સંપત્તિ પણ પ્રમાણભૂત થતી નથી. જ્યાં પ્રેમ વધી પડે છે ત્યાંજ કોઈ અપૂર્વ ગુણ જોવામાં આવે છે. પ્રાયે ઉત્તમ કુલમાં જન્મેલી સ્ત્રી પણ અધમ પુરુષ ઉપર આસક્ત થાય છે. મહોટા પર્વતમાંથી પ્રગટ થયેલી નહીં પણ નીચ ગામિનીજ હોય છે. માટે મહારા કુળમાં કલાંક ન લગાડે તેટલામાં એને એના બાપને ત્યાં મોકલી હેવી ઉચિત છે. એમ વિચાર કરતો વિમલ પોતાને ઘેર આવ્યો.

ત્યારખાદ કોઈક પ્રસંગ આવવાથી વિમલ બોલ્યો, હે મિશે !

( ३६८ )

श्रीसुपार्थनाथवरित.

મહादं କଳେଖିଂ ମାନେ ତୋ ମହାରେ ତଙ୍କେ ଏକ  
**છી પ્રત્યે વિમ-** વାତ କરવାନી ଛେ. ધନશ્રી ઓલી, પ્રાણુનાથ !  
**ଲନୋ ઉଦ୍‌ગାર.** આଜେ આમ କେમ બୋଲୋ ଛୋ ? આ ଲୁଚିત  
 પଣ୍ଡ ତମହାରା ଆଧୀନ ଛେ. મାଟେ ચોଣ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟ  
 કରମାଵୋ. વિમଳ ઓલોયୋ, પ્રିયେ ! હାତ ତୁ ତହାରା ପିତାନେ ତ୍ୟାଂ  
 ନା. આଵୁ ଅયોଗ୍ୟ ଵଚନ ସାଂଭଳି ଧନଶ્રી ତତକାଳ ମୂର්ଛିତ ଥିଲୁ  
 ପୂଢ଼ି ଉପର ପଡ଼ି ଗର୍ଭ. ପଢ଼ି ଶରୀରକ ଜଳାହିକନା ଉପଚାରଥୀ  
 ସଚେତ ଥିଲୁ ତେ ଓଲୀ, સ્વାમିନ ! ଏକଦମ ନିର୍ଦ୍ଦୟନୀ ମାଝକ ଵିନା  
 କାରଣେ ଆମ ଓଲିବାନୁ ଶୁଣ କାରଣୁ ? ଵિମଳ ଓଲୋ, ସୁନ୍ଦରି !  
 କାରଣୁ ଶିଵାୟ କୋଈ ଦିଵସ ହୁଏ ଓଲୁ ଥରୋ ? ମାଟେ ଏକବାର ତହାରେ  
 ଏମ କୁରବୁ ପଡ଼େ. ધନଶ્રી ଓଲୀ, સ્વାમିନାથ ? ଜେ କେ ଆ କାର୍ଯ୍ୟ  
 କୁରବୁ ବହୁ ଜ ଅଶକ୍ୟ ଛେ, ପରିତୁ ଆପନୁ ଵଚନ ମହାରେ ମାନନ୍ତୁ  
 ଜୋଇଏ, ଏ ପ୍ରମାଣେ ଧନଶ୍ରୀନୁ ଵଚନ ସାଂଭଳି ଵିମଳେ ଜଳନୀ  
 କୋଧନେ ସାଥ କରି ଆପ୍ଯୋ. ଜେକେ ଧନଶ୍ରୀ ଵାହନ ତଥା ସଙ୍ଗାୟ  
 ଵିନା ଜର୍ଦ୍ଦ ଶକେ ତେବେ ନହାତି ପରିତୁ ଅଗ୍ରିତିନେ କୀଷେ ତଙ୍କେ ପଗେ  
 ଚାଲତି ଵିହାୟ କରି. ଅନେ କହୁଣ୍ଡ କେ ମହାରୀ ଆଜା. ଶିଵାୟ ଫୂରୀଥୀ  
 ତହାରେ ଅହିଁ ଆଵବୁ ନହିଁ. ତେବେଜ ତେନି ସାଥେ ମୋକଲେଲା ପୁରୁଷେନେ  
 ପଣ୍ଡ କହୁଣ୍ଡ କେ ତେନା ଆପନା ତ୍ୟାଂଥି ଲୋଜନ କର୍ଯ୍ୟ ଵିନା ତମହାରେ  
 ପାଇଁ ଆଵବୁ. ତେ ସାଂଭଳି ଧନଶ୍ରୀ ବହୁ ତୃଦନ କରିବା ଲାଗୀ.  
 ଅନେ ତେ ସମଜ କେ କଂଠପଣ୍ଡ ମହାରୀ ଆପରାଧ ହୋଇଏ ଜୋଇଏ, ନହିଁ  
 ତୋ କୋଈ ଦିଵସ ଆ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଆଵୁ ନିର୍ଦ୍ଦୟ ଵଚନ ଓଲେ ନହିଁ. ପରିତୁ  
 ପୂରଣୀନେ ଆବ୍ୟା ପଢ଼ି କୋଈପଣ୍ଡ ଆପରାଧ ମହାରାଥୀ ଥିଲୋ ହୋଇ  
 ଏମ ମହନେ ସାଂଭରତୁ ନଥି. ଏମ ଵିଚାର କରିବା ଧନଶ୍ରୀ ସାର୍ଥନୀ  
 ସାଥେ ପୋତାନା ପିତାନେ ତ୍ୟାଂ ଗାଈ, ଧର ଆଠୁଣ୍ଡ ଏଟିଲେ ସାଥେ ଆଵେଲା  
 ପୁରୁଷେ ପାଇବା ଵଜ୍ୟା ଅନେ ଧନଶ୍ରୀ ପୋତେ ଧରମା ଗାଈ.

**સખીଜନ** સહିત, શ્યામ સુખવାળી અନେ ତୃଦନ କରି

सोमश्रेष्ठीनीकथा.

( ३६६ )

કરતી એકલી ધનશ્રીને જોઈ તેનાં માતા-માથાપનો શોક. પિતા એકદમ હર્ષ અને શોકમાં પડી ગયાં અને વિચાર કરવા લાગ્યાં કે, આ પુત્રી ઉદ્ધિરણ મનવાળી કેમ હેખાય છે ? વળી નિસ્તેજ મુખાફુતિને ધારણું કરતી આપણી પુત્રી સાસરેથી અત્યારે એકદમ શા માટે આવી ? એમ બોલતાં તે બન્ને જણું તહેને મળ્યાં એટલે બહુ કોથથી ભરાઈ ગયેલા હૃદ્યે તે રૂઢન કરવા લાગી. પછી તેના માતાપિતાએ આસ્વાસન આપી પૂછ્યું, ત્યારે ધનશ્રીએ પોતાનું યથાર્થ સર્વ વૃત્તાંત નિવેદન કર્યું. તે સાંભળી બન્ને જણું બહુ હુંઘી થઈ ગયાં અને ચિંતવવા લાગ્યાં. શું એનો પતિ સંસારથી વિરક્ત થયો હશે ? કિંબા આ પુત્રીએ ઉલાય કુળમાં કલંક લગાડ્યું હશે ? કિંબા દેવની પ્રતિકૂલતા થઈ ? કિંબા અંતરાય કર્મ પ્રગટ થયું ? કિંબા એની સપત્નિએ એના પતિનો ભાવ ઉતારી નાખ્યો ? કે એના પુષ્ટયનો પ્રલાવ આવી રહ્યો ? એમ કેટલાક વિતર્ક કરી પુત્રીના હુંખનું કારણું જાણ્યાવા માટે તેના પિતાએ રાત્રીએ કુલદેવીની પૂજન કરી અને દેવીનું ધ્યાન કરી તેની આગળ પૂછ્યી ઉપર સુધ ગયો. કુલદેવી પરૈ-દના ભાગમાં પ્રત્યક્ષ થઈ ઓલી, હે 'શ્રેષ્ઠી ! આ આખતમાં ધનશ્રીનો કોઈપણ હોષ નથી. વળી નવીનચંદ્રની કલા સમાન શુદ્ધ શુણોથી વિભૂષિત એવી આ ધનશ્રી મહાસત્તી છે. પરંતુ એની શોકના કહેવાથી એક પ્રવાળકાએ કપટ કરી ધનશ્રીનું જુહું કલંક રસ્તામાં જતા વિમલ શ્રેષ્ઠીને સંભળાયું. તેથી તે પોતાના હૃદયમાં શાંકિત થઈ કુળ કલંકના ભયને લીધે તેણે ધનશ્રીને અહીં મોકલી છે. માટે તમે જેહ કરશો નહીં. કેટલાક દિવસ ગયા પછી વિમલ પોતેજ અહીં આવીને ધનશ્રીને લઈ જશે. એમ કહી કુલ-

( ३७० )

श्रीसुपार्थनाथवरित्र.

देवी पोताना स्थानमां चाली गઈ. त्यारभाद श्रेष्ठीचे पणु प्रभातमां धनश्रीने रात्रीनुं वृत्तांत कहुं तेथी धनश्रीने विपाद उटवेणे क कीछु थयो. अने पोते धर्मध्यानमां समय व्यतीत करवा लागी.

ओवामां ओक हिवस पोताना पिताने त्यां लिक्षा मागवा माटे ए साध्वीचे आवी. धनश्रीचे साध्वीने तेच्याने जेई बहु लक्ष्मीपूर्वक वंहन कहुं. समागम. पछी बहु मानपुर्वक लक्ष्मापानाहिंड ०डो. २००्युं. तेमज तेच्याने रहेवानुं स्थान तेण्हीचे पुछयुं. साध्वीचे अमुक उपाश्रय अतांयो. लोङ्जन कर्या बाह धनश्री तेच्याना स्थानमां गई. त्यां शीलमती नामे मुख्य शुद्धणीने वंहन करी तेमनी साध्वीचोने पणु वांदीने शुद्ध भूमि उपर तेमनी पासे घेठी. पछी तेण्हीचे विनयपूर्वक धर्म संबंधी प्रश्न कर्या. शुद्धणीचे पणु सारी रीते कोधाहिंड कथायेनो विपाक कह्यो. तेमज भिथ्यापवाहनुं इल, धृत्रियाहिंडनुं गोपन, निर्भग ऐवा सम्यक्तवना गुण अने भिथ्यातवना होष पणु वर्णूया. आ प्रभाणु धर्मेपहेश सांलग्नी धनश्रीनो आत्मिक लाव बहु उद्घास पामवा लाग्यो, तेथी तेण्हीचे अपूर्व करणु प्राप्त थयुं. अने अष्ट कर्मनी अंथ पणु लेदाई गई. पछी तेण्हीचे जैन धर्मनो स्वीकार करी सर्व अशुद्धतो अहंकृ तर्यां त्यारभाद साध्वीचोने वंहन करी धनश्री पोताने घेर गई. आ प्रभाणु शुद्ध धर्मनी प्राप्ति थवाथी पोताने कुतार्थ भानी स्वामीना विरहु हुःअनो तिरस्कार करती गत समयने पणु जल्लती नथी.

अन्यदा श्रीप्रभा भहा ज्वरथी घेराई गःइ अने प्रति हिवसे शरीर कीछु थवा लाग्युं. मस्तक पणु १५०. श्रीप्रभानी वेदना. माहिंडकनी वेदनाथी धर्मधमवा लाग्युं, शुलनी पीडा पणु बहु वधी गई, पूष्ट लाग

મોભાઈનીકથા.

( ૩૭૧ )

ચીરાવા લાગ્યો, સંઘળાં અંગ વાચુની વેહનાથી ભરાઈ ગયાં,  
ઓલવાની શક્તિ પણ બહુ ઘટી ગઈ. શાસ પણ બહુ ચાલવા  
લાગ્યો, એમ અનેક ઉપદ્રવને લીધે તે બહુ અશક્ત થઈ ગઈ.  
એટલે વિમલ શ્રેષ્ઠીએ મંત્રવેહી વૈશોને ઓલાવ્યા, તેઓએ પણ  
પોતાની બુદ્ધિ પ્રમાણે ઉપાય કર્યા પણ કંઈ આરામ થયો નહોં.  
ત્યારપણી શ્રીપ્રભાએ વિમલને કહ્યું, હવે હું જીવવાની નથી.  
માટે મહને ભૂમિ ઉપર સુવાડો અને સ્વજનવર્ગને ઓલાવો.  
જેથી તેઓની હું ક્ષમા માશું. વિમલે પણ તે પ્રમાણે કર્યું,  
અને શ્રીપ્રભાને કહ્યું કે તું તહારા અશુલ કાર્યની પર્યાતોચના  
કર. શ્રીપ્રભા ઓલી, પ્રિય પતિ! પાપકમ, તો મહેં બહુ કર્યાં  
છે. પરંતુ એક મહાદું નિર્દ્ય કાર્ય કર્યું છે. જેથી હું હુર્ભાગિણી  
ખીઓમાં શિરોમણિ સમાન છું. વળી મહારં હૃદય મોહર્દ્પી  
અહથી વેરાયેલું છે. અવિવેકને લીધે મહારં ચિત્ત સ્થિર નથી.  
રાગાંધ બની બહુ અધમ કાર્ય મહારાથી કરાયાં છે તેમજ  
ખીઓમાં પ્રધાનપણે રહેલી ધર્યાવડે મહેં તે સમયે પ્રવાળકના  
સુખથી ઉત્તમ કુળમાં જન્મેકી, ઉત્તમ ધૈર્યવાળી, શાંતિગુણ  
જેમાં સુખ્ય રહેલો છે અને ચંદ્રલેખાની માર્ક મન, વચન અને  
કાયાથી નિષ્કલંક એવી મહાસતી ધનશ્રી ઉપર તમહારા સ્નેહનો  
ઉચ્છેદ કરવા મિથ્યા આગનો આરોપ કરાવ્યો છે તે હજુ પણ  
મહારા હૃદયમાં શાલ્યની માર્ક પીડે છે.

તે પ્રમાણે શ્રીપ્રભાનું વચન સાંભળી વિમલ પશ્ચાત્તાપ  
કરવા લાગ્યો. મહા એદની વાત છે કે મહેં  
**વિમલનો** કર્યું હુર્ભાગતાને લીધે આ અકૃત્ય કર્યું.  
**પશ્ચાત્તાપ.** માત્ર મહેં લોકના કહેવા ઉપર વિશ્વાસ  
રાજ્યો. તેતું આ પરિણામ આણ્યું. આક્ષ-  
ર્ય છે કે અવિવેકને લીધે અકાર્ય કરનાર એવા મહને અને

( ૩૭૨ )

શ્રીસુપાર્થનાથચરિત્ર.

મહારા ભાગ્યને પણ ધિક્કાર છે. વળી મહારી નૈતિક કુશળતા પણ હાલમાં નિર્મૂલ થઈ ગઈ. જેથી માર્ગ જતાં અનાર્ય એવા મહેં પ્રત્રાલ્ફાની કપટ વાર્તા સાંભળોને સતી સ્વીને તેણા પિતાને ત્યાં મોકલી. પણ હજુ કંઈક મહારા પુષ્યને ઉદ્ય છે. કારણું કે મરણું સમયે પણ તેણીએ સત્ય વાર્તા પ્રગટ કરી. એમ વિચાર કરી વિમલ શ્રેષ્ઠી તરતજ ધનશ્રીને તેડવા માટે તેના પિતાને ત્યાં ગયો. ત્યાં પોતાના સાસરા તરફથી ચોગ્ય સત્કાર થયો. ધનશ્રીએ પણ એકાંતમાં પોતાના પતિને કુશળ વૃત્તાંત પૂછ્યું. પછી શોકાતુર વૃત્તિથી વિમલ બોલ્યો. મહેં બહુજ અચોગ્ય કાર્ય કર્યું છે માટે હવે મહારા કુશળ પ્રક્રથી પણ શું ? ધનશ્રી બોલી, સ્વામીનાથ ! એમ તમહારે બોલવું નહીં કારણુંકે એમાં તમહારે કંઈ પણ દોષ નથી, પુત્રના માટે દ્રવ્યના લોકવડે પાપને નહીં ગણુંતી એવી મહેં તમને પરણ્ણાંયા તેનું આ ક્રણ પ્રગટ થયું. આ પ્રમાણે ધનશ્રીને ઉત્તમ વિનય નોઈ બહુ ઐદ્ધથી નેત્રોમાં અશ્વધારાને વહન કરતો વિમલ શ્રેષ્ઠી બોલ્યો, સર્વાંગોને સંગવડે સુંદર અને બળતા એવા પણ જે સંજજનરૂપ ચંદ્રન વૃક્ષોનો સુગંધ મનોહર ભવનને સુવાસિત કરે છે. તેમજ તેઓ ( સંજજનો ) સેંકડો અપરાધેનું સમરણું કરતા નથી. અને અણુ માત્ર પણ ઉપકારનું સમરણું કરે છે. માટે સંજજનો શૂન્યહૃદયવાળા છે કે બહુ ખુદ્ધિમાન છે તે જ્ઞાની શકાતું નથી. એ બહુ ઐદ્ધની વાત છે. વળી હે કુલદૂપી કુમુદ વનમાં ચંદ્ર સમાન ! સ્વર્ણ હૃદયવાળી ! ભૂગ સમાન નેત્રવાળી ! હે કુશાંગી ! તે દિવસથી આરંભી જે કંઈ સુખ હુઃખ તું અનુભવ્યું હોય તે મહને કહે. ધનશ્રી બોલી, હે પ્રિય ! વિશોષ જણ્ણાવવાનું એ છેકે, અહીં આંયા પછી મહને સાઈલુ મહારાજનો સમાગમ થયો. અને તેમણે ગૃહીધર્મનો ઉપરેશ આયો. તેથી મહારા દિવસો આનંદમાં ગયા એમ કેટલીક પોતાની વાર્તા

સોમશ્રેષ્ઠીનીકથા.

( ૩૭૩ )

જણુાવી. પછી વિમલ બોલ્યો, હે મૃગાક્ષિ ! મહુને પણ સફારની પાસે ગૃહીધર્મ અપાવ. પ્રભાતમાં ધનશ્રી પોતાના શુરૂણીના શુરૂ શ્રી વિમલસ્કરિ પાસે પોતાના પતિને લઈ ગઈ. અને પોતાની સાથે જ વિમલને સૂરીધરના ચરણુકમલમાં વંદન કરાયું. પછી સૂરિએ દેશનાના પ્રારંભ કર્યો. કાણુભાત્ર ધર્મપદેશ સાંભળી ધનશ્રીએ શુરૂ મહારાજને પ્રાર્થનાપૂર્વક વિનંતિ કરી. પ્રલો ! મહારા પતિને ગૃહિધર્મ આપો. શુરૂએ પણ તે પ્રમાણે શ્રાવક ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ત્યારખાદ પોતાની કી સહિત વિમલ પોતાના નગરમાં આવ્યો. અને રોગ રહિત શ્રીપ્રભાને જોઈ તે બોલ્યો, તું તહારા પિતાને ત્યાં ચાલી જ. વળી તહારા માટે જે ખર્ચ થશે તે હું તહેને ધેર હેડે ત્યાં મોકલાવી દ્વારા. માટે હવે તું જલહી ચાલી જ. આ પ્રમાણે શ્રીપ્રભાને તિરદકાર સાંભળી ધનશ્રી પતિના પગમાં પડી બોલી, પ્રાણુભ્રિય ! આ મહારી જ્હેન છે. માટે તે મહારા ધરમાંજ રહેશે. વળી એની ઉપર તહે પ્રસન્ન થાઓ. અને મહારી ઉપર પણ આટલી કુપા કરેલા, એમ પતિને જણાવ્યા બાદ શ્રીપ્રભાને કહ્યું કે, હે સભિ ! હાલ તું સ્વામી પાસે જઈને ક્ષમા માગ. પછી શ્રીપ્રભાને પણ ધનશ્રીના કહેવા પ્રમાણે ક્ષમા માગી. વિમલ બોલ્યો, હું તો ક્ષમા કરું છું, પરંતુ તહારી જ્હેનની ક્ષમા માગ. જેથી કરીને આ પ્રમાણે ફુર્દ્દશા થાય નહોં. ત્યારખાદ તેઓ સંતુષ્ટ થઈ પૂર્વની માર્ક લોગ સુખ લોગવવા લાગ્યાં.

એક દિવસ ધનશ્રી બોલી, સ્વામિન ! ખર્ચ જોતાં આ સંસાર હુંખરુપજ છે. યૌવનના વિલાસવળી પ્રમધનશ્રીનો ઉપદેશ. દાઓ પણ કાણુભાત્ર રમણીય છે. તરણું અવસ્થાનો રંગ વિજળી સમાન અસ્થિર છે. જુવિત પણ કાણુભાત્ર હેખાય છે. તેમજ સ્નેહ વિનાનો ભર્તા, સફાવ રહિત મિત્ર વર્ગ, શીત રહિત લાર્યા, ઉત્કૃષ્ટ જાન

( ३७४ )

श्रीसुपार्खनाथवरिन्.

विनानी किया, सुगंध विनानां पुण्य, वैष्णव विना लोगसुअ, नीतिहीन राजा, अने भधुर रथना विनानी वाणी जेम शोभापात्र थती नथी, तेम भनुष्य जन्म पण्य धर्म रहित शोभतो नथी. माटे हे सुलग ! भने हवे आजा आपो ? जेथी हुं दीक्षा अहंषु करीने आत्महित कर. ते सांखणी विमल ऐत्यो, हे प्रिये ! कोई समये पण्य त्वारी आजानो भांग झारै न करवो ए प्रमाणे भडं प्रतिज्ञा करी छे. परंतु हे सुतलु ! ए कार्य आपणे अन्ने साथेज करवानुं छे. तेथी हालमां उटलाक दिवस तुं विलंब कर. जेथी साते क्षेत्रोमां पेतातुं धन वापरीने आपणे निवृत्त थाच्ये. ते प्रमाणे धनश्रीचे पण्य साते धर्मस्थानोमां पेताना द्रव्यनो नियोग कर्यो. त्यारभाद सर्व धननी व्यवस्था करीने श्रीप्रला अने धनश्री सहित विमल श्रेष्ठीचे उत्तम मुहूर्तमां सङ्गुरुनी पासे जध विधिपूर्वक दीक्षा दीधी. अनुकमे हुळकर तपश्चर्या करीने पर्यंतमां अनशन पाणी तण्ये जण सौधर्म हेवलोकमां भहर्द्दिक हेवपणे उत्पन्न थां. पछी त्यांथी नीकणी श्रीप्रला अहीं त्वारी आ हीकरीपणे उत्पन्न थाई छे. अने ते आ भवमां पण्य पूर्वना हुळूतने दीधे अति हुर्कांगीही थाई छे. ए प्रमाणे पेतानो पूर्व भव सांखणीनेते कन्या (अनंगसुंहरी) ने जाति स्मरण ज्ञान थयुं. अने ते अनंगसुंहरी कन्या सूरि प्रत्ये बाली, हे प्रलो ! जे आपे क्लुं ते यथार्थ छे. ते संघंधी कृद पण्य सहेल नथी. माटे कृपा. करी हवे भने दीक्षा आपी कुतार्थ करो, जेथी हुं अहारा कर्म वृक्षने निर्मूण कर. त्यारभाद तेना पिताना कडेवाथी सूरिये तेने हीक्षा आपी. पछी सोमयंद्र श्रेष्ठीचे आवक धर्म स्वीकार्यो. बाद सूरिये सर्व प्रतोना अतिचारनुं स्वरूप भतावयुं. त्यारभाद श्रेष्ठी शुद्ध मुखथी सहपदेश अहंषु करी शुद्धने वंडन करी पेताने घेर गयो.

सोभेष्ठीनाकथा.

( ३७५ )

अने विध प्रभाषे धर्म पालनमां हिवसो व्यतित करना लाग्ये।

अन्यदा सोभयं शेषीमे एवा संक्षेपथी हेशावकाशिक  
 व्रतनीविरा- व्रत लीषुं के, आजे दीवसे पौषधशाणा-  
 धना मांथी अहार नीकण्वुं नहीं. एम  
 निश्चय करी ते पौषध शाणामां ऐडा होतो  
 तेवामां त्यां आगल मार्गमां जतो तेना  
 भिन्न तेनी नजरे पडये। अने तेनी बाणुनी आतर तेनी उपर  
 तेषु एक कांकडे इंकये। परंतु ते कांकडे त्हेने नहीं वागतां  
 राजनो भर्कट ( मांडडा ) जतो होतो तेना भस्तक उपर पडये।  
 तेथी ते भर्कट अहु भीजवाईने पौषधशाणामां शेषीनी पासे  
 गये। अने तीव्र नणो वडे तेनुं शरीर चीरवा लाग्ये। शेषी  
 ताणीने खूबो पाडवा लाग्ये। ते सांबणी तेनी पाडाशमां  
 रहेला आवडो अहु लेगा थर्छ गया। तेमषे दंडाहिकना प्रहारैथी  
 मारीने त्हेने अहार काळ्यो। त्यारपछी महा कष वडे सामायिक  
 पाणीने ते शेषी पोताने वेद गये। घरना मनुष्योंमे इधिरथो  
 खरडाएलुं शेठनुं शरीर शाझ करी नांण्युं अने वैदोने योताव्या।  
 वजी तेच्चोना कळा प्रभाषे आआ शरीरे औषधिच्चोनो लेप  
 कुर्यो। परंतु तीव्र वेहनाने लीधे माडें नजर लराई गये, पछी  
 वैध लेंडोमे पछु आरामनी आशा छोडी दीधी। अने पाप  
 कर्मनी पर्यावाचना कर्या विना ते काण करी ज्यौतिषिक देव-  
 लोकमां उत्पन्न थये। त्यांथी नीकणी त्रीने जन्मे सिद्ध थशे।  
 माटे हे जन्म प्राणीच्चो ! निर्भाण एवां पछु लींतमां रहेलां  
 चित्रामणु जेम काढवना लेपथी महीन थाय छे तेम  
 विशुद्धक्रतो पछु अतिचारैथी मलीन थाय छे। वजी सर्व  
 शरीरमां व्यापी गयेलां विषने मंत्र बणथी मंत्रवाहीच्चो जेम

( ३७६ )

श्रीसुपार्थनाथचरित्र.

हंशमां लावीने भूड़े छे, तेम विस्तारपूर्वक प्रथम अहंषु करैला  
नियमोने के भव्यात्माए। संक्षेपमां लावे छे, तेमज्ज धम्छाने।  
निरोध करी दरेक क्षणे निरंतर सर्व प्रतोनो। संक्षेप करे छे, तेए।  
धन्यवाहने लायक थाय छे अने तेमनेज्ज पुष्यशाली तेमज्ज लघु  
कर्मी जाख्या।

**इतिश्री पञ्चमातिचारे सोमचन्द्रकथानकं समाप्तम् ॥**

तत्समाप्तौ श्रीमछद्मणगणिविरचितप्राकृतपद्यबन्धश्रीसुपार्थनाथजिन-  
चरित्रस्य श्रीसकलसूरिपुरन्दरायमाणपरमगुरुतपागच्छाधिराजशा-  
खविशारदजैनाचार्ययोगनिष्ठाध्यात्मज्ञानदिवाकरश्रीमद्भुद्धि-  
सागरसूरिशिष्यप्रसिद्धवक्तेति लब्धख्याति, व्याख्यान-  
कोविद जैनाचार्य श्रीमद् अनितसागरसूरिकृतगुर्जेर-  
भाषानुवादे प्रभुदेशनाप्रबन्धे सद्विष्टान्तातिचारव्या-  
ख्योपेतं देशावकाशिकनामद्वितीयशिक्षा-  
व्रतं समाप्तम् ॥



મલયકેતુરાજાનીકથા.

( ૩૭૭ )

## મલયકેતુરાજાની કથા.

---

**પૌષ્ઠ્રવત.**

દાનવીર્ય રાજા બોલ્યો, દ્યાનિધિ એવા હે જગતુપદ્ધો !  
 હવે પૌષ્ઠ્રવતનું સ્વરૂપ સાંભળવાની અમારી ઈચ્છા છે માટે  
 કૃપા કરી આપતે કહો. શ્રી સુપાર્વ્યપ્રભુ બોલ્યા, હે નરહેવ ! ભાવ્ય  
 પ્રાણીઓએ આહાર, દેહ સત્કાર, પ્રદ્યુમ્ય અને વેપાર એમ  
 ચાર પ્રકારનું પૌષ્ઠ્રવત દેશથી કિંવા સર્વ પ્રકારે પાળવું  
 જોઈએ. વળી પૌષ્ઠ્ર સહિત સર્જર્મનું જેએ દુદ ચિત્તે આરાધન  
 કરે છે તેએ મલયકેતુ રાજાની પેઠે દૂદોને પણ પૂજવા  
 લાયક થાય છે. જેમકે :—

**અર્થ ( વેચન )** ની જેમાં ગૌરવતા રહેલી છે, ઉત્તમ શખદ  
 અને અલંકારેથી વિભૂષિત એવા ઉત્તમ  
**મલયકેતુકથા.** કવિએ રચેલા કાબ્યની માઝેક ત્રણે લોકમાં  
 પ્રસિદ્ધ શ્રી બુધન નામે નગર છે. તેમાં  
 નીતિશાસ્કના મંદિરરૂપ અને દાચિદ્રિપી તાપથી તપી ગયેલા  
 પ્રાણીઓને મલયગિરિ સમાન શ્રી મલયકેતુ રાજા રાજ્ય કરે છે,  
 મલયમતિ નામે તેની સી છે. અને બુદ્ધિ બળમાં બૃહુસ્પતિ  
 સુમાન બુદ્ધિસાગર નામે તેનો એક મંત્રી છે. હવે મલયકેતુ  
 રાજા રાજ્ય કારખાર મંત્રીને સોંપી પોતે લિલાવિલાસ  
 સોગવે છે.

અન્યદી મલયકેતુ રાજા સભામાં એઠો હુતો. તેવામાં અફ-

( ૩૭૮ )

શ્રીસુપાર્થનાયમરિત.

સમાતુ આકાશમાં હુંહુલિ નાદ ઉછળવા  
 સુનિનુંઆગમન, લાગ્યો. તે સાંખળી રાજ વિસ્તિત થઈ ગયો,  
 અને ગગનાંગણું તરફ દાખિ કરે છે, તેટલામાં  
 ત્યાં આવતા દેવતાઓ તેના જોવામાં આવ્યા, વળી તેઓના મધ્ય  
 બાગમાં, કંતિમાં સુપર્ણું સમાન, રૂપ વૈષ્ણવમાં કામહેવ સમાન,  
 અને બહુ અક્ષિતલાવથી દેવ તથા ઐચ્યરેએ સ્તુતિ કરાતા, એવા  
 એક સુનિવર તેના જોવામાં આવ્યા કે, તરતજ રાજ સંભાંત થઈ  
 ઉલો થયો. અને હાથ જોડી સુનીદને પ્રાર્થનાપૂર્વક કહેવા લાગ્યો,  
 પ્રલો ! રહારી ઉપર કૃપા કરી આપ ક્ષણુમાત્ર અહીં પદ્ધારો.  
 સુનીદ રાજનું વચન સાંખળી તેમજ બહુ લાલ જાણી દેવ અને  
 વિધાધર સહિત ત્યાં ઉત્તર્ય. રાજએ પોતેજ સુનીદને ભદ્રાસન  
 આપ્યું. સુનીદ તેની ઉપર વિરાજમાન થયા. પછી પરિવાર  
 સહિત રાજએ વિધિપૂર્વક વંદન કર્યું.

ત્યારબાદ સુનિએ ધર્મલાલ આપી દેશનાનો પ્રારંભ કર્યો.  
 ક્ષાંતિ, માર્દવ, આર્જવ, સુક્રિતા, તપશ્ચિર્યા,  
 ધર્મહેશના. સંયમ, સત્ય, શૈચ, અપરિયહ અને પ્રદ્યા-  
 ચર્ય એમ દશ પ્રકારનો યતિધર્મ કલ્પો છે.  
 તેમાં, કારણું અગર નિષ્કારણુપણે કોધાયમાન થઈ હુર્વચન બોલતા  
 એવા ધાતક ઉપર પણું ઉપશાંત મનવાળા સુનિએ ક્ષાંતિ (ક્ષમા)  
 કર્યાં. આ લોકમાં માનતું વિધાત કરનાર જે સરળપણું તે માર્દવ  
 કહેવાય. વળી તે માર્દવ વિનયનું મૂળ કારણ છે તેથી સુનિએ  
 અવસ્થ તેનું સેવન કર્યું. ભાયા એટલે કુટિલ સ્વભાવ, તેને  
 ત્યાગ કરવો તે આર્જવ કહેવાય છે. વળી સરળ સ્વભાવી સુનીદ્રો  
 વિશુદ્ધ ધર્મ મેળવી શકે છે. સ્વજન, ધન, વિષયનાં ઉપકરણ અને  
 દેહાદિકને વિષે જે ત્યાગણુદ્ધિ તે અપ્રતિબંધન સ્વરૂપવાળી  
 સુક્રિતા જાણવી. બાદ્ય અને આક્ષ્યાંતર એમ તપ એ પ્રકારનું છે.

મલયકેતુરાજનીકથા.

( ૩૭૬ )

તેમાં પણું એક એકના છ છ લેહ છે, એમ બજે મળી ભાર પ્રકારનું તપ ગણ્યાય છે. જે મહે—અનશન, ઊણોદરિપણું, વૃત્તિઓનો સંક્ષેપ, રસનો ત્યાગ, કાય કલેશ, અને સંલીનતા એ છ પ્રકારનું ભાગ્ય તપ. તેમજ પ્રાયશ્ક્રિત, વિનય, વૈચાવૃત્તય, સ્વાધ્યાય, ધ્યાન અને કુચેલસર્ગ એ છ લેહ આખ્યાંતર તપના જાણુવા. તેમજ પાંચ આશ્રવોનો નિરોધ, પાંચ હંદ્રિયોનો નિયાઃ, ચાર કષાયોનો જ્ય, તથા મન, વચન, અને કાયાડ્યો વ્રણું હંડની વિરતિ, એમ સત્તર પ્રકારનો સંયમ જાણુવો. મન, વચન, અને કાયાવડે શુદ્ધ તેમજ વિસંવાદ રહિત જે વાણી તે ચાર પ્રકારનું સત્ય મુનિઓ બોલવું જોઈએ. વળી દ્રવ્ય અને ભાવ એમ એ પ્રકારનું શૈય જીનેંદ્ર ભગવાને કહ્યું છે. તેમાં ઉપકરણુાહિ દ્રવ્ય કહેવાય, તેની અંદર શુદ્ધિપણું અવસ્થય પાળવું. વળી કષાય દોષોથી રહિત એવું જે ચિત્ત તેને ભાવ શૈય કહ્યું છે. આ ભાવ શૈયને વીતરાગ ભગવાને સત્ય શૈય કહ્યું છે. કારણું કે, શારીરિક મળની શુદ્ધિ સુઝેથી થઈ શકે છે. પરંતુ અતિચિકણું કર્મ મળથી દેપાએલા ચિત્તની શુદ્ધિ બહુ અશક્ય છે. સત્ત અને અસત્ત વસ્તુઓમાં મૂળદી રાખવી તે પરિચિહ્ન કહેવાય. વળી તેમાં નિરપેક્ષ ઊદ્ધિકરવી તેને અકિંચનપણું કહ્યું છે. તેમજ ઊદારિક અને વૈકિય સ્વીઓનો મન, વચન, અને કાયાથી ત્રિવિધ જે ત્યાગ કરવો તે નવ પ્રકારનું અદ્ધાર્યાર્થત જીનેંદ્ર ભગવાને કહ્યું છે. એ પ્રમાણે વિશુદ્ધ વૃત્તિઓવડે વિધિપૂર્વક દર્શ પ્રકારનો યતિધર્મ પાળતો મુનિ પોતાના કર્મનો ક્ષય કરે છે.

મલયકેતુ રાજ બોલ્યો, હે મુનીદ ! મુનિ ધર્મ પાળવામાં હું

અશક્ત છું, માટે હે ભગવન ! કુપા કરી

મલયકેતુરાજ. ગૃહીધર્મનો મહુને ઉપરેશ આપો. ત્યારબાદ

મુનિએ સમ્યક્તવાહિ ભાર પ્રકારનો શ્રાવક

( ३८० )

श्रीसुपार्थनाथवित्र.

धर्म कहो. मंत्री सहित राजन्ये पण् विधि सहित गृहीधर्मनो स्वीकार कर्यो. त्यारभाद सुनीद्र पण् देव तथा विद्याधरोनी सभा साचे राजनी अनुज्ञा लाई प्रस्तुत कार्य माटे विद्याय थया. त्यार-पछी राज पोताना धर्मभांज रक्त थઈ काण निर्गमन करे छे. कहाचित् रात्रीचे विधिपूर्वक पौष्टि करे छे, तेम राज तथा मंत्री अन्ने साचे राजभवनना एकांत भागमां धर्मकिया आराधवामां प्राये काळ निर्गमन करे छे. एक हिवस राज अने मंत्री अन्ने धर्मविचारणा करता हुता तेवामां अर्ध रात्री चाली गँध. पण् राजने निद्रा आवी नहीं तेथी तेणु मंत्रीने कल्पुं के, कैतुक रसथी भरपुर कैड नवीन कथा वृत्तांत तुं झुने संलग्नाव !

मंत्री योव्यो, हे राजन ! सावधान थई श्रवणु करो. आ लरतसेत्रमां सेंकडे विष्युधो ( पंडित-

**अद्वितुतकथा.** देव ) थी रमाणीय ईद्रनी नगरी समान धरातिलक नामे नगरी छे. तेमां भुवनपात राज शान्त्य करे छे. अने तेनी पासे अमर शुद्ध नामे एक विद्वान् रहे छे. एक हिवस राज अमर शुद्ध साचे बहार ज्तो हुतो. तेवामां एक घरमां भाई ऐन अन्ने एकांतमां ऐसी कांधिक विचार करतां हुतां, ते तेमना जेवामां आव्युं. एटले राजन्ये अमर शुद्धने कल्पुं के, आ अन्नेतुं एकांतमां ऐसवुं हीक गण्याय नहीं एम कही राज आगण चाल्यो. तेटलामां त्यां भजन-रनी अंदर एक धीवर (मत्त्यी) वेचवा माटे एक मत्स (माछलुं) काई उलो हुतो, वजी ते मत्सने हसतो जेई राज विचारमां पडयो के, आ तिर्यग् जाति छे अने मरेलो छे. हुतां पण् हुसे छे ए अहादुं आश्चर्य छे. एम जाणी राजन्ये अमर शुद्धने पूछयुं के, आ मत्सने हसवानुं शुं कारणु छे ? ते तुं पोतानी खुद्दि वडे तपास करी सत्य हुकिकत झुने जणाव. नहीं तो तहने हुं देश-

મહાવૈતુનીકથા.

( ૩૮૧ )

પાર કરીશ. વિક્રાન્ત એલયો, હે નરેશ્વર ! એક માસનો મહને  
અવધિ આપો. રાજાએ તે પ્રમાણે કખુલ કર્યું.

**ત્યારથાદ અમરગુરુ પોતાને ઘેર ગયો. પરંતુ ચિંતાને**  
**અમરગુરુની રાત્રીએ નિદ્રા પણ કરતો નથી, તેમજ**  
**તપાસ પ્રત્યુત્તર કેવી રીતે જાણુવો, એમ વિચાર**  
**કરતો એક હિસ્સ તે રાત્રીએ સુધ ગયો. તે**  
**સમયે ઉત્તર દિશામાં ગમન કરવાથી આ બાબતનું તહેને જ્ઞાન**  
**થશે એવો શાષ્ટ તેના સાંભળવામાં આવ્યો. એટલે તરતજ તે**  
**ઉઠીને ઉત્તર દિશામાં ચાલતો થયો. આગળ ચાલતાં માર્ગમાં**  
**એક પ્રાણી મહાર્ણે. અમર ગુરુએ પૂછ્યું, હે પ્રાણી ! તમહારે**  
**કયાં જવું છે ? પ્રાણી એલયો, હું અસુક ગામ જરૂર છું અને**  
**રહીશ પણ તે ગામનોજ છું. પછી પ્રાણીએ પુછ્યું, હે પંડિતરાજ !**  
**તમહારે કયાં જવું છે ? અમર ગુરુ એલયો, તમહારા ગામથી પણ**  
**મહારે તો આગળ જવાતું છે. પ્રાણી એલયો, ત્યારે તો બહુ**  
**સાર્દ થયું. આપણું બજે સાથે સાથે ચાલ્યા જઈશું, એમ વાતા-**  
**લાપ કરતા તેઓ ચાલ્યા જતા હતા, તેવામાં એક નહી આવી**  
**એટલે અમરગુરુએ જોડા હાથમાં આલેલા હતા, તે પાણી આવ્યું**  
**એટલે પગમાં પહેરી લીધા. અને પ્રાણીએ પહેરેલા જોડા હાથમાં**  
**લઈ લીધા. હવે અમરગુરુની વિપરીત કિયા જોઈ પ્રાણીએ વિચારમાં**  
**પડ્યો કે, દરેક લોકો પગમાંથી જોડા કાઢી નાંખીને પાણીમાં ચાલે**  
**છે, અને એણું આમ વિપરીત કેમ કર્યું ? અથવા આ**  
**બાબતની ચિંતા મહારે શા માટે કરવી જોઈએ ? એમ**  
**પોતાના મન સાથે સમાધાન કરી વિક્રાન્ત સાથે આગળ તે**  
**ચાલતો હતો, તેટલામાં બહુ તાપને લીધે બજે જણું બહુ છાયા**  
**વાળા એક વૃક્ષની નીચે ગયા. પછી અમરગુરુ છત્રી ઉધાડીને**

૩૮૨ )

શ્રીસુપાર્બતનાથચરિત્ર.

છાયામાં બેઠો અને પ્રાણીણુ તો છત્રીને દૂર મૂકી તેની નજીકમાં બેઠો. છગ્ગી ઉધાડીને બેઠેલા અમરશુક્રને જોઈ પ્રાણીણુ વિચાર્યું કે, એનું દરેક આચરણ વિપરીત હેખાય છે. છાયામાં છત્રી ઉધાડીને બેઠો અને માર્ગમાં અગલમાં ધરી ચાલતો હતો, અથવા આ બહુ વિદ્ધાન છે માટે કંધક વિશેષ સમજીને આ પ્રમાણે કરતો હોયો? ત્યારખાદ ત્યાંથી આગળ ચાલતાં પ્રાણીણુ બોલ્યો, આ ક્ષેત્રમાં દાખા બહુ પાક્યા છે, તેથી એના ધર્ણીને ધાન્યનો લાભ બહુ સારો થશે, અમરશુક્ર બોલ્યો, પ્રથમ ખાદેલું નહીં હોય તો સારું. તે સાંભળી પ્રાણીણુ જાણ્યું કે, આ વચન પણ બહુજ વિપરીત છે. વળી આગળ ઉપર એક દેવાલય જોઈ પ્રાણીણુ બોલ્યો, આ દેવલબન બહુ સુંદર છે. અમરશુક્ર બોલ્યો, જો એની અંદર અનેક લોકો વાસ ન કરતા હોય તો સુંદર ગણાય. તે સાંભળી પ્રાણીણુ રોષાતુર થઈ ગયો અને મૈાન રહી પોતાના ગામમાં ગયો તેમજ અમરશુક્રને પણ પોતાને ઘેર પરોણા તરીકે લઈ ગયો. હવે તેના ત્યાં બાલપદિતા નામે તેની એક હીકરી હતી. તહેને પ્રાણીણુ કહ્યું કે, આ વિદ્ધાનની સારી રીતે તહારે સેવા કરવી. પુત્રીએ પણ બહુ અજીત સહિત લોજનાફિક કરાયું. લોજન કર્યા બાદ સુખવાસ લઈ વિદ્ધાન સુધ ગયો. પ્રાણીણુ પોતાની પુત્રીને પૂછ્યું, આ વિદ્ધાને નહીં ઉત્તરતાં જોડા પહેર્યા તેનું શું કારણ? જગમાં ચાલતાં કોઈ પણ તેમ કરતું નથી, પુત્રી બોલી. હે તાત! તમે સમજતા નથી. જગની અંદર કાંટા-કાંકરા પડેલા હોય છે તેના ભયથી એણે જોડા પહેર્યા. ઇરી તાત બોલ્યો, વૃક્ષની છાયામાં બેસીને તેણે છત્રી કેમ માથે ધરી? પુત્રી બોલી, વૃક્ષ ઉપર પક્ષિઓ એડેલાં હોય છે માટે તેઓનો અમંગલિક વિધાદિક મળ પોતાની ઉપર ન પડે એમ જાણી તેણે છત્રી ધરી. ત્યાર બાદ તેણે દાખુાની વાત પૂછી ત્યારે પુત્રી બોલી, તે ક્ષેત્રના ધર્ણી-

મલથકેતુનીકથા.

( ૩૮૩ )

એ પ્રથમ ઉધારે હાણું ખાંડા હોય તો તેના દેવામાં સર્વ ધાર્ય  
ચાલ્યું જાય તો તે પાક તહેના ઉપયોગમાં કૃયાંથી આવે ? પછી  
તેણું દેવાલયની વાત પૂછી, ત્યારે તે બોલી, જે તેમાં ચાર કે જાર  
ખુર્દથો રહેતા હોય તો તે નકારું છે. એ પ્રમાણે આપ હીકરીને  
સંવાદ સાંભળી અમરશુરને વિચાર કર્યો કે, મહારાજાનું કાર્ય જરૂર  
આ બાલપંડિતા કરી શકશે. એમાં કંઈ પણ સંદેહ નથી. હવે તે  
બાલપંડિતા પણ અમરશુરની ખુદ્ધિથી બહુ ખુશી થઈ અને બોલી  
કે, હે તાત ! આ વિદ્ધાન સાથે મુને પરણુંબો. પ્રાણણું બોલ્યો,  
મુત્રી ! જે એ પ્રમાણે તહારે મનોરથ સિદ્ધ થાય તો બહુ સારાં.  
કારણું કે, તે વિદ્ધાન આપણા કરતાં ઉત્તમ કુળવાન છે. માટે  
તહારી સાથે લગ્ન કરે કે ન કરે તે નક્કી કહી શકાય નહીં.

ત્યારખાં અમરશુર જયારે ગામ જવા નીકળ્યો. ત્યારે, બાલ-  
પંડિતાએ આગળ જઈને તેના માર્ગમાં,  
**બાલપંડિતાનું** ઉચેરા ઉપર પોતાની સેનાની સુદ્રિકા તેની  
લગ્ન. પરિક્ષા જેવા માટે મૂકી. અમરશુરને તે  
સુદ્રિકા જેઠ જગથી શુદ્ધ કરીને લઈ લીધી.  
તે જેઠ બાલપંડિતા બોલી, હે મહાશય ! આ અશુચિમાંથી તહુમે  
વીંઠી કેમ લીધી ? વિદ્ધાન બોલ્યો, અશુચિમાંથી પણ સેનું લેવાનો  
કંઈ પણ હોથ નથી. વળી એ પ્રમાણે કહ્યું છે કે—

બાલાદપિ હિતં ગ્રાહ્ય—મમેધ્યાદપિ કાઞ્ચનમ् ।

નીચાદપ્યુત્તમાં વિદ્યાં, સ્વીરત્તં દુષ્કુલાદપિ ॥

**અર્થ—**“ બાલક પાસેથી પણ હિતવચન અહુણું કરવું,  
અશુચિમાંથી પણ સેનું લેવું, તેમજ નીચ પાસેથી પણ ઉત્તમ  
વિદ્યા અને નીચ કુળની પણ કન્યા અહુણું કરવી એમાં શાસ્ત્રથી  
બાધ નથી. તે સાંભળી ભાગા બોલી, જે આ પ્રમાણે આપ સત્ય

( ३८४ )

श्रीसुपार्थनाथयरित्र.

मानता हो तो पाछा वणो अने हुं हीनकुणमां जनमेली आहार-  
थुनी पुनी छुं माटे झुने आप परणो. अमरशुद्देश्ये पाछा वणी ते  
प्रभाणे कर्युं पधी केटलाक दिवस त्यां रही तेणु भालपंडिताने  
कह्युं के, तहारा पिताने कहे के आपणुने अहींथी जलही विहाय  
करे. ते ओली, हे सुलग ! उतावण करवानुं शुं कारण्यु छे ? पधी  
अमरशुद्देश्ये तेनी आगण राजनो. प्रक्ष कही संलग्नावयो. भाल-  
पंडिता ओली, आ प्रक्षनो उत्तर झुरारे ज करवानो छे. कारण्यु के,  
ते भच्छना हसवानुं कारण्यु हुं समल गई छुं. ते सांलगी अमर-  
शुद्द निश्चिंत थयो अने आहारथुनी आज्ञा लाई पोतानी स्त्री  
सहित निर्बाचिते पोताने घेर गयो.

आह मासनो अवधि पूर्ण थवाथी राजन्ये अमरशुद्दने  
ओलाववा माटे पोतानो अनुयर मोक्षयो.

**प्रक्षनो उत्तर.** अमरशुद्दनी स्त्रीये तेने जवाब आप्यो के,  
मार्गना श्रमने लीघे हजु ते सुई रद्धा छे.

परंतु राजना प्रक्षनो उत्तर त्यां आवीने हुं आपीश. अनुयर  
ओलयो, हुं त्यां जर्द राजने आ वात जणुवीने इरीथी तेमनी  
रजा लाई अहीं पाछा आवुं छुं. एम कही ते सुलग राजनी  
पासे गयो, अने सर्वं हुडीकृत जणुवी. तेथी राजने बहु आ-  
श्र्य थयुं. अहो स्त्रीयोनी पणु आवी युद्धि होय छे. जेथी आ  
अशक्य प्रक्षनो जवाब आपशे. माटे अने जेवी तो खरी ?  
राजन्ये हुक्म कर्यो. जलही ते स्त्रीने अहीं ओलावो. सेवक पाण  
तरत ज ते भालपंडिताने ओलावी राजनी पासे लावयो. राजन्ये  
भच्छना हसवानुं कारण्यु पूछयुं. भालपंडिता ओली, हे राजन् ?  
कृपा करी आप झुने एकांत आपो जेथी आपना प्रक्षनो उत्तर हुं  
आपुं. राजन्ये तरत ज श्रकुटीनो ईसारे. करी लेडेने विहाय कर्या.  
एरवे ते ओली, हे नरेश्वर ? नयारे तमे हस्तीनी रवारी करी बहार

મલયડેતુની કથા.

( ૩૮૫ )

જતા! હતા તેવામાં એક ધરની અટારીમાં એકાંતે બેઠેલાં ભાગ  
ઝેણ તમહારા જેવામાં આવ્યાં, તે ઉપરથી તમ્હને શાંકા થઈ કે  
આ સહેદર થઈ એકાંતમાં યોસી વિચાર કરે છે તે જાચિત ગણ્ય  
નહીં. આ પ્રમાણે તમહારે અલિપાય બાણી, ડોઈક વ્યાંતર હેવે  
મરેલા મચ્છમાં પ્રવેશ કરી હાસ્ય કર્યું કે, આ રાજા શક્તિ  
થઈ પરછિદ્ર જુઓ છે પણ પોતાનાં છિદ્રો બીલકુલ તપાસતો  
નથી. જેમકે—

સર્વ: પરસ્ય પશ્યતિ, વાલાગ્રાદપિ તનૂનિ ચિદ્રદ્રાણિ ।

આત્મકૃતાનિ ન પશ્યતિ, હિમગિરિશિખરપ્રમાણાનિ ॥

અર્થ—“દરેક ભાણુસ વાળના અભ્યથી પણ બહુ સૂક્મ એવાં  
અન્યનાં છિદ્ર જુઓ છે, પરંતુ પોતે કરેલાં હિમગિરિના શિખર  
સમાન મ્હેટાં છિદ્રને જોતો નથી.” તે સાંભળી રાજા બોલ્યો,  
મહારામાં કર્યું છિદ્ર છે તે બતાવ ! પંડિતા બોલી, પ્રસંગ થઈ  
નહુને અભયદાન આપો તો હું કહું. રાજાએ અભય વચન આપ્યું.  
પછી બાલપંડિતા સ્પષ્ટ રીતે બોલી, હે હેવ ! આપના અંતઃપુરમાં  
સર્વ રાણીઓએ રીલથી બ્રષ છે. કારણું કે, ધણ્યા યુવાન પુરુષો  
દાઢી સુદ્ધ રહિત થઈ કૃત્રિમ દાસીનેં વેષ પહેરી ત્યાં આવે છે,  
અને તેઓ એકેક રાણીની પાસે હુર્વિલાસ કરે છે. વળી હે પૃથ્વી-  
નાથ ! જો મહારા વચન ઉપર આપને વિશ્વાસ ન હોય તો, એકાં-  
તમાં મહોટો આડો ઐહાવો અને સર્વ રાણીઓને તેમજ દાસી-  
ઓને કહો કે, આજે રાત્રીએ સ્વભમાં દાસીઓ સહિત સર્વ  
રાણીઓને આડો કુદાલી મહેં જોયેલી છે. માટે એ વાત નહુને  
સત્ય કરી બતાવો. રાજાએ પણ તે પ્રમાણે આડો ઐહાલીને  
રાણીઓને તે પ્રમાણે કહ્યું, એટલે સ્ત્રી વેષધારી પુરુષો એકદમ  
તે આધ કુદી પડ્યા, તે જોઈ બાલપંડિતા બોલી, હેવ ! આ સર્વ

( ૩૮૬ )

શ્રીસુપાર્થનાથચરિત્ર.

પુરુષો છે. કારણું કે, આ કીએઓ પોતાના સ્તન અને નિતાંખના ભારથી કુદી શકી નહીં. તેથી રીતે વૈષધારી પુરુષોની પરીક્ષા કરી રાજાએ જલ્દી તેઓને પડકી કણને કરી લીધા. પછી રાજ બોલ્યો, હે બાળપંડિતે ! આ જાન તુને શાથી પ્રામ થયું છે ? તે બોલી, હે રાજન ! ભાઈ માતા મરીને વ્યંતરી થયેલી છે અને તેનું સ્મરણ કરવાથી તે અહને સૂક્ષ્મ વૃત્તાંત પણ કહે છે. રાજ તેની જુદ્ધ નોંધ બહુ ઝુશી થયો. અને વસ્ત્રાદિક્રિયા સતકાર કરી તુને વિદ્યાય કરી. પછી રાજ વિચાર કરવા લાગ્યો. અહો ! ગુહારી કીએઓ પણ આવું અકાર્ય કરે છે. એમ ભાવના ભાવતાં તુને વૈરાગ્ય ભાવ પ્રગટ થયો. તેથી રાજએ અમર ગુરુને મંત્રી પણ સ્વાપન કર્યો અને પોતાના પુત્રનો રાજયાભિષેક કરી તેણે દીક્ષા લીધી, પછી વિધિ પ્રમાણે શુદ્ધ ચારિત્ર પાળી તે મોક્ષ ગયો.

**ત્યારબાદ એક દિવસ મલયકેતુ રાજ અને અમરશુર મંત્રી**  
**પૈષધશાળામાં પૈષધ લઈ એઠા હૃતા.**  
**દેવકૃતઉપસર્ગ — અમરશુર સ્વાધ્યાય કરતો હતો અને**  
**રાજ પોતે શ્રવણ કરતો હતો. તેવામાં**  
**આકાશ માર્ગ દેવનું એક જોડલું જતું હતું તેઓના જેવામાં**  
**તેઓ આવ્યા એટલે તેઓમાંથી સભ્યદુદ્ધિ એક દેવ ધીન**  
**દેવને કહેવા લાગ્યો કે, પૈષધમાં એઠેલા આ રાજને ચલાયમાન**  
**કરવા ઈદ પણ સમર્થ નથી. તે સાંભળી નહીં સહુન થવાથી**  
**દૃષ્ટ થઈ તે દેવ રાજ પાસે ગયો. અને કહેવા લાગ્યો કે, હે નરા-**  
**ધીશ ! તું બહુ ધર્મીષ છે તેથી હું તહારી ઉપર તુષ થયો. છું,**  
**માટે કંઈક વરદાન માગ. જેથી તહાં મનોવાચિત હું પૂર્ણ**  
**કરું. રાજ બોલ્યો, હે સુરેંદ્ર ? ગુહારે કોઈ પણ વસ્તુનું પ્રયોજન**  
**નથી. ત્યારબાદ તે હેવે પ્રભાતકાળ વિકુર્વિને કહ્યું કે, હે નરેંદ્ર !**  
**હેવે પ્રભાત સમય થયો. માટે પૈષધ પાણો. પછી હું તહેને**

મલયડેતુની કથા.

( ૩૮૭ )

શાખ્યત જુન પ્રતિમા વાંદવા માટે મેરુશિખર ઉપર લઈ જાઉં. તે સાંભળીને રાજાએ વિચાર કર્યો કે, સ્વાધ્યાય કરવાના પ્રમાણુથી હજુ અર્ધ રાત્રિ અઈ છે, અને આ સર્વ દેવ માયા છે એમ જાણી રાજાએ પૌષ્ઠ પાજયો. નહીં અને ઉત્તર આખ્યા વિના પોતાનો સ્વાધ્યાય કરવા લાગ્યો. તેથી તે દેવ બહુ કુભિત થયો. અને અનેક પ્રકારની તેને દારણુ વેહનાએ કરવા લાગ્યો. જેથી રાજાનાં નેત્ર, કાન, સુખ, વિગેર અંગો બહુ પીડાવા લાગ્યાં. તો પણ રાજ સમસ્ત વેહનાએ સહન કરીને ભાવના ભાવવા લાગ્યો કે, વે જીવ ! સ્વાધિન દશામાં ક્ષણુ માત્ર વેહનાએ સહન કર. કારણુ કે, નરકાવાસમાં પરાધિનપણે પણ્યોપમ તથા સાગરોપમ સુધી તેવાં અનેક દુઃખોએ તહેં સહન કર્યો છે. માટે હાલમાં દેવતાએ ર્યેલી વેહનાએથી પણ તું ઉદ્દિગ્ન થપુશ નહીં. તેમજ પરમ ઉપકારી એવા આ દેવ ઉપર દ્રેષ પણ કરીશ નહીં. કારણું, ઘણ્યા કાલે વેહવા લાયક એવાં કર્મને હાલમાં આ દેવ તીવ્ય વેહનાએ વડે ક્ષણુ કરાવે છે. માટે હે જીવ ! તું સિદ્ધ પરમાત્માની સાક્ષીએ સર્વ હુશ્વરિતલું પર્યાલોચન કર. અને સર્વ પ્રાણીએની ક્ષમા માગ. એ પ્રમાણે રાજ ચિંતવતો હતો, તેટાં લાભાં તે દેવે પોતાના જ્ઞાનથી જણ્યું કે, આ રાજ પૌષ્ઠમાંથી કિંચિતું માત્ર પણ ચલિત થયો. નથી, એમ તેની દ્વારા શ્રદ્ધા જોઈ સર્વ વેહનાએનો સંહાર કરી દેવ પોતે ક્ષમા માગવા લાગ્યો કે, હે મહાશય ! હાલમાં અજ્ઞાન, પ્રમાદ, અને દ્રેષને લીધે નિષ્કારણ વૈર બુદ્ધિથી હેં તહેને બહુ વેહનાએ કરી તહેની હું ક્ષમા માગ્યું છું. રાજ એવાયો, હે સુરેશ ? એમાં તહીદો કંઈ હોય નથી. માત્ર મહારા અશુલ કર્મના ઉદ્દ્યને લીધે મહારે આ વેહનાએ વેહવી પડી. વળી પોતાના શુદ્ધ પરિણ્યામના પ્રભાવને લીધે તેમજ તહીની સહાયતાને લીધે અમને કંઈ પણ કઠીન

( ३८८ )

ओमपार्वतीनाथयरित्र.

लाग्युं नथी. वणी आ प्रभाणे करवाथी : अहने खडु झायदो थयो। छे. नहीं तो खडु भवेमां पछु आ कम नो संक्षेप हुं डेवी राते करी शक्त. ए प्रभाणे बन्नेनो संवाद चालतो होतो तेवामां सूर्योहय थयो। एटले देव ऐव्यो, टेटलाक जानी पुढेहोतुं उडेहुं सत्य छे डे, हजारे। आपत्तिओ। इपी कसोटी उपर कषा-ओवा सोनानी माझक पुढेखनो महिमा समय उपर प्रगट थाय छे। त्यारभाद मंत्री सहित राज्ञे विधिपूर्वक पौष्टि पाणी देवने कल्युं डे, हालमां हुं सम्यक दर्शननो स्वीकार कर. देव पछु ते प्रभाणे स्वीकार करी खडु संतुष्ट थयो। अने ऐव्यो, हे नरेंद्र ! अचिंत्य प्रलाववाणां आ ऐ मणि कुंडलो। अहुणु कर. राज्ञे ऐव्यो, एलुं अहारे शुं प्रयोजन छे ? अहारे त्यां एवां मणि कुंडलो। खडु पञ्चां छे। देव ऐव्यो, हे नरेंद्र ! मा कुंडलोना प्रलावभी क्षुद्र एवा देव के दानवो पराज्य करी शक्तानथी। तो नवीन वैरनी ईच्छा करता मनुष्योनी तो वात ज शी ? विगेरे कही मणिकुंडल आपीने देव पोताना स्थानमां गयो।

**मलयकेतु राज्ञ पछु आवश्यक विधिपूर्वक लुनेंद्रनी पूजा**  
**उरी हिंय मणिकुंडल धारणु करी राज्ञे भोक्षणे।**  
**राज्ञे भोक्षणे।** सभामां ऐडो। ते सभये मंत्री, सामंत विगेरे पछु हाजर हुता। पठी सभाना देवेको विसमय थइ ऐव्या, अहो ! मलयकेतु नरेंद्रनां श्रणिकुंडल मेड-पर्वतना शिखर उपर उहित थयेला सूर्य चंद्रनी शोभाने धारणु करे छे। एम सम्यज्ञनो स्तुति करता हुता तेटलामां डोई एक मरणीयो सुखट त्यां आ०यो। अने लाग शोधी एकदम राज्ञ उपर तक्षवारनो। तेणु धा कर्यो। पछु मणि कुंडलना प्रलावथी राज्ञे शक्त अडक्युं नहीं अने तरतज पासे उलेला सुखोन्ने धातडी पुढेखने पकडी लीयो। परंतु राज्ञे त्हेने अभय वयन आपी।

વैश्रमणपुत्रोनी कथा.

( ३८६ )

પૂછયું કે, અહને ભારતા માટે તહેને કોણે મોકદ્યો હતો ? પછી તે સુખએ પણ સત્ય વાત કહી હીંદી. તેથી રાજાએ તહેને સુકૃત કર્યો. ત્યારબાદ રાજાએ મંત્રીને અણું કે, હે મંત્રી ! દેવની સહૃદાયથી આજે અહને જીવિતદાન મળ્યું, નહીં તો જરૂર ધર્મ કર્યો સિંહાય અહારં ભરણું થાત. વળી હે મંત્રી ! હું અરિસિંહકુમારને રાજય આગી પૂર્વજોના માર્ગને અનુસરીશ. મંત્રી ઓલ્યો, આપનું કહેવું સત્ય છે. અને આ સંસારમાં ધર્મ સાધન એજ સુખ્ય કર્તાંય છે. ત્યારબાદ રાજાએ તે પ્રમાણે પુત્રને રાજ્યગાડી સૌંપી, અને મંત્રી સહિત પોતે સફયુરની પાસે દીક્ષા અહણ્ય કરી, અનુકૂળે બજે પ્રકારની શિક્ષા લઈ, સાધુના સદાચારમાં સાવધાન થઈ, એકાદશ અંગનો અભ્યાસ કરી, તેજ અવમાં ચિદ્ધિ પદ પામ્યા. માટે હે ભણ્ય પ્રાણીઓ ! એ પ્રમાણે જીનેં દ્વારા મતના બાણુકાર અન્યજનોએ પણ પૈષધવત અહણ્ય કરવું, અને પ્રાણું તે પણ દેવતાઓના ઉપસર્ગથી ક્ષીબસ પામવો નહીં. વળી જે ધર્મરૂપી શરીરની પુષ્ટિ કરે છે, તેને બાળકને શાંતિદાયક એવા દુધની માઝુક આત્માનો હિતકારક જાણુંબો. તેમજ પવિત્ર તિથિ-એવામાં ભવ લીરું એવા લભ્ય પુરુષોએ વિધિપૂર્વક પૈષધવત અવસ્થય અહણ્ય કરવું. જેથી અહણ્ય કરેલા પૈષધવઠે શ્રાવક પણ મુનિ સમાન ગ્રભાવિક થાય છે.

ઇતિ પૌષધવતે મલયકેતુકથાનકં સમાપ્તમ् ॥

—૯૮(૧૫)૯૫—

વैશ્રમणપુત્રોની કથા.

પૈષધનાપાંયઅતિચાર.

દાનવીર્ય રાજ ઓલ્યો, હે ભગવન ! આપ બહુ હ્યાલુ એ,

( ३६० )

ओमपार्थनाभयरित्र.

પોતે તરેં છો. અને અન્ય લુચોને તારેં છો, માટે હવે કૃપા કરી પૈખધ સંબંધી અતિચારનું સ્વરૂપ અમને સમજાવો. શ્રી સુપાર્થ પ્રભુ જોલ્યા, હે રાજુન! પૈખધમાં રહેલા જે પુરુષો અપ્રતિ દેખિત, ફુષ્પતિ દેખિત, અપ્રમાર્ગીત અને ફુષ્પમાર્ગીત એવી શાખાનું સેવન કરે છે તેમજ સાખ્યકું પ્રકારે ચોંધો લઈ તેનું પાલન કરતા નથી તેઓ બહુ હું પોના લોકતા થાય છે. અહીં દરેક અતિચારોમાં અનુકૂળે વૈશ્રમણુ શેડના પુત્રોનાં ફૂલાંત ઘટે છે.

આ ભરતક્ષેત્રમાં દક્ષ પુરુષોથી ભરપુર, પંચપુર નામે સુપ્રસિદ્ધ નગર છે. તેમાં અમરસેન નામે રાજ

**વૈશ્રમણપુત્ર** રાજન્ય કરે છે. વળી વૈશ્રમણુ નામે તેમાં નગર શેઠ રહે છે. સૈભાગ્ય શ્રી નામે તેની ભાર્યા છે. તેમજ લહર, શલભ, ફર્લબ,

મહન અને મેધ નામે તેમને પાંચ પુત્રો હતા. તેઓ સર્વે કળાઓમાં નિપુણ અને કુલીન કીએ સાથે પરષ્યા હતા. વળી વૈશ્રમણુ શેઠ ધન સંપત્તિ મેળવવામાં ધણોજ મૂર્હીત હતો. તેમજ અતિ ધોર કૃષિ કર્મ અને ઉદ્ઘાનાદિક દરેક સાવધ કાર્યોના આરંભમાં અગ્રણી હતો.

એક દિવસ વૈશ્રમણુ શેઠ દાહનવરની માંદળીમાં આવી પડ્યા.

**વૈશ્રમણુની** નથી ચોતે ગલરાઈ ગયો અને પોતાના પુત્રોને માંદળી. કહું કે, સહસ્રાંત્રવણુ ઉદ્ઘાનમાં મહુને લઈ જાએ.

ત્યાં કેળોના વનની અંદર લવલીલતા અને દ્રાક્ષા મંડપમાં શાખ્યા રચી મહુને સુવાડો જેથી શાંતિ થાય. પુત્રો જોલ્યા, હે પિતાજ! આપને આ ધીમારીમાં ત્યાં સુધ રહેવું ઉચિત નથી. કારણું બહુ ઠેડો પવન લાગવાથી સંનિપાત થઈ લાય.

વैश्रभषु पुत्रोनीकथा.

( ૩૬૧ )

તો પછી શરીરને હાની પહોંચે. માટે અમારે વિચાર ત્યાં જવાનો નથી. વैશ્રભષુ યોદ્યો, ભાઈઓ ! જો તમ્હારું ધાર્યું જ તમ્હારે કરવું હોય તો અહારું વચન માનશો નહીં. એ પ્રમાણે પોતાના પિતાનો બહુ આશ્રદ્ધ જાહી તેઓ ઉધાનમાં તેને લઈ ગયા.

**વैશ્રભષુશ્રેષ્ઠી કદલીવનમાં સુઈ રહીને વિચાર કરવા લાગ્યો.**  
**હા ! આ બગીચાનાં વૃક્ષા તેમજ વિનય-**  
**મરણુકાલ.** વંત આ પુત્રો જન્મથી આરંભીને ઝેં  
 પ્રેમપૂર્વક ઉચ્છેરીને અહોટા કર્યા. પરંતુ  
 હાલમાં એડ સાથે તેઓનો મહારે વિશેષ થશે. એમ આર્તિ-  
 ધ્યાનમાં ગુંઘવાયેલા પિતાને જોઈ પુત્રોએ સ્નેહપૂર્વક કલ્યાંકે,  
 હેતાત ! ધર્મ નિમિત્તે કંઈ પણ દાન પુષ્ટય કરે. વैશ્રભષુ યોદ્યો,  
 ભાઈઓ ! હું બધું સમજું છું પરંતુ અત્યારે ખરચ કરવાનું કંઈ  
 પણ પ્રયોજન નથી. તેમજ અહોરી પાછળ પણ તમ્હારે ધર્મ  
 નિમિત્તે કાંઈ પણ વ્યય કરવો નહીં. એમ શિખામણ આપતો  
 શ્રેષ્ઠી મરીને તેજ ઉધાનમાં વાનરપણે ઉત્પજ થયો. પુત્રોએ પણ  
 તેના શરીરનો દાહંકિયા કરી સમય ભાઈઓએ એકત્ર થઈ તે  
 શ્રેષ્ઠીનો સર્વ વ્યવહાર કર્યો.

**ત્યારખાદ તેઓના ઉધાનમાં લક્ષ્મીના સ્થાનભૂત એવા શ્રી**  
**બુવનલાલાનું નામે કેવલી ભગવાન પદ્ધાર્યો.**  
**કેવલીભગવાનું** તેઓ હેવ, મનુષ્ય અને અસુરોની  
 ચીકાર ભરાયેલી સભામાં ધર્મ વ્યાખ્યાન  
 આપતા હતા. તે પ્રસંગે આશ્રવૃક્ષ ઉપર બેઠેલા વાનરરૂપ વैશ્ર-  
 ભષુના જીવે કેવલી ભગવાનને જોમા. અને તે પણ એકાશ ચિત્ત-  
 બડે કેવલી ભગવાનની દેશના શ્રવણુ કરવા લાગ્યો. કેવલી ભગવાને  
 સમયોચિત દેશનાનો પ્રારંભ કર્યો. હે અખ્ય પ્રાણીઓ ! ક્ષમ્ય

( ३५२ )

श्रीसुपार्खनाथवर्दित

भावमां दृष्ट अने नष्ट एवा गृह, धन, पुत्र अने स्त्री विग्रेरे  
 पदार्थीमांथी मूर्छनो त्याग करे। कारण संसारी प्राणीओने भेडारा  
 पाप करेनो हेतु मूर्छाज गण्याय छे. वणी मूर्छी वश थयेता  
 चित्तने लीधे आर्तध्यान करतो। प्राणी जे भरण्य पामे तो ते  
 तिर्थग् येनिमां उत्पन्न शाय छे, जेमडे अहों आ उद्धानमां  
 वैश्रमण्य शेठनो छुप वानर पछे उत्पन्न थयो छे. ए प्रमाणे ते  
 वानरने पोतानुं नाम सांखणवाथी जाति स्मरण ज्ञान थयुं, तेथा  
 ते नीचे उतरी केवली भगवान पासे गयो। पछी नमस्कार करी  
 त्यां ऐठो। ते वानरनी किया जेहु सर्व सक्षा ज्ञनो। विस्मित थहु  
 योत्या, भगवन् ! आ केणु छे ? जानी योत्या, ने आ वानर  
 छे तेज वैश्रमण्यनो छुप छे. सक्षामां ऐठेलो तेनो भेडो। पुत्र  
 लहरयंद्र पोताना पितानुं चरित्र सांखणी योत्या, हे भगवन् !  
 अहारा पिता हुमेशां साधु प्राक्षण्योने हान आपता हुता,  
 हुतां ते वानर जातिमां शाथी उत्पन्न थया ? केवली योत्या,  
 गृह, धन, स्त्री अने पुत्रादिकनी मूर्छीथी ते वानर थयो छे.  
 हे महाशय ! अहु क्षेवानी कंध ज़ज़र नथी। ते पोतेज अक्षरो  
 लभीने पोतानुं चरित्र तम्हने संखणवशे। त्यारभाद ते  
 वानरे ते प्रमाणे ज्ञमय वृतांत क्षुं, एटले लहरयंद्रे पोताना  
 आधओने योतावी पितानुं चरित्र संखणाव्युः.

त्यारभाद केवली भगवाने तेओने उद्देशी यति अने वृक्षि

ओम अन्ने प्रकारनो धर्म क्ष्यो। मुनिधर्म

**धर्मपदेशा,** अहंशु करवामां अशक्ता होवाथी तेओ।

योत्या, हे भगवन् ! अमने श्रावक धर्मनो

उपदेश आपो। सूरिओ विक्षारपूर्वक तेओने सर्व गृहस्थ धर्मनुं

ज्वल्प सम्बलाव्युः। तेओ पछु विशेष प्रकारे नमस्कार करी योत्या,

हे ग्रस्तो ! पौष्ट शण्ठनुं यथार्थ स्वल्प सम्बलवो। सूरि योत्या,

પौष्य શાળા ઇટિથી પર્વ વાચક કહો છે. જૈન સિદ્ધાંતમાં પંચમી, અષ્ટમી અને ચૈદશ વિગેરે પર્વ તિથિઓ પ્રસિદ્ધ છે. અને તે તિથિઓમાં ઉપવાસ કરવો તેને પૌષ્યધોપવાસ કહો છે. અથવા ધર્મવડે પુરુષની પુષ્ટિ થાય તે પણ પૌષ્ય પૌષ્ય કહેવાય. વળી પ્રાચીન સૂરિઓએ આહાર, દેખ સતકાર, પ્રાણાર્થ અને વ્યાપારના લેખથી સિદ્ધાંતમાં તે પૌષ્ય ચાર પ્રકારનો કહો છે. વળી તે પૌષ્ય દેશ અને સર્વ એમ પ્રત્યેક એ પ્રકારનો છે. તેમાં નિર્દીષ્ટ વસ્તુનો ત્યાગ તે દેશ પૌષ્ય અને સર્વ આહારનો ત્યાગ તે સર્વ પૌષ્ય કહેવાય. તેમજ શરીર સતકાર પૌષ્ય પણ દેશ અને સર્વ એમ એ પ્રકારે છે. દેશમાં સ્નાન, ઉદ્ધર્તાન, વર્ષ્ણક (ચંદ્ન) વિલેપનાહિકમાંથી નિર્દીષ્ટ વસ્તુનો ત્યાગ અને સર્વમાં સર્વ વસ્તુનો ત્યાગ હોય છે. તેવીજ રીતે પ્રાણાર્થ પૌષ્ય દેશ અને સર્વ એમ એ પ્રકારનો છે. દિવસના આદિ ભાગથી માત્ર દિવસનું પ્રાણાર્થ પાળવું તે દેશ પૌષ્ય અને અહોરાત્ર પ્રાણારત સેવનું તે સર્વ પૌષ્ય જાણવો. વળી દળવું, ખાડવું, રાંધવું અને લિંપવું વિગેરે અશુદ્ધ અને શુદ્ધ એમ એ પ્રકારના વ્યાપાર કહ્યા છે. તેમાંથી દેશ પૌષ્યમાં અશુદ્ધનો ત્યાગ. અને સર્વમાં બન્ને વ્યાપારનો ત્યાગ કહો છે. વળી પૌષ્ય ક્રતધારીને પણ અપ્રતિબિદ્ધ એવા શુદ્ધ વ્યાપારો અનુભત છે. તેમજ પૌષ્યમાં રહેલા સર્વ પ્રાણીઓએ અવસ્થ સામાન્ય કરવું અને સુનિષ્ઠોના સહવાસમાં રહેવું. વળી પ્રયત્નપૂર્વક પૌષ્યમાં અતિચાર વર્જવા નોદૃષ્ટે. તે અતિચાર પાંચ પ્રકારના કહ્યા છે. અપ્રતિલેખિત, દુઃપ્રતિલેખિત, અપ્રમાર્દ્દિત, અને દુઃપ્રમાર્દ્દિત એવી શાખા ઇલકાહિક સર્વ વસ્તુઓનું દેખવું તથા મુકવું, તેમજ પૂર્વોક્ત દોપચુક્ત સ્થાંડિ ભૂમિમાં વિધિરહિત મૂત્રોચ્ચારાદિ કરવાથી પૌષ્ય વત્ત બરોખર નહીં પાળવાથી એ પાંચ અતિચારો લાગે છે. એ ગ્રંમાણે ઉપરે

( ३६४ )

भीमुपार्थनाभवरित.

सांकेति ते सर्व श्रेष्ठी पुत्रोच्चे भार प्रकारनां आवक व्रत लीधां. पठी वानरे केवली अगवाननी समक्ष दर्शन सहित अनशनव्रत विधिपूर्वक अहंषु कर्युः. भाद केवली अगवान् हमेशां तेनी पाणे रही उपदेश आणे छे. पुत्रो पशु वानरनी उपर पुण्योपचाराद्विक रचे छे. अने तेच्चोच्चे कहुँ के, तरहारा पुण्य माटे उनभिं अनी प्रतिष्ठा अने पुस्तकाद्विकमां कोटी द३०० अमे वापरीशुः. वानर पशु तेनो स्वीकार करी सातमा हिवसे भरण्य पामी अष्टम कृष्णमां अतिमहर्दिक हेव थयो.

सर्व श्रेष्ठी पुत्रो विधिप्रभाषे आवक धर्म पाणे छे अने पर्व तिथिओमां चार प्रकारना पौष्ठव्रत अहंषु प्रथमवर्तिचार. करवामां तेच्चो खहु उपयोगी रहे छे. एक हिवस पौष्ठ लाई लहरयांद निद्राने लीधे प्रभाद वश थाई गयो, अने खहु उतावणथी पडीलेहंषु कर्या विना संथारानां वस्त्र लेवा गयो के, तरतज उत्र विषवाणा सर्पे तेनी हुयेणीमां दंश कर्या. जेथी ते तत्काल प्राण्युमुक्ता थाई गयो, अने नागलेऽकमां उत्पन्न थयो. त्यांथी नीकणी अत्प समयमां महा विद्वहमां उत्पन्न थाई. त्यां दीक्षाव्रत पाणी कुर्माधंघननो त्याग करी थोडाज समयमां मोक्षसुख पामरो.

ते श्रेष्ठीनो धीनो पुत्र शलभ वणिक एक हिवस पौष्ठव्रतमां ऐडा हुतो. परंतु ते खहु निःहुर अने अ-द्वितीय अतिचार. माही हुतो, तेथी हुण्यति लेखीत ( जेम तेम पडिलेहंषु ) करी शम्या उपर जेसवा गयो के, तरतज तेना पगमां सर्व समान विषवाणा झेठाटा वी-धीच्चे दंश कर्या. जेथी अत्यंत वेदनाने लीधे काण करी ते भवन पति हेव थयो.

धीनो पुत्र हुर्वश चोणो लाई अर्धरात्रीना खामये अत्यंत

વेअमध्यपुत्रोनोऽया.

( ३६५ )

**शरीर चिंताथी पीडावा लाभ्ये। अने बहु त्रीज्ञेयतिचार.** उतावणने दीर्घे प्रभार्जन कर्या विना स्थानितमां पेशाख करतो हुतो, तेवामां तेनालिंग (शुद्ध ईद्रिय) उपर लंहाडीचे दृश मार्यो. जेथी तरतत प्राणुनो त्याग करी ज्यौतिषिक हेवोमां ते उत्पन्न थयो.

**तेमज पौष्ठधवतधारी एवें शेठनो चायें। पुत्र महन श्रेष्ठी मंड जठराज्ञि छावाथी उहर वेहनाथी बहु पीचायेयतिचार.** डावा लाभ्ये, अने असद्य वेहनाथी हुण्यभार्जत स्थानित भूमिमां ठवें। करवा अहो, तेवामां गुदाचे झेठो सर्प करख्यो. तेनी तीक्र पीडाथी अङ्गहम ते भरी गयो अने व्यांतर ज्ञातिमां उत्पन्न थयो.

**तेमज पांचमा पुत्र भेद वाणिंके पांचमा अतिचारतुं सेवन कर्या.** जेमके—पौष्ठधवत करी रात्रीचे विचार पांचमेयाति- करवा लाभ्ये के. दाग, लात, शाक अने चार. पकवानाहिक बहु सुंदर रसोऽहु करावी सवारे जमीश. एम विचार करतो हुतो, तेटलामां

नवीन भेद मंडळमांथी अङ्गमातृ तेनी उपर वीजणी पडी. जेथी भरणु पामी नागकुमारोमां ते उत्पन्न थयो अने त्यांथी नीकणी त्रीजे लंबे भेक्षसुभ पामरो. एम लष्टी, हे लव्य ज्ञनो! तमे हुभेशां कलंकरहित वत धारणु करो. अन्यथा तम्हारे चिरकाल सासारमां भ्रमणु करवुं पडशे. तेमज शुद्ध परिष्णाभवडे त्रतोनुं पालन करवाथी उत्तम इल आम थाय छे. अने तेओनो लंग करवाथी बहु अनिष्ट इल आम थाय छे. माटे वत लीधा पछी तेनो लंग करवो नहीं. कारणु के त्रत अहंकुरु करी तेनो लंग करवो. ते करतां प्रथमधी ज लेवुं नहीं ते बहु उत्तम गण्याय, तेमज अग्निमां प्रवेश करवो तथा विशुद्ध कर्मवडे भरणु थवुं ते पणु वत लंग करवा

( ३६६ )

श्रीसुपार्थनाथवरित्र.

કરતां શ્રेष્ઠ ગણ્યાય છે. વળી શીલથી ભ્રષ્ટ થયેલા પ્રાણીના જીવનની ભાદ્યક અહંકૃત કરેલા વ્રતનો ભંગ પણ અનુચિત છે. હાલતાં, ચાલતાં તેમજ ડોર્ધપણું કાર્ય કરતાં મન, વચ્ચે અને કાયાથી હુન્મેશાં ઉપયોગ શૂન્ય થવું નહીં. વળી જેમ જેમ વ્રત સંખ્યાથી પરિણામની વૃદ્ધિ થાય, અતિચારો ન લાગે તેમજ વિશેષની વિશુદ્ધિ થાય નેવી નીતે ઉપયોગ રાખવો. વળી જેએ વિશેષ વ્રત પાણવામાં નિરંતર ઉદ્ઘૂકતા રહે છે તેવા સાધુ મહાત્માઓને ધ્યાન છે. કારણુંકે, તેઓ દેહનો ત્યાગ કરે છે. પરંતુ જીવન પર્યાત્કાર કિંચિત્, માત્ર પણ પાપાચરણ કરતા નથી. તેમજ શરીર સંખ્યાથી સર્વ અદ્વાત જેમણે ત્યાગ કર્યા છે. વિષયથી વિશ્રદ્ધ થયેલા, સમય સાવધ વ્યાપારથી વિસુઅ થયેલા અને તથ સંયમમાં તત્પર એવા મુનીં-દ્રો વાંછારહિત કાળ નિર્ગમન કરે છે. વળી જે પુરુષ ચતુરંગ સહિત પૌષ્ઠ્રવત નિર્હીધપણે પાણે છે તે અહૃપ સમયમાં ગાઢ કર્મદૂરી ત્રણ રાશીને બાળી નાખે છે. તેમજ પુષ્યશાળી એવા જન્મ પુરુષો હુંખના સાગરદ્વારી શુદ્ધ વ્યાપારનો ત્યાગ કરી પવિત્ર તિથિએમાં અતિચાર રહિત સમય હોખને હુરનાર તથા હુંખનાર એવા પૌષ્ઠ્રવતનું પાલન કરે છે.

ઇતિ પૌષ્ઠ્રવતાતિચારવિપાકે વૈશ્રમણપુત્રાણાં કથાનકં સમાપ્તમ ॥

તત્સમાસૌ શ્રીમલ્લક્ષ્મણગણવિરચિતપ્રાકૃતપદ્યવન્ધશ્રીસુપાર્થજિનચરિ-

ત્રસ્ય શ્રીસકલસૂરિપુરન્દરાયમાણપરમગુરુતપગચ્છાધિરાજશાસ્ત્ર-

વિશારદૈજૈનાચાર્યયોગનિષ્ઠાધ્યાત્મજ્ઞાનદિવાકરશ્રીમદ્દબુદ્ધિસા-

ગરસૂરિશિષ્યપ્રસિદ્ધવકતેતિલબ્ધવ્યાતિવ્યાનકો-

વિદૈજૈનાચાર્યશ્રીમદ્દઅજિતસાગરસૂરિકૃતગુર્જરભા-

ષાનુવાદે પ્રભુદેશનાપ્રવન્દે સદદ્ધાન્તાડતિ-

ચારવ્યાખ્યોપેતં તૃતીયશિક્ષા બ્રતં સમાપ્તમ ॥

શાન્તિમતીની કથા.

( ૩૬૭ )

## શાન્તિમતીની કથા.

### અતિથિસંવિલાગત.

હાનવીર્યરાજાએ પ્રશ્ન કર્યો, હે બક્ષાવત્સલ ! હવે ચોથા શિક્ષા-  
વતમાં અતિથિ સંવિલાગનું સ્વરૂપ અમને  
અતિથિસંવિલાગ. શ્રી સુપાર્શ્વપ્રભુ બોલ્યા, હે રાજન્ !  
ને ગૃહસ્થપુરૂપ શ્રદ્ધાવડે વિશુદ્ધ, ન્યાયથી  
ઉપાજન કરેલું અને નિર્દેખ એવું લોજના-  
હિક પોતાને ત્યાં આવેલા સુપાત્ર મુનઓને અર્પણું કરે છે, તેમ  
જ પ્રકૃત્યા મનવડે રોમાંચિત થઈ સર્પાત્ર સાધુઓને શુદ્ધ દાન  
આપે છે, તે શાન્તિમતીની માઝક સ્વર્ગલોકની સુખ સંપત્તિ લો-  
ગવે છે. જેમકે—હેવતાઓની સ્નાન કીડાવડે મનોહર છે શોશા-  
નેની, સુવર્ણ કમળોની શ્રેણીઓને લીધે રાજહંસોવડે સેવન કરા-  
યેલું અને નિર્મિત જલ જેમાં ભરેલું છે એવા માન સરેવરની  
સમાન, સુંદર કીડા કરતા મનુષ્યોથી વિભૂષિત અને ઉત્તમ પ્રકા-  
રની પ્રજ્ઞા જેમાં રહેલી છે એવું વિલાસપુર નામે નગર છે. તેમાં  
ઉત્તમશા ( શ ) ખોમાં ( શખોમાં ) કર્યો છે શ્રમ જેમણે એવા  
પંડિત સમાન અને વૈરિદ્ધ્યી અંધકારને હુરણું કરવામાં સૂર્ય  
સમાન શરૂ નામે તેમાં રાજ છે. વળી સર્વ ધર્મકાર્યમાં તત્પ્રવ  
તેમજ મન, વચન અને કાયાવડે પતિલક્ષ્મિમાં દૃઢ શ્રદ્ધાવાળી,  
વિલાસવતી નામે તેની ખી છે. તેમજ તે નગરમાં ધર્મરૂપી છે  
સમૃદ્ધ જેની તથા વિશેષ સદ્ગ્યારમાં હુમ્મેશાં યત્ન કરતો અને  
સર્વ ગુણોનો આધારભૂત એવો સાધાર નામે પ્રસિદ્ધ શ્રેષ્ઠી રહે છે,  
વિશાળ નિત્ર વિલાસવડે રમણીઓમાં ચૂડામણિ સમાન વિમલા  
નામે તેની ખી છે. અને મુખની કાતિવડે ચંદ્રમંહલને નિસ્તોજ,

( ३६८ )

આસુખાર્થનાથનરિત.

કરતી શાંતિમતી નામે તેમને એક પુત્રી હતી. વળી હું માતું છું કે-રતિનું રૂપ, સતીઓનું શીલ અને દેવાંગનાઓનું સૌંદર્ય અહણું કરીને વિધિએ તેને નિર્માણું કરી હોય ? તેમ તે હીપતી હતી. ચોણ્ય ઉમરે કુલીન વર સાથે તેનું લંન થયું હતું. છતાં પણ આ બાલા મહારી ઉપર અત્યંત રાગિણી થઈ સંસારમાં ન પડે એમ જાણી વિષયોના ત્યાગવડે તેના પતિએ બાલ્યાવસ્થામાં જ તેને ત્યાગ કર્યો હતો.

એક હિંસ શાંતિમતી કુસુમાકર ઉદ્ઘાનમાં ગઈ. ત્યાં આગળ શીતલ છાયામાં વિરાજમાન એક મુનીદ્રાનાં અભયદેવસૂરિ. તેને દર્શિન થયાં. વળી જેમની સેવામાં બહુ મુનિએ જોડાયા હતા, તેમજ ઉપરામ લક્ષ્મી દીપાવલામાં સ્વયંબુદ્ધ સમાન, સૌભાગ્ય રત્નના મહાનિધિ, શુદ્ધુરત્નોના મહાસાગર, સુખની કાંતિવડે ચંદ્રને નિસ્તેજ કરતા, અનેક વિષુધજનોને વંદન કરવા લાયક, કલિકાલની છાયાથી દૂર રહેલા, બહુ સુકોમલ બાહુલતાથી વિરાળત, સિનુધતામાં શરદ રત્નુના ચંદ્ર સમાન, વચ્ચન વિન્યાસમાં અમૃત સમાન, કામહેવ ના વિજેતા, વળી જેમનાં નેત્ર કમલ પત્રને અતુસરતાં હતાં અને જેમનું નામ અભયદેવસૂરિ હતું. તેમજ હર્મેશાં ઉદ્યોતકારી અપૂર્વ સ્ફૂર્ય હોયને શું ? તેમ તેઓ હીપતા હતા, વળી સંસાર જન્ય સંતાપને નિવૃત્ત કરનાર, સ્થિરતાનાં મેરુ સમાન, બહુ વિષુધ ગણુ જેમના અંગમાં રહેલા છે અને સર્વથા નિર્લય એવા તે સૂરીદ્રને વંદન કરી તેમની આગળ ધર્મ શ્રવણમાં સાવધાન થઈને તે નીચે એઠી. અભયદેવસૂરિએ યતિ અને શ્રાવકર્યાં સંબંધી ધર્મહેશના આપી. ત્યારબાદ શાંતિમતીએ ગૃહસ્થ ધર્મનો સ્વીકાર કર્યો. તેમજ અતિથિ સંવિલાગમાં વિશેષ નિયમ સૂરિ મહારાજની પાસે લીધો. દાનવતમાં વિશેષતાએ તેનું

શાંતિમતીની કથા

( ૩૬૬ )

લક્ષ્ય એંચાચું તેથી તેણીએ નિયમ ધાર્યો કે મુનિજનને દાન આપ્યા શિવાય અશન, પાન, આદિમ, અને સ્વાહિમ એમ ચાર પ્રકારનો આહાર મહારે લેવો નહોં. ત્યારખાં સૂરિમહારાજને વંદન કરી તે પોતાને ઘેર ગઈ અને પોતાના નિયમ પ્રમાણે હુમેશાં ધર્મ પાલનમાં તત્પર થાય.

અન્યાં પોતાના સનેહી સ્વજનને ત્યાં વિવાહ પ્રસંગ આવ્યો.

દાનઅછા તેઓના બહુ આશહને લીધે શાંતિમતી તેઓની સાથે ગઈ. ત્યાં લોજનનો સમય અચો એટલે સર્વ લોકો તૈયાર થઈ જમવા

એસી ગયા. શાંતિમતીને પણ અંદર બેસાડી હતી પરંતુ તે મુનિઓની વાટ જોઈ એકી હતી તેટલામાં ત્યાં એ મુનિઓ આવ્યા. લોકોએ બહુ ઉતાવળથી કંઈક નહોરાવીને તેમને વિદ્યાય કર્યા. પછી શાંતિમતીને પ્રથમ ક્રલાહિક પીરસ્વાનો પ્રારંભ કર્યો. શાંતિમતી બોલી, મહારે તે વસ્તુ જોઈએ નહોં. જે વસ્તુ સાધુઓને તમે આપી હોય તેજ રહ્યે રહ્યે પીરસો. મહારે કંઈ સ્વાહિષ વસ્તુની જરૂર નથી. એમ તેણીએ ના પાડી છતાં પણ તેઓએ બહુ આશહુ કરી દૂરેક વસ્તુ પીરસી, પણ શાંતિમતી જેઠલી વસ્તુ સાધુઓને આપી હતી તેટલીજ વસ્તુ જમી. પછી તે પોતાના પિતાને ત્યાં ગઈ. અને માર્ગમાં જતા સર્વ લોકો. વર્ષનું કરવા લાભ્યા કે, અહો ! શાંતિમતીની ધર્મ શ્રદ્ધા કેવી છે ! વળી જેણીના ચરિત્રનું વર્ણન કરવા બહુરૂપતિ પણ અશક્ય છે.

ત્યારખાં વિરહી ઝી જનોને અશાંતિકારક વર્ષાર્દ્રતુ આવી.

વર્ષકાલ. તીવ્ર ગર્જના સાથે સાત દિવસ સુધી એટલો

કોઈ મુનિઓ શાંતિમતીને ત્યાં આવી શક્યા નહોં. જેથી તે પણ હુમેશાં ઉપવાસ કરે છે. તેથી પોતાની પુત્રીને

( ५०० )

श्रीसुपार्थनाम चरित्र.

બહુ કૃધાકાંત જોઈ તેનાં માતાપિતાએ કલ્યાં કે, હે પુત્રી ! તું  
બહુ હુઃખી થાય છે માટે પારણું કર. શાંતિમતી બોલી, હે તાત !  
શુરૂ સમક્ષ મહેં પોતોજ અતિથિ સંવિભાગનું વત દીકું છે. તો  
હવે મહારે દાન આપ્યા વિના ડેવી રીતે લોજન કરવું ? વળી જો  
લોજન કરું તો મહારા નિયમનો કંગ થાય છે. માટે હે તાત !  
સર્જથા વૃદ્ધિ બંધ થશે અને જ્યારે મુનિઓને હું દાન આપીશ  
ત્યારોજ હું જમીશ. એમ સાંકળી તેનો પિતા બોલ્યો, એવા  
નિયમની તહારે જરૂર નથી. વરસાદ પડે છે તોપણું હું ઉપાશ્રેણ જર્દ  
મુનિઓને બોલાવી લાવું છું. શાંતિમતી બોલી, હે તાત ! તમહારે  
ત્યાં જવાનું કારણ નથી. કારણું બાલક કે માંદા શિવાય મુનિઓએ  
પ્રાચી વરસાદમાં બિક્ષા માટે નીકળતા નથી. અને તે મુનિઓમાં  
બાલક કે માંદા કોઈ છે નહોં. તેમજ સર્વ મુનિઓ સરવધારી અને  
તપક્ષીયોમાં બહુ ઉત્સાહી છે. હે પિતાજ ! વળી સંકટ સુભયમાં  
નિયમ પાળવાથી ધીર અને લીર જનોની કસોટી થાય છે. તેમજ  
સુખ અવસ્થામાં તો સર્વ દોકા અલિશ્રહ પાળી શકે છે. હે તાત !  
આમાં મહને હુઃખ થ્યાં છે ? પુષ્ય વિના તપક્ષીયનો સભય પણ  
હુર્દ્દાલ છે. જીવિત અને ધન કોને પ્રિય નથી હોતું ? પરંતુ સજન  
પુરુષો સભય ઉપર તે અજ્ઞને પણ તૃણ સમાન ગણે છે. માટે હે  
તાત ! ચોચ અવસરે મહારાં મરણ થશે તોપણું તમહારે મહોત્સવ  
સમાન જાણું. કારણું કોઈપણ સભયે મરણ તો નિશ્ચય છેજ.  
કલ્યાં છે કે—

અદ્ય વાબ્દશતાન્તે વા, મૃત્યુવૈ પ્રાણિનાં ધ્રુવમ् ।

ગૃહીત ઇવ કેશોષુ, મૃત્યુના ધર્મમાચ્રેત ॥

અર્થ—“ આજે અશ્વા સે વર્ષે પણું પ્રાણી માત્રનું મરણ  
અવશ્ય થવાનું છે, માટે મૃત્યુ એ કેશને પકડેલા મનુષ્યની માઝુક  
ધર્મનું આરાધન કરવું.” વળી હે તાત ! આપના પ્રસાદથી બહુ

लक्ष्मीश्राविकानीकथा.

( ४०१ )

हिवस भेण मुनियोने दान आપ्युं छे. विशुद्ध शीलवत पशु पाजयुं छे. तेमज मुकुतावदी विगोरे तपश्चर्या पशु करी छे. निर्मल भावनायो पशु लावी छे, साधर्मिंक वात्सल्य पशु चुकी नयो. अने यथाशक्ति तीर्थं करोनी पूजा पशु करी छे. माटे हे तात ! परदोक मार्गमां अनुकुल युष्यउपी भातानो संग्रह करी हुवे हुं भरीश. तेथी शुं अनिष्ट छे ? ए संबंधी तम्हारे कंधपशु ऐह करवो नहीं. एम कडी तरतज समस्त प्राणीयो साथे क्षमापना करी अनशन वत लઈ, समाधिपूर्वक भरणु करी माहेंद्र देवाकमां महद्विं देवेमां ते उत्पन्न थह. त्यांथो नीकणी त्रीजे भवे ते भोक्तु युभ पामशे.

इति चतुर्थशिक्षाव्रतेऽतिथिसंनिभागे शांतिमतीकथासमाप्ता ॥

## लक्ष्मीश्राविकानी कथा.

### प्रथम सचितनिक्षेपणातिचार.

दानविर्य राजा ऐवयो, हे सर्वश लगवन् ! हुवे चेता शिक्षा न-  
तमां अतिथि संविभागनी अंदर प्रथम अतिचारतुं स्वरूपदृष्टांत स-  
हित अमने कहो. श्री सुपार्ख्य प्रभु ऐवया, हे राजन ! ने पुरुष अ-  
तिथि संविभागने. नियम लधने हुष्ट चित्तवडे ओहनोहिंक पदार्थ  
सचित्त वस्तुमां भूके छे ते लक्ष्मीनी माझक कृपट लावनुं इल पामेछे.

नेमके-सर्व संपत्तियोतुं संकेत स्थान ऐवुं पृथ्वीस्थान नामे  
विशाल नगर छे. तेमां भवसार नामे राजा  
लक्ष्मीहृष्टांत. राज्य करे छे. धनंजय नामे तेमां ऐष्टी रहे  
छे. साक्षात् विष्णु पत्नीनी माझक अति

( ૪૦૨ )

શ્રીસુપાર્થનાભચરિત

આનંદકારી લક્ષ્મી નામે તેની ઓ છે. તે બનને ઓ પુરુષ પરસ્પર પ્રેમથી આનંદમાં હિવસો વ્યતીત કરતાં હતાં. પરંતુ સંતાનનું સુખ નહીં હોવાથી લક્ષ્મીનું હૃદ્ય બહુજ અસંતુષ્ટ રહેતું હતું. વળી પ્રકા સંબંધી વણુ ઉપાય તે કરી ચુકી. કેાદુ પણ દેવ, યક્ષ, કે વ્યતંતર, એવો નહીં હોય કે, જેની પછી માનતા તેણીએ નહીં કરી હોય. તેમ છતાં હેઠે પુત્ર થયો નહીં. આદ ઘણાં દ્વય અરચીને અનેક નૈમિત્તિકો પાસે બહુ ઉપાય કરાવ્યા, તેમજ જરી ભુગ્યો પણ આંધી ચુકી, ખપનાદિક પ્રયોગ પણ કર્યા. તેમ છતાં પણ તેનો મનોરથ પૂર્ણ થયો નહીં. પછી એક દિવસ બહાર જતા લોકોને જેણ લક્ષ્મીએ એક શ્રાવિકાને પૂછ્યું કે, આ લોકો કયાં જાય છે ? શ્રાવિકા યોલી, નગરની બહાર ઉદ્ઘાનમાં દિવ્ય જ્ઞાની મુનિ પધાર્યો છે, આટે તેમને વંદન કરવા આ સર્વ લોકો જાય છે. લક્ષ્મી યોલી, હે સખી ! બહારે પુત્રની બહુ વાંચા છે માટે જે મુને પણ તે સંબંધી કંઈ ઉપાય બતાવે તો હું પણ ત્યાં આવું. શ્રાવિકા યોલી, હે સખી ! આવી સકામ બુદ્ધિથી મુનિએ પાસે જવું અયોગ્ય છે. માત્ર તેમની અક્ષિતથી જ દરેક મનોરથ સિદ્ધ થાય છે. તે સંબંધી લક્ષ્મી પણ રથમાં એસી તે શ્રાવિકાની સાથે ઉદ્ઘાનમાં ગાડ. શ્રાવિકાના કણા પ્રમાણે સૂરીંદ્રને વંદન કરી તે ભૂમિ ઉપર એઠી. શ્રાવિકા પણ તેની પાસમાં એઠી. સલાચીકાર ભરાઈ હુતી.

જ્ઞાનીએ લક્ષ્મીને ઉદેશી સમ્યક્તવાદિ શ્રાવક ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. પછી લક્ષ્મીએ અતિથિ જ્ઞાનીમહાત્માનો સંવિલાગનો પ્રજીન કર્યો, એટલે સૂરીંદ્રએ ઉપદેશ. વિશેષ પ્રકારે અતિથિ પ્રતની વ્યાખ્યા આપી કે, જે બૃહસ્પથના ધેર ઉત્તમ લોજનના સમયે અકૃત અને અકારિત એવા શુદ્ધ પિંડાદિકનો જે

લક્ષ્મીઆવિકાનીકથા.

( ૪૦૩ )

કિશ્ય અહંકુ કરે છે તે અતિથિ તેના કલ્યાણને માટે થાય છે. વળી વિશેષ શ્રદ્ધા પૂર્વક ને ગૃહસ્થ ન્યાયથી મેળવેલું પોતાનું દ્રવ્ય, માનસિક શુદ્ધ ભાવનાવડે અતિથિને આપે છે, તેણે આ પ્રમાણે ભાવના કલ્યાણ કે, આ જગતમાં હું ધન્યવાહને લાયક છું. કારણું કે જેના ત્યાં આ સમયે આવા મહાત્મા પદ્ધાર્યો, વળી શુદ્ધ ભાવ વડે આ સુનિને શુદ્ધ હાન આપવાથી જન્મ અને જરા રૂપી જલવડે બ્યાકુલ, કદાચહરૂપી મધરાદિક જંતુઓ વડે ભયાંકર, અનેક હુંઅરૂપી મ્હેટા તરંગોથી બ્યાખ્ત, એવા અનાદિ અપાર આ સંસાર સાગરને હું તરી ગયો. તેમજ પ્રાણાણુ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય, અને શુદ્ધો પોતપોતાની અનિદિત્ત વૃત્તિ વડે ઉપાર્જન કરેલા, જે દ્રવ્યનો સત્પાત્રમાં નિયોગ કરે છે તે દ્રવ્ય-ન્યાયોપાર્લ્ફ જાણું, એમ જાનીપુરુષો કહે છે. વળી તેજ દ્રવ્ય અક્ષય જાણું, કે જે સુપાત્રોને હાન આપવામાં આવે છે. વળી તે પરિણામે સુંદર અને અનંત ફળાધ્યક થાય છે. તેમજ જે એષાણીય અને ગ્રાસુક હોય તેજ અતિથિએને હાન આપવા લાયક કર્યું છે. જેવી રીતે વિશુદ્ધ ભાવના વડે આ અતિથિ સંવિશાગ પ્રત અહંકુ કર્યું હોય તેવી રીતેજ નિરતિયારપણે પાળવું. વળી તેના સચિત દ્રવ્ય નિક્ષેપણું અને સચિત દ્રવ્ય વિધાન, તેમજ કાલાતિકમણું, પર વ્યપહેશ અને પ્રક્રેષ એમ પાંચ પ્રકારના અતિચાર છે. તેમાં સચિત દ્રવ્યનો જુદ્ધ અજ નાખવું (ઉપર સુક્રવું) તે સચિત દ્રવ્ય નિક્ષેપણ નામે પહેલો અતિચાર કહેવાય. વળી જે સચિત દ્રવ્યથી શુદ્ધ દ્રવ્યને ઢાંકવું તે સચિત વિધાન નામે બીજો આતચાર જાણુંદો. તેમજ સાધુના આગમ કાલતું ઉદ્ઘાંધન કરી, પ્રથમ જે લોજન વિધિ કરે છે તે કાલાતિ ક્રમ નામે ત્રોજે અતિચાર કહેવાય. વળી લોલી શ્રાવક પોતાના દ્રવ્યને પણ આ પારકું છે, એમ જે સુનિએને કહે છે તે પરદ્રવ્ય વ્યપહેશ અતિ-

( ૪૦૪ )

શ્રીસુપાર્વતિનાથચરિત્ર.

ચાર કંડેવાય. વળી જે સુનિઓને જોઈ કોણ કરે તેમજ ઈર્ષાને  
લીધે કોણ વશ થઈ હાન આપે છે તેને મત્સરદાન કર્યું છે. આ પ્રમા-  
ણેના અતિચારો રહિત અતિથિ સંવિલાગ નામે વતને જે પાળે છે  
તે ઉલ્લય લોકમાં બહુ સુખ લોગવે છે. એ પ્રમાણે દેશના સંભળો  
સમય સભા ઉલ્લી થઈ એટલે લક્ષ્મીએ અતિથિસંવિલાગને  
અભિશ્રહુ લીધો. અને સૂર્યને વિનાંતિ કરી કે, હે ભગવાન ! કૃપા  
કરી આપના સુનિઓને જિક્ષા માટે હુમેશાં રહારે ત્યાં મોક-  
લવા. એમ કહી તે પોતાને ઘેર ગઈ. અને પુત્રની ઈચ્છાથી તે  
ધર્મ પાલન કરે છે, પરંતુ ધર્મબુદ્ધિથી કરતી નથી. વળી પ્રા-  
ચીન કર્મને લીધે તેને પુત્ર થયો નહીં તેથી તેની હાનની પ્રતિજ્ઞા  
શિથિલ પડી ગઈ. છતાં પણ લૌકિક વૃત્તિ વડે હુમેશાં સુનિ-  
ઓને કંઈક હાન આપે છે.

**અન્યથા કોઈક મહેતસવના પ્રસંગે લક્ષ્મીએ બહુ પ્રકારની  
રસોઈ કરાવી અને સર્વ સંબંધીઓને  
લક્ષ્મીનોકપટ જમવા માટે પોતાને ત્યાં બોલાવ્યા. તેવામાં  
કાવ. ત્યાં સુનિઓને આવતા જોઈ લક્ષ્મીએ સુહગ-  
પિંડિકા (મગની ઠગલી) ઉપર ઢાળ, ભાતનાં**

વાસણુ મૂડી દીધાં, અને તેમની ઉપર પડવાનનાં વાસણુ ગોડલી  
દીધાં. તેટલામાં સુનિઓ ત્યાં આવ્યા અને ધર્મલાલ આપી  
ઉલા રહ્યા. લક્ષ્મીએ ઉલ્લી થઈને વંદન કર્યું અને ઠોરાવા માટે  
ઢાળ, ભાત લઈ આવી, એટલે સુનિઓ જોવ્યા, આ આહાર અમ-  
ને કદ્યે નહીં. કારણું કે સચિત વસ્તુ ઉપર આ રસોઈ સુકેલી છે.  
લક્ષ્મી લોકોને સંભળાવવા માટે પોતાને નિંદવા લાગી કે,  
હા હા ! હું નિબારિશીણું છું. કારણું, સુનિઓ પધાર્યા છતાં તેમને  
કદ્યે તેવું પ્રાસુક અને એવણીય કંઈ પણ મહેં રાખ્યું નહીં. હવે  
રહારે તેમની લક્ષ્મિ તેવી રીતે કરવી ? વળી કોણ પોતાની

લક્ષ્મીઆવિકાનીકથા.

( ૪૦૫ )

દાસીને કહેવા લાગી કે, અરે ! તેં બહુ ખરાખ કર્યું. રે ભાગ્ય-  
હીન ! સચિત વસ્તુનો સંધ્રો કરવાથી સર્વ પડવાજ્ઞાહિક ઉત્તમ  
પહાર્થી પણ તે દ્વારિત કર્યો. એમ કહી પછી નીરસ સાધારણ વસ્તુ  
લઈ નોંધાવા માટે નીકળી અને મનમાં તો બહુજ ઝુશી થઈ છે, પણ  
મુખેથી કહે છે કે, શું કરું ? આ વસ્તુ આપતાં નોંધાવા હાથ ચાલતા  
નથી. ! તેવામાં મુનિનો લક્તહેવીએ તેની શિક્ષા માટે પાત્રમાં  
પ્રવેશ કરી તેનો હાથ લોજન સહિત અટકાવી હોયો. અને તે  
ઓલીકે, રે હૃદ માયાવિનિ ! રે અનાર્થી ! રે કુટ કરનારી ! ચારિત્રનિષ્પિ  
એવા મુનિએને પણ તું આ પ્રમાણે છેતરે છે ? એ પ્રમાણે દેવી  
એ બહુ નિંદા કરીને લક્ષ્મીને કર્યું કે, સામી ! હું તને હંઘતી  
નથી કારણું કે, જીવદ્યા એજ સુખ્ય ધર્મ છે. એમ કહી દેવી  
અદૃષ્ટ થઈ ગઈ. ત્યારખાદ સ્વર્ગનોએ લક્ષ્મીને બહુ ધિક્કાર  
આપ્યો. પછી અદૃષ્ટ સમયમાં તે દેવીએ સ્તરધ કરી હતી તેથી  
તે લક્ષ્મી આવિકા પર્યાલોચના કર્યો વિના મરણ પામી, અને  
પ્રણપર્ચિકા નામે જંલક ચેનિમાં ઉત્પજ થઈ થઈ. ત્યાંથી નીક-  
ળી સંસાર ભ્રમણું કરી એધિ જ્ઞાન પામી મોક્ષ સુખ પામ્યો.  
માટે હે ભાવ્ય પ્રાણીએ ! આ પ્રમાણે સમજુ અતિચાર રહિત  
ત્રત પાળવામાં તમે ઉદ્યમવાન થાયો, નહીં તો આ લોકમાં પણ  
બહુ ધોર દુઃખો લોગવાં પડશે.

इत्यतિથિસંવિભાગે પ્રથમાતિચારહણન્તઃ ॥



( ૪૦૬ )

શ્રીસુપાર્થનાથગરિન.

## વિજયાશેઠાણીની કથા.

### દ્વિતીય સચિતપિધાનાતિચાર.

દાનવીર્ય રાજ એાવ્યો, હે જગત્યાલક ! હવે અતિથિસંકિ  
લાગમાં દ્વિતીય અતિચારનું સ્વરૂપ કહે. શ્રી સુપાર્થપ્રભુ એાવ્યા,  
હે ભૂમિપાલ ! જે મનુષ્ય અતિથિસંવિલાગને નિયમ લઈ દાન  
આપવા લાયક વસ્તુને સચિત વસ્તુથી હંકી હે છે તે વિજયા  
શેઠાણીની માઝેક ગાડ કર્મ બાંધે છે.

શ્રેષ્ઠ ક્ષમાધર (પર્વતો-ક્ષમાવંત પુરુષો) વડે સંયુક્ત, બહુ  
ઉપવંત અનેક વિદ્યાધરો વડે મનોહર એવો

**વિજયાદાષાંત.** વૈતાધ્ય પર્વત છે જેને વિષે, અથવા અનેક  
પંડિતોવડે મનોહર, અને સેંકડો દેશો વડે  
ખંકીષ્ટું એવા ભરતક્ષેત્ર સમાન વિશાળ, ભહિલપુર નામે નગર છે.  
તેમાં ચાચકેને કદ્યપવૃક્ષ સમાન, પાર્થ નામે રાજ છે. તેમજ સુયશ  
નામે સમ્યગુદૃષ્ટિ નગરશોઠ છે. વાગી કામ જીવનની વિજય પતાકા  
સમાન, જૈનધર્મમાં પ્રમાણી અને કુમતમાં આસક્તા એવી વિજય  
નામે તેની ખી છે. હવે સુયશ શ્રેષ્ઠી વર્ષાકાલમાં ઉધાનમાં  
રહેલા, વિશુદ્ધજાની અને ક્ષમાના સાંજર સમાન એવા પોતાના  
શુરૂ શ્રીમાન શાંતિસાગરસુરિનાં દર્શન કરવા માટે ગયો. વંદન કરી  
ધર્મહેયના સાંભળવા એઠો. દેશના સમાન થઈ એટલે પુનઃ  
વંદન કરી પોતાને વેર આવ્યો.

એ પ્રમાણે સુયશ શ્રેષ્ઠો હુમેશાં સૂરીશ્વરની દેશનામાં જતો  
અને તેથી બહુ સંતુષ્ટ થઈ એક દિવસ

**વિજયાને અતિષ્ઠાધ.** પોતાની ખીને કહેવા લાગ્યો કે, તું સૂરી  
શ્વરની પાસે ચાલ. તેમનાં દર્શન કરી ધર્મ  
શ્રવણ કર. જેથી તહી઱ો મનુષ્ય જન્મ સહૃદ

વન્યારોહાષુદીનીકથા.

( ૪૦૭ )

થાય. વિજયા બોલી, જે તેઓ સચિત અને અનંતકાયના નિયમો રહ્યે ન આપે તો હું ત્યાં આવું. શેષી બોલ્યો, તેઓ કોઈને પણ ખલાતકારે નિયમો આપતા નથી. માત્ર ધર્મનો ઉપહેઠ કરે છે. અને ભાવ્ય પ્રાણીએ ધર્મ સાંભળી જે જે નિયમો માગે છે, તે તે તેમની ચોચ્યતા પ્રમાણે તેમને આપે છે. એ પ્રમાણે ધૈર્ય આપી શેષી પોતાની સીને શુરૂ પાસે લઈ ગયો. તે પણ વંદન કરી શુરૂની આગળ ધર્મ દેશના સાંભળવા મારે એડી. સૂરિએ સમ્યકૃતવાદ આવકનાં સર્વ વત કલ્યા, તે સાંભળી વિજયા બોલી, હે પ્રભો ! કૃપા કરી આપ અતિથિ સંવિભાગનો નિયમ રહ્યે આપો. શુરૂએ તેની આગળ અતિથિ સંવિભાગની સંવિસ્તર વ્યાખ્યા કહી. તેમજ તેના અતિથારોનું સ્વરૂપ પણ ખતાંયું. પછી અતિથિવતનો નિયમ તેને આપ્યો. વળી શુરૂએ કહ્યું કે, પૌષ્ઠ્રવતના પારણે આવકે સાધુઓને જે વસ્તુ ન જોણાવી હોય તે વસ્તુ પોતે અવશ્ય ખાવી નહીં, કારણું કે, તેમ કરવાથી પૌષ્ઠ્રની શુદ્ધિ થાય છે. સર્વ આરંભામાં પ્રકૃત થયેલા બૂજુસ્થાશ્રમિઓએ નિરંતર અતિથિ સંવિભાગમાં પ્રયત્ન કરવો જોઈએ. અને ઉપવાસના પારણે તો અવશ્ય મુનિઓને જોણાવું જોઈએ તેમાં તો કહેવું જ શું ? વળી જે મનુષ્યો હુમેશાં વિશુદ્ધ ભાવથી સાધુઓને સુંદર ભોજન જોણાવે છે તેઓ સર્વત્ર સહાકાળ સુખી થાય છે. જેઓનું ધન નિરંતર લુનમંહિર, સુનિઓ અને સાધર્મિક જનોમાં વપરાય છે તઓને ધન્યવાહ ઘટે છે. અને ધર્મિક કાર્યોમાં જેઓનું ધન વપરાતું નથી તેઓનું ધન તૃણુદિના ઉકરડા સમાન જાણ્યું. કારણું કે, તેવા ધનની અધિક વૃદ્ધિ થવાથી પણ શો લાલ ? વળી જેઓનું આયુષ્ય સહાકાલ વિશુદ્ધ ભક્તિવડે સર્વપાત્રોને દાન.આપવામાં વ્યતીત થાય છે, તેઓજ ધન્યવાહને લાયક છે. આવી ભાવનાવડે સમ્યકૃપકારે સર્વથા હૃદયનો મહ દૂર કરી નિરંતર આવકોએ વિશુદ્ધ એવો શાવકૃધર્મ

( ૪૦૮ )

શ્રીમુપાર્થનાથયરિત્રિ.

આરાધયે। આ પ્રમાણે ઉપહેશ સાંલળી સંવેગ પરાયણ થઈ વિજ્ઞયા બોલી, હે મુનિવર્ય ! હુમેશાં લિક્ષા માટે ઝડારે ત્યાં એ મુનિઓ। તમારે મોકલવા. સ્તુરિએ વર્ત્તમાન ચોગ, એમ કહી વિજ્ઞયાને સંતુષ્ટ કરી. ત્યારબાદ સુયશશ્રેષ્ઠી ગુરુના ચરણમાં પડી બોલ્યો, હે પ્રલો ! આ સ્વી ખૃદુ પ્રમાણી છે માટે રહેણી કૃપા કરી આ ભવસાગરમાંથી આપ એનો ઉદ્ધાર કરો. હવે એને સંસાર જાગર તરવાનો અન્ય કોઈ ઉપાય નથી. એમ કહી શ્રેષ્ઠી પોતાની સ્વી સહિત પોતાને ઘેર ગયો.

ત્યારબાદ સ્તુરિએ શ્રેષ્ઠીને ત્યાં લિક્ષાના સમયે એ મુનિઓ મોકલવા. મુનિઓને આવતા નેંદ્ર શ્રેષ્ઠી વિજ્ઞયાનીદાન સહિત વિજ્ઞયા શેઠાણી ખૃદુ અક્ષિપૂર્વક કર્તિા. વંદન કરી શુદ્ધ અક્ષિપૂર્વક ચાર પ્રકારનો આહાર તેમને બહારાવ્યો. તે પ્રમાણે દરરોજ તે અક્ષિત કરવા લાગી. શેઠ પણ ઉમંગથી ખૃદુ દ્રવ્ય આપે છે. ત્યારબાદ ડેટલાડ દિવસે વિજ્ઞયાને વિચાર થયો કે, આ પ્રમાણે કરવાથી હુલમાં ખરચો ખૃદુ વધી પડ્યો છે. અને મહેં પણ અતિથિએને લોજન દાનનો નિયમ લીધો છે. માટે એવો કોઈ ઉપાય કરું કે, જેથી બજે કાર્ય સિદ્ધ થાય. એમ નિશ્ચય કરી કપટ જાળથી દાળ, ભાત, વૃતાદિનાં પાત્રો ઉપર ખીનેરું, ચીલડાં વિગેરે સચિત વસ્તુઓ હાંકી હે છે, જેથી મુનિઓને કંઈ પણ પદાર્થ કહે નહીં તેવી યુક્તિ તોણીએ ગોઠવી. પછી ગોચરીનો સમય થયો. એઠલે સાધુઓ તેને ત્યાં આવ્યા. પ્રથમની માઝેક ખૃદુ અક્ષિત બતાવી વિજ્ઞયા બહારવા માટે ઉલ્લિ થઈ. ભાત, દાળ વિગેરે આપવા આવી એઠલે મુનિઓ. બોલ્યા, એની ઉપર સચિત પદાર્થી મૂકેલા છે માટે તે આહાર અમારે કહે નહીં. તેથી તે અમારા વાસ્તે લાવશો નહીં. વિજ્ઞયા બોલી, અરે ! મહને

देवचंद्रश्रावकनीकथा.

( ४०६ )

धिक्कार છે ! આ સમય રસોઈ તૈયાર છે તે છતાં મુનિઓને અતુભ્યોગી થઈ. કોઈ દાસીએ અનાણુમાં અહારા અભાગ્યને લીધે આ અવ્યવસ્થા કરી. મહા ઐહની વાત છે કે, હું પુષ્ટયહીન થઈ. એમ બહુ ઐહ કરતી તેને જોઈ શેડ એલ્યા, ખીજું કંઈક નહોરાવ. ત્યાર બાદ વિજયાએ વાત, ચાણું વિગેરે નહોરાવીને નમસ્કાર કરી પોતાના ઘેરથી કેટલાંક ડગલાં પાછળા ચાઢી મુનિઓને વિદ્યા કર્યા. તેવીજ રીતે કદાચિત્ત મુનિઓને આવતાનેં સચિત સાથે અચિત્ત વસ્તુનું સંઘર્ષન કરે છે. કદાચિત્ત પાણીનું વાસણું હાથમાં લઈ કરે છે કે, અરે ! હાથમાં કાણું પાણી રહી ગયું છે. બણી કદાચિત્ત બાત, દાળ, ધી વિગેરે બળતા અગ્નિ ઉપર મૂકે છે. એ પ્રમાણે તેનાં આચરણ નેંદ્ર સાધુઓએ જાણ્યું કે, આ શોઠાણી બહુ કૂટ કપટ વાળી છે. એને કંઈપણ દાન આપવાની ઈચ્છા નથી. પરંતુ શેઠના આચહને લીધે મુનિઓ બિક્ષા માટે બય છે. એમ કરતાં એક દિવસ વિજયાને વાસિત વરન થયું. જેની ગાઠ પીડાથી મરણ પામી તે પ્રણુપર્ણિકા નામે વ્યાંતર દેવોમાં ઉમજ થઈ. ત્યાંથી નીકળી કેટલોક સમય લવ ભ્રમણ કરશે. ત્યારબાદ વિદેહ ક્ષેત્રમાં સંયમ-હીક્ષા પ્રાત કરી અનુકૂમે સિદ્ધ સુખ પણ પામશે.

इत्यतિથિસંવિભાગે દ્વિતીયાઽતિચારવિષાકે વિજયાવિષાન્તઃ ॥

### देवचंद્રશ્રાવકની કથા.

#### તૃતીયકાલાતિકભણ્યાતિચાર.

દાનવિર્ય રાજ એલ્યો, હે દ્વારું ભગવન् ! હવે અતિથિસંવિભાગમાં ત્રીજ અતિચારનું સ્વરૂપ દ્ધારાંત સહિત કહો, શ્રી

( ४१० )

श्रीमुपार्थनाथयरित्र.

सुपार्थ प्रलु ऐत्या, हे भूपाल ! जेहो दाननो नियम कर्यो छे,  
छतां जेना हुहयमां शठता रहेली छे एवा हेवयंद्र श्रावकनी माझेक  
जे पुरुष कालतुं उड्डांघन करी दान आपे छे तेनुं क्षब तेने प्राप्त  
यतुं नथी.

आ भरतक्षेत्रमां स्वस्थ युद्धिशाली मनुष्योाथी विभूषित  
लक्ष्मी भंहिर नामे नगर छे. जेनी अंहङ  
हेवयंद्रहृष्टांत. सत्पुरुषोना चरित्रोनां चित्रो जेमां चित्रेवां  
छे एवां भंहिरे शोली रथां छे. वणी ते  
नगरमां महोन्मता वैरीडपी सिंहेने हमन करवामां प्रयंद शरभ  
समान, अने चंद्र समान उज्ज्वल एवी कीर्तिरूप गंगाने वहां  
करवामां हिमालय समान वज्रसार नामे राबा छे. वणी तेमां  
हेवयंद्र नामे अहु धनाद्य विषुड रहे छे. कृष्णुनी श्री समान  
निरंतर सेवा परापणु हेवशी नामे तेनी भार्या छे. वणी हेवयंद्र  
श्रावक स्वलावथी एवो कृपणु छे के, कोई पणु द्विवस कोईने तल-  
भार पणु दान आपतो नथी. परंतु धर्माभिलापी डोवाथी भर-  
यावन अवस्थामां रथो छे छतां कीडा विलास करतो नथी.

अन्यदा चतुर्सानी सूरि महाराज त्यां अहार उधानमां  
पधार्य. ते प्रसंगे हेवयंद्र पणु उधानपा-  
सूरिनुं आगमन. लडो पासे उधराणी भाटे त्यां गयो. तेवामां  
उधानपालडो पणु सूरीधरना चरणुकमळमां  
व्याख्यान सांखणवा ऐडा हुता. ते जेई हेवयंद्र पणु सूरिने वंदन  
करी विनयपूर्वक भतिमोहने निमूळ दरनार दान, तप, शील  
अने भावनामय धर्म सांखणवा ऐडा. जेमडे-दान, शील, तप  
अने भावनारूप चार अकारनो धर्मधीर पुरुषो एकदो छे. वणी  
तमां शील, तप अने भावनारूप प्रणु अकारनो धर्म साधवामां  
अशक्ता एवा चूहुस्थाने दान धर्म जय आपनार थाय छे. समअ-

દેવચંદ્રાવકની કથા.

( ૪૧૧ )

આરંભેથી તેમજ કર્યું અને કશાવવાથી નિવૃત્ત થયેલા મુનિઓને ગૃહસ્થ પુરુષોએ ધર્મ નિમિત્તે અવસ્થ હાન આપવું. કર્યું છે કે-જે પુરુષ વિદ્યમાન, બાળ અને અનિત્ય એવું પણ હાન સત્પાત્રને નથી આપી શકતો, તે બિચારો તુચ્છ' દુર્ધર એવા શીલને કેવી રીતે ધારણ કરે? કારણું, હાન આપવા લાયક વસ્તુ, હાન આપવાની શક્તિ અને સત્પાત્રનો સમાગમ એ સર્વ સામની પૂર્વના પુષ્ટયોવડે કોઈ ભાગ્યશાલી પુરુષોને જ પ્રાપ્ત થાય છે, વળી કેટલાક પ્રાણીઓ પોતાનું જીવિત પણ સંદેહસ્થાનમાં મૂક્તિ સમુદ્રમાર્ગે ચાલે છે અને દીપાંતર જાય છે. છતાં કેાઢ માત્ર પણ પ્રાપ્ત કરતા નથી. તેમજ કેટલાક લોકો પ્રાચીન પુષ્ટયોગે મહા કષ્ટે ધન મેળવે છે પરંતુ તેઓ સ્વાભાવિક કૃપણુંતાને દીધે તે ધનમાંથી કિંચિત્ત માત્ર પણ સન્માર્ગે વાપરી શકતા નથી. અને પ્રાણુંતમાં પણ તેઓને હાન રૂચી થતી નથી. વળી કર્યું છે કે-હાની જનોની હસ્તપરંપરામાં પરિવર્તન કરવાના એહથી શ્રાંત થયેલી સંપત્તિઓ, કૃપણું જનોના ઘરની અંદર આવી સ્વસ્થ અવસ્થામાં નિરિત થયેલી હોય તેમ જણ્ણાય છે. તેમજ આહરપૂર્વક વૃદ્ધિ પમાડેલી, અને નિરંતર બહુ પ્રયત્નોવડે રક્ષણ કરેલી, કૃપણ પુરુષોની ધન સંપત્તિ, કુમારીની માફક પરોપચોળી છે. વળી કેટલાકને ધન સંપત્તિ પણ પ્રાપ્ત થાય છે અને હાન શક્તિ પણ હોય છે. છતાં પણ સત્પાત્રનો સમાગમ હુલ્લાં થાય છે. કારણું સર્વ આરંભેથી નિવૃત્ત થયેલા, નિર્મલ ચિત્તવાળા, પુનિત એવા ચારિત્રના પાલન કરનાર અને નિષ્કારણ દ્વારા રસીથી જ્યાસ એવા સુપાત્રનો સંચોગ આ જગતમાં કૃષિતજ મળી શકે છે. માટે હવે અધિક શું કહેવું? જે સંસાર સાગર તરવાની છબ્બા હોય તો ધનવાન, પુરુષોએ પોતાની લક્ષ્મીનો સહૃપચોં સૂત્ર વિધિ પ્રમાણે સુપાત્રમાં કરી લેવો. કારણું—

( ४१२ )

श्रीसुपार्खनाथयरित्र.

पटुतरपवनवशा—कुलितकुवलयदलतरलानि ।

जीवितयौवनयुवति—जनधनलवलाभसुखानि ॥

अर्थ—“ लुवित, यैवन, सुंहरे युवतिजन, अने देश मात्र धन लाभना सुनिएने प्रचंड वनना वेगथी कंपायमान कमल पत्रनी भाइक चंचल जाण्यावां. ” आ प्रभाषे धर्मदेशना सांकणी देवयंद्र श्रेष्ठीचे अतिथिदानने। नियम लीघो अने पोताने त्यां किक्षा भाटे सुनिएने विनिति करी पोताने घेर आव्यो. पछी उचित सभये सुनिए। किक्षा भाटे आव्या. देवयंद्रे भावपूर्वक पठवान्नाहिक ठेणारांयुः. तेएओचे पण्यु यथेचित विशुद्ध एवो आहार लीघो. पछी देवयंद्र आव्यो, आने आप पदार्थी तेथी अहारं धर पवित्र थयुः. अने आने आ सक्त पानाहिक रसेाळ पण्यु सळक थऱ. डारणुके, गुड लोजनथी अवशिष्ट अन्न आने हुं जमीश. एम भावना भावतो देवयंद्र सुनिएनी पाढगा केटलांक डगलां चाली पोताने घेर पाढो. आवी शेष अन्नथी लोजन करी अहु संतुष्ट थयो. सुनिए। पण्यु किक्षा लाई गुडपासे गया अने सर्व वृत्तांत निवेदन कयुः.

किक्षा तरक्क फटि करी गुड आव्या, हे सुनिए ! हवे हुम्मेशां  
तम्हारे देवयंदना त्यां जवुः. जेथी एनो  
शिष्यपत्ते गुड कृपण्युतानो अपवाह फूर थाय. अने निर्ज-  
वयन. रा पण्य थाय. त्यारभाह सुनिए। गोचरी भाटे

हुम्मेशां तेने त्यां जवा लाण्या. वणी स्वभावथीज तेनी स्त्री अहु उदार चित्तनी हुती तेथी ते घेबर, लाडु, पेंडा, भरप्री अने साकर विगोरे अहु पदार्थी प्रति दिवस ठेणारावती हुती. ए प्रभाषे स्त्रीनी उदारता नेह देवयंद्रे कृपण्युताने लीघो पोतानी स्त्रीने कळुंडे, हवे सुनिएने हुं पोतेज

देवयंद्रशावकनीकथा.

( ४९३ )

हान आपीशा, कारणके आ विषयनो। नियम भें लीघेलो। छे. अभि. कही थीजे हिवसे पोते उपाश्रये जर्ध मुनिओने पोताने त्यां बोलावी लाव्यो। पधी थाङुं धी ( अरधी पणी ) वडोरावी वंदन. करीने तेमने विदाय कर्या। मुनिओ पणु थीजे स्थगेथी लिक्षा लर्ध गुरु पासे गया।

सूरीश्वरे मुनिओने पूछयुं, आजे देवयंद्रने त्यांथी शुभजयुं ? मुनिओ धी अताऽयुं। शुद्ध उत्पातानुकूण। बोल्या, हवे तेनात्यां निमंत्रणुविनातम्हारे जपुं नहीं। वणी थीजे हिवसे लोजन समय व्यतीत थया बाद देवयंद्र मुनिओने बोलाववा माटे गयो। त्यारे शुद्धओ कल्पुं के, मुनिओ आहार कर्यो। आहार लीधा पधी हवे गोचरी शा कामनी ! शठ अुद्धिथी देवयंद्र खडु ऐद करवा लाव्यो। करीथी सूरि बोल्या, सद ! हवे ऐह करीश नहीं। आजे कारणुने लीघे मुनिओ तडारे त्यां आवी शक्या नथी। त्यारबाद देवयंद्र पोताने घेर जर्ध जमीने सुध गयो। परंतु खडु जमवाथी विस्त्रयिका थर्ध गध। जेथी भरणु पाभी भूत योनिमां ते उत्पन्न थयो। अने कुमे भोक्ष सुख पाणे पामणे, माटे जन्य प्राणीओ अुद्धिपूर्वक व्रतमां अतिचार सेववा नहीं। कारणुके अतिचार सेववाथी अनुकमे व्रत लंगने। ग्रसंग पाण आवी जाय छे।

इत्यतिथिसंविभागवते तृतीयातिचारदृष्टान्तः ॥

—★(◎◎◎◎)★—

( ૪૧૪ )

શ્રીસુપાર્થનાભચરિત.

## સ્થવિરાની કથા.

---

### અતુર્થ પરવ્યપદેશાતિચાર.

દાનવીર્ય રાજએ પ્રક્રિ કર્યો કે, હે ભગવન् ! હું વે અતિથિ સંવિભાગ મતમાં ચોથા અતિચારનું લક્ષણું દાખાંત સહિત કૃપા કરી આપ અમને કહો. શ્રી સુપાર્થ પ્રલુ બોલ્યા, હે રાજન ! જે પુરુષો અતિથિ દાનનો નિયમ લઈને સત્પાત્ર પોતાના ઘર આવે છતે પણ પોતાના દ્રવ્યને પારકું છે એમ કૃપટથી કહે છે તેઓ એક સ્થવિરા ( વૃદ્ધ ઓ ) ની માદ્રક હુંખી થાય છે.

બહુ વિશાળ અને ઉચ્ચી હુવેલીઓના શિખરોવડે સૂર્યના રથના ઘોડાઓની ગતિને અટકાવતું વિશ્વ-

**સ્થવિરાદાખાંત.** પુર નામે જગદિધ્યાત નગર છે. વળી જેની અંદર કુલીન જનો વસે છે એવું તે નગર શાંકરના હ્યાસ્ય તથા ચંદ્રને નિસ્તેજ કરતાં એવાં જીનમંહિરોનાં શિખરોની શોભાવડે-મુનિવાસ અહિત એવી સ્વર્ગપુરીને પણ હુસે છે. વળી પદ્ધ સમાન ( પદ્ધરૂપી ) છે મુખ જેમનાં, વિશાળ પયોધર એટલે સ્તન મંડલ ( જલને ) ધારણું કરનાર અને પ્રકુલ્પ કુસુદ સમાન ( કુસુદરૂપી ) છે નેત્ર જેમનાં, એવી સ્થીઓ. અને સરોવરોવડે અંદર અને બહુરથી જે નગરીની સેંદર્યતા પ્રસરી રહી છે. તેમજ અનેક રાજાઓના ચૂડામણુઓની કાંતિ વડે જેના ચરણું રંગાઢ ગયા છે એવો સમયસિંહ નામે રાજ તે નગરમાં રાજ્ય કરે છે. ચંદ્રલેખા નામે તેની ભાર્યા છે. વળી તેજ નગરમાં બહુ હુંખુરૂપી દાવાનલથી હંઘ થચેલી એક સ્થવિરા ( વર્ધા ) રહે છે. તે હુંમેશાં ધનવાનેને ત્યાં કામકાજ કરતી અને પોતાનું શુજરાન ચલાવતી દિવસો વ્યતીત કરતી હતી.

સ્વરૂપિનીકથા.

( ૪૧૫ )

અન્યદી મહારાજાની મલયચંદ્ર સૂરિ ત્યાં પ્રધાર્યાં લોકો  
બહુ ઉત્સાહ પૂર્વક તેમને વંદન કરવા ગયા.  
**મલયચંદ્ર-** વૃદ્ધા પણ ભક્તિ ભાવથી આકર્ષાઈને ત્યાં  
**સૂરિ-** જઈ વંદન કરી સુનીદ્રિની આગળ લોકો  
સાથે ધર્મ દેશના સાંભળવા એડી. સૂરિને  
પ્રથમજ સમ્યક્તવની વ્યાખ્યા કરીને કલ્યાં કે, હુસ્તર અને હુરંત  
એવા સસુદ્રની મધ્યમાં દુષ્પતા પ્રાણીને જેમ નાવ શરણું થાય છે.  
તેવી રીતે હુઃખું વડે તરવા લાયક અને હુઃસહ એવા હુઃખુંપ્રી  
જલથી ગંભીર ભરેલા સંસાર સાગરમાં જીવાત્માને સમ્યક્તવ  
પ્રાપ્તિજ શરણું થાય છે. વળી જેમ હુકાળમાં જીવાતુર કોઈ પણ  
પ્રાણીને અકરમાતું પુષ્ટય બલથી પરમાજ્ઞ પ્રાપ્ત થાય તેવી રીતે  
હુઃખું કાલમાં બહુ પ્રમાહી અને હુઃખું એવા જીવોને સમ્ય-  
ક્તવ અમૃત સંમાન થાય છે. જેમ ચંચળ તરંગોથી ઉછ-  
ળતી, પર્વતમાંથી નીચે ઉત્તરતી અને મહા વેગને ધારણું કરતી  
નહીના પ્રવાહમાં તથાતો મહાલ પ્રાણી તટ ઉપર રહેલા વૃક્ષનું  
અવલંબન પામે છે, તેમ રાગિંદ્રી મહાગિરિમાંથી નીકળતી  
નહીના પ્રવાહમાં પીડાતો કોઈ પણ પુષ્ટયશાળી જીવ સમ્યક્તવ-  
રૂપી તરંગરનું આલંબન મેળવે છે. વળી જેમ લોહાદિક ધાતુ-  
ઓમાં સુવર્ણ, તૃણ જાતિમાં ધાન્ય, સમૃદ્ધિમાં રદ્દન અને  
રત્નોમાં ચિંતામણિ રત્ન શ્રેષ્ઠ ગણ્યાય છે, તેમ ધર્મોની અંદર જૈન  
ધર્મ ઉત્તમ છે. જેમ વનોમાં નંદનવન, વૃક્ષોમાં કલ્પવૃક્ષ, પુરુ-  
ષોમા ચંકવતીં અને સુનીઓમાં જુનેદ લગ્નવાન શ્રેષ્ઠ છે, તેમ  
સર્વ ધર્મોમાં વીતરાગ પ્રશ્નીત ધર્મ પ્રશંસનીય છે. વળી જેમ  
નાગોમાં નાગેંદ્ર, નક્ષત્ર અને તારાઓમાં ચંદ્ર, અસુરોમાં અસુ-  
રેંદ્ર, દેવોમાં દેવેંદ્ર, નરોમાં નરેંદ્ર અને ભૂગ જાતિમાં ભૂગેંદ્ર  
શ્રેષ્ઠ છે. તેમજ સર્વ ધર્મમાં જૈન ધર્મ શ્રેષ્ઠ છે. વળી તે ધર્મ

( ૪૧૬ )

શ્રીસુપાર્થ નાથચરિત.

યતિ અને ગૃહી એમ બે પ્રકારનો છે. તેમાં યતિ ધર્મના દશ લેદ છે. અને આવક ધર્મ ભાર પ્રકારનો છે. અનુકૂમે બજે મોક્ષ સુખ આપનાર થાય છે. એ પ્રમાણે ધર્મહેશના સાંભળી સૂરિ પાસે કેટલાકે યતિધર્મ સ્વીકાર્યો, અને કેટલાક જોને આવક ધર્મ લીધો, વળી વિશેષમાં સ્થવિરાન્યે અતિથિદાનનો નિયમ લીધો.

ત્યારખાદ વૃદ્ધા વંદન કરી પોતાને ઘેર ગઈ. લોકન સમયે રસોઈ તૈયાર કરી મુનિઓની વાટ જેઈ  
**કુપટવૃત્તિ.** એઠી હતી, તેવામાં ત્યાં મુનિઓ પદ્ધાર્યો.  
 વૃદ્ધાએ ગ્રેમપૂર્વક અશનાદિક આહાર

નહોંદાવી તેમને વિદ્યાય કર્યો. અન્યદા કોઈક ધનવંતને ત્યાં મહોન્સ ચાલતો હતો, નેથી તે વૃદ્ધા તેને ત્યાં કામકાજ કરવા જરૂરી હતી. તેથી ત્યાં કુમોદના ચ્યાખા, દુધ, દી વિગેરે ઉત્તમ સામચી મળી હતી. તે સર્વ પોતાને ત્યાં લાવીને તેણુંચે દુધપાક બનાવ્યો. તેવામાં તેને ત્યાં માસક્ષમણુના પારણુના સમયે એક મહા તપસ્વી આવ્યા. વૃદ્ધાએ પણ કંઈક વાલ, શાક વિગેરે સાધારણ વસ્તુઓ નહોંદાવીને કુપટભાવથી કણું કે, હું મુનીદ ! હું શું કરું ? આ દુધપાક પારકો છે, નહીં તો હું તમને નહોંદાવત ! રહારાં અભાગિણીનાં તેવાં પુછ્ય કચ્ચાથી હોય ? કે, મુનિ પારણે રહારે ઘેર પરમાત્માનું હોય ! પરંતુ આ ભાતનું પાણી પ્રાસુક છે; માટે જો આપને ખપે તો અહુણું કરો. કારણ કે, તે રહારાં છે. મુનિએ પણ અવસર જાણી તે ઓસામણું નહોંદું. પછી મુનિ ત્યાંથી સંતુષ્ટ થઈ ચાલ્યા ગયા. ત્યારખાદ વૃદ્ધા પણ સમય દુધપાક કંઠ સુધી જ મી ગઈ, અને રાત્રીના છેલ્હા ભાગમાં સમયકંત્વ સહિત તેનું તેને વમન થયું, જેથી તત્કાલ મરી ગઈ

नंदवणिकूनीकथा.

( ४१७ )

अने मध्यम गुण्युक्त भरीने भनुध्य जातिमां उत्पन्न थष. पञ्चात् अनुकमे कर्म वैदीने निर्मूल करी सिद्धि सुख पामयो.

इत्यतिथिव्रते चतुर्थातिचारदृष्टान्तः समाप्तः ॥

—◆◆◆—

## नंदवणिकूनी कथा.

### पंचमभातसर्यातिचार.

दानवीर्य राजा योद्यो, हे कृपासागर ! हुवे अतिथि संविभाज  
प्रतमां पांचमा अतिचारत्नुं स्वदृप दृष्टांत सहित अमने सांक-  
णवानी धृच्छा छे, माटे कृपा करी आप ते कहो. श्री सुपार्थमलु  
योद्या, हे राजन् ! “ आ पछु दान आपे छे तो शुं अनाथी  
पाणु हुं अशक्ता हुं ? ” एवा भातसर्या भावनी युद्धिथी जे दान  
आपे छे ते नंदनी भाक्षक अद्य इण मेणवे छे.

मेरे पर्वतदीपी छे हीवेट जेनी, पृथ्वीदीपी जे नुं पात्र छे,  
समथ सरोवरदीपी जेमां तेल रहेलुं छे,  
नंदवणिकूनी कथा अने ग्रन्तविलित सूर्यदीपी जेनी शिखा छे  
एवा हीप समान, जंयुद्धीप नामने. द्वीप  
छे. तेनी अंदर उत्तम इद्धिशाली लक्षतक्षेत्र छे. तेना मध्यभंडमां  
दक्षिण दिशादृपस्त्रीना तिलक समान अने लक्षभीनुं निवास-  
स्थान श्रीपुर नामे नगर छे. जेनी अंदर उनभंडरैना शिखरे  
उपर स्थापन करेला सुवर्ण कलशोनी कांतिवडे हिवसे पछु गगनां-  
गंगु संध्या डालना वाहण समान शोक्षे छे. तेमज सरण स्वभाव-  
वाणा, सदला ( या ) पत्रोना गुच्छ सहित ( दया सहित ) सङ्कल

( ४९८ )

श्रीनुपार्थनाथयरित्र.

प्रवृत्तिवाणा ( इव सहित ) गुणवंत पुरुषोथी सेवायेला ( पक्षि-  
गण्योथी सेवायेला ) तेमજ मनोहर एवा धनवंत पुरुषो अने  
सुंदर वृक्षो जेनी अंदर तेमज भडार अनुकमे विलास करे छे. ते  
नगरीमां सूर्य समान तेजस्वी, शत्रुना भण्डपी अंधकारने।  
संहार करनार, अने मतुष्योंचे मानवा लायड रिपुभलमध्यन  
नामे राजा छे. परंतु तेनामां एक म्हेटो होष रहेलो छे के, जेनी  
क्षितिर्दपी खी शत्रुओंना घरमां पशु यशदपी पोताना बंधु  
साथे ईच्छा मुजब विलास करे छे. वणी ते नगरीमां समय  
विषुक जातिमां मुख्य गण्यातो सुंदर नामे भहु गुणवान एक  
श्रेष्ठी रहे छे. तेमज नंदन नामे पशु एक विषुक तेमां वसे छे.

एक हिवस महोन्मत्ता राजहस्ती अंधनस्तंस लांगी नाभीने  
निरंकुशपणे गुहादिकने लांगी नांभतो।  
कायेत्सर्गमां नगरनी भहार चावयो गयो. नगरना लोको  
रहेला सुनि. ते हस्तीनो ग्रास नहीं सहन यवाथी युम  
पाडवा लाग्या. ते सांबगी सुलटो सहित  
घोडेस्वार थई राजा तेनी पाछ्या गयो. हवे हाथी उद्यानमां  
गयो. अने उत्तम झोणोथी सुशोभित एक सुंदर वृक्षनी छायामां  
विश्रांति माटे उलो रघ्यो. तेटलामां त्यां आगांग ध्यानमां लीन  
थयेला, शरीरे क्षीण अने हुद्यथी दीनता रहित तथा कायेत्स-  
र्गमां रहेला एवा एक मुनीद्र तेनी दृष्टिगोचर थया, के, तरतज  
ते हाथीने जाति स्मरण शान उत्पन्न थयुं. तेथी तेणु सुनीद्रना  
थरणु उभगमां प्रणाम कर्या. ते नेई राजा विस्मित थई गेलयो।  
के, आ एक आश्चर्य छे के पशु जाति पशु साधुने नमस्कार करे  
छे, तो आपणे पशु आ मुनीद्र नमवा लायड छे, एम कही अस्थ  
उपरथी नीचे उतरी राज्ञ्ये परिज्ञन सहित साधुने वंदना करी.  
त्यारभाद हुस्तिने शांत करी शुद्ध भूमि उपर पोते गेठो।

નંદવિષયકૃતીક્ષા.

( ૪૧૬ )

હસ્તિનો ઉપરથ શાંત થયો. એટલે સુંદર અને નંદ અને  
જણ મુનિને વંદન કરવા ગયા. ધ્યાનની  
ધર્મહેશના. સમાસિ થવાથી મુનિએ તેઓને ઉદેશી  
કૈન ધર્મની હેશના આપી. પછી ઉચિત  
સમય જાણી વિનયપૂર્વક હાથ જેડી રાજ હોયએ, હેઠુનીદ્રા! લાર  
યૈવનમાં આપને દીક્ષા દેવાનું શું કારણ બન્યું? મુનિ હોયા,  
સંસારમાં વૈરાગ્યનાં કારણ તહારા માટે પણ બહુ સુલભ છે. પરંતુ  
હાલમાં તહારે ચારિત્ર રોધક-આવરણ કર્મ બાકી રહ્યું છે. વળી  
અમારા મત થહુણું કરવાનું કારણ પણ તું સાંભળ. કદાચિત् તે  
શ્રવણ કરવાથી તહુને પણ વૈરાગ્યબાવ પ્રગટ થાય. માટે અહીં  
કથન કરવું ઉચિત છે.

ઉપરનના વિભાગોથી રમણીય છે પ્રહેશ જેના એવી જગતું  
પ્રસિદ્ધ રત્નપુરી નગરી છે. તેમાં રત્નચૂડ  
વૈરાગ્યનું કારણ. રાજ છે. તે અમાવાસ્યાની રાત્રીએ સર્વ  
પાપ કાર્યથી મુક્તા થઇ પોતાની રાણીએનો  
પણ ત્યાગ કરી. એકાકી આવાસલવનમાં આનંદપૂર્વક સુખ  
શર્યા ઉપર એડો હતો, તેટલામાં દીવાના શિખા તરફ તેની દાખિ  
ગઈ, ચંચલ વૃત્તિવાળું એક પતંગીયું દીવામાં પડવાની તૈયારો  
કરતું હતું. તે જોઈ રાજને બહુ દ્યા આવી. અરે! આ બિચારં  
અજ્ઞાનથી મૂઢ બની દીવામાં પડી પોતાનો હેઠ છોડી હેશે. એમ  
જાણી રાજને બુદ્ધા હાથે તેને બહાર મૂકી દીધું. ઝરીથી પણ  
તેજ પ્રમાણે તેનો બગાવ કર્યો. એમ પાંચ વખત તેનો ઉદ્ધાર  
કર્યો, છતાં પણ દીપ સાથે બંધાયેલો પતંગીયાનો પ્રેમ ક્ષીણ  
થયો નહીં. પછી રાજને વિચાર કર્યો કે, ઉપાયવડે રક્ષણ કરા-  
યેલો પ્રાણી સો વર્ષ જીવી શકે છે એ વાત લોકમાં પ્રસિદ્ધ છે.  
તેથી એની રક્ષા માટે કોઈ પણ ઉપાય કરં. વળી જે આ પતં-

( ४२० )

श्रीसुपार्थनाथचरित्र.

गेनो अचाव हुँ करी शकीश तो वैद्य लोडो मंत्र, तंत्र अने औषधोवडे प्राणीओने भूत्युना सुखमांथी ज्ञवाडे छे ए वात नक्की जाणुवी, अने कहाचित् आ नहीं ज्ञवे तो जगत्मां कौहितुँ पछु भरणु निवृत्त थतुँ नथी, ए वात निर्विवाह थयो. एम विचार करी राजाए चारे तरह छैषि फैरवी तो त्यां सुद्देश पडेदो एक डाढो तेना जेवामां आ०यो. पछी ते पतंगने लध डाढ़ानी अंदर भूकी हांकल्युँ खंध करी चोतानी पासे भूकी निश्चिंत-पछु राज सुध गयो.

**राज निद्रामांथी जगी उछ्यो** अने तरतज तेने सभरणु थयुँ के, डाढ़ामां ते पतंगीयानुँ शु थयुँ हुशो ?  
**पतंगनुँ भरणु.** एम जाणी डाढो उधारीने ज्ञुचे छे तो पतंगीयुँ हीठु नहीं अने रत्नना प्रकाशथी अहु शोध करतां तेनी अंदर एक धरोणी छुपाई गयेली तेना जेवामां आवी ! ते उपरथी राजने निश्चय थयो के, ज्ञदर आ धरोणी तेने गणी गर्छ. अहो ! स्वल्पावथीज आ संसार क्षणमां दृष्ट अने नष्टप्राय छे. कारणु के, रक्षणु माटे एने डाढ़ामां नाख्युँ. परंतु धरोणीनुँ क्षय नीवडयुँ. वणी लोगव्या शिवाय करेला कर्मनो क्षय थतो नथी. तेमज संसारी प्राणीचे पूर्व जन्ममां जे कर्म उपार्जुत कर्युँ होय तेनुँ इल तेने मर्ज्या विना रहेतुँज नथी. वैद्य लोडो मंत्रादिकी शक्तिथी औषधोवडे उपचार करे छे, परंतु प्राचीन कर्मने हडाववा माटे तेओ अशक्त होय छे. कारणुके, आ पतंगीयुँ भेडँ डाढ़ामां प्रत्यक्ष नाख्युँ हुतुँ. छतां धरोणी गणी गर्छ. भूत्युथी केणु बचावे ? माटे आ चराचर जगत्मां ज्ञवोने धर्म शिवाय धीजुँ कौध शरणु नथी. पूर्वी-पार्जुत पोताना कर्मथीज सुख हुँध आवी मणे छे. छतां पछु अत्यंत राग अने द्रेष्ठी विभू८ बनी धर्मकियामां शिथिल

નંદવાણીકથા.

( ૪૨૧ )

થયેલા આ લોડો ગૃહવાસાદિક ઉદ્ઘોગોને કેમ છોડતા નથી ? એમ વૈરાગ્ય માર્ગે પ્રવૃત્ત થયેલા રત્નચૂડ રાજને કર્મનો ક્ષયો-પશમ થવાથી જાતિસ્મરણ જાન થયું. તેથી તેને પૂર્વ ભવતું જાન થયું અને જે પ્રથમ ભણ્યો હતો તેનું પણ સ્મરણ થયું.

**ત્યારખાદ ચારિત્રનું** આવરણ પણ દૂર થઈ ગયું, અને સાંસારિક હુંખથી વિમુક્તા થઈ તે રાજને પંચ મુખ્ય મુનિવેષધારણ. લોચ કર્યો. પછી પોતાની મેળેજ સર્વ સાવધ કર્યોનો સર્વથા ત્યાગ કર્યો. ૧૧૧૬ વેત વસ્ત્ર પહેરી શરફૃતુના વાઢળ સમાન તે મુનીદ્ર શોભવા લાગ્યા. પછી સમીપમાં રહેલા દેવતાએ તે સમયે મુનિ માર્ગ બતાવવા માટે તે મુનિને ચારિત્રનાં ઉપકરણ આપ્યાં. જેમકે-૧૧૧૬ વેત કાંતિમધ્ય, નિર્મિત, શાસ્ત્ર વિહિત પ્રમાણ યુક્તા, બહુ પાપકૃપી ધૂળને દૂર કરનાર અને ભાવ્ય પ્રાણીઓના હૃદયને આકર્ષણ કરનાર, ભાવ્ય રનોહરણ ( આદ્યો ) અને બીજી મુખ્યવસ્ત્રિકા ( મહુપત્રી ) તેમજ પાત્રાદિક ખીંડાં સાત ચિન્ડો અર્પણ કર્યાં. એમ એકંદર નવ પ્રકારની ઉપધિ સહિત રત્નચૂડ મુનિ પ્રત્યેક યુદ્ધ થયા. પછી પ્રભાતકાળનો સમય થયો જાણી દ્વાર ઉધાડીને ગુહામાંથી સિંહના આગકની માઝક તે ઘરમાંથી બહાર નીકલ્યા.

**ત્યારખાદ** તેવા વેષધારી રાજને જોઈ શયનપાલિકા એકદમ ઓલી, હે સ્વામિની ! હોડો, હોડો ! આ રાણ્ણીઓની તમહારા સ્વામી ૧૧૧૬ વેત વસ્ત્ર ધારણ કરી એકાડી ઘરમાંથી બહાર જાય છે. તે સાંભળી સંભ્રમ સહિત અંતઃપુરની સમય કીએ મુનિની પાછળ દોડવા લાગી. અને મુખેથી કર્દણું સ્વરે પોકાર કરવા લાગી. ચરણુંની ગતિ પ્રાર્થે મંદ પડી ગઈ. વળી ચરણોના

( ४२२ )

श्रीसुपार्खनाथयदिति.

आधातथी अंजरना शण्हो संभगाबा लाभ्या. तेमજ हरेकना केशपाश छुटी जवाथी दृष्टिरेखक थध्य पड्या. अने तेच्यो प्रार्थना करवा लागी के, हे स्वामिन् ! आप दयाणु छो. वणी जगद्रक्षक अने शरणुहायक छो. अमारे शो अपराध थयो छे ? जेथी सहसा अमने त्यल दीधी. तेमज निरंतर विलास सहित विलासिनी-ओनी नभश्रेष्ठीथी उछेदेलो. अने भ्रमराओनी पंक्ति समान स्थाम कांतिवाणो. आपनो केशकलाप डोणे उचित्क झर्यो ? वणी कपूर, कस्तूरी अने चंदन समान अति सुंहर ऐवा आ वा-सक्षपनमां आ तर्पिणी ( तुंभी ) आपने क्यांथी मणी ? उद्धर शत्रुओने विहारवामां दक्ष अने तेजस्वी तरवार तंडारा हस्त कमलमां शोभती हुती, तेना स्थानमां आ उननी दशीओने अनुचित रजेहरणु उचांथी आऽयो ? ए प्रभाणे प्रलाप करती पैतानी खीओ. अने मंत्रीओ. तरइ सिंहावलोडन तरीके पण्यु, मुनिए किंचित् भाव दृष्टि करी नही. हे नरेंद्र ! जेतुं यरित आ प्रभाणे झें कहुं, तेज मुनि हुं पोते छुं. ते सांखणी राजा ऐव्यो, आ जगत्मां तमेज कुतार्थ अने पुष्य-वान् गण्युओ. कारणु के, भाव आटला कारणुथी तमने वैराग्य रंग प्रगट थयो. वणी झें निर्वेद्वानां कारणो. अहु जेयां तोपणु हे स्वामिन् ! पापस्थानोमां झारी प्रवृत्ति अहुज रह्या करे छे. माटे हे सुनीद ! दया करी भुने योग्य धर्मनी हेशना आपो. मु-निए बन्ने प्रकारना धर्मनुं स्वदृप कहुं. पाणी राजाए विधिपूर्वक शुद्धीधर्मनो स्वीकार कर्यो. तेमज सुंहर अने नंद वृष्णुके अतिथि संविलागनुं त्रत लीधुं. त्यारबाह राजाए छस्तिनुं वृत्तांत पूछ्यु. मुनि ऐव्यो, ते वात हुं अदेवर जाणुतो. नथी. परंतु भद्रक भावथी ऐणे झुने प्राण्याम कर्यो छे.

त्यारबाह आअवृक्षमां रहेलो यक्ष त्यां प्रगट थध्य ऐव्यो,

नंदविष्णुकीकथा.

( ४२३ )

**ओक्यक्ष.** आ हाथीने मुनिनां दर्शन थवाथी जति-  
स्मरण ज्ञान थयुं, तेथी ते प्रतिषेध  
पार्येहो. कारणुके, पूर्वजीवमां आ गृहुतथी-  
लावे मुनिनो। छत्रधर हुतो. त्यांथी पोताना स्वाभिनो विषेश  
थवाथी भरीने विध्याचयगमां हुस्ती थयो. बाढ विध्याचयलना न-  
लुक्ना पर्वतमांथी गजभंधकोऽये अने पकडयो अने त्हारी पासे  
कावी वेळ्यो छे. ए प्रभाणे सांबणी मुनिये पण्य जेना हुहयमां  
वैराग्यभाव रभी रह्यो छे अवा हुस्तीने क्षुंडे, सम्यक्त्व सहित  
देशविरतिने तुं थ्रहुणु कर ! पछी हुस्तीये पण्य ते प्रभाणे अन्ने  
प्रत आपपूर्वक अंगीकार कर्यां. त्यारभाद राज मुनिने नमस्कार  
करी हुस्ती सहित पोताना स्थानमां गयो. तेमज सुंदर अने  
नंदश्रेष्ठी पण्य पोतपोताने घेर गया, त्यारभाद पोताना नियम  
प्रभाणे धर्ममां उद्यम करे छे.

**अन्यदा बहु गुणुरत्नोना निधान समान 'शांतमूर्ति'** गुणु-  
यं द्वसूरि परिवार सहित उद्याननी अंदर  
**गुणुयंद्रसूरि.** पवित्र स्थणमां पधार्या. तेमने वंदन करवा  
माटे नरेंद्र साथे सुंदर अने नंद अन्ने उ-  
द्यानमां गया. अने लक्ष्मि पूर्वक वंदन करी तेओ. विनय पूर्वक  
ऐठा. सूरिये धम लाभ आपी देशनानो आरंभ कर्यो. शुद्ध धर्म  
सांबणी कृतीथी प्रणाम करी तेओ. पोताना स्थानमां गया. पछी  
आजे दिवसे सुंदर वणिक बहु विनयपूर्वक वंदन करी मुनियोने  
निमंत्रणु करी पोताने घेर लाई गयो. पछी सूरिमहाराज पोताना  
परिवार सहित त्यां उनप्रतिमायोने वांदवा माटे गया. प्रभुवं-  
दन करी सूरीक्षरे आसन उपर ऐसी नैनधर्मनी व्याख्या करी.  
पछी सुंदरे प्रणाम पूर्वक विनति करी के, हे मुनीद ! त्हारी उ-  
पर कुपा करी वसा, पात्र, लोकन विगोरे योग्य वस्तु थ्रहुणु करो.

(૪૨૪)

શ્રીસૂર્પાદેનાથગરિત્ર.

સૂરિ બોલ્યા, જે દોષ રહ્નિત હોય તેજ વસ્તુ શુદ્ધ ગણ્યાય છે. વળી તે દોષ એવા છે કે, જે સુનિ માટે વણ્ણાવેલું નહોય, ખરીદેલું પણ ન હોવું જોઈએ, અન્ય લોકોએ લીધેલું ન હોવું જોઈએ, તેમજ હરણું કરેલું અને ઉચ્છેદ ( બલાત્કાર ) વિનાતું જે હોય તે વસ્તુ સુનિઓને કહેયે છે. તે પ્રમાણે પાત્રાદિકની શુદ્ધિ બતાવીને પોતાને જે ઉપરોગી હતું તે લીધું. પછી સૂરિમહારાજ ત્યાંથી ચાલ્યા, સુંદર વણ્ણિક પણું શુરૂની પાછળ ચાલ્યો. સૂરિમહારાજ ઉધ્યાનમાં ગયા. બાદ સાધુઓને વિભાગ કરી સર્વ વસ્તુઓ વહેંચી આપી.

**હવે સુંદર વણ્ણિકની વાત નંદના સાંભળવામાં આવી. એટલે**  
**નંદવણ્ણિક.** તે પણ બીજે દિવસે શુરુ પાસે ઉધ્યાનમાં ગયો. અને મત્સર ભાવથી વિનતિ કરીને શુરૂમહારાજને ત્યાં બોલાવી લાવ્યો. વળી

પોતાના મનમાં ભાવના ભાવવા લાગ્યો કે, પ્રથમ મહેં સુંદર શ્રેષ્ઠીને સર્વ પ્રકારે જીત્યો છે. છતાં તે અધમ. વસ્તુ, પાત્ર અને લોજના-દિકથી શુરૂની ભક્તિ કરે છે, તો શું એનાથી હું અશક્ત હું? એમ જાણી શુરૂના ચરણુમાં પડી બહુ વસ્તુ, પાત્ર વિગેરે શુદ્ધ વસ્તુઓ અર્પણ કરી બોલ્યો, પલુ! મુહારી ઉપર કૂપા કરો. આ વસ્તુાદિક સર્વ નિર્દેખ છે. માટે આપને જોઈએ તે પ્રમાણે અ-હણું કરી મુને કૂતાર્થ કરો. સૂરિએ પણ તહેનો અભિપ્રાય નહીં ભાગ્યતાં તેના આઘ્યાથી વસ્તુાદિક અહણું કર્યાં. પછી સૂરિએ ધર્મદેશના આપી. જે બૃહદ્યો શાસ્ત્ર વિધિ પ્રમાણે સુનિઓને ભક્તિપૂર્વક વસ્તુ આખધાહિક હાન આપે છે, તેઓ સર્વત્ર સુખી થાય છે. વળી ભાગ્યશાળી એવા ધનાદ્ય પુરુષો અનિત્ય અને અસ્થિર એવું પોતાનું ધન જૈનધર્મ અને ધાર્મિક જનોમાં હું મેશાં અરચે છે. અને તેથી તેઓ જન્માંતરમાં સુખી થાય છે. તેમજ જે પુરુષો પોતે ઉપાર્જન કરેલા ધનવડે ઉદ્ઘાસ ભાવથી ઉ-

नंदविष्णुनीकथा.

( ४२५ )

तम पुढेओना पछु हुद्यमां चमत्कार उत्पन्न करे छे. तेहो अक्षय  
बैक्षण मेणवे छे. विग्रहे देशना सांखणी नंदश्रेष्ठीचे सूरिने वंडन  
कर्या. अने केटलांक उगलां तेमनी पाढण गयो. पधी मुनियो  
उद्धानमां गया. अने नंद पोताने घेर आळयो. हवे तेणु भत्सर  
आवथी दान कर्यु तेथी तेने अतिचार लाग्यो. एटले तेणे दानतुं  
इण भजयुं नही. त्यारभाद ते नंदश्रेष्ठी भरणु पाभी व्यंतरहेवोमां  
उत्पन्न थयो. त्यांथी नीकणी केटलांक अव अहुणु कर्या खाद मनुष्य  
अव पाभी चारित्रपद अहुणु करशे. अने अनुकमे ज्ञान मेणवी  
भेक्षसुभ पछु पाभये. वणी सुंदरश्रेष्ठी सरल प्रकृतिने लीघे तेज  
अवमां चारित्र पाणी निर्बाध स्थानमां सुभ पाऱ्ये.

**इत्यतिथिसंविभागव्रतपञ्चमातिचारे नन्दकथानकं समाप्तम् ॥**

तत्समाप्तौ श्रीमछ्यमणगणिविरचितप्राकृतपद्यवन्ध श्रीसुपार्श्वजिन-  
चरित्रस्य श्रीसकलसूरिपुरन्दरायमाण परमगुरु तपागच्छाधिराज  
शास्त्रविशारदजैनाचार्य योगनिष्ठाध्यात्मज्ञानदिवाकर श्रीमद्-  
बुद्धिसागरसूरिशिष्य प्रसिद्धवक्तेतिलब्धव्याति व्याख्या-  
नकोविदजैनाचार्य श्रीमद् अजितसागरसूरिकृत गु-  
र्जरभाषानुवादे प्रभुदेशनाप्रबन्धे सद्ष्टान्तातिचार  
व्याख्योपेतानि द्वादशव्रतानि समाप्तानि ।

—\*—

( ४२६ )

श्रीमुपार्थनाथयरित्र.

## મલયંદ્રની કથા.

### સંદેખના.

દાનવીર્ય રાજાએ મુસુકુ જનોના હિતમાટે પ્રશ્ન કર્યો કે, હે પતિત પાવન ! હે તૈલોક્ય બંધુ ! યતિ અને શ્રાવકધર્મનું સ્વરૂપ સવિસ્તર આપે સંલગ્નાંયું તેમજ દરેક પ્રતના અતિચાર પણ દૃષ્ટાંત સહિત કલ્યા. તે પ્રમાણે હવે અંત સમયમાં સમાધિ પુર્વક ભરણ થાય તેવો વિધિ ખતાવીને અમને કૃતાર્થ કરો. શ્રી સુપાર્થપ્રભુ ઐત્યા, હે ભૂપાલ ! જે શ્રાવકે ખાર પ્રત અંગીકાર કરી વિધિ સહિત પાછાં હોય તેણે ઉપયોગ પુર્વક અંત સમયમાં સમાધિ ભરણ માટે સંદેખના કરવી. વળી તે સંદેખના આગમશાસ્ત્રમાં દ્રોધ અને ભાવવડે જગ્ઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ એમ એ પ્રકારની કહી છે. તેમાં તે પ્રમાણે પ્રવૃત્તિ કરવી. વળી વિધિ પુર્વક સિદ્ધ કર્યો છે ઉત્તમ અર્થ જેણે એવો જે પ્રાણી કૃતાર્થ થઈને કાળ કરે છે, તે મલયંદ્રની માઝુક સ્વર્ગ સંપત્તિ પામી અક્ષય સુખ મેળવે છે.

આ ભરત ક્ષેત્રમાં સિદ્ધાર્થ નામે સુપ્રસિદ્ધ એક નગર છે. જેની અંદર કાવ્યોમાં અને સરોવરોની મલયંદ્ર દૃષ્ટાંત. પાળીમાંજ બંધ રહેલો છે. પણ અન્યમાં નથી. તેમ ધર્મ કાર્યમાં ચિંતા, મુનિઓ અને સજજનો ઉપર રાગ, દાન આપવામાં વ્યસન અને વિશાગ વિતાસવતી સ્થીએના કેશ પાશમાંજ રહ્યો છે. અન્યત્ર નથી. તેમજ તે નગરમાં સંપૂર્ણ છે કલાચો જેની, પરિપૂર્ણ છે મંડળ જેનું, સજજનદ્રોપી કુમુહોને આનંદ આપનાર અને નિવૃત્ત કર્યો છે શત્રુ રૂપી અંધકારનો સમૂહ જેણે એવા ચંદ્રની

મહાસેન રાજ મલયચંદ્રનીકથા.

( ૪૨૭ )

પેઠે, મહાસેન નામે રાજ રાજ્ય કરે છે. ઉજ્જ્વલ પચોધર ( મેઘ-  
સ્તન ) વડે વર્ષાર્ડતુ સમાન, સુંદર શ્રવણુ ( ધાન્ય ) વડે વસંત  
રૂતુ સમાન અને નિર્મિત આકૃતિવડે શરદીરૂતુ સમાન પ્રીતિમતી  
નામે તેની ખી છે, અને મિત્રરૂપી કમળાને ઉદ્ઘાસ આપવામાં  
સ્ફુર્ય સમાન મલયચંદ્ર નામે સમાન વયનો તેનો મિત્ર છે. વળી  
તે દરેક કાર્યમાં પ્રમાણુભૂત ગણ્યાય છે.

એક દિવસ મહાસેન રાજ પોતાના મિત્ર સહિત સ્વારી સાથે  
બહુર કુરવા નીકળ્યો. ત્યાં આગળ રાજ અને

**મહાસેનરાજ** મલયચંદ્ર બહુ અહેપવાળા પવનજ્ય અને પ-  
વનાશન નામે અસ્થો ઉપર હેઠેલા હતા, અને  
અસ્થે દમનની ગતિવડે તેઓને જેસથી ચલાવતા હતા, એમ એક  
પ્રભુર થઈ ગયો એટલામાં ઘોડાઓ. બહુ કોધમાં લરાઈ ગયા  
તેથી અવગા માર્ગ ચાલતાં ચાલતાં ઘોર વનમાં જઈ પહોંચ્યા.  
અસ્થો જાલ્યા પણ રહેતા નથી. જેથી સર્વ સૈનિક લોકો પણ  
બહુ પાછળ રહી ગયા અને પોતાના સીમાડા સુધી આવ્યા  
એટલે બહુ કુધા અને તૃપાથી થાડી ગયા છતાં પણ બહુ મુશીખતે  
રાજની શોધમાં તેના પગલે પગલે ચાલતા હતા.

ત્યારણાદ ઘણ્યો માર્ગ ઉદ્ઘાન કરવાથી તેમજ સ્ફુર્યના  
તાપથી પીડાયેલા ઘોડાઓ પણ બહુ થાડી

**મુનિદર્શન.** ગયા તેથી તેઓની ગતિ પણ બહુ ધીમી  
પડી ગઈ. એટલે રાજ અને મલયચંદ્ર  
અને નીચા ઉત્તરી પડ્યા કે તરતન ઘોડાઓ પૂછવી ઉપર પડી  
ગયા. પોતાના અધિપતિને ત્યાગ કર્યો એમ જાણી પ્રાણ્યોએ  
પણ તેમને ત્યારુ દીધા. ત્યારણાદ તૃપાતુર હોવાથી રાજ બોલ્યો,  
હે મલયચંદ્ર ! કોઈપણ સ્થળોથી શુદ્ધ પાણી લાવ. હવે જળ વિના  
પ્રાણ રહે તેમ નથી. મલયચંદ્ર પાણીની શોધ કરતો કેટલોક

( ४२८ )

श्रीसुपार्थनाथ चरित्र.

मार्ग चाली नीकलयो. तेवामां त्यां वर्षाद्दत्तुना भेघना गर्जस्वने अनुसरती भनुष्यनी वाणी तेना सांखणवामां आवी. पछी तेना अनुसारे तपास करतो. ते आगण चालयो एटले शुद्ध लूभि उपर ऐठेला अने सिंह, नकुलादिकथी वीटायेला तेमज मधुर ऐवनिवडे स्वाध्याय करता एक मुनिवर तेनी दृष्टिगोचर थया. तेमने नमस्कार करी मलयचंद्र ऐवयो, हयालु एवा हे भगवन् ! अहीं कोईपणु जग्याचे ज्वालाशय ठेण तो झुने खतावो. कारणु के, अधिथी हुरणु करायेलो. महासेन राजा वननी कुंजमां खडु तृष्णातुर थर्ड पीडा पाचे छे. मुनिये कंडू पणु उत्तर आप्यो नहीं. तेटलामां राजानुं नाम सांखणवाथी एक मृगलीने जाति स्मरणु ज्ञान उत्पन्न थयुं. तेथी ते मृगली संकेत करीने मलयचंद्रने पोतानी साथे लक्ष चाली. अने ज्यां सरोवर हतुं त्यां गर्द. पछी कुमलपत्रोना पडीचो. करी तेमां पाणी लरीने मृगली सहित मलयचंद्र राजा पासे गयो. पछी जग्यान करी महासेन राजा सृष्ट्य थर्ड ऐवयो, हे भित्र ! आ मृगली अहीं क्यांथी आवी ? मलयचंद्र ऐवयो, एक मुनींद्र पासे आ ऐठी हती. वणी हयालु एवी आ मृगलीचे झुने पाणी खतावयुं. ते सांखणी राजाचे पृथिव्युं के, ते मुनींद्र क्यां छे ? चालेला, तेमनां दर्शन करीचो. एम कही भित्र सहित राजा मृगलीने साथे लक्ष मुनि पासे गयो. अतिशय अकितारसमां निमग्न थर्ड राजाचे मुनिने नमस्कार कर्यो. मुनिये धर्मलाभ आपी राजने उद्देशी अन्ने प्रकारनी कैन धर्मनी देशनानो प्रारंभ कर्यो. मृगली अने भित्र सहित महासेन राजा सावधान थर्ड सांखणवा लाग्यां.

योऽय सुमये राजाचे प्रश्न कर्यो, हे मुनींद्र ! आ मृगली पणु मृगली अने राजा झुने स्नेहकाव कैम खतावे छे ? अवधि-  
नो संध्यें. राजावडे मृगलीना पूर्व भवतुं अने राजना वर्तमान भवतुं स्वदृप जाणी मुनिये ध-

મલયચંક્રનીકયા.

( ૪૨૬ )

નેનો સંબંધ અતાંયો કે-રાજન ! તહારા મનડપી સુંદર ઉદ્ઘાનમાં કામડપી અરોકવૃક્ષને જિંયન કરવામાં ગાઠ સ્નેહ કંળથી પૂર્ણ ભરેલી નોક સમાન આ મૃગલી અંધુમતી નામે તહારી સ્ત્રી હતી. એક દિવસ તેણો પરીક્ષા કરવા તેં પોતાના વાસભવનમાં તેણીને યોદાવી. પછી તેણીની સાથે ક્ષણુમાત્ર વાતચિત કરીને તેને વદાય કરી. ત્યાંથી તે નોકળી આ ઉપવનમાં આવી, અને વિચાર કરવા લાગ્યી કે, આ હુનીયામાં પ્રિય સમાગમનાં સર્વ સાધનો હુંખદાયક છે. વળી જે ખીને પતિનો સંગ ન થયો હોય તે સ્ત્રી નિરંતર સ્વસ્થ દર્શામાં રહે છે. તેમજ જેઓની બુદ્ધિ અપમાનદાયક એવા વિષય સુખથી વિમુખ થયેલી છે અને જેમનું પાપ શાંત થયું છે એવી બાદ સાધ્વીઓને ધન્યવાહ ધરે છે. તેમજ જેઓ પ્રેમ, પ્રિય વિરહ અને વિષય તૃપ્તિઓને બીલકુલ ગણુંતી નથી તેવી પ્રાણીયર્થ ધારક સાધ્વીઓને વારંવાર નમસ્કાર ! વળી તીવ્ર તપશ્ચર્યા રૂપી તાપથી તર્ફી ગયેલા જેમના શરીર રૂપી ઘરમાં બળવાના બયથી કામદેવે સર્વથા પ્રવેશ કર્યો નથી તેવી સાધ્વીઓનો જરૂર સફ્લ છે. જેણીઓ પ્રિયપતિનો સમાગમ સર્વથા ત્યજયો છે તેજ આ જગતમાં પુષ્યશાળી ગણ્ય છે. પૃથ્વીપર ભ્રમણ કરતી જે સાધ્વીઓના હૃદ્યભવનમાં કોઈ વહ્યસે વાસ કર્યો નથી તેઓ વનવાસમાં પણ નિરંતર સુખેથી સુધ રહે છે. વળી જેઓ સર્વદા સર્વ અવસ્થામાં આનંદથી કાલ નિર્ગમન કરે છે તેમને સવિનય નમસ્કાર છે. આ હુનીયાનો પ્રેમ ચંચલતાને લીધે પવનથી ઉછળતા સસુદ્ધના તરંગોમાં પ્રતિભિંબિત થયેલા ચંદ્રમંડળને અતુસરે છે. જે ડાહા પુરુષો દૂર અને પરોક્ષ શુલ્ક અને અશુલ્ક એવી બ્રહ્માની ગતિને જાણે છે, તે પણ પ્રેમ ગતિમાં વિમૂઢ થર્થ જય છે. રે પાપિષ્ઠ દૈવ ! અમૃતાર ગાઠ સ્નેહને તોડાવનાર એવા રહુને અમૃતરસમાં

( ४३० )

श्रीसूपार्थनाथवरित्र.

વિષ નાખવાથી શો લાલ થયો ! એ પ્રમાણે પ્રચંડ હુંખમય  
વચનોને વારંવાર ઉચ્ચારતી બંધુમતી છાતી કૂટીને ઈધર્યથી મરણ  
પામી. જેથી આર્તિધ્યાનને લીધે આ બિચારી અહીં મૃગલી થઈ  
છે. માટે રહાડું નામ સાંભળવાથી એને જાતિસ્મરણ જાન  
પ્રગટ થયું.

એ પ્રમાણે મૃગલીનો પૂર્વભવ સાંભળી રાજ બોલ્યો,  
સુનીદ ! આપણું વચન સત્ત્ય છે; પરણું  
સમ્યકૃતવસ્વરૂપ. આ બાયતમાં રહુને જે પાપ લાગ્યું તેની  
શુદ્ધિને માટે ઉપાય બતાવો. સુનીદ બોલ્યા,  
જૈનધર્મ સિવાય થીને કોઈ ઉપાય નથી. મહાસેન રાજ બોલ્યો,  
ભગવન् ! જૈનધર્મનો રહુને ઉપદેશ આપો. સુનિ બોલ્યા, યતિ  
અને શ્રાવકના લેદથી જૈનધર્મ એ પ્રકારનો છે. તેમાં ક્ષમાદિ  
ગુણોએ કરી યતિધર્મ દશ પ્રકારનો છે અને ગૃહસ્થધર્મ સમ્ય-  
કૃત્વાદિ બાર પ્રકારનો જીનેંદ્ર ભગવાને કહ્યો છે. વળી જીવાદિ  
પદાર્થીની શ્રદ્ધારૂપ એક પ્રકારનું સમ્યકૃતવ કહ્યું છે. તેમજ દ્વાય  
અને ભાવ તથા નિક્ષેપ અને વ્યવહારથી તે સમ્યકૃતવ એ લેદે  
નાણું. વળી અધિગમ, નિસર્ગરૂપ તે પુષ્પગલ પરિણામથી નાણ  
પ્રકારનું કહ્યું છે અથવા ક્ષાયિક, ક્ષાયોપશમિક અને ઔપશમિક  
તેમજ કારક, રોચક અને દીપક એમ ત્રણ પ્રકારે પણ કહ્યું છે.  
તેમાં સાસ્વાદન ઉમેરવાથી ચાર લેદ અને વેદક ઉમેરવાથી પાંચ  
પ્રકારનું નાણું. કારણું પ્રજાપનાસૂત્રમાં નૈસર્ગાદિ તેના દશ લેદ  
કહ્યા છે. જેમકે-નિસર્ગ, ઉપદેશ, આજા, સૂત્ર, ધીજ, અભિગમ,  
વિસ્તાર, કિયા, સંક્ષેપ અને ધર્મરૂપિ. એ પ્રમાણે વિસ્તારથી  
સમ્યકૃતવના લેદ કહ્યા બાદ સંદેખના પર્યત ગૃહિધર્મ કહ્યો.

ત્યારખાદ રાજાએ પ્રશ્ન કર્યો કે, સુનીદ ! સંદેખનાનું સ્વરૂપ

अलयचंद्रनीकथा.

( ४३१ )

**विस्तारपूर्वक कहो।** मुनींद ऐत्या, उत्कृष्ट  
**उत्कृष्टसंलेखना।** संलेखनानुं प्रभाणु भार वर्षनुं छे. तेमां  
 प्रथम चार वर्ष सुधी छहु अहुमादिक तप-  
 श्चर्या करवी अने धृतादिक विकृतिचेवडे पारणुं करवुं. पछी  
 थीज चार वर्ष सुधी प्रथमनी भाइक तपश्चर्या करवी; परंतु  
 पारणुमां धृतादिक विगचोनो त्याग करवो. नवमा अने दशमा  
 वर्ष एकांतर करवां अने पारणुना हिवसे आंगेल करवुं. पछी  
 अग्नीयारभा वर्ष प्रथम छ मास सुधी भैयम तप करवुं अने  
 परिमित ( उष्णाहरी ) आंगेलथी पारणुं करवुं. बाडीना छ मासमां  
 अहुम आहि तपश्चर्या करवी अने पारणुना हिवसे धृच्छा प्रभाणु  
 आंगेल करवुं. त्यारणाह भारभा वर्षमां आंगेल करवां; परंतु  
 छेत्वा चार मासमां तेलथी एकांतरे केगणा करवा. कारणुके मुख  
 पवनथी सुकार्ध जय नही. “ भारभा वर्षमां हुमेशां आंगेल  
 करवां तेमां प्रतिहिवसे लोजनना केणीया ओछा करतां करतां  
 एक क्वल सुधी आववुं. पछी ते क्वलमांथी कणीयाच्चा ओछा  
 करतां करतां छेवटे एक कणीया सुधी आववुं. जेथी हीवामां  
 रहेत्वा तेल तथा हिवेटनो जेम समकाले नाश थाय छे तेम शरीर  
 तथा आयुष्यनो सनकाले नाश थाय. वणी ते भारभा वर्षना  
 छेत्वा चार मास आडी रहे त्यारे एकांतरे तेलना केगणा भरी  
 धाणीवार मुखमां राखी राखमां नाही हेवा. त्यारणाह मुखशुद्धि  
 माटे उना पाणीना केगणा करवा. कारणुके एम करवामां न आवे  
 तो मुख हुझुं पडीने बीडार्ध जय तेथी नवकार मंत्रनो उच्चार  
 थाई शके नही. ” आ प्रभाणु उत्कृष्ट संलेखना कही छे.

**जघन्य संलेखना** छ मासनी कही छे. हवे ते जन्नने संलेख-  
**जघन्यसंलेखना।** नाचोमां पांच अतिचार कड्डा छे. जेमके-  
 आलोक, परलोक, जुवित, भरणु अने

( ૪૩૨ )

શ્રીમુપાર્થનાથચરિત્ર

લોગ સંભંધી આશંસા કરવાથી સંલેખના કરનાર મનુષને તે પાંચ અતિચાર લાગે છે. રાજા એલ્યો, હે સુનીદ્ર! આ અતિચારોનું સ્વરૂપ રહેને સમજાવો. સુનીદ્ર એલ્યો, આલોકમાં શેડ, અમાત્ય, રાજા કે ચક્રવર્તી થવાની જે ધ્રમણા કરવી તે આલોક આશંસા કહેવાય. સુરેંદ્ર, શકેનો સામાનીક કે બૈવેયક દેવ યાઉ એવી જે ચિંતા કરવી તે પરલોક આશંસા. તેમજ અનશન કરીને પણ જે લાંબો વખત લુધવાનું ધ્રમણે અથવા બોકેના સુખથી પોતાની પ્રશંસા સાંભળી પૂજનાદિકની ધ્રમણ કરે તે લુધિત આશંસા કહેવાય. વળી અનશન કર્યા બાદ જીવને લીધે હુઃખથી પીડાઈને જલદી જે મરણની ધ્રમણ કરવી તે મરણ આશંસા કહેવાય. વળી અનશન કરીને તપશ્ચિર્યાના પ્રભાવથી દેવ અથવા ચક્રવર્તીના લોગોની જે પરલબ્ધમાં વાંચ્છા કરવી તે લોગ આશંસા કહેવાય. આ પ્રમાણે પરમપદની ધ્રમણવાળા મનુષ્યોએ અનશન કર્યા બાદ પ્રમાદરહિતપણે પાંચ અતિચાર વર્જબામાં અયતન કરવો. આ પ્રમાણે સાંભળી મૃગદી અને મલયચંદ્ર સહિત મહાસેન રાજાએ સમ્યક્તવ સહિત દેશવિરતિ ધર્મનેં સ્વીકાર કર્યો. હું તે મૃગદી અનુક્રમે કાળ કરી સૌધર્મ દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થશે.

**ત્યારબાદ સર્વત્ર શોધ કરતા રાજના સૈનિકો ત્યાં આવી પહોંચ્યા. એટલે મહાસેન રાજ પણ ભિત્ર મહાસેન રાજ પણ ભિત્ર લાવના.**

સહિત સુનીદ્રને નમસ્કાર કરી સૈન્ય સાથે પોતાના નગરમાં આવ્યો અને હુમેશાં ભિત્ર સાથે શાસનની ઉજ્જતિ કરતો મહાસેન બહુશ્રાપૂર્વક શાબક ધર્મ આરથે છે. એવામાં મલયચંદ્ર મહોદ્રા વ્યાધિથી ઘેરાધ ગયો, તેથી તેના હૃદયમાં એવી લાવના થઈ કે, મહારે અનશન જત અહંક કરવાનો આ સમય છે. મહાસેન નરેંદ્ર

મલયચંકનીકથા.

( ૪૩૩ )

પણ ત્યાં આવ્યો અને તેણે પણુ પ્રતિબાગરણુ ( સાવધાન રહેવા ) માટે સારી રીતે બોધ આવ્યો. પછી તેણે રાજને કહ્યું કે, હાલમાં મહારાજાની શરીર દોગથી બહુ લાર્ગ થઈ ગયું છે; માટે જે આપની આજા હોય તો હું અનશન પ્રત અહણુ કરું. રાજ બોધ આવ્યો. હાલમાં અનશન કરવાની જરૂર નથી. કારણુકે સારા વૈષ્ણોને બોલાવીને હું તહારો દેહ સાથ્ય ( સાનો ) કરાવીશ, તેમાં ડોઈ પ્રકારનો સંદેહ નથી. મલયચંદ્ર બોધ આવ્યો, હું રાજન ! મનુષ્ય જન્મ બહુ હુર્દાં છે, તેથી લુન વચ્ચાનાંદિક સામની ભેળવીને મનુષ્યોએ મોક્ષસુખ માટે ઉપશમ કરવો જોઈએ. આજે જે સુખ દેખાય છે તે કાલે સમરણ માત્ર રહે છે. એમ જાણી સુઝ પુરુષો ઉપદ્રવરહિત એવું મોક્ષ સુખ ઈચ્છે છે, મહેં સામાન્ય રીતે સમ્યક્તવાદિ શ્રાદ્ધધર્મ આરાધ્યો છે અને હાલમાં અનશન વિધિથી મરણુની ધ્યાચા રાખું છું. કારણુકે, પ્રતિક્ષણે અંજલિમાં રહેલા જળની માર્ગે બલ, વીર્ય, ઝુદ્ધિ, શુદ્ધિ અને આયુષ વ્યાધિવડે ક્ષીણ થાય છે. વળી હું સ્વામિન ! આપના પ્રસાદથી બહુ વખત સુધી મહેં લોગ સંપૂર્ણ લોગવી છે. લક્ષ્મી પણ સારી રીતે ભેળવી છે. વળી બહુ લાતનપાતન કરેલો. આ દેહ ડોઈ સમયે પણ એમને એમજ છોડવો પડશે. એમ તેએ પરસ્પર બોલતા હતા તેવામાં જેમની પાસેથી પ્રથમ ગૃહિધર્મ સ્વીકાર્યો હતો તેજ મુનિચંદ્ર ચારણ મુનિ આકાશ ભાર્ગ્વ ત્યાં આવતા દેખાયા.

મુનિને જોઈ રાજ બોધ આહો ! આજે પુષ્યને લીધે અકસ્માતું વાદળ વિનાની વૃદ્ધિ થઈ. એમ અનશનપ્રત. પ્રશંસા કરીને ભક્તિપૂર્વક વંદન કર્યા બાદ મુનીદ્રને મલયચંદ્ર પાસે તે લઈ ગયો. મલયચંદ્ર પણ વિનયપૂર્વક વંદન કરી સ્તુતિ કરવા લાગ્યો.

( ૪૩૪ )

શ્રીમુપાર્થનાબચરિત્ર

નિષ્કારણુ દ્વારા રસ્ત્રપ નહીના ઉજ્જત પર્વત સમાન એવા હે  
મુનીંડ ! અંગીકાર કરેલા મહાવત્રપી ભારને વહન કરવામાં  
ધૂરંધર એવા આપને વારંવાર નમસ્કાર કરું છું. મહારા પૂર્વ  
પુષ્યની પ્રેરણાથી આપ અહીં પદ્ધાર્યો છો. માટે હવે  
અનશનદાન આપી રહુને કૃતાર્થ કરે. મુનીંડ એલયા, હું પણ  
રહારો અવસાન સમય જાણી અહીં આવ્યો છું. માટે સુખેથી  
તું અનશનવત્ત અહું કર. પછી મલયચંદ્રે વિધિપૂર્વક અનશન-  
વત લીધું. ત્યારબાદ નિરતિચાર વિશુદ્ધપણે અનશનવત્ત પાળીને  
સમાધિપૂર્વક કાળ કરી તે ખાંદોકમાં ઉત્પજ્ઞ થયો.

બાદ મહાસેન રાજ ધર્મબંધુ એવા મલયચંદ મિત્રના  
રાજનો શોક. શોકમાં ગરક થઈ વિલાય કરવા લાગ્યો.  
પછી મુનિ એલયા, નરેંદ્ર ? હવે એમાં  
એહ કરવાનું કંઈ પણ કારણુ નથી. કારણુ કે જેના હાથમાં  
જશાડપી ધર્તુંધ રહેલું છે, અને વ્યાધિદ્રપી સેંકડો બાળો.  
પણ રહેલા છે, તેમજ મનુષ્યદ્રપી મૃગલાયોનો સંહાર કર-  
વામાં ઉદ્યુક્ત થયેલા હૈવર્દપી પારધિથી બચવાને કોણ સમર્થ  
છે ? ગર્ભાદિક હુંઅર્દપી તરંગિત જળનો વિનાશ થવાથી  
સુકાતા સરોવરની માર્ક દરેક સમયે મૃત્યુ વિદ્યમાન છતાં પણ  
મનુષ્યો જીવિતની આશા કેમ છોડતા નથી ? વળી અન્ય લોકમાં  
એક સાથે ચાલેલા સાર્થીઓની માર્ક જો કોઈ આગળ જય તો  
તેમાં શોક કરવાનું શું કારણ ? અથવા જેમ એતીદાર લોકો  
શ્વેતમાં પાડેલું ધાન્ય લાણી લે છે, તેમ મૃત્યુ સુભાઈ પ્રાણીમાત્રનો  
સંહાર કરે છે. માટે વસ્તુ સ્વભાવ આ પ્રમાણે વિચિત્ર છે. વળી  
જયાં જરા, રોગ અને વ્યાધિ વિગેરેનો સર્વથા અભાવ છે એવા  
સુરેંદ્રોમાં પણ જો મૃત્યુદ્રપ સુભાઈ સ્વન્યંદ્રપણે વિચરે છે, તો  
વ્યાધિ, જરા, રોગ અને શોકથી ઘેરાયેલા મનુષ્યલોકમાં પ્રાણીઓ

મહામચંડ્રનીકથા.

( ૪૩૫ )

નિમેષ માત્ર પણ જે જુવે છે તે મૃત્યુનો મહોટો પ્રમાદ છે. માટે અધીર પુરુષોએ સેવેલા શોકને આધીન થવું નહીં. કારણ કે, મૃત્યુના મુખમાં રહેલા પ્રાણીને બચાવવા માટે ઈદ્ર પણ સમર્થ નથી. વિગેરે દેશનાથી રાજનો શોક ફૂર કરી ભવ્યજનોને પ્રતિ-આખ આપી મુનિએ અન્ય સ્થળે વિહાર કર્યો.

**મહાસેન રાજ પણ નિરંતર ધર્મધ્યાન કરતો હતો. એક દિવસ પરોઢીયાના શાગમાં ભરનિદ્રામાં હતો.**

**સ્વમાવિચાર.** તેવામાં તહેને સ્વખ આવ્યું કે:—એક વૃક્ષ હતું. તેના સ્તંભની ચારે તરફ મહોટો વિષધરસર્પ વિંટાયેલો હતો. તેમજ તે વૃક્ષને ચાર મુખ્ય શાખા-એં હતી. તેની નીચે બહુ શીકારી પશુએ ઉથાં હતાં, અને પ્રચંડ પચન વેગથી કંપતી તેમજ કટ કટ એવા ભયંકર શાળ્દ કરતી એવી તેનો એક શાખાને હું વળગી રહ્યો હતો. વળી પડવાની વાટ જેઠ પ્રચંડ દંધ્રાએથી ભયંકર મુખ પહોળું કરી હુષ સિંહ નીચે તૈયાર થઈ ઉલો હતો. એવામાં અકસ્માતું એક શરદ ત્યાં આવ્યો. તેને જેઠ તે હુષ સિંહ ત્યાંથી જીવ લઈ નાશી ગયો. તેથી બહુ વિસ્તિત થઈ જુએ છે તેટલામાં તે જાગી ઉઠ્યો, અને કંઈ પણ તેણું જેણું નહીં તેણું જાણ્યું કે, આ સ્વમાવરસ્થા મેં લોણવી. પણી પ્રલાત સમયમાં પોતાનું નિત્ય કાર્ય કરી જીનેંદ્ર ભગવાનને વંદન કરી મહાસેન રાજ સભાસ્થાનમાં આવ્યો અને સર્વ શાખોના જાણુકાર એવા સ્વમાર્થ વેહી નૈમિત્તિકોને એલાવ્યા. તેઓ પણ મંત્રોચ્ચારપૂર્વક આશીર્વાદ આપીને ઉચ્ચિત સ્થાને એસી ગયા. પણી રાજએ તેઓની આગળ પોતાનું સ્વખ કહી સંબણ્ધાવ્યું.

નિમિત્તવેહી એલ્યા, હે રાજન! આ સ્વમનું કૂળ બહુ વિષમ

( ૪૩૬ )

શ્રીસુપાર્થનાથચરિત્ર.

છે. તે બાબતમાં શાસ્કડાર કહે છે કે—

**સ્વમનો ઉત્તર.**

વૃક્ષો ઉપર ચદ્રવું અને ઘોડાઓનું દર્શન તે શ્રેષ્ઠ ગણ્યાય છે. તેમજ નીચે સુખ પ્રસારીને ઉલેલા સિંહનું અવલોકન બહુ હૃષ કલ્યાં છે. હે હેવ ! વળી તે શરદ કોણું હોશે ? તે અમને સમજાતું નથી. કારણું કે, જેનાથી ગ્રાસ પામી સિંહ પણ નાશી ગયો. માટે આ સ્વમ ધાર્ણ વિષમ છે. આ બાબતમાં અમારી બુદ્ધિ પહોંચતી નથી. કોઈપણ શ્રુતજ્ઞાની સુનિ શિવાય આ સ્વમનો ખરો ભાવાર્થ જાણી રહેતે તેમનથી. ત્યારથાં રાજ વિચાર કરવા લાગ્યો. હાલમાં કોઈ સૂરિ મહારાજ અહીં વિરાજે છે ! એમ ઉહીપોહ કરતો હતો, તેટલામાં હુથમાં સુંદર કમળમાળાને ધારણ કરતી અને હુદ્ધયમાં અપાર પ્રમોદને વહન કરતી ઉદ્ઘાનપાલિકા ત્યાં આવી રાજને નમસ્કાર કરી એલી. હે હેવ ! અહીં આપના ઉધાનમાં બહુ શિષ્યો. જેમની સાથે રહેલા છે, ચારે જાનના જાણુકાર અને અનેક લાખિયોના નિધાન એવા સમયસાગર સ્ફૂર્તિકૃ પદ્ધાર્યા છે. તે સાંભળી રાજએ તહેને વચ્ચ અલંકારાદ્વિકૃ સંતુષ્ટ કરી, પછી સ્વાન્પનાડકો સહિત રાજ ઉધાનમાં ગયો. સૂર્યાદિના ચરણુકમળમાં વંદન કરી નીચે એઠો. અને ઉચ્ચિત સ્વભયે સ્વાન્પની વાત પુછી.

**સમયસાગર સૂરિએ પણ ઉપકાર જાણી તે સ્વાન્પનું યથાર્થ**

**કૃણ બતાવ્યું કે, વૃક્ષડૂપી સંસાર, શાખા-**

**સમયસાગર સૂરિ.** એડૂપી ચાર ગતિઓ, વિષધર સમાન

વિષયો, શીકરી પશુઓ સમાન રોગ, પવન

સમાન પૂર્વોપાળ્લૂત કર્મ અને જે શાખાને તું વળગી રહ્યો હતો,

તે મનુષ્યગતિ તેમજ તે શાખા નીચે માનવગતિથી પડતા એવા

તહેને જે સિંહ ગળવાની ઈચ્છા કરતો હતો તે મૃત્યુ સુલટ જા

ણ્યો. વળી તેટલામાં ત્યાં જે શરદ આવ્યો તે કોઈપણ સૂરિ

મહાયચંડનીકથા.

( ૪૩૭ )

સમજવા અને તે સૂરિ તહારા મૃત્યુનો નાશ કરી નિર્બધ સ્થાનમાં રહુને સ્થાપન કરશે. આ પ્રમાણે તહારા સ્વખનું ક્રણ છે. એમાં કોઈ પ્રકારનો તહારે સંદેહ જાણવો નહીં.

મહાસેન રાજાએ આ પ્રમાણે સ્વખનો પરમાર્થ જાણી સૂચિને વિનંતિ કરી કે ‘હે ભગવન् ! આ મહાસેનરાજનો સ્વમે ક્રણ તત્કાળ મુને સત્ય થાય. તેવી મોક્ષ. રીતે કૃપા કરો. સૂરીંદ્ર યોગ્યા, હે રાજન ! જો

એવોજ તહારો નિશ્ચય હોય તો કોઈ પ્રકારનો તું પ્રતિબંધ કરીશ નહીં. રાજાએ પણ તરતજ પોતાના પુત્રને રાજ્ય સોંગી ચોતે દીક્ષા થહુણુ કરી. ત્યારથાદ બજે પ્રકારની શિક્ષા લીધી. અને અનુફરે ડેવળજાન પામીને મહાસેન મુનિ અત્યપ સમયમાં અચળ અને સર્વદા નિર્બધ ગૈવા મોક્ષ પદને પામ્યા. માટે હે ભગ્ય પ્રાણિઓ ! ધૃઢાનો ત્યાગ કરી જે પ્રાણી અનશનવત થહુણુ કરે છે તે જીવ તેજ લવમાં જો સિદ્ધ ન થાય તો પ્રાયે જીવ લવમાં સિદ્ધ થાય છે. વળી અત્યંત સ્થિર ઝુદ્ધિ, દ્વાબાવ અને નષ્ટ સંકદ્ય વિકદ્યપવાળા ધન્ય પુરુષો પરમાત્માનું ધ્યાન કરતા અનશન પૂર્વક સમાધિ મરણુ પામે છે.

इતि સંલેખનાયાં મલયચન્દ્રકથાનકं સમાપ્તમ् ॥

તત્સમાતૌ શ્રીમલ્લક્ષ્મણગણિવિરचિતપ્રાકૃતપદ્યબન્ધશ્રીસુપાર્વનાથજિન-  
ચરિત્રસ્ય શ્રીમિકલસૂરિપુરન્દરાયમાળણપરમગુરુતપાગચ્છાધિરાજશા-

સ્ત્રીવિશારદજૈનાચાર્યયોગનિષ્ઠાધ્યાત્મજાનદિવાકરશ્રીમદ્બુદ્ધિ-

સાગરસૂરિશિષ્યપ્રસિદ્ધવક્તેતિ લબ્ધસ્વયાતિ વ્યાખ્યાનકો-

વિદ જૈનાચાર્ય શ્રીમદ અજિતસાગરસૂરિકૃતગુર્જરમાણ-

નુવાદે પ્રભુદેશનાપ્રબન્ધે સદ્ગુણાન્તતિચારવ્યાખ્યોપેતં

સંલેખનાત્રતં સમાપ્તમ् ॥

( ४३८ )

श्रीसुपार्थनाभवरित्रि.

## निर्वाणवर्णन.

श्री सुपार्थ प्रभु ऐत्या, हे राजन् ! सम्यक्त्व सहित आर-  
 प्रकारने श्रावकधर्म संलेखना पर्यंत विस्तार-  
 तीर्थयात्रा. पूर्वक क्षेत्रो अने दरेक अतिचारतुः स्वदृप पथ  
 दृष्टांत सहित सम्यक् प्रकारे क्षेत्रं माटे हुवे  
 हुं निरतिचार गृहिधर्म पाणवामां निश्चलचित्ते सापव्यान था. आ  
 प्रभाणे प्रखुना वचनाभृततुः पान करी दानवीर्य राजा भगवानने  
 नमस्कार करी ऐत्या, हे भगवन ! कृपा करी भृने श्रावकधर्म  
 आपो. जगद्गुरुऽन्ने नरेंद्रने विधि सहित धर्मदान आपी श्री  
 नंदिवर्धन नगरमांथी विहार कर्ये. प्रथम शत्रुंजय गिरिनी  
 यात्रा करी अने त्यारभाष अनेक पुर, थाम, नगर विग्रहे स्था-  
 नेमां विहार करी गृही अने मुनियोना धर्मनो उपदेश आपता  
 तथा अव्य ज्ञनोने हीक्षानो अनुश्रुत करता भगवान् सर्वत्र विजय  
 प्रवर्तीवता हुता. हुवे भगवानी सेवामां पंचाण्णं गण्युधरै  
 हुता. तेमज त्रण लाभ मुनियो, चार लाभ त्रिशुलज्ञ  
 आधीयो, ऐ लाभ सत्तावन हुज्ञर श्रावको अने चार लाभ  
 ताण्णं हुज्ञर श्राविकायो हुती. तेमज ऐ हुज्ञरने त्रीश चतुर्दश  
 पूर्वधारी मुनियो, अगीयार हुज्ञर तेवलज्ञानी मुनियो, पंद्र  
 हुज्ञर त्रणुसो वैक्य लघिधवाणा अने आठ हुज्ञर चारसो वाहि  
 मुनियो, नव हुज्ञर अवधिज्ञानितेमज नव हुज्ञर एकसो ने पचाश  
 मनः पर्यवज्ञानी मुनियोथी सेवाता श्रीसुपार्थप्रभु आम, आकर  
 अने नगरादिक स्थलेमां विचरता, पंडितोना विविध प्रश्नोना उत्तर  
 आपता, अव्य प्राणीयोने प्रतिषेध आपीने उत्तम ज्ञानदृपी  
 सूर्यना किरण्योवडे तेमना हुदयदृपी धरमांथी अज्ञानदृपी अंध-  
 कारने द्वर करता संभेतगिरि उपर गया. त्यां ज्ञानवडे पोतानो

निर्वाणवर्णन.

( ४३६ )

मोक्ष सभय नलुक जाणी श्री सुपार्खनाथ भगवाने एक मासतुं अनशनत्रत अहं त्रियुं कर्युं. त्यारभाद लव्य प्राणीओना हितमां उद्धुक्ता, संसार अने मोक्षमां चित्तानी समानताने धारणु करता, शुक्ति अने मरणुमां वांछा रहित, अने निष्क्रिय ध्यानमां दीन थयेला श्री सुपार्खनाथ स्वामी चतुरंग—चाराशी लाल वर्षतुं एक अंग थाय एवां चार अंग न्यून एवुं एक पूर्वलक्ष चारित्र पर्याय पाणीने पत्थंक आसने ऐठा.

हे मोक्षाभिमुख थयेला भगवानने जाणी सर्वे सुरासुरेंद्र भगवाननी पासे आव्या. अने गंधीदृक्नी सुरतथा सुरेंद्रोनुं वृष्टि सहित पुण्येना ठगला करी भरतके आगमन. अंजलि रथी भगवाननी सुनुति करवा लाग्या. हे समझ जुनवर ! आप विजय प्रवर्तीवा. आप अभिल कर्मदृपी कंचुकथी सुक्ता थया छे, वणी भवदृपी राक्षसथी पीडाता प्राणीओना रक्षक अने मुक्तिदृपी खीना समागममां उत्सुक एवा हे जुनेंद्र ! आपना अहं तत्काल शांत थाय छे. वणी हे जुनेंद्र ! आपना स्मरणमात्री अति तीक्ष्ण हृष्टाओवडे विकराण छे सुर्यकंहरा जेनी अने सन्मुख आवतो एवा सिंह पशु निवृत्त थाय छे. जेमां अनेक सुखटोनां धड नृत्य करी रह्यां छे अने निरंकुश हस्तीओ. जेमां प्रसरी रह्या छे एवा झेटा समरांगणुमां ने आपनुं स्मरण करे छे ते प्राणीने जयलक्ष्मी पोतेज वरे छे. तेमज लांभी लहानोने नयावतो, अहं एवा नेत्रोनी कांतिवडे गगनमंडलने लाल करतो अने प्रयंड दृष्टाओने विस्तारतो एवा नाग पशु आपना ध्यानथी पराजय पासे छे. वणी अत्यंत हुर्दीन सभयमां विजणीदृपी हडावडे जेमनो नाविठ जयलीत थर्ड जेवा छे एवा आ यात्रिक लोको मैथुदरियामां दुखता

( ૪૪૦ )

શ્રીસુપાર્બતનાથચરિત્ર.

છતાં પણ આપના શરણુથી તરી જાય છે. હે ભગવન् ! આ પ્રમાણે આપના નામ સમણુથી ભબ્યળુંબો આ લોકમાં સુખી થાય છે અને પરલોકમાં પણ અસંખ્ય હુઃખોનો ક્ષય કરનાર એવા મોક્ષને પામે છે. એ પ્રમાણે સર્વ સુરેંદ્રો બહુ સ્તોત્રોબડે સમ્મેત ગિરિ ઉપર રહેલા ભગવાનની સ્તુતિ કરે છે. તેટલામાં જગઙુરુ સર્વ પાપદ્વારેનો રોધ કરનાર શૈલેશી ધ્યાનમાં સ્થિર થયા.

વળી જેના માટે છુટુ, અહુમ, પ્રમુખ હુશ્વર તપશ્ચિર્યાએ  
કરવી પડે છે, તેમજ શુદ્ધ જલ તથા તુચ્છ  
**નિર્વાણુપદ.** રસ વિનાના લોજન કરવાં પડે છે, ગાંધી  
અનુરક્ત એવી સ્વીએનો અતિબંધ છે-  
ડવો પડે છે, વીરાસન જેમાં રહેલું છે એવાં સ્થાનકો નિરંતર  
સેવવાં પડે છે. નવીન સ્નેહપાશવડે મનોહર એવા બંધુએનો  
સંસર્ગ પણ છોડી હેવો પડે છે. અને જેના માટે શીત તથા તડ-  
કાથી હુંસહ એવા સમયમાં પણ કાયોત્સર્ગે રહેલું પડે છે. એવાં  
હુઃખદાયક વેહનીય, આયુષ્ય, નામ, અને ગોત્ર એ ચારે કર્મેનો  
એક સમયે ક્ષય કર્યો. પણ વિકટ એવા ભવ પાશથી મુક્ત થયેલા,  
તપાવેલા શુદ્ધ સુવર્ણ સમાન છે કાંતિ જેમની, વળી સૂર્યની  
કાંતિનો જેમણે તિરસકાર કર્યો છે અને લક્ષ્મીના નિવાસ સ્થાન  
એવા શ્રી સુપાર્બત પ્રભુ દ્વારાણ વહી સાતમના દિવસે પાંચસો  
મુનિઓ સાથે પોતાનો દેહત્યાગ કરીને મોકસ્થાને ગયા.

**જગઙુરના પ્રચંડ વિરહુથી પ્રગટ થતા અશુભવાહનુંડે**  
**ભરાઈ ગયા છે નેત્રપુટ જેમના એવા સર્વ**  
**વિરહભાવ.** સુરાસુરેંદ્ર પ્રભુને નમસ્કાર કરી પ્રાર્થના  
કરવા લાગ્યા. હે જગદીશર ! જણુ લોકમાં  
પ્રદીપ સમાન દીપતા એવા આપ હાલમાં નિર્વાણુ પદ પાંચા

निर्वाणवर्ष्णन.

( ४४१ )

तेथी अभिल भरतक्षेत्र भारे भोङु तिभिरमां निमन थयुः। वणी हे भगवन्! अत्यंत अक्षितभावथी अमे अहीं आवीने हवे केणी स्तुति करीशु? अथवा केणी पूज्न रचीने आनंद मानीशु? अथवा विवास सहित नृत्य लीला केणी आगण करीशु? हे स्वामिन्! तझारा विना हातमां अमारा रत्नभय मुकुटोने केना चरण्यपीठमां अक्षितभावथी नमावीशु? ए प्रभावे स्तुति करी वारंवार नमस्कार करी उदास्यिते सर्वं सुरेंद्रो जुनेंद्रनी पासे ऐठा. त्यारभाद सुरेंद्रनी आज्ञाथी वैश्रभषु हवे उन्नत वैज्ञान्ये। वडे विभूषित सुवर्ण अने रत्नभय उत्तम निर्वाण शिखिका तैयार करी. त्यारपछी क्षीरसागरना जलथी प्रक्षुप्ते स्नपन करवी रत्नभय आकरण्याथी शण्यगारेला शरीरे शुद्ध हुळव घेण्याव्यां। त्यारभाद सर्वे सुरासुर लोके दृढन करवा लाग्या छतां पणु हेव सहित सुरेंद्रो ए प्रक्षुप्ते पालभीमां पधराव्या अने नैडत झुण्यामां शुद्ध जग्याचे लाई गया. त्यां गोशीर्ष अने अगुड्यांदनना काढोनी ए चिताच्चे रचावी. एक चितामां जुनेंद्रने अने थीलुमां पांचसो मुनिओने स्थापन कर्या. ते सभये हुंहुभि विगेरे गंभीर वालुंत्रो वागवा लाग्यां. सर्वं जेचरो ए सुगंध-भय पुण्योनी वृष्टि करी, सुरांगनाच्चे नृत्य करवा लागी. वणी समस्त संघना लोके शोकातुर थाई गया. हेवेंद्रोना ज्यज्य शण्होथी अभिल भुवनमंडल भराई गयुः। पठी अग्निकुमारो ए पोताना मुखमांथी चितामां अग्नि प्रगट कर्यो. वायुकुमार देवो ए पवन विकुर्विने अग्नि प्रज्वलित कर्यो. तेमज अन्य मुरवरो सुगंधभय धूपनी मूढीच्चे भरी हेंडवा लाग्या. एम अनुकुमे चिता लागवाथी मांसाहिक सर्वं धातुओ बणी गाठ. एटले अति शीतल, सुगंधित अने भनोहर एवा क्षीरसागरना जलनी धाराच्चोवडे भेद कुमारो जुनेंद्र भगवाननी चिता शांत करी.

( ४४२ )

श्रीसुपार्श्वनाथगतिन.

त्यारभाद उनेंद्र भगवाननी उपरनी जमाणी हाठ शक्के अ-  
 हणु करी अने नीचेनी चमरेंद्रे लीधी. वाम  
 नंदीश्वरनी भागनी उपरनी हाठ धशानेंद्रे अने नीचेनी  
 यात्रा. खलीन्दे लीधी. वणी अत्यंत अकितभावथी  
 रोमांचित थयेला अवशिष्ट सुरासुरेंद्र अने  
 सर्व देवोंचे पोताना मंगल माटे हांत अने अस्थि (हाड़का) ना  
 दुकडाच्या अहणु कर्या. त्यारभाद देवीयोंचे पुण्य, नरेन्द्र तथा नर-  
 नारीयोंना समुदाये वस्त्रो तेम ज बाडीना सर्व देवोंचे अहु उम-  
 गथी चितानी भस्म लर्द लीधी. त्यारभाद यत्नवडे ते समयतुं  
 हरेक कार्य समाप्त करीने जगत् प्रबुना भारे विरहानलनी जवा-  
 गाथी हळ्य थयेलां हुहयने शांत करवा सर्व देवसहित सुरेंद्रो नं-  
 दीश्वरदीपमां गया. त्यां परमभक्ति वडे अष्टाहिंड महोत्सव करीने  
 सर्व सुरासुरेंद्र पोत पोताना परिवार सहित देवलेकमां गया.  
 पछी पांच इण्याच्योने धारणु करता शेष नागना भस्तक भण्युने  
 निस्तेज करती एवी उनेंद्रनी हाढोने तेओंचे अहु ग्रेमपूर्वक  
 सावधानपणे पूलुने रजभण्युना डाढामां भूझी हीधी. वणी हे  
 अव्यात्माच्यो? रागदेवाहिंड हुःअना विनाशक, संसारवासनाथी हूर  
 थयेला, राग अने रोषना विजेता, जनसमूहना सुखदाता अने  
 स्वर्ग तथा मोक्षसुखना प्रकाशक एवा सुपार्श्व भगवान् निरंतर  
 तम्हारूं संरक्षणु करै. आ प्रभं धर्मां वाक्य व्यवस्था किंवा शास्त्र-  
 विज्ञान कुडे वामां आ०युं होय ते संबंधी हुं भित्याहुङ्कृत  
 यायुं छुं अने सञ्जन पुढेपो सुधारो करी वांगशी एवी आशा।  
 राघुं छुं.

अंथकारनी प्रशस्ति.

( ४४३ )

## अंथकारनी प्रशस्ति.

आ लोकमां समस्त भूमंडलरूपी जपनना आभूषण माटे  
 सरण देवजहदं समान अने कीर्तिरूप पताकावडे युक्त श्री हुर्ष-  
 पुर ( हुर्षपुरीय ) नामे उत्तम गच्छ छे. तेनी अनंदर समथ  
 शिव सुखना मंहिर समान हिमालयनी माझक ज्यसिंह नामे सूरि  
 हुता. जेनाथी नीकणेली सुरसरित-गंगानी माझक मुनियेनी  
 परंपरा आ जगत्मां विधमान छे. ते ज्यसिंह सूरिना पछी हया  
 रूपी कमलिनीने प्रकुह्व करवामां सूर्य समान, मिथ्यात्वरूपी अंध-  
 कारना सभूहने हुरणु करनार अने समथ जैनवेतांधर संघना  
 तिलक समान श्रीमान् अलयसूरि नामे सूरीन्द्र थया. तेमना  
 सुशिष्य उज्ज्वल यशरूपी ज्येष्ठतना वडे उज्ज्वल कर्ये छे जैन १५०-  
 तांधर संघनो विस्तार जेमणे अने परवाहीयेना सभूहनो परा-  
 ज्य करवामां प्रगट छे महात्म्य जेमनुं एवा यन्द्र समान  
 श्रीमान् हेमचन्द्र सूरि थया. जेमणे रा. रा. श्रीयुत ज्यसिंह  
 राजने प्रभाधीने रथयात्राहिक कार्येमां अहु उद्योत कर्ये. वणी  
 जेमना सुभरूप शीरसागरमांथी नीकणेला अहलुत शास्त्राभृतनो  
 स्वाह लक्ष्मण्डाटा मुनिये। हालमां पणु अजरामर स्थानने पाए  
 छे. वणी ते हेमचन्द्र सूरिना तणु शिष्ये। थया. तेमां प्रथम एका-  
 न्तवाहियेना संसर्गरूपी रंगनो भांग करवामां सिंह समान  
 श्री विज्यसिंह सूरि. यीज पारावार विधारूप सभुदने विषे सं-  
 पूर्ण पूर्णिमाना यन्द्र समान अने जैन सिद्धांतरूपी कुमुहोना  
 विकास करनारा श्री यन्द्रसूरि थया. श्री लाटहेशनी मुद्राने पालन  
 करता एवा जे सूरिये भान्न जैन शासननी प्रलापना करी एट-  
 हुंज नहि परन्तु श्रमणु मुद्रानुं पणु पालन कर्युं छे. वणी  
 श्रीमान मुनिसुव्रत स्वामीना यशित्ररूपी रंगशागामां छंड सहित

( ४४४ )

श्रीसुपार्थनाथयरित्र.

अलंकारे। वडे सुशोभित नेमनी वाणी नर्तकीनी माझक विलास करी रही छे. तेमज त्रिलविषुधन्दनेना भनने घडु आनंद आपवामां अतिदक्ष एवा श्रीमान विषुधयन्द सूरि हुता.

हवे एक हिवस ते श्रीमान विषुधयन्द सूरि विहार करता करता धंधूका नगरमां आव्या त्यां पुंडरिकना पुत्र आषड श्रावके श्री पद्मयन्द उपाध्याय विगेरे श्री संघने कहीने श्री सुपार्थनाथ भगवान्तुं यरित्र रथवा भाटे तेमनी प्रार्थना करी कुण्डल कराव्यु. त्यारभाद तेमणे पछु श्रीमान् हेमयन्द सूरिना लधु शिष्यने उपरोक्त यरित्र रथवानी आँखा करी.

लक्षण्य तथा छंद शास्वाना जाणुकार एवा श्रीमान् लक्ष्मण्य गणीये प्रकाश कुरेलुं आ सातमा तीर्थंकर भगवान्तुं यरित्र सकल श्री संघना हुःअनुं हरण्यु करो ?

श्रीमान कुमारपाल नृपतिना राज्यमां आवेदी शुद्धमंडली नामे नगरीमां शम्भासुतना उपाश्रयमां वास करता एवा श्रीमान लक्ष्मण्य गणीये विक्रम संवत् १११६ ना भहा सुहिदशभीने शुडवारे आ यरित्र रच्यु छे.

आ यरित्रनी अनुपट्टुप श्लोक संज्या प्रत्यक्षर गणवा वडे दश हुजार एकसेने आडत्रीश उपर आठ अक्षरनी प्रायः छे.

॥ इतिश्रीमल्लक्ष्मणगणिविरचितप्राकृतपद्यबन्धश्रीसुपार्थनाथजिनचरि-

त्रस्य श्रीसकलसूरिपुरन्दरायमाणपरमगुरुतपागच्छाधिराजशास्त्रवि-

शारदजैनाचार्ययोगनिष्ठाध्यात्मज्ञानदिवाकरश्रीमद्बुद्धिसागर-

सूरिशिष्यप्रसिद्धवक्तेति लब्धव्याति व्याख्यानकोविद

जैनाचार्य श्रीमद अजितसागरसूरिकृत गुर्जर-

भाषानुवादः समाप्तः ॥

॥ इतिश्रीसुपार्थजिनचरित्रं समाप्तम् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

१

## ॥ गीरनारभंडननेभप्रलु स्तवन ॥

महानीरण मुज भायाणु रे-राग.

|   |                 |
|---|-----------------|
| गिरनार वासी गुण गिरवादे,                        | नेम नगीना.      |
| शामणीया शिवपद लीना रे.                          | नेम नगीना. टेक. |
| लटकणा ! हुं तो लणीलणी पाचे लाशुं,               |                 |
| प्रलु ! प्रेम अवियण भाशुं रे.                   | नेम नगीना.      |
| पातणीया ! भ्यारा ! पियु ! पियु ! करती हुं आतुं, |                 |
| गुण गीत तम्हारां गाउं रे.                       | नेम नगीना.      |
| मोहनलु ! भ्यारा हुद्य भंडिरमांडी आवो,           |                 |
| मने लेहालेद अतावो रे.                           | नेम नगीना.      |
| नटवरलु ! न्यारा शाने रडो छो मुञ्चथी !           |                 |
| छे सगपणु साचुं तुजथी रे.                        | नेम नगीना.      |
| हयाणु देवा ! हया करो दिन जननी,                  |                 |
| आशा पुरो मुज मननी रे.                           | नेम नगीना.      |
| हाता ! शिवपहना हायक नाम धरावो,                  |                 |
| सेवकने शीद तरशावो रे.                           | नेम नगीना.      |
| त्राता ! त्रिभुवनना तारक छो तमे स्वामि,         |                 |
| सिद्ध अवियण आतमरामी रे.                         | नेम नगीना.      |
| नाथलु ! मेंतो शरणु श्रहुं छे तमाइं,             |                 |
| वणी अरलु नित्य उचाइं रे.                        | नेम नगीना.      |
| प्रलुलु ! आपो अलुत अमर पद अमने,                 |                 |
| छे लाज अमारी तमने रे.                           | नेम नगीना.      |

ॐ शांतिः ३

## ॥ અજરાપાર્થનાથનું સ્તવન ॥

માતા મહેવીના નન્દ-એ રાગ.

૦હાલા ! વામાહેવીના નન્દ ! અજરા પાર્થલુનરાજ !  
વિનતી સુણો અમૃતારી રે.  
વિનતી સુણો અમૃતારી રે, મહેર કરી મહારાજ ! આપજે  
પદ અવિકારી રે-એ ટેક.

અધ્યાત્મસેન કુલદીપક લુપક, કામ કાથ મદ માન;  
વારાણુસીના વાચી વિભુજ ! ધરીએ તુઝ શુણુ ધ્યાન. ૦હાલા.  
પ્રભાવતી રાણીના પ્રિયતમ, શાન રયણુ ભંડાર;  
તાપસ તારી નાગ ઉગારી, ત્યાગ હીયો સંસાર. ૦હાલા.  
સંયમ રસીયા વસીયા વનમાં, સુંદર સરોવર તીર;  
વનહૃતિ કરી લક્ષ્મિ શિરપર, ઢોળે નિર્મળ નીર. ૦હાલા.  
વૈર વિચારી મનમાં પ્રલુને, વડતરૂ છેઠળ ભાળી;  
જખરી જળધારા વરસાવે, મસ્ત ઘની મેઘમાળી. ૦હાલા.  
ધરણેન્દ્ર પદ્માવતી પોતે, સમય વિચારી આવે;  
મેઘ સંહારી પાપ પખાળી, પ્રલુ શુણુ મહિમા ગાવે. ૦હાલા.  
સમતામાં રહી કેવળ પદ લહી, અજર અમર અવિકાર;  
શિવ સુખ પામ્યા તે લુનવરની, પ્રતિમા તારણુહાર. ૦હાલા.  
કલ્યાલ ચિંતામણી સ્વામિ ! જગચિંતા દૂર કરતા;  
રધુનનહનના તનની પીડા, શાસનપતિ સંહરતા. ૦હાલા.  
સુરભુવનમાં સેવા પામી, જે પ્રતિમા બહુ કાળ;  
કંજિકાળમાં જાગતી જ્યોતિ, અનારમાં છે હાલ. ૦હાલા.  
જગહગુરૂ પહેવીના ધારક, વિજય હીર સૂરિરાય;  
અળત અમર પદ ધન્યક, પોતે પ્રેમે પ્રણુમે પાય. ૦હાલા.  
ઉનામાં યાત્રાર્થી આવી, કર્યાં પ્રલુ હર્થન;  
મીશારળુની લક્ષ્મિ ભાળીને, અળત થયો પ્રસન્ન. ૦હાલા.

## ॥ મહુવામંડનમહાવીરજુનસ્તાવન ॥

કૃશીયા થાણું પ્રીતિ કિની રે-એ રાગ.

મનમોહક સુઅને મૂર્તિ મળી રે, મહાવીરની;

લય દીકમાં લાગી, ધર્મ ધૂરંધર મહાધીરની-એ ટેક.

મનહર મહુવામાં બહુ મેઠાટા, મંદિરની છણી છાંજે;

જીવત જીનવરજુની આગળ, ત્રિકાળ નૌથત ગાજે રે. મન.

સિદ્ધાચથ રાણના નંદન, ત્રિશાલા સુત સુખકારી;

પાપો અમૃતારાં કાપો પ્રભુજી ! આપો પદ અવિકારી રે. મન.

સુમેર શિખરે સુરપતિ સંઘળા, સ્નાત્રવિધિ શુભ કરતા;

ચરણુષણ ગિરિવર કંપાવી, હૃમિન શાંકા હુરતા રે. મન.

ડસીયો ચરણે ચંડકેશીયો, તે સ્વર્ગ જઈ વસીયો;

અડદ આકુળા આપી પ્રભુને, સતી જીવ અતિમનહુસીયોરે. મન.

સુરનર પશુ ગણું મળી હુઃખ કરતા, પ્રભુ સહતા શમ ભાવે;

ધન ધાતી ચઉકર્મ ખપાવી, અન્તર જયોતિ જગાવે રે. મન.

સમ્ભવસરણુની રચના સુનદર, સુરપતિ સંઘળી કરતા;

અતિશય સહ જીનવર વિચરતા, નવિન કમળ પદ ધરતા રે. મન.

આત્મજાન આપી ભાવિજનની, જડતા ફર નીવારી;

અજીતાનન્દમાં રમતા નિશદ્ધિન, પ્રભુજીની બલિહારી રે. મન.

વિનતી ન્હાલ ધરીને ન્હાલા, સેવકનો ઉર ધરને;

કૃપા તણું સાગર જીનવરજી ! હુઃખ અમૃતારાં હુરને રે. મન.

સિદ્ધાચણમાં વાસ કરીને, અનુભવ પ્રાલો પીધેા;

રૈવતગિરિ યાત્રાએ જાતાં, પ્રભુ ગુણું દહાવો લીધો રે. મન.

મંગલરૂપ છો મહાવીર મહારા, હૃદય મંદિરમાં વસીયા;

અજીત નમે કરનેડી તમને, શિવરમણીના રસીયા રે. મન.

ॐ શાંતિः ३

४

## ॥ धोधामंडनपार्थिअनस्तवन ॥

महावीरજु मुज मायाणु रे—ओ राज.

|  |         |
|--|---------|
| धोधामंडन नवभंडा रे, पार्थि लुण्डा;   |         |
| शरण्यु आव्यो सुभ कंडा रे, नाण्यु हिण्डा.                                   | प्रकृत. |
| प्रलुल ! महारा चार गतिमां हुं भमीयो,<br>तप चरण्यु नाथ ! न नभीयो रे.        | पार्थि. |
| अलगेला ! हुं तो अलिभानथी अकडायो.<br>वजी प्रपञ्चमां पकडायो रे.              | पार्थि. |
| छण्ठीला ! म्हें तो शास्त्र भर्यादायो छाडी.<br>प्रतिमामां प्रीति न जेडी रे. | पार्थि. |
| रंगीला ! मुझने परनारी लागी घ्यारी,<br>घण्यु भक्ति न कीधी तमारी रे,         | पार्थि. |
| रसीयाल ! हुं तो राची रघो परधनमां,<br>मद भोळ धर्यो बहु मनमां रे.            | पार्थि. |
| नाथल ! म्हें तो निन्दा करी मुनिवरनी,<br>हार्यो खाज निज धरनी रे.            | पार्थि. |
| भोळनल ! महारा अवगुण्यु सामुं न जेशो.<br>छे अगणित मुझमां दोषो रे.           | पार्थि. |
| हयाना हरिया ! हया करीने उगारे,<br>भव सागर पार उतारे रे.                    | पार्थि. |
| क्षव वनमां भमतो भावनगरथी हुं आव्यो,<br>प्रलु ! अलुत मनमां भाव्यो रे.       | पार्थि. |

ॐ शांतिः ३

५

## ॥ श्री अभीजरापार्थनाथनुस्तवन् ॥

श्री शंखेश्वरा ? प्रभु पार्थ उनवरा-ये राग.

श्री अभीजरा ! प्रभु पार्थ हुःअ हरा !

त्राता ! दाता ! भ्राता ! माता ! जय लुनेश्वरा !

२५.

काम कोध मायानो मार्यो, भमीयो काळ अनंत;

श्री.

शरणे आ०यो सेवक जाणी, सहाय करो लगवांत.

मोह वैरिये भुंजायो अहु, भूयो निजगुणु भान;

श्री.

अमजायो सहगुडे मुझने, छतां न आवी सान.

अवगुणु भरियो होषनो हरियो, वरियो कुमति नार;

श्री.

पोतानो जाणी उनवरलु ! तार तार मुझ तार.

पारसमणि सम प्रभुता धारक, पार्थनाथ लगवान् !

श्री.

स्वपर्श जरा जे थाय तमारो, धूय अनु शुलतान.

अभी वरसावी अमर अनावो, राखो सेवक लाज;

श्री.

अगडेवी आए सुधारी, आपो अवियण राज.

सुंदर सोरठ देशमां शोखि, उना शहेर शुलकर;

श्री.

विचर्या पूर्व विजय हीर जयां, प्रभु लेख्या सुभकार.

प्रभु शुणु रमां परगुणु वभतां, धरतां निर्मिग ध्यान,

श्री.

चरणु कमणातु शरणु अहीने, अलृत अन्यो भस्तान.

ॐ शांतिः ३

—\*—

૬

## શ્રી મહાવીર જીન સ્તવન.

મહાવીરજી સુજ મયાળુ રે. એ રાગ.

સિદ્ધારથ સુત ! સુખકંદારે, વીર લણુંદા.

ભવિચાતક ચિતહર ચંદા રે, ન્રિશલાના નંદા—એ ટેર.

દ્યાના દરિયા ! દશમા દેવલોકથી ચવિયા,

ક્ષત્રીકુડમાં અવતરીયારે.....વીર.

આળુડ પ્રલુલ ! બાળપણે બળવંતા,

જગળુવનલુ જયવંતારે.....વીર.

મોહનલુ ! મુહારા, માતાની લક્ષ્મિમાં રાતા,

નાંહિવર્ધનના આતારે.....વીર.

પ્રિયતમ પ્રલુ ! ઘ્યારા, પરછ્યા યશોદા નારી,

ને પૂર્ણ પતિત્રત ધારીરે.....વીર.

વૈરાગી ઠહાતા ! ત્રીશ વર્ષે થયા ત્યાગી,

અન્યા શિવરમણ્ણીના રાગીરે.....વીર.

ત્રિલુલનના તારક ! તપ તપીયા બહુ ભારી,

જુનવરલુ ! છે જયકારીરે.....વીર.

લટકાળા ! લટકે, ચંહનભાળાને તારી,

તુજ મુખડાપર જાઉ વારીરે.....વીર.

કેવળ ચુણુવંતા ! કેવળજાનને પામી,

થયા શિવરમણ્ણીના સ્વામીરે.....વીર.

શરણે હું આંથ્યો, ચહાય લેવાને તમારી,

સ્વીકારો અરલુ અમારીરે.....વીર.

મહાવીર પ્રલુ ! મુહારા, હૃદય મંહિર માંહી રહેણો,

શુલ અળુત અમર પદ હેણેરે.....વીર.

ॐ શાંતિः ३

— → \* || \* ← —

७

॥ ॐ अर्हम् ॥

**श्रीमद् सच्चारित्रचूडामणि सुखसागराष्टकम् ॥**

**ललित.**

अस्त्रिल कर्मणां ग्रन्थभेदकं, भवनिवारकं शान्तिधारकम् ।

प्रणत मौख्यदं दीनतापहं, सुखपयोनिधिं श्रीगुरुं भजे ॥१॥

जितकलिकलौ तत्त्ववेदिनं, मथितमानसोङ्गूतविक्रमम् ।

ऋग्कर्दर्थिताऽनेकविक्ळबं, सुखपयोनिधिं श्रीगुरुं भजे ॥२॥

तमकलङ्कितं वर्तनं स्तुतं, जनगणैः सदा यस्य शस्यते ।

परम पात्रता यत्र राजते, सुखपयोनिधिं श्रीगुरुं भजे ॥३॥

मुनिवर ? त्वयादीपितं ततं, मतिमताद्वतं जैनशासनम् ।

जिनमतार्थिनस्त्वां नमन्त्यतः, सुखपयोनिधिं श्रीगुरुं भजे ॥४॥

नियमधारिणीं श्राद्धसन्ततिं, विहितवान्भवाँस्तत्त्वदेशकः ।

तवगुणानहं स्तोतुमक्षमः, सुखपयोनिधिं श्रीगुरुं भजे ॥५॥

रतिकरी न यन्मूर्तिरुत्तमा, भवति कस्य सङ्गूतिदायिनी ।

करुणचेतसं सम्पदालयं, सुखपयोनिधिं श्रीगुरुं भजे ॥६॥

चिरमखण्डिता भावनापरा, विमलचेतसा येन साधिता ।

शमितकामनं तं मुनिप्रियं, सुखपयोनिधिं श्रीगुरुं भजे ॥७॥

तमघघातिनं त्रातभारतं, पतितपावनं कारिताऽवनम् ।

अस्त्रिलदेहिनामात्मबोधदं, सुखपयोनिधिं श्रीगुरुं भजे ॥८॥

— ◊ ◊ ◊ —

## श्री रविसागरजी गुणकीर्तन.

गङ्गल.

कृपावन्तं क्षमावन्तं, जगत्क्षेमद्वारं धीरम्  
 नरामरसेवनीयं शं, विधातारं कलौ कामम् ।  
 वृषाधारं महारामं, गुणामरपादपश्चेणे—  
 भजध्वं प्रेमतः पौरा, रविसागरगुरुं नित्यम् ।  
 सदाराण्यं सतांवृन्दैरुरालोकं विमूढानाम्—  
 महासिद्धिप्रदं चित्रं, चरित्रं शोभनं यस्य ।  
 कृतायेन क्षमाभाजा, सदाचारप्रियालोका—  
 भजध्वं प्रेमतः पौरा, रविसागरगुरुं नित्यम् ॥  
 जितानङ्गं पवित्राङ्गं, प्रभाभिर्दिपितालोकं  
 सुयोगेन क्षितीशानां, हृदुर्वर्यारोपितं तत्त्वम् ।  
 मुनीशानां सदावन्द्यं, दुरन्तापल्लतानाशं  
 भजध्वं प्रेमतः पौरा, रविसागरगुरुं नित्यम् ॥  
 निराशं निर्मलाकारं, निरीहं निर्भयावेशं  
 निरारोगं निराशङ्कं, निरामोदं निराशोकम् ।  
 निरालम्बं सदालम्बं, महालम्बं सुभव्यानाम् ।  
 भजध्वं प्रेमतः पौरा, रविसागरगुरुं नित्यम् ॥  
 चिदानन्दं निरानन्दं, जगच्चन्द्रं गतातन्द्रम् ।  
 न मोहाधीनता यस्य, सुतत्वाधीनता मुख्या ।  
 स्थिता यस्यान्तिके मुक्तिप्रिया नित्यं परालम्ब्या ।  
 भजध्वं प्रेमतः पौरा, रविसागरगुरुं नित्यम् ॥

